श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

ब्रजविलास.

श्रीमद्राधाकृष्णचन्द्रकमलमधुकरसत्संगति
रसास्वादरतहरिभक्तशिरोमणि
ब्रजवासीदासकृत

जिसमें

श्रीचतुर्दशभुवनाधार धराधार भक्तजनहृदयारविन्दागार गोपी-
जनभयहरण कंसादिदैत्यदरण यदुकुलकुवलयदिनकर
रसिकशिरोमणि श्रीकृष्ण बलदेव श्रीराधा आदि
के विचित्र चरित्र अतिसरल और ललित
छन्दों में वर्णित हैं।

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में छपकर प्रकाशित

तेरहवीं बार

सन् १९२३ ई०

ब्रजविलास का सूचीपत्र।

ब्रजबिलास का सूचीपत्र ।

इति ॥



ब्रजविलास ॥

सोरठा ।

होत गुणनकी खान, जाके गुण उरगनतहीं ।
द्रवो सु दयानिधान, वासुदेव भगवन्त हरि ॥
मिटत ताप त्रयतास, जासुनाम मुखते कहत ।
बन्दौं सो शुभरास, नन्दसुवनसुन्दर सुखद ॥
अरुण कमलदलनैन, गोपवृन्दमंडन सुभग ।
करहु सो मम उर ऐन, पीताम्बर वर वेणुधर ॥
बन्दौं जगत अधार, कृष्णाग्रज बलदेव पद ।
अभिमत फलदातार, नीलाम्बर रेवतिरमण ॥
श्रीगुरु कृपानिधान, बन्दौं पद महि माथधरि ।
जासु बचन जलयान, नरचढ़िभवसागरतरहिं ॥
बन्दौं सन्तकृपाल, पदसरोजरज राखिशिर ।
जगहितरतशुभमाल, जिननिजगुणहरिवशकरे॥
पुनि बन्दौं ब्रज देश, परमरम्य पावन परम ।
महिमा जासु सुदेश, राधानाथ विहार थल ॥

प्रथम कृष्ण को तात मनाऊं ❁ श्री बसुदेव चरण शिर नाऊं
बहुरि देवकी पद जलजाता ❁ बन्दन करौं कृष्ण की माता
इनतें और कौन बड़ भागी ❁ ब्रह्म धस्यो नर तन जिन लागी
बन्दौं नन्दमहर के चरना ❁ सहित यशोमति मंगल करना
जिनकी महिमा भाग्य बड़ाई ❁ निगमागम शिव शारद गाई
बन्दौं रोहिणि पद जलजाता ❁ कृष्णाग्रज बलदेव कि माता
कीरतियुत बृषभानु गोप बर ❁ बन्दौं चरणकमल रज शिर धर
तात मात राधा रानी के ❁ त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानी के
कृष्ण कमल दृग की कमला के ❁ कलुष बिभंजन सब बिमला के
बन्दौं श्री राधा पद अम्बुज ❁ जिनके ध्यान मिटत भवभयरुज
होत कृष्ण सहजहि बश ताके ❁ प्रेम सहित गुण गावत जाके
बन्दौं सो बृषभानु दुलारी ❁ कृष्ण प्राण जीवन धन प्यारी

दो॰ राधाकृष्ण पदाम्बुजन, बन्दौं महि शिर टेक।
ब्रजबिलासहित दोय तन, प्रकट किये हैं एक॥

सो॰ बन्दौं युगलकिशोर, रूपराशि आनन्दघन।
दोऊ चन्द चकोर, प्रीतिरीतिरसबससदा॥

अपर गोप गोपी गोपाला ❁ जिनके सँग बिचरहिं नँदलाला
गाय बच्छ बालक ब्रजबासी ❁ जिनके सखा कृष्ण अबिनासी
और जाति जो ब्रजहि निवासी ❁ बन्दौं सकल सुकृत की रासी
मथुरापुरी नारि नर नागर ❁ गोकुलादि जो ग्राम उजागर
श्री यमुना सरि परम पुनीता ❁ जासु दरश नहिं यमपुर भीता
परबत बापी कूप तड़ागा ❁ श्री बृन्दाबनादि बन बागा
खगमृगजलचर जीव बिभागा ❁ बन्दौं सकल सहित अनुरागा
बन्दौं गिरि गोबर्द्धन देवा ❁ अपर देव तिनसम नहिं केवा

सुरपति मेटि जाहि हरिपूजा ❋ आनदेव तिनसम को दूजा
अतिरमणीय रेत यमुनातट ❋ उपवन अमित सुभग वंशीवट
जहां जहां हरि धेनु चराई ❋ सुन्दर श्यामल कुँवर कन्हाई
रास बिलास जहां हरि कीनों ❋ भक्तवछल भक्तन सुख दीनो

दो॰ जड़ चेतन ब्रजदेशके, तृणतरु महिरजजेत ।
बन्दौं कीट पतंग सब, पुनि पुनि प्रीति समेत ॥

सो॰ ब्रजजनपद शिरराख, बिनय करौं करजोरिपुनि ।
मोमनको अभिलाख, पूरणकरिय सुजानजन ॥

ब्रजबिलास कछु कहौं बखानी ❋ करन पुनीत हेत निजबानी
सो तबलौं नहिं उरमें आवै ❋ जबलग तुमरी कृपा न पावै
मैं मन बच क्रम तुमरो दासा ❋ तातें पुरवहु मोरी आसा
यद्यपि मति इतनी मोहिं नाहीं ❋ करों उक्ति कछु निजतें नाहीं
तहां एक मैं कियो विचारा ❋ या विधि बल अपने उर धारा
श्री शुकदेव कही हरिलीला ❋ सुनी परीक्षित सब गुण शीला
सूरदास सोई हरि सागर ❋ गायो बहुविधि परम उजागर
फैलरह्यो सो त्रिभुवन माहीं ❋ गावत सुनत सुयश हरषाहीं
बिबिध प्रकार चरित हरि केरे ❋ तामहिं बरणे सूर घनेरे
सो वह प्रीति रीति सुखदाई ❋ मेरे मन अतिशय कर भाई
सो तव कथा अमित बिस्तारा ❋ मोपै पायो जात न पारा
तामें ब्रजबिलास सुखदाई ❋ सो कछु कहिहों करि चौपाई

दो॰ भाषा की भाषा करौं, क्षमिये सब अपराध ।
जिहि तिहि बिधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुति साध ॥

सो॰ हरिपद प्रीति न होय, बिन हरि गुण गाये सुने ।
भवते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये ॥

तातें मैं सन्तन शिर नाई ❋ गावों हरियश जनसुखदाई
जो ब्रज में हरि कियो बिलासा ❋ सो कछु कहिहौं सहित हुलासा
यामें इतनी कथा बखानों ❋ ताकी सूचनका यह जानों
श्री बसुदेव देवकी ब्याही ❋ चल्यो कंस पहुँचावन ताही
तहां भई नभ बाणी वाहीं ❋ सुनिकै कंस डर्यो पुनि ताहीं
अठयों गर्भ होयगो याके ❋ तेरी मृत्यु हाथ है ताके
तबै देवकी हतन बिचार्यो ❋ करि बिनती बसुदेव उबार्यो
सब सुत ताहि देन को भाखे ❋ तब नृप दुहुन बन्दि में राखे
षट बालक तिनके नृप मारे ❋ पातक भये भूमि पर भारे
दुखित गई सो हरिके पासा ❋ हरि ताकों जिमि दई दिलासा
पुनि संकर्षण गर्भहि आये ❋ तिनको बहुरि रोहिणी जाये
सो सब कहिहौं मति अनुमाना ❋ जैसी भांतिन सुन्यों पुराना

दो० पुनिभगवानअनादिअज, ब्रह्म सच्चिदानन्द।
प्रकट भये बसुदेवगृह, निज इच्छा सुखकन्द॥

सो० तात मात सुखदैन, सुन्दर रूप दिखायके।
कियो परम उर चैन, दूर कियो दुखद्वंद्व सब॥

तात मात पुनि जिमि समुझाये ❋ लै गोकुल बसुदेव सिधाये
यशुदा गोद राखि घनश्यामहिं ❋ कन्या तासु गये लै धामहिं
कंसासुर सो कन्या पाई ❋ सो जैसे आकाश सिधाई
तासु बचन सुन अतिभय माना ❋ बालक हतन मन्त्र तब ठाना
बजे नन्द घर अनँद बधाये ❋ ब्रजयुवतिन मिलि मंगल गाये
भयो नन्द घर अति उतसाहा ❋ ब्रजबासिन को परम उछाहा
प्रीति सहित सो सब सुख गैहौं ❋ जितनो निजमति को बलपैहौं
बहुरि कंस पूतना पठाई ❋ सो जैसे हरिके ढिग आई

ताहि मारि जननी सुख दीन्हों ❋ प्राण पान करि पावन कीन्हों
कागासुर पुनि जाविधि आयो ❋ ताको पुनि हरि मारि बहायो
बहुरो शकट चरणतें डार्‍यो ❋ तृणावर्त्त को जाविधि मार्‍यो
अन्नपराशनादि जे कर्मा ❋ किये नन्द जिमि निज कुल धर्मा

दो० बालचरित्र पवित्र पुनि, जिमि कीन्हें अभिराम।
जानुपाणि चलि सुख दियो, तातमातको श्याम॥

सो० ब्रजजनके मनमोद, चले बहुरि पायँन कछुक।
कीने बालबिनोद, नंद यशोमति के अजिर॥

गर्ग आय लक्षण पुनि भाषे ❋ सुनि सब ब्रजवासी अभिलाषे
पुनि बालन सँग खेलन लागे ❋ बाल खेल लीला अनुरागे
विप्र पाक जैसे छुइ लीन्हो ❋ चन्दा हेत बहुरि हठ कीन्हो
कनछेदन लीला सुखदाई ❋ कहिहौं सब आनन्द बधाई
पुनि हरि खेलत माटी खाई ❋ यशुमति लै सांटी उठि धाई
माता आगे जिमि मुख बायो ❋ ताही में त्रिभुवन दिखरायो
शालग्राम मेलि मुख लीन्हों ❋ नन्दहिं पूजा में सुख दीन्हों
अन्हवावन हित जिमि मचलाये ❋ बहुत भांति यशुमति फुसलाये
ग्वालन संग बहुरि अनुरागे ❋ माखन चोरी के रस पागे
बहुरो माता क्रोध उपायो ❋ भक्त हेत दांवरी बँधायो
यमला अर्जुन बृक्ष ढहाये ❋ धनदसुतन के पाप नशाये
पुनि बन गोचारन मन आन्यों ❋ ग्वालन संग जान हठ ठान्यों

दो० बहुरि जाय बनमें हन्यो, वत्सासुर नँदनन्द।
ग्वालसंग आनँद सहित, घरआये सुखकन्द॥

सो० सो करिकै विस्तार, प्रेमसहित सब गाइहौं।
निजमतिके अनुसार, ब्रजवासी प्रभुके गुणन॥

गो दोहन जैसे पुनि कीन्हों ❋ तात मात ब्रजजन सुख दीन्हों
मोती बये नन्द के धामें ❋ सुर नर लखि चकित भये जामें
बहुरि जाय बन नन्दकुमारा ❋ बकाअसुर को बदन बिदारा
बहुरों बाल चरित चित दीने ❋ भौंरा चकई खेलन लीने
श्री राधा सों प्रीति दृढ़ाई ❋ कीन्हे चरित ललित सुखदाई
अघाअसुर मार्यो पुनि जाई ❋ ग्वालन संग छाक बन खाई
भयो मोह जिमि बिधिके मनमें ❋ बालक बत्स हरे तिन बनमें
तिनको रूप आप प्रभु कीनों ❋ ब्रजके बासिनको सुख दीनों
सो रस कहिहों सब बिस्तारा ❋ अघनाशन प्रभु चरित उदारा
श्री बृषभानुलली पुनि आई ❋ जैसे हरि सों गाय दुहाई
कहिहौं सो रसकथा सुहाई ❋ अति बिचित्र जन मन सुखदाई
बहुरों धेनुक को बध कीनों ❋ बिष जलतें ग्वालन रख लीनों

दो० पुनि नाथ्यो काली उरग, जलमें पैठि मुरारि।
यमुनाजल निर्मल कियो, ब्रजतें दियो निकारि॥

सो० करि दावानलपान, राखिलिये ब्रजलोग सब।
जिनके कृपानिधान, सदा भक्त संकट हरन॥

बहुरि प्रलम्बअसुर ब्रज आयो ❋ खेलत में हरि ताहि नशायो
पनिघट यमुना तट पुनि जाई ❋ गोपिन सों रस कियो कन्हाई
चीरहरण लीला पुनि कीनी ❋ कहिहौं सकल प्रेम रस भीनी
पुनि बृन्दाबन में सुखशीला ❋ ग्वालन संग करी जो लीला
बृन्दाबन की महत बड़ाई ❋ श्री मुख श्री बलजू सों गाई
ऋषिपतानिन सों भोजन लीनों ❋ भक्तिदान तिन को प्रभु दीनों
पुनि श्री गोबर्द्धन गिरिराई ❋ ब्रज थापे सुरपतिहि मिटाई
सुरपति कोप कियो यह जानी ❋ बरष्यो प्रलयकाल को पानी
तब प्रभु गिरि करधरि ब्रजराख्यो ❋ जै जै सब ब्रजबासिन भाख्यो

सो सब अनुपम कथा सुहाई ❋ कृष्ण कृपा तें कहिहों गाई
नन्दहिं पकरि वरुणके दासा ❋ जिमि लै गये वरुण के पासा
ल्याये श्याम तहां तें जाई ❋ व्रजमें भइ आनंद वधाई

दो० बहुरों पुर बैकुण्ठ जो, अतिपुनीत निज धाम।
व्रजबासिनको करिकृपा, दिखरायो घनश्याम॥

सो० सो सब कथा अनूप, अतिविचित्र पावनपरम।
कहिहों मति अनुरूप, संतजनन मनभावनी॥

पुनि जो करी श्याम सुखशीला ❋ अति अद्भुत व्रज में रसलीला
श्री राधा बृषभानु दुलारी ❋ और सकल व्रजगोप कुमारी
तिन सों मिलि श्री कुंजविहारी ❋ रस शृँगार लीला विस्तारी
आनँद भई सकल सुखकारी ❋ गाय तरत भव सब नर नारी
जिमि गोपिन हरिसों मन लायो ❋ प्रेम पन्थ दृढ़ करि दिखरायो
गो रस लै निकसीं व्रजनारी ❋ जिमि दधिदान लिये वनवारी
भई प्रेम उन्मत्त गुवारी ❋ लोक लाज तन दशा विसारी
बहुरि चरित्र कुँवरि राधा के ❋ परम पवित्र हरण बाधा के
जैसे मिलीं श्याम सों जाई ❋ बहुरों जैसे प्रीति दुराई
पुनि संकेत चरित्र विविध वर ❋ किये प्रिया प्रीतम अति सुन्दर
गर्भ विरह अभिलाप परस्पर ❋ अति रहस्य लीला सुन्दर वर
कहिहों सकल कथा सुखदाई ❋ भक्ति रसज्ञन के मन भाई

दो० देखि मुकुर में लाड़िली, पुनि जैसो निजरूप।
विवश भई सो गाइहों, लीला परम अनूप॥

सो० पुनि नैना अनुराग, अरु मुरली की प्रिय कथा।
कहिहों सहित विभाग, प्रेम सुधारस सों भरी॥

बहुरौं शरद रैन अति पावन ❋ श्री वृन्दावन परम सुहावन

तहां श्याम बांसुरी बजाई ❁ घर घर तें ब्रजनारि बोलाई
कियो रास रस रसिकबिहारी ❁ भई प्रेम गर्वित तहँ नारी
अन्तर्द्धान चरित तब कीनों ❁ गर्व गोपिकन को हरि लीनों
कियो महा मङ्गल पुनि रासा ❁ बाढ़्यो परमानन्द हुलासा
पुनि जल केलि करी मनभावन ❁ कहिहौं चरित सकल अतिपावन
मान चरित लीला सुखदाई ❁ करी बहुरि जिमि कुँवरकन्हाई
बिस्तर सहित कही सो बरनी ❁ भरी प्रेम रस आनँद करनी
बहुरों जाय हिंडोला झूले ❁ भये सकल गोपिन अनुकूले
ऋतु बसन्त फागुन जब आयो ❁ कियो फाग रँग सब मनभायो
सो रस कथा सकल सुखदानी ❁ मति समान सब कहौं बखानी
पुनि बिद्याधर शाप नशायो ❁ अजगर तन तें ताहि छुड़ायो

दो० शंखचूड़ मार्‍यो बहुरि, अधम निशाचर नीच।
पुनि मार्‍यो वृषभाअसुर, हरि ब्रजबासिन बीच॥

सो० बध्यो बहुरि गोपाल, केशीव्योमाअसुर जिमि।
दुष्टदलन नँदलाल, कहिहौं चरित पुनीत सब॥

बहुरि आय नारद यश गायो ❁ सुनिकै श्याम बहुत सुख पायो
तबहिं कंस अक्रूर पठायो ❁ लेन कृष्ण को सो ब्रज आयो
भये सुनत ब्रज लोग उदासी ❁ मधुपुर चले बहुरि सुखरासी
जब अक्रूर हृदय दुख पायो ❁ तब हरि जल में दरश दिखायो
भये सुखी लखि प्रभु प्रभुताई ❁ सो सब चरित कहौं सुखदाई
गये बहुरि मथुरा दधि दानी ❁ मार्‍यो प्रथम रजक अभिमानी
बसन लुटाय सखन पहिराये ❁ बहुरि सुदामा के घर आये
कुबिजा ते चन्दन हरि लीन्हों ❁ ताको रूप अनूपम दीन्हों
तोर्‍यो धनुष असुर बहु मारे ❁ द्विरद जीत पुनि दन्त उखारे

भिरे बहुरि मल्लन सों जाई ❋ कियो युद्ध तिन सों दोउ भाई
जीति मल्ल सब असुर सँहारे ❋ डस्यो कंस लखि अतिबल भारे
गये नृपति पहँ तब दोउ भाई ❋ दियो मञ्च ते भूमि गिराई

दो॰ मारि कंस पुनि केश धरि, दियो यमुन जल डारि।
उग्रसेन राजा कियो, चँवर छत्र शिर ढारि॥

सो॰ बहुरि दियो सुख जाय, बंदि काटि पितु मातकी।
सुंदर दरश दिखाय, भयो तहां मंगल परम॥

कहिहौं सकल चरित बिस्तारी ❋ भव भय भंजन मङ्गलकारी
करि मधुपुरि के लोग सनाथा ❋ कुबिजा सदन बसे ब्रजनाथा
नन्द बिदा करि ब्रजहिं पठाये ❋ बिछुरत ब्रजबासिन दुख पाये
हरितज नँद आये ब्रज जबहीं ❋ भई यशोदा व्याकुल तबहीं
गोपी सुनि हित कुबिजा हरिको ❋ कियो परेखो अति गिरिधरको
भई बिरह बश सब ब्रजबाला ❋ कहिहौं सो सब प्रेम बिशाला
पुनि कुलरीति जानि बसुदेऊ ❋ हरि हलधर को कियो जनेऊ
बिद्यानिधि पुनि जानतराई ❋ विद्या पढ़न लगे दोउ भाई
पूरण काम गुरू के कीन्हे ❋ मरे पुत्र प्रभु तिनके दीन्हे
ज्ञान गर्ब ऊधो मन जानी ❋ पठये ब्रजहि श्याम सुखखानी
सो ऊधो गोपी संवादा ❋ प्रेम भक्ति रस की मर्यादा
कहों सुकथा विचित्र सुहाई ❋ भक्तजनन की अति सुखदाई

दो॰ पुनि ऊधो जैसे गये, प्रेम भक्ति को पाय।
ब्रजबासिन की सब कथा, कही श्याम सों जाय॥

सो॰ ब्रजहिं रहे ब्रजराज, ब्रजबासिन के प्रेम बश।
किये सुरन के काज, धारि चतुर्भुजरूप पुनि॥

सो द्वारका चरित्र सुहाये ❋ प्रकट पुराणन में सब गाये

अति बिचित्र हरि चरित अपारा ❁ काहू गाय लह्यो नहिं पारा
मति समान बुध जन सब गावैं ❁ गाय गाय तन पाप नशावैं
हरि पद पंकज प्रीति बढ़ावैं ❁ मन चंचल को तहां रमावैं
ब्रजबिलास हरि को अतिपावन ❁ रसमाधुर्य चरित्र सुहावन
ताते कछुक कहत हौं गाई ❁ सब सन्तन के पद शिर नाई
यामें कछुक बुद्धि नहिं मेरी ❁ उक्ति युक्ति सब सूरहि केरी
कियो सूर रस सिन्धु उधारा ❁ ताते प्रेम तरंग अपारा
हरिके चरित रत्न बिधि माना ❁ ब्रजबिलास सो सुधा समाना
पद रचना करि सूर बखान्यो ❁ कोमल बिमल मधुर रस सान्यो
समै समै के राग सुहाये ❁ अति विस्तार भाव मन भाये
ताको स्वाद कह्यो नहिं जाई ❁ कहत सुनत श्रवणन सुखदाई

दो० अतिशय करि मोहत मनहिं, गंधर्ब गुणनके संग।
कहत बनै तामें नहीं, क्रम सो कथा प्रसंग॥

सो० मेरे मन अभिलाष, प्रभु प्रेरित ऐसो भयो।
कहिहौं यह रस भाष, क्रम सों कथा प्रसंग सब॥

ताते निज मनकी रुचि जानी ❁ इहि विधि करौं प्रबन्ध सुबानी
द्वादश चौपाई प्रति दोहा ❁ तहँ पुनि एक सोरठा सोहा
कहूं कहूं शुभ छन्द सुहाई ❁ भाषा सरल न अर्थ दुराई
कहत सुनत समुझत मन भाई ❁ ध्यान रूप मय कथा सुहाई
कर्म धर्म नहिं नीति बखानी ❁ केवल भक्ति प्रेम सुखदानी
जानि कृष्ण के चरित पुनीता ❁ कहिहैं सुनिहैं सन्त सप्रीता
बहुरि कहत दोऊ कर जोरी ❁ सुनियो बिनय कृपा करि मोरी
चूक परी जो मोतन होई ❁ सुजन सुधारि लीजिये सोई
मैं नहिं कवि न सुजान कहाऊं ❁ कृष्ण बिलास प्रीति करि गाऊं

सो विचार के श्रवणन कीजै ❋ काव्य दोष गुण मन नहिं दीजै
ऐसे सबकों विनय सुनाई ❋ कृष्ण चरित वरणौं सुखदाई
कृष्ण चरित आनँद के रासा ❋ मंगल करण हरण भववासा

दो० बिघन बिनाशन शुभकरन, हरनताप त्रयशूल ।
चरित ललित नँदनंदके, सकल सुखनको मूल ॥

सो० चरणकमल उर धार, श्रीराधा नँदलालके ।
सुंदर रस आगार, ब्रजविलास अब वरणिहौं ॥

सम्बत शुभ पुराण शत जानौ ❋ तापर और नक्षत्र न आनौ
माघ सुमास पक्ष उजियारा ❋ तिथि पंचमी सुभग शशि वारा
श्री बसन्त उत्सव दिन जानी ❋ सकल विश्व मन आनँददानी
मनमें करि आनंद हुलासा ❋ ब्रजविलास को करों प्रकासा
बन्दौं प्रथम कमलपद नीके ❋ श्री वल्लभ आचारज जीके
श्री लक्ष्मण भट कुँवर उदारा ❋ जन उद्धारण हित अवतारा
माया ब्याधि मिटाय अनेका ❋ कियो प्रेम मारग दृढ़ एका
श्री गोकुल बस सुख उपजायो ❋ कृष्ण नाम को दान चलायो
बिरहानल में सुभग शरीरा ❋ वाणी प्रेम सिन्धु गम्भीरा
हरि प्रापति की रीति बताई ❋ विरह रूप करि प्रकट कराई
बिरह भयो जिन को सब नेमा ❋ विरह रूप करि जिन का प्रेमा
बिरहै भरी भक्ति विस्तारी ❋ तातें गोकुल गैल निहारी

दो० द्वापर तन धरि सुरन हित, कृष्ण सँहारे दुष्ट ।
श्री बल्लभ वपु धरि कियो, प्रेम पंथ कलिदुष्ट ॥

सो० मनबचक्रमसोंचित्त, श्रीवल्लभचरणन लग्यो ।
वही आस वहिवित्त, वहिसाधन वहियुक्तफल ॥

पुनि श्रीवल्लभ कुलहि मनाऊं ❋ चरणकमल तिन के शिर नाऊं

श्री गोकुल में जिनको धामा ❋ बिश्वबिदित सुन्दर गुण ग्रामा
प्रेम भक्ति की ज्योति बिराजै ❋ तेज प्रताप जगत पर राजै
जिनके सदन देखिये ऐसे ❋ नन्द महरिके सुनियत जैसे
तहां कृष्ण की नितनव लीला ❋ बाल बिनोद भरी सुख शीला
तिनकी शरण जीव जो आवै ❋ तौ दृढ़ भक्ति कृष्ण की पावै
देत श्रवण मग अति सुखदाई ❋ कृष्ण नाम रस सुधा पियाई
भक्ति दान को परम उदारा ❋ जगत बिदित श्री गोकुल द्वारा
तामहँ मंगल बंश मझारी ❋ परम कृपालु दीन दुखहारी
श्री मोहन जी नाम गुसाईं ❋ सुन्दर श्याम श्याम की नाईं
परम बिशाल कमलदल लोचन ❋ दयादृष्टि उर ताप बिमोचन
मधुर मनोहर शीतल बानी ❋ प्रेम सुधारस सों लपटानी

दो॰ तिनतीरथपति मधिदियो, कृष्णनाम मोहिंदान।
दीन जान राख्यो शरण, लगि के मेरे कान॥
सो॰ तिनके पद उर राख, ब्रजबिलास बर्णन करौं।
मो मनको अभिलाख, पूरण करिहैं जानि जन॥

बन्दतहौं सब सूर सुजाने ❋ जिन्हैं सूर सम सब कोउ मानै
प्रेम रूप बाणी परकासा ❋ प्रफुलित अम्बुज सुनि हरिदासा
कृष्ण रूप बिन और न देख्यो ❋ जगत बिषै तृण सम करि लेख्यो
राखे नैन सदा करि ध्याना ❋ दिव्य दृष्टि करि सुयश बखाना
लीला श्याम जन्म भर गाई ❋ रहसकेलि सब प्रकट जनाई
बाणी भांति अनेक बखानी ❋ कृष्ण प्रेम रस सों लपटानी
चढ़े कठोर मोह बश जेऊ ❋ होत प्रेमबश सुनि के तेऊ
कीनों अति उपकार जगत को ❋ मारग दयो चलाय भगत को
मोहिं बड़ाई करि नहिं आवै ❋ जिनको गायो सब कोइ गावै

चरण शीश धरि तिन्हैं मनाऊं ❋ यह अपराध क्षमा करि पाऊं
मोते यह अति होत दिठाई ❋ करत विष्णुपद की चौपाई
सो मम दोप न उरमें धरिये ❋ सफल मनोरथ मेरो करिये

दो० अब संतनकी मण्डली, बदतहौं शिर नाय।
बिना कृपा जिनकी भये, हरियश गाय न जाय॥

सो० करिहैं मोहिं सहाय, गुणगाहक परहित करन।
तिनको सहज सुभाय, संतत संत कृपालु चित॥

सन्त मण्डली को शिर नाऊं ❋ जिनकी कृपा विमलमति पाऊं
जिनकी कृपा विघ्न सब नासे ❋ जिनकी कृपा कृष्ण गुण भासे
जिनकी प्रेम भक्ति फल पाई ❋ जिनकी कृपा कुमति मिटि जाई
जिनकी कृपा होयँ गुण नाना ❋ जिनकी कृपा सर्व कल्याना
जिनकी कृपा मोह तम नाशे ❋ जिनकी कृपा ज्ञान परकाशे
जिनकी कृपा सकल सुखमूला ❋ होहु सो सन्त मोहिं अनुकूला
जै जै जै श्री कुंज बिहारी ❋ नन्दनँदन वृषभानु दुलारी
मंगल मूरति आनँदकारी ❋ लीला ललित भक्त भयहारी
रूप निधान प्रेम की रासी ❋ श्रीवृन्दावन धाम निवासी
अखिल नाम गुण सुखके धामा ❋ पूरण काम श्याम अरु श्यामा
युगल किशोर ध्यान उर धरिकै ❋ सुभग कमलपद वन्दन करिकै
ब्रजविलास रस परम हुलासा ❋ गावत हैं ब्रजवासी दासा

अथ कथाप्रसङ्ग वर्णन॥

दो० तत्त्वनाम पद परम गुरु, पुरुषोत्तम जगदीश।
कृष्णकमललोचनसुखद, सकलदेवमणिशीश॥

सो॰ बन्दौं नंद किशोर, वृन्दाबन बासी सदा।
श्री राधा चित चोर, आनँद घन भव भय हरण॥

कहौं कथा सुंदर सुख देनी ❋ अघ हरणी बैकुण्ठ निशेनी
कृष्ण चरण पंकज रति देनी ❋ जन पावन कर्त्ती जिमि वैनी
श्रीकलिन्द तनयातट पावन ❋ बसत मधुपुरी परम सुहावन
जाकी महिमा सुर मुनि गावैं ❋ तीन लोक पद बेद बतावैं
दरशन ते नर पावन होई ❋ कृष्ण कृपा विन सुलभ न सोई
उग्रसेन तहँ बसे नरेशा ❋ नीति निपुण सह धर्म सुवेशा
ताको सुवन कंस अतिपापी ❋ असुर बुद्धि भो विश्व सँतापी
कियो तात गहि बन्दीशाला ❋ आपन भयो कंस भूपाला
तात अनुज तहँ देवक नामा ❋ सुता तासु देवकी ललामा
दई कंस बसुदेवहिं ताही ❋ लोक बेद की रीति विवाही
दायज दियो अनेक बिधाना ❋ हय गज रथ पद भूषण नाना
दासी दास बहुत सँग दीनो ❋ दान मान परिपूरण कीनो

दो॰ तब चढ़ाइ रथ देवकी, आप भयो रथवान।
पहुँचावन अति हेतसों, चल्यो सहित अभिमान॥

सो॰ तेहि क्षण गिरा बिशाल, होत भई आकाश तें।
होय कंस को काल, देवकि को सुत आठवों॥

कंसासुर सुनि बचन अकासा ❋ भयो चकित मन मिट्यो हुलासा
शत्रु समान देवकी मानी ❋ रथ तें उतरि पर्यो अभिमानी
खड्ग निकासि हाथ में लीन्हो ❋ यह बिचार अपने मन कीन्हो
अबहीं याहि मारि दुख मेटौं ❋ पुनि कलेश काहेको भेटौं
केश पकरि देवकि गहि लीनी ❋ नहिं कछु कान बहिन की कीनी
तब बसुदेव दीन है कहहीं ❋ तिय बधि नहीं भूप यश लहहीं

वहुरो यह पुनि खुशी तिहारी ❁ राजन कीजै काज विचारी
सुनु वसुदेव भई नभ वानी ❁ तुमहुँ सुनी कछु नाहिं छिपानी
तातें अब शोच किन करिये ❁ पाछे काहे को दुख भरिये
बृक्ष फलै जो विप फल आगे ❁ ताहि बनै पहिले ही त्यागे
जो नहिं हतौं आज यह वाला ❁ मिटै न उरसे शोच विशाला
कन्या और व्याहि तोहिं देहौं ❁ याहि मारि उर शोच नशैहौं

दो० मुनिजन गुरुजन संग जे, तिन्हनि कह्यो तिहिंकाल।
बृथा होत है यज्ञफल, यह न उचित महिपाल॥

सो० यहै तुम्हारे मान, आनकदुन्दुभि देवकी।
इन्हैं न हतिये जान, वेद विरोध न कीजिये॥

पुनि बसुदेव कह्यो कर जोरी ❁ राजन सुनिय विनय कछु मोरी
बृथा देवकी को जिन मारो ❁ याको सुत है शत्रु तुम्हारो
सब सुत याके हम सों लीजै ❁ जीव दान याको प्रभु दीजै
यह बाचा हम तुम सों भाखैं ❁ चन्द्र सूर साखी दै राखैं
भली बात यह सब दिन जानी ❁ भावी विवश कंसहू मानी
हरि कीनो चाहैं सो होई ❁ ताहि मिटावन हार न कोई
तिन्हैं सहित नृप घर फिरि आये ❁ करि आगोट दृढ़ रखवाये
प्रथम पुत्र जब देवकि जायो ❁ लै वसुदेव कंस पहँ आयो
बालक देखि कंस हँसि दीनो ❁ इन तौ कछु अपराध न कीनो
अठवों गर्भ शत्रु है मेरो ❁ सो दीजो तुम मोहिं सवेरो
यह कहि अपनो पाप क्षमायो ❁ तब वसुदेव हर्ष को पायो
ऐसे वाल फेरि सो दीनो ❁ वसुदेव गमन भवन को कीनो

दो० तब ऋषिनारद कंसपहँ, लिये हस्ततलवीन।
गुण गावत गोविन्द के, आये परम प्रवीन॥

सो० उठ्यो देखिकै कंस, शीश नाइ पद बन्दिकै।
बैठाये परशंस, शुभ आसन ऋषि नारदहि॥

समाचार जो कछु है आये ❋ सो सब ऋषि को कंस सुनाये
सुनि नृप बचन बिहँसि ऋषि बोले ❋ तुम कत रहत शत्रु सों भूले
जाके भय तुम अति भय मानो ❋ अठवों कौन सु तुम कछु जानो
जो बड़ प्रथमहि आयो होई ❋ देव चरित्र जान कछु कोई
आठ लकीर खैंचि दिखराई ❋ गिनती में सब आठों आई
यह समझाय गये ऋषि ज्ञानी ❋ कंसासुर उर अति भय मानी
तेहि क्षण बालक फेर मँगायो ❋ लै बसुदेव तुरत ही आयो
लियो मूढ़ गहि कर में ताही ❋ पटकत भयो शिलापर वाही
याही बिधि षट बालक मारे ❋ मात पिता अति भये दुखारे
कहत अहो श्रीपति असुरारी ❋ तुम बिन कासों करहिं पुकारी
यह सन्ताप मिटै कब भारी ❋ बेगि लेहु प्रभु सुरति हमारी
केहि बिधि नाथ राखिये प्राना ❋ करत कंस निरवंश निदाना

दो० बिपति बिनाशन दुखदमन, जनरंजन सुरराय।
अब हमको कोऊ नहीं, तुम बिन और सहाय॥

सो० बिनती प्रभुहिं सुनाय, मनमहँ दम्पति दुखित अति।
होत न प्रकट जनाय, कंस असुर के त्रासतें॥

भई भूमि जब अधिक दुखारी ❋ बढ़्यो पाप असुरन को भारी
सहि न सकी तब गोतनधारी ❋ शिवबिरंचि पै. जाय पुकारी
सकल सुरन मिलि कियो बिचारा ❋ हमतें नहिं उतरै भुव भारा
बिनय करिय चलि श्रीपतिपाहीं ❋ कृपा करें तब सब दुख जाहीं
भूमि सहित सुर सकल सिधारे ❋ क्षीर सिन्धु तट जाइ पुकारे
जहँ श्रीपति श्रीसहित निवासी ❋ पुरुषोत्तम अबिगति अबिनासी

धेनु अग्रकरि विनय सुनाई ॐ जै जै जै त्रिभुवन के साईं
जै सुखकन्द सन्त हितकारी ॐ जै जगवन्द्य भूमि भयहारी
जै जै असुर समूह निकन्दन ॐ जै जै भक्तन के उर चन्दन
जै जै जै प्रणतारत मोचन ॐ दैत्य दलन सुर शोच विमोचन
जै जै जै प्रभु अन्तर्यामी ॐ सुनिय विनय सचराचर स्वामी
करिये प्रभु सो वेग उपाई ॐ हरिये नाथ भूमि गरुवाई

दो० धरिय मनुज तन दनुजहति, करिये धरणि उधार।
परसत पदपंकज मिटहिं, सकल भूमि अघभार॥

सो० पाहि पाहि भगवन्त, शरणागत वत्सल हरे।
क्षमा करहु अब कंत, दीन दुखित जनजानि हरि॥

दीन वचन जब धेनु पुकारी ॐ भई गिरा नभ मंगलकारी
जाहु सकल सुर घर भय त्यागी ॐ धरिहौं नर तनु तुम हित लागी
प्रथम जन्म देवकि वसुदेवा ॐ मोसम मांग लियो करि सेवा
तुम सम पुत्र हमारे होई ॐ मैं तिनको वर दीनो सोई
तैसे नन्द यशोदा जानों ॐ दूध पियावन उनहिंन मानों
गर्भ देवकी के अवतरिहौं ॐ वालचरित गोकुल में करिहौं
तुमहूं गोप वेष व्रज होऊ ॐ मम सँग सुख पावो सब कोऊ
यह कहि सुरन विदा हरि कीन्हों ॐ आप सुयोग शक्ति कहि दीन्हों
सप्तम गर्भ देवकी केरा ॐ तहां शेष सम अंश बसेरा
सो आकर्षण कै क्षण माहीं ॐ राखी गर्भ रोहिणी पाहीं
शक्ति जवहिं हरि आयसु पायो ॐ ततक्षण ताहि वहीं पहुँचायो
हरि चरित्र कछु जान न कोई ॐ जो कछु करन चहैं सो होई

दो० तब कृपालजनके सुखद, अविगति कमलाकन्त।
निज आगम देवकि उदर, दिय जनाय भगवन्त॥

सो॰ तनद्युति बढ़ी अपार, परम प्रकाशित भवन सब।
आनन मुकुर निहार, अतिप्रसन्न मन देवकी॥

निज मुख मुकुर देवकी देख्यो ❁ शरद चन्द्र पूरण सम लेख्यो
मिट्यो तिमिर भ्रम अति सुख पायो ❁ जान्यो कंस काल हरि आयो
प्रभु आगमन जान कर देवा ❁ आये सकल जनावन सेवा
नभतें गर्भस्तुति सब करहीं ❁ जै जै जै जै जै उच्चरहीं
जै ब्रह्मा शिव सेव्य सदाई ❁ जै बेदान्त बेद सुर साई
जै तीरथपद भवनिधि बोहित ❁ प्रणतपाल जै दीनन के हित
जै संकल्प सत्य गुण धामा ❁ जै मनवाञ्छित पूरण कामा
जै गोद्विज हित नर तनु धारी ❁ जै संतनपति गति अपहारी
जै कृपाल आनन्द बरूथा ❁ बन्दत चरण सकल सुर यूथा
जै पुरुषारथ अमित अनूपा ❁ महापुरुष सचराचर भूपा।
जै अहीश नितनव गुण गावैं ❁ तदपि नाथ गुण अन्त न पावैं
जो मुनिजन मन ध्यान न आवैं ❁ भक्ताधीन बेद यश गावैं

दो॰ अलख अरूप अनीह अज, प्रभु अद्वैत अनादि।
गर्भबास सों देवकी, कौतुक निधि सर्वादि॥
सो॰ किनहुँ न पायो भेव, शेष महेश गणेश बिधि।
नमो नमो तिहि देव, परम बिचित्र चरित्रशुभ॥

करि बिनती सुर सदन सिधारे ❁ परमानन्द मगन मन भारे
तब देवकि पति पास बखाने ❁ कोमल बचन प्रेमते साने
हो पिय सो उपाय कछु कीजै ❁ अबके यह बालक रखलीजै
बुधिबल छल पी कीजै सोई ❁ जामें कुल को नाश न होई
मैं मन बच अबके यह जाना ❁ हैं मम उदर देव भगवाना
कहा करौं कछु यत्न न पाऊं ❁ कौन भांति यह गर्भ दुराऊं

सत्य धर्म वर जाय तो जाऊ ❋ पति यह सुत हित करिय उपाऊ
कर्म धर्म सब हरि हित भाखैं ❋ सो हरि तजि कहुँ धर्महिं राखैं
सुनहु पिया अस को हितकारी ❋ जो यह बालक लेहि उबारी
शिर ऊपर बैठे रखवारे ❋ पायँन पड़े निगड़ अति भारे
कंस असुर अपवंश विनाशन ❋ किहि विधि सों उबरे तिय तासन
ऐसो को समरथ जग पाई ❋ जो इहि अवसर होय सहाई

दो॰ षट बालकबध सुरति करि, दम्पति दुखित विचार।
अति आकुल भय कंस के, दृगन चली बहि धार॥

सो॰ करुणासिंधु दयाल, तात मात अति दुखितलखि।
प्रकट भये तिहिकाल, दुखमोचन लोचनसुखद॥

योग शक्ति हरि आयसु पाई ❋ प्रकटी नन्द भवन सो जाई
ताके प्रकटत ही नर नारी ❋ भये नींद वश देह विसारी
भादों कारी निशि अति पावन ❋ आठैं बुध रोहिणी सुहावन
अखिललोकपति जनसुखदायक ❋ आके जन्म लियो सुरनायक
शीश मुकुट कलकुण्डल कानन ❋ शरद मयंक सरस शुभ आनन
चारु चरण पंकजदल लोचन ❋ चितवनि सुखद ताप त्रय मोचन
कुटिल अलक भ्रू मेचकताई ❋ जन मन हरन परम सुखदाई
पीत बसन तन श्याम तमाला ❋ उर श्री वत्स चारु मणिमाला
भुजा विशाल मनोहर चारी ❋ शंख चक्र गद अम्बुजधारी
अंग अंग सब भूषण नीके ❋ परम विचित्र भावते जीके
चरण सरोज उदित नख जोती ❋ कमल दलन राखे जनु मोती
परम प्रताप सुभग शिशु वेखा ❋ अद्भुत रूप देवकी देखा

दो॰ देखिअमितछविचकितमति, पतिढिगलियेबुलाय।
दम्पति परमानन्द मन, परे हर्षि सुत पाय॥

सो० भरे प्रेम जल नैन, अति सनेह आकुल शिथिल।
बोले गदगद बैन, जोरि पाणि बिनती करत॥

प्रभु केहिबिधि तुम गुणन बखानौं ❀ तुम मायाबश तुमहिं न जानौं
सहसानन जाके गुण गावैं ❀ नेति नेति जेहि निगम बतावैं
जाकी भ्रू बिलास अनयासा ❀ अखिललोक उपजे अरु नासा
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावैं ❀ कृपा करहु तब दरशन पावैं
जो सबते पर अज अबिनासी ❀ सो किमि कहिय उदर मम बासी
परम बिचित्र चरित्र तुम्हारे ❀ मोहत हैं प्रभु मनहिं हमारे
तात मात के बचन सुहाये ❀ सने प्रेमवश प्रभु मन भाये
बोले तात मात सुखदानी ❀ मधुर मनोहर अमृत बानी
सुनहु मात मैं तुमहिं सुनाऊं ❀ प्रथम जन्म की कथा बताऊं
तुम यांच्यो मोहिं कर तप भारे ❀ तुम समान सुत होय हमारे
जनहित बिरद मोर श्रुति गायो ❀ सो कैसे करिजात लजायो
तातें मैं बर तुम को दीनो ❀ सो हम आय सत्य अब कीनो

दो० शिव ब्रह्मा सनकादि मुनि, ध्यान सकत नहिं पाय।
सो मैं तुम्हरे प्रेम बश, दियों दरश निज आय॥

सो० कौतुकनिधि सुरराय, करत चरित मुनि मनहरण।
महामोह उरभाय, दियो बहुरि पितु मात मन॥

करहु तात अब बेग उपाई ❀ हमहिं कंसते लेहु बचाई
गोकुल हमहिं देहु पहुँचाई ❀ तहां यशोदा कन्या जाई
मोहिं राखिकै यशुदा पासा ❀ कन्या लै आवहु अनयासा
सो कन्या लै कंसहि दीजै ❀ तात हमारो नाम न लीजै
ऐसहि मात पिता समुझाई ❀ भये तुरत शिशु यदुकुलराई
देखि चरित मुनि प्रभु की बाता ❀ शिवमय हर्ष बिबश पितु माता

सुत उठाय उर सों लपटायो ❋ प्रेम विवश लोचन जलछायो
कहति देवकी पति सुनि लीजै ❋ गमन वेगि गोकुल को कीजै
जब लगि सुनहि न वह हत्यारो ❋ मन वच क्रम नृप को न पत्यारो
बनै नाथ उर धीरज धारे ❋ नाहिन इतने भाग्य हमारे
जो यह सुख नयनन पुट पीजे ❋ ऐसे सुत को यश सुनि लीजे
दरशन सुखित दुखित महतारी ❋ शोचत विकल कंस भयहारी

दो० अति अँधियारी अर्द्ध निशि, भट घेरे चहुँ ओर।
कौन भांति जैहैं दई, पायँ निगड़ अतिघोर॥

सो० बरषत अति जल जोर, घन गरजत चमकत चपल।
बीच यमुन अतिघोर, पार कवन विधि पाइहैं॥

कहा करौं अब काहि पुकारौं ❋ कौन भांति धीरज उर धारौं
कंस सरोष तवहिं किन मारी ❋ विनती करि पति वृथा उबारी
ऐसो सुत बिछुरत महतारी ❋ कौन भांति जीवै दुख भारी
कृपा समुद्र भक्त सुखदानी ❋ सुनत मातु की आरत बानी
कृपा करी सब भ्रम भय टारे ❋ गिरे निगड़ पायँनतें भारे
तब बसुदेव हरष तिहि ठाहीं ❋ लक्षधेनु मनसी मन माहीं
पुत्र गोद लै तुरत सिधाये ❋ द्वार कपाट खुले सब पाये
रखवारे सब सोवत देखे ❋ सपदि चले उर हरष विशेखे
तबहीं मघवा वृष्टि निवारी ❋ मन्द समीर भई श्रमहारी
हरिमुख चन्द्रप्रभा तम नाशै ❋ क्षण क्षण तड़ित पंथ परकाशै
प्रभु पर शेष छांह फण छाई ❋ आगे सिंह दहाड़त जाई
सो बसुदेव न जानत भेवा ❋ पहुँचे जाय यमुन तट देवा

दो० सरित देखि गम्भीर अति, मनमें शोच विचार।
गोकुल के सम्मुख धस्यो, प्रभु प्रताप उर धार॥

सो० यमुनापति पहिंचानि, मन अनन्द हुलस्यो हियो।
परसनहित पदपानि, अति प्रबाह ऊंच्यो उठ्यो॥

गुल्फ जंघ कटिलों जल आयो ❋ तब हरिको कछु ऊर्ध्व उठायो
ज्यों ज्यों बसुदेव सुतहि उठावै ❋ त्यों त्यों जल ऊपर को आवै
नाक प्रयन्त नीर जब आयो ❋ तब हरि पद अधको लटकायो
परसि नीर हुंकारहिं दीनों ❋ तुरतहि भयो गुल्फतें हीनों
भयो पार लैकै घनश्यामहिं ❋ गये बसुदेव नन्द के धामहिं
तहां सकल जन सोवत पाये ❋ सुत लै यशुमति पास सिधाये
कन्या तहां पुनीत निहारी ❋ लई उठाय राखि दैत्यारी
फिरि फिरि सुत को बदन निहारी ❋ चले तुरत भय कंस विचारी
जो सम्पति निगमागम गाई ❋ योगीजनन जानि नाहिं पाई
सनकादिक सरबस बिधि भाना ❋ शंकर जासु धरत हैं ध्याना
शारद नारदादि यश गावैं ❋ सहस बदन हूं पार न पावैं
अहो बिलोकहु भाग्य बड़ाई ❋ सोई सेवत यशुमति माई

दो० वहां देवकी प्रेमबश, अति ब्याकुल अकुलात।
बालक अरु बसुदेव कहँ, पठै बहुत पछितात॥

सो० बैठत उठत अधीर, ब्याकुल सोरहि सेज पर।
पोंछत नैनन नीर, बोल सकत नहिं कंस भय॥

मन मन सुर मनाय सनमानै ❋ मत यह भेद दई कोउ जानै
रखवारे कहुँ जान न जाहीं ❋ मत कोइ दुष्ट मिलै मगमाहीं
यातें अधिक शोच मोहिं भारी ❋ क्यों दुरि है शशि मुख उजियारी
मगमहँ यमुना अति गम्भीरा ❋ केहि बिधि पहुँचैंगे उहतीरा
गोकुल पहुँचे धौं मगमाहीं ❋ भई बेर पति आयो नाहीं
यहि बिधि शोच विवश अकुलाई ❋ इक क्षण कल्प समान बिहाई

पहुँचे वसुदेव तिहि क्षण जाई ❋ बूझत उठी पुत्र कुशलाई
केहि विधि पुत्र राखि पति आये ❋ समाचार वसुदेव सुनाये
कन्या दई देवकी जबहीं ❋ द्वारकपाट गये लगि तबहीं
बेरी ह्वैगईं पग ततकाला ❋ कन्या रोय उठी तिहि काला
चहुँ दिशि जाग परे रखवारे ❋ तुरत कंसपहँ जाय पुकारे
सुनतहिं उठ अति आतुर धायो ❋ लीने खड्ग तहां चलि आयो

दो० कन्या लै तब देवकी, आगे राखी आय।
दीन बचन आधीन ह्वै, कंसहि कही सुनाय॥

सो० अहो भ्रात यह दान, तुम हमकहँ अब दीजिये।
है कन्या जियजान, याते भय तुमको नहीं॥

सुनत कंस भगिनी की बानी ❋ मृत्युत्रासतें शठ रिस मानी
यामें कछू होय छल कोई ❋ को जानै विधनागति गोई
यह विचार कन्या गहि लीनी ❋ पटकन की मनसा तिहि कीनी
कर तें छूटि गई आकाशा ❋ दिव्य रूप तहँ कियो प्रकाशा
बोलति भई गगन ते बानी ❋ अरे मन्दमति अधम अज्ञानी
मम हत्या तैं लई बृथाहीं ❋ तेरो रिपु प्रकट्यो ब्रजमाहीं
सर्प ग्रसित जिमि दादुर होई ❋ माखी खान चहत शठ सोई
तैसे तू चह मारन मोहीं ❋ आयो काल निकट शठ तोहीं
ऐसे कहि कै स्वर्ग सिधारी ❋ कंसहि शोच भयो सुनि भारी
पर्‍यो देवकी चरणन माहीं ❋ मैं मारे तुव पुत्र बृथाहीं
क्षमा करौ मेरे अपराधा ❋ है विधिकी गति अलखअगाधा
वसुदेवहु सन क्षमा कराई ❋ निगड़ दिये पगतें कटवाई

दो० गयो शोच व्याकुल सदन, पर्‍यो सेजपर जाय।
जागतही बीती निशा, नींद पड़ी नहिं ताय॥

सो० हरिके चरित अनूप, असुर बिमोहन सुर सुखद।
नर न परत भवकूप, सहज प्रेम गावहिं सुनहिं॥

यशुदा जब सोवत ते जागी ❋ सुत मुख देखतही अनुरागी
पुलक अंग उर आनँद भारी ❋ देखि रही मुख शशि उजियारी
गदगद कंठ न कछु कहिआयो ❋ हर्षवन्त ह्वै नन्द बुलायो
आवहु कन्त पुत्र मुख देखौ ❋ बड़ो भाग्य अपनो करि लेखौ
भये प्रसन्न आज सब देवा ❋ सुफल भई सबहिन की सेवा
सुनत नन्द प्रिय तियकी बानी ❋ प्रेम मगन तन दशा भुलानी
हर्षित ह्वै उठि आतुर आयो ❋ यशुमति सुतको बदन दिखायो
देखत मुख उर सुख भयो जैसो ❋ कहि न सकहिं श्रुति शारद तैसो
कहा कहौं तिहि क्षणकी शोभा ❋ मनहुँ महाछवि तरुके गोभा
आनँद मगन नन्द मनमाहीं ❋ जानत नहिं हमको केहि ठाहीं
रोय उठे तब नन्दके लाला ❋ जागि परे सब ग्वालिन ग्वाला
जित तित तें हर्षित उठ धाये ❋ मनहुँ रंक धन लूटन आये

दो० देहिं बधाई नन्द को, परे यशोदा पाँव।
कहैं पियारे लाल को, नेक हमहिं दिखराव॥

सो० अति हर्षित नँदराय, कह्यो बजावन सोहिलो।
नारिउठीं सब गाय, लाग्यो बजन बधावनो॥

छं० सुर सिद्ध मुनिन्दा परम अनन्दा सुनि गोकुल हरि आये।
दुन्दुभी बजावत मंगल गावत तियन सहित उठि धाये॥
विद्याधर किन्नर सुघर कण्ठबर करत गान सचुपाये।
गरजत तिहिकाला मधुर रसाला घनगति जनन जनाये॥
बाजत करताला बरषत माला सुरतरु सुमन सुहाये।
सब करैं कलोलैं हर्षित बोलैं जै जै जै सुख पाये॥

नभ महँ धुनि होई सुन सब कोई भये सबन मन भाये।
सन्तन हितकारी असुर सँहारी आवत क्षिति सुख छाये॥
शिव ब्रह्मादिक मुनि सनकादिक परम प्रफुल्लित गाता।
गुण गण सब गावैं प्रभुहि सुनावैं आनँद उर न समाता॥
भागे गन चीते सब भय भीते प्रकटे दनुज निपाता।
अति गन हर्षें पुनि पुनि वर्षें सानुज सुरतरु जाता॥
सुरतिय मनमाहीं निरखि सिहाहीं यशुमति के बड़ भागा।
इन सम हम नाहीं पुण्यन माहीं कहैं सहित अनुरागा॥
योगी जेहि ध्यावैं ध्यान न पावैं करि करि योग विरागा।
जो वेद न जानै नेति बखानै सो सुत है उर लागा॥

दो० भरे परमआनन्द सुर, उपजावत अनुराग।
बार बार वर्णन करैं, नन्द यशोमति भाग॥

सो० रहे सदनसुर भूल, गोकुल को उत्सव निरखि।
जन्मे मंगलमूल, ब्रजवासी हर्षित सबै॥

ब्रजवासिन सबहिन सुनि पायो ❁ नन्दमहर घर ढोटा जायो
गुणानंद लोतरा बँधाये ❁ नंदराय तब विप्र बुलाये
काढ़ि लग्न ग्रह योग सुधायो ❁ अति विचित्र सब द्विजन सुनायो
करत बेद ध्वनि अति सुखपाई ❁ देहिं नंद को सकल बधाई
तब अस्नान महरि उठि कीनों ❁ भाल तिलक चन्दन लै लीनों
जातकर्म करि पितर पुजाये ❁ भूषण वसन द्विजन पहिराये
गायें लक्ष सवत्स सोहाई ❁ बाढ़ी दूध नवीन मँगाई
सब विधि सकल अलंकृत कीनी ❁ करि सङ्कल्प द्विजन को दीनी
मुदित विप्र सब देइँ असीसा ❁ चिरजीवहु सुत कोटि बरीसा
हँसि हँसि बहुरि महरि नँदराई ❁ हितकुटुम्ब सबै निकट बुलाई

बहु सुगन्धि मथि तिलक बनाये ❀ भूषण बसन विविध पहिराये
हुते जु कुल में बृद्ध जिठेरे ❀ हितसों पांय परे सबकेरे

दो० बन्दी मागध सूतगण, भरे भवन सब आय।
लै लै नाम बुलाय सब, परितोषे नँदराय॥

सो० मनबांछित सबलेहिं, जो जाके भावैं मनहिं।
नन्दभरे रसदेहिं, किये अयाची याचकनि॥

सुनि सुनि धाईं ब्रजकी नारी ❀ लेकर कमलन कंचन थारी
मंगल साज साज सब लीन्हें ❀ सहज शृंगार सुभग तन कीन्हें
चारु चीर तन दृग कजरारे ❀ भाल तिलक कुच शिथिल सवाँरे
मांग सिंदूर तरोना कानन ❀ रोरी रंग किये कछु आनन
आँगिया अंग कसे छबि छाजे ❀ विविध भांति उर हार बिराजे
अति आनंद मगन मन फूली ❀ अंचल उड़त सँभारन भूली
निज निज मेल मिली सब गावैं ❀ विहरत नंद धाम को आवैं
इक भीतर इक आंगन माहीं ❀ इक द्वारे मग पावत नाहीं
सब को यशुमति निकट बुलावैं ❀ मुख उघार सुत को दिखरावैं
देहिं अशीष परो शिशुपांयन ❀ जीवहु जब लग नभ तारागन
पूरण काम भयो ब्रज सारो ❀ धन्य यशोदा भाग्य तिहारो
धन्य सो कोखि जहां सुत राख्यो ❀ पुण्य तिहारो जात न भाख्यो

दो० धन्य दिवस धनि राति यह, धन्य लग्न तिथि बार।
जहँ जायो ऐसो सुवन, थिर थाप्यो परिवार॥

सो० पुनि पुनि शीश नवाय, देहिं अशीष मनाय सुर।
जियहु सुवन नँदराय, रूप अचल कलकी धुनी॥

परमानंद नन्द अनुरागे ❀ चित्र बिचित्र बस्त्र बहु मांगे
सारी सुरँग कसब के लहिंगे ❀ अति चटकीले मोलन महिंगे

सिगरी वधू वोल पहिराई ❋ जो जैसी जाके मन भाई
देहिं अशीष मुदित ब्रजनारी ❋ फूलीं कमल कलीसी न्यारी
एक रहसि निज निज गृह जाहीं ❋ इक हुलसी आवैं गृह माहीं
एक कहैं एकन सों धाई ❋ हौं यह बात भली सुनि आई
महरि यशोदा ढोटा जायो ❋ नंदद्वार सखि वजत वधायो
चलो वेगि सखि देखिय सोई ❋ विधना चाहतही है सोई
इक नाचैं इक ढोल बजावैं ❋ एक नंद को गारी गावैं
एक साथिये द्वार वनावैं ❋ एकै तोरण द्वार वँधावैं
ध्वज पताक तोरण छविछाई ❋ घर घर होत अनंद वधाई
पुनि पुनि सुमन देव वर्षावैं ❋ फूलन सों सव गोकुल छावैं

दो० ध्वज पताक तोरण कलश, वंदनवार दुवार ।
गोपन के घर घर वँधे, तोरण मंगलचार ॥

सो० नंदसदन सविचार, बरणिसकै सो कौन कवि ।
लियो जहां अवतार, छवि सागर त्रिभुवनधनी ॥

ग्वालवृंद सब सुनि उठिधाये ❋ बालवृंद सव निकट बुलाये
घसि बन धातु चित्र सव कीने ❋ गुंजा भूषित भूषण लीने
यद्यपि अरु भूषण तन माहीं ❋ तद्यपि अहिरन गुंज सुहाहीं
एक कहैं एकन समुझाई ❋ आज वनहिं कोऊ नहिं जाई
गैया लेपन सहित वनावो ❋ चित्र विचित्र वेगि लै आवो
पूत नन्द के घर है जायो ❋ भयो सवन के मन को भायो
कितनो गहर करत विन काजा ❋ वेगि चलो सव सहित समाजा
दधि माखन के माठ भराये ❋ कछु इक हरदी रंग मिलाये
लिये शीश पर केतिक गावैं ❋ केतिक ताल मृदङ्ग वजावैं
मिलिमिलिनिजनिजयूथनमाहीं ❋ नंदसदन निरखत सव जाहीं

देखि नंद अति आनँद पावैं ❀ हँसि हँसि सबको निकट बुलावैं
छुइ छुइ चरण भेंट धरि आगे ❀ देहिं बधाई अति अनुरागे

दो० नाचत गावत मगन मन, भई सदन अति भीर।
मनु आये उतसाह सब, धरि धरि गोपशरीर॥

सो० देह धरे आनन्द, मनहुँ नंद तिन मधि लसै।
जन्मे आनँदकन्द, कहि न सकहिं सुखसहसमुख॥

इक नाचत इक गावत ठाढ़े ❀ इक कूदत अति आनँद बाढ़े
छिरकत एक दूध दधि डोलैं ❀ एक कुलाहल करत कलोलैं
मनो नंद घर दधि को कांदौं ❀ बरसत दूध दही जनु भादौं
एक धाय एकन पै जाहीं ❀ एकै मिलत डारि गलबाहीं
एक एक के पाँयन परहीं ❀ इक दधि दूर्वाक्षत शिर धरहीं
अति उछाह सबके मन माहीं ❀ राजा राव गनत कछु नाहीं
गोकुल मध्य देखिये जितहीं ❀ करत गोप कौतूहल तितहीं
एकै लूट नन्द को लेहीं ❀ एकै एकन को धन देहीं
एकन हित करि नन्द बुलावैं ❀ पट भूषण तिन को पहिरावैं
एक कहैं हम तब कछु लैहैं ❀ जब लालन मुख देखन देहैं
एक जो एकन तें कछु लेहीं ❀ ते निशंक एकन को देहीं
अति आनंद मगन पशुपालक ❀ नाचत तरुण बृद्ध अरु बालक

दो० गोकुल को आनंद सब, कापै बरण्यो जाय।
जहां परम आनंदमय, लियो जन्म हरिआय॥

सो० नित नव होत बिलास, हरिमुकुन्द के जन्म तें।
ब्रजसम्पदासुपास, सुरमुनि कहँ कौतुक निरखि॥

जब तें जन्म लियो हरि आई ❀ सुखसम्पति ब्रज घर घर छाई
सो उदार सब परम प्रबीना ❀ सब सुन्दर सब रोग बिहीना

मुदित जहां तहँ सब ब्रजवासी ❋ सब यशुमति सुत प्रेम उपासी
सँग साधन बरण्यो किमि जाहीं ❋ सुत सुरेश लखि विभ्रम जाहीं
अति प्रकाश मन्दिर के माहीं ❋ फैलिरही हरि छवि की छाहीं
ग्वाल गाय गोपन की भीरा ❋ कहुँ दधि कहुँ माखन कहुँ क्षीरा
भूमि बाग वन गिरि रमनीया ❋ खग मृग सर सरिता कमनीया
बिटप बेलि सब सहित फूल फल ❋ दिशा प्रकाशित निर्मल जल थल
सुरभी सुर सुरभी सम तूला ❋ भयो सकल ब्रज मंगल मूला
बिभव भेद यह कोउ न जाने ❋ आदिहि ते हम ऐसे माने
कृष्ण जन्म आनंद बधाई ❋ सुरपुर नाग तिहूंपुर भाई
ब्रजबासिनगण अधिक उछाहू ❋ करि नहिं सकहिं सहसमुख काहू

दो॰ ब्रजको सुख को कहि सकै, सुखमा बढ़ी अपार।
सुखनिधान भगवान जहँ, लियो मनुज अवतार॥

सो॰ प्रगटे गोकुल चंद, संत कुमुद वन मोदकर।
तमकुल असुरनिकंद, ब्रजजन चारु चकोर हित॥

नित नव भीर नंद के द्वारे ❋ याचकजन सब होयँ सुखारे
गांव गांव ते सुनि सुनि आवैं ❋ मन भायो सब कोऊ पावैं
पांच दिवस इहि बिधि सुख पायो ❋ छठयों दिवस छठी को आयो
मंदिर सकल सुवास लिपायो ❋ जहां तहां चित्रित करवायो
बीथी चारु सुगंधि सिंचाई ❋ द्वारन बंदनवार बँधाई
जानि कुटुम्ब मित्र हित जेते ❋ नंदराय न्योंते सब तेते
ठौर ठौर बहु व्यंजन होई ❋ भोजन कहँ आये सब कोई
गोपबधू सब बनि बनि आवैं ❋ लालन को पहिरावन ल्यावैं
जरिकस कुरता भूषण टोपी ❋ रत्नसमेत प्रेम रँग ओपी
रोरी अक्षत पान मिठाई ❋ धरि धरि कञ्चनथारिन लाई

गावहिं मंगल कोकिल बानी ❋ नंद भवन आवहिं हरपानी
करि आदर यशुदा बैठावैं ❋ देखि श्यामघन सबसुख पावैं

दो० बृषभानादिक गोपबर, ब्रजबासी समुदाय।
आये सब नँदराय गृह, भूषण बसन बनाय॥

सो० अति आदरकर नंद, शुभआसन दीन्हे सबन।
सबके मन आनंद, बजत दुन्दुभी नचत नट॥

कहूं ग्वाल गावत हैं होरी ❋ कहूं खिलावत गाय घनेरी
बंश प्रशंसा भाट सुनावैं ❋ कितहूं ढाढ़ी ढाढ़िनि गावैं
देहिं गोपगण तिनको दाना ❋ भूषण बसन धेनु मणि नाना
परजा सकल खिलौना ल्यावैं ❋ अति अद्भुत कापै कहि आवैं
धरहिं नंद के आगे आनी ❋ राखहिं सब अतिशय सुख मानी
तिनहीं देहिं निछावरि हरिकी ❋ कोमल श्यामल सुन्दर बरकी
लालन हित सों नंद रखायो ❋ बिशुकर्मा सब बांछित पायो
ऐस दिवस पामर युग पायो ❋ तब सब गोपन नंद जिमायो
छिरकि सुगंध पान कर दीनो ❋ तब सब गोपन भोजन कीनो
मंगलमय रजनी जब आई ❋ गाय उठीं सब नारि सुहाई

दो० कुरता टोपी पीतरँग, लालन को पहिराय।
लै उछंग पूजन छठी, बैठीं हर्षित माय॥

सो० करि कुलको ब्योहार, करी आरती श्याम की।
करतनिछावरिनारि, तन मनधनशशिमुखनिरखि

नेग जोग सब नेगिन पायो ❋ दियो सबनि यशुदा मन भायो
प्रातहि उठि लालन अन्हवाये ❋ सुदिन शोधि पलना पौढ़ाये
निरखि निरखि यशुदा बलिजाई ❋ अरुण चरण कर कोमलताई
ब्रजबासी जीवन नँदलाला ❋ मातु सुकृत फल मदनगोपाला

नितनव मंगल होहिं सुहाये ❁ मंगल निधि जब ते हरि आये
नंद सुकृत बरषा ऋतु सोई ❁ यशुमति सुकृत अकाश बनोई
तहँ घनश्याम श्याम तन उनये ❁ मंद हँसन दामिनि द्युति जुनये
रंजन मंद मधुर किलकारी ❁ ब्रजजन मोरन आनँदकारी
दादुर गुणगण गावहिं दासा ❁ परम प्रीति मन परम हुलासा
पलना पचरँग मणि छवि छाई ❁ इन्द्र धनुष उपमा तिन पाई
गजमुक्तन की लर लटकाई ❁ सोइ मानों बग पांति सोहाई
ब्रज घर घर सुख सम्पति छाई ❁ सोई मनहुँ भूमि हरि आई

दो० बरषत परमानन्द जल, नन्द सदन जग माहिं।
ध्यान भूमि दृग सरित मग, जनउर सिन्धु समाहिं॥

सो० पूरण होत सुनाहिं, यद्यपि निशि वासर भरन।
बढ़त लहरि पुलकाहिं, हरिमुखशशिराका निरखि॥

कंसहि वहां नींद निशि नाहीं ❁ अति चिंता व्याकुल मन माहीं
बैठ्यो निकसि सभा उठि प्राता ❁ मंत्री बोलि कहहि सब बाता
मेरो रिपु प्रगट्यो ब्रज माहीं ❁ कौन भांति पहिंचानों ताहीं
जाते जाय वेगि वह मारो ❁ ऐसो तुम कछु मंत्र विचारो
दिन दिन बड़ो होय अब सोई ❁ को जाने फिरि कैसी होई
बोल्यो एक असुर सुनु राजा ❁ क्यों डरपत इतने के काजा
मोपै एक मंत्र सुनि लीजै ❁ धर्म काज कछु होन न दीजै
जप तप होम होन नहिं पावैं ❁ विप्रन साधुन असुर सतावैं
जो वह देव होय गो कोऊ ❁ सहि नहिं सकै प्रगट ह्वै सोऊ
तब तेहि असुर जाय संहारैं ❁ या विधि शत्रु तुम्हारे मारैं
बोलो एक बात यह नीकी ❁ औरौ सुनो हमारे जीकी
देश देश को असुर पठावो ❁ बालक मासक के जे पावो

दो० तिन सबहिन को बध करैं, बचन न पावै कोय।
इनहीं में वह होयगो, मास्यो जै है सोय॥
सो० कह्यो कंस हरषाय, कहैं मंत्र दोऊ भले।
पठवहु असुर निकाय, जाय करैं कारज सँभारि॥

या बिधि असुर बिदा बहु कीनों ❋ बाल वधन की आयसु दीनों
कह्यो जाय ब्रज बेगहि कोई ❋ तहां के बालक मारै सोई
कह्यो पूतना आयसु पाऊं ❋ तौ यह कारज मैं करि ल्याऊं
सकल घोष शिशु जाय नशाऊं ❋ जो कहिये तौ जीवत ल्याऊं
क्षण में रूप मोहिनी धारौं ❋ वशीकरण पढ़ि सब पर डारौं
घसि कङ्कोल उरोजन लाऊं ❋ ब्रजवासिन के बाल पियाऊं
तौ पूतना नाम कहवाऊं ❋ जो नृप को कारज करिआऊं
तुरत कंस तेहि आयसु दीनों ❋ सुनतहि बचन गवन तिन कीनों
ता दिन नन्द मधुपुरी आयो ❋ राजअंश कछु नृप कहँ ल्यायो
नृप दरबार ताहि पहुंचायो ❋ समाचार वसुदेव को पायो
छोड़ि बन्दिते नृप ने राखे ❋ हते मित्र सुनि के अभिलाखे
मिलन गये तिनको नँदराई ❋ उठि वसुदेव मिले हरषाई

दो० कुशल पूछि करि परस्पर, बारम्बार सप्रीति।
बैठारे नँदराय ढिग, करिकै आदर रीति॥
सो० तब बोले नँदराय, सुनिय दैव भावी प्रबल।
तासों कछु न बसाय, जगत भ्रमत जाकेबिबश॥

तुम अति कष्ट कंसते पायो ❋ सुनि सुनि भयो बहुत पछितायो
आजु देखिकै चरण तिहारे ❋ भये हमारे नैन सुखारे
तब बसुदेव कही मृदुबानी ❋ अहो नन्द तुम सत्य बखानी
कर्मरेख नहिं जात मिटाई ❋ बिधि की गति कछु जात न पाई

सुन्यो नंदसुत भयो तुम्हारे ❀ तब ते अति सुख भयो हमारे
तुमको जरा आय नियराई ❀ बड़ी बैस विधि भयो सहाई
तब नँद हलधर जन्म सुनायो ❀ प्रथमहिं तिन्हें रोहिणी जायो
तिनको उत्सव प्रकट न कीनो ❀ कंस त्रास अपने उर लीनो
पुनि वसुदेव बहुत सुख पायो ❀ तब ऐसे कहि वचन सुनायो
सुनहु नंद तुम नीके जानो ❀ कंस नृपति कृत नाहिं छिपानो
ताते अब वे दोऊ बालक ❀ अपने मानि करो प्रतिपालक
अब तुम वेगि गोकुलहि जाहू ❀ बालक हित पतियाहु न काहू

अथ पूतनावधलीला ॥

दो० जित तित भेजे कंस के, करत असुर अनरीति ।
प्रजा लोग के बालकन, ताते हैं अति भीति ॥
सो० गई पूतना आज, ब्रज के बालकघातिनी ।
करि है कछु अकाज, वेग धाम सुधि लीजिये ॥

सुनि वसुदेव वचन नँदराई ❀ भये विदा तुरते भय पाई
निकसत शकुन अशुभ मग पायो ❀ तातें अधिक शोच उर छायो
क्षिप्र चले कछु सुधितन नाहीं ❀ बालक की चिंता मन माहीं
इहां पूतना ब्रज में आई ❀ रूप मोहनी प्रकट बनाई
गरल बांटि कुचसों लपटायो ❀ ऊपर सुभग शृंगार बनायो
अतिही कपट छबीली सोहै ❀ जो देखै ताको मन मोहै
इत उत है नँदधामहिं आई ❀ देखि रूप यशुदा मन भाई
देखि रही मुख सुन्दरताई ❀ कै यह नर के सुरकी जाई
काकी वधू कौन की बेटी ❀ अब लों ब्रज में कबहुं न भेटी
बिन पहिंचाने आदर कीनो ❀ बैठन को शुभ आसन दीनो
अहो महरि पालागन मेरो ❀ हों आई सुत देखन तेरो

हरि पलना पर मन मुसुकाई ❋ यशुमति कछु गृह काज सिधाई

दो० तबहिं राक्षसी दुष्टमति, पलना के ढिग जाय।
निरखि बदनमुखचूमिके, लीन्ह उछंग उठाय॥

सो० दियो कमल मुखमाहिं, विषलपट्यो अस्तनतुरत।
पकरि दुहूं कर माहिं, लगे करन पय पान हरि॥

पय सँग प्राण खिंचे जब वाके ❋ ह्वै गये अंग शिथिल सब ताके
तब सो लगी छुड़ावन बालक ❋ सो क्यों छुटै दुष्ट कुलघालक
पयसँग प्राण खींच हरि लीना ❋ पठै स्वर्ग जननीगति दीना
परी मृतक ह्वै असुर सुनारी ❋ योजन लौं निज तन विस्तारी
यशुमति धाय देखि गुहरायो ❋ पलना पर बालक नहिं पायो
त्राहि त्राहि करि धन ब्रज धाईं ❋ व्याकुल विपुल नंद गृहआईं
अति व्याकुल यशुमति महतारी ❋ ढूंढ़हिं श्यामहिं रोवत भारी
हरि ताकी छाती लपटाने ❋ करत चरित्र जो अचरजसाने
ढूंढ़त ढूंढ़त उर पर छाये ❋ लै उठाय माता उर लाये
दुख सुख ताको कह्यो न जाई ❋ जिमि मणिगई भुवंगन पाई
सुखित भईं सब ब्रजकी बाला ❋ कहति बच्यो अति नंदको लाला
नंद यशोमति भाग बड़ेरी ❋ सुतकी करवर टरी करेरी

दो० आई अद्भुत रूप धरि, अति विपरीत कुमारि।
कपटहेतु नहिं सहि सक्यो, तेहि मार्यो करतार॥

सो० कहत यशोमति माय, पुनिपुनि सबके पांयपरि।
उबर्यो आजु कन्हाय, तुमपञ्चनके पुण्य ते॥

बड़ो कष्ट यह सुत ने पायो ❋ आजु विधाता बहुत बचायो
कोउ कह भागवंत नँदराई ❋ कुल के देवन करी सहाई

कोउ कहै नेक मोहिं सुत देरी ❀ देखहुं मुख में पुनि तू लेरी
कोउ मुख चूमि वलैया लेई ❀ लै उछंग पुनि यशुदहि देई
बच्यो कान्ह सब ब्रज सुधि पाई ❀ घर घर वजी अनंद बधाई
तबहिं नन्द गोकुल में आयो ❀ देखि पूतनहिं अति भय पायो
जो बसुदेव कहीही बानी ❀ सो सब मन में सांची जानी
तहँ सब ब्रजबासी जुरिआये ❀ समाचार सब प्रकट सुनाये
तब सुख पाय गये नँद धामहिं ❀ देख्यो जाय सुवन घनश्यामहिं
वदन विलोकि हरषि उर लाये ❀ बहुत दान दे देव मनाये
तब ब्रजबासी सकल बुलाये ❀ अंग पूतना के कटवाये
बाहेर एक ठौर सब कीने ❀ अग्नि लगाय फूंकि सब दीने

दो० अति सुगंध ता अंग में, कीन्ही अग्नि प्रकास।
हरि अस्पर्श प्रताप ते, ब्रज सब भयो सुवास॥

सो० रहे अचम्भौ पाय, ब्रजबासी चकित सबै।
चरणकमल चितलाय, नंदसुवनमहिमा सुनत॥

हरि रोये माता की कनियाँ ❀ दूध पियायो तब नँदरनियाँ
पुनि पलना पौढ़ाय झुलावै ❀ हलरावै दुलराय मल्हावै
लालन के हित नींद बुलावै ❀ मधुरे सुर जोई सोइ गावै
रे लालन को आव निदरिया ❀ तोहिं बुलावत श्यामसुँदरिया
जो करि कपट लाल को आवै ❀ तो पूतनालों विधि विनसावै
अहो देवता या कुल केरे ❀ मैं पूजिहों कमल पद तेरे
वेगि बड़ो कर दे यह बालक ❀ ब्रज जन प्राण पूतनाघालक
दुतिया के शशिलों शिशु बाढ़े ❀ आँवालों अरि उर नित डाढ़े
सोवे मेरो बाल कन्हाई ❀ माता सुख की बलि बलि जाई
सोवत देखि मौन गहि रहई ❀ जागत देखि बहुरि कछु कहई

अँग फरकाय अलप मुसुकाने ❀ ता छवि की उपमा कोउ जाने
बार बार शिशु वदन निहारैं ❀ यशुमति अपनो भाग्य विचारैं

दो० हलरावत गावत मधुर, हरिके बाल बिनोद।
जो सुखसुरमुनिको अगम, सो सुखलेत यशोद॥

सो० कबहूं लेत उछंग, उर लगाय चूमत मुखहि।
निरखि मनोहर अंग, कबहुं झुलावत पालने॥

दरशन को नित सुर मुनि आवैं ❀ वाल विनोद निरखि सुख पावैं
कहैं परस्पर सुर नर नारी ❀ हरिके अद्भुत चरित निहारी
अलख अगोचर अज अविनासी ❀ पुरुप पुरातन विश्वनिवासी
जाको भेद न शिव मुनि जानैं ❀ ब्रह्मा पढ़ि पढ़ि वेद वखानैं
सो हलरावत नँदकी घरणी ❀ पूरण भई पुरातन करणी
मन अभिलाष बढ़ावत भारी ❀ हुलसत हँसत देत किलकारी
वरषि प्रसून हरषि मनमाहीं ❀ धन्य धन्य कहि ब्रज घर जाहीं
नितनव कौतुक होहिं अकासा ❀ ब्रजवासिन मन अमित हुलासा
यशुदा नवनित लाड़ लड़ावैं ❀ निरखि निरखि ब्रजजन सुख पावैं
नित नव मंगल नँदके धामा ❀ नित नव रूप श्याम अभिरामा
भक्त बछल भक्तन हितकारी ❀ भक्तन हित नाना तन धारी
भजत संत यह हृदय बिचारी ❀ जन ब्रजवासी हैं बलिहारी

दो० जब हरि मारी पूतना, सुनि डरप्यो नृप कंस।
प्रकट भयो ब्रजशत्रु मम, यह जानी निस्संस॥

सो० बसो तासु उरमाहिं, ताही क्षणते अचल हरि।
भूलत इक क्षण नाहिं, शत्रुभाव लाग्यो भजन॥

अथ कागासुरवधलीला ॥

कागासुर नृप निकट बुलायो ❀ ताहि मतो सब कहि समुझायो
आवहु वेगि नन्दसुत मारी ❀ करियहु कारज बुद्धि विचारी
आयसु धरि शिर गर्व बढ़ायो ❀ काग रूप तें असुर बनायो
वेगिवन्त उठि गोकुल आयो ❀ प्रेरित काल अवधि नियरायो
बैठ्यो नंद धाम पर आई ❀ पलना बैठ्यो बाल कन्हाई
ताको आवतही हरि जान्यो ❀ काग न होय असुर पहिचान्यो
यशुदा हरिको सोवत जानी ❀ कछु गृह कारज में लपटानी
तबहिं असुर पलनापर आयो ❀ चाहत हरिको चोंच चलायो
कंठ पकरि हरि करसों लीन्हो ❀ चोंच मरोरि फेंक त्यहि दीन्हो
पर्यो जाय नृप पास उतान्यो ❀ यह ब्रजबासी काहु न जान्यो
तुरत कंस तिहि बूझन धायो ❀ बीते याम बोल तब आयो
सुनहु कंस वह बाल न होई ❀ है अवतार महाबल कोई

दो० एकहाथ सों पकरि मोहिं, फेंक दियो तुम पास।
ह्वैहै तुम्हरो काल वह, मैं कीन्हों बिश्वास ॥

सो० अति डरप्यो महिपाल, कागासुरके वचन सुनि।
वह सो गयो बिशाल, जम्यो जुउर में शोचतन ॥

सभा मध्य सब असुर सुनाई ❀ बार बार शिर धुनि पछिताई
ब्रज में उपज्यो मेरो काला ❀ ताको अबहीं ते यह हाला
दनुज सुता पूतना पठाई ❀ ताको इक क्षण मांझ नशाई
कागासुर के ऐसे हाला ❀ सो तो दिन दिन होन बिशाला
है कोउ वीर जु ताहि नशावै ❀ मम कारज करि आर बचावै
ऐसो कौन कहों मैं जासों ❀ अब कै जाय भिरै जो तासों
असुरन को ये नृपति सुनायो ❀ शकटासुर मन गर्व बढ़ायो

उठिके पान नृपति सों मांगे ❋ कहा काम यह मेरे आगे
तव प्रताप तेहि पल में मारौं ❋ कहौ तौ सब ब्रज को संहारौं
कंस हर्ष तेहि बीरा दीन्हों ❋ शूरसराहि बिदा तेहि कीन्हों
यहां श्याम पलना पर खेलैं ❋ करगहि पद अँगुठा मुख मेलैं
अपने मन यह करत बिचारा ❋ इह मम पद संतन आधारा

दो० ये पदपंकज राखि उर, निरखत शम्भु सुजान।
इनको रस मन मधुप करि, करत निरंतर पान॥

सो० पुनि इन पदको ध्यान, करत ब्रह्मसनकादिमुनि।
लक्ष्मी अतिसुखमान, उरतें क्षण टारत नहीं॥

इन पद पंकज रस अनुरागा ❋ मगन सकल सुर नर मुनि नागा
ऐसो धौं का रस इन माहीं ❋ सो तो मोहिं विदित कछु नाहीं
मोकों यह रस दुर्लभ भारी ❋ देखौं धौं मैं ताहि बिचारी
तातें पद अँगुठा मुख मेलैं ❋ लै लै स्वाद मगन रस खेलैं
ता अन्तर शकटासुर आयो ❋ पवन रूप काहु न लखि पायो
भारे शकट नंद घर केरे ❋ पलना के ढिग हते घनेरे
तिनमें सो शठ आय समान्यो ❋ नंदसुवन तबहीं यह जान्यो
ताको हरि यक लात चलाई ❋ गिर्‌यो शकट तब अति हहराई
दनुज निधन काहू नहिं जान्यो ❋ गिर्‌यो शकट यह सबहिन मान्यो
सुनत शब्द सब व्याकुल धाये ❋ नंदआदि सब जुरि तहँ आये
यशुमति दौरि श्याम को लयऊ ❋ सबके मन अतिविस्मय भयऊ
कारण कहा कहैं नर नारी ❋ गिर्‌यो शकट आपुहि तें भारी

दो० पलना ढिग खेलतहुते, कछुक गोपके बाल।
तिनन कह्यो डार्‌यो शकट, पलना तें नँदलाल॥

सो० सो नहिं करी प्रतीति, काहू बालक की कही।
यहतौ कछु विपरीति, भई कुशल अति श्यामकी॥

यशुमति अति मन मन पछिताई ❀ भये आज कुल देव सहाई
वार वार उरसों सुत लाई ❀ निरखि नन्द पुनि पुनि बलिजाई
मेरे निधनी के धन छैया ❀ लगै मोहिं तेरे रोग बलैया
ऐसे बहु विधि लाड़ लड़ाये ❀ पय पियाय पलना पौढ़ाये
मन्द मन्द कर ठोंकि सुनावें ❀ कछु इक मधुर मधुर स्वर गावें
सोवत श्याम शुभग सुन्दर वर ❀ चौंकि चौंकि शिशुदशा प्रकट कर
लिये मातु छतियां लपटाई ❀ जनु फणि मणि उरमांझ दुराई
प्रात निरखि मुख आनँद कीनो ❀ चूमि वदन सुत को पय दीनो
कोमल घास अजिर जब आयो ❀ तहँ सुत पलना पर पौढ़ायो
आप मथन दधिभवन सिधारी ❀ नंदहि सुत के ढिग बैठारी
निरखि नन्द सुत आनँद भारी ❀ कमल वदन छवि रहे निहारी
चुटकी दै दै सुतहिं खिलावें ❀ निरखि निरखि मुख अति सुखपावें

दो० किलकिउठे लखितातमुख, करपदहग अतुराय।
झपट झटकि उलटेपरे, सुखनिधि त्रिभुवनराय॥

सो० सोछवि कहिय न जाय, निरखिनन्द टेरतमहरि।
आपनसकतउठाय, अतिकोमलसमसकुचमन॥

नन्दहि टेरत सुनि नँदरानी ❀ तजी तुरत दधि मथन मथानी
जाने महरि गिरे सुखदाई ❀ तातें अति आतुर उठि धाई
नन्दहि देखि हँसति हैं पासा ❀ तब धीरज धरि कियो हुलासा
उलटि परयो सुत देखो आई ❀ उठि न सकत कर सेज लगाई
सो छवि निरखि मातु सुख पायो ❀ तुरत मुदित उलटाय उठायो

उर लगाय मुख चुम्बन लागी ❋ कहत आज मैं भई सभागी
पिटकरान हरि उलटन लागे ❋ डेढ़ मास के भये सभागे
चिरजीवहु मेरे कुँवर कन्हाई ❋ आन करों मैं अनँद वधाई
नँदरानी ब्रज नारि बुलाई ❋ यह सुनि सब आनँद कर धाई
हरिको निरखि परम सुख पायो ❋ हरषित सबहिन मङ्गल गायो
बांटी घर घर पान मिठाई ❋ नन्दसुवन ब्रज जन सुखदाई
धनि धनि ब्रजकी बाल सभागी ❋ हरि के बालचरित अनुरागी

दो० जननी अति आनँद भरी, निरखत श्यामलगात।
जैसे निधनी पाय धन, मुदित रहत दिनरात॥

सो० धनिधनि ब्रजको बास, धन्य यशोदा धन्य नँद।
धनि ब्रजबासी दास, जिनको मन या रसमगन॥

अथ तृणावर्त्तबधलीला॥

यशुदा भाग न जात बखाने ❋ त्रिभुवनपति को सुत कर माने
हरि को गोद लिये पय प्यावै ❋ बिबिध भांति करि लाड़ लड़ावै
कबहूं हरि मुख सों मुख लावै ❋ कबहूं हर्षित कंठ लगावै
मो निधनी को धन सुत नान्हा ❋ खेलत हँसत रहौ नित कान्हा
कब धौं मधुर बचन कछु कैहैं ❋ कब जननी कहि मोहिं बुलैहैं
कब नन्दहि कहि बाबा बोलैं ❋ खेलत इत उत आंगन डोलैं
कब धौं तनक तनक कछु खैहैं ❋ अपने कर लै मुख में नैहैं
कब बिधि यह अभिलाष पुरावै ❋ मन हीं मन कुलदेव मनावै
किलकत हरि जननी की कनियां ❋ करत चरित्र मातु सुखदनियां
तृणावर्त्त हरि आवत जाना ❋ पठयो कंस सहित अभिमाना
भयो गरुव जननी पौढ़ायो ❋ सहि न सकी तब भुव बैठायो

दो० आप लगी गृह काज कछु, राखि अजिर गोपाल।
अति प्रचंड बौंडर उठ्यो, गोकुलपुर तेहि काल॥
सो० वातचक्र मिस आय, तृणावर्त्त पापी असुर।
हरि को लियो उठाय, अन्धधुन्ध गोकुल कियो॥

हरि को लैकै गयो अकासा ※ धूरि धुन्ध गोकुल चहुँ पासा
जहां तहां नर नारि छिपाने ※ प्रलय काल सम करि सब माने
यशुमति दौरि अजिर में आई ※ तहां न पायो कुँवर कन्हाई
नन्द नन्द करि शोर लगायो ※ तेरो सुत अँधवायु उड़ायो
दौरौ वेगि गुहार लगावो ※ ब्रजवासिन को टेरि बुलावो
अति व्याकुल खोजत नँदरानी ※ जिततित फिरत भुवन बिलखानी
तृणावर्त्त को हरि यों कीन्हों ※ ग्रीव लिपट तिहिं नीचे लीन्हों
कठिन शिलापर ताहि गिरायो ※ ताके ऊपर आपुन आयो
चूर चूर करि ताके गाता ※ कीन्हे भुक्ति मुक्ति के दाता
धूरि धुन्ध सब तुरत बिनासी ※ खोजत हरिहिं विकल ब्रजवासी
ब्रजबनितन उपवन में पाये ※ लिये उठाय कंठ लपटाये
अति आतुर यशुमति पै ल्याई ※ है गइ घर घर अनँद बधाई

दो० लिये धाय कै मायने, छतिया रही लगाय।
नन्द निरखि सुखपायकै, सनसीं द्विजनि गाय॥
सो० वारिवारि ब्रजनारि, देहिं बसन भूषण सबन।
जिततित कहैं विचारि, नयो जन्म हरिको भयो॥

उबरे स्याम महरि बड़भागी ※ देखहु धों कहुँ चोट न लागी
सोग लेउँ बलि जाउँ कन्हाई ※ हरि हैं ब्रज के जीवन माई
भली न प्रकृति यशोदा तेरी ※ इकलो हरि को छांड़त हेरी
घर को काज इनहुँ ते प्यारो ※ बौरी अजहुं सुनि [illegible]

बहुत बच्योरी आज कन्हाई ❀ भयो पूर्बिलो पुण्य सहाई
यशुमति सबसों कहत लजानी ❀ अब मैं सीख तिहारी मानी
मोहिं कहां हो यह सुख माई ❀ मैं तो रंक परी निधि पाई
अब मैं अपनो लाल चितैहों ❀ एकौ क्षण काहू न पत्यैहों
ऐसे कहि सब सों नँदरानी ❀ कीन्हीं बिदा सकल सनमानी
यशुमति हरि को गोद खिलावैं ❀ देखि देखि मुख नयन सिरावैं
अति कोमल श्यामल तन देखी ❀ बार बार पछितात बिशेखी
कैसे बच्यो जाउँ बलिहारी ❀ तृणावर्त्त की घात निवारी

दो० नाजानौं किहि पुण्यतें, को करिलेत सहाय।
किया काम सब पूतना, तृणावर्त्त यह आय॥

सो० मातु दुखित जिय जानि, कृपासिंधु वत्सलभगत।
बालचरित सुखदानि, करन लगे सुन्दरपरम॥

खेलत मातु उछंग कन्हाई ❀ करत बाललीला सुखदाई
जननी बेसर लटकत देखी ❀ चितवत ताहि निहारि निसेखी
ताहि गहन को पाणि चलायो ❀ तब जननी कछु बदन उचायो
नहिं पहुँचे तब अति उकताई ❀ सो छवि निरखि मातु बलिजाई
जननी बदन निकट करिलीन्हों ❀ तब हरि हुलसि किलकि हँसि दीन्हों
बिहँसत चमकि परीं दुधदँतियां ❀ जनु युग बिज्जु बीज की पँतियां
प्रमुदित निरखि यशोदा फूली ❀ प्रेम मगन तनकी सुधि भूली
बाहर तें तब नन्द बुलाये ❀ परमानन्द सहित उठि धाये
हो पति सुफल करो दृग आई ❀ देखहु सुत मुख दतुलि सुहाई
हर्षित हरिहिं गोद नँद लीन्हों ❀ निरखि तात मुख हरि हँसि दीन्हों
देखत बदन नयन सियराने ❀ दूधदांत किधौं छवि के दाने
अहो महरि बड़ भाग तुम्हारे ❀ सफल फले मन काज हमारे

दो० कछु दिनघट पटमासके, भये श्याम सुखदान।
अन्नपराशन के दिवस, बूझहु विप्र विहान॥
सो० सुनि पुलके नँदराय, भये पराशन योग हरि।
प्रेम रह्यो उरछाय, सो सुख कापै जाय कहि॥

अथ अन्नप्राशनलीला॥

प्रात काल उठि विप्र बुलायो ❀ राशि बूझि शुभ दिवस धरायो
यशुमति सो दिन आछा पायो ❀ सखिन बोलि शुभगान करायो
युवति महरि को गारी गावैं ❀ और महर को नाम सुनावैं
मणि कंचन को थार मँगायो ❀ भांति भांति के बासन आयो
नन्दघरनि व्रजवधू बुलाई ❀ जे सब अपनी जानि सुहाई
कोउ जिवनार कोऊ पकवाना ❀ षटरस के बहु करत विधाना
बहु प्रकार के व्यंजन ठाने ❀ जिनके स्वाद न जायँ बखाने
अति उज्ज्वल कोमल शुभ नीके ❀ किये विविधविधि सनहुँ अमीके
यशुमति नन्दहि बोलि कह्यो तब ❀ बोलो महर जाति अपनी सब
आय गये नँद सकल महर घर ❀ ल्याये बोलि सबन आदर कर
बैठारे सब आनि अथाई ❀ भीतर गये आप नँदराई
यशुमति हरिको उबटि न्हवाये ❀ सुन्दर पट भूषण पहिराये

दो० तन अँगुली शिर चौतनी, करचूरा दुहुँ पाय।
बारबार मुख निरखि कै, यशुमति लेत बलाय॥
सो० लै बैठे नँदराय, जानि शुभघरी गोद हरि।
लीने सदन बुलाय, गोप सकल आनँद भरे॥

बैठे सकल गोप गुण गाई ❀ अति आनंद मगन नँदराई
कनक थार भरि खीर धराई ❀ मिसिरी घृत मधु डारि मिलाई

लगे नंद हरि मुख जुठरावन ❀ गोपवधू लागीं सब गावन
आंगन बाजी विविध बधाई ❀ शङ्ख निशान भेरि सहनाई
षटरस के व्यंजन हैं जेते ❀ हरिके अधर छुवाये तेते
तनक अधर जल पोंछि सुहाये ❀ हरिको यशुमति पै पहुँचाये
हर्षवन्त युवती सुनि पायो ❀ लैलै मुख चुम्बति उर लायो
बिप्रन बोलि दक्षिणा दीन्ही ❀ नाना वस्तु निछावरि कीन्ही
गोपन संग महरि नँदराई ❀ बैठे पनवारे पर जाई
अति रुचि सबहिन भोजन कीनो ❀ बीरा बहुरि सबन को दीनो
गोप वधू सब महरि जिमाई ❀ दै करि पान सुगंधि सिंचाई
इहि विधि सुख बिलसैं ब्रजवासी ❀ निरखैं श्याम सुभग शुभरासी

दो० सुरसिहाहिंललचाहिंमुनि, लखिब्रजजनकेभाग।
धन्यधन्यकहिसुमनझरि, करहिंसहितअनुराग॥

सो० नितनव मंगल चार, नित नव लीला श्याम की।
को कवि बरणै पार, शेष न पावैं पार जिहिं॥

नेति नेति जिनको श्रुति गावैं ❀ तिन को ब्रजजन गोद खिलावैं
जो सुख नंद भवन के माहीं ❀ तीन लोक महँ सो कहुँ नाहीं
नित्य नयो सुख यशुमति पावैं ❀ नये नये नित लाड़ लड़ावैं
नयन ओट हरि करत न कैसे ❀ जुगवत रहै फणिक मणि जैसे
निंदति निमिष होत पल ओटा ❀ निरखत ही सुख पावति ढोटा
तनक कपोल अधर अरुणारे ❀ तनक तनक कच घूंघरवारे
कुटिल भृकुटि की रेख सुहाई ❀ मसि बिन्दुक तापर सुखदाई
नयन नासिका भाल बिशाला ❀ कलबल बोलन परम रसाला
अल्प दशन चिबुकंदर ग्रीवा ❀ तन घनश्याम मृदुल छवि सींवा
मात निरखि नयनन सुख पावै ❀ प्रेम बिवश मति गति बिसरावै

निरखि रूप यशुमति अनुरागै ❀ कहत कहूं मम दीठि न लागै
तब अँचरा तर लेत छपाई ❀ डारत वार लोन अरु राई

दो॰ कबहुँ झुलावति पालने, कबहुँ खिलावति गोद।
कबहुँ सुलावति पलँगपर, यशुदा सहित विनोद॥

सो॰ नितप्रति ब्रजकी वाम, आवैं यशुमतिके सदन।
मुदित निरखि घनश्याम, लैलै गोद खिलावहीं॥

इहि विधि विहरत वाल कन्हाई ❀ कछु दिनमें संतन सुखदाई
लागे चलन घुटुरुवनि आंगन ❀ लगे मात सों माखन मांगन
खेलत मणिमय आंगन माहीं ❀ देखि रहत लखि निज परछाहीं
कबहुं तात कहि पकरन धावैं ❀ जानु पाणि विचरत छवि पावैं
कबहूं किलकि अनत उठि भाजैं ❀ गिरत परत घुटुवन छवि छाजैं
कबहुं कि जात जहां बल भाई ❀ खेलत गोप बाल समुदाई
कबहुं कहत कछु खंडित बाता ❀ सुनत होत सुख पूरणगाता
कहन चहत कछु प्रकट न आवै ❀ माखन मांगत सैन बनावै
मात समझ मथनी तें लेई ❀ कछु खवाय कछु कर धर देई
खेलत खात कान्ह मणि अँगना ❀ इत उत करत घुटुरुवन रिंगना

दो॰ करचूरा पग पैंजनी, तन रंजित रज पीत।
उरहरिनख कटिकिंकिणी, मुखमंडित नवनीत॥

सो॰ होत चकित चितचाय, बजत पैंजनी शब्द सुनि।
सुरमुनि रहत लुभाय, बालदशाके चरित लखि॥

खेलत आँगन बालगोविन्दा ❀ तात मात उर करत अनन्दा
चलत पाणि पद की परछाहीं ❀ प्रतिबिम्बन मणि आँगनमाहीं
मनहुँ सुभग छवि महि तट पाई ❀ जलज नाल जनु लेन मुलाई
किया जानि पद कोमल तासन ❀ धरि धरि देत कमल के आसन

निरखि सुभग शोभा सुखदनियाँ ❀ लिये हरषि सादर नँद कनियाँ
नील जलज तन सुन्दर श्यामा ❀ सुभग अंग सब छवि के धामा
अरुण तरुण नख ज्योति सुहाई ❀ कोमल कमल चरण सुखदाई
रुनुझुनु पैंजनि पाँयन बाजैं ❀ मनसिज यंत्र सुनत सुर लाजैं
कटि किंकिणी जटित रवकारी ❀ पीत झँगुलिया सुभग सवाँरी
उर कमलनि चूड़ा छवि छाजे ❀ रुचिर बाहु भूषण अति राजे
कठुला हार जो अंग सुहाये ❀ बिच बिच पदिक प्रवाल गुहाये
चारु चिबुक द्युति बरणि न जाई ❀ गोल कपोल परम छवि छाई

दो० अरुणअधर मधिदशन द्युति, प्रकट हँसनमें होति।
मानहुँ सुन्दरता सदन, रूप रत्न की ज्योति ॥

सो० मधुर तोतरे बैन, श्रवण सुखद सुनि मन हरण।
सुनत होत चित चैन, समुझत कछुक बनै नहीं ॥

नासा सुभग कमलदल लोचन ❀ भाल विशाल तिलक गोरोचन
भृकुटिनिकटमसिबिन्दुकलाग्यो ❀ मनो अलिशावकसोयन जाग्यो
लाल चौतनी शीश सुहाई ❀ विविध रंग मणि गण लटकाई
बाल दशा के कच घुँघरारे ❀ छिटकि रहे कछु घूम घुमारे
मंजुल तारन की चपलाई ❀ बाल दशा की ललित सुहाई
चन्द्रबदन सुख सदन कन्हाई ❀ निरखि नन्द आनँद अधिकाई
बदन चूमि उर सों लपटायो ❀ सो सुख कापै जात बतायो
ब्रज युवती सब चितवत ठाढ़ीं ❀ मनहुँ चित्र पुतरी लिखि काढ़ीं
प्रेम मगन नँदसुवन निहारैं ❀ गृह कारज की सुरति बिसारैं
ब्रज युवती हरि सों मन लावैं ❀ नन्दसुवन सब के मन भावैं
ब्रजवासी प्रभु सब के नायक ❀ प्रेम विवश जन के सुखदायक
बालचरित लखि सुर सुख पावैं ❀ योग दशा सनकादि भुलावैं

दो० करत बाललीला ललित, परम पुनीत उदार।
सुन्दर श्याम सुजान हरि, सन्तन के आधार॥
सो० कापै बरण्यो जाय, बालचरित नँदलाल को।
कल्पन सकहिं न गाय, शेष कोटि शारद सहस॥

अथ नामकरणलीला॥

इक दिन श्री बसुदेव बिज्ञानी ❀ पठये बोलि गर्ग मुनि ज्ञानी
करि पूजा बिधिवत बैठायो ❀ युग पदकमल शीश तब नायो
बहुरि कह्यो सुनिये ऋषिराई ❀ जबतें भयो कंस दुख दाई
तबतें गोकुल नन्द अवासा ❀ जाय रोहिणी कियो निवासा
जाके गर्भ जन्म सुत लीन्हो ❀ कंस त्रासतें प्रकट न कीन्हो
नामकरण ताको अबताई ❀ भयो नाहिं तुम बिना गोसाई
करिके कृपा तहां प्रभु जइये ❀ ताको नाम राखि के अइये
सुनि बसुदेव बचन सुख पायो ❀ हर्ष सहित मुनि गोकुल आयो
नन्दराय ऋषि आगम जान्यो ❀ अपनो बड़ो भाग्य करि मान्यो
चरण धोय चरणोदक लीन्हों ❀ अर्घासन अति हित करि दीन्हों
बड़ी कृपा कीन्हीं ऋषिराजू ❀ मो सम धन्य आन नहिं आजू
अति पुनीत भोजन बनवायो ❀ बिविध भांति ऋषिराय जिमायो

दो० बहुरि महरि ऋषिरायसों, कह्यो जोरिकर दोय।
किहि कारज प्रभुआगमन, कहो कृपाकरि सोय॥
सो० तब बोले ऋषिराज, पठयो है बसुदेव मोहिं।
नामकरण के काज, तुम्हरे रोहिणीसुवन को॥

सुनत नन्द अति भये सुखारे ❀ लै आये कनियां दोउ बारे
मुनि चरणन मेले दोउ भाई ❀ दई अशीश मुदित ऋषिराई

हरि की छबि अति आनँदकारी ❁ देखि रहे मुनि पलक बिसारी
प्रथम नन्द बल हाथ दिखायो ❁ जन्म दिवस मुनि पास सुनायो
देखि गर्ग उठि किये बिचारा ❁ है यह शिशु सब जगत अधारा
अति शुभ लक्षण बल को धामा ❁ धस्यो नाम तिन को बलरामा
बहुरि नन्द चरणन शिर नायो ❁ कह्यो कि आपि मम भागन आयो
तुम सर्वज्ञ अहो मुनिनाथा ❁ देखिय या बालक को हाथा
मुनिवर देखत चिह्न भुलान्यो ❁ प्रेम मगन सब तन पुलकान्यो
पुनि पुनि हरि को बदन निहारी ❁ बोल्यो मुनिवर सुरत सँभारी
धन्य नंद धनि महरि यशोदा ❁ धनि धनि धन्य खिलावत गोदा
सुनहु नंद मैं सत्य बखानों ❁ इनको तुम सुत करि मत जानों

दो० रूपरेख जाके नहीं, अलख अनादि अनूप।
सो भक्तन हित अवतस्यो, निज इच्छा अनुरूप॥

सो० इनते बड़ा न कोय, ये कर्त्ता सब जगत के।
जो ये करैं सो होय, तुमसों हम सांची कहैं॥

इनके नाम अमित जगमाहीं ❁ तदपि कहौं मैं कछु तुम पाहीं
इन कबहूं बसुदेव के धामा ❁ लियो जन्म सुन्दर बर श्यामा
ताते वासुदेव इक नामा ❁ सो सुमिरत नर पावहिं कामा
कहिहैं कृष्ण बहुरि जग माहीं ❁ जाके सुमिरत पाप नशाहीं
अरु ये जैसे कर्मनि करिहैं ❁ तैसे नाम जगत बिस्तरिहैं
दुष्ट दलन संतन सुखदाई ❁ भूमि भार हरिहैं दोउ भाई
तुम कबहूं तप करि यह माँगा ❁ तुमहिं खिलावैं अति अनुरागा
ताते सुत करि तुम इन पायो ❁ मत जानौ इन को निज जायो
ये अति सुखदायक ब्रज केरे ❁ करि हैं अति आनंद घनेरे
सुनि ऋषि मुख हरियश सुखरासी ❁ आनंदे सब ब्रज के वासी
सुनत नंद यशुमति सुख पायो ❁ मुनि चरणन को शीश नवायो

बहुत भेंट लै आगे राखी ❁ अस्तुति बहुत भांति सों भाखी

दो० विदा भये ऋषिराज तब, नंद भाग्य बड़भाखि।
चले मधुपुरी को हरषि, हरिमूरति उर राखि॥

सो० कह्यो हरषि ऋषिराय, सब उदंत बसुदेव को।
सुनत बहुत सुखपाय, ऋषिहि पूजि कीन्हे विदा॥

यशुमति समुझि गर्गकी वानी ❁ आपुनि अति बड़भागिनि जानी
हरि को लै उर सों लपटायो ❁ प्रमुदित अस्तन पान करायो
श्याम रामसुख निरखत मोदा ❁ मातु रोहिणी और यशोदा
खँकि खँकि हरि बैठत गोदा ❁ भावत हरिके बाल विनोदा
हरि को गोद लिये डुलरावें ❁ पुनि पुनि तुतरे बोल बुलावें
कबहुँक गावत दै करतारी ❁ कबहुँ सिखावत चलन मुरारी
तनक तनक भुज टेक उठावें ❁ क्रम क्रम ठाढ़े होन सिखावें
पुनि गहिभुज पद टेक चलावें ❁ लरखरात लखि मन सुख पावें
मनही मन यों विधिहि मनावें ❁ कब धों अपने पांयन धावें
कबहुँक छोड़ देत अँगनैया ❁ खेलत मुदित तहां दोउ भैया
गौर श्याम बलराम कन्हैया ❁ संगहि संग फिरत दोउ भैया
जिमि बछरा के पाछे गैया ❁ ब्रजबासी जन लेत बलैया

दो० धौल धूरि धूसरित तन, बाल विभूषण अंग।
अंजन रंजित दृग चपल, निरखत लजत अनंग॥

सो० विहरत आनँदकंद, मणिमय आँगन नंदके।
यदुकुल कैरवचंद, दहन दनुज कुल बन अनल॥

कबहूं ठाढ़े होति गहि मैया ❁ कबहूं डोलत चलन कन्हैया
कुलही चित्र विचित्र झँगुलिया ❁ दमकि उठत द्वै ललित दँतुलिया
मुनि मनहरण मंजु मसि विंदा ❁ सुखद चारु लोचन अरविंदा

कल बल वचन तोतरे बोलैं ❀ गहि मणि खंभ डिंभ डग डोलैं
निरखत झुकि झांकत प्रतिबिम्बै ❀ देत परमसुख पितु अरु अम्बै
मथति जहां दधि नँदकी रानी ❀ होत खरे तहँ टेक मथानी
मात तनिक दधि देत खवाई ❀ लेत प्रीति सों सो सुखदाई
क्षीर समुद्र जासु रजधानी ❀ तनक दही सों तिन रुचि मानी
तनिकसोबदन तनिकसी दँतियां ❀ तनिकसो अधर तनिकसी बतियां
तनक बदन दधि तनक कपोलन ❀ तनक हँसन मन हरन अमोलन
तनक तनक कर तनकै माखन ❀ तनक अँगुरिया तनकै चाखन
तनक तनक भुज चरण सुहाये ❀ तनक स्वरूप मनोज लजाये

दो० तनक बिलोकनि जासुकी, सकल भुवन बिस्तार ।
तनक सुने यश होत है, तनक सिंधु संसार ॥
सो० तनक रहत नहिं पाप, तनक नाम जाके लिये ।
मिटत सकल भव ताप, तनक कृपा जापै करहिं ॥

अथ बरसगांठलीला ॥

बरस गांठ लालन की आई ❀ द्विषट मास के भये कन्हाई
फूली फिरत यशोमति माई ❀ घर घर ते सब बधू बुलाई
प्रमुदित मंगल गान करायो ❀ आनँद उमँगे तूर बजायो
आंगन सकल सुगंधि लिपायो ❀ रचि रचि मोतिन चौक पुरायो
फूले फिरत नंद सुख भारी ❀ लिये गोप गण सकल हँकारी
द्वारन बन्दनवार बँधाये ❀ ध्वज पताक रचि बिबिध बनाये
पान फूल फल डार रसाला ❀ हरदि दूब दधि अक्षत माला
मंगल द्रव्य सकल मँगवाई ❀ बहु मेवा बहु भांति मिठाई
यशुमति कान्ह उबटि अन्हवाये ❀ अंग पोंछि भूषण पहिराये
टोपी जरकस पीत झंगुलिया ❀ दमकत द्वै द्वै चार दँतुलिया

कठुला कंठ बँधत अति नीको ❀ किये भाल केसर को टीको
लटकत ललित ललाट लटूरी ❀ वरणि न जाय वदन छबिभूरी

दो० नयन आंज भृकुटीनिकट, कियोमातुमसिविन्द।
करिसिंगारहरिमुखनिरखि, चूम्योमुखअरविन्द॥

सो० लिये गोद सुखकंद, नंद बोलि यशुमति कह्यो।
बोलहु भूसुर वृंद, लग्न घरी आवत चली॥

काहे को अब गहर लगावत ❀ विप्र वेगि काहे न बुलावत
नन्द क्षिप्र वर विप्र बुलाये ❀ पद पखारि आसन बैठाये
लै उछंग लालन नँदराई ❀ बैठे हर्षि चौक पर जाई
बेदमंत्र विधि सहित पढ़ावत ❀ बरसगांठ सुख सहित जुरावत
ब्रजनारी सब बनि बनि आवैं ❀ मंगल तिलक श्याम को लावैं
गावत मंगल कोकिल बयनी ❀ हरि दरशन न्यारी मृगनयनी
तिलक सबनि मोहन को दीनों ❀ देखि देखि मुख अति सुख लीनों
विप्रन बहुत दक्षिणा पाई ❀ बांटी सब को पान मिठाई
धन मणि चीर निछावरि कीने ❀ वार वार नेगिन को दीने
तब सारी पँचरंग मँगाई ❀ हर्षित महरि बन्धु पहिराई
देत अशीष सकल अति मोदा ❀ लेत यशोमति भरि भरि गोदा
नित नव गोकुल होत वधाई ❀ सदा श्याम जनके सुखदाई

दो० धन्य यशोमति धन्य नँद, धनिधनि बालविनोद।
धन्य सुमन जिन जनन के, रहत सुधारसओद॥

सो० धनिधनि ब्रजकीबाल, कहिकहि सुरवर्षहिंसुमन।
धन्यधन्य नँदलाल, दैत्यदलन सज्जन सुखद॥

कान्ह चलत पग द्वै द्वै धरनी ❀ होत मुदित लखि नँद की घरनी
करत हुती अभिलाषा जोई ❀ निरखत अपने नयनन सोई

रुनुक झुनुक नुपूर पग बाजै ❀ डगमगात डोलत छवि छाजै
बैठ जात पुनि उठत तुरतहीं ❀ देहरिलों चलि जात फुरतहीं
धाम अवध राखत अटकाई ❀ गिर गिर पड़त नांघि नहिं जाई
कीन्ही तीन पैड़ जिन वसुधा ❀ देहरि ताहि नँवावत यशुधा
पकरि पाणि क्रम क्रम उतरावै ❀ लखि सुर मुनि मन विस्मय आवै
कोटिन अण्ड रचैं पल माहीं ❀ पल में बहुरि मिटावैं ताहीं
ताहि खिलावत यशुमति ग्वारी ❀ नाना विधि सुख करि करि भारी
कबहूँ दे करतारि नचावै ❀ कबहूं मधुर मधुर स्वर गावै
देखि श्याम जननी के नाईं ❀ आपुन गावत तारि बजाईं
पग नूपुर कटि किंकिणि कूजै ❀ लखि छवि मन अभिलाषा पूजै

दो० शोभित कठुला कंठकल, उर हरिनख छविराश।
मनहुँ श्यामघन मों छियो, नवशशि विमल प्रकाश॥

सो० जननि कहत बलि जाउँ, नचहु लेहु नवनीत रद।
धरत रुनकुन पाउँ, त्रिभुवनपति नवनीतहित॥

बोलन लगे श्याम कल बानी ❀ कछुक तूतरी कछुक सयानी
नंदहि तात यशोदा मैया ❀ बल सों दाऊ कहत कन्हैया
प्रातहि उठि मांगत दोउ भैया ❀ माखन रोटी देरी मैया
अँचरा गहैं न मानत बाता ❀ अति आतुर ठुनकत दोउ भ्राता
सुनि सुनि मधुर बचन सुख पावैं ❀ तातें जननी गहर लगावैं
जननि मध्य सनमुख संकर्षन ❀ पाछे उठे सुभग श्यामलतन
मनो सरस्वति सँग युग पक्षी ❀ राजहंस अरु मोर बिपक्षी
कबरी गही श्याम खिजलाई ❀ मुक्ता मांग गही बल भाई
मनहुँ दुहुंन निजनिज भखलीनो ❀ जननी सों झगरो यह कीनो
नंद देखि हँसि हँसि गे लोटी ❀ यशुमति मुदित कर्म की मोटी
कतहो आरि करत गहि चोटी ❀ यहै बात मोहन तेरी खोटी

जो चाहौ सो लेउ दोउ भैया ❀ करहु कलेवा मैं बलि जैया

दो० दियो कलेऊ मात उठि, माखन रोटी हाथ।
खात खवावत बालकन, सकल विश्वके नाथ॥

सो० जेहि ध्यावैं योगीश, सनकसनंदन आदि मुनि।
कौतुकनिधिजगदीश, करतचरितसन्तनसुखद॥

अथ ब्राह्मणलीला॥

चलत लाल पैंजनि के बायन ❀ पुनिपुनि हर्षित नखिलखिपांयन
विविध ग्वाल बालन सँग लीने ❀ डगमगात डोलत रँग भीने
कबहूं दौरि द्वार लौं जाहीं ❀ कबहूं भजि आवें घरमाहीं
ब्राह्मण एक नन्दके आयो ❀ महा भाग्य हरि भक्त सुहायो
गोपन को सो पूज्य कहायो ❀ पुत्र जन्म सुनिके उठि धायो
यशुमति देखि अनन्द बढ़ायो ❀ आदर करि भीतर बैठायो
पांय धोय जल शीश चढ़ायो ❀ पाक करन को भवन लिपायो
अहो विप्र विनती सुनि लीजै ❀ जो भावे सो भोजन कीजै
धेनु दुहाय दूध लै आई ❀ पांड़े रुचि करि खीर बनाई
घृत मिष्टान्न खीर मिश्रित कर ❀ कृष्ण भोग हित थार परसि धर
वेदमंत्र पढ़िकै हरि ध्यायो ❀ नयन मूंदि कै ध्यान लगायो
नैन उघारि विप्र जब देख्यो ❀ स्यामहिं आगे जेंवत पेख्यो

दो० अहो यशोदा आपने, सुतकृत देखो आय।
सिद्धपाक सब आय कै, डारयो कान्ह जुठाय॥

सो० महरि जोरियुगपानि, विनय करी द्विजराजसन।
बालक अति अज्ञान, बहुरि पाक विधि कीजिये॥

बहुरि दूध मिष्टान्न मँगायो ❀ ब्राह्मण फिर कर पाक बनायो

जबहीं ध्यान धर्यो मन लाई ❀ तबहीं लागे खान कन्हाई
ऐसेहि बिप्र न जेंवन पावै ❀ बार बार हरि छू छू आवै
तब यशुमति हरि सों रिसियाई ❀ कतहि अचगरी करत कन्हाई
मैं इच्छा करि बिप्र जिमाऊं ❀ बार बार भोजन बनवाऊं
यह अपने ठाकुरहि जिमावै ❀ ताको तू गोपाल खिझावै
मैया मोहिं जिनि दोष लगावै ❀ बार बार यह मोहिं बुलावै
नयन मूंदि कर जोरि मनावै ❀ बहुत भांति कर विनय सुनावै
लै लै नाम कहत प्रभु ऐये ❀ खीर खांड़ यह भोग लगैये
तब मैं रहि न सकौं उठि धाऊं ❀ याको दीनों भोजन पाऊं
प्रेम सहित जब मोहिं बुलावै ❀ तब नहिं रहत मोहिं बनिआवै
सुनत गूढ़ मृदु हरिके बयना ❀ खुलि गये बिप्र हृदयके नयना

दो० धनिधनि गोकुल नन्द धनि, धन्य यशोदा माय।
धनि ब्रजबासी धन्यब्रज, जहँ प्रगटे हरिआय॥

सो० सुफलजन्मप्रभुआज, प्रगटभयोसबसुकृतफल।
दीनबन्धु ब्रजराज, दियो दरश मोहिं कृपाकरि॥

बार बार कहि नन्दके आँगन ❀ लोटत द्विज आनंद मगन मन
मैं अपराध कियो बिन जाने ❀ को जाने किहि वेष समाने
भक्त हेतु बश रहत सदाई ❀ यहै नाथ तुम्हरी बड़ियाई
जे जे शरण तुम्हारी आये ❀ ते ते भये पुनीत सोहाये
पतित उधारन यश बिस्तारा ❀ अघ जारन इक नाम तुम्हारा
देह धरत गोद्विज हित लागी ❀ पायों दरश भयों बड़ भागी
हित की चित की माननहारे ❀ सब के जिय की जाननहारे
शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारे ❀ दीन दयालु कृपालु मुरारे
हँसत श्याम यशुमति ढिग ठाढ़े ❀ प्रेम मगन मन आनँद बाढ़े
निजजन जानिकृपा अतिकीन्ही ❀ प्रेम भक्ति हरि ताको दीन्ही

प्रेममगन द्विज वारहिं वारा ❋ कहि जय जय जय नंदकुमारा
पुनि पुनि पुलकत देत अशीशा ❋ विदा भयो घर को द्विज ईशा

दो० देखि चरित यशुमति चकित, परी विप्रके पांय ।
दिये रत्न बहु दक्षिणा, चले हर्ष द्विजराय ॥

सो० यशुमति लिये उठाय, गोद खिलावत कान्हको ।
चितैवदनबलिजाय, आनँद निधि सुखकोसदन ॥

अथ चंद्रप्रस्ताव लीला ॥

शोभा मेरे हरि पै सो है ❋ मैं बलि बलि पटतर को को है
मेरे श्याम मनोहर जीवन ❋ विहँसि श्याम लागे पय पीवन
ठाढ़ी अजिर यशोदा रानी ❋ गोदी लिये श्याम सुखदानी
उदय भयो शशि शरद सुहावन ❋ लागी सुत को मातु दिखावन
देखहु श्याम चन्द्र यह आवत ❋ अति शीतल दृग ताप नशावन
चितै रहे हरि इकटक ताही ❋ करतें निकट बुलावत वाही
मैया वह मीठो के खारो ❋ देखत लगत मोहिं यह प्यारो
देहि मँगाय निकट मैं लैहौं ❋ लागी भूख चन्द्र मैं खैहौं
देहि वेग मैं बहुत भुखानो ❋ मांगतहीं मांगत खिरुझानो
यशुमति हँसति करत पछतायो ❋ काहे को मैं चन्द्र दिखायो
रोवत है हरि बिनहीं जाने ❋ अब धौं कैसे करिकै माने
विविध भांति करि हरिहि भुलावै ❋ आन बतावै आन दिखावै

दो० कहति यशोदा कौन विधि, समभ्काऊं अब कान ।
भूलि दिखायो चंद्र मैं, ताहि कहत हरि खान ॥

सो० अनहोनी क्यों होय, तात सुनी यह बात कहुं ।
याहि खात नहिं कोय, चन्द्र खिलोना जगतको ॥

यहै देत नित माखन मोकों ❀ क्षण क्षण तात देत सो तोकों
जो तुम श्याम चंद्र को लैहौ ❀ बहुरो फिरि माखन कहँ पैहौ
देखत रहौ खिलौना चंदा ❀ हठ नहिं कीजै बालगोबिंदा
मधु मेवा पकवान मिठाई ❀ जो भाषो सो लेहु कन्हाई
पालागों हठ बहुत न कीजै ❀ मैं बल रिसही रिस तन छीजै
खसि खसि कान्ह पड़त कनियातें ❀ दे शशि कहत नंदरनियातें
यशुमति कहत कहा अब कीजै ❀ मांगत चंद्र कहां ते दीजै
तब यशुमति इक जलपुट लीनों ❀ करमें लै तिहि ऊंचो कीनों
ऐसे कहि श्यामहिं बहकावै ❀ आव चंद्र तोहिं लाल बुलावै
याही में तू तन धरि आवै ❀ तोहिं देखि लालन सुख पावै
हाथ लिये तोहिं खेलत रहिये ❀ नेक नहीं धरणी पर धरिये
जलपुट आनि धरणि पर राख्यो ❀ गहिआन्यो शशिजननी भाख्यो

दो० लेहि लाल यह चन्द्रमा, लीन्हो निकट बुलाय।
रोवै इतने के लिये, तेरी श्याम बलाय॥

सो० देखहु श्याम निहारि, याभाजन में निकट शशि।
करो इती तुम आरि, जा कारण सुंदर सुवन॥

ताहि देखि मुसक्याय मनोहर ❀ बार बार डारत दोऊ कर
चंदा पकरत जल के माहीं ❀ आवत कछू हाथ में नाहीं
तब जलपुट के नीचे देखै ❀ तहां चंद्र प्रतिबिम्ब न पेखै
देखत हँसीं सकल ब्रजनारी ❀ मगन बालछबि लखि महतारी
तबहिं श्याम कछु हँसि मुसकाने ❀ बहुरो माता सों बिरुझाने
ल्योंगो री मा चंदा ल्योंगो ❀ बाहिर अपने हाथ गहोंगो
यह तो कलमलात जल माहीं ❀ मेरे कर में आवत नाहीं
बाहिर निकट देखियत वाही ❀ कहै तो मैं गहि ल्यावों ताही
कहत यशोमति सुनहु कन्हाई ❀ तुम मुख लखि सकुचत उडुराई

तुम तिहि पकरन चहत गोपाला ❀ ताते शशि भजि गयो पताला
अब तुम ते शशि डरपत भारी ❀ कहत अहो हरि शरण तुम्हारी
विरुझाने सोये दै तारी ❀ लिय लगाय छतिया महतारी

दो० लै पौढ़ाये सेजपर, हरिको यशुमति माय।
अतिविरुझानेआजहरि, यहकहिकेहिपछिताय॥

सो० करसों ठोंक सुआय, मधुरे स्वर गावत कछुक।
उठि बैठे अकुलाय, चटपटाय हरि चौंकि कै॥

अथ पुरातन कथा लीला॥

पौढ़ौ लाल कहत महतारी ❀ कहौं कथा इक श्रवणन प्यारी
हर्षे यह सुनि मन बनवारी ❀ पौढ़ि गये हँसि देन हुँकारी
नगर एक रमणीक सुहावन ❀ नाम अवध अति सुन्दर पावन
बड़े महल तहँ अगम अटारी ❀ सुंदर विशद चारु गचकारी
बहुत गली पुर बीच सुहाई ❀ रहत सदा सब सुगँधि सिंचाई
भांति भांति बहु हाट बजारू ❀ अतिसुंदर मनो विश्व शृंगारू
तहां नृपति दशरथ रजधानी ❀ तिनके नारि तीन पटरानी
कौशल्या केकई सुमित्रा ❀ तिन जन्मे सुत चार पवित्रा
राम भरत लक्ष्मण रिपुहंता ❀ चारों अति सुन्दर गुणवंता
तिन में एक राम व्रतधारी ❀ अति सुन्दर जनके हितकारी
विश्वामित्र एक ऋषिराई ❀ तिनहिं सतावें निशचर आई
तिन नृपसों द्वै सुत लिय मांगी ❀ अपनी रक्षा के हित लागी

दो० राम लषण ऋषि लैगये, दनुज हते तिन जाय।
ऋषि दीन्ही विद्या बहुत, तिनको अति सुखपाय॥

सो० तहां जनक इक भूप, धनुषयज्ञ ताने रच्यो।
कन्या तासु अनूप, जुरे तहां भूपति अमित ॥

ऋषि लै गये कुँवर तहँ दोऊ ❁ जनक राय सनमाने सोऊ
धनुष तोरि भूपन मुख मारी ❁ राम बिवाही जनककुमारी
चारिहु कुँवर ब्याहि तहँ आये ❁ भये अवधपुर अनँद वधाये
रामहिं देन लगे नृप राजू ❁ सज्यो सकल अभिषेक समाजू
सुनि पितु बचन धर्म हित धारी ❁ नारी सहित भये बनचारी
तिन्हैं चलत भ्राता सँग लाग्यो ❁ उनके जात पिता तनु त्याग्यो
चित्रकूट गये भरत मिलन जब ❁ दै पद पांवरि बिदा करी तब
युवती हेतु कपट मृग मारा ❁ राजिवलोचन राम उदारा
रावण हरण कियो तब नारी ❁ सुमन श्यामघन नींद बिसारी
चौंकि कह्यो लक्ष्मण धनु देहू ❁ देखि भयो यशुमति संदेहू

छं० सन्देह जननी मन भयो हरि चौंकि धौं काहे पर्यो।
कहुँ दीठि खेलन में लगी धौं स्वप्न में कान्हर डर्यो ॥
बहु भांति देव मनाय पढ़ि पढ़ि मंत्रदोष निवारई।
लै पियत पानी वारि पुनि पुनि राइलोन उतारई ॥

दो० सांझहि ते बिरुझाय हरि, करी चंद्रहितआरि।
झिझकउठ्योधौंताहिते, रहिउँशरणउरधारि ॥

सो० बड़भागिनि नँदनारि, महिमा बेद न कहिसकैं।
हरिको बदन निहारि, बिसरावत त्रयतापदुख ॥

अथ कर्णछेदन लीला ॥

प्रात नंद उठि हरि पहँ आये ❁ मुख छबि देखन को अतुराये
निशिके द्वन्द्व नैन अति आरत ❁ हरुवे करि मुखते पट टारत

स्वच्छ सेजते वदन प्रकाश्यो ❀ द्वन्द्व तिमिर नयननिको नाश्यो
मनहुँ मथत पयनिधि उड़राई ❀ फेण फारि के दई दिखाई
धाये व्रज जन चतुर चकोरा ❀ इकटकरहे वदन शशि ओरा
फूली कुमुदिनि सी महतारी ❀ कहत उठहु सुत मैं बलिहारी
माखन रोटी अरु मधु मेवा ❀ जो भावै सो करहु कलेवा
सदमाखन मिसिरी तब आनी ❀ कछु खवाय धोयो मुख पानी
देखि वदन छवि महरि सिहानी ❀ कहत नंदसों यशुमति रानी
कनछेदन अब हरि को कीजै ❀ कुण्डल सहित देखि मुख लीजै
बोलि विप्र शुभदिवस गनायो ❀ जाति कुटुंब सब न्योति बुलायो
कुल व्योहार कियो सब साजा ❀ विविध भांति बहुबाजन बाजा

छं० बाजी बधाई विविध आंगन नारि मंगल गावहीं ।
सुर नर निरखि अति हर्षि सुमनानि वर्षि गोकुल छावहीं ॥
करि प्रथम मुण्डन श्यामको पुनि कर्णवेधन विधि लई ।
धरिकै सुपारी पान ऊपर बहुरि गुरभेली दई ॥
हँसत सुरगण सहित विधि हर मातु उर अति धुकधुकी ।
अतिहि कोमल श्रवण वेधत सकत नहिं सनमुख तकी ॥
भरिसींक रोचन देत श्रवणनि निकटकरि अति चातुरी ।
छेदुर मँगाये कनकके का कहों छेदन आतुरी ॥
देखि रोवत जननि लीन्हे विहँसि तबहीं झुकि अली ।
हँसत नँद सब युवति गावत तनकि भीतर लै चली ॥
कहत सुर वनिता परस्पर धन्य धनि यह भामिनी ।
नाहीं न इनकी किसीसम हम सकल सुरपुरकामिनी ॥

दो० करति निछावरि व्रजवधू, धनमणि भूषण चीर ।
सकल अशीशत नन्दसुत, जहँतहँ याचक भीर ॥

सो० पहिरावत नँदराय, ब्रजयुवतिन भूषण वसन।
आनँदउरनसमाय, मनहुँउमगिचहुँदिशि चल्यो॥

नितही नव मुद मंगल ताके ❀ मंगल मूरति हरिसुत जाके
जिहि विधि तात मात सुख पावैं ❀ सुखनिधान सोइ चरित उपावैं
जाको भेद वेद नहिं पावैं ❀ नंदभवन सो कान छेदावैं
निज भक्तन हित नर तनुधारी ❀ करत बाललीला सुखकारी
हरि अपने रंगन कछु गावैं ❀ नंदभवन भूषण मन भावैं
तनक तनक चरणनि सो नाचैं ❀ मनमन रीझ विविध विधि राचैं
मन्द मन्द पग नूपुर बाजैं ❀ बाल विभूषण अंग विराजैं
कबहूँ भुज उठाय गुहरावैं ❀ धौरी धूमरि गाय बुलावैं
कबहूँ माखन लै मुख नावैं ❀ कबहुँ खम्भ प्रतिबिम्ब खवावैं
माखन माँग दुहूं कर लेई ❀ एक भाग प्रतिबिम्बहिं देई
तासों कहत लेत क्यों नाहीं ❀ डारि देत काहे महि माहीं
दुरि देखत यशुमति महतारी ❀ उर आनंद करत अति भारी

दो० हरषि जननि मुख चूमिकै, लीनो गोद उठाय।
परमानँदरसमगनमन, सोसुख किमि कहिजाय॥

सो० कौतुकनिधिभगवान, करतचरित नितनितनये।
सुंदर श्याम सुजान, ब्रजवासिन के प्रेमवश॥

अथ माटीखान लीला॥

खेलत श्याम धामके द्वारे ❀ सोहत ब्रज लरिका सँगवारे
अति अज्ञान सबनि मति भोरी ❀ सबकी प्रीति श्याम सँग जोरी
एक वैस सब परम सुहाये ❀ करत बाललीला सकुचाये
गावत हँसत देत किलकारी ❀ लखि लखि सुखपावत महतारी

निरखि रूप सब व्रजजन मोहें ❀ कोटिकाम नहिं पटतर सोहें
तन पुलकित अति गदगद बानी ❀ निरखि मनहिं मन महरि सिहानी
तबहिं श्यामघन माटी खाई ❀ यशुमति देखि सांटिले धाई
पकरी भुजा श्यामकी जाई ❀ कहति कहा यह करत कन्हाई
उगिलहु वेगि बदन ते माटी ❀ नाहीं तौ मारति हौं सांटी
सब दिन झगड़त हौ सबग्वालन ❀ मोसों अब कह कहिहो लालन
तब मोहन कीन्हीं लँगराई ❀ कहत कि मैं माटी नहिं खाई
झूठहि मोको लोग लगावै ❀ माटी मोको नेक न भावै

दो० झूठ कहत तोसों सबै, माटी मोहिं न सुहाय।
नाहिं मानै जो मातु तू, दिखराऊं मुँह बाय॥
सो० दीनो बदन उघारि, नयन मूंदि माता निकट।
देखि चकित नँदनारि, तनकी सुरति रही नहीं॥

देखरायो त्रिभुवन मुखमाहीं ❀ नभ शशि रवि तारा इक ठाहीं
सर सागर सरिता गिरि कानन ❀ सुर सुरनायक शिव चतुरानन
सकल लोकनायक यमकाला ❀ महिमंडल सब अग जग जाला
देखि चरित यशुमति अकुलानी ❀ करते सांटि गिरत नहिं जानी
बदन मूंदि तब हरि दृग खोले ❀ डर समेत माता सों बोले
मैया मैं माटी नहिं खाई ❀ यशुमति चकित रही अरगाई
कहत नंद सों यशुदा रानी ❀ हरि की कथा न जात बखानी
माटी के मिस करि मुख बायो ❀ तीनि लोक तामहिं दिखरायो
स्वर्ग पताल धरणि वन बागा ❀ सुर नर असुर विपुल खग नागा
अपर सृष्टि कहि जात सु नाहीं ❀ देखी सकल बदन के माहीं
मोकों परत सांच सब जानी ❀ जो कछु कही गर्ग मुनिबानी
चकित नन्द सुनि अचरज बानी ❀ मन मन करत विचार विनानी

दो० नन्द कहत सुनु बावरी, हरि अति कोमल गात।
लै सांटी धावति बृथा, पुनि पाछे पछितात॥
सो० अचरज तेरी बात, को जानै देख्यो कहा।
कुशलरहौ दोउ भ्रात, राम श्याम खेलत हँसत॥

कहति श्यामसों यशुमति मैया ❋ मैं तेरी बलिहारि कन्हैया
मैं अजान रिस बीच न जानी ❋ बृथा श्याम तुमकों रिसियानी
जरहु हाथ जिन सांटि उठाई ❋ बरहु आंखि जिन दीठ दिखाई
मधु मेवा दधि माखन छाटी ❋ खात लाल तुम काहे माटी
सिगरोइ दूध पियो तुम न्यारे ❋ बल को बांटि न देहु पियारे
कहत नंद सों यशुमति मैया ❋ दुहौ लाल की नाटी गैया
कजरी को पय पियो गोपाला ❋ जो तेरि चोटी बढ़ै बिशाला
सब लरिकन में तो तन माहीं ❋ बेग बयस बल श्रीअधिकाहीं
मातु बचन सुनिकै अनुरागे ❋ ज्यों त्यों करि पय पीवन लागे
छिन पीवत छिन छिन कछु टोवै ❋ देखि देखि मुख हँसत यशोवै
मैया कब बाढ़ैगी चोटी ❋ यह तो है अबहीं लौं छोटी
तू जो कहतहिं बल लौं ह्वै है ❋ छोड़त गुहत गोड़लौं जैहै

दो० किती बार भइ पय पियत, चोटी बड़ी न होहि।
कहि कहि झूठी बात नित, दूध पियावत मोंहि॥
सो० सुनि सुनि भोरी बात, सुंदर श्याम सुजान की।
यशुमति मन न अघात, हँसि लीने उरलाय हरि॥

अथ शालग्राम लीला॥

भोरहिं महर यमुन तट धाये ❋ दरशन करि अति ही सुख पाये
करि असनान नन्द घर आये ❋ पूजा हित यमुना जल लाये

तुलसीदल अरु कमल पुनीता ❀ प्रभु निमित्त आने अति प्रीता
पांय धोय प्रभु मन्दिर आये ❀ करी दण्डवत प्रेम बढ़ाये
अस्थल लीप पात्र सब धोये ❀ पूजा के सब साज सजाये
छाप तिलक सब अंग सँवारे ❀ प्रभु पूजा विधि करन सँवारे
कुँवर कान्ह खेलत ते आये ❀ देखत पूजा विधि तिन लाये
विधिवत देव नन्द अन्हवाये ❀ चन्दन तुलसी फूल चढ़ाये
पट अंतर दै भोग लगायो ❀ आरति चरणनि शीश नवायो
तबहीं श्याम बिहँसि उठि बोले ❀ कहत तातसों वचन अमोले
बाबा तुम जो भोग लगायो ❀ सो तो देव कछू नहिं खायो
सुनि हरि वचन श्रवण सुखदाई ❀ चितै रहे मुख हँसि नँदराई

दो० कहत नंद सुख पाय कै, यों नहिं कहिये तात।
देवन को कर जोरिये, कुशल रहै जिहि गात॥

सो० हँसत श्याम सुखदानि, नंद स्वरूप न जानहीं।
रह्योतिनहिंसुतमानि, करत जो व्रजलीलासगुण॥

देखत जननि तहां दुर ठाढ़ी ❀ मगन प्रेमरस आनँद बाढ़ी
बैठे नंद समाधि लगाई ❀ तब यह लीला रची कन्हाई
शालग्राम मेलि मुख माहीं ❀ बैठि रहे हरि बोलत नाहीं
ध्यान विसरजन करि नँद जागे ❀ शालग्राम न देखे आगे
खोजत चकित चित्त नँदराई ❀ इष्ट देव किन लिये चुराई
इत उत खोजत पावत नाहीं ❀ भयो बड़ो अचरज मनमाहीं
बिहँसत हरिके मुख में जाने ❀ देखत महरि महर मुसकाने
सुनहु तात जननी बलिजाई ❀ उगिलहु शालग्राम कन्हाई
मुखते तबहिं काढ़ि व्रजनाथा ❀ दियो देवता नन्द के हाथा
हरिके चरित कहे नहिं आवें ❀ बालविनोद मोद उपजावें

लखि लखि मात पिता पुलकाहीं ❀ देखि देखि सुर सिद्ध भुलाहीं
धन्य धन्य सब ब्रजके बासी ❀ बिहरत जहां ब्रह्म अविनासी

दो॰ परते पर है ब्रह्म जो, निर्गुण अलख अनूप।
सो ब्रज भक्तन प्रेमबश, बिहरत बालक रूप॥

सो॰ प्रेम मगन पितु मात, निशिदिन जात न जानहीं।
क्योंहूं मन न अघात, सुनत बचन देखत दरश॥

अथ न्हवावन की लीला॥

यशुमति श्यामहि कह्यो न्हवावन ❀ सुनतहिं मचलि परे मनभावन
उबटन लै आगे गहि बाहीं ❀ लोटि गये हरि मानत नाहीं
तब यशुमति बहुभांति दुलारे ❀ मैं बलि उठहु न्हवाऊं प्यारे
उबटन पाछे धस्यो चराई ❀ फुसलावत सुत श्याम कन्हाई
मैं बलि ऐसी आरि न कीजे ❀ जो चाहो सोइ मोपै लीजै
कहत लाल रोवै दुख पावै ❀ ऐसी को जो तोहिं खिझावै
अतिरिस तें मैं बलि तन छीजे ❀ सुन्दर कोमल अंग पसीजे
बरजतही बरजत बिरुझाने ❀ करि करि क्रोध मनहिं अकुलाने
धरत धरत धरणी पर लोटैं ❀ गहि माता के चीर निझोटैं
गहि गहि अँगके भूषण तोरैं ❀ दधि माखन के भाजन फोरैं
धस्यो तपत जल जननी पासै ❀ मानत नाहिं ताहि ते त्रासै
महरि बांह धरिकै तब आने ❀ जबहीं तेल उबटने साने

दो॰ तब हुचती करिमात को, गिरत परत गये भाज।
नेक निकट लागै नहीं, मनमोहन ब्रजराज॥

सो॰ तबचुपकारे मात, समय भेद कहि कहि बचन।
मैं बलि आवहु तात, नहिं आवो तो जानिहौ॥

तुम मेरी रिस को हरि जानों ॥ मोकों नीकी विधि पहिचानों
जो नहिं आवहु मदनगोपाला ॥ आज तुम्हें तो बांधों लाला
तबहिं नंद उतते चलि आये ॥ कहत हरिहिंकिनअतिहिखिझाये
लै कनियां उरसों लपटाये ॥ वदन चूमि यशुमति पहँलाये
कत खिझवत मोहनहिं अयानी ॥ लै हियलाय लिये नँदरानी
क्योंहुँ यत्न करिके जब पायो ॥ तब उबटन हरिके अँग लायो
पुनि तातो जल स्नान समोयो ॥ दियो न्हवाय वदन शशि धोयो
सरस वसन लैकै तन पोंछयो ॥ पहुरो वदन सरोज अँगोछयो
अंजन दोऊ दृग भर दीनों ॥ ऊपर चारु चखोंडा कीनों
सब अँग के भूषण मँगवाये ॥ क्रम क्रम लालन को पहिराये
ऐसी रिस नहिं कीजै कान्हा ॥ अब कछु खाउ जाउँ बलि नान्हा
तब तुतरात कह्यो काहेरी ॥ जो मोको भावै सो देरी

दो० कहतजननि या वचनपर, मैया बलिबलिजाय।
जोइजोइ भावै लालको, सोइ सोइ ल्यावै माय॥

सो० किये अमित पकवान, मैं अपने सुत के लिये।
सो सब कहौं बखान, जो भावै सो लीजिये॥

सद माखन अरु दही सजायो ॥ तुम्हरे हित पर औटि जमायो
खोवा औट्यो मधुर मलाई ॥ तापर मिसरी पीसि मिलाई
अरुप्योसरि अति सरस सवाँरी ॥ तामहिं सोंठि मिरच रुचिकारी
खीर बरा करिकै दधिबोरे ॥ मानहुँ चंद अमी मधुबोरे
खुरमा और जलेवी बोरी ॥ जेहि जेंवत रुचि होत न थोरी
अरु लड्डू बहुभांति सवाँरे ॥ जे मुख मेलत कोमल प्यारे
अरु गूझा बहु पूरन पूरे ॥ अति सुवास उज्ज्वल अतिरूरे
बावर घेवर घीउ चभोरे ॥ मिश्री पीसि तल ऊपर बोरे

सुन्दर मालपुआ मधुसाने ❀ तब तुरत करि रोहिणि आने
अतिहीं सुन्दर सरस अँदरसे ❀ घृत दधि मधु मिलि स्वादन सरसे
सरस सवाँरी दाल मसूरी ❀ अरु कीन्हों सीरा घन पूरी
पूरी सुनिके हिय हरि हरषे ❀ तब जेंवन पर मन करि करषे

दो० सुनत यशोदा तुरतही, लै आई हरषाय।
बलदाऊ को टेरि कै, लीन्हों नन्द बुलाय॥

सो० षटरस के परकार, जे बरणे यशुदा प्रथम।
परसिधरे सब थार, जेंवत हरि बलबीर दोउ॥

जेंवत एक थार दोउ बीरा ❀ हरषि श्याम रुचि राख्यो सीरा
तब शीतल जल लियो मँगाई ❀ भरि झारी यशुमति लै आई
जल अँचवावत नैन जुड़ाने ❀ दोऊ हर्षि हर्षि मुसकाने
तब जननी हँसि चुरू भराये ❀ तनक तनक कछु मुख पखराये
रचि रचि उजरे पान खवाये ❀ अतिही अधर अरुण ह्वै आये
ठाढ़े तहां सबल ब्रजदासा ❀ लागिरहे जूठनि की आसा
तनक तनक कछु मोहन खायो ❀ उबर्यो सो ब्रजदासनि खायो
सखा बृन्द प्रिय द्वार पुकारे ❀ खेलन आवहु कान्ह पियारे
तृषित दरश रस चातक दासा ❀ हरिय बरषि नव घन छवि पासा
बिनय बचन सुनि हर्ष कृपाला ❀ चले मनोहर चाल रसाला
लघु लघु ललितचरण कर लाला ❀ कमलनैन उर बाहु बिशाला
चन्दबदन तन छवि घनश्यामा ❀ अंग अंग भूषण अभिरामा

दो० निरखत छबि नँदलाल की, थकितसकलसुरबृन्द।
निहचल चखन चकोर जनु, तकतशरदको चन्द॥

सो० अति आनन्द उमंग, मिले सबनको जाय हरि।
ब्रीड़त कोटि अनंग, क्रीड़त बालक बृन्द सब॥

खेलत दूरि गये कहुँ कान्हा ❀ सखन संग धावत हैं नान्हा
बहुत अबेर भई घनश्यामहिं ❀ खेलत तें आये नहिं धामहिं
नंदहि तात मातु सुहिं कानन ❀ यौंहीं सुनत सुहात जु आनन
मन अवसेर करत महतारी ❀ पलक ओटरहि सकत न न्यारी
देखत द्वार गली में ठाढ़ी ❀ सुतमुख दरश लालसा बाढ़ी
ततक्षण हरि खेलत तें आये ❀ दौरि मातु लै कण्ठ लगाये
खेलन दूरि जात किन कान्हा ❀ मैं बलि तुम अबहीं अति नान्हा
आज एक वन हाऊ आयो ❀ तुम नहिं जानत मैं सुनि पायो
इक लरिका भाजिआयो तबहीं ❀ सो वह मोसां कहिगयो अबहीं
वह तो पकरि लेत है तिनको ❀ लरिका करि जानत है जिनको
चलहुभाजि चलिये निज धामहिं ❀ यह सुनि टेर लिये बलरामहिं
कनियां करि लैआई धामहिं ❀ बड़भागिनि यशुमति सुतश्यामहिं

दो० रूप रेख जाके नहीं, विधि हरि अन्त न पाय।
हाऊसों डरपाय तिहिं, यशुमति राखत स्नाय॥

सो० भाववश्य भगवान, भावइ करिके पाइये।
भक्तन के सुखदान, तिहिं तैसे जैसे भजे॥

ब्रज बीथिन खेलत मन मोहन ❀ हलधर सुबल सुदामा गोहन
और गोप बालक बहु बारे ❀ एक वयस सब हरिके प्यारे
बाल विनोद मोद मन दीने ❀ नाना रंग करत रस भीने
तारी हाथ मारि सब भाजें ❀ धावत धरत होड़ कर राजें
बरजत बलि हरि तू मति दौरै ❀ लगि है चोट गोड़ कहुँ तोरै
तब हरि कह्यो दौरि मैं जानों ❀ मेरो गात बहुत बलवानों
है श्रीदामा योग्य हमारो ❀ तासों मारि भजों मैं न्यारो
बोलि उठ्यो तबहीं श्रीदामा ❀ तारि मारि भाजो तुम श्यामा

तबहीं श्याम भजे दै तारी ❀ धस्यो जाय श्रीदाम हँकारी
तब हरि कह्यो बदौं नहिं तोहीं ❀ ठाढ़्यो भयो छुयो तब मोहीं
ऐसे कहि हरि ताहि रिसाने ❀ कहत सखा सब श्याम खिझाने
तब तो कह्यो दौर मैं जानौं ❀ हारे श्याम बुरो अब मानौं

दो० बोलि उठे बलराम तब, इनके माय न बाप।
हार जीति जाने नहीं, लरिकन लावत पाप॥
सो० ये हैं तनके श्याम, झूठहि झगरत सखन सँग।
रूठि चले हरि धाम, लखि उदास पूंछति जननि॥

मैं बलि क्यों उदास हरि आयो ❀ कौने मेरो लाल खिझायो
मैया मोहिं दाऊ दुख दीन्हों ❀ मोसों कहत मोल को लीन्हों
कहा करौं या रिसके मारे ❀ मैं नहिं खेलन जात दुआरे
पुनि पुनि कहत कौन तेरि माता ❀ को तेरो तात कौन तेरो भ्राता
गोरे नन्द यशोदा गोरी ❀ तुम तो कारे आये चोरी
मो सों कहत देवकी जाये ❀ लै बसुदेव यहां निशि आये
मोल कछू बसुदेवहिं दीन्हों ❀ ताके पलटे तुम को लीन्हों
ऐसे कहि कहि मोहिं खिझावै ❀ अरु सब लड़कन यहै सिखावै
मोहीं को तू मारन धावै ❀ दाउहि कबहुं न खीझ डरावै
रोष सहित सुनि बतियां भोरी ❀ बढ़त मातु उर प्रीति न थोरी
सुनहु श्याम बलराम चवाई ❀ झूठहिं तोहिं खिझावत जाई
मोहिं गोधन की सौंह कन्हैया ❀ मेरो सुत तू मैं तेरी मैया

दो० पाछे ठाढ़े सुनत सब, नंद श्याम की बात।
लीन्हें गोद उठाय हँसि, सुन्दर श्यामल गात॥
सो० बलको धरियो नन्द, सुनि मन हर्षे श्याम तब।
लीलानँद ब्रजचन्द, करत चरितजन मन हरन॥

भोजन के समये नँदराई ❀ करें सुरति बलराम कन्हाई
कह्यो बुलाय लेहु दोउ भैया ❀ मो सँग जेंवें आय कन्हैया
खेलत बहुत वेर भइ आजा ❀ उन बिन भोजन कौने काजा
यशुमति सुनत चली अतुराई ❀ ब्रज घर घर टेरत दोउ भाई
कहत बोलि लेहु कोऊ श्यामहिं ❀ खेलत हैं धों काके धामहिं
जेंवन सिद्ध सिरात धरोई ❀ उन बिन नंद न जेंवत सोई
ऐसे जननी के सुनि बैना ❀ आये खेलत तें सुखदैना
चलहु तात मैया बलि जाई ❀ जेंवन को बैठे नँदराई
परस्यो थाल धरेउ मग हेरति ❀ मैं तबहीं से तुम को टेरति
दौरि चलहु आगे गोपाला ❀ छांड़ि देहु गति मंद मराला
चलहु बेगि दौरो दोउ भाई ❀ सो राजा जो आगे जाई
जो जैहै पहिले बलि भाई ❀ तौ हँसिहैं तोहिं ग्वाल कन्हाई

दो॰ आये दौरे श्याम तब, तुरतहि पांय पखार।
बैठे जेंवन नन्द के, सँग दोऊ सुकुमार॥

सो॰ कछु डारत कछु खात, कछु लपटानो पाणि दुहुं।
सुभग सांवरे गात, बाल केलि रसबस खरे॥

बड़ौ कौर मेलत मुख भीतर ❀ आय गई तब मिरचि दशननर
तीक्षण लगी नैन भरि आये ❀ रोवत बाहर को उठि धाये
रोहिणि फूंक देत मुखमाहीं ❀ लिय लगाय उर नों गहि बाहीं
मधुर ग्रास लै तात निहोरे ❀ ले बैठे फुसलाय धकोरे
जेंवत कान्ह नंद की कनियां ❀ छवि निरखत ठाढ़ी नंदरानियां
बेसनके व्यंजन विधि नाना ❀ बराबरी बहु शाक बिधाना
मूंग ठरहरी हींग लगाई ❀ दाल चना की पीत सुहाई
राजभोग को भात पसायो ❀ उज्ज्वल कोमल सुगँध सुहायो

बेसन मिले कनिक की रोटी ❋ सद घृत चोरी पतरी छोटी
आंब आदि बहु भांति सँधाने ❋ दोउ भैया जेंवत रुचि साने
मिश्री दधि ओदन मिश्रित कर ❋ लेत श्यामसुन्दर अपने कर
आपुन खात नंद मुख नावैं ❋ सो छवि कहत कौन पै आवैं

दो० भोजन कर अचमन कियो, लै झारत नँदराय।
अपने करसों श्यामको, दीनों बदन धुवाय॥

सो० को करि सकै बखान, भाग्य यशोमति नंदके।
ब्रह्म रह्यो रुचि मान, बालरूप जिनके बदन॥

बैठे श्याम तात की कनियां ❋ पिवत दूध सुन्दर सुखदनियां
बार बार यशुमति समुझावै ❋ हरि सों अस्तन पान छुड़ावै
कहति श्याम तू भयो सयानो ❋ मेरो कह्यो लाल अब मानो
दूध पिवत देखत लरिका सब ❋ हँसत तोहिं नहिं लाज लगत अब
जैहैं दांत बिगरि सब तेरे ❋ अजहूं छांड़ि कह्यो करि मेरे
सुनत बचन मुसकाय कन्हाई ❋ अँचरो तर मुख लियो छिपाई
आये तबहीं सखा बुलावन ❋ मात कह्यो खेलहु मनभावन
यह सुनि हर्ष उठे बनवारी ❋ मांगत दे चौगान कहांरी
मथनी के पाछे कहि दीन्हों ❋ हर्षित श्याम तहांतें लीन्हों
लै चौगान बटा करि आगे ❋ चले सखन देखत अनुरागे
कहत सखन सों हरि हरखाई ❋ खेलहु गेंद कि ठोहर भाई
खेलत बनिहै घोष निकासू ❋ हरषि चले सब सहित हुलासू

दो० कान्हर हलधर बीर दोउ, भये भुजा बरजोर।
श्रीदामा अरु सुबल मिलि, जुरे सखा इकठोर॥

सो० और सखन के बृन्द, बांटिलिये जुरि जोटजुट।
अति आनँद नँदनन्द, दियोबटाढरकायमहि॥

आप अपनि घातन लेजाहीं ॐ एक एक सन पावन नाहीं
इत तें उत उत तें इत घेरें ॐ बटा गारि चौगाननि फेरें
दौरत हँसत खसत उठि मारें ॐ आप आपनी जीत बिचारें
जम्यो खेल अति मगन कन्हाई ॐ देखत सुर मुनि रहे लुभाई
जीतत सखा श्याम जब जाने ॐ करो खेल कछु तब गचलाने
कहत सखा सब सुनहु गोपाला ॐ रुगटैयां को कौन खियाला
श्रीदामा सों हौ तुम हारे ॐ झूठी सौंहैं खाउ ललारे
खेलत में को काको सैयां ॐ कहा भयो जो नन्द गोसैयां
तातें तुम गर्वित मन महियां ॐ तनक बसत हम तुम्हरी छहियां
अति अधिकार जनावत तातें ॐ तुम्हरे अधिक गाय कछु जातें
अब नाहिं खेलहिं संग तुम्हारे ॐ भये सखा सब रिस करि न्यारे
खेलोहि चाहे त्रिभुवन राई ॐ दियो दांव तब पीठि चढ़ाई

दो० जाकेगुणगणअगमअति, निगम न पावत ओर।
सो प्रभु खेलत ग्वालसँग, बँधे प्रेम की डोर॥

सो० खेलत भई अबेर, जननी टेरत श्याम को।
आवहु धाम सबेर, सांझ समय नहिं खेलिये॥

सांझ भई घर आवहु प्यारे ॐ बहुरि खेलियो होत सबारे
आपुहि जाय बांह गहि आने ॐ सुभग श्याम तन रज लपटाने
बोलि लिये यशुमति बलरामहिं ॐ लै आई दोऊ सुत धामहिं
धूरि झारि तातो जल ल्याई ॐ तेल परसि दीन्हें अन्हवाई
सरस बसन तन पोंछि सँवारे ॐ लै गोदी भीतर पग धारे
करहु बियारू कछु दोउ भाई ॐ पुनि तुमको गवों पौढ़ाई
सीरा पूरी सरस सवाँरी ॐ और धरी मेवा बहु न्यारी
दीन्हीं परसि कनक की थारी ॐ बल मोहन दोउ करत बियारी

मिसिरी मिलै दूध औटाई ❀ लै आई तब रोहिणि माई
प्रेमसहित दोउ जननि जिमावत ❀ देखि देखि छबि नैन जुड़ावत
खात खात मोहन अलसाने ❀ बारहिं बार श्याम जमुहाने
आरस सों कर कौर उठावत ❀ नैनन नींद झमकि झुकि आवत

दो० उठहु लाल तब मातुकहि, धोये मुख अरबिंद।
पौढ़ाये लै सेज पर, बलि अरु बालगोबिंद॥

सो० सोये बालमुकुन्द, दोउ भैया सुखसेज पर।
जननी अतिआनन्द, शोचत गुण गोपाल के॥

माखन मोहन को प्रिय लागै ❀ भूखो क्षण न रहत जब जागै
ताहि बदौं जो गहर लगावै ❀ नहिं मानै जो चंद मनावै
मैं इहि जानत बात श्याम की ❀ दृग नीचे नवनीत खानकी
लै मथनी दधि धर्यो बिलोई ❀ जब लगि लालन उठहिं न सोई
भोर भयो जागहु नँदनंदन ❀ संग सखा ठाढ़े जगबंदन
सुरभी पय हित बच्छ पियाये ❀ पक्षी तरुतजि चहुँदिशि धाये
चन्दमलिन उडुगण द्युतिनाशी ❀ निशि निघटी रबिकिरण प्रकाशी
कुमुदिनि सकुची बारिज फूले ❀ गुंजत मधुप लतालगि भूले
दरशन देहु मुदित नर नारी ❀ ब्रजबासी प्रभुजन सुखकारी
सुनि जननी के बचन रसाला ❀ खोले दृग राजीव बिशाला
हँसत उठे संतन सुखदाई ❀ मुख छबि देखि मातु बलि जाई
हरि कछु करहु कलेऊ प्यारे ❀ मैं माखन मथि धरेउँ सवारे

दो० रोटी अरु माखन तनक, देरी मा मोहिं हाथ।
लै आई जननी तुरत, कछु मेवा धरि साथ॥

सो० करत कलेऊ श्याम, माखन रोटी मानि रुचि।
त्रिभुवनपति सुखधाम, चारि पदारथ हाथ जिहि॥

अथ माखनचोरी लीला ॥

मैयारी मोहिं माखन भावै ❀ और कछू अति रुचि नहिं आवै
मधु मेवा पकवान मिठाई ❀ सो मो को नेकहु न सुहाई
ब्रज युवती इक पाछे ठाढ़ी ❀ हरिके बचन सुनत रत बाढ़ी
मन मन कहत कबहुँ अपने घर ❀ माखन खात लखों सुन्दर वर
बैठैं जाय मथनियां पाहीं ❀ अपने करनि काढ़िके खाहीं
मैं वरु देखहुं कहूं छिपाई ❀ कैसे मो घर जाहिं कन्हाई
हरि अन्तरयामी सब जानैं ❀ ग्वालिन मन की प्रीति पिछानैं
गये श्याम ता ग्वालिनि के घर ❀ ठाढ़े भये जाय द्वारे पर
इत उत देखत कोऊ नाहीं ❀ तब पैठे ताके घर माहीं
हरिको आवत ग्वालिनि जान्यो ❀ परम मुदित अतिही सुख मान्यो
रही दबकि दुरि दीठ लगाई ❀ हरि बैठे मथनी ढिग जाई
देखी माखन भरी कमोरी ❀ खान लगे करि अति मति भोरी

दो० चितै रहे मणि खम्भ में, हरि अपनी प्रति छांह ।
जानि दूसरे ग्वाल तिहि, प्रभु सकुचे मनमांह ॥

सो० तासों करत सयान, कहत लेहु आधो तुमहुं ।
हम तुम एक समान, भलो बन्यो है संग अब ॥

प्रथम आज मैं चोरी आयो ❀ तुम को देखि बहुत सुख पायो
अब तुम मेरे सँग नित आवो ❀ यह काहू से मतिहि जनावो
सुनि सुनि हरिके मुख की बानी ❀ उमंगि हँसी ब्रज युवति सयानी
श्याम चौंक मुख तासु निहारी ❀ भाजि चले ब्रज खोरि मुरारी
अति आनंद ग्वालि मन माहीं ❀ पूंछत सखी परस्पर नाहीं
पायो आज परो कछु तेरी ❀ कहा नोहि अति आनंद हेरी

गदगद कण्ठ पुलकतन तेरी ❋ सो किन कहै कहा सुख हेरी
तन न्यारो जिय एक हमारो ❋ हमैं तुम्हैं कछु भेद न न्यारो
सुनहु सखी मैं तोहिं बताऊं ❋ जो सुख भयो सो तोहिं सुनाऊं
यशुमति सुत सुन्दर सुनु गोरी ❋ आयो आज हमारे चोरी
खम्भ निकट मथनी हो माखन ❋ लियो निकासि लग्यो सो चाखन
मैं दुरि भीतर देखन लागी ❋ वा मोहन छबि पर अनुरागी

दो० देखिखम्भ प्रतिबिंबको, मन कछु सकुचे श्याम।
अर्द्धभाग तेहि देनकहि, प्रकट करो निजनाम॥

सो० तब न रह्यो मोहिं धीर, हँसी मनोहर बचन सुनि।
कहा कहौं तुम बीर, मन हरि लीन्हों सांवरे॥

मोहिं देखि तब गयो पराई ❋ सखी सो छबि कछु बरणि न जाई
सुनि हरि चरित सखी अनुरागी ❋ अति सुख पाय प्रेम रस पागी
कहत कि मैं देखन नहिं पायो ❋ सोइ अभिलाष जासु उर छायो
हरि अन्तरयामी सब जानैं ❋ सब के मनकी रुचि पहिंचानैं
इहि बिधि माखन प्रथम चुरायो ❋ कीन्हों ग्वालिनि को मन भायो
भक्तवछल संतन सुखकारी ❋ पुनि मन महँ यह बात विचारी
अब सब ब्रज घर माखन खाऊं ❋ माखन चोर नाम कहवाऊं
बालरूप मोहिं यशुमति जानैं ❋ ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि मानैं
मित्रभाव करि ग्वाल बखानैं ❋ प्रीति रीति सब मोसों मानैं
इनहीं के हित गोकुल आयो ❋ करौं सबन के मन को भायो
यह विचारि हरि निज उर ठाना ❋ भक्ति कृपा अम्बुज भगवाना
बालसखा सब निकट बुलाई ❋ तिनसों हँसि हँसि कहत कन्हाई

दो० माखन खइये चोरिकै, सब ब्रज घर घर जाय।
कीजै बाल बिहार यों, मेरे मन यह आय॥

सो० सुनि हर्षे सब ग्वाल, देत परस्पर तारि सब।
भली कही नँदलाल, तुम बिन यह बुधि को करै॥

चले सखन लै माखन चोरी ❀ एक वयस सबहिन मति भोरी
देख्यो झांकि झरोखा ओरी ❀ मथति एक ग्वालिनि दधि गोरी
धस्यो मठा मठनी में जानों ❀ ऊपर माखन है लपटानों
ग्वालिनि गई कमोरी मांगन ❀ पाई घात तबहिं सुन्दर घन
सखन समेत ताहि घर आये ❀ दधि माखन सबहिन मिलि खाये
छूंछी मटुकी छांड़ि सिधाये ❀ हँसत हँसत सब बाहर आये
आय गई द्वारे सोइ बाला ❀ घरसों निकसत देखे ग्वाला
माखन कर मुख दधि लपटानों ❀ ग्वालिनि यह कछु भेद न जानों
देखिरही हँसि मुख की शोभा ❀ निरखि रूप लाग्यो मन लोभा
चमकि गये हरि सखन समेता ❀ तबहीं ग्वालिनि गई निकेता
देखी जाय मथनियां खाली ❀ चकित विलोकत इतउत ग्वाली
मन हरि लीनो मदनगोपाला ❀ जान्यो ग्वालिनि हरि के ख्याला

दो० घर घर प्रकटी बात यह, सखा वृंद लै साथ।
चोरी माखन खात हैं, नन्दसुवन ब्रजनाथ॥

सो० सबके मन अभिलाख, चोरी पकरन पाइये।
धरियो माखन राख, यहै ध्यान सबके हिये॥

कहत परस्पर ग्वालि सयानी ❀ मन मोहन के रूप लुभानी
माखन खान देहु गोपालहि ❀ मत बरजो कोउ स्याम तमालहि
तुम जानत हरि कछू न जाने ❀ वे मोहन हैं परम सयाने
कोऊ कहत पकर जो पाऊं ❀ तो अपने हरि कण्ठ लगाऊं
एक कहत जो मेरे आवैं ❀ तौ माखन हम हरिहिं खवावैं
कहत एक जो मैं गहि पाऊं ❀ तो हरि को बहु नाच नचाऊं

कोऊ कहत जो हरिको पैये ❀ तौ गहि यशुमतिपै लेजैये
इक कह आजु हमारे आये ❀ द्वारहिं ते मोहिं देखि पराये
इहिविधि प्रेममगन सब बाला ❀ सबके हृदय ध्यान नँदलाला
निशि बासर नहिं नेक बिसारैं ❀ मिलिबे कारण बुद्धि विचारैं
गये श्याम सूने ग्वालिनि घर ❀ सखा सबै ठाढ़े द्वारे पर
देख्यो भीतर जाय कन्हाई ❀ दधि अरु माखन धर्यो मलाई

दो० सदमाखन देख्यो धरो, हरषे श्याम सुजान।
सखा बुलाये सैन दै, लै लै लागे खान॥

सो० इतउत चितवत जात, कछु संशय मनमें किये।
बांटत दधि अरु खात, उठिउठि झांकतद्वारतन॥

देखत सो ग्वालिनि अंतर करि ❀ मगन भई अति उर आनँदभरि
लीन्हीं बोलि सखी ढिगवासी ❀ तिन्हैं दिखावत हरि सुखरासी
देखि सखी शोभा अति बाढ़ी ❀ उठि अवलोकि ओट के ठाढ़ी
किहि बिधि है दधि लेत कन्हाई ❀ सखन देत अरु आपन खाई
बदन समीप पाणि अति राजै ❀ माखन सहित महाछबि छाजै
लै उपहार जलज मनु जाई ❀ मिलत चन्द सों वैर बिहाई
गिरिगिरि परत बदन तें ऊपर ❀ दुइ दधि सुत के बुन्द सुभगतर
मनोप्रलय जल आगम हरपत ❀ इन्दु सुधा के कणका बरपत
मुखछबि देखि थकित ब्रजनारी ❀ कहत न बनै रही उर धारी
बाल बिनोद मोद मन फूली ❀ भई शिथिल सब तन सुधि भूली
बरजन को अस्फुरत न बानी ❀ रहीं बिचारि विचारि सयानी
गये ठगोरी लाय कन्हाई ❀ रहीं ठगीसी सब सुख पाई

दो० बिश्वभरण पोषण करण, कल्प तरोवर नाम।
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेमबिबश भगधाम॥

सो० नितउठि करत विहार, ब्रज में घर घर सांवरो।
ब्रजजन प्राण अधार, माखन चोरी व्याजकरि॥

श्याम एक ग्वालिनि घर आये ❀ चोरी करत पकरि तिन पाये
कहत करी तुम बहुत ढिठाई ❀ अब तौं घात पर्हौ आई
निशिवासर मोहिं बहुत खिझायो ❀ दधि माखन सब मेरो खायो
दोउ भुज पकरि कह्यो कित जैहौ ❀ दधि माखन दै छूटन पैहौ
ताके मुखतन चितै कन्हाई ❀ बोले वचन मधुर मुसुकाई
तेरी सौं मैं छुयो न राई ❀ सखा खाय सब गये पराई
चारु चितौनि चित्त उरझानो ❀ उरते रोप जात नहिं जानो
सुनत मनोहर हरिकी बतियां ❀ लिये लगाय ग्वालिनी छतियां
बैठो श्याम जाउँ बलिहारी ❀ मैं ल्याऊँ दधि खाव बिहारी
हरि को लेन चली दधि गोरी ❀ हरि हँसि निकसि गये ब्रज खोरी
रही ठगी सी ग्वालिनि भोरी ❀ मन लै गयो सांवरो चोरी
हरि गये और ग्वालिनी के घर ❀ देख्यो जाय न कोऊ भीतर

दो० माखन काढ़ि निशंक ह्वै, लागे खान कन्हाय।
ग्वालिनि आवत जानि घर, तबउठि रहे छिपाय॥

सो० ग्वालिनि घर में आय, मथनी ढिग ठाढ़ी भई।
भाजन रीतो पाय, चकित विलोकति चहूं दिशि॥

अबहीं गई आई इन पांवन ❀ आयो माखन कौन चुरावन
भीतर गई तहां हरि पाये ❀ पकरी भुजा भये मन भाये
तब हरि कहि निज नाम लजाये ❀ नयन सरोज कलुक भरि आये
देखि वदन छबि आनँद हीके ❀ दीन्हे जान भाव ते जीके
भयो ग्वालि मन परम हुलासा ❀ कहन चली यशुमति के पासा
जो तुम सुनहु यशोमति माई ❀ हँसि हौ सुनि हरिकी लरिकाई

आजु गये हरि मों घर चोरी ❀ देखी माखन भरी कमोरी
मैं गइ आय अचानक जबहीं ❀ रहे छिपाय सकुचि कै तबहीं
जब मैं कह्यों भवन में कोरी ❀ तब मोहिं कहि निजनाम निहोरी
लगे लेन लोचन भरि आंसू ❀ तब मैं कानन तोरी सांसू
सुनत श्याम सब रोहिणिकनियां ❀ सकुचत हँसत मंद मुसुकनियां
ग्वालि बिहँसि हरि तन डरपायो ❀ माखन चोर पकरि मैं पायो

दो० करों नोयकी दाम्परी, बांधों अपने धाम।
लाय लिये उर रोहिणी, बांधि सकै को श्याम॥

सो० यशुमति उर आनंद, बाल चरित सुनि श्यामके।
कहत सुनो नँदनंद, ऐसो काम न करहु सुत॥

पुनि इक गृह गये नंददुलारे ❀ देखि फिरे तहँ ग्वाल दुवारे
तब हरि ऐसी बुद्धि उपाई ❀ फांदि परे पिछवारे जाई
सूनो भवन कहूं कोउ नाहीं ❀ मानहुं इन को राज सदाहीं
भांड़े मूंदत धरत उतारत ❀ दधि अरु माखन दूध निहारत
रैन जमायो गोरस पायो ❀ लगे खान मनु आप जमायो
आहट सुनि युवती घर आई ❀ झलकत देखे कुँवर कन्हाई
अँधियारे घर श्याम गये दुरि ❀ दधि मटुकी ढिग बैठि रहे मुरि
सकल जीव उर अंतरबासी ❀ तहां कछूक चटक परकासी
ग्वालिनि हरि को इत उत हेरे ❀ पावत नाहीं धाम अँधेरे
कहति अबहिं देख्यो नँदनंदन ❀ कितहि गयो पछितात मनहिंमन
परि गये दीठ ओट मथनीके ❀ सुन्दर श्याम प्राण गथनीके
तबहीं ग्वालिनि भुज गहि लीन्हों ❀ कहत तुम्हैं अब तो मैं चीन्हों

दो० कहौ कहा चाहत फिरत, धाम अँधेरे माहिं।
बूझे बदन दुरावते, सूधे चितवत नाहिं॥

सो० दधि मथनी में हाथ, अबका उतर बनाइहो।
सखा नहीं कोउ साथ, कहिये अब कैसी बनै॥
मैं जान्यों यह घर है मेरो ❀ ता धोखे इत है गयो फेरो
दृष्टि परी च्यूंटी दधि माहीं ❀ काढ़न लग्यों तिन्हें यहि ठाहीं
सुनि मृदु बचन ग्वालि मुसुकानी ❀ तुम हो रतिनागर हम जानी
उर लगाय मुख चुम्बन कीनो ❀ विधिहि मनाय विदा करिदीनो
हरि दरशन बिन क्षण न सोहाई ❀ उरहन मिस यशुमति पहँ आई
सुनहु महरि निज सुतकी करणी ❀ करत अचक्करी जात न बरणी
नित प्रति करत दूध दधि हानी ❀ कहँ लगि करें कान नँदरानी
मैं अपने मंदिर अँधियारे ❀ माखन धरयो दुराय सवांरे
सोई ढूंढि लियो हरि जाई ❀ अति निशंक नहिं नेकुडेराई
बूझे उत्तर तुरत बनावै ❀ च्यूंटी काढ़न को कर नावै
सुनि ग्वालिन के बचन सयानी ❀ हँसिकै बोध कियो नँदरानी
यशुमति कहत श्यामसों प्यारे ❀ पर घर काहे जात ललारे
दो० मम लोचन आगे सदा, खेलहु सखन बुलाय।
तुम्हरे बालबिनोद लखि, मेरो हियो सिराय॥
सो० मोपै लीजै श्याम, दधि माखन मेवा मधुर।
सब कछु तेरे धाम, पर घर जाय बलाय तुव॥
माखन मांग्यो कुँवर कन्हाई ❀ मुदित मातु तुरतहिं लै आई
लगी खवावन हिय हरषानी ❀ श्याम कह्यो देहो निजपानी
दियो हाथ धरि भरिकै दोना ❀ चले खान खेलन हरि लोना
सखन संग खेलत बनमाली ❀ यमुना जानि लगी इक ग्वाली
आप चले ताके घर माहीं ❀ पूछत बात कौन है काहीं
लखे तहां शिशु दोय अयाने ❀ भीर देखने गोय डराने

इत उत देख्यो गोरस नाहीं ❀ ऊँचे धर्यो सिकहरन माहीं
तब मनमोहन रच्यो उपाई ❀ आनि तहां ऊखल औंधाई
ता पर एक सखा बैठारी ❀ ताके कन्ध चढ़े बनवारी
ऐसी विधि करि गोरस पायो ❀ दधि माखन सबही मिलि खायो
दूध डारि बछरू सब छोरे ❀ दिये निकासि बनहिं के ओरे
मही छिरकि लरिकन डरपाई ❀ चले अग्र करि सखा कन्हाई

दो० ग्वालिनि आवत देखिकै, सखा गये सब दौरि।
फँसि भीतर मोहन परे, रोंकि लई तिन पौरि॥

सो० रोष भरी मुख बात, प्रेम भर्यो अन्तर हियो।
कहत महरके तात, जात कहां दधिचोर अब॥

तब हरि ताके मुख तन देखी ❀ कीन्हे उर नख घात विशेखी
अति रिस ग्वालिनि मन उपजाई ❀ दोउ भुज पकरि महरि पै लाई
मानों महरि कह्यो तुम मेरो ❀ अति उत्पात करत सुत तेरो
राख्यो गोरस छिके चढ़ाई ❀ ग्वाल कन्ध चढ़ि लियो कन्हाई
माखन खाय दूध ढरकायो ❀ मही छिरकि बालकन रुवायो
और कहत सकुचत हौं बाता ❀ कहा दिखाऊँ तुमको गाता
हैं गुण बड़े श्याम के माई ❀ इहां सकुचि लरिका है जाई
बरजत क्यों नहिं सुतहि अनेरो ❀ कहा कहौं नित प्रति को झेरो
जो कछु राखैं दूरि दुराई ❀ तहीं तहीं ते लेत चुराई
तापर देत बछरुअन छोरी ❀ बन बन फिरत वही चहुँ ओरी
चोरी अधिक चतुर बनवारी ❀ सुनहु महरि हम इनते हारी
कहँ लगि इनके गुणनि बखानों ❀ तुम इन को सूधो मति जानों

दो० सुनत ग्वालनीके वचन, यशुमति हरि तन देखि।
भयेसकुचयुतमुखनिरखि, कोमलललितविशेखि॥

सो० कहत लगावत लोग, झूठहि सब मेरे सुतहि।
कब भयो चोरी योग, पांच वर्ष के तनिक मे॥

इहि मिसि देखन को सब आवें ❀ चोरी मेरे सुतहि लगावें
ऐसो तो मेरो न अन्याई ❀ अतिही बालक कुँवरकन्हाई
छीके बँधे भवन अति ऊंचे ❀ तहँ कैसे ये भुजा पहुंचे
कौन बेग इतनो है आयो ❀ तेरो गोरस कैसे खायो
हाथ नचावत आवत दौरी ❀ जीवन करहि समुझि के बौरी
घरही माखन भरी कमोरी ❀ कबहूँ लेत न आंगुरि बोरी
इतनी सुनत निरखि घनश्यामहिं ❀ बिहँसि चली ग्वालिनि निजधामहिं
हरि सों कहत महरि समुझाई ❀ मैं बलि कहुँ जिन जाहु कन्हाई
तुम्हरे कारण षट रस नाना ❀ करि करि राखे विविध विधाना
इतो उपाय करत कित माई ❀ पर घर दधि माखनहिं लगाई
व्रज की बाढ़ी ग्वालि गँवारी ❀ हाट बाट दधि बेंचन हारी
नहिं कछु लाज न कान विचारें ❀ बोलत बचन कटुक मुंह फारें

दो० झूँठो दोष लगायकै, नित उठि आवत प्रात।
सन्मुख बादत शंक तजि, विकट बनावत बात॥

सो० नौ लख दुहियत गाय, दूध दही तेरे घना।
तू कित चोरी जाय, बुरो मानिहें नन्द सुनि॥

हरि माखन चोरी रस गीधे ❀ कैसे रहें प्रेम के बींधे
एक ग्वालि घर मांझ अँधेरे ❀ अति श्यामल तन परत न हेरे
कछुक धरो गोरस तहँ पायो ❀ प्रथम सुरुचि कर भोग लगायो
कियो प्रकट दीपक गृह ग्वाली ❀ तहँ देखे भीतर बनमाली
भुजा चार धरि दरश दिखायो ❀ ग्वालिनि लखि अति अचरज पायो
दधि माखन के बूंद सुहाये ❀ सुभग श्याम उर अति छबि छाये

मानहुँ यमुना जल के माहीं ❋ देखि परत उडुगण परछाहीं
इहि छबि निरखि रही छकि ग्वाली ❋ बहुरों भये द्विभुज बनमाली
देखि चरित हरषीं ब्रजबाला ❋ चकित बिलोकति हर्ष बिशाला
मन मन कहति कहा मैं देख्यो ❋ यह जाग्रत के स्वप्न विशेख्यो
प्रेम मगन तन की सुधि भूली ❋ गदगद कंठ रोमावलि फूली
मन हरि लीनो रूप दिखाई ❋ चले वहां तें कुँवरकन्हाई

दो॰ देखि श्यामके चरित वर, ब्रजनारी सुख पाय।
होहिं हमारे पुरुष हरि, मांगत विधिहि मनाय॥

सो॰ घर घर करत विलास, नाना भेष दिखाय हरि।
ब्रजजन परम हुलास, देखि चरित गोपाल के॥

देखी श्याम ग्वालि इक ठाढ़ी ❋ गोरस मथति प्रात छवि बाढ़ी
डोलत तन उघर्यो शिर अंचल ❋ बेणी चलत पीठ पर चंचल
यौवन मदमाती अठिलानी ❋ करपत रजु दुहुँ करन मथानी
इत उत अँग मोरति झकझोरी ❋ गोरे अंग दिनन की थोरी
मढ़ी उरोजन अँगिया गाढ़ी ❋ मनहुँ काम सांचे भरि काढ़ी
रीझि रहे लखि नंददुलारे ❋ लागे खेलन तासु दुआरे
फिरि चितई ग्वालिनि द्वारे तन ❋ परि गये दृष्टि श्यामसुन्दर घन
बोलि लिये हरुवे सूने घर ❋ लिय लगाय उर सों सुन्दर वर
उमँग अंग अँगिया उरदरकी ❋ तिहि अवसर सुधि रही न घरकी
तवहीं सुन्दर श्याम सुजाना ❋ भये वरस द्वादश अनुमाना
सो छवि देखि छकी ब्रजनारी ❋ बहुरि भये शिशुरूप निहारी
हरिके कौतुक अति सुखदाई ❋ देखि रही मति गति विसराई

दो॰ माखन लै तब श्याम मुख, धरत आपने पान।
अति आनंद उमंग उर, बिसरी ग्वालि सुजान॥

सो० रसिकशिरोमणिश्याम, माखनखायरिझायतिय।
आये अपने धाम, छवि सागर नागर नवल ॥

मन हरि लीन्हों कुँवरकन्हाई ❀ बिन देखे क्षण रह्यो न जाई
उरहन के मिस ग्वालि सयानी ❀ आई देखन हरि सुखदानी
सुनहु महरि सुत के गुण जैसे ❀ कहा कहों कहि जात न तैसे
माखन खाय मही ढरकायो ❀ चोली फारि अबहिं भजि आयो
गोरस हानि सही लै माई ❀ अब कैसे सहि जात ढिठाई
बीचहिं बोलि उठे बनवारी ❀ झूठहिं मोहिं लगावत ग्वारी
खेलत तें मोहिं लियो बुलाई ❀ दोउ भुज भरि लीनो उर लाई
मेरे कर अपने उर धारी ❀ आपुनहीं चोली उर फारी
माखन आपहिं मोहिं खवायो ❀ मैं कब दही मही ढरकायो
अति भोरी सुनि हरिकी बानी ❀ यशुमति ग्वारी सों रिसियानी
जानत हौं जो कपट तिहारो ❀ अति भोरो सुत मेरो बारो
दै दै दगा बुलावति ताही ❀ सोइ सोइ करत जो भावत जाही

दो० बोलिबोलिनिजनिजभवन, भेटतिभरिभरिअङ्क।
भोरे भोरे बाल को, ग्वालिनि लाज निशङ्क ॥

सो० तापर उर नख लाय, फिरत दिखावति लाजतजि।
कान्हहिं दोष लगाय, आपुन आति भोरी भई ॥

नित उठि उरहन लै हठि धावैं ❀ बिना भीत ही चित्र बनावैं
मिस करि करि मेरे गृह आई ❀ रहन श्याम नन दीठि लगाई
मेरो पांच बरष को कान्हा ❀ अजहुं गोय पय मांगत नान्हा
कहँ तू यौवन की मदमाती ❀ हरिके संग फिरत अठिलाती
ग्वालिनि सुनत यशोमति बैना ❀ मन हरि लीन्हो राजिवनैना
आव न रोष प्रीति मन माहीं ❀ उत्तर देत बनत कछु नाहीं

कछु अनउत्तर कहि रिसिआई ❀ चली भवन उर राखि कन्हाई
यशुमति यहै सिखावति श्यामहिं ❀ कत हो जात पराये धामहिं
ये सब गोरस की मदमाती ❀ फिरत ढीठ ग्वालिनि इतराती
नित उठि उरहन देत बिहाने ❀ मुखसँभारि नहिं बात बखाने
रुचि उपजै तुम्हरे मन जोई ❀ मोपै मांगि लेहु किन सोई
कहि कहि मधुर बचन निजताता ❀ सुख उपजावत मेरे गाता

दो० अपनेहिं आंगन खेलिये, सखन सहित दोउ भाय।
मुहिं सुख दीजे आपने, बाल बिनोद दिखाय॥

सो० सुन्दर घन ब्रजनाथ, कोटिकाम शोभा हरण।
गोप बाल लै साथ, करत बाललीला ललित॥

मथुरा जात लखी इक ग्वाली ❀ चरचि लई ताको बनमाली
बैठि रहे ताके पिछवारे ❀ सखा संग लै नन्ददुलारे
कहति परोसनिसों समुझाई ❀ सुनि लीन्हों सो कुँवरकन्हाई
बेंचन जाति सखी हों दहियो ❀ तौलौं मेरे घर तन चहियो
सद माखन द्वै माठ धरोई ❀ सौंपि जातिहौं ताकों सोई
डर तो और कछू ब्रज नाहीं ❀ नंदसुवन सखि आय न जाहीं
यों कहि चली ग्वालिनी जबहीं ❀ सखन सहित हरि पैठे तबहीं
कछु ग्वालन की आहट पाई ❀ सो पुनि फेरि घरहि फिरि आई
देखि सखा सब चले पराई ❀ पकरे ग्वालिनि धाय कन्हाई
और न जानि जान मैं दीन्हे ❀ तुम कित जात अचकरी कीन्हे
बांह पकरि लै चली लिवाई ❀ कहत यशोमति देखहु आई
उरहन देत सदा रिस मानौ ❀ अब अपनो सुत आय पिछानौ

दो० वहै उरहनो नित्य को, सत्य करन के काज।
मैं गहि ल्याई श्यामको, बांह पकरिके आज॥

सो० हरि बैठे निज धाम, खेलत जननी के निकट ।
कौतुकनिधिघनश्याम, करत चरितसंतनसुखद ॥

यशुमति सुनि ग्वालिनि की बानी ❀ देखन चली सुतहि अकुलानी
गये तहां है सुता पराई ❀ देखि यशोमति अति रिसयाई
तेरे आंखन मति हिय नाहीं ❀ वदन देखि पहिचानत नाहीं
देखहु री याकी गति माई ❀ या कन्या को कहत कन्हाई
तैं जो मेरे सुत को नामा ❀ सूधो करि पायो है श्यामा
तू गहि बांह कौन को ल्याई ❀ खेलत मेरे धाम कन्हाई
रही बाल हरिको मुख चाही ❀ समुझि समुझि मनमें पछिताही
बांह पकरि मैं घर ते ल्याई ❀ कीन्हे कैसे चरित कन्हाई
जात बनै ना कछु कहि जाई ❀ रही ग्वालि ठगिसी सकुचाई
महरि कहत चलि जाहि इहां तें ❀ मैं जानत सब तुम्हरी बातें
हरि के चरित कहा कोउ जाने ❀ ग्वालिनि तन दुरि मुरि मुसकाने
हरिते हारि चली गृह ग्वाली ❀ बुधि हरि जीते श्याम तमाली

दो० बहुरि गये इकग्वालि घर, मनमोहन घनश्याम ।
सखन सहित हरषित गये, सूनो पायो धाम ॥
सो० सब घर लियो ढँढोरि, माखन खायो चोरि कर ।
भाजन डारे फोरि, गोरस दियो लुढ़ाय सहि ॥

सोवत लरिकन चुटकि जगाये ❀ मही छिरकि डरपाय रुवाये
बड़ो माठ इक घीको पेखो ❀ बहुत दिननको चिकनो चोखो
सोऊ फोरि कियो बहु टूका ❀ चले हँसत सब मिलिके कूका
आयगई ग्वालिनि तिहिं काला ❀ निकसत भगिगाये नंदलाला
देख्यो घर बासन सब फोरे ❀ रोवत बाल मही सों बोरे
दोऊ भुज गाढ़े गहि लीन्हे ❀ जाय महरि ढिग ठाढ़े कीन्हे

कहति सरोष यशोमति आगे ❀ अब पति रहिहै या ब्रज त्यागे
ऐसे हाल किये गृह मेरे ❀ सुनहु महरि लक्षण सुतकेरे
माखन खाय दही ढरकायो ❀ मही छिरकि बालकन रुवायो
बासन फोरि धरे सब घरके ❀ उपज्यो पूत सपूत महर के
घी को माट युगन को राख्यो ❀ सोऊ फोरि टूक करि नाख्यो
चलो दिखाऊं घर को हाला ❀ राखहु बाँधि आपनो लाला

दो० जननी खोजत कान्ह को, करत फिरत उत्पात।
नित उठि उरहन सहत हौं, तू नहिं मानत तात॥

सो० बड़े बाप के पूत, चोर नाम प्रकट्यो जगत।
उपज्यो पूत सपूत, नाम धरावत तात को॥

जननी के खीझत हरि रोये ❀ भरि आये नयनन के कोये
झूठहिं मोहिं लगावत धगरी ❀ मेरे ख्याल परी हैं सिगरी
यशुमति रोवत देखि कन्हाई ❀ बदन पोछि लीनो उर लाई
कहत सबै युवतिन यह भावै ❀ नितही नित उठि भोरहिं आवै
मेरे बारहि दोष लगावै ❀ झूठहिं उरहन मोहिं सुनावै
कबहीं गयो तेरे दरवाजें ❀ दूध दही माखन के काजें
धन माती इतराती डोलैं ❀ सकुचत नाहिं सँभार न बोलैं
मेरो कान्ह तनक सो माई ❀ ताहि रुवावत झूंठि लगाई
कब हरि तेरो माखन लीनों ❀ मेरे बहुत दई को दीनों
कहा भयो घर गयो तिहारे ❀ छुयो तनक दधि बालक बारे
ग्वालिनिसुनियशुमतिकीबानी ❀ कहति महरि तुम उलटि रिसानी
नित उठि होय जासु की हानी ❀ सो क्यों कहै आन नँदरानी

दो० तुम कछु लावत औरही, लेहु आपनो गांव।
जहां बसे नाहिं पति रहै, तजन कह्यो सो ठांव॥

सो० पूतहिं देत पठाय, मड़हाई घर घर करन।
उरहन देत रिसाय, को बसिहै ऐसे नगर॥

सखा भीर लै पैठत जाई ❀ आप खाय तो महिये माहीं
जो कछु गोरस घरमें पावें ❀ कछु डारें कछु सखन लुटावें
कहँ लों सहैं नित्य की हानी ❀ कबलों करें नंदकी कानी
इक दिन मेरे मन्दिर आयो ❀ मोको देखत बदन छिपायो
जब मैं सन्मुख पकरन धाई ❀ तब के गुण कह कहें सुनाई
भाजि रह्यो दुरि देखत जाई ❀ मैं पौढ़ी अपने गृह आई
हरें हरें आये शिरहाने ❀ चोटी पाटी बांधि पराने
सुन मैया याके गुण मोसों ❀ यह सब झूठ कहत है तोसों
खेलति तें मोहिं लियो बुलाई ❀ मोपे दधिकी च्यूंटि कराई
टहल करों मैं याके घरकी ❀ यह सोवे पतिसंग निधरकी
सुनत वचन यशुमति मुसक्यानी ❀ ग्वालिन हँसि मुख मोरि लजानी
सुनहु महरि सुतके गुण काने ❀ समुझहु हैं भोरे के स्याने

दो० करतफिरत उतपातअति, सबब्रज घर घर जाय।
नित उठि खेलत फागसी, गरियावत न लजाय॥

सो० बाहर तरुण किशोर, बोलत वचन विचित्र बर।
यहां होत शिशु भोर, तुम अचरज मानत नहीं॥

यों कहि गई ग्वालिनी धामहिं ❀ यशुमतिपुनिपुनिसिखवतश्यामहिं
घर गोरस जिन जाहु पराये ❀ तात खिजत उरहनों लाये
लघु दीरघता कछु नहिं जानें ❀ झगरो आय झूंठ नब ठानें
नौ लख धेनु दूध की तेरे ❀ और बहुत धन हैं घर मेरे
तू कित माखन खात चुराई ❀ छांड़िदेहु अब यह लरिकाई
यों कहि जननी कंठ लगायो ❀ सुन्दरस्याम हरष नब पायो

खेलन गये बहुरि नँदलाला ❀ किये जाय पुनि सोई ख्याला
अपर ग्वालि उरहन लैआई ❀ आई यशुमति पहँ रिसिआई
तेरे कान्ह मेरो माखन खायो ❀ सखन सहित अबहीं भजि आयो
मैं गइ यमुन भरन को पानी ❀ दुपहर द्योस सून घर जानी
गयो भवन मम खोल किंवारी ❀ छीकन ते दधि लियो उतारी
खाय लुटाय बहाय पराने ❀ बालक है बरजो नहिं माने

दो० कीन्हों अतिही लाड़लो, लाड़ लड़ाय बहूत।
अबहीं ते ये ढँग करत, जाय अनोखो पूत॥

सो० सुनिग्वालिन के बैन, कहत यशोमति कान्हसों।
सिखयो मानत हैन, लै सँटिया डाटत भई॥

माखन खात पराये घरको ❀ मेरे रहत जहां तहँ दरको
नित प्रति मथियत सहस मथानी ❀ तेरे कौन वस्तु की हानी
कितने अहिर जियत घर मेरे ❀ बेंचत खात मही बहुतेरे
पूत कहावत नन्दमहरि को ❀ चोरी करत उघारत फरिको
मैया मैं नहिं माखन खायो ❀ मेरे बदन सखन लपटायो
भाजन ऊंचे छिकन चढ़ायो ❀ समुझ देखु मैं कैसे पायो
मैं इन नान्हें हाथ पसारी ❀ किहि बिधि माखन लियो उतारी
मुख दधिपोंछत कहत कन्हाई ❀ दोना पाछे पीठ दुराई
डारि सांटि यशुमति मुसकानी ❀ गहि उरलाय लिये सुखदानी
बालबिनोद मोद मन मोह्यो ❀ निरखत बदन त्रास युत सोह्यो
भक्ताधीन बेद यश गावै ❀ सो हरि भक्तिप्रताप दिखावै
यशुमतिको सुख निरखि अगाधा ❀ बिसरी शिव मुनि ब्रह्म समाधा

दो० धनिब्रजबासीधन्यब्रज, धनि धनि ब्रजकी गाय।
जिनकोमाखनचोरिहरि, नितउठिघरघरखाय॥

सो० रहे सकल सुर भूल, ब्रजविलास हरि को निरखि।
हरषहिं वरषहिं फूल, धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि ॥

आई कहत और इक ग्वाली ❋ सुनहु यशोमति सुत की चाली
भाजि गये मेरे भाजन फोरी ❋ माखन खाय मही महि ढोरी
हांक देत पैठत घर माहीं ❋ काहू विधि करि मानत नाहीं
सखा संग कीन्हे इकठोरी ❋ नाचत फिरत सांकरी खोरी
बाट घाट कोउ चलन न पावै ❋ गारी दै दै सबन बुलावै
गोरस हानि करत है सिगरो ❋ कहँ लगि कीजे नित उठि झगरो
घर घर करत फिरत सुत चोरी ❋ ऐसी विधि बसिहै ब्रज को री
सुनत गोपिका की रिसबानी ❋ कहत श्यामसों नँद की रानी
तू नहिं मोहिं डरात मुरारी ❋ बकत बकत तोसों पचिहारी
षटरस भरे धरे घर माहीं ❋ ताते तुलै खान क्यों नाहीं
घर घर चोरी को नित जाई ❋ देन उरहनो ग्वालि सदाई
मोको कृपण कहत सब आई ❋ तेरे घर दोटहु न अघाई

दो० सुनि सुनि लाजन मरति मैं, तू नहिं मानत बात।
अब तोहिं राखौं बांधि कै, जानी तेरी घात ॥

सो० सुन री ग्वालिन बात, कहे देत अब तोहिं स।
जबहीं पावहु घात, मेरी सों यहि मारियो ॥

अब तैं मोकहँ बहुत खिझाई ❋ सांटिन मारि करौं पहुनाई
अजहूं मानि कह्यो करि मेरो ❋ तू घर घर मति फिरै अनेरो
जननी रिस लखि श्याम डराने ❋ अब नहिं जहां भाय बिराने
यों कहि निकरि गये हरि द्वारे ❋ खेलत सखन संग नगिचारे
तबहीं ग्वालि और इक आई ❋ सो यशुमतिसों कहन सुनाई
नन्दमहरि सुत भलो पढ़ायो ❋ ब्रजघर वीथिन शोर मचायो

मारि भजत काहू के लरिका ❀ खोलत है काहू को फरिका
काहू को दधि माखन खाई ❀ काहू के घर करत भँड़ाई
गारी देत सकुच नहिं मानै ❀ गैल चलत हठि झगरो ठानै
कह कह हरिके गुणन बतैये ❀ तोसों उरहन देत लजैये
कछु टोनासो पढ़ि करि आई ❀ जो भावत सो कहत कन्हाई
पीताम्बर ओढ़त शिरमाहीं ❀ अञ्चल दै दै मुरि मुसकाहीं

दो० तेरी सौं तोसों कहत, मैं सकुचति यह बात।
तेरोमुख हरि लखतहीं, सकुचि तनकु ह्वै जात॥
सो० नेक दिखावहु आँखि, नहिं अबतें यह ढँग भले।
कबलागिकहियेराखि, करतअचकरीश्यामअति॥

अथ दांवरी बन्धन लीला॥

यशुमति सुनि हरि के गुणगाथा ❀ रिसकरि उठी सांटि लै हाथा
कहत जो ऐसी रिस में पाऊं ❀ तो हरि की गति तुमहिं दिखाऊं
कैसे हाल करौं हरि केरे ❀ लागे तात आज ह्वै मेरे
छांड़ों नहीं आज विन मारे ❀ भये श्याम अब बहुत दुलारे
इहि अन्तर आई इक गोपी ❀ बांह गहे हरिकी मुख कोपी
भलो महरि सूधो सुत जायो ❀ चोली हार खोलि दिखरायो
किन नहिं सुतको लाड़ लड़ायो ❀ कौने नहीं कठिन करि जायो
तेरो कछू अधिक री माई ❀ बरजत नाहिंन नेक कन्हाई
यशुमति हरिको भुज गहिलीन्हों ❀ कहत बहुरि अपनो ढँग कीन्हों
हरुवे सँटिया द्वैव लगाई ❀ आज बांधि मेटौं लँगराई
गहे भुजा सुत की बितताती ❀ इत उत रजु खोजत नँदरानी
हरि जननी उर कोप निहारी ❀ मन मन बिहँसत कौतुक कारी

दो० अग्नि प्रेरि त्रिभुवन धनी, दियो क्षीर उफनाय।
यशुमतिलखितजिहरिभुजा, लगीसँभारनजाय॥
सो० इहि बिधि भुजा छुड़ाय, दधि भाजन फोरनलगे।
माखन मुँह लपटाय, गोरस दियो लुढ़ायसब॥

रिस में रिस औरै उपजाई ॥ जानि जननि अभिलाष कन्हाई
देखि यशोमति अतिरिस पागी ॥ पकरि श्याम को बांधन लागी
गर्व जानि नहिं दाम समाई ॥ सब रज्जु द्वै आँगुर घटि जाई
पुनि पुनि यशुमति और मँगावै ॥ हरिके तन सब ओछी आवै
देखि यशोमति अति रिस बाढ़ी ॥ मन पछितात ग्वालिनी ठाढ़ी
देखि सखी यशुमति बौरानी ॥ हरिको बांधन चहत सयानी
हरिको त्रिभुवनपति नहिं जानै ॥ जिनते सकल कलेश न मानै
अखिल ब्रह्मांड उदर में जाके ॥ बांधत महरि उदर रज्जु ताके
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी ॥ इनहूं जिनकी गति नहिं जानी
जल थल जिनकी ज्योति समानी ॥ कही गर्ग सब प्रकट बखानी
मुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई ॥ ताहू पर परतीति न आई
तिनहिं देख बांधति नँदरानी ॥ अचरज कथा न जानि बखानी

दो० आप बँधावत प्रेम वश, भक्तन छोरत फन्द।
बदत बेद बाणी बिदित, भक्तवछल नँदनन्द॥
सो० जननिहिंअतिरिसजान, यमलाअर्जुनउधारतिकरि।
दीनबन्धु भगवान, जन हित गये बँधाय प्रभु॥

जननी के मन की रुचि जानी ॥ आप बँधायो शार्ङ्गपानी
कहत यशोमति लै कर डोरी ॥ बांधों तोहिं सके को छोरी
लै लै रज्जु ऊखल सों जोरैं ॥ हरि लखि नंद नयन जल ढोरैं
यह सुनि ब्रजयुवती उठि धाईं ॥ देखि श्याम को मन मुसुकाईं

कहति इन्हें कोऊ मत छोरो ❋ बहुरि श्याम अब माखन चोरो
ऊखल बांधि यशोमति डोरी ❋ मारन को सँटिया कर तोरी
सांटी देखि ग्वालि पछितानी ❋ बिकल भई मन अति अकुलानी
कहत यशोमति सों सब गोपी ❋ ऐसी कहा पूत पै कोपी
कहा भयो जो बालक पाहीं ❋ ढरक गई मथनी महि माहीं
घर घर गोकुल दई दिवारी ❋ तू बांधत हरि की भुज कारी
ऐसी तोहिं बूझियत नाहीं ❋ गोरस लगि बांधत सुत बाहीं
चूक परी हम तें इहि भोरें ❋ उरहन दियो बकस कर जोरें

दो० बार बार जोवत बदन, हुचकिन रोवत श्याम।
बज्रहुँ ते तेरो हियो, कठिन अहो नँदबाम॥
सो० कित रिस करति अचेत, छोर उदर ते दांवरी।
डार कठिन कर बेत, लोचन भरि भरिलेतहरि॥

जाहु चली अपने अपने घर ❋ तुमहिं सबै मिलि ढीठ कियो बर
बन्धन छोरन को अब आई ❋ मोको मति बरजो कोउ माई
मोहिं आपने बाबा की सों ❋ अब न पत्याउँ श्याम को बीसों
देखिचुकी मैं इन के ख्याला ❋ उपजे बड़े नन्द के लाला
मैं देवन हित पय औटायो ❋ कोरी मटुकी दही जमायो
जावन दियो न पूजन पायो ❋ सो सब फोरि भूमि ढरकायो
तिहि घर देव पितर कछु काके ❋ भयो कान्ह सों सुत घर जाके
कहत एक सुन यशुमति बौरी ❋ दधि कारण सुत बांधत दौरी
तैं यह सीख कौन पै लीनी ❋ इतनी रिस बालक पर कीनी
जो अतिही अनकरो कन्हाई ❋ तऊ कोख को जायो माई
नेक देख धौं हरिहिं निहारी ❋ कैसे डरत लकुटि डर भारी
शोभित सजल सांवरे लोचन ❋ नीरजलद अति ओस भरे जन

दो० नमित वदन सूखत अधर, कछुक सकुचमें रोप।
सांझहोत जिमि वातवश, शोभित पंकज कोप॥
सो० निरखि नैन सुख देत, हरिपै सरवस वारिये।
प्रगटे नंद निकेत, को जानै किहि पुण्यवश॥
एक कहत जो आयसु पाऊं ॥ तौ माखन निज घरते लाऊं
जिहिं कारण कीनी रिस हरितें ॥ अजहुँ न डारत सँटिया करतें
देखि डरात तोहिं हरि कैसे ॥ सकुचत जलज शीतभय जैसे
वेग छोरि बंधन पट त्यागी ॥ ले लगाय उर श्याम सभागी
कहनलगीं अब वढ़ि वढ़ि वानी ॥ माखन मोहिं देतिहैं आनी
मानों मेरे घर कछु नाहीं ॥ तब नहिं उरहन देत लजाहीं
ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो ॥ उरहन दै दै मूड़ पिरायो
रिसही में मोको गहि दीनो ॥ सबको ज्ञान जानि मैं लीनो
बोली अपर एक व्रजनारी ॥ देखहु यशुमति सुतहिं निहारी
मुखछवि कोटिमदन बलिहारी ॥ ये हैं साह कि चोर विहारी
नाहिंन तरुण किशोर कन्हाई ॥ कतहिं करत इनसों रिस माई
कहा भयो जो उरहन आने ॥ बालक हरि अबहीं कहजाने
दो० भ्रमित भ्रमित तो त्रासतें, चपल सजल दृगकोर।
मनहुँ मीन बंसी विंधे, करत सलिल झकझोर॥
सो० ले उठाय उर धारि, छोर उदरतें दांवरी।
प्राण दीजिये वारि, मोहन मदनगोपाल पर॥
तेरो कठिन हियो है माई ॥ कहत एक ग्वालिनि समुझाई
ऐसी माखन दधि वहि जाई ॥ बांधे कमलनयन जेहि लाई
जो मूरति शिव ध्यान लगावैं ॥ सपनेहुँ सुर नहिं दरशन पावैं
निगमनहूं खोजत नहिं पाई ॥ सो तैं दै करतार नचाई

याही तें तू गर्व भुलाई ❋ घर बैठे तेरे निधि आई
काहू को सुत रोवत देखी ❋ लेत धाय उर लाय बिशेखी
अब यह कित सीखी चतुराई ❋ निज सुतसों इतनी कठिनाई
कहत एक देखहु नँदनारी ❋ कब के ऊखल बँधे मुरारी
गयो क्षुधा ते मुख कुम्हिलाई ❋ अति कोमल तन श्यामकन्हाई
भई बेर बीते युग यामा ❋ हरिके निकट आयगयो घामा
तू लागी गृह कारज माहीं ❋ है निरदई दया कछु नाहीं
घरको काज इनहुं तें प्यारो ❋ यशुमति नेक न हृदय विचारो

दो० जलजलोल लोचन सजल, भये त्रासते दीन।
चितवत तेरे बदन तन, मनमोहन आधीन॥
सो० केतिक गोरस हान, जाको तोरत कान तू।
वारि दीजिये प्रान, रोम रोम पर श्याम के॥

हरिको देखि सखा यक धायो ❋ तिन हलधरसों जाय सुनायो
अहो राम तुम्हरो लघु भैया ❋ बांध्यो आज यशोदा मैया
काहूके लरिकहिं हरि मार्यो ❋ यशुमति पै तिन जाय पुकार्यो
तबतें हरिहि बांध बैठायो ❋ छोड़ति नाहिंन सबहि छुड़ायो
सो हम तुमहिं जनावन आये ❋ हलधर सुनत तुरत उठिधाये
माता डरत न अतिहि त्रसाये ❋ हरिहि देखि लोचन भरिआये
कहत भले दोउ भुजा बँधाये ❋ ऊखल सों बाँधे हरि पाये
मैं बरजे कइबार कन्हाई ❋ आजहुँ छोड़ देहु लँगराई
दोउ करजोरि कहत री मैया ❋ काहे को बांध्यो मेरो भैया
श्यामहिं छोड़ि बांधि बरु मोहीं ❋ और कहा कहिये अब तोहीं
मेरो प्राण अधार कन्हाई ❋ ताकी भुज मोहि बँधी दिखाई
कौन काज गोरस धन धामा ❋ जिहिकारण बांध्यों घनश्यामा

दो० छुवतौ और जो तन कोऊ, आज देखतो सोय।
तू जननी कछु वश नहीं, जो कछु करै सो होय॥
सो० तेरे वश हरि आहिं, को जानै केहि पुण्यते।
तू पहिंचानत नाहिं, गोरस हित बांधत हरिहिं॥

सुनहु बात हलधर तुम मेरी ❀ करन देहु सेवा इन केरी
माखन खात परायो जाई ❀ प्रगटत चोरी नाम कन्हाई
तुमहीं कहौ कमी केहि केरी ❀ नौ निधि की मेरे घर ढेरी
हौं हारी बरजत दिन राता ❀ मानत नाहिंन मेरी बाता
कहा करौं हरि अतिहि खिझाई ❀ भयो बहुत ही ढीठ कन्हाई
मेरो कह्यो तनक नहिं मानै ❀ नित उठि टेक आपनी ठानै
भोर होत उरहन लै आवै ❀ व्रज युवतिन तें मोहिं लजावैं
जहँ तहँ धूम मचावत जाई ❀ घर नहिं रहत क्षणक कन्हाई
तुमहूं दोष देत हो मोहीं ❀ कान्हर ते प्यारो दधि तोहीं
तोहिं तजि और कहौं किहि मैया ❀ और कौन मेरो मान रखैया
तेरी सौं जननी सुन मोहीं ❀ उरहन देत झूंठ सब तोहीं
है सब व्रज को श्याम पियारो ❀ श्याम सकल व्रज को रखवारो

दो० दधि माखन पय कान्ह को, कान्हाकी सब गाय।
मोहूं को बल कान्ह को, तू नहिं जानत माय॥
सो० बलदाऊ की बात, सुनि हँसिकै यशुमति कह्यो।
तुम यकमत दोउ भ्रात, जानत मैं तुम्हरे चरित्त॥

हरिहि देखि हलधर मुसकाने ❀ यह तुम गति तुम बिन को जाने
को तुम छोरन बांधन हारा ❀ तुम छोरत बांधत संसारा
कारन करन करत मन माने ❀ अति हित यशुमति हाथ बिकाने
असुर सँहारन जन दुखमोचन ❀ कमलापति राजीव बिलोचन

भक्तन के बश रहत सदाई ❀ ताही तें कछुश्रो न बसाई
हरि यमलार्जुन तरु तन हेरे ❀ मन में कहत दास ये मेरे
अबहीं आजु इन्हें उद्धारौं ❀ दुसह शाप मुनिवर को टारौं
इनहीं के हित भुजा बँधाई ❀ परसि विटप अब देहुँ गिराई
दारुण दुख इन को सब टारौं ❀ इहि मिसि करि बन्धन निरवारौं
भक्तवछल हरि दीनदयाला ❀ करुणासिन्धु अगाध कृपाला
भक्ताधीन बेद यश गावैं ❀ पावन पतित नाम कहवावैं
भक्त हेतु नाना तन धारी ❀ करत चरित भक्तन सुखकारी

दो० ब्रजबासी प्रभु भक्तहित, आप बँधायो दाम।
ताही दिनतें प्रकट है, दामोदर सो नाम॥

सो० नन्दनँदन घनश्याम, जनरंजन भंजन विपति।
मेटत जिनको नाम, पाप शाप त्रयताप दुख॥

यशुदा बाहर छांड़ि कन्हाई ❀ लगी मथन दधि भीतर जाई
कहत बचन रस रिस लपटाने ❀ खात फिरत दधि धाम बिराने
षटरस छांड़ि आपने धामा ❀ चोरी प्रकट करत हैं श्यामा
मारि भजत ब्रजलरिकन जाई ❀ जहां तहां ब्रज धूम मचाई
रहौ तुमहुँ हलधर चुप साधी ❀ इनकी मेटन देहु उपाधी
ऊखल सों बांधे बनवारी ❀ कहत यशोमति सों ब्रजनारी
कान्हहुँ ते तोहिं माखन प्यारो ❀ अरी देख तरसत हरि वारो
डारि देहि मथनी नँदरानी ❀ है है हरि की भुजा पिरानी
दूध दही हरि पै सब वारो ❀ मोहन जीवनप्राण हमारो
हरुवे बोलि उठी नँदरानी ❀ जाहु सबै तुम युवति सयानी
मैं खीझति लरिकहि गुणकाजैं ❀ तुम कत झुरत दई बिन काजैं
लरिकहि त्रास दिखावत रहिये ❀ अबहीं ते अवगुण नहिं चहिये

दो० युवति चलीं विरुझाय सब, कहत यशोदहिं पोच ।
मूरख सों कहिये कहा, करत प्रेमवश शोच ॥
सो० कहा करें बलि जाउँ, कहत चलीं सब श्याम सों ।
धरत यशोदहि नाउँ, अति कठोर मानत नहीं ॥

तबहिं श्यामसुन्दर यह ठानी ❋ युवती धाम गईं सब जानी
गृह कारज जननी अटकायो ❋ आप यमल अर्जुन पहँ आयो
परसत पात उठे झहराई ❋ परे शब्द आघात सुहाई
उखरे मूल सहित अरराई ❋ दिये धरणि दोउ तरुन गिराई
भये चकित सब ब्रजके वासी ❋ रहे सकुचि तन सुधिबुधि नासी
कोइ भूमि कोउ तकत अकासा ❋ रहे थकितसों जकि मनत्रासा
याही अन्तर युगल कुमारा ❋ प्रगटे धनदतनय सुकुमारा
नारद शाप पाय दोउ भाई ❋ भयेहुते ब्रज में तरु आई
हरिके परसत निज गति पाई ❋ भये पुनीत मिटी जड़ताई
तिन्हैं कृपाल अनुग्रह कीन्हों ❋ चारिभुजाकरि दरशन दीन्हों
देखि दरश अति पुलक शरीरा ❋ परे चरण दोउ बन्धु अधीरा
बार बार पद रज शिर धारी ❋ जोरि पाणि अस्तुति अनुसारी

छं० अनुसारि अस्तुति युगल प्रेमानँद मगन सन्मुख खरे ।
जय जय भगत हित सगुण सुन्दर देहधरि धावत हरे ॥
जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे ।
सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उर धरे ॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन मही ।
धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोरही ॥
धनि धनि उरहनो देत नित उठि धन्य अनख बढ़ावहीं ।
धनि सो जननी बांधि राखति जाहि बेद न पावहीं ॥

धन्य सो तृण जासु को रज्जु श्याम भुजन बँधायऊ।
धन्य सो तरु जासु ऊखल धनि सुजन गाढ़ि ल्यायऊ॥
धन्य ऋषि धनि शाप दीन्हो अतिअनुग्रह सो कियो।
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दरशन दियो॥
अब कृपाकरि देहु बर प्रभु चरण पंकज मति रहै।
जहां जन्महिं कर्म्मबश तहँ एक तुम्हरी रति रहै॥
दीनबन्धु कृपाल सुन्दर श्याम श्रीब्रजनाथ जू।
राखिये निज शरण अब प्रभु करिय हमहिं सनाथ जू॥

दो० बार बार पद नाय शिर, विनती प्रभुहिं सुनाय।
प्रेममगन निरखत बदन, हर्षसहित दोउ भाय॥

सो० साधु साधु कहि नाम, भक्तिदान तिनको दियो।
बिदा किये घनश्याम, हर्षिगये निजपुर युगल॥

बृक्ष शब्द सुनि यशुमति धाई ❀ देखे अजिर न कुँवरकन्हाई
परे बिटप महि लखि अकुलानी ❀ श्याम चले तरुतर यह जानी
आरत महरि पुकारन लागी ❀ बांधे हरि मैं परम अभागी
सुनत शोर ब्रजजन उठि धाये ❀ नन्दद्वार सब आतुर आये
देखि गिरे तरु मनहिं डराने ❀ ढूंढ़त श्यामहिं अतिहि सकाने
बार बार सब करहिं बिचारा ❀ गिरे कौनविधि बिटप अपारा
देखे दुहुँ तरु बीच कन्हाई ❀ रहे त्रसित ऊखल लपटाई
धाय लिये भुज छोरि उठाई ❀ ब्रजयुवतिन उर लीन्हे लाई
कहत सबै नन्दहि बड़ भागी ❀ बचे श्याम कहुँ चोट न लागी
कबहूँ बांधत मारत कबहूं ❀ देत दोष यशुमति को सबहूं
नयन नीर भरि दौरि यशोदा ❀ लियो लगाय कंठभरि गोदा
जरहु सो रज्जु जिन तुमको बांध्यो ❀ जरहु हाथ जिन जेवरि सांध्यो

दो॰ नन्दमोहिं कहिहैं कहा, देखितबरणि न जाय।
कुशल रहौ अब आतदोउ, मैं लै मरहुँ बलाय॥
सो॰ श्याम रहे लपटाय, अति समीत उर मातुके।
वारवार बलिजाय, यशुमति मन पछितात अति॥
ब्रजयुवती लै लै उर लावें ❋ निरखि वदन तन मन सुख पावें
मुख चूमत यह कहि पछितार्हीं ❋ कैसे बचे अगम तरु मार्हीं
वड़ी आयु हरिकी है माई ❋ जहां तहां विधि होत सहाई
प्रथम पूतना मारन आई ❋ पय पीवत वह तहां नशाई
तृणावर्त लै गयो उड़ाई ❋ आपहि गिरयो शिला पर आई
कागासुर आवत नहिं जान्यो ❋ मुनी कहति जिव लेन पगान्यो
शकटासुर पलना ढिग आयो ❋ को जाने तिहि काहि गिरायो
कौन कौन करवर विधि टारी ❋ ऊखल सों बांधे महतारी
वहुतेउँ उवरयो आजु कन्हाई ❋ ऊपर वृक्ष परे भहराई
सवहिन पेलि करत मन भाई ❋ पुण्य नन्द के बच्यो कन्हाई
भुजपर बन्धन चिह्न निहारी ❋ कहत यशोमति सों ब्रजनारी
ये गुण यशुमति अहहिं तिहारे ❋ सकुची महरि निरखि हरि प्यारे
दो॰ तबहिं नन्द आये घरहिं, दोउ तरु गिरे निहारि।
श्याम चपल बांधे सुने, देत महरि को गारि॥
सो॰ बांधति है बिन काज, मेरे हरि बारे सुतहिं।
कुशलकरी विधि आज, शोचत नँद लखित मगन॥
तवहिं तात कहि धाय कन्हाई ❋ लिये नन्द कनियां सुख पाई
चूमि वदन उरसों लपटाये ❋ प्रेम पुलकि लोचन भरि आये
मेरे लाल मैं तुम पर वारी ❋ काहे को बांधे महतारी
कैसे गिरे वृक्ष अति भारी ❋ नली नाहिं कछु ननक बयारी

बार बार शोचत नँदराई ❀ पूछत तैं कछु लख्यो कन्हाई
श्याम कही मैं कछू न जानों ❀ ऊखल ढिग मैं रह्यों छिपानों
कहत यन्द हरि बदन निहारी ❀ बड़ी आज विधि करवर टारी
बहुत दान हरिहाथ दिवायो ❀ द्विज चरणन लै लै सुत नायो
देहिं अशीष विप्र सुख मानी ❀ भये प्रसन्न नन्द सुनि वानी
तवहीं श्याम जननि पहँ आये ❀ हर्षि यशोमति कण्ठ लगाये
भूखो भयो आज मेरो बारो ❀ काको मुख धौं प्रात निहारो
ल्याई उरहन ग्वालिनि भिनहीं ❀ यह सब कियो पसारो तिनहीं

दो० पहिले रोहिणि सों कह्यो, तुरत करो जिवनार।
ग्वालबाल सब बोलि कै, बैठे नन्द कुमार॥

सो० वेगि ल्याव री मात, भूख लगी मोकों बहुत।
आज न खायों प्रात, सुनत बचन यशुमति हँसी॥

रोहिणि रही चितै यशुमति तन ❀ शिरधुनिधुनि पछितात मनहिंमन
परसहु हरिहि बिलम्ब न लावहु ❀ भूखे हरि छिन वेगि जिमावहु
बहु व्यंजन बहु भांति रसोई ❀ कहँ लगि वरणि कहै कवि कोई
परसत जात यशोमति मैया ❀ जेंवत श्याम सखा वल भैया
जो जो व्यंजन यशुमति राखे ❀ तनक तनक मोहन सब चाखे
श्याम कही अब मात अघानो ❀ अब मोकों शीतल जल आनो
अँचवन करि अँचये दोउ भैया ❀ अति सुख पायो लखि दोउ मैया
सहित सुगंधि पान कर लीने ❀ बांटि सकल ग्वालन को दीने
भ्राता सहित आप हरि खाये ❀ अधिकै अधर अरुण ह्वै आये
निरखत बदन मुकुर के माहीं ❀ ब्रजवासी जन बलि बलि जाहीं
भोजन करत भयो सुख जेतो ❀ बरणि सकै नहिं शारद तेतो
जो सुख नंदभवन के माहीं ❀ सो सुख तीन लोक में नाहीं

दो० सुख यशुमति अरु नंद को, को करि सकै बखान ।
सकलसुखन की खानि हरि, जहां रहे सुख मान ॥
सो० कोटि कोटि ब्रह्मण्ड, इक इक रोम विराटतन ।
सो अपने भुजदण्ड, लियउछंगयशुमतिहरषि ॥

यशुमति कहत श्यामसों प्यारे ❀ सुनहु वात मेरि नंददुलारे
अपनेही आंगन तुम खेलो ❀ मेरो कह्यो कबहुं नहिं पेलो
कहत चोर व्रजवनिता तोहीं ❀ सुनि सुनि लाज लगति है मोहीं
ताते रोष होत मन मेरे ❀ तव बांधत मारत जिमि चेरे
हलधर आज कहत हैं मोहीं ❀ झूठहिं नाम धरत सव तोहीं
ग्वालिनि हँसत कहत इक ऐसे ❀ चोरी नाम फिरत अब कैसे
चोर कहत युवती सव मोकों ❀ झूठहि आय कहत सव तोकों
मैं खेलों बाहर जहँ जाई ❀ चितै रहत सव मेरी घाई
अपने घर सव मोहिं बुलावैं ❀ मुख चूमति गहि गहि उर लावैं
माखन म्वहिं निज करन खवावैं ❀ हाथ जोरि कै विधिहिं मनावैं
देखत जवहिं लेत मोहिं टेरी ❀ मैं नहिं जाउँ सौंह मोहिं तेरी
यशुमति निरखि वदन मुसकानी ❀ उनकी वात सवै मैं जानी

दो० टेरि लेहु सव निज सखन, अरु भैया वलराम ।
सुख दीजै मेरे दृगन, चलहु आपने धाम ॥
सो० यह सुनि हर्ष वढ़ाय, वोलि लिये हलधर सखा ।
खेलहिं आंखमुंदाय, कहत सवनसों मुदित हरि ॥

हलधर कह्यो आंख को मूंदै ❀ हरषि कह्यो हरि जननि यशोदै
हरि अपनी तव आंख मुंदाई ❀ जहां तहां सव रहे लुकाई
कान लागि जननी समुझाये ❀ हैं सवमैं वलराम छिपाये
वलदाऊ को आवन देहौ ❀ श्रीदामा को चोर वनैहौ

इत उत मैं सब बालक आई ❀ यशुमति गात छुवन सब धाई
श्याम छुवन के कारण धावत ❀ अति अकुलात छुवन नहिं पावत
धाये सुबल छुवत तब श्यामा ❀ गह्यो जाय तिरछे श्रीदामा
कहत नन्द की सौंह जनाये ❀ जननी ढिग भुज नहिं लै आये
हँसि हँसि कहत सखा सों रामा ❀ अब तो चोर भयो श्रीदामा
हर्षित कहत यशोदा मैया ❀ जीत्यो है मेरो पूत कन्हैया
जाकी माया जगत खिलावै ❀ ब्रह्मा जाको अंत न पावै
ताहि यशोदा खेल खिलावै ❀ बालक जिमि वचनन फुसलावै

दो० जाके उर त्रयलोक थल, पंचतत्त्व चौखान।
सो बालक ह्वै खेलई, यशुदा के गृह आन॥

सो० दुर्लभ जप तप योग, ज्योति रूप जगधामहरि।
धन्यसो ब्रजके लोग, बालककरि मानत तिन्हैं॥

कहत भई यशुमति महतारी ❀ भई रात अब सुनहु मुरारी
करहु बियारू अब कछु प्यारे ❀ बहुरि खेलिये होत सबारे
मोकों तो कछु रुचि नहिं आवै ❀ तू कहि भोजन कहा बतावै
बेसन मिले कनक की पूरी ❀ कोमल उज्ज्वल हैं अति रूरी
अबहीं ताती तुरत बनाई ❀ रोहिणि तुम्हरे हेतु कन्हाई
निंबुआ आम करील सँधानो ❀ जाते तुम अतिही रुचि मानो
बल के संग बियारू कीजे ❀ मेरे नयनन को सुख दीजे
तनक तनक धरि कंचन थारी ❀ लै आई रोहिणि महतारी
श्याम राम मिलि करत बियारी ❀ अति अनंद दोउ जननि निहारी
खात खात दोऊ अलसाने ❀ मुख जँभात जननी पहिचाने
जल अँचवाय कमल मुख धोये ❀ बांह पकरि पलना पौढ़ाये
सोवत राम श्याम दोउ भैया ❀ हरुवे पाँय पलोटत मैया

दो० सोये श्याम सुजान हरि, सुख सों बीती रात।
बहुरि कलेऊ के लिये, जननि जगाये प्रात॥
सो० दियो कलेऊ प्रात, माखन प्यारे श्याम को।
मुदितनिरखिदिनरात, यशुमतिहरिकेचरितको॥

अथ वृन्दावनगमनलीला॥

महर महरि यह मनहिं विचारी ॐ गोकुल होत उपद्रव भारी
जब ते जन्म भयो हरि केरो ॐ नितहि होत उतपात घनेरो
अकस्मात गिरे तरु भारी ॐ बच्यो बड़न के पुण्य मुरारी
ताते अब तजिये यह गाऊं ॐ बसिये चलि कहुँ उत्तम ठाऊं
नन्दराय सब गोप बुलाये ॐ समाचार ये सबनि सुनाये
सबहिन के मन में यह आई ॐ बसिये अनत कहूं अब जाई
नितहिं उपाधि नई जिहि ठाहीं ॐ बसिबो भलो तहां को नाहीं
नंद कही मैं मनहिं विचारी ॐ है इक ठाउँ बहुत सुखकारी
वृन्दावन गोवर्द्धन पासा ॐ तहँ सबको सब भांति सुपासा
तहां गोपगण सब सुख पैहें ॐ बन में गोधन वृन्द चरैहें
यह विचार सब के मन भायो ॐ चलिबे को शुभ दिवस धरायो
वृन्दावन सब चले गुवाला ॐ पांच वर्ष के मदनगोपाला

दो० शकट सौंज सब साजिकै, गोधन दिये हँकाय।
चले गोप गोपी हरषि, वृन्दावन समुहाय॥
सो० निरखि अनूपम ठाम, शकट दिये मन भावते।
सबके मनबश श्याम, बसे सकल वृन्दा विपिन॥

बसे सकल वृन्दावन माहीं ॐ अति आनन्द गोप मनमाहीं
गाय बच्छ सबही सुख पायो ॐ चरत निकट तृण हरित सुहायो

हलधर धेनु चरावन जाहीं ❀ मनमोहन लखि मनहिं सिहाहीं
प्रात चले सब गाय चरावन ❀ जननी सों बोले मनभावन
मैं हूं गाय चरावन जैहौं ❀ बड़ो भयो अब नाहिं डरैहौं
संग सखा अरु हलधर भैया ❀ इन के संग चरैहौं गैया
बालन संग यमुन तट माहीं ❀ खेलहिंगे सब वट की छाहीं
अपनी रुचि बनके फल खैहौं ❀ तेरी सौं यमुना नहिं न्हैहौं
ऐसी अबहिं कहो जिन बारे ❀ देखहु अपनी भांति ललारे
तनक पाँय चलिहौ किहि भांती ❀ गैयन आवत ह्वै है राती
प्रात जात गैयन लै चारन ❀ आवत सांझ लखौ सब ग्वालन
तुम्हरो कमलबदन मुरझैहै ❀ रेंगत घाम मांझ दुख पैहै

दो० तेरी सौं मुहिं घाम नहिं, लागत भूख न नेक।
कह्यो कान्ह मानत नहीं, करै आपनी टेक॥

सो० चले चरावन गाय, ग्वाल बाल बलदेव बन।
हेरी टेर सुनाय, गोधन करि आगे लिये॥

हेरी टेर सुनत लरिकन की ❀ गये दौरि हरि अतिरुचि मनकी
इत उत यशुमति जबहिं निहारी ❀ दृष्टि न पड़े श्याम वनवारी
बन तन जान्यो जात कन्हाई ❀ टेरति यशुमति पीछे धाई
जात चले गैयन सँग धावत ❀ बलदाऊ को टेरि बुलावत
पीछे जननी आवत जानी ❀ फेरि फेरि चितवत भय मानी
हलधर आवत देखि कन्हाई ❀ ठाढ़े किये सखा समुदाई
पहुँची जननि भये सब ठाढ़े ❀ रिस करि दोउ भुज पकरे गाढ़े
बल कहै जान देहु सँग मेरे ❀ बन ते ऐहैं आजु सवेरे
कह्यो यशोमति बलहिं निहारी ❀ देखत रहियो मैं बलिहारी
भ्रात संग गये बनहिं कन्हाई ❀ यशुमति यहै कहति घर आई

देखो हरि कैसो ढँग लीन्हों ❀ अपनी टेक परो सोइ कीन्हों
आज जाय देखहु वनमाहीं ❀ कहा परोस भखो तिहि ठाहीं
दो० माखनरोटी औरजल, शीतल छाक बनाय।
दई वेगही ग्वाल सँग, यशुमतिवनहि पठाय॥
सो० चिन्तामणि सुर धेनु, पंच सुधारस कल्प तरु।
अनुदिन जाके एक, खात छाक सो ग्वाल सँग॥
वृन्दावन खेलत नँदलाला ❀ भयो हिये आनन्द विशाला
जहँ जहँ ग्वालन के सँग जाहीं ❀ तहँ तहँ आप फिरत वनमाहीं
वलदाऊ सों कहत कन्हाई ❀ नित ल्यावहु मोहिं संग लिवाई
आज मरू करि आवन पायो ❀ जननी तुम्हरे कहे पठायो
काल्हि कवन विधि करि वन ऐहों ❀ यशुमति पै आवन नहिं पैहों
सोवत वोलि लीजियो मोकों ❀ सौंहें नन्दबबा की तो कों
पुनि पुनि विनय करत सुखदाई ❀ वलि सों सखन समेत सुनाई
संध्या समय निकट जब आई ❀ घर कहँ चलो कह्यो बल भाई
गैयन घेरि करी इकठौरी ❀ चले सदन सब गावत गौरी
आवत वन ते धेनु चराई ❀ ग्वालन मध्य श्याम सुखदाई
जिहि जिहि भांतिग्वालसुखभावें ❀ सुनि सुनि मन मोहन उर गावें
नान्हें स्वर पुनि आपुनि गावें ❀ तारी देत हँसत सुख पावें
दो० मोर मुकुट वनमाल उर, पीताम्बर फहराय।
गोपद रज छवि वदन पर, आवत गाय चराय॥
सो० छुटी अलक छवि देत, जलज वदनपर मधुप जनु।
आवत सखन समेत, नंदसुवन व्रज प्राणधन॥
देखत नन्द यशोदा ठाढ़े ❀ रोहिणि अरु व्रज जन सुख वाढ़े
गायन संग श्याम जब आये ❀ लै वलाय जननी उर लाये

आज गयो हरि गाय चरावन ❀ मैं बलि जाउँ तनक से पांवन
मो कारण कछु बनते लाये ❀ तुम्हैं मिली मैं अति सुख पाये
आंचर सों सब अँग अँग झारे ❀ बदन पोंछि मुख चूमि दुलारे
खाउ कछू जो भावै मोहन ❀ देरी माखन रोटी सोहन
दिये जिमाय तुरत दोउ भैया ❀ अति आनन्द मगन मन मैया
कहत जननि सों श्री ब्रजनाथा ❀ प्रात नितहिं जैहौं बल साथा
मैं अपनी अब गाय चरैहों ❀ तेरे कहे घरहि नहिं रैहों
ग्वाल बाल गायन के माहीं ❀ नेकहु डर लागत मोहिं नाहीं
आज न सोवों नन्द दुहाई ❀ रहिहों जागत कहत कन्हाई
सब मिलि गाय चरावन जाहीं ❀ मैं क्यों रहौं बैठि घर माहीं

दो० सोय रहौ अब श्याम तुम, जननि कहै चुचकारि ।
प्रात जान कहिहौं तुम्हैं, बन को मैं बलिहारि ॥
सो० ज्यों त्यों राखे स्वाय, प्रात देन बन जान कहि ।
जननी दाबत पाँय, अमित जान बनगमन के ॥

बहुते दुख हरि सोय गयो है ❀ ज्यों त्यों करि मन बोध लयो है
सांझहि ते लाग्यो इहि बातैं ❀ जान कहत बन उठि पुनि प्रातैं
यह तो संग लागि बलरामहिं ❀ गये लिवाय आज बन श्यामहिं
अब तो सोय रह्यो करि ऐसे ❀ प्रात विचार करै धौं कैसे
कहत नंद बलि के सँग जाई ❀ इत उत आवन दे फिरि धाई
भोर भयो यशुमति कह प्यारे ❀ जागहु मोहन नन्द दुलारे
बीती निशि रवि किरण प्रकाशी ❀ शशि मलीन उडुगण द्युतिनाशी
सुनहु शब्द बोलत खगमाला ❀ खोलहु अम्बुज नयन विशाला
सुनत श्याम जननी की बानी ❀ जागि उठे सन्तन सुखदानी
ल्याई तुरत कलेऊ मैया ❀ माखन रोटी खाउ कन्हैया

टेरत ग्वाल सखा सब द्वारे ❀ आये नब के होत सकारे
खेलहु ब्रज भीतर ही प्यारे ❀ दूर कहूं मति जाहु लला रे

दो० टेरि उठे बलराम तब, आवहु धाय कन्हाय ।
जात ग्वाल बनको सबै, चलहु चरावन गाय ॥

सो० श्याम जोरि दोउ हाथ, जननी सों हाहा करत ।
जैहौं ग्वालन साथ, गोचारन वृन्दाविपिन ॥

टेरत मोहिं दाऊ री मैया ❀ जैहौं बनहिं चरावन गैया
बनफल तोरि देत मोहिं जाई ❀ आपुन घेरत गैयन धाई
जैहौं अरु ग्वालन सँग नाहीं ❀ मोहिं सिखावन वे बनमाहीं
मैं अपने दाऊ सँग रैहौं ❀ देखत वृन्दावन सुख पैहौं
आगे दै ल्यावत मग माहीं ❀ तू क्यों जान देत मोहिं नाहीं
लीन्हो यशुमति बलहिं बुलाई ❀ सुनहु लाल हरिके गुण आई
कहत यशोमति सों बलभैया ❀ जान देहि मां संग कन्हैया
अपने ढिग ते नेकु न टारों ❀ जिय परतीत तनक नहिं धारों
तू काहे डरपति मन माहीं ❀ जान देत हरि को क्यों नाहीं
हँसी महरि सुनि बलकी बानी ❀ जाहु लिवाय कहत नंदरानी
मैं बलिहारी तुम्हरे मुखकी ❀ तुमहू कहत श्याम के रुख की
अति आनन्द भयो हरि धाये ❀ दाऊ संग खरिक में आये

दो० धाय धाय भेंटत सखन, उर अतिहर्ष बढ़ाय ।
पठयो मैया मोहिं बन, चलहिं चरावन गाय ॥

सो० कहत सखा सुख पाय, चलहु श्याम देखो बनहिं ।
बनमाला पहिराय, करत चित्र बनधातु तन ॥

चले बनहिं सब गाय चरावन ❀ सखा संग मोहन मनभावन
ग्वाल बाल सब कछुक सयाने ❀ नंदसुवन तिनमें कछु नान्हे

गाय गोप गोसुत बन जाई ❀ तिनके मध्य श्याम सुखदाई
हरि सों सखा कहत समुझाई ❀ छोड़ि कहूं जिन जाहु कन्हाई
बृन्दाबन अति सघन बिशाला ❀ जैहो भूलि कहूं नँदलाला
सुनत श्यामघन तिनकी बाता ❀ मन मन हँसत कहत जगत्राता
तुम्हरो संग न छांड़त राई ❀ बनहिं डरात बहुत मैं भाई
जात चले सब हर्ष बढ़ाये ❀ खेलत श्याम संग सुख पाये
कोउ गावत कोउ बेणु बजावै ❀ कोउ नाचत कोउ कूदत आवै
देखि देखि हरि अति हर्षाहीं ❀ कहत सखनसों दै गलबाहीं
भली करी तुम मोकों ल्याये ❀ आज यशोमति हर्ष बढ़ाये
इहि बिधि गोधन लै सब ग्वाला ❀ यमुना तट पहुंचे नँदलाला

दो० दई धेनु बगराय सब, बरन आपने रंग।
गाय चरावत नंदसुत, मिलि ग्वालन के संग ॥
सो० उर मुक्तनकीमाल, शीश मुकुट कटि पीतपट।
हाथलकुटिया लाल, डोलत ग्वालनसंग प्रभु ॥

अथ बत्सासुरबध लीला ॥

खेलत श्याम सखन के माहीं ❀ यमुना के तट तरु की छाहीं
बत्सासुर तिहिं अवसर आयो ❀ पठयो कंस काल नियरायो
बत्सरूप धरि आय समान्यो ❀ कृष्ण ताहि आवतही जान्यो
बलतन चितै कह्यो मुसकाई ❀ तुम याको जानतहौ भाई
वह तो असुर बत्स है आयो ❀ हमको मारन कंस पठायो
हलधरहू देख्यो धरि ध्याना ❀ कहत साँच तुम श्याम सुजाना
ग्वालनहूं सों कहत कन्हाई ❀ बछरा घेरि करो इक ठांई
ल्याये घेरि बत्स सब ग्वाला ❀ वह नहिं घिरहि चपल बिकराला
वार वार हरि ओर निहारै ❀ दांव घात मनमाहिं विचारै

तब हरि कह्यो याहि में ल्यावत ❀ तुमतो याको छुवन न पावत
हाथ लकुटिया लै हरि धाये ❀ वत्सासुर के सम्मुख आये
हरि को जबहिं जुदो करि पायो ❀ असुर कोप करि मारन धायो
छं० धायो असुर करि क्रोध मारन श्यामके सम्मुख गयो ।
ह्वैगयो निष्पाप तबहीं योग्य सुरपुर के भयो ॥
धायकै हरि चपरि ताको पकरि पाँय फिराइयो ।
पटक्योधरणितन असुरप्रगट्यो फेरिश्वास न आइयो ॥
दो० वत्सासुर सुरपुर गयो, अधम असुर तन त्याग ।
सुर हर्षत वर्षत सुमन, गगन सहित अनुराग ॥
सो० धाय परे सब ग्वाल, चकित कृष्ण बल देखिकें ।
धन्य धन्य नँदलाल, कहत परम आनँद भरे ॥
असुर देखि सब अचरज पायो ❀ कहत हमें हरि आज बचायो
बछरा करि हम जान्यो याही ❀ यह तो असुर भयानक आही
आज सबनि धरिकै यह खातो ❀ और कौन पै जात निपातो
हरषि हरषि हरिको उर लायो ❀ असुरनिकन्दन नाम सुनायो
कहत ग्वाल धनि धन्य कन्हाई ❀ धन्य धन्य ब्रज प्रगटे आई
यह ऐसो तुम अति सुकुमारा ❀ किहि विधि भुजन फिराय पछारा
सबही के देखत पल माहीं ❀ मार्यो असुर डरे तुम नाहीं
अबलौं हम न तुमहिं पहिचान्यों ❀ हौ तुम बड़े सबनि ने जान्यों
कोउ बनमाल आनि पहिरावें ❀ कोउ बनधातु रंगि तन लावें
कोउ कुण्डल शिरमुकुट सँवारें ❀ अलकावलि कोउ तिलक सुधारें
आज भुजन पर कोउ बलिहारें ❀ तन देखत कोउ बदन निहारें
बनफल तोरि धरत कोउ आगे ❀ कहत खाउ मीठे अनिलागे
दो० इहि विधि हरिको पूजिकै, ग्वाल बाल हरषाय ।

सांझ निकट आवत चले, घर को धेनु चराय ॥
सो० परम मुदित सब ग्वाल, असुर मारि आवत घरहिं।
गावैं शब्द रसाल, ब्रजबासी प्रभु के गुणन ॥
सखन मध्य सोहत नँदनंदन ❀ जलद श्याम तन चित्रित चंदन
मोर मुकुट पट पीत सुहावन ❀ इंद्रधनुष दामिनिहि लजावन
मुक्तमाल वनमाल बिराजै ❀ वक शुक अवलि मनहुं छवि छाजे
हाथ लकुट कल कुण्डल कानन ❀ कोटि काम छवि शोभित आनन
कुटिल अलक भ्रुव नैन बिशाला ❀ गोपद रजकनद्युति छविजाला
बल मोहन बनते बन आवैं ❀ निरखि निरखि ब्रजजन सुख पावैं
सखन सहित हरि धामहिं आये ❀ हरषि यशोमति कण्ठ लगाये
कहत ग्वाल सुनु यशुमति मैया ❀ है तेरो रणवीर कन्हैया
बत्सरूप यक दानव बन में ❀ आय समान्यो बछरागन में
हम ताको कछु जानि न पायो ❀ सो वह हरि को मारन धायो
क्षणहीं माहिं ताहि हरि मास्यो ❀ हम देखत महि पटकि पछास्यो
यह कोउ बड़ो पूत तैं जायो ❀ भाग हमारे ब्रज में आयो
दो० सुनि ग्वालन के बचन ते, वत्सासुर को घात।
यशुमति सब के पाँय परि, बार बार पछितात ॥
सो० भयो महरि उर त्रासु, बचे आज हरि असुरतें।
मैं न बिगास्यो कासु, भयो सहायक आनिहरि॥
यशुदा शोच करत तू जाये ❀ यह तो ख्याल कान्हके भाये
परबत तुल्य बिकट तन जाही ❀ कियो प्राण बिन क्षण में ताही
तुम्हरी रक्षा को यह नाहीं ❀ हम सब को रक्षक यह आहीं
याके चरण कमल चित लैये ❀ बार बार याकी बलि जैये
ग्वालन यों हरिके गुण गाने ❀ ब्रजजन सब आश्चर्य भुलाने

लीला सागर हरि सुखदानी ❀ मोहे सब नर नारि सुजानी
हँसि जननी सों कहत कन्हाई ❀ देख्यों मैं वृन्दावन जाई
अति रमणीक भूमि द्रुम नीके ❀ कुञ्ज सघन निरखत सुख जीके
अति कोमल तृण हरित सुहाये ❀ यमुना के तट बच्छ चराये
वनफल मधुर मिष्ट अति नीके ❀ भूख मिटी खाये तिनहीं के
सखन संग खेलत वट छाहीं ❀ बन में मोहिं लगत डर नाहीं
रोहिणि सहित यशोदा माता ❀ मुदित सुनत हरि की मृदु बाता

दो॰ मोहि लियो मन जननिको, मधुरे वचन सुनाय।
वत्सासुर को शोच उर, क्षण में दियो मिटाय॥

सो॰ लगे दुहन सब गाय, जहँ तहँ हर्षित गोपगण।
गये तहां हरिधाय, गाय दुहन चाहत सिखन॥

अथ धेनुदुहन लीला॥

धेनु दुहत हरि देखत ग्वालन ❀ कहत मोहिं सिखवो गोपालन
मैं दुहिहौं मोहिं देहु सिखाई ❀ बैठि गये तिन सङ्ग कन्हाई
कैसे लैया थनहि लगावत ❀ कैसे नोय पगन अटकावत
घुटरुन गहत दोहनी कैसे ❀ मोहिं बताय देउ तुम तैसे
कैसे धार दूध की होई ❀ देहु दिखाय मोहिं सब कोई
कहत ग्वाल तुम सुनो कन्हाई ❀ भई अबार आज घनि भाई
तुम को सिखवैं दुहन सवारे ❀ अब कहुँ लगिहैं चोट तुम्हारे
श्याम कह्यो सबहीं समुझाई ❀ भोर दुहौं निज नन्द दुहाई
मेरी सौं मोहिं लीजो टेरी ❀ मैं दुहिहौं निज गाय सवेरी
दुष्ट दलन सन्तन सुखदाई ❀ आये गैयन मांझ कन्हाई
आवहु कान्ह सांझ की बेरिया ❀ कहत जननि यह बड़ी कुबेरिया
लरिकाई कछु छांड़त नाहीं ❀ सोवहु लाल आय घर माहीं

दो० आये हरि यह सुनतही, जननि लिये अँकवार।
लै पौढ़ाये सेज पर, अजिर चांदनी चार॥
सो० कहत कहत कछु बात, होय गये वश नींदके।
कहत यशोमतिमात, सोय गयो हरि अजिरहीं॥
दोउ जननी हरुवे कै हरिको ❋ सेज सहित लीन्हें भीतर को
बहुत आज हरि सोय गयो है ❋ अतिहि नींद के वशहिं भयो है
नेक न बैठत थिर घर माहीं ❋ खेलन में मन रहत सदाहीं
रोहिणि कहत देहु किन सोवन ❋ खेलत हारि गयो मनमोहन
माता हरुवे पवन ढुरावति ❋ निरखि बदन सुन्दर सुख पावति
प्रात जगावत नंद कि रानी ❋ उठहु श्यामसुन्दर सुखदानी
नाहिंन इतो सोइयत लाला ❋ सुनु सुत प्रातसमय शुचिकाला
उग्यो तरणि कुमुदिनि सकुचानी ❋ घरघर ग्वालिनि मथत मथानी
बार बार टेरत सब ग्वाला ❋ सांझ कह्यो तुम दुहन गोपाला
होत अबार गाय सब ठाढ़ी ❋ भरि भरि क्षीर भार थन बाढ़ी
बत्स पुकारत आरत ताईं ❋ दुहत नाहिं तुम सोंह दिवाईं
तुम्हरे लिये ग्वाल सब ठाढ़े ❋ देखत बाट प्रेम उर बाढ़े
दो० यहसुनतहि तुरतहि उठे, शशि मुखते पटटार।
धेनु दुहन सीखन चले, मोहन नंदकुमार॥
सो० ल्याव रोहिणी मात, बेग तनक सी दोहनी।
कह्यो सिखावन तात, आज मोहिं गैया दुहन॥
रोहिणि तुरत दोहनी ल्याईं ❋ घर घर ते देखन सब आईं
अटपट आसन बैठि कन्हाई ❋ गोथन कर लीन्हो सुखदाई
धार अनतहीं जात निहारी ❋ हँसे नंद यशुमति महतारी
चितै चोर चित हरि हँसि दीनों ❋ ब्रजबासी जन बलिबलि कीनों

किये यशोमति आनँद भारी ❀ दियो दान विप्रनहिं हँकारी
गावत मंगल व्रज की नारी ❀ दुही गाय सैनन हितकारी
अति आनंद मगन नँदराई ❀ बैठे प्रमुदित गोप बधाई
लिये गोद सुंदर घनश्यामहिं ❀ व्रजके जीवन जन सुखधामहिं
आयो तहां एक बनजारो ❀ मूंगा मोती बेचन हारो
तिहि लखि अटके नंदकुमारा ❀ देहि देहि कहैं बारम्बारा
दीरघ मोल कह्यो व्यौपारी ❀ रहे ठगे सब गोप बिचारी
कर पर राखि रहे हरि मोती ❀ देत नहीं लखि सुन्दर जोती

अथ मोती बोने की लीला ॥

दो॰ मुक्ता लै हरि घर गये, बये अजिर बलबीर।
आलबाल थल रोपि कै, पुनि पुनि सींचत नीर ॥

सो॰ हँसत यशोमति मात, कहत करत मोहन कहा।
गुण नहिं जानत मात, ये करता सब जगत के ॥

भये तुरत शाखा दल तामें ❀ यशुमति अजिर मुक्त फल जामें
फूलत फलत न लागी बारा ❀ ब्रह्मादिक नित करत विचारा
सुर नर मुनि कोउ मरम न जानें ❀ देखि देखि अति अचरज मानें
नन्दभवन हरि मुक्त बनाये ❀ व्रज बनितन गुहि हार बनाये
व्रजवासी यह प्रभु की लीला ❀ सब गुण समरथ सब गुणशीला
क्षणमहँ जासु रजायसु माया ❀ प्रकट करत ब्रह्माण्ड निकाया
ब्रह्मादिक जेहि पार न पावें ❀ नंद अजिर सो ख्याल मचावें
जाकी महिमा लखै न कोई ❀ निर्गुण सगुण धरे वपु सोई
लोक रचै नाशै प्रतिपारै ❀ सो ग्वालन संग लीला धारै
शिव विरंचि मुनि ध्यान न आवें ❀ ताहि यशोमति गोद खिलावें

अगम अगोचर लीलाधारी ❀ सो बृन्दावन कुंजविहारी
बड़े भाग्य सब ब्रज के बासी ❀ जिनके सँग विहरत अविनासी
दो० धनि धनि ब्रजके नारिनर, धनि यशुदा धनि नंद।
बिहरत जिनके सदन में, ब्रह्म सच्चिदानंद॥
सो० कहि कहि देव सिहाँय, धन्य धन्य ब्रज बाग बन।
जहां चरावत गाय, सकलसुरन शिरमुकुटमणि॥

अथ बकासुर बध लीला॥

प्रात चले उठि गाय चरावन ❀ हलधर सुन्दर श्याम सुहावन
देखत छबि ब्रज सुंदर गाढ़ी ❀ करत परस्पर आनँद बाढ़ी
देखु सखी ब्रज ते बन जाहीं ❀ बल मोहन ग्वालन के माहीं
रोहिणि सुत छबि गौर सुहाई ❀ यशुमति सुवन श्याम सुखदाई
ओढ़े नील पीत पट सोहैं ❀ सो छबि निरखि वदन मनमोहैं
युगल जलद घन दामिनि जानौं ❀ जों रतिनाथ परस्पर मानौं
शीश मुकुट कल कुण्डल कानन ❀ झलकैं बिंब कपोल छबि आनन
सखन मध्य सोहत नँदलाला ❀ मंद हँसनि दृग कमल बिशाला
कटिकिंकिणि कर लकुट सुहाये ❀ जात चले बन मनहिं चुराये
रहीं थकित लखि छबि ब्रजनारी ❀ गये बनहिं विहरत बनवारी
बन बन फिरत चरावत गैया ❀ हलधर श्याम सखा इक दैया
करत बिहार विविध बनमाहीं ❀ बालकेलि रस बरणि न जाहीं
दो० कबहूं गावत सखन सँग, कबहुँ बजावत बेनु।
धौरी धूमरि नाम लै, कबहुँ बुलावत धेनु॥
सो० कबहुँ नचावत मोर, सुन्दर श्यामल जलदतन।
गरज मुरलि घनघोर, बरषत परमानंद जल॥

खेलत विविध खेल मनभावन ❀ श्री वृन्दावन परम सुहावन
तृषित जानि गैयन नँदलाला ❀ कह्यो चलहु जल देन गुपाला
लेहु बुलाय सुरभि गण टेरी ❀ सुनत ग्वाल सब लाये घेरी
गोधन वृन्द हांकि सब लीनों ❀ ग्वालन गमन यमुनतट कीनों
तहां बकासुर छल करि आयो ❀ माया रचित स्वरूप बनायो
एक चोंच भूतल महँ लाई ❀ एक रही आकाश समाई
मग में बैठ्यो वदन पसारी ❀ ग्वालन देखि भयो भय भारी
बालक जात हते जे आगे ❀ ताहि देखि सो पाछे भागे
कहत भये सब हरिसों आई ❀ आगे एक बलाय कन्हाई
आवत नितहिं ग्वाल इहि ठाहीं ❀ ऐसो कबहुँ लख्यो हम नाहीं
तबहिं कृष्ण ताको पहिंचान्यों ❀ आय बकासुर में यह जान्यों
पल में आज याहि मैं मारों ❀ असुर चोंच धरि वदन बिदारों

दो० निडर श्याम आगे भये, चले बकासुर पास।
कहत सखा सब श्यामसों, नहिं जीवनकी आस॥

सो० अबहूं नाहिं डरात, बचे किते उतपात तें।
चले कहां हरि जात, हम बरजत मानत नहीं॥

तब हरि कह्यो चलहु तिहिपासा ❀ सब मिलि मारि करहिं बकनासा
जब हरि संग चले सब ग्वाल ❀ देख्यो जाय बकहिं विकराला
ताके निकट गये सब जबहीं ❀ लियो लीलि हरिको बक तबहीं।
जान्यो असुर काज मैं कीन्हों ❀ तबहीं वदन मूंदके लीन्हों
ग्वाल पुकारत आरत भागे ❀ बल सों आय कहन सब लागे
हम बरजत हठि गये कन्हाई ❀ लीन्हे लीलि असुर बकआई
हरि चरित्र कछु जानि न जाहीं ❀ उपजी आगि असुर तनमाहीं
लाग्यो जरनिभयो अतिव्याकुल ❀ हरिको उगिल दियो अतिआकुल

बहुरों पकरन को मुख बायो ❀ चोंच पकरि हरि चीरि वहायो
मरत चिकार असुर अतिमारी ❀ व्याकुल भये ग्वाल भयभारी
ग्वालन बिकल देखि बलरामा ❀ कहत असुर मास्यो घनश्यामा
टेर उठे उत कुँवर कन्हाई ❀ आवहु सखा बृन्द सब धाई

दो० बक बिदारि हरि सखनको, टेरत आवहु धाय।
चोंच फारि मारेउ असुर, तुमहूं करौ सहाय॥

सो० गये सखा सब धाय, सुनत श्याम के वचनवर।
निरखिनयनसुखपाय, पुनिपुनि भेंटतपुलकतन॥

कहत परस्पर सखा सयाने ❀ ये कोउ ब्रज प्रकटे हम जाने
इन्हैं नाहिं कोउ घात करैया ❀ ये हैं असुरन के दलवैया
जबते इन्हैं यशोमति जाये ❀ तवतें असुर कितेकउ आये
तृणा पूतना शकटा मारे ❀ तव ये रहे वहुत ही वारे
हम देखत बत्सासुर मास्यो ❀ कितक बात यह वका विदास्यो
इनके गुण कछु जानि न जाहीं ❀ हम अपने जिय डरे वृथाहीं
धनि यशुमति जिन इनको जाये ❀ धनि हम इनके सखा कहाये
बकहि मारि सुंदर घनश्यामा ❀ यमुना तट आये सुखधामा
सुरभी गण सब नीर पियाये ❀ सखन समेत आप प्रभु आये
घसि बन धातु चित्र तन कीन्हो ❀ मोर मुकुट माथे धरि लीन्हो
बनमाला रचि सखन बनाई ❀ प्रेम सहित हरिको पहिराई
बन फल मधुर गोप लै आये ❀ सखन सहित हरि भोग लगाये

दो० बल मोहन घरको चले, जानि सांकरी बेर।
लीनी गैया घेर सब, मुरली की धुनि टेर॥

सो० चले बजावत बेन, ग्वाल बृंद के मध्य हरि।
अँग अँग छबिकी सैन, ब्रजजन मोहन सांवरो॥

सुनि मुरली की टेर रसाला ॥ देखन को धाईं ब्रजबाला।
कहत परस्पर अति सुख पावत ॥ देखु सखी बनते हरि आवत।
नाना रङ्ग सुमन की माला ॥ श्याम हिये छवि देत विशाला।
मोर पक्ष शिर मुकुट विराजै ॥ मधुर मधुर मुख मुरली बाजै।
भृकुटी विकट निकट सुखदाई ॥ तिलक रेख छवि बरणि न जाई।
कुण्डल लोल अलक घुँघरारी ॥ निरखु सखी लागत अतिप्यारी।
नासा निकट अधर अरुणाई ॥ जनु शुक बिम्बहि चोंच चलाई।
मन्द हँसनि घन दामिनि जैसे ॥ दुरि दुरि प्रकट होतहैं तैसे।
तन घनश्याम कमलदल नैना ॥ बोलत मधुर मनोहर बैना।
मुख अरविन्द मन्द सुर गावत ॥ नटवर रूप सबन मन भावत।
सब अँग चन्दन खौर बनाये ॥ गुंजमाल मन लेत चुराये।
या मोहन छवि पर बलि जैये ॥ नँदनन्दन देखत सुख पैये।

दो० ग्वालबाल गोधन लिये, हरि हलधर दोउभाय।
सांझ समय बनते चले, आये धेनु चराय॥

सो० रांभति धाईं गाय, वत्स सुरति कर पय स्रवत।
हरषि यशोदामाय, कहति श्याम आवत घरहि॥

इतनी कहत श्याम घर आये ॥ जननी दौरि हरषि उर लाये।
ब्रज लरिका सब तुरतहि धाये ॥ महरि महर पद शीश नवाये।
ऐसो पूत धन्य तुम जायो ॥ इनको गुण कछु जान न गायो।
आज गये बन गाय चरावन ॥ चले यमुन तट जलहि पियावन।
तहां असुर यक खगतनुधारी ॥ रह्यो यमुन तट बदन पसारी।
एक चोंच महि सों लपटाई ॥ एक रह्यो आकाश लगाई।
हम वरजत पहिले हरि धायो ॥ ताके मुख में जाय समायो।
हम सब डरपि भजे बलपासा ॥ अति व्याकुल तन भये निरासा।

कैसे धौं हरि बाहिर आयो ❀ चोंच फारि तेहि मारि गिरायो
सुनत नन्द यशुमति ब्रजनारी ❀ चकितचित्त रहे हरिहि निहारी
यशुदा कहति कहा कोउ जानै ❀ नितप्रति होत आनकी आनै
भयो आज कोउ सुकृत सहाई ❀ बिधिकी गति कछु जानि न जाई

दो० जन्म भयो है श्याम को, तबते यहै उपाधि।
कह्योसख्योहमरेयतन, बिधिगतिअगमअगाधि॥

सो० किन धौं करी सहाय, को जानै भावी प्रबल।
को मेरे पछिताय, करी अयानी बूझ बिन॥

लै बलाय छतिया हरि लाये ❀ प्रेमसलिल लोचन भरि आये
मैं बलिजाउँ कहत कछु खाहू ❀ तुम कित गाय चरावन जाहू
नन्दमहर सों पिता तुम्हारो ❀ मोसी मात जाय बलिहारी
खेलत खात रहो अपने घर ❀ दधि माखन पकवान बिबिध वर
निरखि बदन सुनि वचन तुम्हारे ❀ लोचन श्रवण सिरात हमारे
दुष्ट दलन भक्तन सुखदानी ❀ बोले मधुर मातु सों बानी
मैया मैं न चरैहौं गैया ❀ अब बन मेरी जात बलैया
मोसों सबै ग्वाल बन जाई ❀ गाय घिरावत हैं बरिआई
दौरत मेरे पायँ पिराहीं ❀ जब मैं बैठि रहौं तरुछाहीं
जो न पत्याय बूझ बल भाई ❀ देहिं आपनी सौंह दिवाई
यहसुनतहियशुमति रिसियानी ❀ गारि देत ग्वालन दुखमानी
मैं पठवत लरिकहि बन जाई ❀ आवहि तनिक मनहिं बहलाई

दो० जानहिं कहा चरायकै, अबहीं मोहन गाय।
अति बारो मेरो सुवन, मारत ताहि रिंगाय॥

सो० हरिजन के सुखदाय, को जानै हरि के चरित।
मधुरे वचन सुनाय, मोहि लियो मन मातको॥

अथ चकई भवँरा खेलन लीला ॥

कछुक खाय हरि निशि को सोये ❀ प्रात जगाय जननि मुख धोये
कियो कलेऊ कछु सुखदाई ❀ जननी सों बोले हर्षाई
दे मैया भवँरा चकडोरी ❀ खेलत रहिहों ब्रजकी खोरी
हर्षि जननि आरे पर भाखे ❀ तुम हित नये मोल ले राखे
लै आये हरि तुरत निकारी ❀ भये मगन अति रंग निहारी
वारवार हर्षित मुख भाखे ❀ मैया विन अरु को ले राखे
बिहँसि चले फेरत चकडोरी ❀ खेलन सखन सङ्ग ब्रजखोरी
जैसे आप सखा सब तैसे ❀ सुन्दर कोटि मनोभव जैसे
निरखि निरखि छवि गोपकिशोरी ❀ वारवार डारत तृण तोरी
सबहिन को मनमोहन भावें ❀ सब ब्रजतिय हरिसों मनलावें
यह वासना करें ब्रजबाला ❀ होहिं हमारे पति नंदलाला
हरि अन्तर्यामी सब जानें ❀ सबके मनकी रुचि पहिचानें

दो॰ चितदै जो हरि को भजे, कोऊ कौनेहु भाव ।
ताको तैसेई सदा, प्रगटत त्रिभुवन राव ॥

सो॰ भक्तन के सुखदान, भक्तवछल भगवानहरि ।
नारि पुरुष नहिं मान, प्रेमभाव के वश सदा ॥

गोपिन के यह ध्यान सदाई ❀ नेक न अन्तर होहिं कन्हाई
हरि उनके मनकी रुचि जानी ❀ करहिं बान उनके मनमानी
मारग चलत तिन्हें हठि रोकें ❀ खेलन मांझ जहांतहं टोकें
चकई भवँरा डोरि फिरावें ❀ तिनके भूषण सों अरुझावें
काहूसों हरि वदन सकोरें ❀ काहू सों दृग वदन मरोरें
काहू सों अँखियां मटकावें ❀ आप हँसें अरु उन्हें हँसावें
युवतिन के मन बसे कन्हाई ❀ देखे विन इक पल न सुहाई

हरिको खेलत मांझ खिझावैं ❁ खटकौरी दै गारी गावैं
गेंद उरोजन माहिं दुरावैं ❁ इहिबिधि हरिसों अङ्ग छुवावैं
कंचुकि फारि आपही लेहीं ❁ यशुदहि जाय उरहनो देहीं
अन्तर भुजगहि हरिहिं दुरावैं ❁ कहैं चलो नँदरानि बुलावैं
यशुमति पै तुमको लैजैहैं ❁ कुटिल भौंह किय हम न डरैहैं

दो॰ यों ब्रजबनितन नेहबश, आनँदछबि घनरास।
रसिक पुरंदर सांवरो, ब्रजमें करत बिलास॥

सो॰ अबबरणौं सुखखानि, हरिबृषभानकुमारिको।
प्राण एकही जानि, प्रथममिलनदोउदेहको॥

अथ राधाजू की प्रथम मिलनकी लीला॥

खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी ❁ मेघश्याम तन पीत पिछोरी
श्रवणन कुण्डल की छबिछाजै ❁ मोर पखनको मुकुट बिराजै
दशन दमक दामिनि द्युति थोरी ❁ हाथ लिये फेरैं चकडोरी
गये यमुन के तट मन मोहन ❁ नाहीं तहां सखा कोउ गोहन
औचक दृष्टि परी तहँ राधा ❁ प्रेमराशि गुण रूप अगाधा
नयन बिशाल भाल दिये रोरी ❁ नीलबसन तनकी छबि गोरी
बेनी पीठ करत झकझोरी ❁ अति छबिपुंज दिननकी थोरी
संग लरिकिनी आवत देखी ❁ चितै रहे मुख रोक निमेखी
रीझि रहे घनश्याम कन्हाई ❁ अनुपम छबि लखि रहे लुभाई
नयन बयन मिलि परी ठगोरी ❁ बूझत श्याम कौन तैं गोरी
रहत कहां काकी है बेटी ❁ अबलौं नहीं कहूं ब्रज भेंटी
काहे को हम ब्रज तन आवैं ❁ खेलत रहत आपने गांवैं

दो॰ सुनत रहत श्रवणनसदा, नँदढोटा ब्रजमाहिं।

घरघरते नित चोरिकै, माखन दधिलै खाहिं ॥
सो० बिहँसि कह्यो घनश्याम, तुम्हरो कहा चुराइहैं ।
आवहुकिनब्रजधाम, नितहिखेलियेसंगमिलि ॥
रसिक शिरोमणि नागर दोऊ ❀ प्रीति पुरातन जान न कोऊ
ब्रजवासी प्रभु कुंजविहारी ❀ बातन भुरै लई हरि प्यारी
प्रथम सनेह दुहुन मनजान्यो ❀ गुप्त प्रेम शिशुता प्रगटान्यो
कहत श्याम मनकत सकुचावहु ❀ खेलन कबहुँ हमारे आवहु
दूर नहीं कछु सदन हमारो ❀ श्रवणन सुनियत बोल पुकारो
लीजो मोहिं टेरि नँद पौरी ❀ कान्ह नाम मेरो सुनु गोरी
सूधी बहुत देखियत तुमहूं ❀ ताते साथ कीजियत हमहूं
तुम्हें बबा वृषभान दुहाई ❀ घरी पहर खेलहु इत आई
गैयां गिनन नंद जब जैहैं ❀ तिनके संग हमहुं उत ऐहैं
जो तुम गाय दुहावन ऐहो ❀ खरिक मांझ तो मोको पैहो
रसिक शिरोमणि जानत राई ❀ इमि प्यारी संकेत बुलाई
सुनत गूढ़ हरि की मृदुबानी ❀ मनही मन प्यारी मुसुकानी
दो० गुप्तप्रीति प्रकटी नहीं, दोउ अनु हृदय छिपाय ।
मनमोहन प्यारी चली, घरको नयन चलाय ॥
सो० चली सदन सुकुमारि, मनमें उरझो सांवरो ।
जानी बड़ी अवार, मात त्रास उर आनिकै ॥
कहत सखिन सों चली कुँवरि ❀ को जैहै खेलन इनके घर
चलो वेग अपने घर जाहीं ❀ भई अवार यमुन तट माहीं
वचन कहत ऊपर मुखमाहीं ❀ हृदय प्रेम दुख मन अकुलाहीं
गई भवन वृषभान कुमारी ❀ जननी कहति कहां हुति प्यारी
अबलों कहां अवार लगाई ❀ गैया खरिक देन मैं आई

ऐसे कहि मातहिं बलराई ❀ अन्तर्गति वसिरहे कन्हाई
बिरह बिकल तन गृह न सुहाई ❀ सुन्दर श्याम मोहनी लाई
खान पान कछु नेक न भावै ❀ चंचल चित्त पुलकि तन आवै
मात पिता को मानत त्रासा ❀ नयनन हरि दर्शन की आसा
कहत दोहनी दे मोहिं मैया ❀ जैहों खरिक दुहावन गैया
अहिर दुहत तब गाय हमारी ❀ जब अपनी दुहि लेत सबारी
घरी एक मोहिं लगि तहँ जाई ❀ तू मति आउ खरिक अतुराई

दो० लई मात सों दोहनी, चली दुहावन गाय।
मन अटको नँदलाल सों, गई खरिक सनुहाय॥

सो० मग मग शोचत जाय, कब देखों वह सांवरो।
जिन मनलियोचुराय,खरिकमिलनमोसोंकह्यो॥

देखे जाय तहां हरि नाहीं ❀ भई चकित प्यारी मनमाहीं
कबहूं इत कबहूं उत डोलै ❀ प्रेम विकल कछु मुख नहिं बोलै
देखे नन्द संग हरि आवत ❀ ललकि लगे लोचन सुख पावत
देखी श्याम राधिका ठाढ़ी ❀ लई बुलाय प्रीति अति बाढ़ी
कह्यो महर लगि खेलहु दोऊ ❀ दूरि कहूं मति जैयो कोऊ
सुनि बृषभानसुता इत आई ❀ अपने साथ खिलाव कन्हाई
हरि तन रहियो नेक निहारै ❀ कोई कहूं गाय जिन मारै
नन्दबबा की बात सुनो हरि ❀ जाहु न मो ढिगते कतहूं टरि
महर सौंपि हमको तुम दीन्हों ❀ राधे हरिहि बांह गहि लीन्हों
तुमको कहूँ जान नहिं दैहौं ❀ जो जैहौ तो पकरि लै ऐहौं
मेरी बांह छोड़ दे राधा ❀ कहत श्याम ऊपर मन साधा
तुम्हरी बांह न तजौं कन्हाई ❀ महर खीझि हैं हमको आई

दो० परम नागरी राधिका, अति नागर ब्रजचन्द।

करत आपनी घात दोउ, बँधे प्रेम के फन्द ॥

सो० समुझि पुरातन नेह, व्रजविलास हित तन धरे ।
चलन चहत वन गेह, युगल विहारी कुंज के ॥

तबहि श्याम घन घटा उठाई ॥ गरज मेघ महि चहुँ दिशि छाई
पवन झकोर चली झकझोरी ॥ चपला चपल चमक चहुँ ओरी
है गइ भूमि सकल अँधियारी ॥ तैसिय तरुणमाल जुनिकारी
डरे देखि के कुँवर कन्हाई ॥ कह्यो राधिका सों नंदराई
कान्है संग लिये घर जा री ॥ भई अकाश घटा अति भारी
लिये बांह गहि कुँवर कन्हाई ॥ चले युगल वन घर घर जाई
नवल राधिका नवल विहारी ॥ पुलक अंग मन आनँद भारी
नवल नेह नवरँग मन भायो ॥ नवल कुंजवन सुभग सुहायो
नवल सुगन्ध नवल तरु फूले ॥ गुंजत भ्रमर मत्त रस भूले
सुभग यमुन जल पवन झकोरें ॥ उठत श्याम छबि कुंज हिलोरें
वनज विपुल वहु रंग सुहावन ॥ चारु विचित्र पुलिन अति पावन
गये युगल तहँ रसिक रसीले ॥ नागर नवल प्रेम रस गीले

दो० विहरत विविध विलासवन, युगल रूपकी रास ।
गुण गावत मुनि वेद विधि, अहिपतिपति कैलास ॥

सो० अति रहस्य सुखदाय, वन विहार नँदलालको ।
क्यों सो कहै कवि गाय, वेद भेद पावें नहीं ॥

अथ श्लोक गीतगोविन्द ॥

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवश्श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहम्प्रापय । इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥ १ ॥

चले सदन प्रभु कुंजबिहारी ❀ गृह पठई अंकम दै प्यारी
प्यारी की सारी हरि लीन्ही ❀ पीत पिछौरी प्यारिहि दीन्ही
बादर जहँ तहँ दिये उड़ाई ❀ आये सदन श्याम सुखदाई
रही यशोमति हरिहि निहारी ❀ ओढ़े देखि शीशपर सारी
मन धौं कहत कहां यह पाई ❀ पीत पिछौरी कहां गँवाई
यशुमति तुरत आंख पहिंचानी ❀ ब्रजयुवतिन अुरये यह जानी
पूछत हरिहि बिहँसि नँदरानी ❀ तरुणिन की सिखई बुधिठानी
पीत पिछौरी कितहिं बिसारी ❀ यह तौ लाल तियन की सारी
जानि लई जननी हरि जानी ❀ तब यक बुद्धि तुरत उर आनी
मैं लै गाय गयो यमुना री ❀ तहँ वह भरति हुती पनिहारी
बिड़रीं गाय भजीं सब नारी ❀ बची बँसुरिया बहुत सँवारी
हौं लै भजो और की सारी ❀ सो लै चादर गई हमारी

दो० पीत पिछौरी लै भजी, मैं पहिचानत वाहि।
मैयारी मैं जाय कै, घर लै आवत ताहि॥

सो० हरि माया को जानि, पीताम्बर ताको कियो।
जननि देखायो आनि, कहत लै आयों ताहिसों॥

राधा गई सदन ससुहाई ❀ हाथ दोहनी दूध भराई
परम प्रीति हरि बसन दुरायो ❀ जननी द्वारहिं ते गोहरायो
और कि और कहत मुख बानी ❀ जननी दौरि देखि भयमानी
कहत दीठि लागी कहुँ वारी ❀ उर लगाय पछितात निहारी
बूझत नेह बिकल महतारी ❀ कहा भयो राधा तोहिं प्यारी
अबहीं खरिक गई तू नीके ❀ आवत कौन बिथा भइ जीके
इक लरिकिनी संग ही मेरे ❀ कारे डसो आय तिहिं नेरे
मूर्च्छि परी वह धरणि मँझारी ❀ मैं डरपी अपने जिय भारी

श्यामवरण यक ढोटा आयो ॐ कहत सुनो यह नंद को जायो
कछु पढ़िके उन तुरतहि झारी ॐ जानत नहीं कौन की वारी
मेरे मन भरि त्रास गयोरी ॐ अब कछु नोको नेक भयोरी
अति प्रवीण वृषभानदुलारी ॐ यह कहि समुझाई महतारी

दो० सुनि जननी राधा वचन, उरसों लीन्हीं लाय।
कहत टरी करिवर बड़ी, बार बार पछिताय॥

सो० एक सुता है तात, पायो वेदन द्वार परि।
भई आज कुशलात, वची सर्प्प ते लाड़िली॥

खीझी कछुक कुँवरि पै जननी ॐ घर नहिं रहति फिरति भइ हरनी
कितनो कहत तोहिं मैं हारी ॐ दूर कहूं बाहेर जिन जा री
हैं लरिकिनी सबन घरमाहीं ॐ तोसी निडर कहूं कोउ नाहीं
कबहूं खरिक कबहुँ वन जाई ॐ कबहुँ फिरत यमुनातट धाई
चितै अकाश धरत पग धरनी ॐ वात कहत लागत तोहिं जरनी
सात वरप की भई कुमारी ॐ वहुत महर वृषभानदुलारी
आज कुशल कुलदेवन कीन्ही ॐ विधि बचाय विषधर ते लीन्ही
शीतल जल लै तुरत न्हवाई ॐ अंग अँगोछि वसन पहिराई
वारहि बार कहत कछु खा री ॐ अब कहुँ खेलन दूरि न जा री
यह सुनि हँसी मनहिं मनप्यारी ॐ हृदय ध्यान हरि कुंजविहारी
कहत दूर अब कतहुँ न जैहों ॐ गोप घरहि खेलत नित रहिहों
जिनके गुणन विरञ्चि भुलाने ॐ तिनके चरित कहा कोउ जाने

दो० जन रंजन भंजन कलुप, राधा नन्दकुमार।
गुप्त प्रकट लीला करत, व्रजमें युगल विहार॥

सो० देखि अनूपम पाल, मात पिता गुरुजन हरषिहि।
असुरलखतविकराल, नवकिशोरचितचोरतिय॥

सर्व रूप सब घट के बासी ❋ सब विधि करन सकल सुखरासी
सर्व भाव सब फल के दायक ❋ सर्वोपरि सब गुणके लायक
सर्व आदि सब अन्तर्यामी ❋ सब ते परे सकल के स्वामी
माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा ❋ प्रेम प्रीति दोउ परम अगाधा
छबि शृंगार मनहुं इक जोरी ❋ करत विहार श्याम अरु गोरी
बसे श्याम श्यामा उर माहीं ❋ देखे बिन भावत क्षण नाहीं
खेलन मिसु बृषभानकिशोरी ❋ आई नन्द महरि की पौरी
टेरत मधुर बचन सकुचाई ❋ घर भीतर हैं कुँवर कन्हाई
सुनत श्याम कोकिल सम बानी ❋ अति आतुर राधा पहिचानी
माता सों कछु कलह करत घरि ❋ तुरतहिं सो बिसराय दियो हरि
तू पहिंचानति इन को मैया ❋ कहत बारही बार कन्हैया
मैं यमुनातट कालिह भुलान्यों ❋ बांह पकरि मोको इन आन्यों

दो० तू सकुचति आवति इहां, मैं दै सौंह बुलाय।
अति नागर जननी हृदै, दियो प्रेम उपजाय॥
सो० भीतर लेहबुलाय, कहत मात हरिसों निरखि।
चलेश्याममुखदाय, लखि प्यारी आनँद भयो॥

नैन सैन मिलि दोउ सुख पायो ❋ बिरह ताप दुख द्वंद नशायो
मनहीं मन आनँद अति भारी ❋ भये मगन दोउ रूप निहारी
कहत श्याम राधा किन आवै ❋ तुमको यशुमति माय बुलावै
बांह पकरि ल्याये बनवारी ❋ यशुमति बोलि निकट बैठारी
देखि रूप मन मांझ सिहानी ❋ बूझत नन्द महर की रानी
ब्रज में तोहिं न कबहुँ निहारी ❋ कौन गांव है तेरो प्यारी
को तेरो तात कौन महतारी ❋ कहा नाम तेरो है प्यारी
भूलि गयो है कालि कन्हाई ❋ भली करी तू कर गहि ल्याई

धन्य कोख जिन तो कहँ धारी ❀ धन्य घरी तू जेहि अवतारी
देखि रूप यशुदा अभिलाषी ❀ सविता सों विनती करि भाषी
नयन विशाल वदन शुभ छोटी ❀ भली बनी है सुन्दर जोटी
बार बार बूझत हरषाई ❀ है तू कौन महर की जाई

दो० मैं बेटी वृषभान की, तुमको जानत माय।
बहुतवार मिलनो भयो, यमुनाके तट आय॥

सो० अब मैं लीनी जान, वे तो कुलटा हैं बड़ी।
हैं लांगर वृषभान, गारिदेतहँसिनँदघरनि॥

राधा बोलि उठी इत आई ❀ करी कछू बाबा लंगराई
ऐसो समरथ कब उन पायो ❀ हँसि यशुमति राधा उर लायो
कहति महरि कीरति हम जोटी ❀ अब कीजत है तेरी चोटी
यशुमति राधा कुँवरि सँवारी ❀ प्रेम सहित बारनि निरवारी
बड़े बार कोमल अति कारे ❀ लै सुमना सुत ओछ सँवारे
मांग पारि बेनी रचि गूथी ❀ मानहुं सुंदर छवि की यूथी
गोरे वदन बिंदु करि वन्दन ❀ मानों इंदु मध्य भुविनन्दन
सारी नई सुरंग निकारी ❀ यशुमति अपने हाथ सँवारी
वदन पोछि अम्बर सो दीनो ❀ उर आनंद निरखि छवि कीनो
तिल चावरी बतासे मेवा ❀ कुँवरि गोदभरि बिनवत देवा
कह्यो कान्ह सँग खेलहु जाई ❀ यह सुनि कुँवरि मनहिं हरषाई
सुंदर श्याम सुंदरी राधा ❀ खेलत दोउ छविसिंधु अगाधा

छं० छविसिंधु परम अगाध दोऊ नंदनदन बिराजहीं।
लखिरूप कोटिक कामरति घनदामिनी द्युति लाजहीं॥
यशुमति विलोकति चकित देखति रूपमनआनंद भरी।
सोइभावदेख्यो दुहुँन के उर जोइ अभिलाषा करी॥

दो० खेलत दोउ झगरन लगे, भरे परम अहलाद।
मानौं घन अरु दामिनी, करत परस्पर बाद॥
सो० अमियबचनरसमूल, अकथनीयछविअमितगुण।
रही यशोमति भूल, युगलकिशोर बिहार लखि॥
चली महरिसों कहि सुकुमारी * सदन आपने जानि अवारी
यशुमति निरखि कह्यो हरषाई * खेल्योकरि हरि सँग नित आई
बोलि उठे मोहन सुन राधा * तू कत सकुच करै जिय बाधा
मैं बोलत तू आवत नाहीं * जननीसों डरपति मनमाहीं
तोकों लखि मैया सुख पावै * देखि कितो करि छोह बुलावै
सुनि मोहन के बचन सयानी * चितैरही मुख मन मुसकानी
बिहँसि चली बृषभानदुलारी * हरिमूरति उर टरत न टारी
गई सदन बूझत महतारी * कहां हुती अवलौं री प्यारी
बेनी गूंथि मांग किन कीनी * बेंदी भाल लाल किन दीनी
खेलत रही नन्द के द्वारी * यशुमति बोलि निकट बैठारी
बूझन नाम लगी पुनि मेरो * बाबा को पूछेउ अरु तेरो
मोहिं चितै पुनि सुतहि निहारी * कछु सविता सों गोद पसारी
दो० मेरी शिर बेनी गुही, बेंदी लाल बनाय।
पहिराई निज हाथ सों, सारी नई मँगाय॥
सो० तिल चावरि दै गोद, बिधना सों बिनती करी।
उर करिकै अति मोद, तोहिं बिहँसि गारीदई॥
बिहँसि कह्यो तोको नँदरानी * वह जैसी तैसी हम जानी
तोहिं नाम धरि धर्यो बबाको * कह्यो धूत बृषभान सदाको
तब मैं कह्यो ठग्यो कब तुमहीं * हँसि लपटानि लगी तब हमहीं
सुनि कीरति राधा की बातें * सरल स्वभाव भरी शिशुतातें

कहत ज्वाब तैं नीको दीनो ❀ वैरी दांव आपनो लीनो
जो कछु मोहिं कह्यो नँदरानी ❀ सो सब है उनहीं की करनी
हँसि हँसि कीरति कहत सुभाये ❀ मन में अति आनंद बढ़ाये
फेरि फेरि यशुदा की बातें ❀ बूझत है जननी राधा तें
सुनि सुनि बरसाने की नारी ❀ गावत यशुमति को हितगारी
सुनि बातैं कीरति मुसकानी ❀ नँदरानी के जियकी जानी
मेरी सुता विमल चपलासी ❀ वे हरि मेघ श्याम छविरासी
बाढ़्यो उर आनंद हुलासी ❀ कीरति गई समुझि पति पासी

छं० समुझि पति के पास कीरति गई अति आनँद भरी।
प्रीति रीति जनाय हित सों बात सब परघट करी॥
भयो अति उत्साह दम्पति हरषि मन आनँद भरे।
नित्य दूलह श्याम श्यामा वेद गुण गावत खरे॥

दो० युगलकिशोर स्वरूप वर, वृन्दावन रसखान।
नव दुलहिन दूलह सदा, राधा श्याम सुजान॥

सो० दूलह दुलहिन चार, मांडव वृन्दाविपिन के।
गावत नित्य विहार, शेष महेश गणेश विधि॥

कहत यशोमति सों हरि प्यारे ❀ जहँ तहँ रहत खिलौना डारे
राधा जिन ले जाय चुराई ❀ आवत सांझ सवार सदाई
चितै रहत मुरली की छाहीं ❀ मेरो प्राण बसत इहि माहीं
तेरे भाये नेक न माता ❀ राखु उठाय मान तो बाता
बलहू को पतियाय न राई ❀ राखु खिलौना सबहि छिपाई
कहत जननि हँसि लालन मेरे ❀ को लै जाय खिलौना तेरे
नेक सुनत ताको जो पाऊँ ❀ ताको ब्रज तें धाम नसाऊँ
बिन देखे तू काको कहिहै ❀ सो कछु कैसे कै सहिहै

आवति ही राधा लै जैहै ❀ फिर तू पाछे ते पछितैहै
अजहूं राखु उठाय सबारी ❀ मांगे ते पुनि देहै गारी
जननी हरिकी बतियां भोरी ❀ श्रवण सुनत रुचि होत न थोरी
टेंव आपने सुतकी जानै ❀ बिरझाने क्यों हूं नहिं मानै

दो० सैंतति है हरि के हरषि, महरि खिलौना जान।
भौंरा चकई मुरलिका, गेंद बटा चौगान॥

सो० यशुमति सुखकी रास, नंदभवन भूषण परम।
ब्रज में करत बिलास, ब्रजबासीजन जाहिंबलि॥

कहति श्याम सों यशुमति मैया ❀ पियहु दूध कछु लेहुँ बलैया
आज सबार दुही मैं गैया ❀ सोई दूध प्याव मोहिं मैया
और दूध रुचि मोहिं न आवै ❀ जो तू कोटि यतन करि प्यावै
जननी तबहिं सौंह करि ल्याई ❀ यह धौरी को दूध कन्हाई
तुमते और कौन मोहिं प्यारो ❀ औट धखों तुम्हरे हित न्यारो
तातो जानि बदन नहिं ल्यावै ❀ फूंकि फूंकि जननी पय प्यावै
पय पीवत मोहन अलसाये ❀ सुन्दर सेज जननि पौढ़ाये
प्रात जगावत नन्द कि रानी ❀ उठहु लाड़िले शारँगपानी
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे ❀ ठाढ़े ग्वाल बाल सब द्वारे
हरहु ताप मुख कमल दिखाई ❀ करौ कलेऊ मिलि दोउ भाई
सद माखन दधि रैन जमायो ❀ मांगि लेहु अरु जो मन भायो
सखा बृन्द सब लेहु बुलाई ❀ उठौ लाल जननी बलि जाई

दो० तब हँसि चितये सेजतें, उठे श्याम सुखदान।
यशुमति जलझारी लिये, मुख धोयो निजपान॥

सो० बोल उठे बलराम, उठे सबारे आज हरि।
हरषि मिले घनश्याम, दाऊजू कहि भ्रात सों॥

द्वारे से सब सखन बुलायो ॥ देखि वदन सबहिन सुख पायो
सखन सहित सुन्दर सुखदाई ॥ कियो कलेऊ कछु दोउ भाई
गैयन लै वन चले गुवाला ॥ सङ्ग चले मोहन नँदलाला
टेर सुनत बालक सब धाये ॥ घर घर के बछरन लै आये
सखा कहत सब सुनहु कन्हैया ॥ चलहु आज वृन्दावन भैया
यमुना तट सब बच्छ चरै हैं ॥ वंशीवट खेलत सुख पैहैं
भलीकही हँसि कह्यो गोपाला ॥ चले सकल वृन्दावन ग्वाला
कोउ टेरत कोउ घर लै आवैं ॥ कोउ सुरभीगण जोर चलावैं
कोउ शृंगी कोउ वेणु बजावैं ॥ कोउ परस्पर हेरी गावैं
हेरी टेर सुनत मन मोहन ॥ कहत मोहिं सिखवहु निजगोहन
हरि ग्वालन सँग टेर उठाई ॥ हँसे सकल पूरी नहिं आई
कहत श्याम अबकै फिरलीजो ॥ अबकै जाय तबै हँसि दीजो

दो० गावत खेलत हँसत सब, सखावृन्द गो साथ।
पहुँचे वृन्दावन सघन, वृन्दावन के नाथ॥

सो० फिरत चरावत धैन, दीनबन्धु दुष्टन दलन।
कृष्ण कमलदल नैन, सबै अंग सुंदर सुखद॥

अथ अघासुर वध लीला॥

तहां अघासुर वनमें आयो ॥ कंसराज करि कोप पठायो
ताके एक बहिनि द्वै भैया ॥ मारे प्रथमहिं कुँवर कन्हैया
एक पूतना जो ब्रज आई ॥ वत्सासुर अरु बक दोउ भाई
तिन को वैर असुर उर धारी ॥ कियो गर्व मन में अभिमानी
आज राज को कारज कीजै ॥ और वैर भाइन को लीजै
गिरि समान अजगर तनधारी ॥ पसो असुर मग वदन पसारी
वन घन नदी रची मुख माहीं ॥ मायाकृत पहिचानत नाहीं

वाही मग निकसे नँदलाला ❋ गाय वच्छ लीन्हें सब ग्वाला
हरि अन्तर्य्यामी जिय जानी ❋ कपटरूप यह खल अभिमानी
याको आज तुरत संहारौं ❋ असुर मार भू भार उतारौं
ग्वालन अहि पर्वत करिजान्यो ❋ तासु वदन गिरिकंदर मान्यो
देखि सुहावन तृण हरिआई ❋ गाय वच्छ वैठे सब धाई

दो० गाय बच्छ ग्वालनसहित, सब मुखगये समाय।
कहत परस्पर आज बन, सुरभी चरहिं अघाय॥

सो० सबमुखगये समाय, असुर सिकोरयो बदन तब।
अंधकार गयो छाय, मानौं घन घेरो निशा॥

अति अकुलाय उठे तहँ ग्वाला ❋ गाय वच्छ सब विकल बिहाला
कहत परे धौं हम कहँ आई ❋ त्राहि त्राहि घनश्याम कन्हाई
सबके प्राण गये इहि बारा ❋ तुम बिन कौन उवारनहारा
श्रवण सुनत प्रभु आरतबानी ❋ भये दुखित चिन्ता उर आनी
दीनबन्धु भक्तन सुखदाई ❋ वैठे आप अघा मुख आई
अघा असुर उर अतिहरषाई ❋ लियो ओंठसों ओंठ लगाई
विद्याधर मुनिवर गन्धर्बा ❋ अतिभय बिकल मगनसुरसर्बा
तबहिं कृष्ण मन बुद्धि उपाई ❋ अबिगतगति भक्तनसुखदाई
मुख ते देह द्विगुण बिस्तारी ❋ रुंधों श्वासभौ त्रास दे चारी
सक्यो नहीं तब असुर सँभारी ❋ कियो शब्द आघात पुकारी
फूटि गयो शिर दशम दुवारी ❋ निकसी प्राणज्योति उजियारी
सो वह ज्योति स्वर्ग को धाई ❋ बहुरि आय हरि मांझ समाई

दो० याही मग अघ बदन ते, निकसे गोकुलराय।
कहतसखन आवहुनिकसि, मैं करिलई सहाय॥

सो० अतिहिसकानेग्वाल, गायबच्छ व्याकुलसकल।

मिथ्योतिमिरतिहिकाल, जहँतहँहपैवचन मुनि ॥

हर्ष सहित बाहर सब आये ❀ हरि को देखि परम सुख पाये
हम अज्ञान वृथा भय भाई ❀ श्याम हमारे साथ सहाई
धन्य कान्ह धनि धनि पितुमाता ❀ जिन जायो तुमको व्रजत्राता
गिरि सम असुर सर्प्प तनुधारी ❀ ताहि हन्यो तुम हो असुरारी
कहत कान्ह तुम करी सहाई ❀ तब मार्यो में असुर अन्याई
जो तुम मेरे सङ्ग न होते ❀ तो यह मार्यो जात न मोते
देखि अघासुर बध सुर ज्ञानी ❀ बर्षिसुमन कहि जय जय बानी
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा ❀ अति आनँद गुण गावत सर्वा
अघा असुर की करत बड़ाई ❀ हरिमधि जाकी ज्योति समाई
करत अनेक यत्न मुनि ग्रामा ❀ अन्तकाल दुर्लभ हरिनामा
सो हरि अन्तकाल जगपावन ❀ बसे आप अघमुख दुखदावन
इहि सम और कौन के भागा ❀ कहत देव सब अतिअनुरागा

दो० जयजयजय प्रभु जगतहित, जगत्राताजगदीश ।
जाको मारन हूं प्रगट, तारन विस्वा बीश ॥

सो० हरषिसुमन बरपाय, जयजयधुनि नभकरतसुर ।
गायग्वालसुखपाय, अति अनन्दनिरखतहरिहि ॥

तबहिं सखनसों विहँसि कृपाला ❀ बोले करुणासिन्धु गोपाला
चलहु सकल वंशीवट छाहीं ❀ आइ हैं छाक नहांहीं
भोजन करिये सब मिलि जाई ❀ बछरा हांकि लेहु अगुवाई
हरषि चले तहँ ते बलबीरा ❀ आये सब वंशीवट तीरा
वंशीवट अति सुभग सुहावन ❀ और चहूं दिशि बहुद्रुमपावन
चरत बच्छ सब बनके माहीं ❀ बैठे आय स्याम बट नाहीं
और पास गोपन के बालक ❀ मध्य स्यामसुन्दर जगपालक

मोर मुकुट कल कुण्डल कानन ❀ कोटि काम छवि मोहन आनन
गेरुकादि चित्रित तन श्यामा ❀ पीतबसन बनमाल ललामा
बाहु बिशाल लकुटि कर लीन्हे ❀ गुंजन के आभूषण कीन्हे
सखा बृन्द सब सुन्दर सोहै ❀ निरखत रूप मदन मन मोहै
प्रेम मगन मन परम हुलासा ❀ करत परस्पर हास बिलासा

दो० तहां छाक घर घरनते, आई भरि भरि भार।
यशुमति पठये कान्हको, व्यंजन बहुत प्रकार॥

सो० छाक पठाई मात, हरषि कहत हरि सखनसों।
दधि लवनी बहुभांत, सबमिलिभोजनकीजिये॥

बन भोजन बिधि करत कन्हाई ❀ छाक सबै इकठांव रखाई
जलते पुरइन पात मँगायो ❀ दोना बहु पलाश के लायो
कछु फल बृन्दावन के नीके ❀ लिये मँगाय भावते जीके
बैठे मण्डल जोरि गोपाला ❀ मध्य श्यामसुन्दर नँदलाला
भांति भांति व्यंजन रस पागे ❀ परसि धरे सबहिंन के आगे
कछुक हथोरिन पर धरि लीन्हों ❀ शाकखोलि अँगुरिन बिचकीन्हों
मुरली मुकुट कांख तर लीने ❀ भोजन करन लगे रसभीने
मधु मंगल परसै न सुदामा ❀ सुबल सुखमना अरु श्रीदामा
अपर अनेक गोप सुत लीने ❀ जेंवत मिलि सँग श्यामप्रवीने
लेत परस्पर कौर छड़ाइ ❀ कबहुँ कितवको देत कन्हाई
कबहूं काहू देन बुलावैं ❀ डहँकि ताहि अपने मुखनावैं
मीठे खाटे स्वाद बखानैं ❀ हास बिलास करत सुखसानैं

दो० देखत सुरगण सिद्ध मुनि, चढ़े बिमान अकास।
लखि कौतुक चक्रित सबै, गये कमलभव पास॥

सो० कह्यो ब्रह्म सों जाय, कहत जाहि परब्रह्म तुम।

सो० ग्वालन सँग खाय, छोरि छोरि करत कवर ॥

अथ ब्रह्माके मोहकी लीला ॥

हरि माया मोहै सब प्रानी ॥ कह ब्रह्मा कह सुर मुनि ज्ञानी
मुनि विरंचि सुरगण की वानी ॥ भयो मोह उर में यह आनी
गोकुल जन्म कौन यह आयो ॥ मैं कछु वाको भेव न पायो
परचौ लै देखौं प्रभुताई ॥ बाल बच्छ हरिल्यावों जाई
जो सर्वज्ञ ईश भगवाना ॥ लेहै तुरत में गाय सुजाना
यह विचार विधि मन ठहरायो ॥ चल्यो तुरत वृन्दावन आयो
देखि सरित वनमें अतिपावन ॥ पुहुप लता द्रुम परम सुहावन
अति रमणीक कदम चहुँपासा ॥ वंशीवटमधि सुखद निवासा
गोप मण्डली मण्डल मोहन ॥ भोजन करत सखन संग गोहन
देखि विरंचि चकित भ्रम भारी ॥ बछरा हरि लीन्हे वनमाहीं
हरि अन्तर्यामी सब जानी ॥ विधि के मनकी रुचि पहिचानी
तब पठये द्वै ग्वाल कन्हाई ॥ लावहु वत्स घेरि सब जाई

दो० ग्वाल सकल वन ढूंढिकै, फिरि आये हरिपाहिं ।
कहत बच्छ गे दूर कहुँ, खोज पाइयत नाहिं ॥

सो० तब हँसि कह्यो कन्हाय, तुम सब यहँ बैठ रहो ।
मैं धौं देखौं जाय, चले आप बहराय तब ॥

जब गे दूर वनहिं जनत्राता ॥ तबहीं बालक हरे विधाता
प्रभु लीला की गम कछु नाहीं ॥ गर्वित गयो लोक निज पाहीं
निज माया सों करि मत भोगी ॥ गये बाल बच्छ इकठौरी
गुण सागर नागर नँदनन्दन ॥ वंशीवट आये जगवन्दन
दीनबन्धु भक्तन हितकारी ॥ यह अपने मनमांझ विचारी
बाल बच्छ जो ब्रज नहिं जैहैं ॥ मात पिता इनके दुख पैहैं

ताते रूप सबन को धारौं ❀ या विधि तिनको दुःख निवारौं
बाल बच्छ बिधि लै गयो जेते ❀ भये श्याम तब आपुन तेते
वैसोइ रूप वैस गुण शीला ❀ वैसिय बुद्धि पराक्रम लीला
रंग रेख जैसो जिहि माहीं ❀ अंग चिह्न अंतर कछु नाहीं
बोलन हँसन चलन चतुराई ❀ हेरन टेरन फेरन राई
भूषण बसन लकुट कर जैसे ❀ भये श्याम सब आपन तैसे

दो॰ मारन उद्धारन यदपि, हैं समर्थ भगवान।
तदपि जान निजदास बिधि, करी तासुकी कान॥
सो॰ अपनो करि बिधि जान, अनजानत ढीठो करी।
ताते कीन्हे आन, मन भायो बिधिको कियो॥

कह्यो श्याम सब सखन बुलाई ❀ लावहु घेरि वत्स सब जाई
ब्रजको चलहु सांझ नियराई ❀ हर्षि चले बालक समुदाई
चहूं पास सब सखा सुहाये ❀ मध्य श्याम बछरन अगुवाये
वेणु बिशाल रसाल बजावत ❀ अपने अपने रँग सब गावत
रांभति गाय बच्छ हितलागी ❀ देखत ब्रजयुवती अनुरागी
मोर मुकुट कुंडल बनमाला ❀ हँसन मनोहर नयन बिशाला
गो पद रज मुखपर छबि छाई ❀ मनहुँ चंदकण अमिय निकाई
ब्रजबनिता सब तन मन वारत ❀ निरखि रूप भेंटत चित आरत
पहुँचे ब्रजहिं श्यामसुन्दर वर ❀ गये बच्छ बालक निज निज घर
गो सुत ग्वाल बाल हर्षाई ❀ लीन्हे जात मात उरलाई
परम प्रीति करि भोजन दीन्हों ❀ कृष्ण चरित काहू नहिं चीन्हों
यशुमति कहत सुतहि मिलिप्यारे ❀ वनहिं रात कत करत ललारे

दो॰ मैं सवेर घरको चल्यो, सखा करत सब रात।
देखि अगम बन में डर्यो, वे डरपावत जात॥

सो० बार बार पछिताय, लै बलाय यशुमति कहत।
ल्यावहिं गाय चराय, काल्हि जायँ वेइ सबै॥
यह सुनिके हँसि कहत कन्हाई॥ काल्हि चरावन जान बलाई
लागी भूख बहुत मोहिं है री॥ भोजन को तुरतहिं कछु दे री
सुनत तुरत माखन लै आई॥ तब लौं खाहु जननि बलिजाई
है जल तप्त घाम का प्यारे॥ लेत गरम तन न्हाहु ललारे
जाते वनको श्रम मिटि जाई॥ भोजन करहु बहुरि दोउ भाई
तब जननी गहि बाहँ न्हवाये॥ जेंवन को बलराम बुलाये
अति रुचि सों जेंवत दोउ भाई॥ परम प्रीति परसत है माई
जेइँ उठे अचमन तब कीन्हों॥ बीरा दुहुंन रोहिणी दीन्हों
जानि उनींदे सेज बिछाई॥ जननी पौढ़ाये दोउ भाई
श्याम राम सोवत दोउ भैया॥ सुख पावत निरखत दोउ मैया
अधम रह्यो विधि गर्व नवायो॥ ब्रजबासिन कछु भेद न पायो
बाल वत्स हरि नये उपाये॥ सब जानत वेइ हैं आये

दो० बालवत्स नवकृत तिन्हैं, ब्रजवनिता अरु धेन।
पूरव प्रीतिहु ते अधिक, करत रहत उर चैन॥
सो० ब्रज मंगल भगवान, ब्रह्म सच्चिदानन्द प्रभु।
भक्तन के सुखदान, लगे देन सुख घरन घर॥
तब विरंचि के मन यह आई॥ ब्रज के लोगन देखों जाई
ह्वै हैं करत विलाप कलापा॥ बिन बच्छन गायन संतापा
आय विरंचि तुरत तहँ देख्यो॥ घर ही घर सब कौतुक पेख्यो
जहँ तहँ दुहत गाय पशुपालक॥ खेलत निज निज घर सब बालक
देखि विरंचि चकित मन माहीं॥ है यह ब्रज कैधौं यह नाहीं
मैं विधना सब सृष्टि उपाई॥ यह रचना धौं किनहिं बनाई

कै धौं हौं यहि भ्रमहि भुलाना ❀ हैं हरि अविनाशी नहिं जाना
अन्तर्य्यामी जानत सबहीं ❀ बाल वच्छ धौं ल्याये तबहीं
अति संभ्रम विधि ज्ञान भुलायो ❀ गयो फेरि निज लोकहिं धायो
देखे वत्स बाल जहँ राखे ❀ चकित वहुरि ब्रजको अभिलाखे
क्षण भूतल क्षण लोक सिधारो ❀ बाल वत्स दुहुँ ठौर निहारो
बर्ष दिवस इहि भाँति बिताई ❀ भयो थकित अति उर भ्रम छाई

दो० मोह बिकल अति देखिकै, सुन्दर श्यामसुजान।
प्रगट कियो जनजानिनिज, बिधिके उरमें ज्ञान॥

सो० हृदय भई तब सुद्धि, ये पूरण अवतार प्रभु।
धिक धिक मेरी बुद्धि, वैर बढ़ायों कृष्णसों॥

मैं मतिहीन भेव नहिं जान्यों ❀ मोह विवश प्रभु सों छल ठान्यों
यह अपराध वहुत मैं कीन्ह्यो ❀ निज अज्ञान न प्रभु को चीन्ह्यो
भई गलानि बहुत मनमाहीं ❀ सन्मुख होय सकत विधि नाहीं
भयो शोच उरमांझ विशेखा ❀ प्रभु प्रभाव तब परगट देखा
बालक वत्स सहित सब साजू ❀ कृष्णरूप सब लख्यो समाजू
शिव ब्रह्मादिक देव अनेका ❀ देखे अधिक एक ते एका
चरण कमल बन्दत प्रभु केरे ❀ गावत गुण गन्धर्व घनेरे
देखि चकित चित भर्म नशान्यो ❀ पूरणब्रह्म कृष्ण पहिचान्यो
शरण शरण कहि अति अतुराई ❀ पर्‍यो चरण कमलन पर जाई
अनजानत मैं करी ढिठाई ❀ क्षमा करहु त्रिभुवन के राई
मैं प्रभु तुम प्रताप नहिं जान्यों ❀ तुम्हरी माया मांझ भुलान्यों
चूक परी मोतें निज भोरे ❀ नाथ न बनै तुम्हैं सुख मोरे

दो० मैं अपराधी हीनमति, पर्‍यों मोह के जाल।
ममकृत दोष न मानिये, तुम प्रभु दीनदयाल॥

सो० कह जानौं तुम भेव, मैं ब्रह्मा तुम्हरो कियो ।
तुम देवन के देव, आदि सनातन अजित अज ॥

जो जनतें बिगरै बिन जाने ॥ सो अपराध न प्रभु कछु माने
ज्यों शिशु अज्ञ दोष उर माहीं ॥ माता कबहुँ मानत नाहीं
तोष पोष ताको वह करई ॥ बिकसत चित्त अंकलै भरई
रद रसनादि जोलो रिस होई ॥ कहो कौन पर कीजै सोई
निज तन व्याधिपीर जन पावै ॥ पकरि दन्त करि नहीं चबावै
तैसेही प्रभु मोको कीजै ॥ क्षमि मम दोष शरण गहि लीजै
तुम जाने बिन जीव सदाहीं ॥ उतपति परलै मांझ समाहीं
तुम करि कृपा जनावहु जाको ॥ सो जानै तुम्हरी प्रभुताको
मैं विधि एक लोक को साईं ॥ जिमि कृमि गूलर मांझ गोसाईं
तुम्हरे रोम रोम प्रति गाता ॥ कोटि कोटि ब्रह्माण्ड विधाता
कोटि खद्योत प्रकाश कराहीं ॥ रवि सम क्योंहू होहिं सुनाहीं
अब प्रभु बनै सँभारे तोहीं ॥ राखिय चरण शरण निज मोहीं

दो० अतिहीअगमअगाधतर, अहिपतिमतिको जान ।
तासु पार चाहौं लह्यो, मैं विधि अति अज्ञान ॥

सो० करिय बिरदकी लाज, ममकृत दोष न मानिये ।
दीन बन्धु ब्रज राज, शरणागत पालन हरे ॥

जब विधि कही दीन बहु बानी ॥ शरण शरण कहि अति भय मानी
तब नहिं बाल बच्छ कछु देखे ॥ एकै रूप कृष्ण विधि पेखे
कृपा करी तब श्री ब्रजनाथा ॥ हस्त कमल परस्यो विधि माथा
अभय कियो विधि शोच मिटायो ॥ चरण कमलते शीश उठायो
बार बार पद कमल निहोरी ॥ अस्तुति करन लगे कर जोरी
जो जगधाम श्याम सुखरासी ॥ ज्योति स्वरूप सर्व उरवासी

गुणगण अगम निगम नाहिं पावैं ❀ ताहि यशोदा गोद खिलावैं
धरजल अनलअनिल नभछाया ❀ पंचतत्त्व मिलि जगत उपाया
काल डरै जाके भय भारी ❀ सो ऊखल बांधे महतारी
जग करता पालन संहरता ❀ बिश्वम्भर सब जगके भरता
ते गैयन सँग ग्वालन माहीं ❀ ब्रज में हँसि हँसि जूठनि खाहीं
बड़े भाग्य ब्रज बासिन केरे ❀ तिनके प्रेम रहत तुम घेरे

छंद रहत जिन के प्रेम घेरे धन्य ब्रजबासी सबै।
ब्रह्म एक अनीह अबिगत घरन घर जिनके फबै॥
धन्य श्रीबसुदेव देवकि पुत्र करि जिन पाइयो।
धन्य यशुमति नन्द जिन पय प्याय गोद खिलाइयो॥
धन्य ब्रज के गोप जिन सँग धन्य गाय चरावहीं।
चार मुख मैं कहा बर्णौं सहसमुख नित गावहीं॥
धन्य बालक बच्छ तिनतें नाथ यह दर्शन लयों।
परसि चरणसरोज मस्तक पाप तजि पावन भयों॥
अब देहु ब्रजको बास मोहिं प्रभु आस यह मेरे हिये।
रेणु तृण द्रुमलता खग मृग होहिं जो तुम्हरे किये॥
यह नित्य ब्रजलीला तुम्हारी तुम अनुग्रह तें लही।
महत श्रीबृन्दाबिपिनको अमित मित सक को कही॥
लोक मोहिं न सुहात अब प्रभु आन बिधि कोउ कीजिये।
मोहिं ग्वालन को करौ भृत खाय जूठनि दीजिये॥
वार वार मनाय युग पद नाथ यह बर मागहूं।
ह्वै रहौं वृन्दा बिपिन रज चरण पंकज लागहूं॥

दो० करिअस्तुतिगदगद बचन, दृगजलपुलकशरीर।
पर्यो चरणपंकज बहुरि, बिधि अति प्रेमअधीर॥

सो॰ तब हँसि बोले श्याम, गर्वप्रहारी भक्तहित।
जाहु आपने धाम, वचन हमारो मानि अब॥

और काहि अब करौं विधाता ❀ तुम हो कर्म धर्म के दाता
तुमते है यह सब संसारा ❀ मम माया को नाहिन पारा
ताते अब मम आयसु कीजे ❀ ब्रजकी जाय प्रदक्षिण दीजे
जाते तन के पाप नशाहीं ❀ बहुरि जाहु लोकहि सुख माहीं
हरि उरहार विविध पहिरायो ❀ विदा कियो सब शोच नशायो
प्रभु आयसु माथे पर धारी ❀ पाय प्रसाद हरषि मुख चारी
ब्रज दाहिन फिर पाप नशाये ❀ बाल वत्स प्रभु पहँ पहुँचाये
बार बार चरणन शिरनाई ❀ विधि निजलोक गये सुखपाई
ग्वालन यह कछु मरम न जान्यो ❀ वाहि समय सबहिन मन मान्यो
हरि सों कहत विलँब कहँ लाई ❀ हम तुम बिना कौर नहिं खाई
तुम सब भोजन मांझ भुलाने ❀ बच्छ जाय बन दूर हिराने
खोजत खोजत क्योंहूं पाये ❀ सो मैं ले तुम पहँ पहुँचाये

दो॰ अब राखौ सब घेरिकै, दूर निकस नहिं जाहिं।
तब छुचिते ह्वै के सबै, रुचिसों भोजन खाहिं॥

सो॰ ऐसे कहि ब्रजराय, सखन सहित भोजन कियो।
बहुरि यमुनतट जाय, जल अँचयो धोयो वदन॥

सन्ध्या समय चले घर ग्वाला ❀ मध्य श्यामसुन्दर नंदलाला
बच्छ घेरि आगे करि नीके ❀ कांधन पर धर लीन्हे छींके
जन जन शृंग बजावत गावत ❀ बन तें चले ब्रजहिं हरि आवत
घर आये ब्रजमोहन लाला ❀ कहत यशोमति सें सब ग्वाला
अहो महर बन आज कन्हाई ❀ महा दुष्ट इक मार्यो जाई
उरगरूप निगलो शिशु बच्छा ❀ करी आज सबकी हरि रच्छा

गिरिकन्दर सम तिन मुख बायो ❀ पैठि श्याम तिहि तुरत नशायो
याके बल हम बदत न काहू ❀ फिरत सकल बन सहित उछाहू
जीते सबै असुर बन माहीं ❀ यह काहू ते हास्यो नाहीं
बीते बर्ष कहत सब ग्वाला ❀ आज अघा मास्यो नँदलाला
यह प्रभु लीला अपरम्पारा ❀ कौन कौन को भुरै न पारा
यशुमति सुनि चकित पछिताई ❀ मैं बरजत बन जात कन्हाई

दो० केती करवर ते बच्यो, तऊ न नेक डरात।
अतिबिचित्रगति ईश की, जानीजात न बात॥

सो० खीझति यशुमति मात, मानतनहिं मेरो कह्यो।
श्याम मनहि मुसकात, अब बनमें नाहिंजाइहों॥

हरि की लीला कहत न आवै ❀ सुर नर असुर सबहि भरमावै
पय पीवत पूतना नशाई ❀ पटक्यो तृणा शिला पर जाई
तीनि लोक मुख में दिखराये ❀ यमला अर्जुन वृक्ष ढहाये
बत्सासुर बक बहुरि नशायो ❀ अघा मारि बिधिगर्व नवायो
यशुमति यह पुरुषारथ देखी ❀ तापर खिझ पछितात विशेखी
अघा मारि आये नँदलाला ❀ घरघर कहत फिरत सब ग्वाला
सुनि मन ब्रजयुवती उठिधाई ❀ चकित बिलोकत हरि मुख आई
मन मन करत यहै अनुमाना ❀ इनकी सर कोऊ नाहिं आना
येई हैं ब्रज के रखवारे ❀ येई हैं पति प्राण हमारे
कहत परस्पर सुनहु सयानी ❀ हैं येई जगपति यह जानी
प्रेम मगन ब्रज के नर नारी ❀ लहत परम सुख हरिहि निहारी
ब्रजमोहन सुन्दर सुखरासा ❀ भोजन मांगत यशुमति पासा

दो० खाहु लाल जो भावई, रुचिसों सखन समेत।
सद माखन ब्यंजन सरस, करिराखे तुमहेत॥

सो॰ दे रोटी नवनीत, और मोहिं भावै नहीं।
दियोमातअतिप्रीत, खातहँसतमिलिसखनसँग॥

अथ गोदोहन की लीला॥

हँसि जननी सों कहत कन्हैया ❀ दोहनी दे दुहिहों मैं गैया
नंद बबा मोहिं दुहन सिखायो ❀ ग्वालनकी सब दुहन बतायो
धौरी धूमरि काजरि गैया ❀ तुरतहिं दुहि ल्यावौं दै मैया
भयो मोहिं बल माखन खाई ❀ अब न डरात वृषभ बल भाई
तोहिं नहीं पतियारो आवै ❀ बैठि उठ कर भाव बतावै
अँगुरी भाव देखि हँसि माता ❀ उरलगाय लिय सांवल गाता
कहत कहां इतनी बुधि पाई ❀ हर्षि निरखि मुख बलि बलिजाई
लै दोहनी दई कर माता ❀ हर्षित चले दुहन सुखदाता
बछरा छोरि तुरत थनलायो ❀ मात दुहत लखि हर्ष बढ़ायो
सखा परस्पर कहत कन्हाई ❀ हमहूं ते तुम करत बड़ाई
दुहन देहु कछु दिन मोहिं गैया ❀ तब करियो मेरी सब भैया
जब लगि एक दुहौ तबताई ❀ दश न दुहों तो नन्द दुहाई

दो॰ सखा कहत सब झूठही, नन्द दुहाई खात।
प्रात साथ हम दुहहिंगे, देखहिं को अधिकात॥

सो॰ कह्यो कान्ह हर्षाय, भली कही तुम बात यह।
प्रात दुहहिंगे गाय, हम तुम होड़ लगाय कै॥

श्रीवृषभानु कुँवरि मन माहीं ❀ श्यामसुरत क्षण बिसरत नाहीं
दरश लालसा दृगन न थोरी ❀ देखोइ चहत बहोरि बहोरी
उठे प्रभात दोहनी लीन्हीं ❀ सुरत श्याम दर्शन की कीन्हीं
जननी देखि कह्यो दुलराई ❀ जाति कितै राधा अतुराई

खरकहिं जात दुहावन मैया ❀ दुहत सवेर ग्वाल सब गैया
कालिहतनक मैं बिलँब लगाई ❀ उठे अहिर सब मोहिं रिसाई
गई गाय सब बच्छ पियाई ❀ रीती दोहनी लै फिरि आई
तुमहूँ खीभन लगि तब मोहीं ❀ जात सवार आज कहि तोहीं
ऐसे कहि जननी समुझाई ❀ घरते चली ब्रजहिं ससुहाई
नन्द सदन आई हरि प्यारी ❀ दुहत गाय गृह द्वार बिहारी
दुहुन परस्पर लखि सुख पायो ❀ निरखि बदन छबि हर्ष बढ़ायो
राधहि देखि महरि नँदरानी ❀ लई बुलाय निकट हर्षानी

दो० दंपतिको सुख देखि कै, मुदित यशोमति माय।
बारबारलखि युगलछबि, मनहीं मन बलिजाय॥

सो० महरिमुदित मुसकाय, मथनकह्योदधिकुवँरिसों।
भान दुहाई गाय, आयसु तें ठाढ़ी भई॥

नेतिपाणि मन अति अनुरागी ❀ रीतोइ माठ बिलोवन लागी
तैसइ भई श्याम गति भोरी ❀ मनलाग्यो जहँ कुवँरि किशोरी
बृषभहिं सों लोई लै लैया ❀ बिसरगई ठाढ़ी कित गैया
दम्पति दशा देखि नँदरानी ❀ रही चकित नाहिं जात बखानी
राधा सों कहि प्रगट जनायो ❀ किन यह तोकों मथन सिखायो
निज घर मथति ऐसहीजानी ❀ कै मेरे घर आय भुलानी
मैं नहिं मथन कबहुँ दधिकीनी ❀ तुम मोहिं सोंह बबाकी दीनी
तातें मथन करन मैं लागी ❀ तुम्हरो बचन सकी नहिं त्यागी
तब नँदघरनी मथन बतायो ❀ राधे हरितन ध्यान लगायो
दुहन श्याम गैया बिसराई ❀ लैया बृषभ पांव अटकाई
दोहनी श्याम मांगि तब लीन्हीं ❀ तुरत सखा इक लैकर दीन्हीं
कहत दुहौ हरि करौ चड़ाई ❀ हँसत गोप बालक समुदाई

दो० हँसत कहत हरि सों सबै, कहँ तुम रहे लुभाय।
सुनत सखनकी बात नहिं, प्यारी सों चितलाय॥
सो० प्रिया वदन दृगलाय, रहे श्याम इकटक निरखि।
देह दशा बिसराय, भूलि गये सब चतुरता॥

यशुमति कहत राधिकहि टेरे ❀ ये ढँग हैं री प्यारी तेरे
ऐसो हाल मथत दधि तेरो ❀ हरि भयो मानहुँ चित्रचितेरो
तेरो मुख सम शशि नहिं आजै ❀ नयनन लखि खंजनगति लाजै
चपलाहू तें चमकत है री ❀ करिहै कहा श्याम को तेरी
मेरो कह्यो सुनत कछु नाहीं ❀ है धों कहा गुनत मन माहीं
इकटक दीठि तबहिं ते ल्याई ❀ तनकी सुरति सबै बिसराई
अबहीं ते ऐसे ढँग योहीं ❀ अबहीं बहुत होन है नाहीं
ऐसे ढंग लगायो श्यामहि ❀ काज नहीं कछु तेरे धामहि
चितयो मतिहि करै टकलाई ❀ हिलमिल खेल श्याम सँग आई
कै रहो बैठि आपने धामहिं ❀ धेनु दुहन दे मेरे श्यामहि
देखत तोहिं श्याम सुधि जाई ❀ तू चितवति तन सुधि बिसराई
सूधे रहि जो इहां तू आवै ❀ ऐसो ढँग मोको नहिं भावै

दो० करत अचकरी आय तू, यह नहिं मोहि सुहाय।
सूधे खेलहि श्याम सँग, कै तू इत मति आय॥
सो० ऐसे महरि रिसाय, सीखदई हरि मायतेहिं।
तब कुछ मनसुधिपाय, बोली अति भोरे वचन॥

मोहिं खीझति बरजत सुत नाहीं ❀ नित उठि मोहिं बुलावन जाहीं
मोहिं कहत बिन तोहिं निहारे ❀ रहत न मेरे प्राण दुखारे
छोह लगत मोकों सुनि बानी ❀ तब आवन मैं त्यों अकुलानी
मुख पावति आवति मैं तातें ❀ तुम कछु मानत औरहि बातें

यशुमति सुनि प्यारी की बानी ❋ भोरे भाय समुझ सकुचानी
बांह पकरि उरसों लै लावति ❋ प्यारी मनसों रोष मिटावति
हँसत कहत मैं तोसों प्यारी ❋ मन में कछू विलग जिन ला री
सिखवत तोहिं सीख गुणकारी ❋ मैं तेरी जैसे महतारी
सुनियत महरि सुघर अधिकाई ❋ गृह कारज कछु तोहिं सिखाई
सुनि यशुमति के वचन सप्रीती ❋ बोली अति नागरि शिशुरीती
मैया मोसों टहल करावै ❋ खीझत जात देखि जो पावै
सुनि यशुमति राधाकी बानी ❋ श्री वृषभान लाड़िली जानी

दो० अति सप्रेम दुलराय कै, लई बहुरि उरलाय।
श्री राधा के चित्त तैं, दीनों क्षोभ मिटाय॥

सो० कापै बरणी जाय, हरि प्यारी की चतुरता।
लीनी सहज सुभाय, बातन ही यशुमति भुरै॥

कहत सखा हरिसों मुसकाई ❋ दुहत कहा तुम आज कन्हाई
कालिह दुहत रहे होड़ लगाई ❋ विसरगई सब आज बड़ाई
गिरत दोहनी कम्पित हाथा ❋ नोवत वृषभ वत्स लै साथा
सुनि ग्वालन के बचन गोपाला ❋ कछुक सकुचि विहँसे नँदलाला
बच्छ छोर दियो खरिक चलाई ❋ आप जननिसों कहत कन्हाई
मुरली मुकुट देहि पट मेरो ❋ सुनि आऊं दाऊ मोहिं टेरो
जननी हरष तुरत सब दीनो ❋ लै हरि मुकुट शीश धरि लीनो
चारु पीतपट कटि लपटाई ❋ कर मुरली लै मधुर बजाई
मुरली में कहि प्यारी प्यारी ❋ गये बुलाय खरिक सुखकारी
लखि प्यारी हरिकी चतुराई ❋ कहति यशोमति सों अतुराई
जाति घरहि प्रातहि मैं आई ❋ खरिक दुहावन को निज गाई
पायो ग्वाल खरिक कोउ नाहीं ❋ खोजति मैं आई इत माहीं

दो० इहां अजिर गैया दुहत, देखे आय कन्हाय।
तनक दोहनी तनककर, देखरही चितलाय॥
सो० सुनि अति सरस सुभाय, सने प्रेम प्यारी वचन।
यशुमति मनसुख पाय, कहति कुँवरि सों जान घर॥

जा प्यारी घर आवति रहियो ❀ हमरो मिलन महरि सों कहियो
यह सुनि कुँवरि चली हर्षाई ❀ मन हरि लीन्हों कुँवर कन्हाई
गई खरिक कर दोहनी लीने ❀ चितवत मग जहँ श्याम नवीने
तहां मिलीं बहु सखी सहेली ❀ बूझति राधहि कहा अकेली
प्रात दुहावन मात पठायो ❀ तहां खरिक कोउ अहिर न पायो
इत आई मैं ग्वाल बुलावन ❀ जात खरिक अब गाय दुहावन
बोलि उठे हरि तब इत आवो ❀ हम दुहि देइ दोहनी लावो
दुहन देन कहि श्याम बुलाई ❀ सुनत गई प्यारी सुख पाई
कहत सखी सब मन मुसकाई ❀ कहां प्रीति इन आय लगाई
बरसाने यह ब्रजहि कन्हैया ❀ आई कहां दुहावन गैया
हरि मुख लखि वृषभानकिशोरी ❀ प्रेम विवश भइ तन सुधि भोरी
मोहन लई दोहनी करतें ❀ प्रिया प्रीति रस वश भइ वरतें

दो० धेनु दुहावत लाड़िली, दुहत नन्दको लाल।
सो सुख कापै जाय कहि, देखत ब्रजकी बाल॥
सो० बछरा पद अटकाय, गोथन लीन्हों हाथ हरि।
प्रिया वदन दृगलाय, दूध धार छांड़त छलन॥

दुहत धेनु अति ही छवि बाढ़ी ❀ प्यारी पास दुहावन ठाढ़ी
एक धार दोहनी में डारें ❀ प्यारी तन इक धार पनारें
हरि करतें पय धार छुयहीं ❀ लसत कीट प्यारी मुख माहीं
मनहुँ मयंक कलंक पसारी ❀ शोभित जहं तहं नन्द दुलारी

कैधौं पय बिधि खोरि मयंका ❋ लसत सुधासह खोय कलंका
लसत नील पट कनक किनारी ❋ मोरत मुखहिं मुदित मन प्यारी
मनहुं शरद शशिसुधा उदारा ❋ घन दामिनि घेरो इकबारा
इहि बिधि रहसत बिलसत दोऊ ❋ होत हिये थोरे नहिं कोऊ
मनहुं उभय आनँद सम भारी ❋ मिलन चहत मर्याद बिसारी
हाव भाव रस दम्पति पूरे ❋ निरखत ललितादिक दुर दूरे
इहि बिधि श्रीबृषभानदुलारी ❋ हरि पै धेनु दुहावत प्यारी
बिलसत ब्रज बिलास ब्रज प्यारे ❋ ये सुख तीन भुवनते न्यारे

दो० दुहूं कुँवर नँद लाड़िले, श्रीराधा की गाय।
दोहनी देत न हँस प्रिया, मांगत हाहा खाय॥
सो० त्योंत्यों हँसतकन्हाय, ज्योंज्योंप्रिय हाहाकरत।
सो सुख बरणि न जाय, अरभे दोऊ प्रेम रस॥

फिर हाहा कर कहत कन्हाई ❋ अबके देहौं नन्द दुहाई
फेरि करी हाहा हँसि प्यारी ❋ दई दोहनी बिहँसि विहारी
हाव भाव करि मन हरि लीन्हों ❋ कुँवरिहि कान्ह बिदा तब कीन्हों
यह छबि निरखि सखी हर्षानी ❋ चली अग्र है कछुक सयानी
प्यारी निरखि श्यामसुन्दर को ❋ चलन चहत पग चलत न घरको
अन्तर नेक न हरि सों भावै ❋ पुरजन सकुच बहुरि सकुचावै
धिक यह लाज कहत मन माहीं ❋ निरखन देत श्याम जो नाहीं
कछु दिन ज्यों त्यों और बिताई ❋ दूर करौं पुनि यहि दुखदाई
यह बिचार मन में ठहराई ❋ चली सदन उर राखि कन्हाई
मुरि मुरि नंदनँदन तन हेरे ❋ आवति बिरह बिथा तन घेरे
आगे धरत परत पग नाहीं ❋ मन फेरत मनमोहन पाहीं
चितवत श्याम खरिक महँ ठाढ़े ❋ प्यारी तन मन आनँद बाढ़े

दो० भये दृगन ते ओट दोउ, गये सदन मुसकास।
विरह विकल प्यारी गई, ज्यों त्यों सखियन पास ॥
सो० सखियन आवत देखि, श्रीवृषभानकुमारि को।
उर आनन्द विशेखि, हर्षि सबै ठाढ़ी भई ॥

बूझत सबै सखी मुसकानी ❀ कहहु राधिका कुँवरि सयानी
और अहिर तुम्हरे कित प्यारी ❀ हरि दुह दीनी गाय तुम्हारी
यह सुनि चकित भई मति भोरी ❀ गिरी धरणि मुरझाय किशोरी
देखि सखी सब आतुर धाई ❀ लई उठाय कुँवरि उर लाई
क्यों नागरी गिरी मुरझाई ❀ दूध दोहनी दई गिराई
यह वाणी कहि सखिन सुनाई ❀ कारे मोहिं डसो री माई
भई विकल कछु तन सुधि नाहीं ❀ कहत सखी सब आपस माहीं
अबहीं देखत नीके आई ❀ कहा भयो कारे किन खाई
यह तो कारो कुँवर कन्हाई ❀ हमहूं को जिन फूंक लगाई
जाकी मुर मुसकन विष बांको ❀ याके रोम रोम विष नाको
तन मन दृगन सांवरो छायो ❀ देह गेह सब नेह भुलायो
सब सखियन मन यह ठहराई ❀ ले राधिकहिं सदन पहुंचाई

दो० लेहु महरि कीरति सुता, अपनी देखहु आय।
कहुं कारे याको डसी, गिरी धरणि मुरझाय ॥
सो० ल्यावहु गुणी बुलाय, वेग यत्न याको करहु।
गयो वदन कुम्हिलाय, ज्यों त्यों हम लाई इतो ॥

जननी सुनत उठी अकुलाई ❀ रोवनि भाव कछु लगवाई
प्रात गई नीके उठि घरतें ❀ मैं बरजी मान्यो नहिं सबतें
अतिहि हठीली कह्यो न मानै ❀ मोइ करनि जो मनमें आनै
डरी मात लखि अँग सब जूड़े ❀ अनिहो शिथिल भेद तन पूरे

महरि नगर तें गुणी बुलाये ❀ सुनत सकल आतुर उठि धाये
मन्त्र यन्त्र बहु भांति जगावैं ❀ थके सकल कछु भेद न पावैं
गारुड़ हरि जो रहे मन माहीं ❀ महरि विकल अति मन पछिताहीं
फिर फिर बूझत सखिन बुलाई ❀ कह प्यारी कहि तुमहिं सुनाई
कहत सखी सब परम सयानी ❀ सुनहु महरि इतनी हम जानी
हम आगे यह पाछे आई ❀ गिरी धरणि दुहनी ढरकाई
यही कह्यो कारे मोहिं खाई ❀ तब हम आतुर लई उठाई
सो कारो हमहूं पुनि देख्यो ❀ लग्यो सबन विप याहि विशेख्यो

दो० सो अब हम तुमसों कहैं, मानि लेहु यह बात।
बड़ो गारुड़राय है, नन्दमहर को तात॥

सो० ल्यावहु ताहि बुलाय, देखतही विष जायगो।
तुरतहिं लेहिं जिवाय, हम नीके यह जानहीं॥

देखहु धौं यह बात हमारी ❀ एकहि मन्त्र जियावहिं भारी
त्रिभुवन गुणी और नहिं ऐसो ❀ है वह नन्द महरि को जैसो
कीरति महरि सुनी यह बानी ❀ अपने मनहिं सांच कर मानी
इक दिन राधा हू यह वानी ❀ मो सों कही हती यह जानी
कीरति चली नन्द के धामहिं ❀ बोलन आतुर गारुड़ श्यामहिं
महरि यशोदहि जाय पुकारो ❀ अहो गारुडू सुवन तुम्हारो
मेरी सुता लाड़िली गोरी ❀ विहबल विकल परी मति भोरी
प्रातहिं खरिक दुहावन आई ❀ तहां कहूँ कारे डसि खाई
नेक पठै सुत काज विचारो ❀ यह यश है है बड़ो तुम्हारो
सुनि यशुमति कीरति की वानी ❀ कहत महरि तुम भई अयानी
मन्त्र यन्त्र कह जानै मेरो ❀ अतिहीं बाल वर्ष षट केरो
किन तुम कों दीनों बहकाई ❀ यह तुम बूझो गुणिन बुलाई

दो० मैं चकित तुम वचन सुनि, यह अचरज की बात।
श्याम भयो कब गारुड़, तुम आई अतुरात॥
सो० अबलौं सुनी न कान, भयो श्याम कब गारुड़।
बालक अति अज्ञान, यंत्र मंत्र जानैं कहा॥

महरि गारुड़ू कुँवर कन्हाई ॥ इक दिन राधा मोहिं सुनाई
एक लरकिनी कारे खाई ॥ जाको तुरतहि श्याम जिवाई
तातें मैं आई अतुरानी ॥ पठवहु सुनहिं नेक नंदरानी
है मम कुँवरि विकल अधिकाई ॥ प्रात खरिक कारे कहुं खाई
बड़ो धर्म यशुमति यह लीजै ॥ वेग बुलाय कान्ह को दीजै
यह सुनिकै यशुमति मुसकाई ॥ अबहिं हती मेरे घर आई
है राधा मोहन कछु कारन ॥ चुप ह्वै मन में लगी विचारन
वहां सखी ललितादि सयानी ॥ प्यारिहिं देखि हृदय अनुमानी
याहि डसी वंशीधर कारे ॥ चितवन फण मुसकन विषधारे
प्रेम प्रीति दौं डारत जारे ॥ लगे न मन्त्र गुणी सब हारे
थके सकल करि विविध उपाई ॥ यह विष मोहन विन नहिं जाई
सखी एक हरि पास पठाई ॥ तिन मोहन सों जाय जनाई

दो० अहो महरि के लाड़िले, मोहन श्याम सुजान।
कित सीखे यह गोदुहन, हमसों कहौ बखान॥
सो० दुहि दीनी जिहि गाय, आज मोरही खरिक में।
वेग विलोकौ जाय, निज नयनन ताकी दशा॥

जब तें दुहि दीन्ही तुम गैया ॥ तहां अनोखे नाग डसैया
घर को कुँवरि जान नहिं पाई ॥ बीचहिं धरणि गिरी मुरझाई
देखत संग सखी सब धाई ॥ जैसे तैसे गृह पहुंचाई
सो अब तनकी सुधि न सँभारै ॥ परी विकल नहिं दृगन उघारै

सक सकात तन स्वेद बहाई ❀ उलटि पलटि भरलेत जँभाई
कहति मोहिं कारे अहि खाई ❀ कियो यत्न बहु गारुड़ आई
ताहि कछू उपचार न लागै ❀ तुम्हरो नाम लेत कछु जागै
हौं पठयो इक सखी सयानी ❀ यह विष तुम्हरो निहचै जानी
यह कारो अहिरूप तुम्हारो ❀ मुसकनि विष ता ऊपर डारो
अब जो चाहौ ताहि जियावो ❀ वेग चलो जिन गहर लगावो
अतिहि बिकल वह बिरह अधीरा ❀ दरश दिखाय हरौ तनपीरा
तुम अश्विनीकुमार कन्हाई ❀ बेग चलो हरि लेहु जिवाई

दो० नजर दीठ इह रावरी, टेर कहत हम कान्ह।
नहिं जागति तो देहिंगी, नन्द द्वार सब प्रान्ह॥

सो० ब्याकुल जननी तास, घरनि महर वृषभानकी।
गई यशोमति पास, बेगि जाय सुधि लीजिये॥

कीरति आगम सुनत कन्हाई ❀ कीनी बिदा सखी मुसकाई
जो कहुँ डसी भुजंगम प्यारी ❀ तौ हम आय देहिंगे झारी
ऐसे कहि हरि सदनहिं आये ❀ देखि यशोमति निकट बुलाये
तू कछु जानत गैब कन्हैया ❀ बूझति बिहँसि यशोमति मैया
कीरति महरि बुलावन आई ❀ कुँवरि राधिका कारे खाई
आनहुँ झारि बेगि सँग जाई ❀ कुँवरि जियाये अतिहि भलाई
गारुड़ भयो भले सुत जानी ❀ आज सुनी श्रवणन यह बानी
मैया एक मन्त्र मैं जानों ❀ तेरी सों कहि सत्य बखानों
अहि काट्यो मो दृष्टि जु आवै ❀ मोपै क्यों हूं मरण न पावै
जननि कह्यो सुत जाहु कन्हाई ❀ देव राधिकहि जाय जिवाई
जननी बचन सुनत ब्रजनाथा ❀ चले हर्षि कीरति के साथा
चली महरि हरि संग लिवाई ❀ गइ बृषभानपुरा समुदाई

दो० रुदितमहरिलखिकुँवरिको, अतिहिगईकुम्हिलाय।
शिथिल अंग वाणी निरखि, लीनो कण्ठलगाय॥
सो० तबहिं श्याम के पांय, परी लायके महरि जब।
मोहन देव जिवाय, अति व्याकुल मेरी सुता॥
आये गारुड़ कुँवर कन्हाई ❀ कुँवरि कान्ह ने यह सुनिपाई
धन्य धन्य आपन कों जानी ❀ हृदय हरष दृग आनँद सानी
प्रगट राम तन खेद बढ़ाई ❀ विह्वल देखि जननि अकुलाई
अन्तर भाव भेद हरि जाने ❀ रसिकशिरोमणि मन मुसकाने
तब कछु पढ़िकै कुँवर कन्हाई ❀ मुरलि अंग सों दई छुवाई
ततक्षण लोचन कुँवरि उघारे ❀ सन्मुख सुन्दर स्याम निहारे
निरखत दृगन परमसुख लीनो ❀ सकुच सँभारि वसन तनकीनो
बूझत बात जननि सों प्यारी ❀ आज कहा यह है महतारी
जननी कहति हरषि उरलाई ❀ तोहिं मरतते कान्ह जिवाई
करत लाज तू का री प्यारी ❀ करिवर बड़ी आज विधि थारी
यों कहि महरि हृदय अनुरागी ❀ नंदसुवन के पायँन लागी
वड़ो मंत्र तुम कियो कन्हाई ❀ सुता हमारी मरति जिवाई
दो० उर लगाय मुख चूमिकै, पुनि पुनि लेत बलाय।
धन्यकोख यशुमतिमहरि, जहां अवतरे आय॥
सो० कछु मेवा पकवान, कह्यो खान घनश्याम सों।
विदा किये दै पान, कीरति श्याम सुजान को॥
महरि मनहिं मन में अनुमानी ❀ जोरी भली विधाता सानी
व्रज घर घर यह बात चलाई ❀ वड़ो गारुड़ कुँवर कन्हाई
सखी कहत हरि सों मुसकाई ❀ भले भले हो गारुड़ राई
प्रगट्यो गारुड़ नाग तुम्हारो ❀ भले ध्यान तुम विरहि उतारो

जननि कहति मेरे अति कारो ❀ अब धौं कौन करे निरवारो
जान्यो कठिन बसत ब्रज कारो ❀ अब यह मंत्रहिं मतिहि बिसारो
फिरि कारो कहुँ करहि पसारो ❀ हम तब लैहैं नाम तुम्हारो
यहां गारुडू कहँ तुम पाई ❀ प्यारी एकहि टेर जिवाई
अब हम जानी बात तुम्हारी ❀ जाहु आपने सदन बिहारी
रसिकमुकुटमणि कुञ्जबिहारी ❀ हँसि वश कीनी घोपकुमारी
बिबश भई सब ब्रजकी बाला ❀ गये सदन मोहन नँदलाला
ब्रजबिलास बिलसत ब्रज प्यारो ❀ ब्रजबासी जनके रखवारो

दो० कारो सुत नँदराय को, जाकी लीला नित्त।
तिनहीं को हरि डसतहैं, जिनको उज्ज्वलचित्त ॥

सो० धन्यधन्य ब्रजबाल, धनिधनि ब्रजके ग्वालसब।
जिनके सँग नँदलाल, दुहत चरावत गाय सब ॥

प्रात होत मनमोहन लाला ❀ गाय वच्छ सब लै सँग ग्वाला
चले चरावन ब्रज बन छाहीं ❀ क्रीड़ा करत सकल मग माहीं
देखि मुदित सब ब्रजकी बाला ❀ बृन्दाबन गये मदनगुपाला
गैयां बगर गईं बन माहीं ❀ बैठे कान्ह कदम की छाहीं
सखा लिये सँग सुबल सुदामा ❀ क्रीड़ा करत सहित बलरामा
ग्वाल जहां तहँ गाय चरावैं ❀ आनँद भरे कृष्ण गुण गावैं
करत बिहार बिबिध सब ग्वाला ❀ गये दूरि बन सघन विशाला
कोऊ गैयन घेरन धायो ❀ कोऊ बछरन लै बिलमायो
हलधर रहे कहूं बन जाई ❀ आप अकेले रहे कन्हाई
मनमन कहत श्याम सुखदाई ❀ सखा रहे कत बन बिरमाई
गौ रांभन कहुँ सुनियत नाहीं ❀ गये निकसि धौं कित बन माहीं
आलस गात जानि मन माहीं ❀ बैठे बंशीबट की छाहीं

दो० सखावृन्द हलधर सहित, लिये बच्छ अरु गाय।
वृन्दावन घन छांड़िकै, रहे ताल वन जाय॥
सो० मन हरपे सब ग्वाल, देखि भूमि सुन्दर परम।
फरे विपुल तरुताल, अति रसमय मीठे मधुर॥

अथ धेनुकबध लीला॥

गोधन बृन्द दिये बगराई ❀ लगे खान फल मन हरषाई
अँचयो बल रसताल रसाला ❀ बाढ्यो उर आनंद विशाला
सुरत नन्द नन्दन की आई ❀ कह्यो सखन सों कहां कन्हाई
ल्यावहु घेरि जाय सब गैया ❀ चलो वेगि जहं कुंवर कन्हैया
सुनत सखा हलधर की बानी ❀ बन में श्याम अकेले जानी
आतुर गैयन घेरन धाये ❀ टेर दई सब ग्वाल बुलाये
तहां असुर यक धेनुक नामा ❀ खर के रूप रहै बन धामा
सोयो हतो विटप की छाया ❀ सुनत शोर कर नामस धाया
अति बलवान विशाल कराला ❀ परम भयङ्कर मानहु काला
दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे ❀ भाजे जित तित भयके मारे
असुर महाबल गर्व बढ़ाई ❀ बल के सन्मुख गर्ज्यो आई
मत्त ताल के रस बलराई ❀ देखि असुर मन गिर उपजाई

दो० बल सँभारि उठि कोपकरि, असुर प्रचाऱ्यो जाय।
अग्रजभ्राता श्यामको, तिहुंपुर जासु बड़ाय॥
सो० बलको आवत जानि, असुर जोरि दोउ चरण।
चपर चलाई आनि, बहुरो हटि ठाढ़ो भयो॥

बहुरो फिर मारन को धायो ❀ बलजीको तामस तब आयो
जबहिं असुर फिर चरण चलायो ❀ गहि लीनों करि कोप चलायो

पकस्यो लै तरुतालहिं लाई ❋ भयो प्राणबिन तरुहिं गिराई
तरु सों तरु टूटे भहराई ❋ ग्वालबाल सब करत बड़ाई
और बहुत धेनुक परिवारा ❋ कीन्हों बल सब को संहारा
मास्यो असुर महा दुखदाई ❋ ग्वालबाल सब करत बड़ाई
आये सब बृन्दाबन माहीं ❋ जहँ तहँ श्यामहिं टेरत जाहीं
चढ़ि चढ़ि द्रुमन पुकारत ग्वाला ❋ आवहु हो मोहन नँदलाला
ल्याये घेरि मिली सब धेनू ❋ आवहु मधुर बजावहु बेनू
कोमल चरण कहूँ मति धावहु ❋ कंटक कठिन मही इत आवहु
ऐसे हरि को टेरत जाहीं ❋ तृषित भये सब वनके माहीं
ग्वालबाल सब यमुनहिं आये ❋ बल रसमत्त न पहुँचन पाये

दो० गोप गाय अँचवत भये, कालीदह को नीर।
निकसत सब अकुलायकै, बैठगये जल तीर॥

सो० परे सकल मुरझाय, जहां तहां बिषझारते।
ग्वाल बच्छ अरुगाय, भये मनौ बिन प्राणसब॥

हरि ठाढ़े बंशीबट छाहीं ❋ बारंहिं बार कहत मन माहीं
अबहिं रहे सब संग चरावत ❋ निकसि गये धौं कित बनधावत
गौ रांभन ग्वालन के बैना ❋ अनत कत कछु न सुनत बन ऐना
तरु चढ़ि इत उत नैयन हेरत ❋ लै लै नाम सखन को टेरत
कालीदह तन आहट पाई ❋ शोध लेत उत चले कन्हाई
बन घन ढूंढ़त हरि तहँ आये ❋ गाय ग्वाल सब मुर्च्छित पाये
मनमें ध्यान करतही जान्यो ❋ काली अहि ह्यां आय समान्यो
रहत इहां खगपति भयमानी ❋ अँचयो इन ताको बिषपानी
अमी दृष्टि प्रभु सकल निहारी ❋ तुरत उठे सब भये सुखारी
देख कृष्ण को अति सुखपाई ❋ मिले सकल प्रेमातुर धाई

बोले हरि मृदु वचन सुहाये ❀ तुम सब मोहिं छोड़िके आये
कितते कित इत निकसे आई ❀ मैं बन ढूंढ़ि रह्यो पछताई

दो० खोज लेत आयो इहां, देखे सब बेहाल।
सुरझि परे काहे धरणि, भयो कहा जंजाल॥

सो० गाय बच्छ अरु ग्वाल, उठे एकहीं बार पुनि।
कहा कियो इहि ख्याल, देखि मोहिं अचरज भयो॥

सुनि हरि वचन परम सुखदाई ❀ कहत सखा सब सुनहु कन्हाई
अँचयो तृषित यमुन जल आई ❀ तबहिं गिरे सब तट अकुलाई
कारण कछु हम जान्यो नाहीं ❀ भये प्राणबिन सब क्षण माहीं
इक हम जानी कुँवर कन्हाई ❀ तुमहीं हमहिं जिवायो आई
हो तुम ब्रजजनके रखवारे ❀ जहां तहां तुम हमहिं उबारे
तब हरि बलदाऊ को हेरो ❀ कह्यो चलहु बन होत अबेरो
सखा बोल ल्याये बलरामहिं ❀ हँसे देखि सुन्दर घनश्यामहिं
बड़ी देर भइ तुम्हें कन्हैया ❀ रहे अकेले बन में भैया
चलहु बेग अब घरको जाहीं ❀ लेहु निबाहि गाय बन माहीं
हेरी देत चले सब ग्वाला ❀ गावत गुण सुन्दर गोपाला
गोधन आगे दये चलाई ❀ सखन मध्य मोहन बलभाई
चले ब्रजहिं ब्रजजन सुखदाई ❀ निरखि बदनछबि मदन लजाई

दो० सुनि ब्रजसुन्दरि परस्पर, कहत मुरलि स्वर घोर।
आवत बनवासि अहरनिश, आगम नन्दकिशोर॥

सो० धाईं गृह तजि काज, निरखन को मनभावनो।
सुन्दर सुत ब्रजराज, लाज साज सब छोड़िके॥

वे देखो आवत बल मोहन ❀ सुबल सुदाम सुदामा सोहन
मेघ श्याम तन गैयन पाछे ❀ शीशमुकुट कटि कछनी काछे

कमल बदन कर वेणु बजावैं ❀ गौरी राग मिले स्वर गावैं
नयन बिशाल कमलते आछे ❀ कोटि मदन की छविको त्राछे
कुंडल श्रवण बदन छबि छाई ❀ गोरज छबि कहुँ चंद छिपाई
निरखि मुदित सब ब्रजकी बाला ❀ पहुँचे आय सदन नँदलाला
ब्रजजीवन बल मोहन भैया ❀ निरखि जननि दोउ लेत बलैया
ग्वाल कहत धनि यशुदामाता ❀ धनिधनि बल मोहन दोउ भ्राता
नर तन धरे देव ये कोऊ ❀ ब्रज अवतार लियो इन दोऊ
ये हैं सब ब्रजके रखवारे ❀ गाय गोप के राखनहारे
गर्दभ रूप असुर इक भारो ❀ ताहि आज हलधर वन मारो
हम सब यमुना तट मुरझाई ❀ तहां कान्ह सब मरत जिवाई

दो० अब हम काहू डरत नहिं, ये हैं हमैं सहाय।
बल मोहनके बल फिरत, बन बन चारत गाय॥

सो० परत गाढ़ जब आय, तब तब होत सहाय हरि।
चिरजीवैं दोउ भाय, यशुमति ये तेरे कुँवर॥

यशुमति सुनि ग्वालनकी बानी ❀ कह्यो गर्ग सब सत्य बखानी
नित नव चरित सुनत इन केरे ❀ हैं कोऊ ये बड़न बड़ेरे
धन्य धन्य ये ब्रज में आये ❀ धन्य धन्य हम सुत करि पाये
अतुलित कर्म दुहुँन के जानी ❀ दोउ जननी मन मांझ सिहानी
श्याम राम दोऊ नँदरानी ❀ लिये लाय छाती हरषानी
भूखो जानि तुरत अन्हवाये ❀ षटरस व्यञ्जन सरस जिमाये
भोजन करि अँचये दोउ भाई ❀ लीन्हे पान संत सुखदाई
पौढ़े सेज दास हितकारी ❀ ब्रज वासी जन हैं बलिहारी
चिन्तामणि हरिजन सुखदानी ❀ कालीकी चिन्ता उर आनी
ग्वाल गाय नित वनको जाहीं ❀ दुख पावत कालीदह माहीं

विषधर को रहवो जल माहीं ॥ वृन्दावन ढिग नीको नाहीं
कालिहि काढ़ि इहां ते दीजै ॥ यमुना को जल निर्मल कीजै
दो० यह विचार मन में करत, भये नींदवश श्याम ।
यशुमति हरि पौढ़ायकै, आप लगीं गृहकाम ॥
सो० खरे न बोलन देत, घर में काहू को महरि ।
वल मोहन के हेत, जागि परें मति नींद ते ॥
शिवसनकादिदिवसनिशिध्यावैं ॥ कबहूं जाको अन्त न पावैं
ब्रह्म सनातन आनँद खानी ॥ सो नँद सदन सोवत गुणदानी
देखो नंद कान्ह अति सोवत ॥ श्रमित जानि वनके सुख जोवत
मानत नाहिं कहो किन कोऊ ॥ आप हठीले भैया दोऊ
करसों पोंछत सुभग शरीरा ॥ कहियत यहै प्रेमकी पीरा
निज पलका तहँ लियो मँगाई ॥ सोये हरि के ढिग नंदराई
यशुमति हू पौढ़ी तांई आई ॥ निशि बीते अधिकी अधिकाई
जाग उठे तब कुँवर कन्हैया ॥ कहां गई मो ढिग ते मैया
सँग सोवत जान्यो बलभाई ॥ अतिही श्याम उठे अकुलाई
जागे नँद अरु महरि यशोदा ॥ हरिको ऐंच लियो नंदगोदा
काहे झिझकि उठ्यो अनियारा ॥ तुरतहि दीपक कियो प्रकाशा
सपने गिरो यमुन जल जाई ॥ काहू मोको दियो गिराई
दो० नितप्रति मैं बरजत रहौं, तू हठि यमुना जाय ।
सुधि रहत ई अन्हानकी, जिन हो लाल डराय ॥
सो० कोरै लै नँदराय, पौढ़ाये निज संग तब ।
वृन्दावन तू जाय, केहिकारण जिनतितफिरन ॥
अब तू वृन्दावन जिन जाई ॥ तहां कौन धौं रहत बलाई
सोये दम्पति बीच कन्हाई ॥ तुरतहि गई नींद फिर आई

सपनो सुनि जननी अकुलानी ❀ कहत नंद सों यशुदारानी
देख्यो धौं कह स्वपन कन्हाई ❀ या ब्रजके जीवन दोउ भाई
यहै यत्न इनको अब कीजै ❀ गाय चरावन जान न दीजै
गृह सम्पति है तनक ढुटौना ❀ इनहीं लौं बलभोग ढहौना
ये बन जात चरावन गैया ❀ हँसी करत ब्रज लोग लुगैया
दम्पति आपस में इहिभांती ❀ करत विचार वीतिगइ राती
तारागण सब गगन छिपाने ❀ गयो तिमिर अम्बुज बिकसाने
उठि यशुमति लागी गृह काजा ❀ भूलि गयो निशि शोच समाजा
प्रात स्नान यमुन नित जाई ❀ नंदहि तुरतहि दियो उठाई
मथन हार ग्वालिनि सब जागीं ❀ जितातित दही बिलोवन लागीं

दो० हरिप्यारीसुरभीनको, जम्यो जुदधि विलगाय।
सो हरिहितमाखनलिये, मथति यशोदा माय॥

सो० सद माखन निज पानि, मथत तुरतमथनीधस्यो।
बड़ भागिन नँदरानि, माखन प्यारे लालहित॥

लगी जगावन हरिको जाई ❀ उठहु तात माता बलि जाई
प्रगट्यो तरणि किरण महि छाई ❀ खोलि देहु मुख कमल कन्हाई
सखा द्वार सब तुमहिं बुलावैं ❀ तुम कारण सब धाये आवैं
उठि तिनको मिलकै सुख दीजै ❀ होत अबार कलेऊ कीजै
तब हरि उठिकै दर्शन दीनो ❀ माता निरखि मुदित मन कीनो
दाऊ जू कहि श्याम पुकास्यो ❀ नीलाम्बर गहि मुखतें टास्यो
मनु घन तें शशि भयो नियारो ❀ प्रगट्यो सुन्दर मुख उजियारो
हँसत उठे सुन्दर दोउ बीरा ❀ गौर श्याम अति सुभग शरीरा
शयन भवन तें बाहर आये ❀ लखि दोउ जननि परम सुखपाये
दतवन लै दोउवन कर दीनी ❀ चौकी बैठि मुखारी कीनी

मातन निज निज कर मुख धोये ॥ नयनन को आलस सब खोये
अँचरन सों मुख कमल अँगोछे ॥ उर लगाय सब अंगन पोछे

दो० करहु कलेऊ लाल दोउ, तब कहुँ बाहर जाउ।
मथ्यो तुरत मीठो मधुर, माखन रोटी खाउ ॥

सो० दई दुहुँन को मात, रोटी अरु माखन मधुर।
हरषि परस्पर खात, माता अंतर हेतु लखि ॥

अथ कालीदमन लीला ॥

ऋषि नारद हरि भक्त सयाने ॥ प्रभुके मनकी गति पहिचाने
गावत गुण हरि परम हुलासा ॥ गये तुरत मथुरा नृप पासा
देखि कंस आदर अति कीनो ॥ करि दण्डवत अगासन दीनो
नारद कह्यो कुशल नृप राई ॥ कछुक शोच बश परत लखाई
तुम प्रताप मुनि कुशल सदाई ॥ एक शोच मोहिं बड़ो गुसाई
ये दोउ ब्रजमें नन्द कुमारा ॥ जानि परत मोहिं कोउ अवतारा
कहत जिन्हैं बलराम कन्हाई ॥ तिन की गति मति जानि न जाई
तृणावर्त से दैत्य पठाये ॥ सो उन पल इकमाहिं नशाये
बकी पठाय दई पहिलेहीं ॥ ऐसन को बल सब लै लेहीं
उन तें भयो नहीं कछु काजा ॥ यह मुनि समुझि होत मोहिं लाजा
अब मुनि तुम कछु कहहु विचारा ॥ जिहि विधि मारहु नन्दकुमारा
मुनि हरिके गुण नीके जाने ॥ सुनि नृपवचन मनहिं मुसकाने

दो० तब बोले मुनि नृपतिसों, सत्य कही तुम तात।
वे दोऊ अवतार हैं, उन गति जानि न जात ॥

सो० हैं वे तुम्हरे काल, प्रकट भये ब्रज आयकै।
नन्द गोपके बाल, तुम इनको राखो मनिहिं ॥

एक बात मेरे मन आवै ❋ करहु कंस तुमको जो भावै
काली अहि रह्यो यमुना आई ❋ तहां कमल फूले विपुलाई
फूल तहांते मांगि पठावहु ❋ दूत पठै नन्दहि डरपावहु
यह सुनि ब्रजके लोग डरैहैं ❋ यहै बात वेऊ सुनि पैहैं
जैहैं अवशि फूल के काजा ❋ तहां घात करिहैं अहिराजा
यह सुनि कंस बहुत सुख पायो ❋ भलो मंत्र मुनि मोहिं बतायो
धनिधनिकहिपुनिपुनिशिरनावत ❋ हरषि चले मुनि हरि गुण गावत
तबहिं कंस इक दूत बुलायो ❋ ब्रजहिं नंद के पास पठायो
दीनों ताको पत्र लिखाई ❋ कहियो यहै नन्द को जाई
कोटि कमल कालीदह केरे ❋ पहुँचावहु लै कालिह सवेरे
कंसराज अति काज मँगाये ❋ बनिहै तुमको तुरत पठाये
चल्यो दूत आतुर ब्रजधाई ❋ जानिलई सब कुँवर कन्हाई

दो० आप रहे तादिन घरहिं, बनहिं पठाये ग्वाल।
ब्रजबासी जनके सुखद, ब्रजजीवन नँदलाल॥

सो० दूतहि आवत जान, आप गये वहराय हरि।
सुन्दरश्याम सुजान, खेलत ग्वालन संगमिलि॥

आये नंद यमुन जल न्हाये ❋ पैठत सदन छींक भइ बांये
महर मलिनमन असगुन जान्यो ❋ आज कहा उर शोच समान्यो
तबहीं चल्यो दूत जब आयो ❋ नंदमहर घरही में पायो
बोल लिये पाती कर राखी ❋ नृप की कही मुखागर भाखी
कालीदह के फूल मँगाये ❋ ता कारण अति डाट पठाये
जो नहिं मोकों फूल पठावहु ❋ तौ कोउ ब्रजमें रहन न पावहु
गोप नंद उपनंद जितेका ❋ डारौं मार न राखौं एका
जो नहिं कालिह कमल मैं पाऊं ❋ तो दोउ सुत तेरे बांधि मँगाऊं

यह सुनि नन्द गये मुरझाई ❀ और गोप सब लिये बुलाई
तिन सब को सब बात जनाई ❀ परी आय यह अति कठिनाई
कोटि कमल कालीदह माहीं ❀ कहो कौन धौं काढ़न जाहीं
कह्यो फूल जो काल्हि न पाऊं ❀ तो सुत तेरे बांधि मंगाऊं

दो० मेरे सुत दोउ नृपति उर, खटकत हैं दिनरात।
आज कही यह बात मों, बलमोहन पर घात॥

सो० चढ़िहै ब्रजपर धाय, काल्हि कंस अति कोपकर।
बन्यो मरण अब आय, को राखै कित जाइये॥

मोहिं अपने जियको डर नाहीं ❀ शोच श्याम बलको उर माहीं
अब उबार देखियत नहिं कोई ❀ बल मोहनहिं राखि को लेई
बर मोहिं राखै बांधि नृपाला ❀ रहैं सदन बल मोहन लाला
नन्द वचन सुनि सब ब्रजवासी ❀ भये दुखित मन परम उदासी
काहू पै कछु बात न आई ❀ अति भय त्रसित गये मुरझाई
चकित महा ब्रजवासी ठाढ़े ❀ मानहुँ चित्र चित्र लिखि काढ़े
नन्द घरनि ब्रजनारि विचारैं ❀ अति व्याकुल नयनन जल ढारैं
ब्रजहिं बसत सब जन्म सिरान्यो ❀ इहिविधि कंस न कबहुं रिसान्यो
कालीदह के फूल मँगाये ❀ कहो कौनविधि जात सो पाये
अतिहि शोचबश सब नर नारी ❀ भये कंस ते बहुत दुखारी
कोउ कह शरण चलो सब जाहीं ❀ शरण गये करि है कछु नाहीं
कोउ कहै देहु जितो धन चाहै ❀ ऐसे सब मिलि बुद्धि उपाहैं

दो० यहै शोच सब मिलि परे, नहीं कछु निरधार।
ब्रज भीतर नँदभवन में, घर घर यही विचार॥

सो० अन्तर्यामी जानि, खेलत ते आये घरहिं।
देखत ही नँदरानि, हग भर लिये लगाय उर॥

चितवत माता कुँवर कन्हाई ❁ बूझत कत रोवत दुख पाई
बूझहु जाय तात सों बाता ❁ मैं बलि जाउँ वदन जलजाता
तुमहीं काज कंस अकुलाई ❁ बाहर मत कहुँ जाहु कन्हाई
जाय तात को शोच मिटावो ❁ अपने मधुरे वचन सुनावो
आयो श्याम नंद पै धायो ❁ जान्यो मात पिता दुख पायो
बूझत नंदहिं कुँवर कन्हैया ❁ तात दुखित कत तुम अरु मैया
मोसों बात कहौ किन सोई ❁ कहा शोच वश हौ सब कोई
नंदलाल कनियां बैठारे ❁ कहा कहौं तुम सों मैं प्यारे
जब ते जन्म भयो सुत तेरो ❁ करत कंस तुमसे अरभेरो
केती करवर टरीं तुम्हारी ❁ कुल देवन कीन्ही रखवारी
प्रथमहिं अधम पूतना आई ❁ शकट तृणा पुनि आयो धाई
वत्स बका अघ पुनि दुख दीनो ❁ सब तें तोहिं राखि विधि लीनो

दो॰ कालीदह के फूल अब, पठये भूप मँगाय।
सब तें यह गाढ़ी परी, को करि लेय सहाय॥

सो॰ जो नहिं आवैं फूल, लिख्यो कंस मोहिं डाटिकै।
करौं ब्रजहिं निर्मूल, बांधि मँगाऊं तव सुतन॥

बाबा तुम काहे दुख पाई ❁ कहत कौन धौं करै सहाई
सो देवता ब्रजहिं के माहीं ❁ रहत हमारे सङ्ग सदाहीं
लीन्हो जिन सब ठौर बचाई ❁ करि लेहैं सोइ देव सहाई
सोई कंसहि फूल पठैहै ❁ ब्रजबासिन को शोच मिटैहै
कंस केश गहि सोई मारै ❁ असुर मारि भू भार उतारै
सब मिलि सोई देव मनावो ❁ अपने मनतें शोच मिटावो
सुनत महर हरि मुखकी बानी ❁ भये सुखी धीरज उर आनी
इष्टदेव को शीश नवायो ❁ तहां तहां तुम श्याम बचायो

शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी ❋ अबहूं करहु सहाय हमारी
जाते कंस त्रास मिटि जाई ❋ रहैं सुखी बलराम कन्हाई
मात पितहिं हरि इहि ढँगलाई ❋ आप चले खेलन हरषाई
सखन मध्य गये कुँवर कन्हाई ❋ कह्यो खेलिये गेंद मँगाई

दो० श्रीदामा यह सुनतही, गयो धाम निज धाय।
अपनो गेंद ले आयके, दीनों हरि को आय॥

सो० चलो खेलिये धाय, बाहर घोष निकास कै।
जहँ कोउ आव न जाय, गेंदखेल बनिहै तहां॥

सखन संग लै बाहर आई ❋ रच्यो गेंद को खेल कन्हाई
इक मारत इक भाजत जाहीं ❋ रोक लेत इक बीचहि माहीं
आपस मांझ परस्पर मारैं ❋ नाना रँग करिकै किलकारैं
भाजत मारत दूजो जाहीं ❋ मारत धाय बहुरि सो ताहीं
श्याम सखन को खेलत माहीं ❋ यमुनातट तन लीन्हे जाहीं
आपन जात कमल को लालन ❋ सखा संग लीने सब ग्वालन
को जानहि यह हरि के ख्याला ❋ यमुना निकट गये सब ग्वाला
श्याम सखा को गेंद चलाई ❋ अंग मोर सो गयो बचाई
पड़ो गेंद यमुना जल माहीं ❋ ह्वै गयो खेल भंग तिहि ठाहीं
पकरी धाय फेंट श्रीदामा ❋ मेरी गेंद देहु तुम श्यामा
जान बूझ तुम गेंद गिराई ❋ बनि है दीन्हे गेंद मँगाई
और सखा मोको मति जानो ❋ मोसों मतिहिं ढिठाई ठानो

दो० सखा हँसत सब तारिदै, भली करी तुम कान्ह।
दीन्ही गेंद बहाय जल, देहु श्रीदामहिं आन्ह॥

सो० सकल लोक शिरताज, पार न पावैं ब्रह्म शिव।
ताहि गेंद के काज, फेंट पकरि झगरत सखा॥

छांड़ि देहु मेरि फेंट सुदामा ❀ रारि बढ़ावत थोरेहि कामा
बदले गेंद लेहु तुम मोसों ❀ फेंट न गहो कहौं मैं तोसों
छोटे बड़ो न जानत काहू ❀ करत बराबर पकरत बाहू
हम काहे को तुमहिं बराबर ❀ तुम उपजे अब बड़े नंदघर
ऐसे हम अब गये बिलाई ❀ तुमहुँ बराबर नाहिं कन्हाई
सुनहु श्याम हम तुम इक जोटा ❀ कहा भयो तुम नंद के ढोटा
गेंद दिये ही बनै मँगाई ❀ मोसों चलिहै नाहिं ढिठाई
मुँह सँभारि बोलत नहिं मोसों ❀ करिहौं कहा ढिठाई तोसों
पुनि पुनि करत बराबर आई ❀ तैं नहिं जानत मोरि धुताई
प्रथम पूतना शकटा मास्यो ❀ कागासुर अरु तृणा पछास्यो
बत्स बकासुर बनके माहीं ❀ मास्यो सो कह जानत नाहीं
अघ मास्यो पुनि देखत तोहीं ❀ ऐसो धूत न जानत मोहीं

दो० तुम मारे सो सांच सब, कतही लाल डराहु।
कंस कमल अब देहु तब, हमहिं मारियो जाहु॥

सो० कालिहि परिहै जानि, पकरि मँगैहै कंस जब।
देत फूल किन आनि, बहुत अचकरी करिरहे॥

सांच कहौं मैं सुनो श्रीदामा ❀ आयों इहां फूल के कामा
कितक बापुरो कंस बतायो ❀ जाके भय तुम मोहिं डरायो
केश पकरि गहि ताहि पछारों ❀ देखहुगे तुम देखत मारों
कोटि कमल तेहि आज पठाऊं ❀ ब्रजतें ताको त्रास नशाऊं
कालीदह जल पियत मरे सब ❀ गहि लाऊं सोई काली अब
लीन्हीं रिस करि फेंट छोड़ाई ❀ चढ़े कदम पर धाय कन्हाई
नीचे सखा हँसन सब लागे ❀ श्रीदामा के डर हरि भागे
रोय चले श्रीदामा घर कों ❀ जाय कहत मैं महरि महर कों

टेरत कहि कहि सखा कन्हाई ❀ लेहु गेंद मैं ल्यावत जाई
यह कहि नटवर मदन गोपाला ❀ कूदि परे जल में नँदलाला
हाय हाय करि सखा पुकारे ❀ भये श्याम विन वहुत दुखारे
रोवत चले ब्रजहिं सव धाई ❀ श्रीदामा को दोप लगाई

दो० कोमल तन अति सांवरो, साजे नटवर साज।
जलमें पैठि गये तहां, जहँ सोवत अहिराज॥

सो० इहि अंतर हरि माय, भूखे ह्वै हैं जानि हरि।
खेलत तें अव आय, मोसों भोजन मांगि हैं॥

यशुमति चली रसोई कारिन ❀ तवहीं छींक उठी इक ग्वालिन
ठिठकि रही उर शोचत ठाढ़ी ❀ भली नहीं कछु चिंता वाढ़ी
आई अजिर निकसि पछिताई ❀ चली वहुरि सो दोप मिटाई
मार्जारी तव पंथ कटाई ❀ वहुरो यशुमति वाहर आई
व्याकुल भई निकरि गइ द्वारे ❀ कहँ धौं खेलत मेरे वारे
वायें काग दाहिने खर स्वर ❀ सुनि आई अति व्याकुल फिर घर
छिन वाहर छिन आंगन माहीं ❀ टेरत हरि हि शांत मन नाहीं
तवहीं नन्द चले घर आवत ❀ देख्यो श्वान श्रवण फटकावत
दहिने काहू रोय सुनायो ❀ माथे पर ह्वै काग उड़ायो
सन्मुख गररी करत लराई ❀ डरे नन्द अशकुन वहु पाई
आये घर मन मलिन विशेखी ❀ व्याकुल मलिन वदन तिय देखी
बूझत यशुदहि नन्द डराई ❀ काहे तव मुख गयो झुराई

दो० चली रसोई करन हौं, छींक भई मोहिं आज।
आगे ह्वै मार्जारि पुनि, गई दूसरे आज॥

सो० तवते मो जिय शोच, हरि धौं खेलत हैं कहां।
समुझ कंस कृत पोच, मेरे मनमें त्रास अति॥

नन्द कहत पैठत घर माहीं ❋ मोहिं शकुन नीके भये नाहीं
आज कहा यह समुझि न जाई ❋ हैं धौं कित बलराम कन्हाई
महरि महर मन त्रास जनाई ❋ खोजत हरिहि चले अकुलाई
सखा सकल इहि अंतर धाये ❋ रोवत ब्रजहिं पुकारत आये
महरि महर सों आय जनाई ❋ यमुना बूड़े कुँवर कन्हाई
सुनि दंपति बूझत अकुलाई ❋ कैसे कहा कहौ समुझाई
खेलत कदम चढ़े हरि धाई ❋ कूद परे कालीदह माई
सुनतहि परी धरणि महँ मैया ❋ कीनो सपनो सत्य कन्हैया
रोवत नंद यमुन तट आये ❋ बालक सब नंदहि सँग धाये
ब्रज घर जहां तहां यह बाता ❋ ब्रजवासी आये बिलखाता
कहां पर्यो गिरि कुँवर कन्हाई ❋ दई बालकन ठौर बताई
त्राहि त्राहि करि नंद पुकारे ❋ गिरे धरणि नहिं अंग सँभारे

दो० लोटतअतिब्याकुलधरणि,परनचलतजलधाय।
कहत श्याम तुम दियो दुख, मोको बैस बुढ़ाय॥
सो० लोग उठे सब रोय, दीन बचन सुनि नंद के।
कहत बिकलसबकोय, हरि तुम ब्रजसूनोकियो॥

नंदहि गिरत सबहि गहि राख्यो ❋ ता छिनको दुख जात न भाख्यो
कहत गोप नंदहि समुझाई ❋ बन्यो मरण सबही को आई
हरि बिन को जीवै ब्रज माहीं ❋ कहौ कान्ह किहि जीवन नाहीं
मोह मगन अति यशुमति मैया ❋ टेरत मेरे लाल कन्हैया
आज कहां तुम बेर लगाई ❋ माखन धर्यो खाउ किन आई
अति कोमल तुम्हरे मुख योगू ❋ जेंवहु लाल लेहुँ मैं रोगू
धौरी दूध धर्यो औटाई ❋ तुम निज कर दुहि गये कन्हाई
सद माखन अति हित मैं राख्यो ❋ आज नहीं तुम नेकहु चाख्यो

प्रातहिं ते मैं दियो जगाई ❁ दँतवन करि जो गये दोउ भाई
मैं चितवत तव पंथ कन्हाई ❁ खेलत आज अवार लगाई
बैठो आय संग दोउ भैया ❁ तुम जेंवहु मैं लेहुँ बलैया
शोक सिंधु बूड़त नँदरानी ❁ तनकी सुधि बुधि सबै भुलानी

दो० ब्रजयुवती सुनि महरिके, बचन प्रेम आधीर।
अकुलानी रोवत सबै, बढ़ी कठिन उर पीर ॥

सो० बरजत यशुदहिं ग्वाल, यह कहिकहिं हरिहैं भले।
सुतबियोग बिकराल, जात नहीं कहि मात को ॥

चौंक परी तनकी सुधि आई ❁ रोवत देखे लोग लुगाई
तब जानी दह गिरे कन्हाई ❁ पुत्र पुत्र कहिकै उठि धाई
ब्रजबनिता सब संगहि लागीं ❁ श्याम वियोग विथा सब पागीं
कान्ह कान्ह कहि सकल पुकारैं ❁ तोरत लट उरसों कर मारैं
अति व्याकुल यमुना तट जाई ❁ गिरी धरणि यशुमति अकुलाई
मुरछि परी तन दशा भुलाई ❁ प्राण रह्यो हरि सुरति समाई
ब्रजवासी सब उठे पुकारी ❁ जल भीतर कह करत मुरारी
संकट में तुम करत सहाई ❁ अब क्यों नाहिं बचावत आई
मात पिता अतिही दुख पावैं ❁ रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं
आय गये हलधर तेहि काला ❁ देखी जननी विकल बिहाला
नाक मूंदि जल सींचि जगाई ❁ जननि जननि कहि टेर लगाई
बार बार जब हलधर टेर्यो ❁ भयो चेत कछु बलतन हेर्यो

दो० कहत उठी बलराम सों, बनहिं तज्यो लघु भ्रात।
कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं, तुमसों क्यों रहिजात ॥

सो० मगन शोच उरमांझ, कहत लै आवहु कान्हको।
भूखे ह्वै गइ सांझ, आज कछू खायो नहीं ॥

कबहुँ कहत बन गयो कन्हाई ❀ कबहुँ बतावत घर समुदाई
कान्ह कान्ह कहि टेर लगावै ❀ कित खेलत कहि लाल बुलावै
अति ही मोह बिकल नँदरानी ❀ करत बोध हलधर मृदुबानी
कत रोवत तू यशुमति मैया ❀ नीके हैं वरु धीर कन्हैया
श्यामहिं नेक कहूं डर नाहीं ❀ तू कत डरपत है मन माहीं
तेरी सों मैं कहत पुकारे ❀ वह काहू के मरै न मारे
जिन काली भय होहु दुखारी ❀ तू अपने मन देख विचारी
पहिले बकी कपट करि आई ❀ तब दिन दशके हते कन्हाई
शकटा तृणावर्त्त पुनि आयो ❀ तू देखत हरि तिन्हैं नशायो
बत्स बका अघ बन में मारे ❀ विष जलतें सब ग्वाल उबारे
अब वे काली नाथे लैहैं ❀ कमल पठाय कंस को दैहैं
मोहिं भरोसो कान्हर केरो ❀ मानो सत्य कह्यो सुनु मेरो

दो० मोहिं दुहाई नंद की, अबहीं आवत श्याम।
नाग नाथि लै आवहीं, तौ कहियो बलराम॥

सो० सुनि हलधरके बैन, अति उदार हरिके चरित।
भयो कछुक उर चैन, जो कछु करहिं सुसोहसब॥

बांह पकरि बल को बैठाई ❀ लै बलाय उर रही लगाई
अति कोमल तन धरे कन्हाई ❀ पहुँचे काली के ढिग जाई
हरिको देखि उरग की नारी ❀ रही चारु मुख चिह्न निहारी
कहत कौन तू इत कित आयो ❀ अति कोमल तन काको जायो
बारहि बार कहति अकुलाई ❀ बेग भाज इतते कित जाई
देखै नाग जाग कै जबहीं ❀ ह्वैहै भस्म छिनकमें तबहीं
सुनत नागनारी की बाणी ❀ बोले हँसि हरि शारँगपाणी
पठयो मोहिं कंस नृपराई ❀ तू याको अब देहु जगाई

कंस कहा तू इनहिं बतैहै ❀ एक फूंक में तू जरि जैहै
अजहूं भाजि कह्यो करि मेरो ❀ लगत छोह देखत तन तेरो
मरहु कंस जिन तोहिं पठायो ❀ तू कत इहां मरणको आयो
बालक जानि दया अति मेरे ❀ दुख पैहैं पितु माता तेरे

दो० अरी बावरी सर्प सों, कहा डरावत मोहिं।
जैसो मैं बालक प्रगट, अबहिं दिखावहुँ तोहिं॥

सो० तू किन देत जगाय, देखौं मैं याके बलहि।
यापै कमल लदाय, लै जैहौं इहि नाथि ब्रज॥

सुनत बचन अहिनारि रिसानी ❀ छोटे वदन कहत बड़ बानी
खगपति सों सरवर जिन ठानी ❀ ताहि कहत नाथन अज्ञानी
देखतही ह्वैहै जर छारा ❀ केतक तू बपुरो सुकुमारा
बपुरो मोहिं कहत अहिनारी ❀ बोलत नाहिंन बात सँभारी
अबहीं तोहिं बपुरि करि डारौं ❀ एकहि लात खसम तुव मारौं
सोवत काहू मारिय नाहीं ❀ चलि आई है बात सदाहीं
ताते तू पति देइ जगाई ❀ देखौं मैं याकी मनुसाई
जोपै तोहिं मरन बुधि आई ❀ तौ तूही किन लेत जगाई
तब हरि झरकि ताहि दै गारी ❀ दाबी चरण पूँछ अहिकारी
मसकी नेक धरणि सों लाई ❀ काली उरग उठ्यो अकुलाई
आयो जानि गरुड़ भय बाढ़्यो ❀ देख्यो बालक आगे ठाढ़्यो
तबहिं क्रोध करि गर्व बढ़ायो ❀ झटकि पूँछ अतिरिसकरि धायो

दो० दांव घात लाग्यो करन, सहसौ फन फटकार।
बार बार फुंकार कर, डारत विष की झार॥

सो० जरत यमुन को नीर, जात फेन उतरात विष।
परसत नाहिं शरीर, अहिमद मोचन श्यामके॥

कियो युद्ध बहु उरग अघाई ❋ मुरे नहीं नेकहु यदुराई
कहत परस्पर अहिकी नारी ❋ देखहु यह बालक अति भारी
बिष ज्वाला जल जरत यमुनको ❋ याके तन परसत नहिं तनको
यह कछु मंत्र यंत्र धौं जानै ❋ अति कोमल विष नेक न मानै
सहसौ फनन करत अहि घाता ❋ अबलौं बच्यो पुण्य पितु माता
तब अहिराज श्याम तन हेरी ❋ कहत पूँछ दावी इन मेरी
अतिहि क्रोध करि आतुर धाई ❋ हरिके अंग गयो लपटाई
नखते शिखलौं अहि लपटाई ❋ कहत करी इन वहुत दिठाई
कौतुकनिधि हरि सबगुण खानी ❋ कियो दांव इहि अहि को जानी
तिहि अवसर सुर मुनि गंधर्बा ❋ अति व्याकुल आये ब्रज सर्बा
उरगनारि मन मन पछिताहीं ❋ हरिको रूप समुझि मन माहीं
कहैं गर्ब करि अति यह आयो ❋ काल बिबश पग इताहि चलायो

दो० काली हरिसों लिपटकै, गर्ब कियो मनमाह।
कहत मोहिं जानत नहीं, मैं सर्पन को नाह॥
सो० भंजब गर्ब गोपाल, गर्ब भरे सुनि अहिवचन।
कीन्हीं बपुष बिशाल, बिकल भयो अहिराज तब॥

जबहिं श्याम तन अति बिस्तारो ❋ टूटन लाग्यो अँग सब सारो
शरण शरण तब उरग पुकारो ❋ मैं नहिं जान्यों रूप तिहारो
जीव दान प्रभु मोको दीजै ❋ अपनी शरण राखि मोहिं लीजै
यह बाणी सुनतहि भगवाना ❋ सकुच गये हरि कृपानिधाना
यहै बचन गजराज सुनायो ❋ गरुड़ छांड़ि ताके हित आयो
यहै वचन सुनि द्रुपदसुता को ❋ बसन बढ़ाय दियो पुनि वाको
यहै बचन सुनि लाक्षागृह ते ❋ लीने राखि पाण्डवन जरते
यह वाणी सहिजात न श्यामहि ❋ दीनबन्धु करुणा के धामहि

लीनों अंग सिकोर कृपाला ❀ देख्योविकल शिथिलजबव्याला
पगसों चापि नाक धरि फोरी ❀ लीनों नाथ हाथ गहि डोरी
कूद चढ़े हरि ताके शीशा ❀ मन मन करत विचार अहीशा
मैं यह सुन्यों हतो विधि पाहीं ❀ कृष्णावतार होहि ब्रजमाहीं

दो० ते गोकुल में अवतरे, मैं जान्यौं निरधार।
ये अबिनाशी ब्रह्म हैं, ब्रजै कृष्ण अवतार॥

सो० किये बहुत नत घात, बार बार पछितात मन।
अस्तुति करत लजात, रह्यो दीन ह्वै सकुच अति॥

देख्यो व्याल विहाल कृपाला ❀ दियो दरश निज दीनदयाला
देखि दरश मन हर्ष बढ़ाई ❀ बोल्यो दीन बचन अहिराई
मैं अपराध कियो बिन जाना ❀ क्षमौ नाथ तुम क्षमानिधाना
तामस योनि कीट बिष जानौं ❀ कौन भांति तुम को पहिंचानौं
अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथा ❀ दीनों दरश जगत के नाथा
अशरण शरण नाथ तव बाना ❀ कहत संत सब वेद पुराना
ते अपराध क्षमा सब कीजै ❀ अब प्रभु शरण राखि मोहिं लीजै
आज धन्य यह मेरो माथा ❀ जापर चरण दिये मम नाथा
अब ये चरण परस प्रभु तेरे ❀ मिटे दोष दुख अघ सब मेरे
जो पद कमल पुनीत तुम्हारे ❀ निशि दिन रहत उमा उर धारे
शिव बिरंचि सनकादिक ध्यावैं ❀ जे पद योगी ध्यान लगावैं
जे पद पद्म सलिल सुर सरिता ❀ तीन लोक की पावन करिता

दो० जिन पद पंकज परस ते, गति पाई ऋषिनारि।
सुर नर मुनि बन्दत तिन्हैं, संतन प्राण अधारि॥

सो० फिरत चरावत गाय, श्री बृन्दावन जे चरण।
भक्तनके सुखदाय, ब्रजवासी जन दुख हरण॥

जे पद पंकज परम सुहाये ❀ प्रभु मैं आज सुलभ करि पाये
गरुड़ त्रास ते इत भजि आयो ❀ भलो कियो मोहिं गरुड़ सतायो
जाते दरश भयो प्रभु तेरो ❀ अब भयताप मिट्यो सब मेरो
आज भयो मैं नाथ सनाथा ❀ गहो नाथ मम प्रभु निज हाथा
सुनत दीन काली की बानी ❀ दीनबन्धु अतिशय सुख मानी
फनप्रति चरण सरोज छुवाये ❀ ताके सब सन्ताप नशाये
तब ब्रजनाथ भक्त हितकारी ❀ यह अपने मन माहिं विचारी
काली को ब्रज देश दिखैये ❀ कमल भार यापै लैजैये
ह्वै हैं ब्रज के लोग दुखारी ❀ करौं जाय अब तिनहिं सुखारी
कमल कंस को देउँ पठाई ❀ काल्हि चढ़ैगो ब्रज पर आई
लीने अहि पर कमल लदाई ❀ चले ब्रजहिं ब्रजजन सुखदाई
लियो नाथ गहि अहि उचकाई ❀ फन पर ठाढ़े कुँवरकन्हाई

दो॰ उरग नारि कर जोरि कै, प्रभु के सम्मुख आय।
करत बिनय अति दीन ह्वै, पतिहित हरिहिसुनाय॥

सो॰ इत यशुमति उरमाहिं, उठी लहर सुत प्रेमकी।
कान्हर आयो नाहिं, कहत रोय बलराम सों॥

कहत राम सुनु यशुमति मैया ❀ आवत आवत कुँवरकन्हैया
नेक धीर धरु मति अकुलाई ❀ यह सुनिके बलकी बलि जाई
पुनिवहकहत कान्ह नाहिंन अब ❀ झूठहिं मोहिं प्रबोध करत सब
भई बिना सुत व्याकुल मैया ❀ कहत कहां मेरो बाल कन्हैया
गिरी धरणि व्याकुल मुरझाई ❀ रोय उठे सब लोग लुगाई
ब्रजबासी सब भये बिहाला ❀ कहत कहां मोहन नँदलाला
तुम बिन यह गति भई हमारी ❀ आवत नहीं धाय बनवारी
प्रातहिं ते जल मांझ समाने ❀ तुमहिं बिना युग याम बिहाने

अब को बसै जाय व्रज माहीं ❀ धिक् धिक् जीवन तुमहिं बिनाहीं
अति व्याकुल रोवत नँदराई ❀ विकल मनहुँ फणिमणी गँवाई
यशुमति धाय चलत जलमाहीं ❀ राखति व्रजयुवती गहि बाहीं
हलधर सबहिन को समझावैं ❀ बिना श्याम कोउ धीर न पावैं

दो० कहत यशोदा नंद सों, धिक धिक बारहिं बार।
और किते दिन जियहुगे, मरत नहीं मोहिं मार॥

सो० कर देखहु मन ज्ञान, ऐसे दुख में मरण सुख।
नंद भये बिन प्रान, मूर्च्छि परे सुनि तिय बचन॥

तबहिं धाय बल पिता जगायो ❀ बार बार कहि कहि समुझायो
बृथा मरत काहे सब कोई ❀ कान्हर मारन हार न कोई
हलधर कहत सुनहु व्रजबासी ❀ वे अंतर्यामी अविनासी
सब गुण सागर आनँद रासी ❀ रमा सहित जलही के बासी
मेरो कह्यो सत्य करि मानो ❀ आवत श्याम धीर उर आनो
यमुना के भीतर तिहिकाला ❀ उठ्यो सलिल झकझोर विशाला
बोल उठे आतुर बलरामा ❀ वे देखो आवत घनश्यामा
सुनत बचन लखि कै उठि धाये ❀ यमुना नीर तीर सब आये
कोउ जल में कोउ बाहर ठाढ़े ❀ दरशातुर विरहानल बाढ़े
प्रकट भये जल ते तिहिं काला ❀ व्रजजन जीवन नंद के लाला
कमल भार काली पर लीन्हें ❀ नटवर वेष मनोहर कीन्हें
भये सुखी सब व्रज के बासी ❀ लखि हरिवदन परम सुखरासी

छं० हरि बदन लखिकै राशि सुखकी मुदित व्रजबासी भये।
मनहुँ बूड़त नाव पाई परम उर आनँद छये॥
मात पितु लखि जो भयो सुख जात सो कापै कह्यो।
पुलक तन मन हरपि गद गद प्रेम जल लोचन बह्यो॥

चकित हरितन लखत इकटक मिलन को आतुर हियो।
श्याम निरतत अहि फनन पर खौर चन्दन तन कियो॥
श्रवण कुण्डल लाल लोचन चारु मुकुट विराजहीं।
मनहुँ मरकत गिरि शिखर मणि मोर तापर राजहीं॥
पीतपट कटि काछनी उरमाल मणि भूपण सजे।
नृत्यतांडव करत फणप्रति व्योम दिव दुन्दुभि वजे॥
भई जय धुनि गगन वर्षहिं सुमन सुर आनँद भरे।
गगन गन्धर्व गुणन गावत तान तालन अनुसरे॥
उरग नारी श्याम सम्मुख करत अस्तुति आवहीं।
नाथ अब अपराध क्षमि करि कर कृपा पति पावहीं॥
राखे चरण निज शीश याके अति वड़ाई इन लई।
ऐसी वड़ाई और को प्रभु नाहिं तुम कबहूं दई॥
शेप इक ब्रह्मांड भरि शिर राखि मन गर्वित कियो।
कोटि कोटि ब्रह्मांड तव तन अधिक इन यह भरि लियो॥
सुर असुर नर नाग खग मृग कीट जन सब रावरे।
क्षमिय अब अपराध अहिके सुभग सुन्दर सांवरे॥

दो० सुनि अहिनारिन के बचन, करुणामय यदुराय।
उतरि परे अहि शीशते, यमुना के तट आय॥

सो० तट पर कमल धराय, काली को आयसु दियो।
उरगद्वीप अब जाय, करहु बास निर्भय सदा॥

तब काली कह सुनहु कृपाला ❋ तव वाहन डर डरत विशाला
धनि ऋपि शाप दियो है ताहीं ❋ ताते आय सकत ह्यां नाहीं
तब मैं भाजि बच्यों इत आई ❋ नातर लेत मोहिं सो खाई
चरण चिह्न लखि तव फण मेरे ❋ परि है गरुड़ आय पग तेरे

तू अब मति खगपतिहि डराई ❀ अपने द्वीप करहु सुख जाई
याते वड़ो कौन सुख नाथा ❀ अभयदान पद परस्यो माथा
जे पद कमल भजन परतापा ❀ जन प्रह्लाद मिटे सन्तापा
ते पद चिह्न शीश पर धारी ❀ जन्म जन्म को भयो सुखारी
उरगिन सहित नाय पद माथा ❀ गयो उरगद्वीपहि अहिनाथा
जयजय ध्वनि नभ सुरन बखानी ❀ धन्य धन्य जनके सुखदानी
शरण राखि काली अहि लीनो ❀ जल ते काढ़ि कृपाकरि दीनो
फण पर चरण चिह्न प्रगटाई ❀ कठिन गरुड़की त्रास मिटाई

दो० धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि, मुदित सुमन वर्षाय।
गये देव निज निज सदन, हृदय परम सुखपाय॥

सो० द्वीप पठायो व्याल, सुरगण सुरलोकहिं पठै।
आयो निकसि गोपाल, ब्रजबासीजनसुखकरन॥

धाय मिले सगरे ब्रजवासी ❀ विरह ताप तनकी सब नासी
माता दौरि कण्ठ लपटानी ❀ पुलक रोम तन गद गद बानी
नयन नीर अति प्रेम अधीरा ❀ उर लगाय मेटत उर पीरा
कहि कहि मेरो बाल कन्हैया ❀ दुहूं करन सों लेत बलैया
धाय नंद उर सों लै लाये ❀ गये प्राण मानहुँ फिरि आये
गदगद बैन नयन जल ढारो ❀ कहत जन्म फिरि भयो तुम्हारो
बार बार उर सों लपटावत ❀ दारुण दुखकी ताप नशावत
प्रेमाकुल देखी बल माता ❀ मिले रोहिणी सों सुखदाता
निरखि वदनकह यशुमति मैया ❀ मैं बरजौं नित तुमहिं कन्हैया
यमुना तीर न्हान मति जाहू ❀ तुम बरजो मानत नहिं काहू
मैं निशि सपने मांझ डरान्यो ❀ सोई कछू आय प्रगटान्यो
कंस कमल के फूल मँगाये ❀ ब्रजबासी सब अतिहि डराये

दो० मैं गेंदहि खेलत यहां, आयों यमुना तीर।
मोहिं डार काहू दियो, कालीदहके नीर॥
सो० देख्यो उरग बिशाल, जाय तहां मैं डरो अति।
तब पूंछो मोहिं व्याल, किन पठयो तोको इहां॥

जब ऐसे मैं ताहि बतायो ❀ कमल काज मोहिं कंस पठायो
यह सुनतहि अहि उठ्यो डराई ❀ मो को फणपर लियो चढ़ाई
कमल लियो निज पीठ लदाई ❀ आपहि आय गयो पहुँचाई
ऐसे जननी बोध कृपाला ❀ सुनत बचन सब ब्रजकी बाला
लै लै हरि को उर सों लावैं ❀ कठिन विरहकी शूल मिटावैं
श्याम बिना बहुते दुख पायो ❀ सो हरि तिनको ताप नशायो
लखे सखा सब आरत बाढ़े ❀ प्रेमातुर मिलिबे को ठाढ़े
गये दौर तिन पास कन्हाई ❀ मिले धाय सब कंठ लगाई
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया ❀ जो तुम कह्यो कियो सोइ भैया
तुमहो सब ब्रज के सुखदानी ❀ कंस मारिहौ तुम हम जानी
कहा भयो जो तुमहो बारे ❀ हैं तुम्हरे गुण सबते न्यारे
भलो यदपि सिंहन को छोटो ❀ कौन काज गज लम्बो मोटो

दो० तुम हमपर रिस करि गये, सो अब देहु भुलाय।
यह सुनतहि हरि हँसि उठे, मिले बहुरि हरषाय॥
सो० जबहलधरअरुश्याम, मिलेबिहँसिदोउमनहिंमन।
निरखि मगन नर बाम, भेद न कोऊ जानहीं॥

सब कोउ कहत धन्य बलरामा ❀ तुम जो कही करी सोइ श्यामा
तब हरि कह्यो नंद सों जाई ❀ मेरे मनहिं बात यह आई
आज बसै जो यमुना तीरा ❀ अति रमणीक सुगंध समीरा
इहां कीजिये भोग बिलासा ❀ होत प्रात सब चलहिं अवासा

कमल पठाय कंस को दीजै ❀ सुनहु तात अब विलँब न कीजे
गोप जाय आवैं पहुँचाई ❀ काल्हि चढ़ै नतु ब्र[illegible] पर धाई
यह सुनि नंद बहुत सुख पायो ❀ सब ब्रजबासिन के म[illegible]यो
तुरत ग्वाल बहु घरन पठाये ❀ षटरस भोजन बहुत मँगाये
यमुना तीर गोप समुदाई ❀ भोजन कियो बहुत सुख पाई
नंदराय तब शकट मँगाये ❀ कोटि कमल तिन पर लदवाये
बहुत भार दधि घृतके कीने ❀ ते अहिरन कांधे धरलीने
अपनी सर जे गोप सुहाये ❀ तिनहिं संग करि नृपहि पठाये

दो० बहुत बिनय करि कंसको, दीनो पत्र लिखाय।
कहियो मेरी ओरते, नृपसों ऐसी जाय॥

सो० गयो कमल के काज, कालीदह मेरो सुवन।
तुव प्रताप ते राज, आय गयो पहुँचाय अहि॥

कोटि कमल नृप मांगि पठाये ❀ तीन कोटि तहँ ते हैं पाये
सो राखे जल मांझ सजाई ❀ आयसु होय तो देउँ पठाई
तब गोपन सों कुँवर कन्हाई ❀ ऐसे बोल उठे मुसकाई
नृप सों लीजो नाम हमारो ❀ यह कारज हम कियो तुम्हारो
कमल शकट दधि घृतके भारा ❀ चले गोप लै नृप के द्वारा
राजद्वार [illegible]शकटन पहुँचाई ❀ जाय पौरियन खबरि जनाई
तुरत पौरिया भीतर धाई ❀ समाचार सब नृपहि सुनाई
सुनत बात यह मनहिं डरान्यो ❀ आप निकस आयो अतुरान्यो
देखी शकट भीर अति भारी ❀ भयो चकित सुधि बुद्धि बिसारी
कमल देखि भय भयो बिशाला ❀ लगे ताहि मनु व्याल कराला
नंद विनय तब गोपन भाखी ❀ दीनों पत्र भेंट सब राखी
गोपन बहुरि कह्यो नृपराई ❀ नंदसुवन यह कह्यो कन्हाई

दो० हम कालीदह जाय यह, कियो राज को काम।
नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम॥
सो० सुनत श्यामसंदेश, देखि कमल अति भय बिकल।
भीतर गयो नरेश, मन बाढ़ी चिंता बिपुल॥

मनहीं मन यह करत बिचारा ❀ यासों मेरो नाहिं उबारा
दैत्य गये ते सबहिं नशाये ❀ काली तें ऐसे बचिआये
ताही पर कमलन लै आये ❀ सहस शकटभरि मोहिं पठाये
कबहुँ कहत गोपन कों मारौं ❀ इनको ह्वांते तुरत निकारौं
फेर कछू मन में भय पावै ❀ करत बिचार न कछु बनि आवै
पुनि सँभारि धीरज उन कीनों ❀ गोपन बोलि भीतरहिं लीनों
हृदय दुखित ऊपर सुख मानी ❀ पहिराये दीने सनमानी
सरो पाव नंदहु को दीनों ❀ कहियो काज बड़ो तुम कीनों
तेरे सुत बलराम कन्हाई ❀ एक दिवस देखिहौं बुलाई
यह सुनि अति पुरुषारथ कीन्हों ❀ कालीदह के फूलन लीन्हों
यह कहि बिदा किये सब ग्वाला ❀ भयो कंस उर शोच बिशाला
मनहीं मन शोचत हरि के गुन ❀ रह्यो काठ ज्यों भीतरही घुन

दो० तब दावानल बोलके, कह्यो मरम सब ताहि।
देखौं मैं तेरे बलहि, तू अब ब्रज को जाहि॥
सो० जाय कीजियो छार, ब्रज सब ब्रजबासिनसहित।
बचहिं न नन्दकुमार, ऐसो यत्न बिचार उर॥

अथ दावानल लीला॥

दावानल सुन नृपकी बानी ❀ चल्यो रिसाय गर्ब उर आनी
करौं भस्म इक पलमहँ जाई ❀ सहित गोप नँदसुवन कन्हाई

नृप को काज आज करि आऊँ ❀ जो कहुं एक ठौर सब पाऊं
इहां गोप कमलन पहुँचाई ❀ आये यमुन तीर हरषाई
नंद तुरत सब निकट बुलाये ❀ सुनत सकल व्रज जन जुरि आये
गोपन कही नंद सों आई ❀ लिये कमल नृप अति सुख पाई
दियो हर्ष तुमको पहिरायो ❀ मुदित नंद लै शीश चढ़ायो
अपने सब पहिराव दिखाये ❀ लखि सब ब्रजवासिन सुख पाये
हरि को नाम सुन्यो जब राजा ❀ हरषि कह्यो कीनो इन काजा
इक दिन बल मोहन दोउ भाई ❀ देखहुं गो मैं इहां बुलाई
यह सुनि नंद बहुत सुख पायो ❀ हरषि भूप मो सुतन बुलायो
करी कृपा अति नृप हरि पाहीं ❀ सब नर नारि हरषि मन माहीं

दो० कहत श्याम बलराम सों, हँसि हँसिकै यह बात।
नृप हम तुम देखन लिये, कह्यो बुलावन तात॥

सो० ब्रजजन परम हुलास, इक सुख हरि आहिते वचे।
मिट्यो कंस को त्रास, द्वितियकमल पठये नृपहिं॥

इहि विधिव्रजजनअतिसुखपायो ❀ खान पान करि दिवस वितायो
सोये सब मिलि यमुना तीरा ❀ राखि हृदय सुन्दर बलवीरा
जहां असुर दावानल आयो ❀ चाहत है सब व्रजहि जरायो
देखे सब ब्रज जन इकठाहीं ❀ कियो हर्ष अपने मन माहीं
प्रगटी दावानल चहुँ ओरा ❀ अतिहि प्रचण्ड पवन झकझोरा
दशहूं दिशिते घेरत आवै ❀ तृण तरु खग मृग जीव जरावै
जागि पड़े सब व्रज नर नारी ❀ कहैं चहूं दिशि लगी दवारी
भये चकित सब अति मन माहीं ❀ काहू दिशि मग दीखत नाहीं
चहत चलन भजि नहीं निकासू ❀ लेत सबै भरि शोच उसासू
आय गई दौ अतिहि निकटहीं ❀ चले कहत सब यमुनातटहीं

अब न देखियत कहूं उबारा ❋ बढ़ी अनल पहुँची नभ जारा
ब्रजके लोग अतिहि अकुलाने ❋ जरे सकल मनमांझ डराने

छं० अति बिकल सब डरे ब्रजजन देखि अनल भयावना ।
भई धरनभ ज्याल पूरण धूम धुन्ध डरावना ॥
लपट झपटत जरत तरुवर गिरत महि भहराय कै ।
उठत शब्द अघात चहुँ दिशि बढ़त झर झहराय कै ॥
फटत फल फूलत कटक दल जरत बरत लता घनी ।
कांस चटकत बांस पटकत अंगार उचटत नभतनी ॥
हरिण मोर बराह बनपशु बिकल पंथ न पावहीं ।
जरत जहँ तहँ जीव खगमृग बिपुल जित तित धावहीं ॥

दो० दावानल अतिक्रोधकर, लियो दशहुँ दिशि घेर ।
उठी अनलज्वाला प्रबल, मानहुँ अचल सुमेर ॥
सो० धूम धुंध बिकराल, भयो अँधेरो गगन सब ।
बिचबिचचमकतज्वाल,तड़ितमालजनुसघनघन॥

भये देखि ब्रजलोग दुखारे ❋ तब सब हरिकी शरण पुकारे
कहत श्याम तुम करो सहाई ❋ जरत सकल ब्रज लेहु बचाई
तृणा शकट बक अघ तुम मारे ❋ कंस त्रास ते तुमहिं उबारे
जहँ जहँ परी गाढ़ हम आई ❋ तहां तहां तुम करी सहाई
अब हरि यत्न कछू सो कीजै ❋ हमहिं बचाय अग्निसों लीजै
व्याकुल गोप नन्द मन माहीं ❋ करत बिचार बनत कछु नाहीं
यशुमति सबहिन कहत पुकारे ❋ दई परयो है ख्याल हमारे
नाना रूप असुर बहु आये ❋ कोउ खग कोउ पशु रूप बनाये
कोऊ पवन रूप ह्वै आयो ❋ भयो तहां कोउ पुण्य सहायो
आज उरग सों बच्यो कन्हाई ❋ मरु करमन नृप त्रास नशाई

अब यह बाढ़ी अग्नि अपारा ॥ होत सकल ब्रज को संहारा
किमि बचि हैं यह बालक दोऊ ॥ मोहिं लखि परत उपाय न कोऊ

दो० सुनि जननीके वचन प्रभु, लखि सब ब्रजके हाल।
कह्यो सबन धीरज धरौ, मति डरपौ लखि ज्वाल॥

सो० कौतुक निधि गोपाल, को जानै तिनके गुणन।
दुखसुख जिनके ख्याल, जनकेहितकारक सदा॥

तब हरि कह्यो डरौ मति कोई ॥ विनवहु देव बहुरि सब कोई
जिन सहाय कीनी अबताईं ॥ सोई करैं सहाय सदाईं
हरि हँसि सब सों आंख मुंदाई ॥ करि गये अग्नि पान सुखदाई
ह्वै गइ चहुं दिसि शीतलताई ॥ रह्यो न अग्नि लेश कहुं राई
खोलि देहु दृग सब हरि बोले ॥ सुनतहि तुरत सबन दृग खोले
देखि चकित सब ब्रज नर नारी ॥ कहत धन्य धनि तुम बनवारी
धरणि अकाश बराबर ज्वाला ॥ लपट झपट अतिही विकराला
नहिं बरस्यो नहिं सींच्यो काहू ॥ गयो विलाय कहां धों दाहू
कैसे यह सब अग्नि बुझानी ॥ हम यह कछू न काहू जानी
तब हँसि बोले कुँवर कन्हाई ॥ वह करनी यह कोह न सुहाई
तृणकी आग प्रथम बहु जागै ॥ फिरतिहि बुझत विलंब न लागै
सुनत श्याम की कोमल बानी ॥ भये सुखी सब त्रास नशानी

दो० जीव जन्तु खग मृगजिते, भये सुखी ततकाल।
द्रुमबेली तृणहरित सब, प्रफुलितवन सुखसाल॥

सो० श्याम सहायक जाहि, ताहि कहौ डर कौनको।
यह न बड़ाई वाहि, पांच तत्त्व उनके किये॥

कहत परस्पर ब्रज की नारी ॥ हैं सखि बड़े वीर बनवारी
देखत कोमल श्याम सलोनो ॥ यह सखि जानत है कछु टोनो

नाथ्यो नाग पतालहि जाई ❀ लायो तापर कमल लदाई
मांगे कमल कंस नृपराई ❀ कोटि कमल तिहि दिये पठाई
दावानल नभ धरणि बराबर ❀ घेर लिये ब्रजके नारी नर
नयन मुँदाय कहा धा कीन्हों ❀ रह्यो नहीं कछु ताको चीन्हों
ये उतपात मिटैं उनहीं पै ❀ और न होय सकै किनहीं पै
यह सखि कोउ बड़ो अवतारा ❀ है यहही करता संसारा
लखि हरि चरित यशोदा मैया ❀ चकित निरखि मुख लेति वलैया
लखि सुत चरित मुदित नँदराई ❀ करत गोपगण सकल बड़ाई
कहत देव मुनि अति अनुरागा ❀ हैं ब्रजवासिन के बड़ भागा
जिनके संग श्याम सुखशीला ❀ करत रहत नित नव रसलीला

दो० एकदिवस निशि यमुनतट, बस सब गोपी ग्वाल।
होत प्रात निजनिजसदन, आये सहित गोपाल॥

सो० हरिजनकेसुखकार, बिलसतविविधविलासब्रज।
संतन प्राणअधार, ब्रजबासी जन जाहिं बलि॥

हरि ब्रजजन के दुख बिसरावन ❀ करत चरित सुरमुनि मनभावन
तुरत सकल ब्रजलोक भुलाये ❀ कौन कंस कब कमल मँगाये
कब हरि यमुना जलहिं समाये ❀ कालीनाग नाथि कब लाये
कब दावानल जारन आयो ❀ एक दिवस निशि कहां बितायो
नहिं जानत कछु नंद यशोदा ❀ करत श्याम सोइ बाल विनोदा
माखन मांगत कुँवर कन्हाई ❀ बार बार जननी सों जाई
आतुर दधिहि मथत नँदरानी ❀ सदमाखन हरिको रुचि जानी
कहत तनक तुम रहत ललारे ❀ तुम्हैं देउँ नवनीत पियारे
मैं बलि भूख लगी तुम भारी ❀ बात बनावत सुतहिं दुलारी
बूझत बात काहु की कान्हहिं ❀ कहत श्याम सों सुनत न कानहिं

झूठहि देत हुँकारी जननी ❀ भूल गई सब हरिकी करनी
तबलौं मथि दधि माखन कीनो ❀ तुरतहि लै सुतके करदीनो

दो० लै लै अधरन परसि करि, माखन रोटी खात।
करत प्रशंसा मधुर कहि, सुनत प्रफुल्लित मात॥

सो० जो प्रभु अलख अपार, दुर्लभ शिवसनकादि कहँ।
धन्य नंद की नारि, ताको सुत कर मानई॥

अथ प्रलम्बासुर बध लीला॥

नित नव लीला करत कन्हाई ❀ तात मात ब्रजजन सुखदाई
मुदित सकल ब्रजके नर नारी ❀ निशि दिन हरि मुखचंद निहारी
इक दिन श्याम राम दोउ भाई ❀ खेलत सखन संग बनजाई
नाना विधि सब करत कलोलें ❀ भांति भांति की वाणी बोलें
कबहूँ मोर हंस की नाई ❀ बोलत हँसत श्याम सुखदाई
कबहूं मधुरे सुर सब गावें ❀ मध्य श्याम घन वेणु बजावें
कबहूं चढ़त तरुन पर जाई ❀ कूदि परत गहि डार नवाई
नाना विधि के खेलन खेलें ❀ बाल विनोद मोद रस केलें
तहां प्रलम्ब असुर यक आयो ❀ कंस ताहि दै पान पठायो
सो छल रूप गोप वपु धारी ❀ मिल्यो आय सबसखन मँझारी
ताको ग्वाल न काहू जान्यो ❀ यह तो असुर श्याम पहिचान्यो
बलदाऊ को दियो जनाई ❀ ताहि हतन को रच्यो उपाई

दो० सखा बुलाये निकट सब, तिनहिंकह्यो नँदलाल।
फल बुझाय अब खेलिये, भये मुदित सुनि ग्वाल॥

सो० द्वै बालक करि राय, सखा लिये तब बांटिसब।
आधे इकदिशि आय, आधे एक दिशा भये॥

निजनिजजोट सखन जुरि लीनो ❋ हलधर जोट दनुज सँग कीनो
आपस में यह होड़ लगाई ❋ जो हारे सो पीठि चढ़ाई
भांडीर वन लौं लै जाही ❋ फेर इहां पहुँचावै ताही
फल को नाम बुझावन लागे ❋ बूझदियो वल सबते आगे
चले सखा चढ़ि चढ़ि निज जोरी ❋ चढ़े दनुज वल पींच मरोरी
भांडिर वन जब पहुंचे जाई ❋ फिरे सखा सब ठावँ छुवाई
असुर चल्यो लै वल को आगे ❋ प्रगट्यो दनुज शरीर अभागे
तब बलदेव कोप करि भारी ❋ मुष्टि एक ताके शिर मारी
बिकस गयो शिर गिर्यो अधीरा ❋ उतरि परे तब श्री वलवीरा
भयो पलक में सो विन प्राना ❋ देखत सुर मुनि चढ़े विमाना
भई गगन ते जय जय वानी ❋ फूलन की वर्षा वरषानी
बहुविधि अस्तुति बलहि सुनाई ❋ मुदित सकल सुर मुनि समुदाई

दो० ग्वाल बाल चक्रित सबै, दौरिगये बल पास।
मृतक असुरतन देखिकै, तबमन कियो हुलास॥

सो० धन्य धन्य बलराम, धन्य तुम्हारे मात पित।
बड़ो कियो यह काम, कपट रूप मार्‍यो असुर॥

यह शठ गोप भेष बन आयो ❋ हम काहू इहि जान न पायो
जो यह शठ नहिं जात निपातो ❋ तो काहू लरिकहि लै जातो
हौ तुम बड़े बीर दोउ भाई ❋ जहँ तहँ हम को होत सहाई
बनके दुष्ट सकल तुम मारे ❋ हौ तुम हम सबके रखवारे
ताहि कहो काको डर भैया ❋ जासु मीत वलराम कन्हैया
देत ग्वाल सब बलहिं बड़ाई ❋ धन्य धन्य ब्रजजन सुखदाई
दुष्ट मारि बल मोहन लाला ❋ आये सदन सहित सब ग्वाला
ग्वालन कही आय सब बाता ❋ सुनत चकित ब्रजजन पितु माता

करत सकल बलराम बड़ाई ❀ जननी मुदित लिये उरलाई
बल मोहन दोउ वीर निहारी ❀ दोऊ जननि जात बलिहारी
भूखे जान वनहिंते आयो ❀ दोउ भइयन भोजन करवायो
जो सुख लहत नंद की रानी ❀ सो शारद नहिं सकैं बखानी

दो० सुत सनेह यशुमति मगन, निशि दिन जात न जान।
करत चरित सन्तन सुखद, भक्तवत्स भगवान॥

सो० नितनव परम हुलास, ब्रजवासी हरिसँग लहत।
बिलसत विविध विलास, बाट घाट गृह वनसघन॥

अथ पनिघट लीला॥

पनिघट यमुना के तट माहीं ❀ ठाढ़े श्याम कदम की छाहीं
सखा बृन्द चहुँ ओर विराजैं ❀ कोटिकामछवि निरखत लाजैं
शीश मुकुट की लटक सुहाई ❀ सुरँग खौर केसर छवि छाई
कुंडल झलक अलक घुंघरारी ❀ कंठ कनक कंठी द्युतिकारी
चटकीली लटकी वनमाला ❀ परसति चरणसरोज विशाला
मुक्तमाल मणिमाल सुहाई ❀ उर विशाल पै अति छवि छाई
अरुण अधर दशनन द्युति नीकी ❀ मृदु मुसकान मोहनी जीकी
चटकीलो पटपीत विराजै ❀ कटि तट क्षुद्र घंटिका राजै
भुज विशाल भूषणयुत सोहै ❀ कर मुद्रिका मुदित मन मोहै
तन घनश्याम रसीले नैना ❀ हँसि हँसि कहत सखन सों वैना
कनक लकुटि सों पग लपटान्यो ❀ भूषण सहित न जात बखान्यो
गहि द्रुमडार तिरीछे ठाढ़े ❀ अंग अंग अनुपम छवि बाढ़े

दो० कबहुँ बजावत अधर धरि, करि मुरलीधुनिघोर।
निकटबुलावत वनमृगन, कबहुँ नचावत मोर॥

सो० रहे गगन घन छाय, सुखद छाँह शीतल किये।
बर्षा ऋतुको पाय, निरखत सुत नँदराय को ॥
हरित भूमि चहुँ ओर सुहाई ❀ मनहु काम मसनंद बिछाई
बहत समीर धीर सुखदाई ❀ शीतल अधिक सुगंध सुहाई
बहत यमुन बाहुल ते पूरी ❀ परत भवँर जहँ तहँ छबिरूरी
उठत श्याम जल सुभग तरंगा ❀ छवि तरंग जिमि हरिके अंगा
या छबि सों पनिघट हरि ठाढ़े ❀ संग गोप बालक हित बाढ़े
यमुना जल तिय भरन न जाहीं ❀ ग्वालभीर देखत सकुचाहीं
हरिगुण मन में वे सब जानैं ❀ रोकत टोकत शंक न मानैं
तातें जाय सकत कोउ नाहीं ❀ दरश लालसा अति मन माहीं
सबके अन्तर्य्यामि कन्हाई ❀ युवतिन के मन की गति पाई
तब इक बुद्धि रची नँदलाला ❀ रसिकशिरोमणि मदन गोपाला
सघन एक तरु तर बैठाई ❀ पनिघट ते सब भीर मिटाई
आप रहे द्रुमओट छिपाई ❀ हेरत युवतिन मग चितलाई

दो० इहिअंतर आवत लखी, युवती इक घनश्याम।
आप रहे द्रुमओट दुरि, यमुनातट गई बाम ॥
सो० नागरि जलहिं हिलोर, भरि गागरिशिरधरिचली।
पाछेते चित चोर, घटले दियो लुढ़ाय महि ॥

गही चतुर ग्वालिनिभुज हरिकी ❀ पाई कनक लकुटिया करकी
सबसों तुम करि रहे ढिठाई ❀ तैसेहि मोसों लगत कन्हाई
देन लगे तब हरि हँसि गागरि ❀ लेत नहीं ग्वालिनि अति नागरि
कहत कि रीतो घट नहिं लेहौं ❀ जलभरि देहु लकुटि तब देहौं
कहा जो तुम नँदसुवन कन्हाई ❀ हमहू बड़े बापकी जाई
एक गावँ बस बास हमारो ❀ मैं नहिं सहिहों कह्यो तुम्हारो

एक कहौ तो दश मैं कहिहौं ❀ मैं कछु तुमसों डरपि न जैहौं
यह सुनि हँसि दीन्हे नँदलाला ❀ लियो चोरि चित मदन गोपाला
कहत लकुटिया दे री मेरी ❀ मैं भरि देहौं गागरि तेरी
देखत रूप सुनत मृदुबानी ❀ ग्वालिनि तनकी दशा भुलानी
लागी हृदय मदन की सांटी ❀ मन पर गयो प्रेम की बांटी
करते लकुटि गिरत नहिं जान्यो ❀ विवश भई चितचेत हिरान्यो

दो० तब घट भरि हरि भावते, दीनो शीश उठाय।
नेकहु सुधि ता तन नहीं, चली ब्रजहिं समुहाय॥

सो० कियो दृगन में धाम, सुन्दर नट नागर सुखद।
जित देखे तित श्याम, पंथ ताहि दीखै नहीं॥

उतै अपर ग्वालिनि इक आई ❀ कहत कहा तू रही भुलाई
सूधे पंथ चलत है नाहीं ❀ कहा शोच तेरे मन माहीं
अबहीं हँसति भरन जल आई ❀ कहा चली इत आप गँवाई
ताको देखि कहत सुनु आली ❀ मोपै श्याम मोहनी घाली
मैं जल भरन अकेली आई ❀ मेरी गागरि कृष्ण लुढ़ाई
तब मैं कनकलकुटि गहिलीनों ❀ उन मोंतन लखिके हँसिदीनों
वहै हँसनि मोहिं परी ठगौरी ❀ तबहीं ते मैं ह्वैगइ बौरी
कहा कहौं तोसों अब आली ❀ मेरे चित वह चितवन साली
बस्यो श्याम मेरे दृग माहीं ❀ और कछू मोहिं दीसत नाहीं
सुनत बात वह ग्वालि सयानी ❀ आप विलोकन को अतुरानी
ताहि बांह गहि घर पहुँचाई ❀ आप गई जलको अतुराई
देख्यो जाय श्याम तहँ नाहीं ❀ इत उत लखि शोचत मनमाहीं

दो० हरिदेखत तरुओट ह्वै, ग्वालिनि मन दुखपाय।
चली नीर भरि गागरी, बार बार पछिताय॥

सो० मनके जाननहार, देखी ग्वालिनि विकलअति।
प्रगटे नन्दकुमार, आय अचानक निकटही॥

गहिलीनी अंकम भरि ग्वारी ❁ ताके तनकी तपनि निवारी
ता तन चितै कह्यो तू को री ❁ तोहिं कबहुँ देखो नहिं गोरी
मन हरि लीन्हों रूप दिखाई ❁ बहुरि भये तरु ओट कन्हाई
मिलि हरिसों सुख पायो ग्वाली ❁ छकी प्रेमरस लखि वनमाली
नहिं जानत मैं को कित आई ❁ भई मगन मन तन बिसराई
घरको पंथ भूल गइ नागरि ❁ इत उत फिरत शीश लिये गागरि
और सखी इक उततें आई ❁ देखि दशा तिन निकट बुलाई
कहा फिरै भूली मग माहीं ❁ बूझत सखी सुनत कछु नाहीं
चौंक पड़ी सपने ज्यों जागी ❁ तासों वचन कहन तब लागी
श्याम बदन इक मिल्यो ढुटौना ❁ तिन मोकों कछु कीनो टोना
मैं भरि गागरि शीश चढ़ाई ❁ औचक मोहिं अंकभरि लाई
मोसों कह्यो कौन तू गोरी ❁ देखी नाहिं कबहुँ ब्रजखोरी

दो० ऐसे कहि चितयो बिहँसि, मैं लखि रही भुलाय।
तबहिं भयो अंतर कबहुं, मेरो चित्त चोराय॥

सो० कही सखीसों बात, ग्वालिनि लाज बिसारिकै।
निरखि नन्दको तात, भई जलधिकी बूँदजिमि॥

सो सखि सावधान करि ताकों ❁ चली आप आतुर यमुनाकों
देखी श्याम युवति ढिग आई ❁ ठाढ़े तरुकी ओट कन्हाई
तासु अंग छबि रहे निहारी ❁ गोरे बदन चूनरी कारी
छूटीं अलक बदन छबि छाई ❁ मनहुं जलज अलिअवलि सुहाई
हाथन चूरी चारु बिराजैं ❁ कनकमुंदरियन अति छबि छाजैं
सहज शिंगार उरोज उठोहैं ❁ अंग अंग सुठि सुन्दर सोहैं

ग्वालिनि हरिको देख्यो नाहीं ❀ जाने कहूं गये वन माहीं
जलभरि चली मनहिं पछिताई ❀ गागरि नागरि शीश उठाई
औचक श्याम गही लट आई ❀ यह कहि कहां चली अतुराई
चिवुक परस उरसों करलायो ❀ ग्वालिनि मनहिं हर्ष अति पायो
ऊपर कहत बिंब कर मोहन ❀ छांड़िदेहु मेरी लट गोहन
उर परसत कछु सकुच न मानत ❀ और ग्वालिसी मोकों जानत

दो० छांड़ि देहु लट देखिहै, ब्रजयुवती कोउ आइ।
हाहा मैं पांयन परति, तुमको नंद दुहाइ॥

सो० इतनेही को मोहिं, सौंह दिवावत बावरी।
पहिचान्यों नहिं तोहिं, ताते मुख देखत तनक॥

यों कहि श्याम छांड़ि लटदीनो ❀ मुरि मुसकनि नागरि वशकीनी
चली भवन मन हरि हरलीनों ❀ जिय यह कहति कहा हरि कीनों
पग द्वै चलत ठिठकि रहिजाई ❀ भूल गई मारग जिहि आई
प्रेम मगन तन सुधि बिसराई ❀ रहे दृगन में श्याम समाई
गृह गुरुजनकी सुधि जब आई ❀ तब कछु जिय में गई लजाई
ज्यों त्यों करि पहुँची गृहमाहीं ❀ उरतें श्याम टरत क्षण नाहीं
सखी संगकी बूझत आई ❀ कहां यमुन तट बेर लगाई
और दशा भइ है कछु तेरी ❀ कहति नहीं हमसों सखि हेरी
कहा कहों तुमसों री आली ❀ मोह्यो मोहिं श्याम बनमाली
सुनहु सखी री वा यमुना तट ❀ मैं जल भरयों अकेले पनिघट
लै गगरी शिर सारँग डगरी ❀ कितहूं तें आयो मो ढिग री
औचक आनि गही लट मेरी ❀ कह्यो नेक मुख देखन दे री

दो० मैं मृदुवचन अमोल सुनि, देखि वदन जलजात।
जकी चकीसी ह्वै रही, उन परस्यो मो गात॥

सो० प्रफुलित हिये गुवारि, मनमोहन के रस विवश ।
कुलकी लाज बिसारि, कही सखिनसों बात सब ॥
सुनत बात सब सखी सयानी ❋ श्याम बिलोकन को अतुरानी
इक क्षण श्याम न बिसरत काहू ❋ सुनत भयो यह अधिक उछाहू
घर घर तें धाईं सब नागरि ❋ लै लै आईं जलकी गागरि
चलीं यमुनतट अति अतुराई ❋ देख्यो कुँवर नन्दको जाई
मोर मुकुट कटि कछनी सोहै ❋ कुण्डल चटक लटक मन मोहै
पीत बसन लखि तड़ित लजाई ❋ नयन बिशाल अधर अरुणाई
देखत कहौ सरित ढिग जाई ❋ ठगत फिरत हो नारि पराई
काहि ठग्यो कैसे ठग चीन्ह्यो ❋ तुमरो कहो कहा ठग लीन्ह्यो
कौन ठग्यो कहि कहा बखानै ❋ औरहिं के ठग तुमहिं को जानै
कहा ठग्यो सो हम नहिं मानैं ❋ कहौ नाम धरि तब हम जानैं
सर्बस ठगत पलक के माहीं ❋ कहा ठग्यो सो जानत नाहीं
ठगके लक्षण मोहिं बतावहु ❋ कैसे मोकों ठग ठहरावहु
दो० ठग लक्षण हमपै सुनहु, फांसी मृदु मुसकान ।
रूप ठगौरी तें ठगत, ब्रजतिय मन धन प्रान ॥
सो० फिरत बिकल बेहाल, लोकलाज कुलकानि तजि ।
ठगी नन्दके लाल, भई बिदित तिहुँलोक तिय ॥
अपने लक्षण मोहिं लगावहु ❋ जैसे तुम सब चितहि चुरावहु
कहत कि भगटी तिहुं पुरचाता ❋ ब्रजतिय ठगत नन्द को ताता
यह अति कहति कहत सब कोई ❋ सुर नर मुनि बेदहु नहिं गोई
तीन लोक को ठाकुर जोई ❋ ब्रजबनितन बश कीनों सोई
यों सुनि सब ग्वालिनि मुसकानी ❋ कहौ सखी सुनि हरिकी बानी
हरि तुम बात उलटि यह ठानत ❋ तुम्हारी नागरता हम जानत

अतिहि कान्ह तुम करत दिठाई ❋ छांड़ि देहु अब यह लँगराई
काहूकी ढारत हौ गगरी ❋ काहू लटगहि करत अचगरी
काहू को अङ्कम भरि लावत ❋ ब्रज लोगन पै सबन हँसावत
तुमते मग कोउ चलन न पावत ❋ बाट घाट डरपत सब आवत
यमुना भरन देत नहिं पानी ❋ चहत अचकरी अब तुम ठानी
कहौ तौ यशुदहि जाय सुनावैं ❋ फेरि तुम्हैं ऊखल बँधवावैं

दो॰ यह सुनि हरि रिसकरि उठे, इंडुरी लई छुड़ाय।
कहो जाय सब मातसों, लीजो मोहिं बँधाय॥

सो॰ मोहिं कहत ठग चोर, आप भई साहुनि सबै।
डारी गागरि फोर, कहत जाहु चुगली करन॥

तब युवती सब हरि ढिग आई ❋ कहत इंडुरी देहु कन्हाई
नहिं तो तुमको गहि लै जैहैं ❋ यशुमति पास न नेकु डेरैहैं
बाट घाट तुम करत दिठाई ❋ काहु न नेक डरात कन्हाई
इँडुरी लै फोरी सब गागरि ❋ आज मिटावैं तुम्हरी लांगरि
तब हरि चढ़े कदम पर जाई ❋ इँडुरी दीन्हीं जलहिं बहाई
बदन सकोरत भौंह मरोरत ❋ मुरि मुसकनि सबके चित चोरत
कहत कहौ मैया सों जाई ❋ सब मिलि लीजो मोहिं बुलाई
तुम सब जुरि मोहिं मारन धाई ❋ तब मैं इँडुरी जलहिं बहाई
ऐसो करि तुम मोकों पायो ❋ मानहु मोकों मोल मँगायो
यह सुनि युवति कहत मुसकाई ❋ कहति यशोमति सों हम जाई
वे दिन विसर गये मनमोहन ❋ बांधे मात ऊखली गोहन
ह्यांई रहौ तौ बदहिं कन्हाई ❋ जाउ कहूं तो नंद दुहाई

दो॰ कान्हहिं सौंह दिवाय कै, लै उरहन सब बाम।
ऊपर रिस अन्तर सुखी, चलीं नंद के धाम॥

सो० मथत महरि निजधाम, दधि माखन हरिकेलिये।
तिहि अन्तर ब्रजबाम, आवत देखी भीर अति॥
मैं जानति हरि इनहिं खिझाई ❋ ताते सब उरहन लै आई
कहत युवति सब रिस भरि आई ❋ ऐसो ढीठ कियो सुत माई
भरन देत नहिं यमुना पानी ❋ रोकत आय करत कुलकानी
काहू की गागरि ढरकावै ❋ इँडुरी लै जल माहिं बहावै
काहू को घट डारत फोरी ❋ गारी देत सहैं नित को री
महरि कहत तुमसों सकुचाहीं ❋ हरिके गुण तुम जानत नाहीं
अब नाहीं ब्रज वास हमारो ❋ करत अचकरी सुवन तुम्हारो
नेक नहीं सकुचत मन माहीं ❋ महरि सुतहिं तुम वरजत नाहीं
यशुमति सबहिन कहत निहोरी ❋ कहा करौं सो तुमहिं कहो री
जो हरिको मैं ह्यां गहि पाऊं ❋ तो तुम सबकों अबहिं दिखाऊं
तुमहूं जानतहौ गुण हरिके ❋ ऊखल सों बांधे मैं धरिके
मारन लगी सांटि लै जबहीं ❋ बर्ज्यो मोहिं तुमहिं सब तबहीं
दो० अब घर आवहिं जबहिं हरि, तबहिं करौं सोइ हाल।
लरकाई ते अचकरी, मैं जानत गोपाल॥
सो० अब जो पकरन जाऊँ, ताहि गहन पाऊँ कहां।
सुनतहि मेरो नाऊँ, को जानै भजिजाय कित॥
यह अपराध क्षमो सब हम कों ❋ यहै कहति हौं मैं अब तुमकों
यहि बिधि युवतिन बोध कराई ❋ महरि सबन को घरन पठाई
इततें घरन चलीं सब ग्वाली ❋ उततें घर आवत बनमाली
ह्वै गइ भेंट बीच मग आई ❋ तुरत नयन हरि गये लजाई
मात बुलावत जाहु कन्हाई ❋ बहुत बड़ाई करि हम आई
निरखि बदन हँसि कह्यो कन्हाई ❋ मैं समझाय लेउँगो माई

सकुचतही आये घर मोहन ❋ द्वारहिते लागे हरि जोहन
देखि जननि घर कारज लागी ❋ गोपिन उरहन के रिस पागी
भीतर रोहिणि पाक बनावे ❋ कहि कहि तिन सों बात सुनावे
हरुवै हरुवै तब हरि जाई ❋ सुनत आप पाछे चितलाई
यहै कहति यशुमति रिसियाई ❋ गयो कहांधों भाजि कन्हाई
पनिघट रोंकत धूम मचावत ❋ यमुना जल कोउ भरन न पावत

दो० गारि देत बेटिन बहुन, वै आवत ह्यां धाय।
हाहा मैं सब को करत, क्यों हू छूट छुटाय॥
सो० इँडुरी देत बहाय, सबकी गागरि फोरिकै।
कित धौं गयो पराय, यह कहि धिरवत है सुतहिं॥

जाति पांति सों कह लँगराई ❋ मारेहु मानत नाहिं कन्हाई
तब पाछे ते हरि उठि बोले ❋ मधुर वचन कोमल अति भोले
तू मोहीं को मारन जाने ❋ उनके गुणन नाहिं पहिंचाने
कहत जु वे मानत तू सोई ❋ तिनके चरित न जानत कोई
कदम तीर तें मोहिं बुलावैं ❋ बातैं गढ़ि गढ़ि आप बनावैं
मटकत गिरै शीश तें गगरी ❋ नाम लगावत मेरो सगरी
फिर चितई देखे हरि पाछें ❋ सुन्दर श्याम पीतपट काछें
कह तू कहां रह्यो मो पाहीं ❋ मैं कह तोको जानत नाहीं
हरि मुख देखतही नँदनारी ❋ तुरतहि भूल गई रिस भारी
कहत कि उरहन सब लै आवैं ❋ झूठहि खोर कान्ह को लावैं
मैं जानत गुण उन सबही के ❋ बातन जोरि बनावत नीके
वै सब यौवन की मदमाती ❋ फिरत सदा हरि सों अठिलाती

दो० कहां श्याम मेरो तनक, वे सब यौवन जोर।
अब उरहन जे आवहीं, तौ पठऊँ मुख मोर॥

सो० तू कित उन ढिग जात, मैं बरजत मानत नहीं।
लावत झूँठी बात, वे सब ढीठ गुवालिनी॥

यह कहि चूम सुतहिं उर लायो ❋ मनमोहन मन हर्ष बढ़ायो
ब्रज घर घर यह बात जनाई ❋ पनिघट रोंकत कुँवरकन्हाई
श्यामबरण नटवर बपु काछे ❋ मुरली मधुर बजावत आछे
करत अचकरी जो मन भावै ❋ यमुना जल कोउ भरन न पावै
बैठत आप कदम की डारी ❋ सबन बुलावत दै दै गारी
काहू की गागरि गहि फोरै ❋ काहू की इँडुरी गहि बोरै
काहू को अंकम गहि लावै ❋ काहू को घट भूमि लुढ़ावै
नयन सैन दै चितहि चुरावत ❋ काहू सों मन अपनो लावत
ब्रजयुवती सुनि सुनि उठि धावैं ❋ बिन हरिदरश न क्षण कल पावैं
कोउ बरजे कोउ कहै कोटि बिधि ❋ सबके ध्यान श्यामसुन्दर निधि
मन क्रम वचन तिन्हैं रति हरि सों ❋ नातो नेह न मानत घरसों
निशि दिन जागत सोवत माहीं ❋ नंदनँदन क्षण विसरत नाहीं

दो० यह लीला सब करत हरि, ब्रज युवतिन के हेत।
कृष्ण भजै जो भावजिहि, ताहितें सब फल देत॥

सो० चिन्तामणि जेहिनाम, चिंततफल दायकजनन।
सबही कों सब काम, जैसो को वैसो सदा॥

सुनि यह श्रीबृषभानु दुलारी ❋ पनिघट ठाढ़े कुञ्जबिहारी
देखन को चित अति अतुराई ❋ कह्यो सखिन सों कुँवरि बुलाई
चलहु यमुनतट ल्यावहिं पानी ❋ सुनत बात यह सब हर्षानी
इक इक कलश सबन गहि लीनों ❋ तुरत गमन यमुनातट कीनों
देखे तहां कुँवर नँदलाला ❋ सुन्दर श्यामल नैन बिशाला
प्यारी मन अति हर्ष बढ़ायो ❋ प्यारिहि देखि श्याम सुख पायो

रहे रीझि हरि दीठि लगाई ॐ भलो नीर प्यारी मुसकाई
चली घरहिं यमुना जल भरिकै ॐ सखिन मध्य गागरि शिर धरिकै
मंद मंद गति चलति सुहाई ॐ मोहन मनहिं मोहनी लाई
चले श्याम संगहि उठि भागे ॐ विवश भये प्यारी रस पागे
सखियन बीच नागरी सोहै ॐ गागरि शिरपै हरि मन मोहै
डुलत ग्रीव लटकत नकवेसर ॐ वंदन विन्दु आड़ दिये केसर

दो० लोचन लोलविशालअति, मुरिमुरिचितवतजाय।
भृकुटी धनुषकटाक्ष शर, हरिदृग मृगनलजाय॥

सो० अँग अँग छवि समुदाय, मानहुँ सेना कामकी।
अंचल ध्वज फहराय, ठटुक चलत हरिमन हरत॥

रीझे श्याम निरखि छवि प्यारी ॐ संगहि चले लागि वनवारी
कबहुँक आगे जात कन्हाई ॐ कबहुँ रहत पाछे चितलाई
नाना भांतिन भाव बतावैं ॐ प्यारिहि निजअभिलाप जनावैं
कनक लकुट लै करके माहीं ॐ आगे पंथ सँवारत जाहीं
देखत जहां प्रिया परछाहीं ॐ तहां मिलावत निज तन छाहीं
छवि निरखत तनवारि जनावैं ॐ पीताम्बर लै शीश फिरावैं
कबहुं श्याम पाछे रहि जाहीं ॐ निरखत कबरी छवि ललचाहीं
गागरि ताकि कांकरी मारैं ॐ उचटि उचटि तिय अंगन पारैं
ओट पीतपट शीश नवाई ॐ इहि मिस निकसत ढिग ह्वै आई
प्यारी अपने जिय अनुमानै ॐ मेरे हित हरि भावन ठानै
सखियन मध्य गागरी नाई ॐ नहिं पावत लग लगन कन्हाई
कियो चरित तब रसिकविहारी ॐ सखिन सहित मोही सुकुमारी

दो० मिसकरिनिकसे निकटह्वै, निरखिवदनमुसकाय।
मन हरिलीनो सबनको, दियो काम उपजाय॥

सो० भई बिबश सुकुमारि, अंग उमँग आंगीदरकि।
मोही नंदकुमार, सुधि बुधि बिसरी देहकी॥
सखिन संग पहुँची घर जाई ❋ अटकि रह्यो मन हरि सँग जाई
पुनि पुनि उर यह करत बिचारा ❋ कैसे मिलहिं श्याम सुकुमारा
गागरि निज निज गृह पहुँचाई ❋ बहुरि सखी प्यारी ढिग आई
बार बार सब कहत निहोरी ❋ चलिये यमुना जलहि बहोरी
तिनको उत्तर देत न प्यारी ❋ चित उरझो चितवन पर वारी
ठगिसी रही मनहिं मन शोचै ❋ प्रेम बिबश दृगवारि बिमोचै
देखि दशा बूझत सब ग्वारी ❋ कहा भयो तोको री प्यारी
शोचति कहा कहै किन सोरी ❋ काहू लियो चोर कछु चोरी
उत्तर हमें देत क्यों नाहीं ❋ कहा ठगी सी है मन माहीं
गहि गहि भुजा कहति सब गोरी ❋ चलहि न यमुन नहावहिं खोरी
तब सखियन बृषभानुदुलारी ❋ लीन्ही सबन निकट बैठारी
जलज नयन जल भरि अनुरागी ❋ हरिके चरित कहन सब लागी

दो० कहौ सखी कैसे चलैं, वा यमुना की ओर।
गैल न छांड़त सांवरो, रसिया नन्दकिशोर॥
सो० धरै न कोऊ नांव, इह शंकनि डरपत हियो।
एक भांति को गांव, वह चंचल मानै नहीं॥

मोकों देखत जहां कन्हाई ❋ मेरे संग लगत उठि धाई
इत उत नयन चुराय निहारै ❋ मोकों मग में आनि जुहारै
आगे चलत लकुट कर लाई ❋ मेरो पंथ सँवारत जाई
सो बहु मोहिं निहोरो लाई ❋ फिर चितवै मोतन मुसकाई
जब मैं यमुना को जल भरिकै ❋ चलाति गागरी शिरपर धरिकै
तब घट में वह कांकरि मारै ❋ उचटि लगत तब अंग निहारै

मेरे उर अंचर फहराई ❀ सो वह देखि देखि ललचाई
कबहूं पीताम्बर शिर फेरै ❀ बार बार करि मोतन हेरै
कबहूं आपनि छवि दरशावै ❀ मेरे चितको आनि चुरावै
जब देखौं तब मोतन हेरै ❀ नेक नहीं दृग इत उत फेरै
जहां जाति मेरी परछाई ❀ तहां मिलाय रहत निज छांई
जब लगि लालन पावत नाहीं ❀ तब वाको जिय अति अकुलाहीं

दो० मोतन छ्वै हरि चले, ताहि भरत है अंक।
हौं सकुचत बोलौं नहीं, लोक लाज को शंक॥

सो० ब्रज घर घर यह शोर, को जानै कहियत कहा।
चितवतयह चितचोर, विवशाहोतसखिप्राणतब॥

कहिये कहा सखी जिय जैसी ❀ भइ गति सांप छछूंदरि कैसी
घर ते निकसत बन नहिं आवै ❀ लोक लाज कुलकान मिटावै
जो घर रहौं रह्यो नाहिं जाई ❀ तन घर में मन जहां कन्हाई
कितो करों आवत इत नाहीं ❀ बँध्यो पीतपट आंचर माहीं
अब तो मेरे मन यह रांची ❀ करिहौं प्रीति श्याम सँग सांची
ब्रजके लोग हँसौ किन कोई ❀ कुल मर्य्याद जाउ किन सोई
कहा लाभ सो कहहु सयानी ❀ जामें होय जीव की हानी
सोना कहा कान जिहि टूटै ❀ अंजन कहा आंखि जिहि फूटै
कहा कांच संग्रह ते होई ❀ जो अमोल मणि करते खोई
विष सुमेरु कहु कौने काजा ❀ सुखद बूंद इक औषधि राजा
कुलकी कान कांच किरचाई ❀ चिन्तामणि की खानि कन्हाई
कहा लेहुँ कह तजौं सयानी ❀ सिखवहु मोहिं सखी जियजानी

दो० मोकों अब सूझै नहीं, बिन वह मृदु मुसकान।
कापै न्यारो होत री, चूना हरदी सान॥

सो० भेट लोककी कानि, पतिब्रत राखौं श्याम सों।
यहै बनी अब आनि, भलो बुरो कोऊ कहौ॥
सुनत गोपिका राधारानी ❋ हरिअनुराग सिंधु मनमानी
गदगद कण्ठ पुलक तन आये ❋ लोचन जलज प्रेम तन छाये
भई प्रेम बश गोपकुमारी ❋ लोक सकुच कुलकान बिसारी
बारहि बार कहत ब्रजनारी ❋ धन्य धन्य वृषभानुदुलारी
हम सब तोसों सत्य बखानै ❋ तैं हरि भलीभांति पहिचानै
यह मोहन सब को मन मोहै ❋ तिय लखि बिवश न होय सु कोहै
अंग अंग प्रति अति छबि छाजे ❋ समता काम कोटि द्युति लाजे
सुवन श्याम दोउ पाणि पकरिकै ❋ करत वेणु धुनि अधरन धरि कै
तब यह दशा सबन की होई ❋ जड़ चेतन मोहत सब कोई
बनमृग निकट धाय सब आवैं ❋ खग है मौन न अंग डुलावैं
तृण गहि दंत धेनु रहि जाहीं ❋ थनते क्षीर पियत बछ नाहीं
यमुना बहिबे तें रहि जाई ❋ जलचर प्रगटत बाहर आई
दो० जड़ चेतन चेतन जड़हिं, सुनत होत कल बैन।
कै बिष कै मद कै अमी, किधौं भरयो रस मैन॥
सो० गृह बन कछु न सुहाय, सुनतश्रवणवहमधुरधुनि।
गृहकारज बिसराय, चकित थकित रहियतसबै॥
बाट घाट जहँ मिलत कन्हाई ❋ मोहत सुन्दर रूप दिखाई
नई नई छबि क्षण क्षण माहीं ❋ झलकावत सब अंगनमाहीं
ऐसी को जु देखि नहिं मोहै ❋ नंदसुवन सम सुन्दर को है
वह सखि सबही के मन भावै ❋ सब कोउ वाहि देखि सुख पावै
लोक लाज कुल कौने कामहिं ❋ जो पावै सुन्दर वर श्यामहिं
पै यह मोहिं अगम अति लागै ❋ यह सुख मिलै नहीं बिन भागै

इन को गर्ग कह्यो नंद पाहीं ❁ विना सुकृत ये प्रापति नाहीं
तुमहूँ इनको तप करि पायो ❁ ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो
कहँ सखि इतनो भाग हमारो ❁ जो वर पावहिं नंददुलारो
ताते मो मनमें यह आवै ❁ कीजे जो सव के मन भावै
तप कीजै हरिके हित लागी ❁ पूजि गौरिपति सों वर मांगी
नंदसुवन सुन्दर वर पावें ❁ और सकल कामना नशावें

दो० जप तप संयम नेमतें, प्रभु प्रकटत पापान।
तातें अव तप कीजिये, और उपाय न आन॥
सो० कीजै यह दृढ नेम, प्रात जाय यमुना नदी।
पूजहिं सव करि प्रेम, तौ पावहिं पति करि हरिहिं॥

तप करि योगीजन हरि ध्यावैं ❁ मनवांछित फल तप करि पावैं
सकल कामना के शिव दाता ❁ कहत वेद विधि पण्डित ज्ञाता
हमको मन वांछित सखि एहा ❁ नंदसुवन पद कमल सनेहा
सुनत सप्रेम सखी की वानी ❁ श्री वृषभानु सुता हर्षानी
यहै मंत्र सव के मन मान्यो ❁ धन्य धन्य कहि ताहिं वखान्यो
कहत सवै कीजै सखि सोई ❁ जाविधि नंदनँदन हित होई
वृथा जन्म जग जान न दीजै ❁ यशुमति सुतसों हित करि लीजे
यहै मंत्र सवहिन दृढ़ कीनों ❁ नंदनँदन सों पतिव्रत लीनों
धन्य धन्य व्रज गोप कुमारी ❁ जिनके हित पति कृष्ण मुरारी
मन वच क्रम हरिसों मन मानी ❁ लोकलाज तिनुका समजानी
इक क्षण श्याम न उरते टरहीं ❁ नेम धर्म व्रत हरि हित करहीं
जिनको यश शारद श्रुति गावें ❁ व्रजवासी जन कहा वतावें

दो० जाग्रत स्वप्न सुषुप्तहू, व्रजयुवतिन मन माहिं।
सदा एक तुरिया रहत, और अवस्था नाहिं॥

सो० ऐसे कौन प्रवीन, चहै प्रेम ब्रज तियन को।
हरिछबिजलमनमीन, बिछुरसकतनहिं एकपल॥

अथ चीरहरण लीला ॥

भवन रवन सबहिन बिसरायो ❁ ब्रजयुवतिन हरि सों मनलायो
यहै बासना सब उर जामी ❁ होय गुपाल हमारो स्वामी
काम बासना करि उर ध्यायो ❁ हरिके हेत तपहि मन लायो
षटदश सहस गोपकी कन्या ❁ करन लगीं तप हरिहित धन्या
रहत क्रिया युत तपको साधे ❁ छांड़ दई सब भोग उपाधे
प्रात काल यमुना जल जाहीं ❁ पहर प्रयन्त रहैं जल माहीं
जपहिं उमापति हर बृषकेतू ❁ सुन्दर श्याम कृष्णपति हेतू
शीत भीत मनमें नहिं ल्यावैं ❁ नयन मूंदि के ध्यान लगावैं
बार बार यह कहैं मनाई ❁ हम वर पावहिं कुँवरकन्हाई
जलते बहुरि निकसि सब आई ❁ पूजहिं गोपेश्वर शिव जाई
चन्दन बिल्वपत्र जलधारा ❁ अक्षत सुमन सुगंध अपारा
प्रीति सहित सब शिवहि चढ़ावैं ❁ धूप दीप करि अस्तुति गावैं

छं० करहिं अस्तुति गान बहुबिधि पाणिपंकज जोरहीं।
बार बार नवाय मस्तक प्रेम सहित निहोरहीं॥
जय महेश कृपाल शिव आनन्द निधि गिरिजापते।
कैलासपति कल्याण अगजगनाथ शर्व नमामि ते॥
जटाजूट त्रिपुण्ड्र शशि कल गंगयुत शोभित शिरे।
कमल नयन बिशाल सुन्दर चारु कुंडल श्रुतिधरे॥
नीलकंठ भुजंग भूपण भस्म अंग दिगम्बरे।
अर्द्धंग गौरि बिशाल उर शिरमालधर करुणाकरे॥
कर्पूर गौर प्रसन्न आनन पञ्चवक्त्र त्रिलोचने।

कामप्रद सुखधाम पूरण काम शोच विमोचने ॥
भगवान भौ भव भयहरण भूतादिपति शंभूहरे।
प्रणतजन पूरण मनोरथ जगतपति मन्मथ करे ॥
वृषभवाहन त्रिपुरअरि मृगराजवर छालाम्बरे।
शूलपाणि त्रिशूल मूलन मूल कर शिव शंकरे ॥
सुर असुर नर नाग तवपद वन्दि मन वांछित लहैं।
पूजते पदकमल प्रभु हम कृष्णपति चाहति अहैं ॥

दो० तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जन मन पीर।
परमदान दीजै हमैं, सुन्दर वर बलवीर ॥

सो० यह वरदान न आन, शिव तुमसों चाहत अहैं।
कृष्ण कमल पद ध्यान, रहै हमारे उर सदा ॥

यहि बिधि ब्रजतिय नेम निबाहैं ❀ शिव को पूजि कृष्ण पति चाहैं
नित प्रति प्रात यमुन जल बोरैं ❀ प्रीति रीतिसों मन नहिं मोरैं
सविता सों बहु भांति निहोरैं ❀ गोद पसार युगल पद जोरैं
तेजराशि दिन मणि जगस्वामी ❀ जगत चक्षु सब अंतर्य्यामी
प्रणत मनोरथ पूरणकारी ❀ हम पर होहु दयाल तमारी
काम हमारे तनहिं जरावै ❀ नन्दसुवन वर हम को भावै
होय हमारो पति नँदलाला ❀ करहु कृपा सो दीनदयाला
ऐसे हरिहित गोप कुमारी ❀ करैं नेम व्रत तप तन धारी
गेह देह की सुरत बिसारी ❀ कृश तन भई परम सुकुमारी
वर्ष दिवस यों करत बिहान्यो ❀ प्रभु अंतर्यामी सब जान्यो
मोहित शिव पूजति ब्रजनारी ❀ और कामना सकल निवारी
सकल भावके हरि हैं ज्ञाता ❀ सकल देव द्वारा फलदाता

दो० देख नेम यह प्रेममय, गोपिन को गोपाल।

भये प्रसन्न कृपाल चित, जनहित दीनदयाल ॥

सो० मो कारण जलन्हात, भये जलहिमें प्रकट हरि ।
सुन्दर श्यामल गात, नव किशोर वर वपु धरे ॥

न्हात जहां युवती सब आछे ❀ मींजत पीठ सबन के पाछे
चकित सबन पाछे हरि हेरो ❀ देख्यो कान्ह कुँवर नँदकेरो
मन में हर्षित भईं सब नारी ❀ व्रत फल प्रकटे कुंजविहारी
गेह देह की सुरत बिसारी ❀ कृशतन भई परम सुकुमारी
नवलकिशोर ध्यान मन लायो ❀ सोई प्रकट रूप दरशायो
दृष्टि परत ही सकल लजानी ❀ लागीं अङ्ग दुरावन पानी
एक एक को भेद न जानैं ❀ हरि कों सब अपने ढिग मानैं
कहत लाज लागत नाहिं तुमको ❀ बिना बसन देखत हौ हमको
हँसि निकसे तब कुँवर कन्हाई ❀ चीर हार लै चले पराई
हांक देति सब शपथ दिवावैं ❀ फिरहु बसन भूषण हम पावैं
डारि बसन भूषण तब दीने ❀ गोपिन तुरत दौरिकै लीने
चीर फटे भूषण सब टूटे ❀ लेत न बनै तहां नहिं छूटे
एक एक की लाज लजाहीं ❀ बसन अभूषण पहिरत जाहीं

दो० लगे श्याम ढीठो करन, यह कहि कहि पछितात ।
अन्तरगति आनन्द अति, झूंठहि खीझत जात ॥

सो० लोगन कहत सुनाय, कान्ह करत लँगराइ अति ।
यशुमति के ढिग जाय, कहत चलो कहिये सबै ॥

चलीं यशोमति पै सब ग्वारी ❀ प्रेम बिबश तन दशा बिसारी
पुलक अंग अँगिया दरकानी ❀ टूटे हार लिये निज पानी
चीर चीरि नख घात बनाई ❀ यह मिस करि उरहन लै आई
देखो महरि श्याम के ये गन ❀ ऐसे हाल किये सबके उन

चोली चीर हार दिखराये ❀ घेर करत इतको भजि आये
और वात यक सुनहुँ न माई ❀ ढीठ भयो अति कुँवर कन्हाई
विना वसन हम न्हाति जहां सव ❀ मींजत पीठ जाय पाछे तव
और कहत तुमसों सकुचावें ❀ उर उघार के तुमहिं दिखावें
महरि विचारत कहत कहा सव ❀ भयो श्याम यह लायक धों कव
सुनि युवतिन के मुख यह वानी ❀ वोली विहँसि नन्द की रानी
वात कहौ सो जो निवहै री ❀ विना भीति नहिं चित्र लहै री
तुमको कहति लाज नहिं आवति ❀ चोरी रही छिनारो लावति

दो० तुम चाहति हौ गगनते, गहन तरैया वाम।
सो कैसे करि पायहौ, तुम लायक नहिं श्याम॥

सो० मैं वूझी सव वात, तुम सों हौं कहिहौं कहा।
वृथा फिरत अठिलात, भ्रष्ट करो सुनि है जगत॥

यहि अन्तर हरि आय गये घर ❀ शीश मुकुट लीन्हे मुरली कर
अति कोमल तन भूषण सोहैं ❀ वाल भेद देखत मन मोहैं
जननी वोलि वांह गहि लीनी ❀ कहति सवनसों रिस रस भीनी
देखहु री तुम सव इत आवो ❀ इनहीं को अपराध लगावो
देखहु समुझि लाज नहिं आवत ❀ इनहीं के नख उरन दिखावत
मेरो कान्ह अवहिं सुत वारो ❀ तुम कोउ औरहि जाय निहारो
देखत हरि हिं युवति भईं भोरी ❀ कहति महरि कछु तुमहिं न खोरी
देन उरहनो तुम को आईं ❀ नीकी पहिरावन हम पाईं
आपस में सव कहत सुनाई ❀ देखहु री यह भाव कन्हाई
यमुना तीर मिले जव आई ❀ कहां गई तव की तरुणाई
इन के गुण ऐसे को जानै ❀ और करत औरै ही ठानै
घर आवत ही भये नन्हाई ❀ ऐसे मन के चोर कन्हाई

दो० देखि चरित नँदलाल के, भईं बाल मति भोर।
सुधिबुधि मनकछु थिर नहीं, कहत औरकी ओर॥
सो० सकुचीं बहुरि सँभारि, बिबश देखि अपनी दशा।
चलीं घरनि ब्रजनारि, हरिमुखकमलनिहारिकै॥
गईं घरन ब्रज गोपकुमारी ❀ चित हरि लीनो मदनमुरारी
नेक न मन लागत घर माहीं ❀ धाम कामकी सुधि कछु नाहीं
मात पिता को डर नहिं मानौं ❀ गारि देत कोउ सुनत न कानौं
प्रात होत ही गोपकुमारी ❀ गईं यमुनतट सब सुकुमारी
देखत तहां जाय नँदनंदन ❀ मोर मुकुट शोभित तन चंदन
मकराकृत कुण्डल उर माला ❀ पीत बसन दृगकमल बिशाला
दरश देखि अँखियां तृपतानी ❀ भईं सुखी उर तपन बुझानी
कहत परस्पर मिल सब ग्वाली ❀ यमुना निकट गये बनमाली
कौन भांति करि आज अन्हैबो ❀ बनत नाहिं अब यमुना ऐबो
कैसे करि हम बसन उतारैं ❀ कान्ह हमारी ओर निहारैं
मींजत पीठ औचकहिं आईं ❀ बसन अभूषण लै भजि जाईं
कहो फेरि कैसे तब पावैं ❀ अब नहिं कान्ह घाटपै आवैं
दो० कहत सकुचकी बात सब, ऊपर मन आनंद।
अन्तर गति की वृत्तिको, जानत सब नँदनंद॥
सो० जानी जानन राय, लाजान्तर युवती करत।
सो अब देउँ मिटाय, अन्तर भलो न प्रेम में॥
और बात यक श्याम बिचारी ❀ ये जल भीतर न्हात उघारी
जो तिय जल में नांगी न्हाईं ❀ ताको दोष देत अधिकाई
ताको दोष नाश तब पावै ❀ नांगी परपति सम्मुख आवै
सो इन को यह दूषण टारौं ❀ और लाज अन्तर निरवारौं

करों आज इन सों विधि सोई ❀ इन को हित मम कौतुक होई
जो कछु चूक दास तें होई ❀ आप सुधार लेत हरि सोई
अन्तर प्रभु को नेक न भावै ❀ भजै निरन्तर जब हरि पावै
अन्तर रहित भक्ति हरि प्यारी ❀ कहत वेद सब सन्त पुकारी
तब हरि मन यह कियो विचारा ❀ इनके बसन हरों इक बारा
प्रभु सबकी तब दृष्टि बचाई ❀ कदम वृक्ष चढ़ि रहे लुकाई
जब गोपिन हरि देख्यो नाहीं ❀ चकित विलोकीं इत उत माहीं
जाने सदन गये नँदलाला ❀ न्हान चलीं तब सब ब्रजबाला

दो० धरे उतार उतार सब, तट पर भूषण चीर।
नग्न होय अस्नान हित, पैठीं यमुना नीर॥
सो० श्रीवालों जलमांहि, पैठि करत अस्नान सब।
सुखछवि कही न जाहि, कनककंज फूले मनहुँ॥

बार बार बूझत जल माहीं ❀ प्रेम सहित मन मुदित तहाहीं
शिव सों विनती करत निहोरी ❀ कबहूं रवि वन्दैं कर जोरी
यहै कामना करि सब ध्यावैं ❀ नंद नँदन को पति करि पावैं
कामातुर सब गोप कुमारी ❀ धरैं ध्यान उर कुंज विहारी
मूंदहिं नयन दरश चितलावैं ❀ शब्द विचार श्रवण सुख पावैं
भुज जोरत अंकम हित लागी ❀ मगन प्रेमरस तिय बड़ भागी
प्रभु अन्तर्यामी सब जानै ❀ देखे कदम चढ़े सुख मानैं
कहत धन्य धनि ब्रजकी बाला ❀ मेरे हित तप करत विशाला
प्रीति रीति सबकी पहिचानी ❀ क्षण क्षणकी सेवा हरि मानी
काहू भाव मोहिं कोउ ध्यावै ❀ मोहिं विरद राखे बनि आवै
कियो बहुत श्रम मम हित कारण ❀ अब इनको दुख करों निवारण
उपजी कृपा समुझि जन पीरा ❀ उतरे तरु तें श्री बलवीरा

दो० प्रेम मगन युवती सबै, रहीं ध्यान मन लाय।
हरि सब भूषण बसन लै, चढ़े कदम पर जाय॥
सो० भूषण बसन अपार, सोरह सहस बधून के।
हरे एकही बार, लै राखे तरुनीप पर॥
कस्यो नीप तरु अति बिस्तारा ❁ फूले सुमन सुगन्ध अपारा
लै लै बसन डार अटकाये ❁ जहां तहां भूषण लटकाये
नीलाम्बर पाटम्बर सारी ❁ सेत पीत चूनरि अरुणारी
जहां तहां शाखन प्रति सोहैं ❁ देखत छवि बसंत मन मोहैं
सो तरु शाखा परम सुहाई ❁ बैठे छवि की राशि कन्हाई
युवती सुकृति तरुणधरि मानों ❁ पस्यो सुकृति पूरणफल जानों
देखत कदम चढ़े नँदलाला ❁ बसन बिना जलमें सब बाला
ध्यान करत तें जब सब जागीं ❁ तब जल बाहर निकसन लागीं
जलतें निकरि आय तट देख्यो ❁ भूषण बसन तहां नहिं पेख्यो
इत उत चितै चकित भई भारी ❁ सकुच गई फिर जल सुकुमारी
नाभि प्रयन्त नीर में ठाढ़ी ❁ भुज लगाय उर चिंता बाढ़ी
कँपत शीत में अति अकुलानी ❁ बार बार कहि कहि पछितानी
दो० ऐसो को भूषण बसन, सबके एकहिं बार।
तटतें लये चुरायके, लगी न नेकहु बार॥
सो० हम जानत यह बात, अम्बर हरि हर ले गये।
और कौन को नात, जो ब्रज में ढीठो करै॥
दीन होय तब युवति पुकारीं ❁ हो कहुँ श्याम जाहिं बलिहारीं
दरश दिखाय बिनय सुनि लीजै ❁ अम्बर देहु कृपा अब कीजै
थर थर कंपत अँग सुकुमारी ❁ देखि श्याम नहिं सके सँभारी
बोलि उठे तब मदन गोपाला ❁ कहा कहत मोसों ब्रजबाला

कतहों जल में मरत जड़ाई ❁ लेहु बसन भूषण इत आई
तुम पट भूषण सुरत बिसारी ❁ तब मैं लै कीन्ही रखवारी
अब अपने पट भूषण लीजै ❁ रखवारी कछु हम को दीजे
जब ऐसे हरि बोल सुनायो ❁ तब सबके मन धीरज आयो
सुनि हरि बचन सकल हरषानी ❁ लखे कदम ऊपर सुखदानी
कहत सुनौ सखि हरिकी बातैं ❁ बसन चुराय करैं ये घातैं
हम सब जल के बीच उघारी ❁ मांगत हैं हमसों रखवारी
तब हँसि बोलीं ब्रज की बाला ❁ सुनहु श्यामसुन्दर नँदलाला

दो॰ तन मन धन अर्पों तुम्हैं, हैं जु तुम्हारे पास।
अब अम्बर दीजै हमैं, जानि आपनी दास॥

सो॰ तब हँसि कह्यो कन्हाय, जो तनमनमोको दियो।
लेहु बसन ह्यां आय, तौ मानौ मेरो कह्यो॥

सुनहु श्यामघन बात हमारी ❁ नग्न कौन विधि आवैं नारी
हम तरुणी अरु तरुण कन्हाई ❁ बिना बसन क्यों देहिं देखाई
यह मति आप कहां धौं पाई ❁ आज सुनी यह बात नवाई
पुरुष जात यह कहत न जानहु ❁ हाहा ऐसो मन जिन आनहु
कहत श्याम जो नग्न न ऐहौ ❁ तो तुम पट भूषण नहिं पैहौ
जो तन मन दीनो तुम मोही ❁ तौ राखत कत लज्जा द्रोही
यह अन्तर मोसों जनि राखौ ❁ मान लेहु तुम मेरो भाखौ
शीत सहत कत नवलकिशोरी ❁ लाज देहु जलही में बोरी
जलते निकस बेग इत आवो ❁ हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो
ज्यों जलमें रवितें कर जोरो ❁ त्यों ह्वै सन्मुख मोहिं निहोरो
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी ❁ ऐसी बात न कहो मुरारी
हाहा लागहिं पायँ तिहारे ❁ पाप होत हे जाड़न मारे

दो० छांड़ि देहु यह टेक हरि, बर भूषण तुम लेहु।
शीत मरत हम नीर में, बसन हमारे देहु॥
सो० दूषण होत अपार, जो तिय अँग देखहिं पुरुष।
ताते नन्दकुमार, नारी नग्न न देखिये॥

तुमको छोह होत नहिं राई ❀ बड़े निठुर हौ कुँवर कन्हाई
ऐसो करौ जो तुमको सोहै ❀ आज तुम्हारी पटतर कोहै
आजहि ते हम दासि तिहारी ❀ कैसे अंग दिखावहिं नारी
अंग दिखाये भूषण पैहौ ❀ नातरु जल में बैठी रैहौ
मेरे कहे निकसि सब आवो ❀ थोरे में मो भलो मनावो
कत अंतर राखत हो हमसों ❀ बार बार मैं भाषत तुमसों
लेहु आय अपने पट भूषण ❀ यह लागै हमको सब दूषण
मो हित तुम कीनो तप भारी ❀ अब कत लज्जा करत हमारी
मैं अन्तर्य्यामी सब जानी ❀ करिहौं तुमरे मनकी मानी
अब पूरण तप भयो तुम्हारो ❀ अन्तर इतो दूरि करि डारो
सुनि यह मोहन के मुख बानी ❀ सब युवती मनमें हरषानी
तब सबहिन यह बात बिचारी ❀ अब तो टेक परे बनवारी

दो० कहत परस्पर मिलि सबै, हरि हठ छांड़त नाहिं।
बसन बिना कैसे बनै, कौन भांति घर जाहिं॥
सो० चलो लीजिये चीर, इनहीं को हठ राखि कै।
मनमोहन बलबीर, जो कछु कहैं सो कीजिये॥

यह बिचार जल बाहर आईं ❀ बैठि गईं तट अतिहिं लजाईं
बार बार हरि निकट बुलावैं ❀ त्यों त्यों अधिक लाजको पावैं
कहत श्याम अम्बर अब दीजै ❀ हाहा इतनो हठ नहिं कीजै
बहत समीर शीत अति भारी ❀ मानैंगी उपकार तुम्हारी

हम दासी तुम नाथ हमारे ❀ हम सबकी पति हाथ तुम्हारे
कहत श्याम यह तजो सयानी ❀ छांड़हु लाज करहु मम बानी
अपने वसन लेहु ह्याँ आई ❀ देहौं तुम को नन्द दुहाई
आवहु सकल लाज को त्यागे ❀ करहु सिंगार आय मो आगे
तब सबहिन यह मनमें जानी ❀ करिहैं श्याम आपनी ठानी
कर कुच अंग ढांकि भईं ठाढ़ी ❀ वदन बनाय लाज अति बाढ़ी
गईं कदम तर हरिके पासा ❀ कहति देहु अब हमको बासा
हरि बोले यों वसन न पावो ❀ हाथ जोरि मोहिं विनय सुनावो

दो० जो कहिहौ करिहौं सबै, हँसि बोलीं ब्रजबाम।
लेहैं दाँव हमहूं कबहुं, सुनो श्याम अभिराम॥

सो० उभय कमल करजोरि, सलजंसहासनिहारिहरि।
माँगत सकल निहोरि, कहत देहु अब बसन प्रभु॥

लखि युवतिन की प्रीति कन्हाई ❀ रीझे भक्तन के सुखदाई
धन्य धन्य बोले गोपाला ❀ निश्चय प्रीति करी तुम बाला
देखि निरन्तर गोप कुमारी ❀ दीने बसन अभूषण डारी
अति आतुर सब पहिरन लागीं ❀ प्रेम प्रीति के रस मति पागीं
तब हँसि बोले कुंजबिहारी ❀ मैं पति तुम मेरी सब प्यारी
अन्तर शोच दूरि करि डारो ❀ मेरो कह्यो सत्य उर धारो
शरदरात तुम आश पुरैहौं ❀ अंकम भरि सबको उर लैहौं
अब तप करि तुम मत तन गारो ❀ मैं तुम ते क्षण होत न न्यारो
करसों परस सबन सुख दीनो ❀ बिरहताप तन को हरि लीनो
बिदा करी हँसि नन्दके लाला ❀ निज निज सदन गईं ब्रजबाला
गोपिन उर अति हर्ष बढ़ायो ❀ मन मन कहति कृष्ण वर पायो
ब्रजवासी जन के सुखदाई ❀ आये अपने सदन कन्हाई

दो० इहि बिधि ब्रजसुन्दरिनको, हितकरि सुंदरश्याम।
ब्रजबिलासबिलसतबिबिध, सकललोकअभिराम॥
सो० सुंदर घन सुखरास, सबबिधि करि सबके सुखद।
नितनवकरतबिलास, मुदितसकलब्रजलोगलखि॥

अथ बृन्दाबनवर्णनलीला॥

हरि लखि मात पिता सुख पावैं * बाल भाव बहु लाड़ लड़ावैं
नवल किशोर सुभग तनश्यामा * निरखत मुदित सकल ब्रजबामा
ग्वाल बाल सब सम करि जानैं * सखा प्राण प्रीतम करि मानैं
नित उठि गाय चरावन जाहीं * क्रीड़ा करैं विविध ब्रज माहीं
इक दिन सोवत सदन कृपाला * आये द्वार बुलावन ग्वाला
चलहु श्याम बन धेनु चरावन * यह सुनि जननी लगी जगावन
उठहु तात मैया बलिजाई * टेरत ग्वाल बाल बल भाई
बदन दिखाय सबन सुख देऊ * दतवन करि कछु करहु कलेऊ
भई बेर बन को नँदलाला * अब मत सोवहु मदनगोपाला
देखन को छबि अति अतुराई * सखा द्वार सब टेर लगाई
सोवत ते हरि जागत नाहीं * सुनत बात आलस मनमाहीं
कबहूं बसन ढांपि मुख सोवैं * कबहुँ उघारि जननि तन जोवैं
खोलत नयन पलक झुक आवैं * सो छबि निरखि मात सुख पावैं

दो० उठो लाल जननी कह्यो, तब चितये हँसि नन्द।
पटगहि पुनिपुनि फेरमुख, तबहिं उठे ब्रजचन्द॥
सो० कबके टेरत ग्वाल, बलदाऊ यह कहि उठे।
बनको भई अबार, गईं गाय आगे निकस॥

यह सुनि तुरतहि उठे कन्हाई * यशुमति जल झारी भरि लाई

दुहुं भैयन करवाय मखारी ❀ पोंछे मुख जननी निज सारी
करहु कलेऊ अब कछु प्यारे ❀ एक थार दोउ सुत बैठारे
दधि माखन रोटी अरु मेवा ❀ करत प्रात दोउ भ्रात कलेवा
करत निकट बैठे मन मोदा ❀ दृग सुख लूटत महरि यशोदा
मात प्रेम ते अति तृपताई ❀ अचवन करन उठे दोउ भाई
द्वारे टेर उठ्यो यक ग्वाला ❀ वन कहँ वेगि चलहु नँदलाला
बल मोहन आवहु दोउ भैया ❀ आगे निकसि गई हैं गैया
ग्वाल वचन सुनि अति अतुराई ❀ कछु अचयो कछु नहिं दोउ भाई
मुरली मुकुट लकुट पट लीनो ❀ निकस दौरि वनहीं मन दीनो
केतिक दूरि गईं चलि गैया ❀ ग्वालहि बूझत जात कन्हैया
कछु वन पहुँची ह्वै हैं जाई ❀ कछु मग मिलिहैं कुँवरकन्हाई

दो० बन पहुँचत सुरभी लई, बल मोहन दोउ धाय।
कहत सबनसों जात कित, हमहूं पहुँचे आय॥

सो० तुम आये अतुराय, जेंवतपर लखिके हमें।
तुम सँग रहत बलाय, अब हम दूरि चरायहैं॥

यह सुनि सखा धाय सब आये ❀ हरिको अङ्कम भरि उर लाये
तुमहो सबहिन के सुखदाई ❀ हमको तजि मति जाहु कन्हाई
आज कुमुदबन चलहु चरावन ❀ शीतल सुखद सघन अति पावन
सुनत कह्यो अति हर्ष कन्हाई ❀ नीकी कही बात यह भाई
अपनी अपनी गाय बुलावो ❀ एक ठौर करि सबन चरावो
यह सुनि ग्वाल सुरभिगण घेरत ❀ लै लै नाम गाय सब टेरत
धौरी धूमरि राती कबरी ❀ पियरी गोरी गैनी कजरी
खैरी फुलही रौंची चौंरी ❀ धूरी धुमरी मुंडी भौंरी
लीली कपिली सुवरनजोती ❀ लाखी निकही रतनी तेती

ऐसे सुरभी टेर बुलाई ❋ सब मिल चले कुमुदवन धाई
तब बल कह्यो दूर मत जाहू ❋ नन्द रिसै हैं अरु यशुदाहू
बल को कह्यो मान सुखदाई ❋ बोल लिये सब सखा कन्हाई

दो० कहत सबन समुझाय हरि, कौन कुमुदवन जाय।
बुरो मानिहैं नन्द सुनि, और यशोदा माय॥

सो० ल्यावहु गाय फिराय, चलिये वृन्दावन सुखद।
सुरभी चरत अघाय, वंशीबट यमुना निकट॥

यह कहि श्याम चले अगुवाई ❋ फेरी गाय ग्वाल सब धाई
वृन्दाबनहिं चले मनमोहन ❋ हर्षित सखा वृन्द सब गोहन
करत कुलाहल आनँद भारी ❋ पहुँचे वृन्दाबन बनवारी
सुरभी गण चहुँदिशि बगराई ❋ कहत सखा सब हर्ष बढ़ाई
जादिन अघ हति श्याम सिधाये ❋ ता दिनते या बन अब आये
देखत बन सब भये सुखारी ❋ बहत मनोहर त्रिविध बयारी
बैठन की शोभा चित दीने ❋ देखत श्याम सखन सँग लीने
नव किशलय दल सुमन सुहाये ❋ मनहुँ बसन्त शृँगार बनाये
मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी ❋ फल के भार रही नै डारी
मनहुँ देखि श्यामहिं सुखपाई ❋ देत भेंट तरु शीश नवाई
सुमन भँवर गुंजत छबि पावैं ❋ अस्तुति मनहुँ मधुर स्वर गावैं
एक पांव ठाढ़े सब आगे ❋ जहँ तहँ थकित मनहुँ अनुरागे

दो० बेलि बिबिध लपटीं ललित, फूलरहीं बहुरंग।
शोभितसहित शृंगारजिमि, नारि पतिनके संग॥

सो० हालि उठत सब पात, मन्द पवन लागत कबहुँ।
आनँद उर न समात, बार बार पुलकत मनहुँ॥

कुंज पुंज मंजुल सुख दाई ❋ शीतल सुमन सुगन्ध सुहाई

हरि विश्राम हेत वन जानो ❀ रचे विचित्र सदन बहु मानो
बोलत हैं कल खग बहु रंगा ❀ कीर कपोत कोकिला भृंगा
मनहुँ भरे सब आनँद गावें ❀ जहँ तहँ बरही नृत्य दिखावें
तरुदल खरक पवनगति साजै ❀ मधुर स्वरन बाजन ज्यों बाजें
क्रीड़त मरकट शुभगति लीने ❀ करत कला ज्यों नट परवीने
मृगगन चितवत आनँद बाढ़े ❀ मनहुँ तमाशगीर सब ठाढ़े
पाय श्याम घन हित बनराई ❀ करी मनहुँ आनन्द बधाई
वनशोभा कछु बरणि न जाई ❀ ऋतु बसंत जहँ रहत सदाई
जहाँ सुभाव काल गुण नाहीं ❀ वैरभाव नहिं खग मृग माहीं
सदा एकरस परम प्रकाशी ❀ परम सुखद आनँदकी राशी
चिन्तामणि सब भूमि सुहावन ❀ कोमल विमल सुभग अति पावन

दो० शोभा वृन्दाविपिनकी, बरणिसकै अस कौन।
शेष महेश गणेश विधि, पार न पावत तौन॥

सो० महिमा अमित अपार, श्रीवृन्दावन धाम की।
जहँ नित करत बिहार, परब्रह्म भगवान हरि॥

देखि श्याम वन भये सुखारी ❀ बैठे तरुतर विपिन विहारी
बृन्दावन की करत बड़ाई ❀ बलदाऊ सों कहत कन्हाई
मैं यह बन देखत सुख पावत ❀ वृन्दावन मोको अति भावत
कामधेनु सुरतरु बिसरावत ❀ रमा सहित वैकुंठ भुलावत
यह यमुना तट यह वन जावत ❀ ये सुरभी अति सुखद चरावत
यह सुख त्रिभुवन कतहुँ न पावत ❀ ताते मैं तन धर इत आवत
दाऊ जू तुम सच कर मानों ❀ यह वृन्दावन जड़ मत जानों
चितवनमें आनँद की रासा ❀ प्रेम भक्ति को इहाँ निवासा
परम धाम मम परम सुहावन ❀ पावनहूं ते पावन पावन

जे तरु बृन्दाबन के माहीं ❁ कल्प बृक्ष तिनकी सर नाहीं
कल्प बृक्षके तर जब जाई ❁ तब मांगे वांछित फल पाई
बृन्दाबन तरु चिन्तत जोई ❁ प्रेम भक्ति मम पावत सोई

दो० जाके बश मैं कहतहौं, अपनी प्रभुता त्याग।
प्रेम भक्तिसो लहत नर, बृन्दाबन अनुराग॥

सो० श्रीमुख बरण्यो श्याम, श्रीबृन्दाबन को महत।
सुख पायो बलराम, सुनत कान्हके बचन बर॥

सखा बृन्द सुनि श्रीमुख बानी ❁ प्रेम मगन तन दशा भुलानी
चितवत हरि मुख पलक बिसारी ❁ जिमि चकोरगण शशिहि निहारी
कहत चकितसब अतिसुखपावत ❁ निज लीला हरि प्रगट जनावत
पुनि पुनि पुलक कहत शिरनाई ❁ सुनहु श्यामघन कुँवर कन्हाई
बार बार तुमको कर जोरैं ❁ हमहिं कान्ह तुम तजहु न भोरैं
जहां जहां तुम तन धरि आवो ❁ तहां तहां जनि चरण छुड़ावो
तब हँसि बोले कुँवर कन्हैया ❁ ब्रजते तुम्हैं न टारौं भैया
तुम मेरे मनको अति भावत ❁ तुम ते मैं बहुतैं सुख पावत
या ब्रज सम त्रिभुवन कहुँ नाहीं ❁ तुम्हरे ढिग मैं रहत सदाहीं
मैं तुम हेत देह यह धारी ❁ तुमते ब्रजलीला बिस्तारी
है यह ब्रज मोकों अति प्यारो ❁ ताते कबहूँ होत न न्यारो
ऐसे हरि ग्वालन के मांहीं ❁ गुप्त बात कहि कहि समझाहीं

दो० मधुर बचन सुनश्यामके, सखाबृन्द सुख पाय।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन, रहे सबै गहि पाय॥

सो० धनिधनिधनितुमश्याम, धनिब्रजधनिबृन्दाबिपिन।
तुम्हरे गुण अभिराम, हम सब अज्ञ न जानहीं॥

सुनहु श्याम घन नंददुलारे ❁ तुम प्रभु हम सब दास तुम्हारे

दुर्लभ यह हरि संग तुम्हारो ❀ कबधौं फेरि गोप तन धारो
ना जानिये बहुरि ब्रजनाथा ❀ कब तुम फिरिहौ सुर मुनिसाथा
कब तुम छाक छीनिकै खैहौ ❀ कबधौं फिरि ऐसे सुख देहौ
बलि बलि जइये श्याम तुम्हारी ❀ अब इक विनती सुनहु हमारी
सुन्दर मुरली नेक बजावो ❀ अधर सुधारस श्रवणन प्यावो
तुम्हैं नंदकी सौंह दिवावैं ❀ मुरली धुनि सुनि हम सुख पावैं
तुम्हरे मुख यह बाजत नीकी ❀ हम सबकी जीवन है जीकी
सुनत सखनकी कोमल बानी ❀ प्रेम सुधारस सों लपटानी
गुण गम्भीर गोपाल कृपाला ❀ भक्तवश्य प्रभु दीनदयाला
भये प्रसन्न भक्त सुखदाई ❀ चितये कमल नयन समुदाई
करते लकुटि निकट धरिदीनो ❀ पाछे मुरली को गहि लीनो

दो० पकर दुहूंकर अधर धर, मधुरमुरलिधुनिगान।
मोहिलियो चर अचरनभ, जलथलश्यामसुजान॥

सो० भई चकित गति पौन, यमुना जल लीन्हीं शयन।
ह्वै गये खग मृग मौन, रहे जहां तहँ चित्र से॥

उपजावत गावत गति सुन्दर ❀ राग रागिनी ताल विविध वर
सखा बृन्द सुनि तन मन वारैं ❀ निरखत मुख छवि पलक बिसारैं
चलत नयन भृकुटी पुटनासा ❀ करपल्लव मुरली स्वर श्वासा
मानहुँ निरतक भाव बतावैं ❀ शुभगति नायक सैन सिखावैं
कुंचित अलक बदन छबिदेई ❀ मनहुँ कमलरस अलिगण लेई
कुंडल झलक कपोलन माहीं ❀ मनहुँ सुधारस मकर अन्हाहीं
दशन दमक मोतिन लर ग्रीवां ❀ मनहुँ सकल शोभा की सींवां
तिलक विचित्र भाल छबिछाजै ❀ मनहुँ महाछवि दशन विराजै
चमकत मोर चंद्रिका चारू ❀ मनहुँ सकल शृंगार सिंगारू

श्यामगात उर गजमणि माला ❋ सँग शोभित वनमाल विशाला
मर्कत गिरि मनो सुरसरि धारा ❋ बैठी पंगति कीर किनारा
कटि पटपीत तड़ित द्युतिहारी ❋ पद पङ्कज नूपुर रुचिकारी

दो० श्रीवालटकन मुरकिपर, शोभित छवि समुदाय।
प्रेममगन निरखतमुदित, गोपलाल सुख पाय॥

सो० सुन्दर श्याम सुजान, देत परमसुख सखनकों।
वारत तन मन प्रान, धन्य धन्य कहि ग्वाल सब॥

रीझत ग्वाल रिझावत श्यामा ❋ लेत मुरलि में सबको नामा
हँसत ग्वाल सब दै करताला ❋ लेत हमारो नाम गोपाला
कहत श्याम अब तुमहुँ बजावो ❋ ऐसे हमको गाय सुनावो
हँसि मुरली तिनके कर दीनो ❋ अधरन धर अमृत रसलीनो
लै लै निजकर सकल बजावत ❋ हरिके स्वरको रूप न पावत
आस पास सोहत सब बालक ❋ मधि प्रभु प्रीति रीति के पालक
हँसि हँसि सबके चित्त चुरावैं ❋ सब मिल प्रेमानंद बढ़ावैं
जैसे श्री मुरलीधर गायो ❋ काहू पै सो रूप न आयो
हँसि हँसि कहत परस्पर भाई ❋ हरि की सम को सकै बजाई
चतुरानन पंचानन ध्यावैं ❋ सहसानन नव नित गुण गावैं
सुर नर मुनि कोउ पार न पावैं ❋ सो ग्वालन सँग बेणु बजावैं
ब्रजबासी जन को प्रतिपाला ❋ भक्त बश्य प्रभु दीनदयाला

दो० कारण करण अनंत गुण, निगमनेति जेहि गाव।
सो ग्वालन सँग गावहीं, देखहु भक्ति प्रभाव॥

सो० बृन्दाबन की रेनु, ब्रह्मादिक बांछित सदा।
जहां श्याम सुखदेनु, ग्वालनसँग चारत सुरभि॥

अथ द्विजपत्नीयाचनलीला वर्णन ॥

विहरत वृन्दावन बनवारी ❀ विविध भांति लीला अनुसारी
कबहूँ सखन संग मिलि गावैं ❀ कबहूँ मुरली मधुर बजावैं
कबहूँ गैयन घेरत धाई ❀ कबहूँ यमुना के तट जाई
करत कुलाहल आनँद भारी ❀ देत दिवावत रसकी गारी
ऐसे लीला करत अपारा ❀ भये क्षुधारत गोपकुमारा
कहत भये तब हरिसों जाई ❀ हमको क्षुधा लगी अधिकाई
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी ❀ अपने मन यह बात विचारी
सुनि सुनि मेरे गुणगण गाना ❀ करत रहत द्विजतिय मन ध्याना
तिनको दरशन आज दिखाऊं ❀ तिनके मनकी ताप नशाऊं
तब हरि ग्वालन कह्यो बुझाई ❀ यज्ञ करत हां द्विजसमुदाई
तिनके निकट जाउ तुम भाई ❀ प्रथम प्रणाम कीजियो जाई
कहियो हम को कृष्ण पठायो ❀ तुमपै भोजन मांगन आयो

दो० यह सुनि ग्वाल गये तहां, जहां विप्र समुदाय ।
यज्ञ करत अहमित लिये, विद्याको बल पाय ॥

सो० ग्वालन करी प्रणाम, कह्यो तिन्हैं करजोरिकै ।
हमैं पठाये श्याम, मांग्यो है भोजन कछू ॥

बन में राम कृष्ण दोउ भैया ❀ आये इतहि चरावन गैया
वे कछु आज भये हैं भूखे ❀ यह सुनि विप्र ह्वै गये रूखे
कह्यो यज्ञ हित करी रसोई ❀ अहिरन पहिले देय न कोई
यह सुनि ग्वाल सकल फिर आये ❀ हरिसों तिनके वचन सुनाये
सुनि हलधरतन चितै कन्हाई ❀ बोले वचन मंद मुसकाई
ये द्विज कर्म धर्म लपटाने ❀ बिना भक्ति मोको नहिं जाने
तब ग्वालनसों कह्यो मुरारी ❀ जाउ जहां इनकी सब नारी

उन को है दृढ़ भक्ति हमारी ❋ वे मानैंगी कही तुम्हारी
उनसों भोजन मांगहु जाई ❋ कहियो भूखे भये कन्हाई
तब द्विजनारिन ढिग ये आये ❋ हाथ जोरि तिनकों शिर नाये
कह्यो राम अरु कुँवर कन्हैया ❋ वन में भूखे हैं दोउ भैया
मांग्यो है कछु भोजन तुमसों ❋ आज्ञा देहु सो कहिये उनसों

दो० ग्वालन के सुनि बचन सब, हर्ष उठीं द्विजवाम ।
　　कहत हमारी भाग्यधनि, भोजन मांग्यो श्याम ॥
सो० करतरहीं नितध्यान, सुनिसुनि जिनकेगुणश्रवण ।
　　सुफलजन्म निजजान, तिनको भोजन लैचलीं ॥

षटरसके व्यंजन बिधि नाना ❋ कोमल भांति अमित पकवाना
खीरखांड़ सिखरन दधि न्यारो ❋ माखन लियो श्यामको प्यारो
कहँ लग बरणों कहों प्रकारा ❋ प्रेम सहित लीने भरि थारा
बहुते ग्वालनके कर दीने ❋ बहुते अपने शिर धर लीने
नयनन दरश लालसा बाढ़ी ❋ उपजीचाह हृदय अति गाढ़ी
चलीं पतिनकी कान बिसारी ❋ देखन कों प्रभु गोप विहारी
ग्वालन सों पूछत यह बाता ❋ कित हैं हरि जनके सुखदाता
जिनके पुरुष हते घर माहीं ❋ तिनकों जान देत सो नाहीं
कहत जात तुम कित अतुराई ❋ लोक लाज तनदशा भुलाई
तिन सों कहत भई ते नारी ❋ हमकों श्री गोपाल हँकारी
भोजन मांग्यो है हम पाहीं ❋ तिनहिं देन ग्वालनसँग जाहीं
तिनको दरश देखि सुख पैहैं ❋ बहुरि तिहारे घर हम रैहैं

दो० यहसुनिपतिअतिक्रोधकरि, तिनहिंदिखायोत्रास ।
　　कहत भई तुम बावरी, बैठति नाहिं अवास ॥
सो० जिनके उर नँदलाल, बसे लकुट मुरली लिये ।

तिनहिं न भय यमकाल, कौनभांति रोकैहकहिं ॥

हरिपै हमैं जान पिय देहू ❀ कहा रोकि अपयश शिर लेहू
देखन देहु नंदके लालहि ❀ त्रिभुवनपति प्रभु मदनगोपालहि
इतनी बात मान पिय लीजे ❀ हाहा हमें दान यह दीजे
वे हैं यज्ञपुरुष भगवाना ❀ अन्तरयामी कृपा निधाना
करत यज्ञ विधि तिन्हैं विसारी ❀ कहा सरैगी बात तिहारी
कहँ लगि कहौं बात समुझाई ❀ जात दरशकी अवधि विहाई
जो तुम स्वामी जानत नाहीं ❀ तौ हम सत्य कहैं तुम पाहीं
मनतो मिल्यो जाय नँदलालहि ❀ करिहौ कहा रोक के खालहि
लेहु सँभारि देह यह सारी ❀ जासों पिय तुम कहत हमारी
को राखै इतने जंजालहि ❀ मिलिहैं प्राण यशोदा लालहि
जो निश्चय नहिं श्याम सनेहा ❀ तौ यह कौन काजकी देहा
सब सखियनके आगे जाई ❀ देखौंगी छवि कुँवर कन्हाई

दो० ऐसे देह अरु गेह तजि, पतिकी कान निवारि ।
पहुँची सबते प्रथमही, जो रोकी व्रज नारि ॥

सो० कठिन प्रेमको पंथ, तहां नेम की गम नहीं ।
कहत सकल सदग्रंथ, जहां नेम तहँ प्रेम नहिं ॥

ऐसे भोजन लै द्विजबाला ❀ पहुँचीं वन जहँ मोहनलाला
नटवर भेष चित्रित तन कीने ❀ ठाढ़े सखा संग भुज दीने
मोर मुकुट वैजन्ती माला ❀ करमुरली दृग नैन विशाला
कुण्डल अलक तिलक झलकाहीं ❀ कोटिकाम छवि पटतर नाहीं
मुखमृदु हँसन लसन पटपीरो ❀ निरखत नयन ताप भयो सीरो
भोजन लै हरि आगे राखे ❀ अपने भाग्य धन्य करि भाखे
तिन्हैं देखि हरि मन सुखमान्यो ❀ वचन निकरि तिनको सनमान्यो

तिनसों बहुरो कह्यो कन्हाई ❀ गृह पति तजि तुम कित इत आई
कहियत बिप्र बेद अधिकारी ❀ हो तिनकी तुम पतिव्रत नारी
वे सब यज्ञ करत बन माहीं ❀ तुम बिन यज्ञ होइहै नाहीं
यह तुम कछू भलो नहिं कीनो ❀ पतिको कह्यो मान नहिं लीनो
पति आयसु तिय पालै जोई ❀ चार पदारथ पावै सोई

दो० पति देवता सुतीयकहँ, बेद बचन परमान।
जाहु बेगि तुम पतिनपहँ, ताते यह जियजान॥

सो० सुनि हरि बचन प्रमान, कर्मधर्म मानो सुखद।
द्विजतिय परम सुजान, बोलीं सब कर जोरिकै॥

सुनहु श्यामघन अन्तरयामी ❀ तुमहीं सकल जगतके स्वामी
यज्ञ पुरुष तुमहीं सुखधामा ❀ तुमहीं सबके पूरण कामा
बिबिध यज्ञ करि तुमको ध्यावैं ❀ तुमतें चारि पदारथ पावैं
सकल धर्म ते शरण तुम्हारी ❀ है सब जीवन को सुखकारी
यह हम सुनी पतिन मुखबानी ❀ कहत बेद इतिहास बखानी
ताते शरण तुम्हारी आई ❀ यह दूषण नहिं हमहिं गुसाईं
तुम मायाबश सकल भुलाने ❀ ताते पतिन न तुम पहिंचाने
तिन को दोष क्षमा प्रभु कीजै ❀ हमको शरण आपनी दीजै
चार पदारथहू ते भारो ❀ है प्रभु दरशन शरण तुम्हारो
ताते नहीं निरादर कीजै ❀ अपने चरण शरण रख लीजै
सुनि प्रभु द्विजपत्नी की बानी ❀ भये प्रसन्न भक्त सुखदानी
धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो ❀ हितकरि तिनको भोजन राख्यो

दो० दै अपनी दृढ़ भक्ति हरि, तिन्हैं कह्यो घर जाहु।
ह्वैहैं तुम्हरे दरश तें, शुद्ध तुम्हारे नाहु॥

सो० हरि आयसु धरिमाथ, पायभक्ति बरदान बर।

राखि हृदय व्रजनाथ, चलीं हर्ष द्विजतिय सदन॥

नँदनंदन की करत बड़ाई ॐ द्विजपतनी सब घर को आई
देखत तिन्हैं विप्र समुदाई ॐ भये पुनीत विमल मति पाई
धन्य धन्य कहि तियन बखानी ॐ आप कहत हम अति अज्ञानी
जिनके हेतु यज्ञ हम कीनो ॐ तिन मांग्यो भोजन नहिं दीनो
हम विद्या अभिमान भुलाने ॐ अविगति की गति कैसे जाने
परब्रह्म प्रभु जन सुखदाई ॐ भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई
तिनको हम पहिचान्यो नाहीं ॐ वार वार यह कहि पछिताहीं
हैं ये तिय अतिशय बड़भागी ॐ कृष्ण चरण पङ्कज अनुरागी
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको ॐ देख्यो जाय प्रगट इन तिनको
ऐसे बहुविधि तियन सराहीं ॐ आदर कर लीनी घर माहीं
प्रेम प्रीति करि जो हरि ध्यावै ॐ सो नर नारि अभयपद पावै
नर नारी कछु नाहिं विचारा ॐ प्रभु को केवल प्रेम पियारा

दो० भाव तियन को धारि उर, तहँ हरि कृपानिकेत।
सखन सहित भोजन करत, रुचिसों प्रीति समेत॥

सो० ब्रह्मलोक लौं शोर, ग्वालन के सँग खात हरि।
छीन छीन के कौर, करत परस्पर हास रस॥

अति हित भोजन तहँ हरि कीनो ॐ सखावृंद कों अति सुख दीनो
वन में फिरत चरावत गैयां ॐ बैठे आय कदम की छैयां
भये सखा सिगरे इक ठाहीं ॐ गैयां बगर रहीं वन माहीं
दुपहर घाम जान वन माहीं ॐ लागे चलन सघनवन छाहीं
बैठे ग्वाल वाल चहुं उरियां ॐ आगे धरी दूध की घरियां
मध्य श्यामसुन्दर नँदनन्दा ॐ उड़गण में जिमि पूरण चन्दा
मोर मुकुट कटि कछनी काछें ॐ कोटि कामकी छविको वाछें

कबहूं मुरली मधुर बजावैं ❀ कबहुं सखन मिलि सारँग गावैं
कोऊ सखा नृत्य को करहीं ❀ कोऊ ततकारी उच्चरहीं
करत केलि ऐसे बन माहीं ❀ देखि देखि सुरबृन्द सिहाहीं
कोऊ ताल बजावत नीके ❀ उपजावत कोउ आनँद जीके
कहत धन्य ये ब्रज की बाला ❀ बिहरत जिन सँग कृष्णकृपाला

दो० धन्य बिटप धनि भूमि यह, धनि बृन्दाबनचन्द।
धनि ब्रज कहि बर्षै सुमन, रीझ रीझ सुरबृन्द॥

सो० मनमन देव सिहाहिं, बनबिहार हरिको निरखि।
श्रीबृन्दाबन माहिं, हम न भये द्रुम लता तृण॥

श्रीदामा तब कह्यो बुझाई ❀ खेलहि में सब रहे भुलाई
गैयां कितहिं चरति को जाने ❀ यह सुनि कै सब खेल भुलाने
जित तित हेरन को उठ धाये ❀ गैयां जाय घेर लै आये
जे सुरभी आईं नहिं जानी ❀ चरत सघन बनमांझ सयानी
तिनकों तरु चढ़ि कान्ह बुलाईं ❀ मुरली टेर सुनत उठ धाईं
ऐसी गैयां श्याम सधाईं ❀ मुरली सुनि सब हरिपै आईं
जब जब गैयन श्याम बुलावैं ❀ हूं हूं करि सब हरि पै आवैं
तिनपर कर फेरत मनमोहन ❀ पीताम्बर सों झारत छोहन
करत प्यार तिनपर बनमाली ❀ हस्तकमल की सब प्रतिपाली
हरिकों निरखि गाय सुख पावैं ❀ तिनके भाग्य कहत नहिं आवैं
जब हरि गैयन करसों परसैं ❀ लखि लखि कामधेनु मन तरसैं
कहत कहा जो कामद कीनो ❀ हमकों बिधि ब्रजजन्म न दीनो

दो० धनि धनि ब्रजकी धेनु ये, चारत त्रिभुवननाथ।
झारत पोंछत दुहत नित, हितकर अपने हाथ॥

सो० मनहीं मन पछताहिं, कामधेनु ब्रजधेनु लखि।

हम न भईं ब्रज माहिं, हरिपद पंकज परसतीं ॥

ऐसी लीला करत अनेका ❀ वन में ललित एक तें एका
वृन्दावन सब दिवस बितायो ❀ संध्या समय निकट जब आयो
तब हरि कह्यो चलो अब गेहू ❀ गैयां सब आगे करि लेहू
पहुंची सांझ आय नियराई ❀ वनमें करहु अबेर न भाई
यह सुनि गाय सबन अगुवाई ❀ भली बात यह कही कन्हाई
बनतें निकल चले सब ग्वाला ❀ ब्रज आवत नटवर गोपाला
सुरभी बृन्द गोप बालक सँग ❀ अति आनँद गावत नानारँग
अधर अनूप मुरलि सुर कोरी ❀ ऊँचे सुरन बजावत गोरी
सुन्दर श्रवण सुनत ब्रज धाईं ❀ गृहकारज तज तज सब आईं
कहत परस्पर मोहन आवत ❀ देखि देखि छवि अति सुखपावत
पूरण कला उदित शशि जैसें ❀ कुमुदिनि सर फूलीं तिय तैसें
नयन चकोर रहे टकलाई ❀ दिवस बिरह की ताप नशाई

दो० प्रेम मगन आनंद अति, कहत सकल ब्रजबाम ।
देखहुसखियशुमतिसुवन, शोभितअतिअभिराम ॥

सो० श्यामल तनपटपीत, जलजमाल बरहीमुकुट ।
लई मनौ इन जीत, घनदामिनिबग धनुपछवि ॥

भृकुटि विकट दृग चंचलताई ❀ अति छवि देति बरणि नहिंजाई
धनुष देखि बिचि खंजन जानों ❀ उड़न करत डरि उड़त न मानों
प्रफुलित नयन शरद अंबुज से ❀ मनौ कुँडलि रविकरके परसे
गोपदरज पराग छवि छाई ❀ तामधि आलि बैठ्यो जनु आई
एक कहत देखहु वह शोभा ❀ अति सुख देत लसत मनलोभा
कमलवदन मुरली रस लेई ❀ कुटिल अलक ऐसे छवि देई
मानौ अलिगण साजी सैना ❀ सहि न सकत चाहत निज ऐना

अधर सुधा लागि अति दुख पाई ❋ मुरलीसों मनों करत लराई
शोभित नासा परम सुहाई ❋ तामें सखि उपमा यह पाई
मनहुँ अनंग सहायक आयो ❋ तिल प्रसून शर ताहि चलायो
सुनि यह युक्ति सकल हर्षाई ❋ निरखत हरि मुख छबि सुख पाई
कृपादृष्टि हरि सबन निहारी ❋ आये ब्रजजन मन सुखकारी

दो० कहत मुदितमन युवतिजन, धनि धनिसखिवेमोर।
जिनके पांखन को मुकुट, कीनो नंदकिशोर॥

सो० धनि धनि सखि वे बांस, जाकी मुरली अधर धरि।
हरि पूरत निज सांस, को पुनीत ताके सदृश॥

निजनिज सदन गये सब ग्वाला ❋ आये घर हलधर गोपाला
देखि दुहूँ मातन सुख पायो ❋ हरषि दुहुँन कों कण्ठ लगायो
काहे आज अबार लगाई ❋ यह कहि बार बार बलि जाई
रोहिणि सों कह यशुमति मैया ❋ भूखे ह्वै हैं दोऊ भैया
मैं दोउन को देत न्हवाई ❋ तुम भोजन को करहु चढ़ाई
निकट लये मुरली कर लीन्ही ❋ हरि करतें लकुटी धरि दीन्ही
नीलाम्बर पीताम्बर लीनो ❋ मुकुट उतार श्याम तब दीनो
प्राण समान यशोमति जानी ❋ धस्यो सँभार सदन नँदरानी
छोरति अँग भूषण महतारी ❋ मुक्तमाल बनमाल उतारी
कटि किंकिणि अंगदभुज छोरै ❋ निरखि गात आनंद न ओरै
पटलै दोउन के अँग झारे ❋ उर लगाय लीने अति प्यारे
तुम दोउ मेरे गाय चरैया ❋ और न कोऊ टहल करैया

दो० लीने तुमहिं बिसाहि मैं, तब अति रहे नन्हाय।
सुनि हँसि हरि बलसों कहत, कहत झूठही माय॥

सो० यह तो समुझि न जाय, सांच झूठकी बात कछु।

यशुमति लेत बुलाय, मैं चोरी हँसि हँसि कहत ॥

सुमनासुत अंगन परसाई ❁ तपत तरणिको जल लै आई
परम प्रीति दोउसुत अन्हवाये ❁ सरस वसन तन पोंछि सुहाये
षटरस भोजन जाय जिमाये ❁ यशुमति के सुख जायँ न गाये
शीतल जल कपूर रस रचयो ❁ लै भारी दुहुँ भैयन अचयो
भोर भयो मुख धोय उठे जब ❁ बीरे पान दये जननी तब
बीरा खात मुदित दोउ भाई ❁ ब्रजवासिन जूठनि सब पाई
यशुमति के सुख कौन गनावै ❁ शारदहू कहि पार न पावै
धन्य नन्द धनि यशुमति माता ❁ महिमा नहिं कहि सकै विधाता
ब्रह्मसनातन हैं प्रभु जोई ❁ जिनके पुत्र कहावत सोई
जो प्रभु सकल विश्वके स्वामी ❁ तीनलोक पति अन्तरयामी
विश्वम्भर निज नाम कहावैं ❁ ताहि यशोमति माय खवावैं
रात सुवावैं प्रात जगावैं ❁ बालक ज्यों फुसलाय लहावैं

दो० रहत मगन गुण श्यामके, निशिदिन आठौयाम।
महरि महर के प्राणधन, मोहन सुन्दरश्याम ॥

सो० हरि क्षण बिसरत नाहिं, ब्रजके नर नारी जिन्हिं।
मगन प्रेम मनमाहिं, निशिदिन जात न जानहीं ॥

अथ गोवर्द्धन लीला ॥

कृष्ण प्रेम ब्रज लोग समाने ❁ देव पितर सब काल भुलाने
कार्तिक सुदि परिवा जब होई ❁ इंद्रहि पूजत ब्रज सब कोई
ताकी सुधि बुधि सबन भुलाई ❁ सबके मनमें ध्यान कन्हाई
सो तिथि अति समीप जब आई ❁ तब यशुमति के उर सुधि आई
कहत नंद सों नँद की रानी ❁ सुरपति पूजा तुमहिं भुलानी

जाकी कृपा बसत ब्रजमाहीं ❀ एकहु वस्तु कमी कछु नाहीं
जाकी कृपा दूध दधि गाई ❀ सहस मथानी मथत सदाई
जाकी कृपा पुत्र हम पाये ❀ जासु कृपा सब बिघ्न नशाये
भई सकल ब्रज मांझ बड़ाई ❀ कुशल रहौ बलराम कन्हाई
सुरपति हैं कुलदेव हमारे ❀ गोप गाय ब्रज के रखवारे
तिनकी तुम सब सुरत भुलाई ❀ रहे दिवस पांचक अब आई
कहो सकल गोपन के राई ❀ इन्द्रयज्ञ की करो चढ़ाई

दो० भली दिवाई मोहिं सुधि, कहत महरि सों नन्द ।
भूलगये हम देव कों, काज मोह बश मन्द ॥

सो० हाथ जोरि नँदराय, बिनय करत सुरराय सों ।
तुमको गयों भुलाय, क्षमा कीजियो मोहिं प्रभु ॥

तबहिं नन्द उपनन्द बुलाये ❀ श्रीबृषभानु सहित सब आये
सबकों देखि नन्द सुख पायो ❀ महरि महर कहि शीश नवायो
अति आदर सबहीं को कीन्हो ❀ सादर सब को बैठक दीन्हो
मनहीं मन सब सोध कराहीं ❀ कंस कछू मांग्यो तौ नाहीं
राज अंश उनको जो होई ❀ बिन मांगे हम दीन्हों सोई
बूझत नन्दहि सब सकुचाये ❀ कौन काज हम सबन बुलाये
तबहिं नन्द सबको समझायो ❀ मैं तुमको यहिकाज बुलायो
सुरपति पूजा के दिन आये ❀ सो तुम सबहिन मिलि बिसराये
मोहूं राज काज लपटानो ❀ निशिदिन लौं महिमांझ भुलानो
इन्द्रयज्ञ की सुरत भुलानी ❀ अति समीप दिन पहुँचो आनी
तातें अब सब करो चढ़ाई ❀ इन्द्रयज्ञ कीजै सुखदाई
इंद्रहि को हम सदा मनावैं ❀ तिनहीं ते ब्रजजन सुख पावैं

दो० यह सुनि मन हर्षे सबै, देव काज़ जिय जान ।

हम सब भूले सुरपतिहिं, मन लागे पछतान ॥

सो० भली करी नँदराय, तुम हमको दीनी सुरत ।
सुरपति कों शिरनाय, क्षमा करावत पाप सब ॥

विदा होय सब गोप सिधाये ❀ घर घर बाजन लगे बधाये
पूजाकी विधि करत सबै मिलि ❀ जिहिजिहि भांति सदा आई चलि
अमित भांति पकवान मिठाई ❀ होत घरनि घर बरणि न जाई
नन्दमहर घर बजत बधाई ❀ गावत मंगल अति हर्षाई
नेवज करत यशोदा आतुर ❀ आठोसिद्धि घरहिं अति चातुर
मैदा के अनेक पकवाना ❀ वेसन के बहु करत विधाना
घृत मिष्टान सबै परिपूरण ❀ मिश्री करत पाक को चूरण
विविध भांति पकवान मिठाई ❀ कहँलगि नाम कहों सब गाई
और नारि ब्रजकी सँग लागीं ❀ घृत पक करत सबै अनुरागीं
जहां तहां कहुँ चढ़ी कढ़ाई ❀ यशुमति सबन सराहत जाई
जो सामा मांगति हैं जोई ❀ रोहिणि ताहि देति हैं सोई
महरि करति रचि और निहारे ❀ धरत जोरि विधि न्यारे न्यारे

दो० सैंति सैंति अति नियमसों, धरति अछूते जात ।
श्याम कहूँ परसै नहीं, यह मनमाहिं डरात ॥

सो० शंक करत मनमाहिं, सुरपति पूजा जानिजिय ।
यशुमति जानति नाहिं, सब देवनको देव हरि ॥

खेलत ते सन्तन सुखदाई ❀ भीतर आये कुँवर कन्हाई
जननी कहति इहां जिन आवै ❀ लरिकन को यह देव डरावै
रहे ठिठक आंगनहिं डराई ❀ मनहींमन हँसि कहत कन्हाई
मैया री मोहिं देव दिखैहै ❀ इतनो भोजन वह सब खैहै
यह सुनि खीझ कहत है मैया ❀ ऐसी बात न कहो कन्हैया

जोरि जोरि कर देव मनावै ❁ बालक को अपराध क्षमावै
बाहर चले श्याम अनखाई ❁ युवति कहत हरि गये रिसाई
जान देहु हरि अबहिं अयाने ❁ देवकाज बालक कह जाने
छू हैं कहूं श्याम यह भोजन ❁ उनकी पूजा जानै को जन
और नहीं हम काहू जानैं ❁ कै सुरपति के गोधन मानैं
यह कहि कहि इन्द्रहि शिर नावैं ❁ राम श्यामकी कुशल मनावैं
और देव नहिं तुमहिं सुरीशा ❁ कहँ नहिं कृपा करी सुरईशा

दो० ऐसे सुरपति यज्ञहित, यशुमति करति बिधान।
द्वारे बैठे नंद जहँ, गये तहां को कान्ह॥
सो० जुरे नंद ढिग आय, ब्रज के जे उपनंद सब।
बैठे अति सुख पाय, करत बात बिधि यज्ञकी॥

दीप मालिका रचिरचि साजत ❁ पुहुपमाल मराडली बिराजत
ढोल निशान बाजने बाजैं ❁ मुदित ग्वालगण जित तित राजैं
गैयन चित्र बिचित्र बनावैं ❁ अंगन आभूषण पहिरावैं
सात वर्ष के कुँवर कन्हाई ❁ खेलत मन आनंद बढ़ाई
द्वारन युवती चित्र बनावैं ❁ मंगलगान मुदित मन गावैं
सथिया रचि पुनि थापहिं हाथा ❁ पूजा देखि हँसे ब्रजनाथा
ब्रज आगे सुरपति की पूजा ❁ मोते और देव को दूजा
मों बासी मोंको नहिं जानैं ❁ मों अच्छत सुरपति को मानैं
ब्रज यह मेटौं यज्ञ बिहाने ❁ लीनो भाग बहुत दिन याने
अब बासिन पै आप पुजाऊं ❁ गिरि गोबर्द्धन नाम धराऊं
यह बिचार मन में ठहराई ❁ गये नंद ढिग कुँवर कन्हाई
हर्षि नंद कनियां पौढ़ाये ❁ बदन चूमि उर सों लपटाये

दो० तब हरि बोले नंदसों, मधुर मन्द मुसकाय।

करत पुजाई कौनकी, बाबा मोहिं बताय ॥
सो० कौन देव सो आहि, काहे को पूजत तिन्हैं।
मैं नहिं जानत ताहि, कहौ मोहिं समुझाय सब ॥
नंद कह्यो तब सुनहु कन्हाई ❀ इन्द्र सकल देवन को राई
तिन को पूजत गोप सदाई ❀ कुल में यहै रीति चलि आई
ताते तिन्हैं पूजियत ताता ❀ जाते कुशल रहौ दोउ भ्राता
या पूजा ते सुरपति हरषें ❀ ह्वै प्रसन्न तब जल वे बरषें
तृण अनाज उपजत है जाते ❀ गाय गोप सुख पावत ताते
याते सदा यज्ञ यह कीजै ❀ जो गोधन धन कबहुँ न छीजै
तब हरि कह्यो सुनहु नँद ताता ❀ ऐसे तुम जो कही यह बाता
जहां इन्द्र पूजत नहिं प्रानी ❀ तहां कहा वर्षत नहिं पानी
जब हरि ऐसे वचन सुनायो ❀ तब नंदहि उत्तर नहिं आयो
सुनि हरि वचन रहे सकुचाई ❀ मनहिं कहत चतुरंग कन्हाई
है वालक अवहीं अति नान्हा ❀ देवकार्य कह जानै कान्हा
तब चुचकार कह्यो नँदराई ❀ सदन जाउ तुम कुँवरकन्हाई
दो० ऐसे में जनि जाहु कहुँ, भीड़ बड़ी है तात।
को जानै किहि भाव को, कितधौं आवत जात ॥
सो० सोय रहो गोपाल, मेरे पलँगा जाय तुम।
मैं हूं आवत लाल, पाछे ते तुम्हरे निकट ॥
तब हरि मन यक बुद्धि उपाई ❀ बैठे और महर ढिग जाई
तिनको हरि यों कहि समुझायो ❀ आज मोहिं सपनो यक आयो
पुरुष पुनीत एक अति चारू ❀ चार भुजा तन सुभग शृंगारू
तिन मो सों यों कह्यो बुझाई ❀ इन्द्रहि पूजे कहा बड़ाई
मैं तुम को यक देव बताऊं ❀ गिरि गोवर्द्धन प्रकट दिखाऊं

यह पूजा तुम इनहिं चढ़ावो ❀ जाते मुहँ मांगे फल पावो
तुम आगे भोजन वह खैहै ❀ प्रकट आपनो रूप दिखैहै
चार पदारथ के ये दाता ❀ अनधन गोधन केतिक वाता
ऐसे देव छांड़ि घर माहीं ❀ तुम पूजत सुरपतिहिं वृथाहीं
कोटि इन्द्र क्षण में वे मारैं ❀ क्षणहीं में पुनि कोटि सँवारैं
गोबर्द्धन सम देव न दूजा ❀ करहु जाय उनहीं की पूजा
ताते मों मन में यह आई ❀ पूजहु गोवर्द्धन सब जाई

दो० चकित गोपसब बचन सुनि, कहत अकथयहबात।
सुने न अबलौं देव कहुँ, प्रकट होय के खात॥

सो० सुनी बात यह नन्द, शोचत सब उपनन्द मिलि।
कहा कहत नँद नन्द, समुझ परत नाहिं सपन यह॥

सुनि यह बात सबन ब्रज पाई ❀ देख्यो ऐसो सपन कन्हाई
सुरपति पूजा देत मिटाई ❀ गोवर्द्धन की करत बड़ाई
कोऊ कहत कान्ह कहै सांची ❀ कोऊ कहत बात यह कांची
बालक जानै कहा पुजाई ❀ कोऊ कहत कहै का भाई
कोऊ इन्द्रहि कहत सकाने ❀ हम तो कछु यह बात न जाने
हलधर कहत सुनो ब्रजबासी ❀ को महिमा जानत अविनासी
इनको बालक करि मति जानों ❀ जो हरि कह्यो सत्यकरि मानों
नन्द निकट जो गोप सयाने ❀ हरिको बल प्रताप सबजाने
कहत नन्द सों ते सुख पाई ❀ कीजे सोइ जो कहत कन्हाई
कहत नन्द तब सबन सुनाई ❀ मेरेहू मनमें यह आई
हरिको सपन झूठ नहिं होई ❀ है प्रतीति मेरे मन सोई
काली को सुपनो हरि देखो ❀ भयो प्रातही तासु विशेखो

दो० ताते सोई कीजिये, कान्ह कहैं जोइ बात।

सब ब्रजबासी पूजिये, गोवर्द्धन चलि प्रात ॥
सो० यहै मंत्र ठहराय, बूझत हरिसों हरषि सब।
कहौ कान्हसमुझाय, कौनभांति गिरिपूजिये ॥
हर्षि कान्ह तब सबन बुलायो ॐ इंद्रयज्ञ हित तुम जो बनायो
बहु व्यञ्जन पकवान मिठाई ॐ सो सब शकटन लेहु भराई
नाचत गावत सहित हुलासा ॐ चलहु सकल गोवर्द्धन पासा
तहां जाइ गिरिवरहिं मनाई ॐ पूजहु बहु विधि मंगल गाई
मांगि मांगि तुमसों गिरि लैहैं ॐ मुँह मांगे तुमको फल देहैं
मेरो कह्यो सत्य तुम जानों ॐ मेरो सपन झूठ मति मानों
यह परचौ तुम आंखिन देखो ॐ तबहिं मोहिं सांचो करि लेखो
जो चाहो ब्रज की ठकुराई ॐ तौ पूजौ गोवर्द्धन राई
कान्हर जो कछु आज्ञा दीन्ही ॐ सबहिन बात मान सो लीन्ही
कहहिं परस्पर सब सुख पाई ॐ चलहु गोवर्द्धन कहत कन्हाई
ब्रज घर घर सब होत कोलाहल ॐ फिरत गोप आनंद उमाहल
मिलत परस्पर अंकम लै लै ॐ शकटन साजत भोजन लै लै
दो० बहु व्यञ्जन पकवान बहु, बहुत मिठाई पाक।
रस गोरस मेवा विविध, अमित भांति के शाक ॥
सो० षटरस के सब भोग, कछु शकटन कछु कांवरन।
गृहगृहते ब्रजलोग, लैलै गिरि पूजन चले ॥
नन्द महर के घरकी सामा ॐ कहँलगि वर्ण बताऊं नामा
सहस शकट पकवान मिठाई ॐ रस गोरस बहु भार भराई
नन्द सदन ते लै बहु ग्वाला ॐ चले अग्र उर हर्ष विशाला
पट भूषण सब गोपन साजे ॐ भांति अनेक बाजने बाजे
नन्द महर अरु महरि जितेका ॐ और गोप बहुभीर अनेका

बलदाऊ अरु कुँवर कन्हैया ❀ सुभग शृँगार किये दोउ भैया
सखाबृन्द सुंदर सब लीन्हे ❀ कोटिकाम छवि लज्जित कीन्हे
शोभित नंद महर के साथा ❀ चले सकल पूजन गिरिनाथा
यशुमति अरु रोहिणि महतारी ❀ नंदगांव की अरु जे नारी
भूषण बसन सँवारि सँवारी ❀ चलीं हर्षि उर आनँद भारी
पुर बृषभान आदि जे ग्रामा ❀ चलीं सकल गोपनकी वामा
श्री राधा बृषभानुदुलारी ❀ ललितादिक सब गोपकुमारी

दो० नौ सत साजि शृँगार अति, पटभूषण बहुरंग।
यूथ यूथ जुरिकै चलीं, कीरति के संग॥
सो० सबके मन यह काम, देखनकों हरिरूप दृग।
परम मुदित सब बाम, सबके मन मोहन बसे॥

चन्द्रबदन सी सब मृगनयनी ❀ सकल सुघर सब कोकिलबयनी
नव यौवन में सबहि प्रबीना ❀ सबको मन मोहन आधीना
चलीं सकल गोबर्द्धन घाहीं ❀ भई भीर अति मारग माहीं
शकट बृन्द अरु गोप समूहा ❀ जात चले युवतिन के जूहा
कौतुक करत गोपगण राजैं ❀ ताल मृदंग अनेकन वाजैं
कोउ गावत कोउ नाचत जाहीं ❀ कोउ ठाढ़े मग पावत नाहीं
कोऊ शकटन साज सँवारे ❀ कोऊ एकन एक पुकारे
गावत मंगल गोपकुमारी ❀ निरखि श्याम छवि होत सुखारी
होत कुलाहल अति मगमाहीं ❀ कोऊ बात सुनत कछु नाहीं
कौतुक श्याम देखि हर्षाहीं ❀ अति उत्साह सबन मनमाहीं
सखन संग खेलत हरि जाहीं ❀ सबकी सुरत श्यामके माहीं
ब्रजबासिन की भीर सुहाई ❀ उपमा मोपै बरणि न जाई
छं० उपमा न मोपै जात बरणी भीर अति सुन्दर भई।

बढ़्यो आनँदसिंधु को सुख विविध तन धर सोहई ॥
छवि उजागर नगर केथों सुकृत पुंज सुहावने ।
तिन मध्य सबके श्याम नायकसकल लायक पावने ॥

दो० नंदसहर उपनंद सब, श्याम राम दोउ भाय ।
पहुँचे गोवर्द्धन निकट, निरखि शिखर सुखपाय ॥

सो० उतरे सहित समाज, चहूं ओर व्रज लोग सब ।
मधिशोभित गिरिराज, कोटिकामशोभासरस ॥

चहुँ दिशि फेर कोश चौरासी ❀ उतरे घेर सकल व्रजवासी
व्रजवासिन की भीर अपारा ❀ लगे चहूं दिशि चारु बजारा
वस्तु अनेक वरणि नहिं जाई ❀ बिन मोलहि सब सौंज बिकाई
ठौर ठौर व्रज युवती गावैं ❀ जहँ तहँ नटवा नाच दिखावैं
कहूं विदूषक हांस हँसावैं ❀ हर्ष मांझ अति हर्ष बढ़ावैं
नर नारी सब परम हुलासा ❀ अति आनंद उमग चहुं पासा
बूझत पूजन विधि नँदराई ❀ अधिकारी तहँ कुँवरकन्हाई
कह्यो कृष्ण तब विप्र बुलाई ❀ प्रथम यज्ञ आनंद कराई
पूछ वेद विधि तिनसों लीजै ❀ वाही विधि गिरिपूजा कीजै
तबहिं विप्र नँदराय बुलाये ❀ आदर सहित गोप लै आये
हरि को कह्यो मान तिन लीनों ❀ प्रथम अरम्भ यज्ञ को कीनों
परम रुचिर वेदिका बनाई ❀ सामवेद धुनि द्विजवर गाई

दो० देखनको धाये सबै, व्रज के नर अरु बाम ।
भयो देवता गिरि बड़ो, ताहि पुजावैं श्याम ॥

सो० बड़े महर उपनंद, नंद आदि ठाढ़े सबै ।
कहत जो कछु नँदनंद, करत सकल सोई तहां ॥

पंचामृत बहु कलश भराये ❀ डारि शिखर तें गिरि अन्हवाये

बहुरो लै गंगाजल ढार्यो ❀ चन्दन बन्दन तिलक सँवार्यो
भूषण बसन विचित्र चढ़ाये ❀ सुमन सुगंध माल पहिराये
धूप दीप करि आरति साजीं ❀ घण्टा शङ्ख झालरैं बाजीं
करत बेद धुनि बिप्र सुहाई ❀ चकृत नभ लखि सुर समुदाई
सुरपति पूजा कृष्ण मिटाई ❀ थाप्यो गिरि ब्रज तिलक चढ़ाई
देखि इन्द्र मन गर्ब बढ़ायो ❀ ब्रजबासिन के मन कह आयो
पूजत गिरिहि मोहिं बिसराई ❀ गिरि समेत ब्रज देउँ बहाई
पावहिं मम अपमान सजाई ❀ देखौं तब को करत सहाई
अब देखों मैं इनकी करनी ❀ उपजी है इनकी बुधि मरनी
गिरि को पूजत प्रेम बढ़ाई ❀ सपने को सुख लेत मनाई
कितक बार पुनि इनको मारत ❀ ऐसे सुरपति मनहिं बिचारत

दो० कह्यो कृष्ण तब नंद सों, भोजन लेहु मँगाय।
गिरि आगे सब राखि कै, अरु यह बिनय सुनाय॥

सो० यह सुनिकै नँदराय, ल्यावहु ग्वालनसों कह्यो।
लीन्ही तहां मँगाय, सामग्री सब भोगकी॥

नाना भांति जात पकवाना ❀ बिबिध मिठाई अमित समाना
षटरस ब्यंजन बहु तरकारी ❀ दही दूध सिखरन रुचिकारी
मधु मेवा फल फूल अनेका ❀ सुंदर स्वाद एकते एका
खीर आदि बहुभांति रसोई ❀ कहँलगि बरणि सकै सब कोई
मूंग भात अरु बरा पकौरी ❀ बहुतक दधिबोरी अरु कोरी
कियो अन्न को कूट सुहावन ❀ जैसो गिरि गोबर्द्धन पावन
परसि परसि गिरि आगे राखत ❀ जैसी बिधिसों मोहन भाखत
गिरिपूजत जिहि भांति कन्हाई ❀ तैसे सब ब्रज लोग लुगाई
गिरि गोबर्द्धन के चहुँ पासा ❀ कीनी बहुबिधि सहित हुलासा

ठौरहिं ठौर वेदिका राजै ॐ अन्नकूट चहुँ ओर विराजै
तिन मधि गोवर्द्धन गिरि पावन ॐ परम अनूप स्वरूप सुहावन
चंदन केशर रोरी हाथा ॐ शोभितअतिचहुँदिशि गिरिनाथा

दो० गिरि गोवर्द्धनरायकी, छवि नहिं परत लखाय।
ब्रजवासी जनके हिये, ध्यान परम सुखदाय॥

सो० महिमा अमित अपार, श्रीगोवर्द्धन अचलकी।
जेहिपूजत करतार, शारद विधि नहिं कहिसकें॥

प्रातहिं ते परसत भोजन सब ॐ गयोढरकि युगयाम तरणि तब
कह्यो श्याम सों तब नँदराई ॐ जेवहिं गिरिसों कहौ कन्हाई
तब हरि कह्यो सबन समुझाई ॐ भोग समर्पहु घंट बजाई
मनमें कछू खटक जिन राखो ॐ दीन वचन मुखतें कहि भाखो
नयन मूंद कै ध्यान लगावो ॐ प्रेम सहित करजोरि मनावो
हरि गोपन पूजा सिखरावैं ॐ अपनी पूजा आप करावैं
जिनपर कृपा करत नँदनंदन ॐ तिनसों आप करावत वंदन
सबन मानि हरि कह्यो जो लीनो ॐ बहु विधिगिरि आराधन कीनो
तब प्रकटे गोवर्द्धन नाथा ॐ यज्ञ पुरुष प्रभु श्रुतिके माथा
सहसभुजा तन श्याम तमाला ॐ मोर मुकुट बैजंती माला
नख शिख भूषण परम सुहाये ॐ अंग अंग छवि झलकन छाये
भये देखि ब्रज लोग सनाथा ॐ दियो दरश गोवर्द्धन नाथा

दो० जै जै जै कहि देवमुनि, वर्षत सुमन अकास।
ब्रजबासी जै जै करत, भये अनंद हुलास॥

सो० सहसौं भुजापसारि, लागे भोजन करन गिरि।
देखत ब्रज नर नारि, अति अद्भुत हरिके चरित॥

कहत मुदित सब लोग लुगाई ॐ कान्हहिं की शोभा गिरिराई

जैसे कान्ह श्याम तन सोहै ❀ तैसोई गिरिवर मन मोहै
तैसेइ कुण्डल तैसेइ माला ❀ तैसेइ चंचल नयन विशाला
तैसोइ मुकुट पीत पट तैसो ❀ नखशिख रूप कान्ह को जैसो
द्वै भुज हरि के परम सुहाई ❀ गिरि की भुजा सहस अधिकाई
देख दरश गिरिवर के रूरे ❀ नंद यशोदा आनँद पूरे
कहत कि बड़े देव हम पाये ❀ देखहु परगट दरश दिखाये
ऐसो देव सुन्यो नहिं देख्यो ❀ जीवन जन्म सुफल करि लेख्यो
ललिता राधहि कहत बुझाई ❀ मैं यह बात समुझ है पाई
यह लीला सब श्याम बनावैं ❀ आपुहिं जेंवत आप जिमावैं
मैं जानी हरि की चतुराई ❀ इन्द्रहिं मेटि आप बलि खाई
हैं इन के गुण अगम अगाधा ❀ मेरी बात मान तू राधा

दो० इतहि नंदको करगहैं, गोपन सों बतरात।
उतआपहिधरि सहसभुज, रुचिसों भोजनखात॥

सो० श्रीराधा सुखपाय, मुदितबिलोकत श्याम छबि।
भक्तनके सुखदाय, नितनव करत बिनोदब्रज॥

इत गोपन सँग हर्षित रहीं ❀ उत सबहिन को भोजन खाहीं
ग्वालिन एक बिलोकन हारी ❀ रहि बृषभान सदन रखवारी
तासु नाम बदरीला गायो ❀ तिन घरही ते भोग लगायो
प्रेमसहित बहु बिनय सुनाई ❀ सबके अन्तरयामि कन्हाई
ऐसे प्रीति क्षुधित बनवारी ❀ लई तासु बलि भुजा पसारी
भोजन करत परमरुचि मानी ❀ गुणसागर लीला यह ठानी
कहत नंद सों कुँवर कन्हाई ❀ मैं जो बात कही सो आई
अब तुम गिरि गोबर्द्धन जाने ❀ मेरे बचन सत्य करि माने
तुम देखत भोजन सब खायो ❀ परगट तुमको दरश देखायो

तुम्हरी भक्ति भाव पहिंचानी ❀ गिरि तुम्हरी पूजा सब मानी
अब तुम मांग्यो चाहौ जोई ❀ मांगि लेहु इनपै सब सोई
नंद कहत धनि धन्य कन्हाई ❀ यह पूजा तुम हमहिं बताई

दो० प्रीति रीति के भाव सों, भोजन सबके खाय।
ह्वै प्रसन्न अति नन्दसों, तब बोले गिरिराय॥
सो० लेहु नंद बरदान, अब जो तुम हम सों चहौ।
मैं लीनो सुख मान, बहुत करी तुम भक्तिमम॥

भली करी तुम मेरी पूजा ❀ सेवक तुम ते और न दूजा
तेरे सुत बल मोहन भाई ❀ इनको कुशल अनंद सदाई
मैंहीं इनको सपन दिखायों ❀ मैंहीं सुरपति यज्ञ मिटायों
अब जो सुरपति तुमहिं रिसाई ❀ जल बर्षै ब्रज ऊपर आई
तौ तुम अपने जिय मति डरियो ❀ कान्ह कहै सोई तुम करियो
अब तुम मम प्रसाद लै खाहू ❀ अपने अपने घर सब जाहू
ब्रज में बसो निशंक सदाहीं ❀ और कछू मांगौ हम पाहीं
यह सुनि चकित सकलब्रजनारी ❀ भोजन कियो प्रथम गिरिधारी
अब बोलत मुख बचन प्रमाना ❀ ऐसे परछत देव न आना
नन्द कह्यो कह मांगों स्वामी ❀ देखि दरश भयो पूरण कामी
सकलसिद्धि सुख तुम्हरो दीनो ❀ कृपासिन्धु मैं तुम्हरो कीनो
मोह बिवश प्रभु तुमहिं बिसारे ❀ भूल फिरयों देवन के द्वारे

छं० फिरयों भूल्यो देव द्वारन नाथ तुमहिं बिसारके।
पूजा तुम्हारी कहा जानें हम अहीर गँवारके॥
आपही करिकृपा दीन्हयो स्वप्न श्यामहि आयकें।
दई बालक को बड़ाई नाथ यह अपनायकें॥
अब हमें डर कौनको प्रभु शरण तुम्हरी पायकें।

इन्द्र कह करि है हमारो नाथ ब्रजपर आयकै ॥
तुमहिं करता हौ सबन के तुमहिं सबके ईश हौ।
कोटि कोटि ब्रह्मांड तुम्हरे रोमप्रति जगदीश हौ ॥
श्याम हलधर दास तेरे कुशल ये दोऊ रहैं।
करि कृपा यह देहु प्रभु हम और कछु नाहीं चहैं ॥
सुतनलै दोउ डारि गिरिपद आप नँद चरणन परे।
बिहँसि गिरिलखि प्रीति पंकज पाणि दुहुँ माथे धरे ॥

दो० नंद गोप उपनंद सब, श्रीवृषभान समेत।
बारबार गिरिराज के, चरण परत अतिहेत ॥

सो० करिसबको सनमान, दै प्रसाद निज पाणिसों।
सबन कह्यो घरजान, ह्वै प्रसन्न गिरिराज तब ॥

चलहु घरन तब कह्यो कन्हाई ❀ भये प्रसन्न देव गिरिराई
भलीभांति पूजा तुम कीनी ❀ गिरिवर राज मान सब लीनी
दोउ कर जोरि भये सब ठाढ़े ❀ भक्तिभाव सबके मन बाढ़े
हरि करि परिकरमा सब गिरिकों ❀ परसत चरण चलत ब्रज घरकों
देखि चकित गण गन्धब सुरमुनि ❀ कहत धन्य ब्रजवासी गुण गुनि
धन्य नन्द को सुकृत पुरातन ❀ धन्य धन्य पर्वत गोवर्द्धन
करत प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि ❀ वरषिसुमनकरिकरि जयजयधुनि
निज निज लोकन देव सिधाये ❀ ब्रजवासी सब ब्रज को धाये
मुदित सकल ब्रजलोग लुगाई ❀ गोबर्द्धन की करत बड़ाई
कहत धन्य यशुमति को जायो ❀ बड़ो देवता कान्ह पुजायो
अब इन ते ब्रज में सुख पैहैं ❀ गोप गाय सब सुख सों रैहैं
बर्ष बर्ष प्रति इन्द्र पुजायो ❀ कबहूं प्रगट दरश नहिं पायो

दो० प्रगट देत हैं दरश गिरि, सबके आगे खात।

परम हर्ष नर नारि सब, सबके मुख यह बात ॥

सो० खेलत नित नव ख्याल, भक्तपाल नँदलालब्रज ।
दुष्टनके उरशाल, सुर नर मुनि मोहत निरखि ॥

इन्द्र देखि गोवर्द्धन पूजा ❀ कियो क्रोध मोसम को दूजा
ब्रजवासिन मोको बिसरायो ❀ मेरो बलि लै गिरिहि चढ़ायो
नेक नहीं शङ्का उर आनी ❀ कछू कानि मेरी नहिं मानी
तेंतिस कोटि सुरन को नायक ❀ मेववर्त्त सब मेरे पायक
कियो अहीरन मम अपमाना ❀ का धौं इन अपने मन जाना
जान बूझ इन मोहिं भुलायो ❀ गिरिहि थाप शिर तिलक चढ़ायो
काहू उन्हें दियो बहँकाई ❀ मरणकाल ऐसी मति आई
तुरत इन्हें अब देहुँ सजाई ❀ देखों धौं को करत सहाई
पर्वत पहिले खोदि बहाऊं ❀ ब्रजजन मारि पताल पठाऊं
फूल फूल भोजन जिन कीन्हों ❀ नेक न राखों ताको चीन्हों
सकल गोप यह नैनन देखैं ❀ बड़े देवता को फल लेखें
ता पाछे ब्रज देउँ बहाई ❀ भुव पर खोज रहे नहिं राई

दो० ऐसे सुरपति क्रोध करि, मनमें गर्व बढ़ाय ।
प्रलयकाल के मेघ सब, लीने तुरत बुलाय ॥

सो० तिनहि कह्यो सुरराय, ब्रज पर वर्षो जाय तुम ।
पर्वत प्रथम मिटाय, पुनि बोरहु ब्रजलोक सब ॥

मोसों अहिरन करी ढिठाई ❀ मेरी बलि परबतहि खवाई
ता कारण मैं तुमहिं बुलाये ❀ सेन समेत जाहु सब धाये
गिरि समेत सब देहु बहाई ❀ भूतल खोज रहे नहिं राई
सुरपति बचन सुनत घन तमके ❀ कापर क्रोध करत प्रभु मनके
केतक गिरि ब्रज हमरे आगे ❀ तुम प्रभु क्रोध करत केहि लागे

क्षणहीं में ब्रज खोद बहावैं ❀ डूंगर को घर नाम मिटावैं
होत प्रलय प्रभु हमरे पानी ❀ रहत अक्षयबट तनक निशानी
आप क्षमा कीजै सुरराई ❀ हम करि हैं उनकी पहुनाई
यह सुनि सुनासीर सुख पायो ❀ हर्षि पान दै तिनहिं चढ़ायो
चले मेघ सब शीश नवाई ❀ आये ब्रज के ऊपर धाई
क्षणहीं में रबि गगन छिपाने ❀ देखतही देखत अधिकाने
कीनों शब्द गरज घन भारी ❀ अतिही घटा भयावन कारी

छं० अतिही भयानक घटा कारी कज्जलहु पटतर नहीं।
घेर लीन्ह्यो ब्रज चहूं दिशि पवन प्रलय झकोरहीं॥
गरजत गगन घनघोर तड़पत तड़ित वारहिं वारहीं।
होत शब्द अघात ब्रजनर नारि चकित निहारहीं॥
गये बन जे गाय लै ते धाय फिर ब्रज आवहीं।
अन्ध धुन्ध अपार खोजत धाम पंथ न पावहीं॥
सैंतत जहां तहँ वस्तु सब नर नारि मन शोचत महा।
वैर सुरपति सों कियो अब होन धौं चाहत कहा॥

दो० उमड़ि घुमड़ि घहराय घन, परन लगे जल जोर।
टेरत सुतको मात पितु, ब्रज गलबल चहुँ ओर॥

सो० ब्रजजन सकल बिहाल, बिललाने जित तित फिरत।
श्याम करत यह ख्याल, देखि देखि मनमें हँसत॥

अति व्याकुल जहँ तहँ नर नारी ❀ कहत देत पर्बत को गारी
आये पूजि गोबर्द्धन जाई ❀ सुरपति निज कुलदेव मिटाई
दीनो गिरिवर यह फल भारी ❀ लेहु सबै अब गोद पसारी
चढ्यो प्रचारि कोप सुरराई ❀ देत पलक में ब्रजहि बहाई
जो पै बड़े देव गिरिराजू ❀ तौ किन आय बचावत आजू

नन्दसुवन यह पूजा ठानी ❀ ताते इन्द्र चढ्यो रिस मानी
कहति यशोमति सों ब्रजबाला ❀ कहा काम यह कियो गोपाला
सुरपति हैं कुलदेव हमारे ❀ ब्रज ते मेटि दिये ते न्यारे
चढ्यो आय ब्रज ऊपर सोई ❀ अब सहाय काहे न गिरि होई
घन गरजत तरजत अति भारी ❀ देखि देखि डरपत नरनारी
सकल विकल भय मन पछिताहीं ❀ लरका दुबद गोद के माहीं
भये शोच वश सब ब्रजलोगा ❀ कहत बन्यो अब मरण सँयोगा।

दो० देखि देखि ब्रजकी दशा, नन्दमहर पछितात।
किया निरादर इन्द्र को, मनमें बहुत डरात॥
सो० श्यामराम दोउ भाय, लिये निकट शोचत महरि।
जुरे गोप तहँ आय, मनहीं मन मुसुकात हरि॥

कहत कृष्ण सों सब ब्रजबासी ❀ सुनहु श्याम सुन्दर सुखरासी
तुम तो सुरपति यज्ञ मिटायो ❀ ब्रजबासिन पै गिरिहिं पुजायो
तुम्हरे कहे अहो ब्रजमण्डन ❀ सुरपति मान कियो हम खण्डन
ताही ते सुरराज रिसाई ❀ दिये प्रलय के मेघ पठाई
वर्षत ते मघवा के पायक ❀ विषमबूँद लागत जनु शायक
भीजत गाय गोप गोसुत सब ❀ धारिकरौहिं बूड़त है ब्रज अब
राखि लेहु अब ब्रजके नायक ❀ तुमहीं यह दुख मेटन लायक
दावानल ते राखे जैसें ❀ अब जलते राखो हरि तैसें
बकी विनाशन शकट सँहारन ❀ तृणावर्त वत्सासुर मारन
अघमर्दन बकबदन विदारन ❀ तुमहीं ब्रजजन के दुखटारन
दीजै अभय वेगि नँदलाला ❀ वर्षत मेघ महा विकराला
राखि लेहु बूड़त ब्रज खेरो ❀ अब चितवत हरि मन मुख तेरो

दो० जब जब गाढ़ परी हमैं, तब तुम किया उबार।

इहि अवसर अब राखिये, मोहन नन्दकुमार ॥
सो० ब्रजजनके सुखदान, देखि बिकल ब्रजलोग सब।
हँसि बोले तब कान्ह, धरहु धीर उर टरहु मति ॥

चलहु सकल मिलि गिरिके पाहीं ❋ उनको ध्यान धरहु मनमाहीं
करि लेहैं ब्रजराज सहाई ❋ रहिहैं सुरपति मन पछिताई
यह कहि हरि गोवर्द्धन आयो ❋ अभयबाँह दै सवन बुलायो
गाय बत्स ब्रज लोग लुगाई ❋ गये सकल हरिके सँग धाई
सबही के देखत गहि धरतें ❋ उचक लियो गिरिवर हरि करतें
छिंगली छोर बाम कर राख्यो ❋ तब हरि ब्रजवासिनते भाख्यो
करी सहाय देव गिरिराया ❋ आवहु तुम सब इनकी छाया
गाय गोप गोसुत नर नारी ❋ भये सकल क्षणमाहिं सुखारी
चकित देखि सब लोग लुगाई ❋ कहत धन्य तुम कुँवरकन्हाई
प्रेम उमँग उर आनँद भरिके ❋ परसत चरण धाय सब हरिके
कान्ह कहत देखहु गिरिराई ❋ कीन्हीं केहि विधि तुरत सहाई
भक्तन हित हरि गिरिहिं उठायो ❋ तब तें गिरिधर नाम कहायो

छ० परेउ तबते नाम गिरिधर बामकर गिरिवर धस्यो।
देखि व्याकुल सकल ब्रजको शोच इक क्षण में हस्यो ॥
करत जय जय गोप गोपी सकल मन आनँद भरे।
श्याम सब के मध्य ठाढ़े करजनख गिरिवर धरे ॥
परि अखण्डित धार मूशल सलिल की वर्षा करे।
अन्ध धुन्ध अकाश चहुँदिशि सबन झकझोरत खरे ॥
वज्रनीर गँभीर पुनि पुनि गरज परबत पर गिरे।
करत अति उतपात ब्रज पर मेघ परलै के फिरे ॥

दो० बार बार चपला चमकि, झकझोरत चहुँ ओर।

अर अरर आकाश ते, जल डारत घन घोर ॥
सो० हरि के सुखदाय, गिरि कीन्हों विस्तार अति।
सब जन लियो बचाय, बूंद न आवत भूमिपर ॥
कहत गोप मनहिं डराई ॥ गिरिवर नीके धरहु कन्हाई
महाप्रलय प यह भारी ॥ अति कोमल भुज तनक तुम्हारी
नखतें गिरिवर शीर को धारै ॥ ऐसे बल विन कौन सँभारै
देखि नन्द व्य ल मनमाहीं ॥ महाभार गिरि कोमल बाहीं
दाबत भुजा गोमति मैया ॥ बार बार मुख लेत बलैया
देखि भार मन अति दुख पावै ॥ पुनि पुनि गोवर्द्धनहिं मनावै
नाथ आपनो भार सँभारी ॥ करियो कान्हर की रखवारी
पय पकवान मिठाई मेवा ॥ बहुरि पूजि हों तुम को देवा
मात पितहि ह देखि दुखारी ॥ तब इक बुद्धि करी गिरिधारी
कह्यो नन्दसों निकट बुलाई ॥ तुमहूं सब मिलि करहु सहाई
लैलै लकुट रा खि गिरि लेहू ॥ मति राखहु उरमें सन्देहू
गोवर्द्धन गिरि भया सहाई ॥ आप कह्यो मोहिं लेहु उठाई
दो० यहसुनि जहँ तहँ गोप सब, रहे लकुट गिरि लाय।
कहत श्याम तब नन्द सों, भले लियो उचकाय ॥
सो० ठाढ़े ढिग बलराम, देखि देखि लीला हँसत।
कौतुक निधि सुखधाम, करत चरित संतनसुखद ॥
सात दिवस न बीते यहि भांती ॥ वर्षत जल जलधर दिन राती
कोपि कों रू प डारत जलधारा ॥ मिटी न ब्रज की नेकु लगारा
जलत जल द जल बीचहिं अंतर ॥ वैसेइ गिरि वैसेइ ब्रज सुन्दर
धर जल ए पवन अनल नभ जाको ॥ सुरपति कहा करिसकै ताको
भये न चल जलद जलतें सब रीते ॥ रह्यो एक गुण द्वै गुण बीते

कहत बात आपस में बादर ❀ पठयो इन्द्र हमैं दै आदर
कह्यो देहु ब्रज जाय बहाई ❀ कहिहैं कहा जाय अब भाई
महाप्रलय जल बर्षे आनी ❀ ब्रजमें बूँद न पहुँच्यो पानी
भये मेघ मन में सब कादर ❀ अब करिहैं सुरराज निरादर
अति भय तनकी दशा भुलाने ❀ गये इन्द्र पैं सबै खिसाने
कहत मेघ सुरपति के पाहीं ❀ सुनहु देव हम कहत डराहीं
कै मारो कै शरण उबारो ❀ ब्रज पै जोर न चलत हमारो

दो० सात दिवस परलै सलिल, हम बर्षे ब्रज जाय।
ब्रजबासी भागे नहीं, निदर्यो हमैं बनाय॥

सो० निघट गयो सब बारि, एक बूंद पहुंची न घर।
यह अचरज अतिभारि, कहत लगत लज्जा हमैं॥

यह सुनि चकित भयो सुरराई ❀ पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई
कहा भयो परलय को पानी ❀ यह कछु ब्रजकी बात न जानी
सुरपति मन यह करत बिचारा ❀ परबत में कोउ है अवतारा
तब सुरेश सब देव बुलाये ❀ आज्ञा सुनत तुरत सब आये
देवन आय सबन शिर नायो ❀ कौन काज सुरराज बुलायो
तबहीं देवन सों सुरराई ❀ ब्रजबासिन की बात सुनाई
बीते बर्ष देत हैं पूजा ❀ सो अब देव कियो उन दूजा
मोहिं मेटि पर्वत को थाप्यो ❀ ताते मैं अति रिस करि कांप्यो
दिये प्रलय के मेघ पठाई ❀ आवहु ब्रजगिरिसहित बहाई
ते बर्षे परलै जल जाई ❀ ब्रजमें नीर न पहुंच्यो राई
आयो मेघ द्वार सब रोई ❀ कारण कहा कहो सो मोई
देवन कह्यो सुनौ सुरईशा ❀ प्रकट्यो ब्रजहिं ब्रह्म जगदीशा

दो० तुम जानत प्रभु भूमि जब, दुखित पुकारी जाय।

कह्यो कौन अवतार तब, सो विहरत ब्रज आय ॥

सो० कहै इन्द्र पछिताय, मैं भूल्यों जान्यों नहीं।
कीनी बहुत ढिठाय, भयकर मन व्याकुल भयो ॥

मैं सुरपति जिनहीं को कीनो ❀ तिन आगे चाहों बल लीनो
रवि आगे खद्योत उजेरी ❀ तैसी बुद्धि भई है मेरी
कीनी बहुतें मैं अधिकाई ❀ कहा करौं अब मन पछिताई
सुरन कही सुनिये सुरराई ❀ ब्रजहिं चलौ नहिं आन उपाई
वै हैं प्रभु दयाल करुणा कर ❀ क्षमा करेंगे श्री सुन्दर बर
सुनि विचार कीनो सुरराजा ❀ यद्यपि बदन दिखावत लाजा
तद्यपि वे स्वामी मैं दासा ❀ करिहैं कृपा अवशि मोहिं आसा
अब नहिं बनत रहे मुखगोई ❀ शरण गये जो होय सो होई
यह विचार मन में ठहराई ❀ चल्यो शरण सुरसंग लिवाई
कामधेनु करि अग्र सुहाई ❀ शोचत चल्यो ब्रजहिं ससुहाई
अति सकोच सुरपति मनमाहीं ❀ आगे धरत परत पग नाहीं
जगत पिता सों करी ढिठाई ❀ कहिहौं कहा बदन दिखराई

दो० शरण शरण कहि चरण परि, परिहौं जाय उताल।
शरणागत पालन विरद, तजिहैं नाहिं गोपाल ॥

सो० दीन वचन सुनि कान, करिहैं कृपा कृपालु प्रभु।
यहै करत अनुमान, सुरनायक आयो ब्रजहिं॥

देखि सुरन की भीर अहीरा ❀ अति डरपे उर भये अधीरा
दौरि कृष्ण सों जाय सुनायो ❀ सुरपति आप सैन सजि आयो
कहत श्याम हँसि मतिहि डरावो ❀ गिरिवर तजि कितहूं मति जावो
ब्रज बाहर सेना सब राखी ❀ बाहन ते उतरयो सहमाखी
सकुचत चल्यो कृष्ण के पासा ❀ कछुक दुखित मन कछुक उदासा

धाय पर्‍यो चरणन पर जाई ❁ कृपासिंधु राखो शरणाई
बिसर्‍यो तुमहिं तुम्हारी माया ❁ अब तुम बिन नहिं और सहाया
शरण शरण पुनि पुनि कहि बानी ❁ धोये चरण नयन के पानी
राखि राखि त्रिभुवन के राई ❁ मोतें चूक पड़ी अधिकाई
मैं अपराध कियो अनजानी ❁ क्षमा करौ प्रभुजन सुखदानी
जो बालक पितुसों बिरुझाई ❁ लेत पिता तेहि गोद उठाई
ऐसेहि मोहिं करो जन ताता ❁ जैसे सुतहित पित अरु माता

दो० ब्याकुल देखि सुरेश अति, दीनबन्धु यदुराय ।
अभयकियोकरमाथधरि, भुजगहिलियोउठाय ॥

सो० लीनों हृदय लगाय, देखि दीनता इन्द्र की ।
शिर नहिं सकत उठाय, बार बार परसत चरण ॥

कहत इन्द्र सों कुँवर कन्हाई ❁ तुम कत सकुचतहौ सुरराई
हम तुम सों कीनी अधिकाई ❁ तुम्हरी पूजा हम सब खाई
भली करी ब्रज वर्षे पानी ❁ हम कछु तुमसों रिस नहिं मानी
यह दीनी मेरी ठकुराई ❁ तुम नहिं जानत करी ढिठाई
कहा भयो जो मेघ पठाये ❁ मैं सब ब्रज के लोग बचाये
तुम कछु उरमें शोच न आनौं ❁ मैं तुम सों कछु बुरो न मानौं
भली करी ब्रज देखन आये ❁ तुम मेरे मनमें अति भाये
अपने मनकी शोच मिटाई ❁ देवन सहित करौ सुख जाई
सुनि हरि बचन देवगण हर्षे ❁ जय जय करि कुसुमांजलि वर्षे
पुलकि अंग मुख गद्‌गद बानी ❁ कहत धन्य प्रभु जन सुखदानी
अशरण शरण तुम्हारो बानो ❁ यह लीला सब तुमहीं जानो
धन्य धन्य सब ब्रजके बासी ❁ जिनके प्रेम बिवश अबिनासी

दो० प्रभुहिं देखि अनुकूल मन, धीर कियो सुरराय ।

मिटी त्रास उर तें तऊ, बार बार पछिताय ॥
सो० कहत बारहीं बार, तुम गति अगम अगाध प्रभु ।
मैं भूल्यों संसार, जान्यों व्रज अवतार नहिं ॥

प्रभु आगे चाहों मैं पूजा ❀ मो ते मन्द और को दूजा
अहो नाथ तुम प्रभु मैं दासा ❀ रवि आगे खद्योत प्रकासा
मेरो गर्व कितक यह बाता ❀ कोटिन इन्द्र तुम्हारे गाता
मैं अपराध कियो यह भारी ❀ प्रभु राख्यो निज ओर निहारी
दीनबन्धु तुम जन हितकारी ❀ बिरद बखानत वेद पुकारी
कृपा करी प्रभु दरशन पाये ❀ भयो सुखी तन ताप नशाये
ये दिन वृथा गये बिन काजा ❀ तुमको नहिं जान्यों व्रजराजा
धन्य धन्य प्रभु गिरिवरधारी ❀ भञ्जन बिपति भक्त हितकारी
दैत्य दलन प्रभु भार उतारन ❀ संत धेनु द्विज हित तन धारन
अब प्रभु मोहिं कृपा यह करिये ❀ गिरिवरधर गिरिधर पर धरिये
सुनि बिनती हरि भये सुखारी ❀ तब गिरि करतें धर्यो उतारी
सुरन सहित सुरराज अनन्दे ❀ कामधेनु ले प्रभु पद बन्दे

छं० करत अस्तुति जोर कर सुर धेनु आगे राखिकैं ।
वन्दि प्रभुपद पुलकि पुनि पुनि नाम गोविंद भाखिकैं ॥
जै जै कृपालु मुकुन्द माधव कृष्ण अगणित गति हरे ।
गोपपति राजीवलोचन करज नख गिरिवर धरे ॥
बासुदेव व्रजेन्द्र यदुपति कंस अरि सुर रञ्जने ।
हरण भव भय भार महि अहिराज बिष पद गञ्जने ॥
बकी तिरणावर्त बत्सासुर बका अघ नाशनं ।
अतिहि दुष्ट अरिष्ट धेनुक असुर बंश बिनाशनं ॥
चोरि माखन खात व्रज घर भञ्जि तरु जन दुख हरे ।

योगि जन जप तप न पावत धन्य ब्रजजन बश करे ॥
धन्य गोकुल धन्य यमुना धन्य ब्रज वृन्दावने ।
धन्य गोपी गोप यशुदा नन्द गिरि गोवर्द्धने ॥
फिरत चारत धेनु निज पद पद्म फणिअहि प्रति धरे ।
शकट भंजन भक्त रंजन रास निर्तत गुण भरे ॥
जनक सुरसरि शिवसनक धन श्री नहीं छांड़त घरी ।
परसते पद भयो पावन जयति जै जै जै हरी ॥

दो० करि अस्तुति मन हर्षि अति, पर्यो शक्र प्रभु पाँय ।
है प्रसन्न सुर धेनुपति, विदा कियो यदुराय ॥

सो० पुनिपुनि प्रभुपदबन्दि, सुरलोकहिं सुरपतिगयो ।
ब्रजजनपरमानन्द, चकितविलोकतश्यामतन ॥

कहत गोप सब आपस माहीं ❁ इन सम और जगत कोउ नाहीं
सात बर्ष को बालक जोई ❁ ताहि इतो बल कैसे होई
हैं ये पारब्रह्म भगवाना ❁ करत चरित्र देह धरि नाना
दैत्य किते छल करि करि आये ❁ ते सब इन कौतुकहि नशाये
इन्द्र मेटि गिरिवरहिं पुजायो ❁ ताभें निज स्वरूप प्रगटायो
इन्द्र प्रलय घन दियो पटाई ❁ सात दिवस ब्रज वरषे आई
अति विस्तार बढ़ो अति भारी ❁ लीनो गिरिवर कर पर धारी
एक बूंद ब्रज में नहिं आई ❁ लीन्हो सब ब्रजलोक बचाई
हारि मानि सुरपति भय पाई ❁ आन पर्यो चरणन शिर नाई
कामधेनु देवन को ल्यायो ❁ ताहि अभय करि फेरि पठायो
अचरज बात जात नहिं बरणी ❁ मानुप सों यह होय न करणी
परे गोप हरि चरणन आई ❁ कहत धन्य तुम कुँवरकन्हाई

दो० हम तुमको जानैं नहीं, हौ तुम त्रिभुवनराय ।

ब्रजवासिन सुखदेन को, ब्रजमें प्रगटे आय ॥
सो० तुम करलेत सहाय, परत जहां संकट विकट ।
लीनों हमें बचाय, विपतें जलतें अनल तें ॥
करत विचार युवति सब ठाढ़ी ❀ प्रेम उमँग मन आनँद बाढ़ी
कैसे गिरिवर लियो उठाई ❀ अति कोमल तन श्याम कन्हाई
लेत धरत जान्यो नहिं काहू ❀ धन्य धन्य हरि को यह बाहू
सात दिवस परलै जल ढाख्यो ❀ इन्द्र पख्यो चरणन जब हाख्यो
कहत सखा धनि धन्य गोपाला ❀ कैसे गिरि कर धख्यो विशाला
यह करतूत करत तुम कैसे ❀ हम सँग सदा रहत हो ऐसे
गाय चरावत हो मिलि हमसों ❀ केतिक बल है बूझत तुमसों
धाय चरण गहि यशुमति मैया ❀ मुख चूंबति अरु लेत बलैया
अतिही नेह नयन भर पानी ❀ तन पुलकित मुख गद्‌गद बानी
कैसे कर जु धख्यो गिरि ताता ❀ अति कोमल भुज तुम दिन साता
बिहँसि मात सों कहत कन्हैया ❀ तेरी सों सुन यशुमति मैया
मैं न उठावत री श्रम पायो ❀ नेक छुयो उठि आपुहि आयो
दो० अब गिरिको पूजो बहुरि, सबसों कह्यो कन्हाय ।
बूड़त तें राख्यो उनहिं, कीनी बहुत सहाय ॥
सो० यह सुनि हर्ष बढ़ाय, बहुरो गिरि पूज्यो सबन ।
अति हर्षित नँदराय, दिये दान विप्रन विपुल ॥
अक्षत रोरी पान मिठाई ❀ पुप्प हार दधि दूब सुहाई
यशुमति रोहिणि अरु ब्रजनारी ❀ सजि सजि लाईं कंचनथारी
हरिको तिलक कियो दोउ माता ❀ पुलकि प्रेम परिपूरण गाता
बहुतक द्रव्य निछावर कीनो ❀ भुजगहि लाय कंठसों लीनो
ब्रजतिय हरिको तिलक बनावें ❀ फूल माल गरमें पहिरावें

इहिमिसि अंग परस सुख पावैं ❀ निरखि बदन छबि बिधिहि मनावैं
होहिं हमारे पति गिरिधारी ❀ मनमोहन सुन्दर बनवारी
यह कामना सकल उरधारी ❀ हरि छबि निरखति गोपकुमारी
कह्यो नंद सों तब गिरिधारी ❀ सुनहु तात अब बात हमारी
गोबर्द्धन को करौ प्रणामा ❀ चलिये अब सब निज निज धामा
यह सुनि सबनि गिरिहिं शिरनाई ❀ चले ब्रजहि मन हर्ष बढ़ाई
आये सदन सकल ब्रजबासी ❀ सहित श्यामसुन्दर सुखरासी

दो० घर घर ब्रज आनन्द सब, गावत मंगलचार।
आयो सुरपति जीत हरि, गिरिधर नन्दकुमार॥

सो० ब्रजमंगल ब्रजमोद, ब्रज आभूषण गिरिधरन।
नित नव करत बिनोद, ब्रजबासी ब्रजदासहित॥

अथ नन्द एकादशी बरुण लीला॥

इंद्रहि जीति श्याम घर आये ❀ ब्रज घर घर आनंद बधाये
ता दिन दशमी भई सुहाई ❀ कातिक शुक्ल एकादशि आई
भक्तिमुक्ति दायक अति पावन ❀ पाप शाप संताप नशावन
नन्द एकादशि ब्रत प्रतिपालैं ❀ बेद बिदित सब धर्म सँभालैं
प्रथमहिं दशमी संगम कीनो ❀ बहुरि एकादशि को ब्रत लीनो
निराहार निरजल दृढ़ नेमा ❀ नारायण पद पंकज प्रेमा
और काज कछु मनहिं न लायो ❀ भजन करत सब दिवस बितायो
निशि जागरण करन बिधि ठानी ❀ प्रभु मंदिर लीप्यो निज पानी
पाटम्बर वर दिव्य बिछाये ❀ बिबिध पुनीत सुगंध सिंचाये
बांधी बन्दनवार सुहाई ❀ सुमन सुगंध माल लटकाई
चौक चारु बहु रंगन पूर्यो ❀ सिंहासन तहँ राख्यो रूर्यो
शालग्राम तहां पधराये ❀ भूषण बसन बिचित्र बनाये

दो० धूप दीप नैवेद्य करि, प्रभु पर पुष्प चढ़ाय।
करी आरती प्रेम सों, घंटा शंख बजाय॥
सो० प्रभु पद नायो माथ, करि परदक्षिण दण्डवत।
तुम त्रिभुवनके नाथ, जोरि हाथ अस्तुति करी॥

आदर सहित करी नँद पूजा ❀ प्रेम भक्ति उर भाव न दूजा
करत कीरतन भजन सप्रीती ❀ तीनि याम यामिनि जब बीती
तबहिं महरि नँदराय बुलाई ❀ कह्यो यशोमति सों समुझाई
एक दण्ड द्वादशी सकारे ❀ पारन की विधि करो सवारे
यह कहि नंद यशोमति पाहीं ❀ लै झारी धोती कर माहीं
गये न्हान यमुना के तीरा ❀ संग नहीं कोउ तहां अहीरा
झारी भरि यमुनाजल लीनो ❀ बाहर जाय देह कृत कीनो
लै माटी कर चरण पखारी ❀ अति उत्तम सों करी मुखारी
अचमन लै बैठे नँदपानी ❀ वरुणदूत जल बाजत जानी
नन्दहि लैगे पकरि पताला ❀ वरुण पास पहुँचे ततकाला
जान्यो वरुण कृष्ण के ताता ❀ भयो हरष मन गुन यह बाता
अन्तरयामी प्रभु घनश्यामा ❀ नन्द लेन ऐहैं मम धामा

दो० भयो वरुण अतिहर्षमन, पुनिपुनिपुलकितगात।
नन्दहिं ल्याये भृत्य मम, भली भई यह बात॥
सो० सो प्रभु कृपानिधान, ऐहैं धनि धनि भाग्य मम।
जाहि धरत मुनि ध्यान, निगमनेति जेहि गावहीं॥

हर्ष सहित नंदहिं जलराई ❀ भीतर महलन गये लिवाई
सादर विनय वचन बहु भाखे ❀ धीरज दे नीके नँद राखे
रानी सवन नंद को देख्यो ❀ जन्म सुफल अपनो करि लेख्यो
कहत कि धनि धनि भाग्य हमारे ❀ नन्द हमारे सदन पधारे

जिनके सुत त्रैलोक्य गुसाईं ❀ सुर नर मुनि सबही के साईं
चितवत पंथ वरुण मन लाये ❀ करुणामय अब आवत धाये
यशुमति शोच करत मन माहीं ❀ भई वेर आये नँद नाहीं
खवर लेन तव ग्वाल पठाये ❀ यमुना तट नहिं नंदहिं पाये
झारी धोती तट पर देखी ❀ भये शोच सब ग्वाल विशेखी
इत उत खोज ग्वाल फिर आये ❀ कहत महरि सों नन्द न पाये
झारी धोती तटपर पाई ❀ सुनत महरि मुख गयो झुराई
निशा अकेले आज सिधाये ❀ काहू जलचर धौं धरि खाये

दो० अतिव्याकुल यशुमतिभई, उठीरोय अकुलाय।
सुनि धाये ब्रजलोग सब, नंदहिं खोजत जाय॥
सो० यमुना तट बन गांव, नंद नंद टेरत सबै।
ढूंढ़ फिरे सब ठांव, भये विकल ब्रज लोग सब॥

सोवत ते हरि हलधर आये ❀ रोवत मात देखि दुख पाये
बूझत जननी सों दोउ भैया ❀ कत रोवति है यशुमति मैया
विलखि यशोमति बचन सुनाये ❀ यमुना तट कहुँ नन्द हिराये
यह सुनि हरि बोले सुनु माता ❀ अबहीं आवत हैं नँद ताता
मोसों कहिगये अबहीं आवन ❀ मति रोवै मैं जात बुलावन
प्रभु सर्वज्ञ सकल के स्वामी ❀ जल थल व्यापक अंतरयामी
जाने नंद वरुण के धामा ❀ वरुण प्रीति पुनि लखि घनश्यामा
वरुणलोक हरि तुरत सिधाये ❀ सुनत वरुण आतुर उठि धाये
देखत दरश परस सुख पायो ❀ चरणसरोज आय शिर नायो
कहत आज धनि भाग्य हमारे ❀ त्रिभुवनपति मम धाम पधारे
पाटम्बर पांवड़े बिछाये ❀ महलन बंदनवार बँधाये
रत्नजटित सिंहासन धारयो ❀ तापर सादर प्रभु बैठारयो

छं० बैठाय सादर प्रभुहिं धोवत कमल पद निज कर गहे ।
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदा प्रफुलित रहे ॥
जे पद पदम पदमालया उर रहत निज भूषण किये ।
पाय ते पद जलज जलपति प्रेम परिपूरण हिये ॥

दो० विविधभांति प्रभु पूजि कै, वरुण कह्यो गहिपाय ।
कृपासिंधु अति कृपाकरि, दरशदियोम्वहिंआय ॥

सो० मैं कीन्हों अपराध, सो प्रभु उर नहिं आनिये ।
क्षमा समुद्र अगाध, क्षमा करहु निज जानि जन ॥

जल रक्षक जे दूत कृपाला ❀ ते लै आये नन्द पताला
यह कारज मैं उनको कीन्हों ❀ तिन दूतन प्रभु नंद न चीन्हों
यदपि कियो उन पातक भारी ❀ हैं वे सकल दंड अधिकारी
तदपि दूत वे मो मन भाये ❀ जिनते प्रभु के दरशन पाये
देखि नाथ शुभ दरश तुम्हरा ❀ मैं मान्यों उनको उपकारा
अब प्रभु हम सब शरण तुम्हारी ❀ राखि लेहु श्रीगिरिवर धारी
पांयन परीं आय सब रानी ❀ बड़भागिन आपन को जानी
रानिन सहित वरुण अनुरागे ❀ अस्तुति करत जोरि कर आगे
धन्य नन्द धनि धन्य यशोदा ❀ धनि धनि तुमहिं खिलावत गोदा
धनि ब्रज गोकुल के नर नारी ❀ पूरण ब्रह्म जहां अवतारी
गुणातीत अविगति अविनाशी ❀ ब्रज विहार विलसत सुखराशी
शेष सहस मुख बरणि न जाई ❀ सहज रूप को करत बड़ाई

दो० करिअस्तुतिरानिनसहित, पुनिपुनिधरिपदशीश ।
लै प्रभुको नँदराय ढिग, तबहीं गयो जलीश ॥

सो० हरषि उठे नँदराय, देखि स्यामको शशिवदन ।
लखि प्रभुकी प्रभुताय, रहेमुदित चकित चितय ॥

करत मनहिं मन नंद विचारा ❀ यह कोउ आहि बड़ो अवतारा
भयो नन्द मन हर्ष अपारा ❀ ब्रह्म करत मो सदन विहारा
तबहिं कृपाकरि जन सुखदाई ❀ वरुणहिं दै जलराज बड़ाई
जाय नन्द को कर गहि लीनो ❀ चलहु तात ब्रज कहि हँसिदीनो
कह्यो प्रणाम वरुण सुख पाये ❀ नंदसहित हरि ब्रज गृह आये
नन्द आय ब्रजको जब देख्यो ❀ तब वह चरित स्वप्न सों लेख्यो
देखि नन्द को ब्रज नर नारी ❀ गयो दुःख सब भये सुखारी
बूझत नंदहि गोप सयाने ❀ कितहिं गये तुम हम नहिं जाने
हारे खोज सकल ब्रजवासी ❀ भये बहुत तुम बिना उदासी
नंदमहर तब सब सों भाख्यो ❀ काल्हि एकादशि व्रत में राख्यो
आज द्वादशी थोरी जानी ❀ रैन अछत गयो यमुनापानी
कटिलौं गयो यमुन जल माहीं ❀ लै गयो वरुण दूत गहि बाहीं

दो० वरुण लोकते जाय कै, लाये मोहिं गोपाल।
ये प्रगटे ब्रज आय कोउ, उत्तम पुरुष विशाल॥

सो० महिमा कही न जात, कोटि भांति वरणी वरुण।
सांच कहत मैं बात, इनको नर मति जानियो॥

भयो अधीन बहुत जलराई ❀ पस्यो चरण कमलन पर आई
रानिन सहित धोय पद पूजे ❀ जानि जगतपति भाव न दूजे
ब्रज नर नारि सुनत यह गाथा ❀ कहत भये सब सकल सनाथा
यशुमति सुनत चकित यह बानी ❀ कहत कहा यह अकथ कहानी
प्रभु की माया में अरुझानी ❀ कहत नंद सों यशुदा रानी
मों बरजत निशि न्हान सिधाये ❀ कुशल परी पुण्यन ते आये
हरि को चूमि लियो उर लाई ❀ ल्याये नंदहि खोज कन्हाई
विप्रन बोलि दियो बहु दाना ❀ घर घर बँटी मिठाई पाना

गावत मंगल नारि सुहाई ❀ बाजी नंद अवास बधाई
नंद कहत यशुमति सुन बौरी ❀ तू अब किनहि करत मन भोरी
जाको त्रिभुवनपति सो ताता ❀ ताहि सदा मङ्गल दिन राता
कही गर्ग मुनि बानी जोई ❀ प्रगटत जात बात सब सोई

दो० इनते समरथ और नहिं, ये हैं सब के नाथ।
ब्रजवासी आनंद सब, सुनि सुनि हरिगुण गाथ॥

सो० धनि धनि ब्रजनरनारि, कहत हमारे भाग्य सब।
हमसँग करत विहार, श्री वैकुण्ठ निवास हरि॥

अथ वैकुण्ठदर्शन लीला॥

कहत परस्पर सब ब्रजवासी ❀ हरि हैं श्री वैकुण्ठ निवासी
सो वैकुण्ठ अहै धौं कैसो ❀ जन्म मरण भय जहां न ऐसो
जाको वेद पुराण बखाने ❀ हरि जहँ बसत सदा सुख माने
जो हरि हमहिं दिखावैं सोई ❀ तौ बड़ भाग्य होयँ सब कोई
यह मनसा सबके मन आई ❀ जानि लई भक्तन सुखदाई
तबहिं कृपा करि सब ब्रज लोका ❀ पहुंचाये वैकुण्ठ विशोका
धर्म धाम जो वेदन गायो ❀ दिव्य दृष्टि दे सबन दिखायो
देखत भूलि रहे सब ग्वाला ❀ पुर वैकुण्ठ अनूप विशाला
भूमि वज्र मणि द्युति छवि छाई ❀ परम प्रकाश बरणि नहिं जाई
वापी कूप तड़ाग असी के ❀ विविध नगन बाँधे तट नीके
रतन की सोपान सुहाई ❀ जहां देव मुनि रहत लुभाई
फूले कमल विपुल बहु रङ्गा ❀ करत शब्द खग गुंजत भृङ्गा

दो० कल्पवृक्ष के बाग बन, सुमन सुगंध अपार।
खग मृग सब तेजोमयी, दिव्य स्वरूप उदार॥

सो० मंदिर बरणि न जाहिं, चिंतामणिमयखचितसब।
तैसे ताहि लखाहिं, जैसी जाकी भावना॥
सकल चतुरभुज तहां के बासी ❋ शुद्ध सतोगुण सब सुखरासी
राम सहित तहँ प्रभु सुखशीरा ❋ शोभित नव जलदान शरीरा
भूषण वसन दिव्य परकाशी ❋ सुन्दर सकल सकल अविनाशी
बदन प्रकाश हास सुखकारी ❋ कोटि चंद्र कीजे बलिहारी
मणिन जटित शिर मुकुट विराजे ❋ भूषण वसन अनूपम राजे
दिव्य पारषद चवँर डुलावैं ❋ नारद तुम्बुर गुण गण गावैं
चकित विलोकत सब ब्रजबाला ❋ जान्यो प्रभु प्रभाव तिहिकाला
चारि भुजा तहँ प्रभुहि निहारी ❋ शंख चक्र गद अंबुजधारी
द्विभुज कान्ह को रूप न देख्यो ❋ मुरली लकुट पाणि नहिं पेख्यो
नाहिं मुकुट शिर मोर पखौवा ❋ कटि काछनी न गुंज हरौवा
नहीं भेष नटवर गोपाला ❋ भये विरह वश तब सब ग्वाला
ब्रजबासी सोइ रूप उपासी ❋ ता सरूप बिन भये उदासी
दो० अकुलाने दृग सबनके, देखन को तिहि काल।
मोर पंखधर गुंजधर, मुरलीधर गोपाल॥
सो० ब्रजबासिन के ध्यान, नटवर भेष गोपाल को।
अमितरूप भगवान, तदपि उपासन रूप यह॥
बिरह बिबश हरि ब्रजजन जाने ❋ तबहीं तुरत सकल ब्रज आने
कान्ह देखि सब भये सुखारी ❋ रहे चकित शशि वदन निहारी
कहत सबै मन अचरज पाये ❋ कहां गये हम कैसे आये
देख्यो स्वप्न सबै यक बारा ❋ किधौं सांच यह करत विचारा
यह चरित्र सब मोहन करहीं ❋ पुर बैकुण्ठ दिखायो हमहीं
धन्य धन्य हम सब ब्रजबासी ❋ ब्रह्म हमारे संग बिलासी

हरि के चरण परस सब धाई ❋ करत गोप सब मुखन बड़ाई
हँसि हँसि सबसों कहत कन्हाई ❋ रहे कहां तुम सकल भुलाई
आज कहां ऐसो तुम देख्यो ❋ सो किन मो सों कहत विशेख्यो
हम कहँ देखत नन्द दुलारे ❋ तुमहीं सकल दिखावन हारे
भूतल नाग पताल निहारो ❋ सकल जगत तुम्हरो विस्तारो
यह सुनि श्याम मन्द मुसकाई ❋ दिये सकल पुनि मोह भुलाई

दो० करत चरित्र विचित्र प्रभु, ब्रज वासिन के माहिं।
लखि २ शिवब्रह्मादि सुर, मुनिजनमनहिं सिहाहिं॥
सो० अति आनँद ब्रजलोग, हरिकेनितनवचरितलखि।
सबको सब सुख योग, ब्रजवासी प्रभु नंदसुत॥

सदा श्याम भक्तन सुखदाई ❋ भक्तन हित अवतार सदाई
सङ्कट में जन जहां पुकारें ❋ तहां प्रगट तिनको निस्तारें
मुख भीतर जिन सुमिरन कीन्हों ❋ तिनको तहां दरश हरि दीन्हों
सुख दुख में जो हरि को ध्यावें ❋ तिनको नेक न हरि बिसरावें
देव दनुज खग मृग नर नारी ❋ भक्तिविवश सब ते गिरिधारी
चित दै भजै भाव जो जैसे ❋ ताको होत प्रगट हरि तैसे
ब्रह्मा कीट आदि के स्वामी ❋ प्रभु हैं निरलोभी निहकामी
वेद पुराण साखि सब बोलें ❋ भाव वश्य सबके सँग डोलें
काम भाव ब्रज गोपी ध्यावें ❋ मन वच क्रम हरि सों मन लावें
इक क्षण हरिका नाहिं विसारें ❋ भौनकाज चित हरिसों वारें
गोरस लै निकसैं ब्रज माहीं ❋ जहां श्याम तेहि मारग जाहीं
तिनके मन की प्रीति विचारी ❋ रीझे गोपीजन मन हारी

दो० नव सत साज शृँगार तन, गोरस लै ब्रजनारि।
बेंचन इहि मग आवहीं, मो सों प्रीति विचारि॥

सो॰ अब इन संग बिहार, करौं दान दधि लायकै।
यह मन कियो बिचार, हरि ब्रजमोहन लाड़िले॥

अथ दानलीला॥

दधि को दान रचौं इक लीला ❀ भक्तनकी सुखदायक शीला
दधि दानी निज नाम धराऊँ ❀ ब्रज युवतिन मन सुख उपजाऊँ
श्याम सखन तब लियो बुलाई ❀ सबसों कहि यह बात सुनाई
ब्रज युवती नित गोरस ल्यावैं ❀ या मारग ह्वै बेंचन आवैं
तिन्हैं खिझाय दान दधि लीजै ❀ गोरस खाय जान तब दीजै
यह सुनि सखा उठे हरषाई ❀ भली बात तुम श्याम सिखाई
सबहिन मन अति हर्ष बढ़ायो ❀ कहत श्याम दधि दान लगायो
तबहिं जाय घेस्रो बन घाटा ❀ आवत नित ग्वालिनि जिहि बाटा
कह्यो श्याम सब सों समुझाई ❀ रहो तरुन की ओट लुकाई
जबहीं ग्वालिनि दधि लै आवैं ❀ घेर लेहु कोउ जान न पावैं
यह सुनि सखा घेरकै बाटा ❀ बैठे ठाठ ठगन को ठाटा
उतते बन बन ग्वालि नवेली ❀ बेचन दधिहिं चलीं अलबेली

दो॰ हँसत परस्पर आपमें, चली जाहिं जिय मोर।
पाय घात में सघन सब, घेर लई चहुँ ओर॥
सो॰ देखि अचानक भीर, चकित रहीं चहुं दिशि चितै।
सहमीं कछुक शरीर, कितते आये ग्वाल सब॥

शंकित ह्वै ग्वालिनि भईं ठाढ़ी ❀ मनहुँ चित्र कैसी लिखि काढ़ी
हाथ पांव अँग भये अडोलें ❀ कछू बदन ते बचन न बोलें
तहँ हँसि ग्वालिनि दियो जनाई ❀ मति डरपो जिय कान्ह दुहाई
इहां चोर ठग कोऊ नाहीं ❀ अभय कान्ह को राज सदाहीं

आवत जात न भय कछु कीजै ❀ दधि को दान लगै सो दीजै
नाम कान्ह को जब सुनि पायो ❀ तब युवतिन मन धीरज आयो
बोलीं विहँसि तबहिं ब्रजबाला ❀ कहां तुम्हारे प्रभु नँदलाला
चोरी करि नहिं पेट अघायो ❀ अब बनमें दधिदान लगायो
तब अति बालक हते कन्हाई ❀ सही जो कछु कीन्ही लरिकाई
होहु जो कछु वा धोखे माहीं ❀ परिहे समुझि अबहिं क्षणमाहीं
प्रगट भये तब कुँवर कन्हाई ❀ देखि सबन बोले मुसकाई
रहि युवती तुम पोच सदाई ❀ करि आई हो बहुत ढिठाई

दो॰ तब लौं हम लरिका हुते, सही बात अनजान।
सो धोखो अब मेटिकै, छांड़ि देहु अभिमान॥

सो॰ हम मांगत दधिदान, तुम उलटी पलटी कहत।
करत नन्द की आन, दिये पाइहौ जान सब॥

तब बोलीं ग्वालिनि मुसकाई ❀ अब तुम डर हम तजी ढिठाई
नन्दहुं ते कछु तुम्हैं कन्हाई ❀ भयो जानिये तब अधिकाई
कालिहि चोर चोर दधि खाते ❀ घर घर देखत ही भजि जाते
रातहि भयो स्वप्न कछु आई ❀ प्रातहि भई आज ठकुराई
भली कही नहिं ग्वालिनि बानी ❀ तुम यह बात कछू नहिं जानी
पिता चरित धन धाम जु होई ❀ पुत्र काज आवत है सोई
तुमसी प्रजा बसाई गांवहिं ❀ तो हम ठाकुर क्यों न कहावहिं
कह्यो तबहिं ग्वालिनि झहराई ❀ बात सँभारे कहत कन्हाई
ऐसो को वहि गयो हमारे ❀ जो परजा है बसहि तुम्हारे
कंस नृपति के सब कहवावैं ❀ कहा भयो जु बसत इक गावैं
जो तुम याते हो गरुआने ❀ तो अब तजिहैं गांव निदाने
यह सुनि विहँसि कह्यो बनमाली ❀ कहा बात यह कहत गुवाली

दो॰ गांव हमारो छांड़िकै, बसिहौ का पुर माहिं।
ऐसो को तिहुँलोक में, जो मेरे वश नाहिं॥
सो॰ का गनती में कंस, जाके हम कहवावहीं।
देहु दान को अंस, रारि करत वे काजहीं॥
बड़ी बात छोटे मुख माहीं ❀ आप सँभारि कहत हो नाहीं
तीनि लोक अस कंस सुवाला ❀ भयो तिहारे वश केहि काला
यह तुम बात कहौ तिन माहीं ❀ जो कोउ तुमको जानत नाहीं
हम इन बातन भय नहिं मानैं ❀ जैसे हो तुम तैसे जानैं
हमसों लीजै दान गनाई ❀ पहिले थैली लेहु मँगाई
पीताम्बर वोझन फटि जैहै ❀ तव पाछे पछितावो ऐहै
ऐसे कहि ग्वालिनि मुसकानी ❀ तव वोले हरि दधि के दानी
तू ग्वालिनि हमको कह जानै ❀ हम नहिं झूठी बात बखानै
झूठी हो तुमहीं सब ग्वारन ❀ सतर होतिहौ विनहीं कारन
अजहूं मानि कह्यो किन लेहू ❀ लेखो करो दान मम देहू
नन्द सौंह यों जान न देहौं ❀ बहुरो छोरि दही सब लेहौं
काहे को अठिलात कन्हाई ❀ छांड़ि देहु मोहन लरिकाई
दो॰ पहिली परिपाटी चलौ, नई चलौ क्यों आज।
जान पाइहैं कंस जो, तौ पुनि होय अकाज॥
सो॰ हँसी घरी है चारि, बीतन लाग्यो याम युग।
बन में रोकी नारि, बाढ़ि जाइहै बात पुनि॥
कहा कंस कहि मोहिं सुनावो ❀ अबहीं वाको जाय बुलावो
लरिका कहि कहि मोहिं बखानत ❀ मेरी लरिकाई नहिं जानत
मारि पूतना स्वर्ग पठाई ❀ तृणावर्त महि दियो गिराई
बत्सा बका अघासुर मार्यो ❀ गिरि गोवर्द्धन करपर धार्यो

ऐसी है मेरी लरिकाई ॥ जान बूझ तुम देत सुनाई
तुमहीं हँसी करति हो ग्वारी ॥ देत देखावन हो हठि गारी
बात जानके आपन नाहीं ॥ आपहि बैठी हो बन माहीं
चोरी सदा बेच दधि जाहू ॥ बिना दान क्यों होत निबाहू
अब तो आज पकरि मैं पाई ॥ सब यौवन को लेहुं चुकाई
सबै भली तुम करी कन्हाई ॥ बध असुर सो सुनी बड़ाई
गिरि धाखो बलखाय हमारी ॥ जानी हम सब बात तुम्हारी
मांगि लेहु अबहूं दधि खाहू ॥ होत दान सुनि हमको दाहू

दो० हमैं कहत हो चोरटी, आप भयो जो साहु।
बड़े भये चोरी करत, अब लूटत हो राह ॥

सो० लेहु दही बलि जाउँ, हमको होत अबार अब।
लिये दान को नाउँ, एक बूंद नहिं पाइहौ ॥

यह तुम मोकों कहा सुनाई ॥ दधि माखन सब लेहुँ छिनाई
यौवन रूप अंग जो तुमरो ॥ ताको दान लेउँगो सगरो
कंचन भार युवति तुम सगरी ॥ आवति जाति हमारी डगरी
दही मही मोकों दिखरावो ॥ ताहि न यौवन रूप बतावो
अंग अंग को दान गिनावो ॥ लेखो करि सब मोहिं चुकावो
यहसुनि सब ग्वालिनि झहरानी ॥ भये कान्ह तुम ऐसे दानी
अंग अंग को दान चुकावत ॥ यौवन रूपहि दीठ चलावत
जान परी प्रगटी तरुणाई ॥ यशुमति सों अब कहिहों जाई
उर आनन्द उपर रिस करिकै ॥ चलीं सबै मटुकी शिर धरिकै
तब हरि पीताम्बर कटि कसिकै ॥ धखो धाय आंचर पट हँसिकै
रिसकै मटुकी लई छिड़ाई ॥ दधि माखन सब दियो लुटाई
गहि गहि भुजा सबन झकझोरी ॥ अँगिया फारि तनी गहि तोरी

दो॰ कहत कह्यो मानत नहीं, ढीठ भई सब आय।
दान देत झगरो करत, यौवन रूप लदाय॥
सो॰ जो कहिहौ घर जाय, जननी नहीं पत्यायहै।
आवहुगी पछिताय, निबहौगीपुनि काल्हकिमि॥

भये कान्ह तुम निपट दुलारे ❀ देखहु फारे बसन हमारे
तापर मांगत यौवन दाना ❀ यह अबलों कहुँ सुन्यों न काना
दधि माखन सब दियो लुटाई ❀ चलो कहैं यशुमति सों जाई
यहकहि ग्वालि चलीं सब रिसभरि ❀ अबहिं मँगावत हैं तुमको धरि
यहसुनि हरि हँसि भौंह सिकोरी ❀ गई उरहनो लै सब गोरी
यशुमति सों सब जाय सुनायो ❀ कहा महरि सुतकों सिखरायो
अतिही कान्ह भये अब ईतर ❀ रोंकत युवतिन कों बन भीतर
दही दूध सब दियो लुटाई ❀ मांगत यौवन दान कन्हाई
चोली फार हार सब तोरे ❀ गहि गहि आंचर पट झकझोरे
ऐसो को कुल भयो महरिके ❀ यौवन दान लियो जिन अरिके
नित उतपात जात सहि नाहिन ❀ कहँ लगि पीपर बन दै दाहिन
कैसे गोरस बेचन जैये ❀ हरि पै मारग चलन न पैये

दो॰ सुनत ग्वालिनी के बचन, बोली यशुमति मात।
मैं जानी तुम सबनके, उर अन्तर की बात॥
सो॰ आप फिरत इतरात, कहत श्याम ईतर भयो।
उरन लाय नख घात, उरहन को दौरी फिरत॥

दशहि बरष को कहां कन्हाई ❀ कहँ सब तुम माती तरुणाई
दोष लगावत श्यामहिं आनी ❀ कैसे धौं कहि आवत बानी
हरि पर फिरत सबै भड़रानी ❀ यौवन मदमाती इठलानी
तुम को लाज लगत है नाहीं ❀ जाहु सबै बैठो घर माहीं

अहो महरि ऐसो नहिं कीजे ॐ बिन बूझे गारि नहिं दीजे
सुत ऐसो मग चलन न देहीं ॐ मांगत दान लूट दधि लेहीं
तुमहूँ खीझ करत सुत ओरी ॐ ऐसे ब्रजमें बसि है को री
तजि हैं आजहि गांव तिहारो ॐ बहुरि न सुनिहो नाम हमारो
ऐसे कहा कहत डरपाई ॐ बसत नहीं किन अनतहिं जाई
मेरो कहा कछू घटि जैहै ॐ झूठी बात नहीं कोउ सैहै
यौवन दिन द्वै सबहिन केरी ॐ तुम बांधति आकाशहि डोरी
मो सों कहति आप तुम जैसी ॐ को पतियाय बात सुनि तैसी

दो० बोलत नहीं सँभारि तुम, सब मिलि भई गँवारि।
ऐसी कैसे हरि करैं, वृथा बढ़ावति रारि॥

सो० महरि मनहिं रिसआय, हम झूठी भाषें नहीं।
जो तुम नहिं पतियाय, बूझ न देखो आनसों॥

तुम सुतके कर्मन नहिं जानो ॐ हठ करि टेक आपनी मानो
दश गायन करि कहा बड़ाई ॐ अहिर जाति सब एकहि माई
महा ढीठ हरि मानत नाहीं ॐ बनमें झगरत गहि गहि बाहीं
सखा भीर सँग लीन्हे डोलैं ॐ बन कुञ्जन में करत कलोलैं
नेकु सकुच शंका नहिं आनै ॐ सोई करत जो कछु मन मानै
यह सुनि कहत नन्द की नारी ॐ कहत गैलकी बात इहां री
और चली कह इहां जातकी ॐ महरिहिं रिस सुन अनमिलन बातकी
कहां बसत तुम कहां कन्हाई ॐ कब हरि बांह गही बन जाई
कहत बात नहिं नेक लजाहू ॐ सुनि है कहीं निहारे नाहू
मेरो कान्ह अबहिं अति बारो ॐ तुम नहिं अपनी ओर निहारो
ऐसी बात कहत हो आई ॐ झूठो दोष सहो नहिं जाई
नेकु नहीं डर करत ईश को ॐ मनो भयो हरि बरष बीस को

दो० धन्य धन्य तुम कहत हौ, मोकों आवत लाज।
मास्वन मांगत रोय हरि, दोष देत बिन काज॥
सो० सुनहु महरि तुम बात, हरि सीखे टोना कछू।
बनहिं तरुण ह्वै जात, बालक ह्वै आवत घरहि॥
एक दिवस किन देखौ जाई * बन में तरु की ओट छिपाई
हैं हरि दश कै बीस बरष के * देखहु अपने नयन निरखि के
जाहु चली मैं सब देख्यो है * एक एक दिन करि लेख्यो है
दश अरु बीस बात बन आई * डीठ लगावति है घर माई
जरहिं बरहिं ये आंख तुम्हारी * जो हरिको नहिं सकत निहारी
आप करत ढिग चावर जाई * मोकों साख दिखावन आई
अहो महरि कहिये का तुमसों * कहे बिलग मानत हौ हमसों
सुतकी कान मान तुम लीनी * गारी कोटिक हमको दीनी
हमें कहा मोहन प्रिय नाहीं * जीवहु युग युग हरि ब्रज माहीं
कहा करैं जब बहुत खिझावैं * तब हम तुमहिं कहन को आवैं
भलो बोध हमको तुम कीनों * उलटहि दोष हमारो दीनों
सुतको हटकत नेक न माई * हमहीं सों रिस करति सदाई
दो० कहा करौ तुम आय सब, कहत अटपटी बात।
मोकों यह भावै नहीं, तरुणिन यहै सुहात॥
सो० मन आपन गुनलेहु, तुम तरुणी हरि तरुण नहिं।
समुझि उरहनो देहु, ऐसी मो सों मति कहौ॥
महरि वचन सुनि ग्वालिनिसगरी * निरउत्तर ह्वै घर को डगरी
यह यशुमति गोपिन को झगरो * कृष्ण प्रेम रस सागर सिगरो
कहत सुनत भक्तन सुखदाई * ब्रजवासी जन जीवन गाई
ज घर घर सबहिन सुनि पाई * मोहन दधि को दान लगाई

सब गोपिन मिलि रुचि उपजाई ❀ जेये दधि ले जहां कन्हाई
यह अभिलाष सबन मन बाढ़्यो ❀ राख्यो गुप्त न बाहिर काढ़्यो
श्याम सखन को लियो बुलाई ❀ कह्यो सबन सों यों समुझाई
कालिह उठहु सब ग्वाल सबेरें ❀ चलिकै वृन्दावन मग घेरें
प्रातहि यमुना के तट जाई ❀ तरु चढ़ि चढ़ि सब रहो लुकाई
ब्रजयुवती मिलि आपस माहीं ❀ नितप्रति दधि बेचन को जाहीं
राधा चन्द्रावलि को यूथा ❀ ललितादिक नागरी बरूथा
गोरस लै जबहीं सब आवें ❀ घेरि सबन तब दान चुकावें

दो० सुनि मन हर्षे ग्वाल सब, भली कही हरि बात।
सांझ भई चलिये सदन, कालिह उठहिंगे प्रात॥

सो० निज घर घर सब आय, मात पिता को सुख दियो।
सोये सुखसों जाय, रुचिसों भोजन खाय के॥

प्रात उठे सब गोप कुमारा ❀ जहँ तहँ बोले खुले किवारा
सुनी श्याम ग्वालन की बानी ❀ जागत हू सोवत पट तानी
नन्द द्वार बैठे सब आई ❀ आवहु उठि घनश्याम कन्हाई
ग्वाल टेर सुनि यशुदा माता ❀ दिये जगाय श्याम सुख दाता
मात बचन सुनि अति अतुराई ❀ उठे सेज ते कुँवर कन्हाई
लै पट पीत मुकुट शिर धारी ❀ मुरली कर ले चले मुरारी
सखन सहित यमुनातट आये ❀ कहत सबनसों अति सुख पाये
भली करी उठि प्रातहि आये ❀ मैं जानत सब तुमन बुलाये
आवत है हैं अब ब्रजभामिन ❀ घर घरते दधि लै गजगामिन
हँसे सखा सब तारि बजाई ❀ मन में अति आनंद बढ़ाई
कहत सबन सों हँसि नँदलाला ❀ जाय द्रुमन सब चढ़ो गुपाला
मुँह मूंदे सब रहौ छिपाने ❀ जेहि विधि युवति न कोऊ जाने

दो० जबहीं जान्यो युवति सब, आईं बनहिं मँझाय।
कूद परो तब द्रुमन ते, दे दे नन्द दुहाय॥
सो० शंख शब्द घहराय, कीजै मुरली शृंग धुनि।
उरन जाहिं अकुलाय, जैसे युवती गण सबै॥

घेर सबन इहि विधि डरपाई ❋ बहुरि तिन्हैं कहियो समुझाई
नितहिं हमारे मारग आई ❋ दधि माखन बेंचत हौ जाई
हरिको दान मारि नित जावो ❋ आज दिये बिन जान न पावो
ऐसे श्याम सखन समुझावत ❋ अपने मनकी प्रीति बढ़ावत
ब्रज बनितन लखिकै सुख पाऊं ❋ तुमसों नाहिंन कछू दुराऊं
यहि मारग बेंचन दधि आवैं ❋ अन्तर गति मो सों हित लावैं
आवत हैं हैं बन सब बाला ❋ करत बात ऐसे नँदलाला
प्रात उठीं सब गोप किशोरी ❋ चित्र विचित्र वसन तन धोरी
अंग अंग आभूषण साजैं ❋ केश सँवारि चारुदृग आंजैं
अँगिया अंग अनूप सँवारी ❋ चित्र विचित्र बसन तन धारी
बेंदी भाल मांग मोतिन की ❋ अंग अंग छवि नग ज्योतिन की
दशन दमक अधरन अरुणाई ❋ चिबुक नील कनकी छबि छाई

दो० गोरे तन सुख छबि सदन, नवयौवन ब्रजनारि।
लै लै दधि निकसीं सबै, सुखमा बढ़ी अपारि॥
सो० ब्रज के खेड़े जाय, भईं ग्वालि यकठौर सब।
निज निज यूथ बनाय, दधि मटुकी शिरपरधरे॥

बेचन दही चलीं ब्रजनारी ❋ षट दश सहस गोप सुकुमारी
सबके मन मग मिलहिं कन्हाई ❋ होत न एकहि एक जनाई
करत जाहिं गुन गान बिहारी ❋ पग नूपुर की धुनि अति भारी
हरि जानी युवती आवत जब ❋ कह्यो सखन द्रुम जाय चढ़ो अब

सुनत श्याम के मुख सों बैना ॥ धाय चढ़ी द्रुम बालक सैना
पञ्च सहस्र सखा समुदाई ॥ जहां तहां द्रुम रहे लुकाई
कछुक ग्वाल सँग राखि कन्हाई ॥ निकस गये आगुन अगुवाई
ठाढ़े भये घेर वन घांटी ॥ लै लै करन सुमन की सांटी
यहि अंतर आई ब्रज नारी ॥ देखत वन लाग्यो कछु भारी
पाछे हीं ते लई हँकारी ॥ कहत तिन्हें अबहीं तुम हारी
एक संग जुरि भई तरुणि सब ॥ इत उत चकित चलीं चितवत सब
आगे दृष्टि परे नँदनन्दन ॥ मुकुटशीश तन चित्रित चंदन

दो० लिये सखा सँग मग गहे, ठाढ़े यमुना तीर।
ठठकिरहीं युवती सबै, लखि ग्वालनकी भीर॥

सो० भयो हरष उरमाहिं, कहतवचन मुख भयसहित।
आगे कैसे जाहिं, मग में ठाढ़ो सांवरो॥

कोऊ कहत चलत क्यों नाहीं ॥ कोऊ कहत घरहि फिरि जाहीं
कोऊ कहै का करै कन्हाई ॥ इनहू सों कहँ जाहिं पराई
कोऊ बोल उठी ब्रज बाला ॥ लूट लई हमैं कालिह गोपाला
अतिही ढीठ भयो है कान्हा ॥ मांगत है गोरस को दाना
सुनि ऐसे मोहन को ख्याला ॥ घरको फिरीं सकल ब्रजबाला
तब हरि ग्वालन सैन बताई ॥ कूदहु विटपन तें भहराई
जात फिरीं युवती ब्रजगाँवहिं ॥ घेर लेहु कोउ जान न पावहिं
तब ग्वालन बनमें चहुंधाई ॥ भर भराय तरु डार हलाई
शंख मृदंग मुरलि करतारी ॥ कीने शब्द सबन इक बारी
चकित द्रुमन चितई सब बाला ॥ डारन डारन देखे ग्वाला
कूद कूद तरु तरु तें धाई ॥ घेर लईं तरुणी सब जाई
कहां नितहिं दधि बेचन जाहू ॥ आज पकरि पायो सब काहू

दो० दान लगत ह्यां श्याम को, सो सब लेहिं चुकाय।
अब तौ देहैं जान तब, तुम को नन्द दुहाय॥
सो० दधि लै जात प्रभात, आवतहौ निशि बेचिके।
दान मारि नित जात, भली करत यह बात नाहिं॥
ठाढ़े यमुना तीर कन्हाई ❋ जाहु चली निज दान चुकाई
यहसुनि बिहँसिकह्यो इक ग्वाली ❋ नई बात इक सुनहु रि आली
मांगत दधि को दान मुरारी ❋ सिखय पठाये हैं महतारी
सो ये सखा लेन सब आये ❋ यमुना तट तें श्याम पठाये
काहे को सब मिल इतराहू ❋ सूधे अपने मारग जाहू
दधि माखन कछु चाहत कोऊ ❋ सूधे मांग लेत किन सोऊ
सूधी बात कहौ सुख होई ❋ बांधत कहा अकाश खरोई
दान बजार हाट में पावो ❋ यह निज कान्हैं जाय सुनावो
बोले सखा सुनहु री ग्वारी ❋ हम जानी अब बात तुम्हारी
गांव बसे को यह दुख होई ❋ नहिं सकात चीन्हें सों कोई
मारग अपनो दान उगाहू ❋ कहत मांग किन हम पै खाहू
हाट बाट सब हमहिं उगै हैं ❋ अपनो दान तुमहुं पै चैहैं
दो० लेखो करि सब कान्ह को, दीजे दान जगात।
चली जाहु सुखसों डगर, फेर कहै कोउ बात॥
सो० तुमको कैसो दान, कौन कान्ह मांगत कहा।
परिहै अबहीं जान, रोकतहो बन में तियन॥
आये तबहीं निकट कन्हाई ❋ संग सखन की भीर सुहाई
बोलि उठीं लखि नागरि सगरी ❋ कहा श्याम तुम करत अचगरी
नारिन को रोकत हौ बन में ❋ जैहै बात दूरिलौं क्षन में
आजहि दान पहिर तुम आये ❋ कहा छापिकनि तुमहिं पठाये

वैसी चाल चलो नँदलाला ॥ चलत बाप तुम्हरो जिहि चाला
वृथा न रारि करहु वन माहीं ॥ छांड़ि देहु दधि बेचन जाहीं
कहत कान्ह दधि दान न देहो ॥ विना दान दीने नहिं जैहो
लेहों छीन दूध दधि माखन ॥ देखत ही रहिहो सब आंखन
मात पिता लों उघटत बानी ॥ नहिं जानत मोकों दधि दानी
जात नितहिं नित बेंच चुराई ॥ सब दिवसन को लेहुँ भराई
मांगत छाप कहा दिखराऊं ॥ काको तुम को नाम बताऊं
ऐसो को मोकों नहिं जानत ॥ एक नहीं मोकों तुम मानत

दो० नीके हम जानत तुम्हें, गोद खिलाये कान्ह।
वे दिन अब बिसराय सब, भये जगाती आन॥

सो० करहु नहीं खागि वात, जो निबहै सुख पाइये।
ऐसी क्यों सहिजात, नितहिं हमें दधि वेचनो॥

अजहूं मांगि लेहु दधि देहैं ॥ खाहु सहज में हम सुख पैहैं
दान वचन तुम हमहिं सुनायो ॥ यहै हमें सुनिके नहिं भायो
होत अबार जान अब दीजै ॥ नई रीति मोहन नहिं कीजै
गोरस लेत प्रात सब कोई ॥ बहुरि भखो रहि है ऐसोई
दान दिये बिन जान न पैहो ॥ जब देहो तबहीं सब जैहो
तुम सों बहुत लेन है हम को ॥ सो नहिं अबहिं सुनावत तुमको
नितहिं हमारे मारग आवत ॥ मोकों कबहूं नाहिं जनावत
दिन दिन को लेखो भरि लेहों ॥ अब तो तुम्हें जान तब देहों
ऐसी हठ कह करत मुरारी ॥ बन में रोकत नारि पराई
आये दान पहिरि तुम कांपे ॥ चलहु न हम सब चलिहैं नापे
तुम अपने घरही के राजा ॥ सब को राजा कंस विराजा
जो कहुं सुनत नेकुसी पैहै ॥ बहुरि सँभारि अबहिं परिजैहै

दो० हम गुहरावैं जाय कहँ, बसत तुम्हारे गाँव।
ऐसी विधि जो कहत हौ, को रहि है यह ठाँव॥
सो० करत फिरत उतपात, लिये सखा सँग संतके।
नाहिं न नेकु डरात, कठिन कंसको राज है॥

यह सुनि कान्ह उठे रिसियाई ❀ लीनो कछु दधि दूध छिनाई
बसन छोरि तरु सों उरझाये ❀ कछु दधि भाजन भूमि लुढ़ाये
कहत जाय कंसहि गुहरावो ❀ आजहिं मोहिं हजूर बुलावो
मारौं एक पलक में वाही ❀ मोकों कहा बतावत ताही
अबतो मोसों बैर बढ़ायो ❀ लेहौं दान आपनो भायो
मेरे हठ क्यों निवहन पैहौ ❀ देखैं अब धौं कैसे जैहौ
तुम देखत रहिहौ हम जैहैं ❀ गोरस बेंच बहुरि घर ऐहैं
बोले ग्वाल न तुमको दैहैं ❀ नेकहु तुम सों नाहिं डरैहैं
सुनि गृह ते जन ऐहैं जबहीं ❀ नाहिं सँभारि सकिहौ हरि तबहीं
एक बूंद गोरस नाहिं पैहौ ❀ देखत ऐसेही रहि जैहौ
धरिके यशुमति पै लैजैहैं ❀ तहां श्याम पुनि वचन न ऐहैं
मानो कह्यो हमारो अबहूं ❀ हम पै दान न पैहो कबहूं

दो० गृहजन कहा बतावहू, कंसहि लेहु बुलाय।
देखतही तुम सबन के, पूजा करौं बनाय॥
सो० जैहौ धौं केहि भांत, अब देखहुं गो मैं तुम्हें।
बात कहत अनखात, सूधे देती दान नाहिं॥

जो मानत नाहिं कंसहि राजा ❀ तौ अब भये तुमहिं ब्रजराजा
तौ सिंहासन बैठत नाहीं ❀ गाय चरावत कत बनमाहीं
मोर पखन को मुकुट उतारो ❀ नृप किरीट माथे पर धारो
पहिरत कहा गुञ्ज के हारा ❀ नृप भूषण किन करत शृंगारा

छत्र चमर शिर ऊपर राजे ॥ अजहुँ मुरलि अब नौबत बाजे
हमहूं यह लखिकै सुख लीजे ॥ संगहि संग काज कछु कीजे
झगरत कहा दही के काजा ॥ लखि हमको उपजत है लाजा
ओछी बुद्धि तुम्हारी नीकी ॥ तुम्हरे चित रजधानी नीकी
मेरो दासन दास कहावे ॥ सपनेहूं यह ताहि न भावे
कंस मारि शिर छत्र धराऊं ॥ कहा तुच्छ यह साध पुराऊं
ब्रज में मेरो राज सदाई ॥ और इहां काकी ठकुराई
तुम कछु राज बड़ो करि मानो ॥ मेरी प्रभुता को नहिं जानो

दो० हमहूं जानत हैं तुमहि, लरिकाई ते कान।
काहे को अपने बदन, कीजत बहुत बखान॥

सो० फिरत चरावत गाय, कांधे कामरि कर लकुट।
देखी है ठकुराय, कत बढ़ि बढ़ि बातें करत॥

यह कमरी कमरी तुम जानो ॥ जितनी बुधि तितनी अनुमानो
या पर वारों चीर पटम्बर ॥ तीन लोक की यह आडम्बर
ब्रह्मा भूल्यो जाहि निहारी ॥ सो कमरी कत निन्दत ग्वारी
कमरी के बल असुर सँहारों ॥ कमरी ते सन्तन उद्धारों
या कमरी ते सब सुख भोगा ॥ जाति पांति यह मम सब योगा
सुनत हँसीं सब ब्रजकी बाला ॥ यह तुम सांच कही गोपाला
धनि धनि यह कामरी तुम्हारी ॥ सब विधि तुम्हें निबाहन हारी
यहै ओढ़ के गाय चरावो ॥ यहै सेज करि भूमि बिछावो
याही ते वर्षा ऋतु टारो ॥ शिशिर शीत याते निर्वारो
याते ग्रीषम घाम बचावो ॥ यहै उटगनी शीश बनावो
यहै जानि यह गृह यह टाटी ॥ यहै सिखावत सब परिपाटी
हम जो कहन चहत ही तुम सों ॥ कही सो तुम अपने मुख हमसों

दो॰ कही जात अपनी प्रकट, नीके हमैं हँसाय।
तापर मांगत दान दधि, युवतिन एक कन्हाय ॥
सो॰ कामरि ओट निहारि, तुम्हैं न छाजत पीतपट।
कारे तन पर चारि, कारी कामरि सोहई ॥

मोसों बात सुनो ब्रज तिय सब ❀ सत्य कहत उपमान जगत सब
बालक अरु तिय मुख नहिं दीजे ❀ इनसों बहुत हेत नहिं कीजे
मूड़ चढ़त नेकहि चुचकारैं ❀ जो मन करै सोई करि डारैं
सोई गुण प्रकटत तुम जाहू ❀ कतक कहत गे तुम अठलाहू
जानहुं कहा हमैं तुम ग्वारी ❀ सदा छाछ की बेचनहारी
सुनहु कान्ह हम तुमको जानैं ❀ नन्दमहर के सुत पहिचानैं
धेनु दुहत पुनि तुमको देखे ❀ गाय चरावतहू बन पेखे
चोरी करी वहौ पुनि जाने ❀ फरिका खोलत फिरत बिराने
ये ढँग छांड़ भये अब दानी ❀ यहै बात अब सबहिन जानी
और सुनहु यशुमति जब बांधे ❀ ऊखल सों दोऊ भुज साधे
तब सहाय करि हमहिं बचाये ❀ करके बंधन जाय छुड़ाये
जानत यहै रहत ब्रजमाहीं ❀ हमते दूर बसत कछु नाहीं

दो॰ कहत कहा तुम बावरी, हँसी लगत सुनि बात।
कब जन्मत देख्यो हमैं, कौन मात को तात ॥
सो॰ कबै चराई गाय, कब चोरी पकर्‌यो हमैं।
कब बांधे हम माय, दुही गाय किन कौनकी ॥

तुम जानत म्वहिं यशुमति जाये ❀ यशुमति नन्द कहां ते आये
मैं पूरण अबिगति अबिनासी ❀ बांधे सब माया की फांसी
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजबाला ❀ ऐसेउ गुण जानत गोपाला
जैसे निदर्‌यो तुम सब काहू ❀ तैसे निदरत मात पिताहू

तुमको यशुमति महर न जाये ॥ तो तुम कहो कहां ते आये
घर घर माखन चोरयो नाहीं ॥ बांधे मात न ऊखल माहीं
हाहा करि हम नाहिं लुड़ाये ॥ ग्वालन संग न वच्छ चराये
नहीं गाय तुम दुही हमारी ॥ ये सब बातें झूंठ तुम्हारी
भक्त हेतु जन्मत जग माहीं ॥ कर्म धर्म के मैं वश नाहीं
योग यज्ञ मनमें नहिं ल्याऊं ॥ दीन गोहार सुनत उठि धाऊं
भावाधीन रहों सब पासा ॥ और नहीं कछु मोकों आसा
ब्रह्म कीट आदि के माहीं ॥ व्यापक हों समान सब ठाहीं

दो० कहां कहांकी बात कहि, डरपावत हो नार।
स्वर्ग पतालहि एक करि, बांधत वारहिं वार॥

सो० इहां सुनावत काहि, जो लायक तो आपको।
कौन प्रकृति यह आहि, वनमें रोंकतहौ तियन॥

केतक दधिको दान कन्हाई ॥ जिहि कारण युवती अरुझाई
दधि माखन सबही तुम लेहू ॥ रीती जान हमें घर देहू
जो तुम याही में सुख पावो ॥ काहे को बहु बात बनावो
दधि माखन कह करौं तिहारो ॥ सकल वणिजको दान निवारो
जो जो वणिज नितहिं तुमलावो ॥ लेखो करि सब मोहिं चुकावो
अब ऐसे कैसे घर जैहो ॥ जबलग लेखो म्वहिं न वुझैहो
करत वणिज तुम नये बनाये ॥ नित उठि जात जगात बचाये
सुनि वाणी हरि नागर नटकी ॥ दे दे सैन युवति सब मटकी
मनहीं मन अति हर्ष बढ़ाई ॥ बोलीं हरि सों सब मुसकाई
ऐसे कहौ वणिज को अटके ॥ अब लों श्याम कहां तुम भटके
हमहूँ कहि मन मांझ लजाई ॥ कह मांगत दधि दान कन्हाई
वणिज हेतु रोकी अब जानी ॥ तबहीं क्यों न कही यह बानी

दो॰ हँसि बोली राधाकुँवरि, कहा बणिज हम पास।
कहौ श्याम सो नामधरि, देहिं दान हम तास॥
सो॰ भूले कहा कन्हाय, बणिज कहा युवती करत।
कासों लियो चुकाय, सो हमको बतलाइये॥
कहौ तुमहिं बूझत कह हमहीं ❀ लै लै नाम बतावो तुमहीं
तुम जानत मैं हूँ कछु जानौं ❀ तुम में माल सुनाहिं छिपानौं
देहु जापर जो लागै ❀ फिर न कछु तुमसों कोउ मांगै
इतने हीं को लरत बृथाहीं ❀ देखौ समझ सबै मन माहीं
कहत परस्पर ग्वालि सयानी ❀ समझत हौ कछु इनकी बानी
इनहीं सों बूझौ सब कोऊ ❀ कहत बतावत सुनिये सोऊ
हरि की गूढ़ मधुर रस बातें ❀ सुनि सुनि सुख पावत सब जातें
कोउ काहू को भेद न जानैं ❀ लोक लाज डर सब कोउ मानैं
मन मन हर्ष भई सब सुन्दर ❀ जानैं हरि सब रसिकपुरन्दर
तब बोलीं हँसि के ब्रजबाला ❀ कहत नाहिं क्यों तुमहिं गुपाला
कहा माल देख्यो हम पाहीं ❀ जिहि कारण रोकी बन माहीं
बैल लदाये देख्यो हमका ❀ कहौ हमैं बूझति हैं तुमकों
दो॰ लौंग जायफर लायची, गिरी छुहारा दाख।
कह लादे हम जात हैं, सो कहिये किन भाख॥
सो॰ दीजे बणिज बताय, ताकी देहिं जगात हम।
तुमको नन्द दुहाय, जो अब बेग कहौ नहीं॥
कौन वणिज कहि मोहिं बतावो ❀ लोन मिरच कहि कहि बहँकावो
तुमतो माल गयन्द लदायो ❀ महिष बृषभ कहि मोहिं सुनायो
बड़े मोल की वस्तु जो होई ❀ कैसे दुरत दुराये सोई
मो आगे तुम कहा छिपावो ❀ देहौ दान जान तब पावो

भये चतुर हरि तुम अब जानी ❀ दधि को दान मेटि यह ठानी
देतीं दही कछुक हम छोहन ❀ खाते ले ग्वालन सँग मोहन
इन बातन अब खोयो सोऊ ❀ यहकहि युवति हँसीं सबकोऊ
श्याम कही मैं जानत तुमकों ❀ सूधे दान न देहो हमकों
दधि माखन तो लेहौं छोरी ❀ उठिकै भुज गहि गहि झकझोरी
तब पीताम्बर झटक्यो प्यारी ❀ कहत भये तुम ढीठ मुरारी
हरि रिसकरि अङ्कम गहिलीनीं ❀ इहि मिसि भेट प्रेमकी कीनी
टूटि गई प्यारी उर माला ❀ तब घेरे युवतिन नँदलाला

दो० गहिगहि अंकमलेतसब, झगरत रिसहि बढ़ाय।
हँसत सखा सब तारिदै, पकरे गये कन्हाय॥

सो० हाँकदई नँदलाल, तबहिं सखन ललकार कै।
धाय परे सब ग्वाल, लीने श्याम छुड़ाय तब॥

रिस करि बोले ग्वाल सयाने ❀ भई ढीठ हरिको नहिं जाने
हमभईं ढीठ भलो तुम कीन्हों ❀ देहों ज्वाब दई को चीन्हों
वन भीतर रोंकीं सब बाला ❀ देखो हमें कियो जंजाला
बात कहन को एहू आवत ❀ बड़े सुधर्मा आप कहावत
ऐसी साख सखाकी भरि सब ❀ आवहुगे नृप जीत सबै तब
जानी बात तुम्हारी सब की ❀ तजहु ख्याल लरिकाई तबकी
जो युवतिन को हाथ लगैहो ❀ कियो आपनो तो तुम पैहो
जो यह बात बरन सुनिपैहैं ❀ मात पिता हमको कह कैहैं
तोरो मुक्ताहार कन्हाई ❀ वरहि कहा कहिहैं हम जाई
आपन भईं सबै तुम भोरी ❀ हरिको दोष लगावत गोरी
जब तुम झपटीं पीत पिछोरी ❀ तब उन मोतिनकी लरतोरी
मांगत दान श्याम कब सेंती ❀ तुम अठिलात ज्वाब नहिं देती

दो० लेहिं छोरि सब तें अबहिं, देखतही रहि जाहु।
झकझोरा झोरी करत, नँदनन्दनहिं डराहु॥
सो० को त्रिभुवन के माहिं, मोहन की सर दूसरो।
तुम सब जानत नाहिं, नँदनन्दन ब्रजराजसुत॥
कहा बड़ाई इन की सर में ❋ इन को जानति नीके कर में॥
नृपति त्रास बसुदेव निकारे ❋ नन्द यशोमति ने प्रतिपारे
आये हैं शुभ घरके माहीं ❋ काहू बदत ताहि ते नाहीं
पहिले जब उन भुजा झकोरी ❋ तब हम झटकी पीत पिछोरी
यांते ढीठ कही तुमको हम ❋ श्यामहि भिरकन हार भई तुम
इतने पर मानत नहिं हारी ❋ तब ते हमैं देत हो गारी
बहुत सही हम बात तुम्हारी ❋ बणिज करत अरु झगरत ग्वारी
ब्रज ऊपर मनमोहन दानी ❋ अबलौं तुम यह बात न जानी
बोल उठे तब कुँवर कन्हाई ❋ अब नहिं छोड़ों नंद दुहाई
अबतौ दांव आपनो लेहों ❋ तबहीं जान सबन को देहों
कौन बात यह कहत कन्हाई ❋ मांगत कहा जान नहिं जाई
फिरि फिरि करि करि नन्ददुहाई ❋ डरपावत हौ हम को आई
दो० डरपावहु तुमजाय तिन्ह, जो कोउ तुम्हैं डेराहिं।
यहँ डरपावत कौनको, तुम तें घटि हम नाहिं॥
सो० जैहैं यशुमति पाहिं, तोस्यो हार भली करी।
यहौ बनत पै नाहिं, इतनों धन कहँ पाइहो॥
एक हार मोहिं कहां बतावो ❋ सब अँग भूषण काहि दुरावो
मोती मांग जराऊ टीको ❋ करणफूल बेसर नग नीको
कण्ठसिरी दुलरी तिलरी गर ❋ तापर और हार जो चौसर
सुभग मेल बिजोटा बाजू ❋ कङ्कण पहुँचिन मुँदरिन साजू

कटि किंकिणि नूपुर पग देखो ❀ जेहरि बिछिया ये नग लेखो
शोभा साज और अँग माहीं ❀ सबको नाम लेत क्यों नाहीं
याहू में कछु बांट तुम्हारो ❀ अचरज आय सुनोगे भागे
भूषण देख न सकत हमारो ❀ याही लिये भयो दरवागे
आपनहूं कछु दई गढ़ाई ❀ महरि यशोमति के लँदराई
आई पहिर जितो हम जाहीं ❀ याते दूनो है घर माहीं
देखि परत कछु बहुत सुखाने ❀ मनधों सूनो लागि ललचाने
घाट कहा तोलों सब मेरो ❀ जौलों तुम नहिं दान निबेरो

दो० आभूषण को कह कहत, बहुत वस्तु तुम पास ।
मानों मैं जानत नहीं, सो किन कहत प्रकास ॥

सो० लैहौं सबको दान, समुझि लेहिंगे बांटि पुनि ।
पैहो तबहीं जान, मैं तुमसों सांची कहत ॥

भये श्याम ऐसे रस नागर ❀ युवतिन में अब होत उजागर
कालिहहि गाय चरावन जाते ❀ छाक मांगि ग्वालन सँग खाते
कांधे कामरि लकुटी हाथा ❀ बन में फिरत बछरवन साथा
आज पीतपट कटि कसि आये ❀ लेकर लकुटी बड़े कहाये
भये कछू अब नवल सुजाना ❀ मांगत युवतिन सों बड़ दाना
देहौ दान कि झगरति हो तुम ❀ बहुत तुम्हारी बात सुनी हम
प्रथम दान जन जाल निबरिये ❀ ता पाछे तुम हमहिं निबरिये
कहत कहा निदरे से हो तुम ❀ सहजहिं बात कहत तुमसों हम
आदिहि ते तुमको पहिचानें ❀ दान कहा सो हम नहिं जानें
ग्वालिन चलीं सबै रिस करिकरि ❀ दधि मटुकी माथे पर धरिधरि
तब हरि गहि अंचर झरकारी ❀ जाति कहां हे री बनिजारी
इतनो बणिज लिये तुम जाहू ❀ बिना दान क्यों होत निबाहू

दो० नाम तुम्हारे बणिज के, सब मैं देहुँ बताय।
देहु दान तब मोहिं तुम, देखहु सब ठहराय॥
सो० सब क्यों छोड़्यो जात, एक होय तो छोड़िये।
तुम बिचार यह बात, देखहु अपने चित्त में॥

येती बस्तु लिये तुम जाओ ❀ दान देति मेरो खिजराओ
मत्त गयन्द तुरंगम तुमसों ❀ कैसे दुरत दुराये हम सों
हंस मोर केहरि मृगवारे ❀ कनक कलश मदरस सों भारे
चमर सुगन्ध कपोत कीरवर ❀ कोकिल बिद्रुम बज्र धनुष शर
येतो धन खग मृग तुम पाहीं ❀ कैसे निबहत दान बिनाहीं
सुनि यह चकित कहति ब्रजबाला ❀ कहा बतावत तुम नँदलाला
तिनको नाम लेत हम पाहीं ❀ जो हम सपने देख्यो नाहीं
कहां तुरंगम गज हम पाये ❀ कब हम कंचन कलश गढ़ाये
मानसरोवर हंस रहाहीं ❀ चमर धनुष शर कहा कहाहीं
ये सब हम पै कहा बताओ ❀ जहाँ होय तहँ दान चुकावो
इतनो सबै तुम्हारे पाहीं ❀ करि विचार देखौ मन माहीं
अपने सब अँग अंग निहारो ❀ यौवन रूप और है न्यारो

दो० करहु निबेड़ो बेग सब, काहे करत अबेर।
कहौं तुम्हें कछु हम कहें, घरको जाहु सबेर॥
सो० दीजै दान चुकाय, अब जान्यो अपनो बणिज।
कहौं फेर समुझाय, जो कछु धोखो होय चित॥

चमर चिकुर भ्रू धनुष सँभारे ❀ शर कटाक्ष मृग दृग कजरारे
कण्ठ कपोत कोकिला बानी ❀ रद हीरा शुक नाक बखानी
अधर सधर बिद्रुम सो जानो ❀ है मयूर घूंघट पट मानो
कंचन कलश उरोज निहारो ❀ यौवन मद सों भरो बिचारो

कटि केहरि के रूप सुहाई ※ हंस गयन्द चाल छबि छाई
सौरभ अंग सुगन्ध सुहायो ※ यौवन रूप न जान बतायो
इतनो है सब बणिज तिहारो ※ होय अंश मो देहु हमारो
खरी किये निबहौगी कैसे ※ लेहों दान देहुगी जैसे
यह सुनि हँसि बोली ब्रजनारी ※ अब समुझी हरि बात तुम्हारी
मांगत ऐसो दान कन्हाई ※ जान परी प्रगटी तरुणाई
याही लालच अङ्क भरत हो ※ पुनि पुनि गहि आंचर झगरत हो
अपनी ओर देख तौ लीजे ※ ता पाछे बरियाई कीजे

दो० याही लालच फिरत हौ, सखा लिये बन संग।
घेरत हौ युवतीन को, प्रगट्यो अंग अनंग॥

सो० बैठरहौ घर जाय, यह मति चितमें मत धरौ।
घट मर्यादा जाय, ऐसी बातन सों लला॥

यह सुनि बिहँसि कह्यो बनमाली ※ कत हमपर रिस करत गुवाली
सूधे हम इक बात बखानी ※ तुम कत शोर करत अनखानी
कबहुं घटावत हौ मर्यादा ※ कबहूं जोइ सोइ करत बिवादा
बातहिं ते झगरत बिन काजे ※ दान निबेर जात नहिं भाजे
हरि यों कबते भये सयाने ※ उलटहिं तुम हमपर सतराने
बेटी बहू बड़े घरकी हो ※ कत बिलंब बनमें करती हो
बूझिय तुमसों हम जो बखाने ※ सो तुम कह आगे सतराने
कहिये मोहन बात बिचारी ※ कहवावत सर्वज्ञ बिहारी
परगट ऐसो दान सुनावत ※ हमरो ब्रज उपहास करावत
परे बात महराने जाई ※ तुमहिं लाजकै हमहिं कन्हाई
ब्रज में जो वे बात सुनेंगे ※ जाति पांति के लोग हंसेंगे
जान देहु अब हमहिं गोपाला ※ कहियो बात फेर नंदलाला

दो० बोलि उठ्योइकसखा तब, सुनहु ग्वालिनी बात।
प्रीति करत नँदलाल सों, कत बावरी लजात ॥
सो० हरिसँग करहु बिहार, नवल श्याम नवला तुमहुं।
हँसन देहु संसार, भलो मनावो कान्ह को ॥

सुनि बोली ब्रज युवति रिसाई ❋ कहवावत यह बात कन्हाई
आपुन यौवन दान बतावत ❋ तापर जोइ सोइ सखन सिखावत
बन में सबन घेरि बैठाई ❋ करत श्याम तुम अति लँगराई
भूलिगये वे दिवस कन्हाई ❋ घर घर माखन खात चुराई
खीझत ही दृग नीर चुचाते ❋ उर डरात घरकों भजि जाते
बांधे ऊखल जबहिं यशोदा ❋ हमहिं छुड़ाय लिये तब गोदा
अब भये बड़े बड़ी चतुराई ❋ ताते यौवन दान सुनाई
लरिकाई की बात बखानैं ❋ कैसी भई कहा हम जानैं
कब धौं खायो माखन चोरी ❋ मैया धौं बांधे कब डोरी
नेकहु ताकी सुधि नहिं जानैं ❋ मान अमान न तब हम जानैं
भले बुरे को ज्ञान न होई ❋ अपनो पर कछु समझ न कोई
खेलत खात हरषही माहीं ❋ बालपने के दिवस बिहाहीं

दो० अपनी सुरत करत नहीं, न्हात यमुन के तीर।
कदम चढ़ाये सबनके, जब मैं भूषण चीर ॥
सो० जल में रहीं छिपाय, बिना बसन नांगी सबै।
पुनि पुनि हहा कराय, दिये बसन मैं सबन तब ॥

बिना बसन बाहिर सब आईं ❋ हाथ जोरि मोहिं बिनय सुनाईं
कैसी भांति भई तब सबकी ❋ सो सुधि भूलिगई अब तबकी
मोकों कहति चोर दधि खायो ❋ ऊखल सों हम जाय छुड़ायो
भेद बचन जब कहे बिहारी ❋ सुनि कै हँसि सकुची ब्रजनारी

कहत भये अति निलज कन्हाई ॥ ऐसी कहत न सकुचत गाई
जाहु चले लोगन के आगे ॥ झूठी बात बनावन लागे
करत हँसी तुम सबन सुनाई ॥ निज निज गृह सब कहिहैं जाई
झूठी बात कहा हम जानें ॥ हम तो सांची सदा बखानें
जैसी भांति भजै मोहिं कोई ॥ मानत मैं ताको तेसोई
जो झूठो मोको तुम जानो ॥ तो कत मेरे हित तप ठानो
जो तुम अपने मन में ठानी ॥ मैं अन्तरयामी सब जानी
अब क्यों इतौ निठुर मन कीनो ॥ काहे दान जात नहिं दीनो

दो० दान सुने रिस होति है, यह नहिं हमें सुहाय।
भली बुरी अरु जो कहो, सो सहिलेहिं कन्हाय॥

सो० छांड़ि देहु सब जाहिं, सुनिये मोहनलाल अब।
भई बेर बनमाहिं, मात पिता खिझिहैं हमें॥

काहे को तुम करत अबारी ॥ दधि बेचहु घर जाहु सबारी
मैं कह करौं तुम्हें यह भावत ॥ लेखो करि नहिं दान चुकावत
शुद्ध स्वभाव समुझ सब कोई ॥ लेखो करि देहो मोहिं जोई
तब सोइ तुम सों मैं ले लेहों ॥ तबहीं तुम्हें जान पुनि देहों
काहे को हम सों हरि लागत ॥ जान न परत कहा तुम मांगत
बातन कछू जनावत नाहीं ॥ लेखो कहा करत हम पाहीं
निपटहिं परे हमारे ख्याला ॥ इन बातन कत पावत लाला
अब तुम निपट करी चहुताई ॥ सुनि हँसि दै व्रजलोग लुगाई
मारग जिन रोको हम जाहीं ॥ घर ते लीजो दान उगाहीं
अबलों यह कीयो तुम लेखो ॥ हम तुम्हरो विचार सब देखो
मोकों ऐसी बुद्धि सिखावत ॥ कर कंकण दर्पणहिं दिखावत
तुम्हरी बुद्धि दान हम लेहैं ॥ काहे न तुम्हें जान हम देहैं

दो० आप भई हो चतुर सब, मोकों करत गँवार।
उगहत फिरि हैं दान हम, ठाढ़े ह्वै हैं द्वार ॥
सो० तुम्हैं देहुँ घर जान, फेरि कहो पाऊं कहां।
जापै पैहौं दान, नृपहिं ज्वाब कह देउँगो ॥
भली भई नृप मान्यो तुमहूँ ❋ चलिहैं कंसहि पै अब हमहूँ
तब ते लेन कहत हैं दानहिं ❋ नंद महर की करि करि आनहिं
हम हूँ अब लौं ऐसी जानी ❋ भये श्याम घरही ते दानी
अब जान्यो तुम कंस पठाये ❋ नृप ते दान पहिरि तुम आये
सुनि हरि ये गोपिन के बैना ❋ हँसे कछू तिरछे करि नैना
सो छबि निरखि कहत सब नारी ❋ कहा हँसे मुख मोरि मुरारी
सोई कहौ मनहिं जो आई ❋ तुमको यशुमति महरि दुहाई
और सौंह तुमको गोधन की ❋ सांची बात कहौ तुम मनकी
हँसे कहा हम सों कछु रीझे ❋ कैधों कछु मनहीं मन खीझे
यह सुनि अधिक हँसे गोपाला ❋ कहत श्रीदामासों नँदलाला
यह अचरज इनको तुम हेरो ❋ कहत कहा तुम हँसि मुख फेरो
ऐसी बातन सौंह दिवावत ❋ ताते अधिक हँसी मोहिं आवत
दो० तब श्रीदामा तियन सों, बोल उठ्यो मुसकाय।
हँसत श्याम तुम समझ के, बूझत सौंह दिवाय ॥
सो० हमन दिवावैंआन, हँसहुतुमहुँ निज संग मिलि।
यहै आतसी बात, थोरेमें खिसियात तुम ॥
सहज हँसत नाहिंन सकुचैये ❋ नाहिंन लोगन सौंह दिवैये
वे हैं दानी प्रभु सबही के ❋ देहु दान मांगत कबही के
हम जानत वे कुँवर कन्हाई ❋ प्रभु तुम्हरे मुख अब सुनि पाई
होत नहीं प्रभुता इहि भांती ❋ दही मही के भये जगाती

वे ठाकुर तुम्हरी सेवकाई ॐ जाने प्रभु अरु सब प्रभुताई
दधि खाये अरु भूषण तोरे ॐ छांड़ि देहु अब दई निहोरे
जो कछु बचो सोऊ अब लीजे ॐ वेगहु जान हमें घर दीजे
तब हँसि बोले श्याम सुजाना ॐ तुम घर जाहु देइ के दाना
आयो हौं पठयो मैं जाको ॐ देउँ कहा लेके पुनि ताको
अबहीं पठवै मोहिं बुलाई ॐ तब ताके सनमुख को जाई
तुम सुख करो जाय घरमाहीं ॐ नृपकी गारि मार को खाहीं
जब नृपबर मोकों अटकावै ॐ तब पुनि तुम बिन कौन छुड़ावै

दो० लेत नाम मुख नृपतिको, जा मुख निदरयो जाय।
आपुनतो नृप नृपनके, अब कह समुझै ताय॥
सो० लियो कंसको नायँ, ऐसी तुम्हें न बूझिये।
भलेश्याम बलिजायँ, जिहिनिंदियेतिहिवंदियो॥

जब हम कंस दुहाई दीनी ॐ तब तो नृपपर अति रिस कीनी
अबै कहा नृप की सुधि आई ॐ जो तुम ऐसे डरे कन्हाई
कहा कह्यो कछु जान न पायो ॐ कब हम कंसहि शीश नवायो
कब हम नाम कंस को लीनों ॐ कंस त्रास कबधों हम कीनों
निपट भई तुम ग्वारि गँवारी ॐ बसत हमारे गांव मँझारी
कितक कंस जाको हम जानें ॐ कहा त्रास ताको उर आनें
तुम्हरे मनें बात यह आवत ॐ कंस नृपति के हम कहवावत
तौ तुम कहौ कौन नृप जाके ॐ आपुन कहवावत हौं ताके
ताको नाम हमहुँ सुनि पावें ॐ हमहूं पुनि ताके कहवावें
यासे सार लोक त्रय माहीं ॐ दूजो कंस नृपति तें नाहीं
सो नृप बसत कहां सोउ जानें ॐ तो हम सब ताही को मानें
यह सुनि हम अब अति डरपायो ॐ कै धौं झूठहि हमहिं डरायो

दो० जा नृप के हम हैं अरी, को नहिं जानत ताहि।
जड़ चेतन नर नारि सब, तिहूँ भुवन बश जाहि॥
सो० बसत सुमनपुर माँहि, कहँ लग तिन्हें प्रशंसिये।
सब मानतहैं जाहि, तिन पठयो म्वहिं पान दै॥

सुनत ढ़ मोहन की बानी ❁ बोलीं ब्रजसुन्दरी सयानी
जात तुम्हारे नृप की पाई ❁ अब लौं राखी कहूँ छिपाई
जैसे तुम तैसे ओऊ हैं ❁ एक रूप गुण के दोऊ हैं
यह अनुमान कियो मनमें हम ❁ एकै दिन जन्मे दोऊ तुम
जैसी प्रजा तैसेई राजा ❁ बन्यो भलो अब संग समाजा
चोरी ठगी निपुण गुण दोऊ ❁ या पटतर को और न कोऊ
बोलत नाहिंन बात सँभारी ❁ ठगति फिरति ठगनी तुम सारी
भई ढीठ नहिं नेक बिचारौ ❁ आवत मुख सोई कह डारौ
अपने गुण औरन पर डारी ❁ जाति जनावति दै दै गारी
हम भईं ठगनी अरु बटपारी ❁ तुम भये कान्ह सुधर्मा भारी
अपने नृप को यहै सुनावौ ❁ ऐसिय चुगली जाय लगावौ
राजा बड़े जान यह पाई ❁ ल्यावहु हम पर धौंस चढ़ाई

दो० तुम तो ठग आछे बने, बन में रोकी नारि।
हमें कहौ काको ठग्यो, को हम डार्यो मारि॥
सो० तुमहीं जानत श्याम, यंत्र मंत्र टोना ठगी।
ठगत फिरत सब बाम, आपन ढँग औरन कहत॥

मौन गहौ बातें सब पाई ❁ यहै जान हम पर चढ़ आई
जो चाहौ सोई कहि डारो ❁ हम नाहिं मानहिं बिलग तिहारो
तुम मोहीं को दोष लगायो ❁ मैं तो नृप को पठयो आयो
यौवन रूप लिये तुम इतहीं ❁ आवत हौ इहि मारग नितहीं

लोचन दूतन जाय सुनायो ❀ तब नृप रिसकरि मोहिं बुलायो
शैशव महलन ते नृपराई ❀ बैठ्यो सिंहासन तरुणाई
तुरतहिं मोहिं दान पहिरायो ❀ दे बीरा तुम पास पठायो
तिनको नाम अनंग भुवाला ❀ उन को दान देहु ब्रज बाला
तिनकी आनि कहतहों कीने ❀ पैहो जान दान के दीने
सुनि यह मोहन की मुख बानी ❀ प्रेम सिंधु युवती मगनानी
काम नृपति की फिरी दुहाई ❀ अटक्यो यौवन रूपहि आई
को हम कहां रहति कहँ आईं ❀ यह सुधि बुधि तब दशा भुलाई

दो० त्रसित भई डर मदन के, नयन मूंदि धरि ध्यान।
कहत कान्ह अब शरण हम, लीजै सरवस दान॥
सो० ऐसे कहि मनमाहिं, देह दशा भूलीं सबै।
लेहु श्यामबलिजाहिं, यह धन तुमहित संचियो॥

यौवन रूप चाहि तुम लायक ❀ सकुचत तुम्हें देति ब्रजनायक
नवलकिशोर रूप गुण आगर ❀ अहो श्यामसुन्दर वर नागर
यह यौवन धन तुम ढिग ऐसे ❀ जलधि निकट जल कणिका जैसे
ध्यान मगन इहि विधि ब्रजनारी ❀ मनहीं मन विनवत बनवारी
अन्तरयामी हरि सब जानें ❀ मनहीं की करनी सब मानें
मनही सबन मिले सुखदाई ❀ तनकी सुरति सबन तब आई
खुल गये नैन ध्यान ते तबहीं ❀ देखे मोहन सन्मुख सबहीं
तब जान्यो हम बन में ठाढ़ी ❀ सकुच गईं अति अचरज बाढ़ी
कहति परस्पर आपुस माहीं ❀ कहां हती हम जान न जाहीं
श्याम विना यह चरित करै को ❀ ऐसी विधि करि मनहि हरै को
रहीं चकितसी सब ब्रजनारी ❀ बोलि उठे तब कुंजविहारी
कहा ठगीसी हौ ब्रजबाला ❀ परखो कहा उर शोच विशाला

दो॰ कह्यो दान लेखो कछु, रहीं जहां तहँ शोच।
प्रगट सुनावो सो सुहीं, दूर करौं सब शोच॥
सो॰ बहुरि न रोकै कोय, या बनमें कोऊ तुम्हें।
निशिबासर भयखोय, सुखसों आवहु जाव नित॥

हमें और रोकै सो को है ❋ रोकनहार सुवन नँद को है
टोना डारत शीश हमारे ❋ आप रहत ठाढ़े है न्यारे
जाके काम नृपति को जोरा ❋ ठगत फिरत युवतिन बरजोरा
सुनत श्याम बूझिय नहिं ऐसी ❋ तुमको बानि परी यह कैसी
कैसेहू अब कृपा करो हरि ❋ जाहिं सबै अपने अपने घरि
दान मान घरको सब जाहू ❋ बहुरि न मैं रोकौंगो काहू
मैंहू जानत हों कछु लेखो ❋ तुमहू आप समुझि मन देखो
पिछलो देहु निबेर आज सब ❋ आगे पुनि दीजो जानौ जब
अब मैं भली कहत हौं तुमकों ❋ जो मानों ग्वालिन तुम हमकों
को जानै हरि चरित तुम्हारे ❋ अहो रसिक वर नंददुलारे
हमरो सर्वस मन अपनायो ❋ अजहूं दान नहीं तुम पायो
लेखो करि लीजो मनभायो ❋ खाहु कछू दधि हम सुख पायो

दो॰ सदमाखन लायेतुम्हैं, सखन सहित मिलिखाहु।
सुख पावैं हम देखिकै, लीजै दान उगाहु॥
सो॰ अब दधिदानी नाउँ, तुम्हरो प्रकट बखानि हैं।
खाहु दही बलिजाउँ, ल्याई हम तुम्हरे लिये॥

तब हरि हँसि सब सखन बुलाई ❋ बैठे रचि मण्डली सुहाई
दोना बहु पलाश के ल्याये ❋ शोभित सब के करन सुहाये
सुन्दर हरि सुन्दर सब ग्वाला ❋ सुन्दर दधि परसति ब्रजबाला
भक्त भाव के हाथ बिकाने ❋ ग्वालन संग खात रुचिमाने

निज निज मटुकिनते सबग्वारी ❁ देति करति उर आनँद भारी
श्याम पतूलिन सों मुख नावें ❁ निरखिनिरखि ग्वालिन सुख पावें
धन्य धन्य आपुन को जान्यो ❁ सुफलजन्म सबहिन करिमान्यो
कहत धन्य यह दधि अरु माखन ❁ खात कान्ह जाको अभिलाषन
जो हम साध करतही मनमें ❁ सो सुख पायो हरिसँग बनमें
अति आनंद मगन सब ग्वारीं ❁ नंदनँदन पर तन मन वारीं
प्यारी सों माखन हरि मांगत ❁ देखें तुम्हरो कैसो लागत
औरन की मटुकी को खायो ❁ तुम्हरे दधिको स्वाद न पायो

दो० श्री बृषभानुकुमारि तब, दधिल्याई मुसुकाय।
अपने कर अधरन परस, दीनों बिहँसि खवाय॥

सो० प्यारीको दधिखाय, अलप चितै मोहन बिहँसि।
मधुरे कह्यो सुनाय, मीठो है यह सबन तें॥

गोपिन के हित माखन खाहीं ❁ प्रेमबिबश नहिं नेक अघाहीं
वैसिय गोरस भरी कमोरी ❁ परसत सबै होत नहिं थोरी
ग्वालनसहित श्याम दधिखाहीं ❁ परम हर्ष सबके मनमाहीं
हँसत परस्पर सखा सयाने ❁ मीठो कहि कहि स्वाद बखाने
हरिहँसि सबके चितहि चुरावैं ❁ परमानंद सबन उपजावैं
बिलसत ब्रजबिलास बनवारी ❁ दधिदानी प्रभु कुंजबिहारी
सरगुण तियन सहित नभमाहीं ❁ निरखि निरखि मनमाहिं सिहाहीं
धनिधनि ब्रजकी युवति सभागी ❁ खात ब्रह्म जिनतें दधिमांगी
जा कारण शिव ध्यान लगावैं ❁ शेष सहस मुख जाको गावैं
मन बुधि बचन अगोचर जोई ❁ जाको पार न पावै कोई
नारदादि जाके गुण गावैं ❁ निगम नेति कहि अंत न पावैं
गुणातीत अवगति अविनासी ❁ सो प्रभु ब्रजमें प्रकट बिलासी

छं० प्रकटे सो प्रभु ब्रजमें बिलासी जाहि मुनिजन ध्यावहीं।
योग जप तप नेम संयम करि समाधि लगावहीं॥
रूप रेख न वरण जाके आदि अन्त न पाइये।
भक्त वश सो ब्रह्म पूरण गोप वल्लभ गाइये॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड जाके रोमप्रति ।
कीट ब्रह्म प्रयन्त जल थल आप सब उपजावहीं॥
आप कर्त्ता आप हर्त्ता आपही पालन करें।
खात सो प्रभु दान दधिलै गोपिकन के मन हरें॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी धन्य बन पावन मही।
धन्य मोहन दान मांगत दूध दधि माखन मही॥
धन्य ब्रज यक पलक को सुख और यह त्रिभुवन नहीं।
कहत सुर मुनि हरषि पुनि पुनि सुमन सुन्दर वर्षहीं॥
कान्ह गोपी ग्वाल द्वै नहिं एकही वहु तन धरे।
भक्तजन हित बिरद जाको अमित लीला विस्तरे॥
ब्रज बिलास हुलास हरि को नित्य निगमागम कहै।
दास ब्रजवासी सदा यह गाय आनँद पद लहै॥

दो० दान चरित गोपालको, अति बिचित्र रसखान।
बेद भेद पावैं नहीं, कबि किमि करै बखान॥

सो० गावत सुनत सुजान, दधि दानी लीलारुचिर।
प्रेम भक्ति को दान, ब्रजबासी जन पावहीं॥

ब्रजललना यों हरिहिं सुनावैं ❋ दूध दही माखन अरु लावैं
मटुकिनते लै लै हम देहैं ❋ खाहु श्याम तुम हम सुख लेहैं
गोरस बहुत हमारे घर वर ❋ लीजै दान पाछिलो भर भर
यह गोरस जो तुमने खायो ❋ सो तो दान आजको आयो

लेहु सबै अपनो करि लेखो ❋ फिरत पायहौ मांगे सेखो
श्याम कही अब भई हमारी ❋ मनहिं भई परतीत तुम्हारी
प्रीति भई हमसों तुमसों अब ❋ लेहैं मांगि चाहि हैं जब तब
निधरक अब बेचहु दधि जाई ❋ घाट बाट कछु डर नहिं राई
ग्वालिन भई श्याम वश माहीं ❋ घरको जात बनत है नाहीं
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी ❋ कहत एक सों एक बिचारी
सुनहु सखी मोहन कह कीनों ❋ दान लियो कै मन हरि लीनों
यह तो हम नहिं बदी सयानी ❋ बूझौ धौं इन सों यह बानी

दो० बूझन को उमगी सबै, मोहन सों यह बात।
निकट जात रहि जाति पुनि, सकुच मगन ह्वै जात॥

सो० मनहीं मन सकुचात, कहिये कैसे श्यामसों।
कहत बनत नहिं बात, प्रेम बिबश तरुणी सबै॥

सुनौ बात मोहन यक हम सों ❋ ढीठो बहुत कियो हम तुमसों
क्षमा करौ सो चूक हमारी ❋ अहो श्याम हम दासि तुम्हारी
हँसि हँसि कही कटुक हम बानी ❋ तुम्हें खिझावत हित मनमानी
कछू हमारी उर सों नाहीं ❋ अति आनँद तुम सों मन माहीं
दधिको दान और जो जान्यो ❋ सबै तुम्हारो कर हम आन्यो
कहा श्याम तुम यह कह कीनों ❋ दान लियो कै मन हरि लीनों
हम तुमसों कछु भेद न राख्यो ❋ कीनों सबै तुम्हारो भाख्यो
यह करनी तुमहीं अब जानौ ❋ भली बुरी जो कछु करि मानौ
जो जासों अन्तर नहिं राखै ❋ सो तासों क्यों अन्तर भाखै
नँदनन्दन तुम अन्तर जानी ❋ बेद उपनिषद साखि बखानी
सुनहु बात युवती सब मेरी ❋ तुम हित करि राख्यो म्वहिं घेरी
तुम ते दूर होत मैं नाहीं ❋ रहत तुम्हारे निकट सदाहीं

दो० तुमकारण बैकुण्ठ तजि, प्रकटतहौं ब्रज आय।
वृन्दावन तुम्हरो मिलन, यह न बिसार्यो जाय॥
सो० एक प्राण द्वै देह, अन्तर कहूं न जानिहो।
यह न नयो अबनेह, कत भूलत ब्रजवास वसि॥
अब घर जाहु दान मैं पायो ❋ जानत यह लेखो निवटायो
हँसि हँसि जो भावत वनवारी ❋ कहत भई तब ब्रजकी नारी
घरतन मनहिं बिना किन जाई ❋ करत कहा मोहन चतुराई
सब तन पर मनहीं है राजा ❋ जो कछु करै होय सो काजा
सो तो मन राख्यो तुम गोई ❋ घरको जान कौन विधि होई
इन्द्री गण मन के आधीना ❋ चलत नहीं तन मनहिं विहीना
जो तुम प्रीति करी मनमोहन ❋ तौ दुबिधा क्यों लाई गोहन
यह तो तुम जानी ब्रजनाथा ❋ घर हम जाहिं देहु मनसाथा
मन भीतर में सबै मनायो ❋ तुमहीं लै म्वहिं तहां छिपायो
कहत कहा यह दोष तुम्हारो ❋ अजहूं तजो होहुं मैं न्यारो
लेहु आपनो मन घर जाहू ❋ लोक लाज डर जो पछताहू
तौ अब हमैं छांड़ि किन देहू ❋ हम करिहैं अन्तर निज गेहू
दो० जाते घटती होय निज, तजि दीजै सो बात।
दीनो मन में बास तब, अब मनको पछितात॥
सो० जब मन दीनो मोहि, तबहीं लीनो मोहि तुम।
जो लैहै मन खोहि, तौ मैं हूं जैहौं अनत॥
सुनहु श्याम ऐसी नहिं कहिये ❋ सदा हमारे मन में रहिये
तुमहिं बिना धृकमन अरु धृकघर ❋ तुम बिन धृक कुलकान लाज डर
धृक तुम प्रेम बिना पितु माता ❋ तुम बिहीन धृक सुत पितु भ्राता
धृक जीवन तुम बिन संसारा ❋ धृक सुख तुम बिन नंदकुमारा

धृक रसना तुम गुण नहिं गावै ❋ धृक श्रुति तुम्हरी कथा न भावै
धृक लोचन जिन तुम न निहारे ❋ धृक बिचार जो तुम न बिचारे
धृक दिन रात तुम्हें बिन जाई ❋ धृक श्वासा तुम बिना बिहाई
सो सब धृक जामें तुम नाहीं ❋ तन धन मन तुम बिना बृथाहीं
ऐसे कहि तन दशा बिसारी ❋ भई सनेह मगन सब ग्वारी
कबहूं घर तन जान बिचारैं ❋ कबहूं हरि की ओर निहारैं
दधि भाजन लै शिर पर धारैं ❋ कबहूं धरणी फेर उतारैं
रीती मटुकिन में कछु नाहीं ❋ कबहुं बिचार रहत मन माहीं

दो० बिहँसि कह्यो तब सांवरे, जाहु घरन ब्रजनारि।
सकुचत पछिले दान को, मैं लेहौं निरवारि॥

सो० ऐसे बचन सुनाय, सखन सहित हरि बन गये।
लै गये चित्त चुराय, युवतिन दान मनाय कै॥

गोपियोंके प्रेमकी उन्मत्तअवस्था लीला।

रीती मटुकी शिर पर धारी ❋ चलीं सबै उठि गोप कुमारी
एक एक को सुधि कछु नाहीं ❋ जानति नहीं कहां हम जाहीं
जड़ चेतन कछु नहिं पहिचानैं ❋ बन गृह कछू बिचार न मानैं
लोक बेद मरयादा दोऊ ❋ आप सहित भूलीं सब कोऊ
बेचत दधि बनही में डोलैं ❋ लेहु दही कबहूं कहि बोलैं
कहत द्रुमन बोलत क्यों नाहीं ❋ लेहो दधि कै हम फिरि जाहीं
तरु तरु सों पूंछत यहि भांती ❋ बन में फिरत प्रेम रस माती
मिलत परस्पर बिबश निहारी ❋ कहति फिरति क्यों बनमें नारी
तिन्हें कहति अपनी सुधि नाहीं ❋ सो कछु नहिं समुझत मनमाहीं
दधि भाजन रीते शिर धारैं ❋ भरी प्रेम तन दशा बिसारैं
कबहूं यमुना के तट नाहीं ❋ फिरति कबहुं कुञ्जन के माहीं

कबहूं बंशीबट तट आवैं ❋ ठाढ़ी ह्वै तहँ हरिहि बुलावैं
दो० लीजै गोरस दान हरि, कहँ धौं रहे छिपाय।
डर न तुम्हारे जात नहिं, तुम दधि लेत छिनाय॥
सो० लेहु आपनो दान, पुनि रिसकरि उठि धायहो।
हमैं न देहौ जान, बन में हम ठाढ़ी सबै॥
बैठ गईं मटुकी धर सबहीं ❋ जानति घरसे आईं अनहीं
सखा संग लीने हरि ऐहैं ❋ दधि माखन को दान चुकैहैं
दधिहि दुरावत अंचर तरिकै ❋ दीठ गईं मटुकिन में परिकै
रीती मटुकी सबन निहारी ❋ गईं भभरि उरमें सब नारी
जहां तहां कहि उठीं गुवाली ❋ गोरस ढरकायो कहुँ आली
कोउ कोउ कहत कान्ह ढरकायो ❋ कोउ कहै सखन संग हरि खायो
भई सुरति कछु तब तन माहीं ❋ गईं घरहि हम तब ते नाहीं
सकुच भई कछु गुरुजन डरते ❋ प्रातहि ते हम आईं घरते
रहीं कहां तब ते बन माहीं ❋ यह तो सुरति हमैं कछु नाहीं
जब हरि सखन संग दधि खाई ❋ गये बहुरि बन कुँवरकन्हाई
तब लौं की तो सुधि हम पाहीं ❋ भई कहा पुनि जानति नाहीं
जान परी हमको तो छोरी ❋ डारि गये शिर श्याम ठगोरी
दो० श्याम बिना यह को करै, लायो दधि को दान।
तन सुधि भूली तबहिं ते, वाकी मृदु मुसकान॥
सो० मनहरिलीन्हों श्याम, ता बिन निबहै कौनबिधि।
ऐसे कहि सब बाम, घर को चलन बिचारहीं॥
मन हरि सों तन घरहिं चलावैं ❋ ज्यों गजमत्त चलत छबि पावैं
श्याम रूप रस मद सों मात्यो ❋ कुल मरयाद महावत टात्यो
करस नेह बंधन सों तोस्यो ❋ मुरै न लाज कुँजन को मोस्यो

गुरुजन अंकुश जो सुधि आवै ❋ तब तन पर को पाव चलावै
ऐसे गई सदन ब्रजबाला ❋ नहिं भावत क्षण बिन नँदलाला
बूझत गुरुजन जब कछु जिनसों ❋ औरै बात बतावत तिनसों
गारी देत सुनत नहिं कोऊ ❋ श्रवण शब्द हरि पूरे दोऊ
मात पिता बहु त्रास दिखावैं ❋ नेक नहीं सो उर में ल्यावैं
बार बार जननी समझावति ❋ काहे को तुम हमहिं ससावति
जहां तहां काहे तुम जाओ ❋ नहिं अपनी कुलकान लजाओ
दधि बेचौ घर सूधे आवो ❋ काहे इतनो बिलँब लगावो
बूझे ज्वाब देति तुम नाहीं ❋ बसी कहा तुम्हरे मनमाहीं

दो० ऐसे सिखवत मात पितु, सो न करति कछु कान।
लागत हैं तिनके बचन, उर में बाण समान॥

सो० तिन्हैं कहत मनमाहिं, धृकधृक इनकी बुद्धि को।
जिन्हैं श्याम प्रिय नाहिं, तिन्हैं बनै त्यागे भलै॥

जिनको हरिकी प्रीति न भावै ❋ तिनको मुख जनि बिधि दिखरावै
ऐसे बिनय करति बिधि पाहीं ❋ गुरुजनको निंदति मनमाहीं
नेकु नहीं घरसों मन लागत ❋ बिसरत श्याम न सोवत जागत
नयन श्याम दरशन रस अटके ❋ श्रवण बचन रसते नहिं मटके
रसना श्याम बिना नहिं बोलै ❋ मन चंचल संगहि सँग डोलै
नासा अंग सुगंध लुभानी ❋ सुरत श्याम के रूप समानी
चरण चलत चाहत दिशि तेही ❋ जिहि दिशि सुन्दरश्याम सनेही
लोकलाज कुलकान मिटाई ❋ रँगी श्याम के रंग सुहाई
प्रातचली दधि लै ब्रजमाहीं ❋ इन्द्रीगण मन बुधि बश नाहीं
तनलै निकसी बेचन गोरस ❋ रसनासों अटक्यो हरिको यस
दधिको नाम भूलिगइ बाला ❋ कहत लेहु कोऊ गोपाला

भीज रह्यो मन मोहन को रस ❁ व्याप गई उरमाहिं दशादस

दो० फँसीं सबै खगवृन्द ज्यों, हरिछबि लटकनजाल।
तरफरात तामें परी, निकसि सकति नहिं बाल॥

सो० बोलत मुख न सँभार, पान किये जिमि वारुणी।
बिथुरीअलक लिलार, पग डगमग जिततितपरै॥

दधि बेचत ब्रजबीथिन डोलैं ❁ अलबल वचन बदनते बोलैं
गोरस लेन बुलावत जोई ❁ तिनकी बात सुनत नहिं कोई
क्षण कछु चेत करत मनमाहीं ❁ गोरस लेत आज कोउ नाहीं
बोलउठत पुनि लेहु गोपालहिं ❁ अटकिरह्यो मन वा हरि ख्यालहिं
लेहु लेहु कोऊ बनमाली ❁ गालिन गालिन बोलति ग्वाली
कोउ कह श्यामकृष्ण बनवारी ❁ कोउ कह लाल गोवर्द्धन धारी
कोउ कहि उठति दान हरिलायो ❁ कबहूं भई कि तुमहिं चलायो
देह गेहकी सुरति बिसारी ❁ फिरति शीश मटुकी दधिधारी
जाहि देहकी सुधि कछु होई ❁ दधिको नाम लेत तब सोई
इहिबिधि बेचतही सब डोलैं ❁ आप बिकानी बिनही मोलैं
श्याम बिना कछु और न भावै ❁ कोऊ कितनो कहि समुझावै
हरि दरशन बिन मति भइ भोरी ❁ अंतर लगी सुरत की डोरी

दो० प्रकट्यो पूरण नेह उर, जित देखैं तित श्याम।
समुझाईं समुझत नहीं, सिखदै थाक्यो ग्राम॥

सो० ज्यों दीपक घरमाहिं, बाहर नहिं देख्यो परै।
गुप्त होत सो नाहिं, जब तृण छु दावा भयो॥

इहि बिधि मगन सकल ब्रजनारी ❁ कृष्ण प्रेमरस मद मतवारी
सकल प्रेम की मूरति पूरी ❁ कोऊ तिन में नाहिं अधूरी
एक दशा सबही की जानो ❁ कहँलगि सबको प्रेम बखानो

तिनमें श्री बृषभानु दुलारी ❁ सकल शिरोमणि हरिकी प्यारी
नेक नहीं हरि ते सो न्यारी ❁ तिनकी कथा कहत बिस्तारी
दधि भाजन माथे पर धारै ❁ लेहु श्याम कहि बचन उचारै
बूझति तिन्हैं और ब्रजनारी ❁ बेचत कहा फिरत तू ग्वारी
प्रातहिं ते लीने दधि डोलै ❁ मुख ते नाम कान्ह को बोलै
कहा करत यह हमैं बतावो ❁ कछु हमको निज बात सुनावो
उफनत तक्र चुवत अँगमाहीं ❁ ताकी सुरत तोहिं कछु नाहीं
इत तें उत उत तें इत जाई ❁ बुधि मर्यादा सबै मिटाई
मैं जानी यह बात बनाई ❁ तेरो मन हरि लियो कन्हाई

दो० तिन्हैं कहत ग्वहिं नन्दघर, कहां सुदेहु बताय।
जहां बसत वह सांवरो, मोहन कुँवर कन्हाय॥

सो० है धौं याही गांव, कैधौं कहुँ अन्तर बसत।
कान्हर जाको नांव, मैं खोजत वाको फिरौं॥

बहुत दूर तें हौं मैं आई ❁ मोहिं देहु नँद सदन बताई
नन्दहि के द्वारे पर ठाढ़ी ❁ बूझत अति सम्भ्रमता बाढ़ी
लोक लाज कुलकी सब नासी ❁ मन बँधगयो प्रेम की फांसी
तब इक सखी परम हितकारी ❁ हरिकी प्यारीकी अति प्यारी
प्यारी को निज ढिग बैठाई ❁ शिक्षा बचन कहत समुझाई
अहे राधिका कुँवरि सयानी ❁ क्यों ऐसी अब भई अयानी
ऐसे प्रकट प्रेम नहिं कीजै ❁ देखि बिचारि धीर उर दीजै
हँसिहैं लखि सब ब्रज नर नारी ❁ एकहि बार लाज तें डारी
ऐसे कहा फिरत बिततानी ❁ मात पिता गुरुजनहिं भुलानी
जो पै कृष्ण प्रेम धन पैये ❁ राखिय गुप्त न प्रकट जनैये
ऐसी तोहिं बूझिये नाहीं ❁ समुझ देख अपने मनमाहीं

आजहुँ चेत बात सुन मेरी ❀ कहत कुँवरि तेरे हित केरी

दो० कृष्ण प्रेमधन पायके, प्रकट न कीजै बाल।
राखिय उर यों गोयकै, ज्योंमणिराखतव्याल॥

सो० तू अति नागरि नारि, पायो नागर नेह जो।
तौ कत देति उघारि, कहिहैं तोहिं गँवारि सब॥

मैं जो कहति सुनति कै नाहीं ❀ दैहै ज्वाब कछू मो पाहीं
कहिहै बचन कि मौनहिं रैहै ❀ घर अपने जैहै कि न जैहै
लोगनमुख सुनिहैं पितु माता ❀ ब्रज में प्रकटी है यह बाता
मानेगी मम बचन कि नाहीं ❀ कै फिरिहै ऐसेहि ब्रज माहीं
जो यह प्रीति श्याम सों जोरी ❀ लाज किये ह्वै है कह थोरी
ध्यान श्याम को धरि उर माहीं ❀ लाज छांड़ि कत भ्रमत बृथाहीं
मुखतौ खोल सुनहुँ तुव बानी ❀ कैसो कहति परै कछु जानी
कहा कहत मोसों तुम आली ❀ मन मेरो लीनों बनमाली
तब तें मोको कछु न सुहाई ❀ जित देखौं तित कुँवर कन्हाई
अब लौं नहिं जानत मैं वोही ❀ कहा कहत है अब तें मोही
कहां गेह को पितु अरु माता ❀ कहँ दुरजन को गुरुजन भ्राता
कहां लाज कहँ कान बड़ाई ❀ तू कह कहत कहां ते आई

दो० बार बार तू कहत कह, मैं नहिं समझति बात।
मेरे मन में घर कियो, वा यशुमति के तात॥

सो० रहत न मेरी आन, अपनी सों मैं कर थकी।
तू तो बड़ी सुजान, कहा देत सखि दोष ग्वाहिं॥

मेरे हाथ नहीं मन मेरो ❀ सुनै कौन सखि सिखवन तेरो
इन्द्रीगण मन की अनुगामी ❀ सब इन्द्रिन को मन यह स्वामी
सो मन हरि लीनो ब्रजनाथा ❀ इन्द्री गईं सबै मन साथा

अब मेरे बश में कोउ नाहीं ❀ रहीं जाइ सब हरिके पाहीं
नयन दरश के लोभ लुभाने ❀ श्रवण शब्द के माहिं समाने
अब ये फिरत न मेरे फेरे ❀ कहा होत सिखये सखि तेरे
मेरे हाथ हाथ में नाहीं ❀ कौन करै घूंघुट पट छाहीं
अब तो प्रकट भई जग जानी ❀ वा मोहन के हाथ बिकानी
मन मान्यो मोहन सों मेरो ❀ जग उपहास करै बहुतेरो
मेरे मन अब बस्यो कन्हाई ❀ कै लघुता कै होहु बड़ाई
मैं अपने मन हरिसों जोस्यो ❀ नाचकछ्यो तब घूंघुट छोस्यो
अब तो मेरे मन यह मानी ❀ मिल्यो श्याम सों ज्यों पय पानी

दो० मेरो मन हरिसँगबस्यो, लोकलाज कुल त्याग।
और ताहि सूझै नहीं, भो जहाज को काग॥

सो० ऐसे सखिहि सुनाय, मौन गही पुनि नागरी।
देह दशा बिसराय, मगन भई रस श्याम के॥

जाय पस्यो मन वाही ख्यालहिं ❀ बोलउठी कोउ लेहु गोपालहिं
कहत सखीसों तू को आली ❀ कहँ वह दधिदानी बनमाली
नन्दसदन सखि मोहिं बताओ ❀ नँदनन्दन प्रिय बेग मिलाओ
बिरहबिबश अति व्याकुल बाला ❀ मन हरिलीनो नन्द के लाला
दधि मटुकी लीने शिर डोलै ❀ द्वारे आय नन्द के बोलै
इत उत जाय तहीं फिरि आवै ❀ लेहु कान्ह दधि टेरि सुनावै
भ्रम भ्रम बिबश भई सब ग्वाली ❀ चलीं बनहिं खोजत बनमाली
बंशीवट यमुना तट जाई ❀ कहत दानदधि लेहु कन्हाई
फिरत बिकल बन बन दधि लीने ❀ तन मन हरिको अर्पण कीने
कीन्हो दिनकर प्रेम प्रकाशा ❀ लोकलाज डर तम कर नाशा
तनकी दशा बरणि नहिं जाई ❀ रोम रोम में रमे कन्हाई

प्रेम अधिक ब्रज गोपकुमारी ❀ गावत वेद पुराण पुकारी

दो॰ कृष्ण राधिका के चरित, अति पवित्र सुखखान।
कहत सुनत भवभयहरण, रसिकजनन के प्रान॥

सो॰ रसिकशिरोमणि राय, गोपीजन मनके हरन।
कहौं सु अब सुखदाय, रसलीला जो ब्रज करी॥

देखि दशा राधा की ग्वाली ❀ शिक्षा करति हती जो आली
चकित रही मनमांझ विचारी ❀ या शिर श्याम ठगौरी डारी
गई सखी सो हरि पै धाई ❀ कहत सुनहु प्रभु कुँवर कन्हाई
ढूंढ़ति फिरति तुम्हैं इक नारी ❀ अति सुन्दरी नवलसुकुमारी
पहिरे नीलाम्बर अति सोहै ❀ मुखद्युति चन्द निरखि मनमोहै
प्रातहिं ते लीने दधि डोलै ❀ लेहु गोपाल वदन तें बोलै
भ्रमत भ्रमत अति विकल भई है ❀ वंशीवट की ओर गई है
मन बच कर्म जान मैं पाई ❀ तुम मैं वाको प्राण कन्हाई
ताहि मिलो कबहूं सुखदाई ❀ कहत सखी करिकै चतुराई
तुम बिन बिरह बिकल अतिबाला ❀ मिलहु वेग ताको नँदलाला
सुनत श्याम मन हर्ष बढ़ायो ❀ सांची प्रीति जानि सुख पायो
हरि हँसि बिदा सखी को कीनो ❀ आप दरश प्यारी को दीनो

दो॰ परम हर्ष दोऊ मिले, राधा नन्दकुमार।
कुंज सदन सोहति मनो, तनधरि छवि शृंगार॥

सो॰ श्यामा अरु घनश्याम, कोटिकामरति द्युतिहरन।
ब्रजबासी उर धाम, युगलकिशोर बसो सदा॥

सोहत कुंज कुटी सुखरासी ❀ पिय घनश्याम बाम चपलासी
बिरह ताप तन दूर निवारी ❀ बोली मोहन सों तब प्यारी
कहा कहौं तुमसों सुन्दर घन ❀ कहत लजाति बाम मनहीं मन

होत चवाव सकल ब्रजमाहीं ❋ सुनत श्रवण सहिजात सुनाहीं
जादिन तुम गैया दुहि दीनी ❋ हाहाकरि दुहनी मैं लीनी
सहज गही बहियां तुम मेरी ❋ मैं हँसि तनक बदन तनहेरी
तादिन ते गृह मारग जित तित ❋ करत चवाव सकल ब्रजजन नित
यहै कहै ब्रज में सब कोऊ ❋ राधाकृष्ण एक हैं दोऊ
यह सुनि घर गुरुजन दुख पावैं ❋ कटुक बचन कहि त्रास दिखावैं
निकसत द्वार जबहिं तुम आई ❋ रहत सबै तब देखि लुगाई
निंदत तुम को मोहिं सुनाई ❋ सो मोपै हरि सह्यो न जाई
कहत मनहिं सबको तजि दीजै ❋ इन बिमुखन को सङ्ग न कीजै

दो० धृकधृक ते नर नारि हरि, जिन्हैं न तुमपद प्रेम।
हितकरि तुम जाने नहीं, कहा निबाहे नेम॥

सो० मैं लीन्हों दृढ़ नेम, सुनहु श्यामसुन्दर सुखद।
तुम पदपंकज प्रेम, यहै पतिब्रत पारि हौं॥

यह हरि तुम बिन कासों कहिये ❋ ब्रजबसि काके बोल न सहिये
ताते बिनय करति तुम पाहीं ❋ वा पैंड़े तुम आवहु नाहीं
जो आवो तो म्वहिं न जनावो ❋ मुरलीधुनि मोको न सुनावो
मुरली की धुनि सुनहुँ कन्हाई ❋ बिन देखे म्वहिं रह्यो न जाई
प्रेमाकुल सुनि प्रियकी बानी ❋ बोले बिहँसि श्याम सुखदानी
सांच कहत ब्रजके नर नारी ❋ तुम नेकहु मोते नहिं न्यारी
कहन देहु गुरुजन कह जाने ❋ वे अपने सब सुरत भुलाने
प्रकृति पुरुष एकै हम दोऊ ❋ तुम मोते कछु भिन्न न कोऊ
उभय देह लीला हित ठानी ❋ घट है भेद नहीं कछु पानी
जल थल जहां तहां तन धारों ❋ तुम तज कहूं रहत नहिं न्यारों
देह धरे को यहै बिचारा ❋ मानिय कुल कुटुम्ब ब्यवहारा

लोक लाज गृह छांड़ि न दीजे ❋ मात पिता गुरुजन डर कीजे

दो० प्रीति पुरातन राखि उर, जाहु प्रिया अब धाम।
प्रकट न कीजे बात यह, कहत बिहँसिके श्याम॥

सो० सुनत श्यामके बैन, हरष भई मन नागरी।
भयो हिये अति चैन, प्रीतिपुरातन जानि जिय॥

अति आनन्द भई मन प्यारी ❋ तब जान्यो हरि पति मैं नारी
भूलि गई काहे पछितानी ❋ यह महिमा हरि की जिय जानी
युग युग प्रभु लीला बिस्तारी ❋ जान लई बृषभानु दुलारी
हरिमुख अलप चितै मुसकानी ❋ रही परम आनँद उर मानी
कहत सुनहु प्रिय अन्तरयामी ❋ तुम कर्त्ता हौ जगके स्वामी
मात पिता गुरुजन हित भाई ❋ कहा नाथ यह नई सगाई
जो कर्त्ता औरै सुनि पाऊं ❋ तौ है प्रभु तिनको पतियाऊं
अरु परतीत जगत की जानौ ❋ तौ परमित छूटत डर मानौ
जो जाको सो ताहि को जानै ❋ कैसे औरन को मन मानै
अब नाहिं तजौं कमलपद पासा ❋ मन मधुकर कीनो जब वासा
यह सुनि हरि प्यारी उरलाई ❋ बहुबिधि करि प्रबोध समुझाई
तन धरि लोक बेद बिधि कीजै ❋ प्रीति रीति उर में धरि लीजै

दो० कहत श्याम अब जाहु घर, तुमको भई अबार।
प्रीति पुरातन गोय उर, करिये जग व्यवहार॥

सो० परम प्रेम उर लाय, घर पठई हरि भावती।
चलीसंग सुखपाय, फिर फिर चितवत श्यामतन॥

चली संग सुख लूट किशोरी ❋ लसत अंग मरगजी पटोरी
गजगति जाति भवन सुख पाई ❋ रहे रीझि छबि निरखि कन्हाई
प्यारी मन आनन्द बढ़ाये ❋ सुख भर चली लूटसी पाये

मनहिं कहत अति उमँग उछाहू ❀ यह धन प्रकट करौं नहिं काहू
सखियनहूं नाहिं भेद जनाऊँ ❀ कृष्ण प्रेम धन गुप्त दुराऊँ
श्याम कह्यो सोई उर धरिहौं ❀ प्रीति पुरातन प्रकट न करिहौं
ऐसे मनहिं बिचारति जाहीं ❀ तहँ इक सखी मिली मग माहीं
अंग अंग छबि लखि मुसकानी ❀ कहत बिहँसि प्यारीसों बानी
कह फूली सी आवति राधा ❀ आज रूप कछु अंग अगाधा
बदन सिकोरति मोरति भौंहैं ❀ कहति कछू मनहीं मन मोहैं
देखियत कछू अंग रस भीने ❀ सुलभ मनोरथ हरिसँग कीने
हम सों सो सब वात उघारौ ❀ दुरत न गन्ध दुरावन हारौ

दो० फिरतहतीब्याकुलअबहिं, जिनकेदरशनलाग।
कहां मिले नँदनन्द सो, धनि धनि तेरो भाग॥

सो० नहिं पावत हैं जाहि, योगीजन जप तप किये।
बश करि पायो ताहि, तैं कैसे कहु नागरी॥

कहा कहहिं सखि भई बावरी ❀ करन कछू चाहति चवावरी
तू हँसि कहति सुने जो कोऊ ❀ सो तो सांचि मानि है सोऊ
चकित होति सुनि अचरज तेरो ❀ है बिचार पुनि धरि कहुँ मेरो
ऐसे होय कहति तू जैसें ❀ गुरुजन में निबहौ पुनि कैसें
कहा भेद कछु तोसों मोसों ❀ मैं दुराव करिहौं सखि तोसों
को नँदनन्द कहति तू जिनकों ❀ मैं कबहूं देख्यों नहिं तिनकों
कै गोरे कै बरण सांवरे ❀ रहत ब्रजहिं कै अनत गांवरे
मैं तो नाहिं जानति वे जैसे ❀ तू वह बात मिलावति कैसे
जाहि चली जानी मैं तोकों ❀ कहा भुरावति है तू मोकों
अबहीं फिरति हती बौराई ❀ आजहि पढ़ि लीनी चतुराई
याही ब्रज हम तुम औ वोऊ ❀ दूर नहीं जो है कहुं कोऊ

परिहौ कबहूं फंद हमारे ❋ करि हैं तबहिं जुहार तुम्हारे
दो० निपुण भई उनके मिले, वह सुधि गई भुलाय।
आवति है बनकुंजते, बातैं कहति बनाय॥
सो० रीझे श्याम सुजान, कहे देति अँगकी पुलक।
मोसों करत सयान, सगि बगि रही सनेहजल॥
हँसत कहत कैधौं सुन रानी ❋ तेरी सौं मैं कछुअ न जानी
कह्यो कहा म्वहिं वहुरि सुनावै ❋ तोहिं सौंह मेरी जु दुरावै
कबहू कछू भाव यह पायो ❋ तैं देख्यो कै किनहु सुनायो
ऐसी कहत और जो कोऊ ❋ सुनती मोपै उतर न सोऊ
बूझत मोहिं लगावत ताही ❋ सपने हूं देख्यो नहिं जाही
ऐसी मोहिं कहो जिन कोई ❋ झूठी बातनि पर दुख होई
उचटाये पैहै कछु मोसों ❋ बहुरि नहीं बोलोंगी तोसों
तोते और काहि हित पैहौं ❋ जाते हित की बात जनैहौं
यह परतीत न ताको होई ❋ मैं राखति तोते कछु गोई
चतुर सखी मन में जब जानी ❋ मोते तो कछु नाहिं छिपानी
त्रास भई याके मन माहीं ❋ ताते बात कहति यह नाहीं
तब यह कही हँसत मैं तोसों ❋ जिन मन में दुख मानै मोसों
दो० मानी तेरी बात अब, कहँ तू कहँ वे श्याम।
हमहुँ उन्हें जानैं नहीं, बसत कौन धौं ग्राम॥
सो० हम आगे की आइ, भई सयानी लाड़िली।
हँसत कह्यो घर जाइ, तैं नहिं हरि कबहूं लखे॥
सकुच सहित बृषभानदुलारी ❋ गई सदन गुरुजन डर भारी
जननी कहत कहां हति प्यारी ❋ डोलति फिरति अजहुँ है बारी
घर तुहिं तनक देखियत नाहीं ❋ दधि लै ज़ात फिरत वन माहीं

श्याम संग बैठति है जाई ❋ आज तोहिं धिरवत हो माई
काहे को उपहास करावति ❋ दधिहि बेत्र सूधे किन आवति
बृथा करति मैया रिस मोसों ❋ को अब बात कहै री तोसों
ऐसी को बहि गई बिधाता ❋ श्याम संग फिरिहै सुन माता
कौने बात कही यह तोसों ❋ ताको नाम लेहि किन मोसों
धन्य भ्रात धनि धनि तू माई ❋ ऐसी बात कहति म्वहिं लाई
तू परघर क्षण क्षण कित जाई ❋ भँवर जाति नहिं नेकु डराई
श्यामा श्याम सकल ब्रजमाहीं ❋ ह्वै रहे लाज लगति तुहिं नाहीं
बड़े महरकी सुता कहावति ❋ काहे को पितु मातु लजावति

दो० खेलन को मैं जाउँ नहिं, कहा कहति री मात।
मोपै जात सही नहीं, यहै अनोखी बात॥

सो० घरघर खेलन जात, गोपनकी सब लरकिनी।
तू मोहीं रिसियात, तिनके मात पिता नहीं॥

मनहीं मन समझति महतारी ❋ अबहीं तो मेरी है बारी
कहा भयो तन बाढ़ भई है ❋ लड़काई अबहीं न गई है
झूठहिं बात उड़ी यह सारी ❋ श्यामा श्याम कहत नर नारी
खेलत देखि कहत सब कोऊ ❋ अबहीं तो बालक हैं दोऊ
सुनत सुता मुख सिखकी बानी ❋ मनहीं मन कीरति मुसक्यानी
तब गहि उर लाई चुचकारी ❋ परमोधति उरसों रिस टारी
खेलहु संग लरिकिनिन माहीं ❋ खेलन को मैं बरजत नाहीं
श्याम संग सुनि होत दुखारी ❋ झूठहि लोग लगावत गारी
जाते कुल को दूषण होई ❋ सुनि प्यारी कीजै नहिं सोई
अब राधा तू भई सयानी ❋ मेरी सीख लेहि जिय मानी
जननी के मुखकी सुनि बानी ❋ श्रीबृषभानु सुता मुसकानी

मन मन बिनय करत हरिपाहीं ❋ सुनहु श्याम तुम सब घट माहीं

दो० मात पिता मानत मनहिं, लोकलाज कुलकान।
नहिं जानत तुमको सुखद, जगतईश भगवान॥

सो० लेत तुम्हारो नांव, सकुचत हौं इनके निकट।
यह समुझत पछताव, तुम बिमुखन में क्यों रहौं॥

तुमम्वहिं कह्यो कानिकुल राख्यो ❋ क्यों बिष खाय सुधा जिन चाख्यो
जिन्हें नाथ तुम पद दृढ़ प्रेमा ❋ कैसे तिन सों निबहत नेमा
अहो श्याम मैं मन क्रम बानी ❋ नाथ तिहारे हाथ बिकानी
ऐसे कृष्ण हृदय में आनी ❋ बोली जननी सों हँसि बानी
तू अब कहति कहा मोकोरी ❋ अकथ बात है मा कछु तोरी
अब हरिसंग न खेलौं जाई ❋ जा कारण तू मोहिं सुगाई
आवन दे बाबा घर माहीं ❋ यह सब बात कहौं उन पाहीं
देति गारि म्वहिं श्याम लगाई ❋ ऐसे लायक भये कन्हाई
रोकी मोकों कालिह गली में ❋ सखिन संगमें जाति चली मैं
लागे कहन बँसुरिया मेरी ❋ तू लै गई चुराइ सो देरी
छठिआठै मोसों हैं जिन सों ❋ मोहि लगावति है तू तिन सों
सुन सुनकर राधा की बानी ❋ मुख निरखत जननी मुसकानी

दो० कहति मनहिंमन अबहिं लौं, नहीं गई लरिकाय।
बारेही के ढँग सबै, अपनी टेक चलाय॥

सो० अब जैहै मचलाय, कापै जाय मनाय पुनि।
हारिमानि रहि माय, बालकबुधि जिय जानिकै॥

बोलि लई हँसि कै दुलराई ❋ पुनि पुनि कहि मेरी रिसहाई
कण्ठ लगाय लई अति हितसों ❋ रही चकित शोभा लखि चितसों
चतुर शिरोमणि हरिकी प्यारी ❋ परम चतुर बृषभानदुलारी

बातन हीं माता बहिराई ❀ नीके राखि लई चतुराई
कृष्ण प्रेम धन पाय छिपायो ❀ संग सखी तिनहूं न जनायो
जैसे कृपण महा धन पावै ❀ धरत दुराय न प्रकट जनावै
सखी मिली जो मारग माहीं ❀ कह्यो जाय तिन सखियन पाहीं
सुनहु सखी राधा की बातैं ❀ कैसी आज करी उन घातैं
बृन्दाबन ते अबहीं आई ❀ हर्ष सहित मैं लखि मग माई
और भाव अंग छबि छाई ❀ श्यामहिं मिली भई मनभाई
मोकों देखत ही हँसि दीनों ❀ मैं हूं हर्ष मनहिं मन कीनों
जब मैं कही मिले हरि तोसों ❀ तब रिसकरि फेरचो मुख मोसों

दो० मो सों तब लागी कहन, को हरि काको नाँव।
के गोरे के सांवरे, बसत कौनसे गाँव॥

सो० मैं तो जानत नाहिं, लेत नाम तू कौन को।
लखेन सपनेहुं माहिं, सांच कहति कै हँसत म्वहिं॥

ऐसे कहि टेढ़ी करि भौंहैं ❀ चितई नेकु न मो तन सौंहैं
वह निधरक मैं सकुच गई री ❀ और कहौं तो करत खई री
तब मैं यह कहि घर पठई री ❀ मैं झूंठी तू सांच भई री
दोऊ एक भये अब जाई ❀ हमहूं सों यह बात दुराई
घर धौं जाय कहा अब कैहैं ❀ कैसी धौं तहँ बुधि उपजैहैं
सुनि कै बात सखी मुसकानी ❀ प्यारिहि देखन को अतुरानी
कहत सबै जबहीं हम जैहैं ❀ तबहीं जाय प्रगट करि दैहैं
कहां रहैं यह बात छिपानी ❀ दूध दूध पानी सो पानी
आंखिन देखतही लखि जैहैं ❀ कैसे हम सों बात छिपैहैं
अपनो भेद नहीं वह कैहै ❀ सुनि हौं कैसे गाल बजैहै
लखहु चरित्र जाय तुम वाको ❀ राधा कुँवरि नाम है जाको

मैं बूझों करि बहु चतुराई ❀ नेकहु थाह न वाकी पाई

दो० बड़े गुरुकी बुधि पढ़ी, वह नहीं पतियात।
एको बात न मानि है, सौ सौ सौंहैं खात॥

सो० रहिहौ सब पछताय, सुनत बचन वाके बदन।
अब जैहै रिसयाय, बातन बैर बढ़ाय हो॥

कहा बैर हम सों वह करि है ❀ बातन कैसे हमहिं निदरि है
औरन सों जो करती टारी ❀ तो हमहू जानती सयारी
वाकी जाति भले हम पाई ❀ हमहीं सों यह बात चुराई
परि है जब मेरे फँद आई ❀ दूरि करौं वाकी लँगराई
जो नहिं हमसन भेद कहैगी ❀ तौ पुनि कैसे कै निबहैगी
हम सों बैर किये कह पैहै ❀ बहुरि लिये मटुकी शिर ऐहै
चलो सबै देखैं घर ताको ❀ है निधरक कैधौं डर वाको
बूझै बात कहा धौं कैहै ❀ हमसों मिलिहै कै दुरि जैहै
रिस करिहै कैधौं हँसि बोलै ❀ बात छिपावै कैधौं खोलै
सहज सुभाव किधौं गरवानी ❀ यह कहि चलीं अली सब स्यानी
गईं निकट राधे के जबहीं ❀ जानगई नागरि मन तबहीं
ये सब मोपर रिस करि आईं ❀ तब इक मनमें बुद्धि उपाई

दो० काहू कर कीनों नहीं, आदर करि चतुराइ।
मौन गही बोलत नहीं, बैठि गई निठुराइ॥

सो० लखि सब सखी सुजान, बैठिगईं ढिग आपई।
औरै बात बखान, आपसमें लागीं करन॥

राधा चतुर चतुर सब आली ❀ चतुर चतुरकी भेंट निराली
उनतौ गही मौन निठुराई ❀ इन लखिलई तासु चतुराई
मुहां चहीं आपुस में कीन्हीं ❀ याकी बात सबै हम चीन्हीं

कहा भेद हमसों यह भाखै ❋ उलटे हमहीं पर रिस राखै
बूझहु इनहिं खुनट करि कोई ❋ कहा आज इन मौन लयोई
हमसों कहा ओट इन लीन्हीं ❋ साठसई हमहीं कर दीन्हीं
एक सखी तब बिहँसि सुनायो ❋ कहौ मौनब्रत किन सिखरायो
धनि वह गुरु मंत्र जिन दीनो ❋ कान लगतही ऐसो कीनो
कालि्ह और परभातहिं औरै ❋ अबहिंभई कछु और कि औरे
सुनि यह बात सबै हम धाई ❋ चकित भई देखन तुहिं आई
कहा मौनको फल अब कहिये ❋ सुनें कछू तो हमहू गहिये
इक सँग भई सबै तरुणाई ❋ मंत्र लियो तब हमन बुलाई

दो० अब तुमहीं को हम करैं, गुरू देहु उपदेश।
हमहूं राखैं मौन ब्रत, करैं तुम्हैं आदेश॥
सो० हम को कियो अजान, चतुर भई तू लाड़िली।
कहँ सीख्यो यह ज्ञान, ऐसी बिधि लागीं करन॥

रहत एक सँग हम तुम प्यारी ❋ आजहिं चटकभई तू न्यारी
कहा भयो तोहिं किनहिं सिखाई ❋ नई रीति यह कहा चलाई
हम तो तेरे हित की करिये ❋ और कहै तासों सब लरिये
सुनत कुँवरि सखियनकी बानी ❋ बोली करत सबै यह जानी
गुणागारि नागरी सयानी ❋ बोली सहित निठुरई बानी
तुम प्रीतम के बैरिनि मेरी ❋ बूझति तुम्हैं कहौ सखि हे री
वाको कहति जु गैल मिलीरी ❋ नहीं कही उन मोहिं भलीरी
कह्यो मोहिं तुम श्याम मिलेरी ❋ मैं चकरही सोंह मोहिं तेरी
मेरे अँग छबि और बताई ❋ तब मैं भई बहुत दुखदाई
जिनको मैं सपने नहिं जानौ ❋ फिरि फिरि तिन की बात बखानौ
मेरो कछु दुराव है तुमसों ❋ तुमहीं कहौ सखी सब हमसों

कहां रहति मैं कहाँ कन्हाई ❀ घर घर करत चवाव लुगाई
दो० औरकहै तौ मोहिं कछु, नहिं व्यापहि मनमाहिं ।
तुमहीं कहौ जो बात यह, तौ दुख होय कि नाहिं ॥
सो० तुम पर रिस मोगात, ताते आदर नहिं कियो ।
सुनि प्यारी की बात, रहीं सबै मुखतन चितै ॥
बोली एक सखी तिन माहीं ❀ हम तौ तोहिं कह्यो कछु नाहीं
ताही पर होती रिसहाई ❀ जिन यह तोसों बात चलाई
प्रथमहिं हमैं प्रगट यह करती ❀ हमहूं ताही सों सब लरती
क्यों सखि प्यारिय दोष लगावैं ❀ झूठी बातन बैर बढ़ावैं
तेरे श्याम कहां इन देखे ❀ काहे को सपने हू पेखे
भेदहिं भेद कहत सब बातैं ❀ देदै सैन करत सब घातैं
प्यारी सबके मन की जानै ❀ सबसों रूखे वचन बखानै
कौन कौनको मुख सखि गहिये ❀ जाको जो भावै सो कहिये
मन ते गढ़ि गढ़ि बात बनावै ❀ झूँठी को सांची ठहरावै
बिना भीतही चित्रित केरो ❀ बातन गहि आकाशहि फेरो
नेक होय तौ सबही सहिये ❀ झूठी सबै सुनत उर दहिये
आवत बोलन सुनि सुनि बातें ❀ रहियत मौन सबन ते तातें
दो० वृथा भेर मोसों करत, कहि कहि झूठी बात ।
भलो नहीं उपहास यह, मैं सकुचत दिनरात ॥
सो० मिले सखी जो श्याम, और कहां याते भली ।
सुनियत है अभिराम, नन्दमहरको सुवन अति ॥
कैसे हैं वे कुँवर कन्हाई ❀ जिनको नाम लेत यह माई
नयनन भरि मैं देखे नाहीं ❀ सुनियत सदा रहत ब्रज माहीं
कहति लजाति बात इक तुमको ❀ इक दिन मोहिं दिखावहु उनको

देखहुं धौं कैसे हैं तिनको ❋ तुम सब मोहिं कहति हो जिनको
सुनि बृषभानु सुताकी बानी ❋ हँसीं सबै गोपिका सयानी
सुन प्यारी तैं सीख हमारी ❋ कहन देहि कहि करै कहारी
तोको झूठ कहे कह पैहैं ❋ आपन को वे पाप कमैहैं
यह काहू पै जात छिपायो ❋ नेक सुगन्ध न दुरत दुरायो
तैं काहे को कान्हहि देख्यो ❋ खरिक दुहावन हूं नहिं पेख्यो
सुनहिं सखी राधा की बानी ❋ कहत कछू यह अकथ कहानी
रहति सदा ब्रज गांव मँझारी ❋ इन नहिं देखे री गिरिधारी
जो हम सुनी रही सो नाहीं ❋ ऐसेहि बायु बही ब्रज माहीं

दो० सुन प्यारी अब तोहिं हम, दिखरैहैं नँद नन्द।
तब बदिहैं यह राखिहो, देखि उन्हैं छल छन्द॥

सो० जब अइहैं इत श्याम, तब हम तोहिं बताइहैं।
ताहि देखिहैं बाम, हैं उनहूँ अभिलाख अति॥

तब तू चीन्ह लीजियो उनको ❋ कहति नहीं देखे मैं जिनको
हैं कैसे कारे की गोरे ❋ सुन्दर चतुर किधौं अति भोरे
तोहिं देखि ओऊ सुख पैहैं ❋ तेरे हित बांसुरी बजैहैं
नाना भाव करेंगे जबहीं ❋ हम सब तोहिं कहैंगी तबहीं
तुम हौ चतुर राधिका जैसे ❋ वेऊ श्याम चतुर हैं तैसे
हँसति कहति सब गोपकिशोरी ❋ चिरजीवहु यह सुन्दर जोरी
कबहूँ तो फँद परिहौ आई ❋ तबहीं देहिं चिन्हाय कन्हाई
सुनत व्यङ्ग सखियनकी बानी ❋ मन मन बिहँसत कुँवरि सयानी
चतुराई नीके गहि राखी ❋ सखियन सों ऐसे हँसि भाखी
जो तुम जिय में औरै जानी ❋ मेरी बात प्रतीत न मानी
जो अब मोहिं श्याम सँग पावो ❋ तब कीजो अपनो मन भावो

कान्ह पीत पट बेसर मेरी ❋ लीजो छोरि तबहिं गहि एरी

दो० यह सुनिके सब हँसिउठीं, प्यारी बदन निहारि ।
आईही अति गर्ब करि, चलीं सखी घर हारि ॥

सो० कहति परस्पर जात, निडर भई अति राधिका ।
कबहूँ तौ हम घात, परिहैं दोऊ आयकै ॥

तीसहु दिन जो चोर चोरै हैं ❋ साहहु पकरि कहू दिन पैहैं
बोली एक सखी तब तिन सों ❋ भेद लियो चाहति तुम उनसों
दूर धरो मन तें यह भाई ❋ बैठि रहो अपने घर जाई
अति बर बोल गई कह कीन्हो ❋ कैसी निठुर भई कछु चीन्हो
वह नहिं फन्द तुम्हारे आवै ❋ छन्द बन्द वाके को पावै
वह सबहिन में बड़ी सयानी ❋ मेरी बात लेहु तुम मानी
बोली अपर सखी सुन मोसों ❋ लीक खैंचि भाषत मैं तोसों
फेर फार देखो हम धरिहैं ❋ ऐसे कैसे हमहिं निदरिहैं
अब तौ भेद कियो है प्यारी ❋ हमहूँ को यह रिस है भारी
तब लगि मनमें धीर न लैहैं ❋ जब लग चोरी पकर न पैहैं
निशि बासर अब हम सब कोऊ ❋ श्यामा श्याम देखिहैं दोऊ
ताही दिन तिनसों हम लरिहैं ❋ जा दिन नीके पकरि निदरि हैं

दो० सब ब्रज गोपिनके बसी, बात यहै मन आन ।
हरि राधा दोऊ मिले, निशिबासर यह ध्यान ॥

सो० सबहिन मुख यह बात, और कछु चरचा नहीं ।
नन्द महर को तात, सुता महर बृषभानकी ॥

यहै चवाव करति सब गोपी ❋ हम सों ब्रात राधिका लोपी
लरिकाई ते हम सब जाने ❋ कीन्ही प्रीति श्याम सों याने
तब सत भाव न हती झुठाई ❋ अब हरिसंग सिखी चतुराई

आज मौन धरि कियो दुराऊ ❀ सदा होत किहि भांति बचाऊ
दिन द्वै चार मोर अब टारो ❀ रहौ सुभाव शोर जिनि पारो
करन देहु इन को लँगराई ❀ आपुहि बात प्रगट ह्वै जाई
तब इक सखी कही यों बानी ❀ कहा कहत तुम बात अयानी
तुम जु कहति वह जानति नाहीं ❀ हैं हम सब वाके नख माहीं
सात बरस ते प्रीति लगाई ❀ तुम तो आज जानि है पाई
वाकी चतुराई किन जानी ❀ मीन कबहिं धों पीवत पानी
हरिके ढंग सीखी सब वोऊ ❀ हैं बाहिर बानी वे दोऊ
देखहु कालिह केहु पतियानी ❀ फिरि आईं हम सब खिसियानी

दो॰ ऐसे सब ब्रज सुन्दरी, मिलिकै करति चवाव।
राधा हरि उरमें बसे, और न बात सुहाव॥

सो॰ यह रस जान अनूप, ब्रजबासी प्रभु प्रेमको।
करिकै कृष्ण स्वरूप, होयरही ब्रजकी तरुणि॥

श्रीराधा प्रातहिं तहँ आई ❀ जहां जुरी सब सखिन अथाई
आवति लखि सब रहीं चुपाई ❀ पेखत बदन गये सकुचाई
करति हुतीं उनहीं की बातें ❀ सकुच गईं तरुणी सब तातें
अति आदर करि कै बैठारी ❀ कही कहां तू आई प्यारी
कहा हमारी सुधितैं लीन्हीं ❀ बड़ी कृपा कछु हमपर कीन्हीं
मैं कह आज अनोखे आई ❀ तुम जु करति आदर अधिकाई
पहुनी करि करिये पहुनाई ❀ मैं तो आवति जाति सदाई
कैसी कहति बात तू प्यारी ❀ बैठन को नहिं कहै कहा री
तू आई करि कृपा हमारें ❀ हमहूं कहा मौन ब्रत धारें
तब हँसि बोली कुँवरि सयानी ❀ करी तर्क मोसों तुम जानी
ता दिन को बदलो यह कीनों ❀ मो सों दांव आपनो लीनों

यह सुनि हँसीं सकल ब्रज नारी ❁ कहन लगीं सब सुनु री प्यारी
दो० दांव घात जानति तुमहिं, हमतौ शुद्ध स्वभाव।
तोहिं मान आई सदा, तैसे मानति भाव॥
सो० तुम राखी मन लाय, तादिन बात भई जु वह।
हम डारी बिसराय, मान लई तेरी कही॥
चोर सबै चोरी करि जानैं ❁ ज्ञानी सब मन ज्ञानहिं मानैं
सुनि यह कुँवरि मनहिं मुसकानी ❁ कह्यो सखी यह सांच बखानी
जैसी जाके मन में होई ❁ बात कहति मुख तैसी सोई
मैं तो सांच कही तुम पाहीं ❁ कैसे धौं हरि जानत नाहीं
हरषि सखिन तब उरसों लाई ❁ कहत कहा तू रिस भरि आई
हँसति कहति तोसों हम प्यारी ❁ तू मति माने विलग कहा री
तुमहीं उलटी पुलटी भाखौ ❁ तुमहीं रिस करि उरमें राखौ
तुमहीं हरिको नाम बखानो ❁ तब मैं सुन्यो कछू तुम मानौ
जब हरि संग मोहिं कहुँ लहियो ❁ तब मनभावै सो कछु कहियो
अब कैसेहुं अस्नान चलौगी ❁ कै मो सों कछु फेरि लरौगी
वहै बात गठबंधन कीन्ही ❁ नहिं भूलिहौं जानि मैं लीन्ही
गहि गहि सबकी भुजा उठाई ❁ चलहु न्हान कबकी मैं आई
दो० यहिबिधिहासहुलासकरि, सखिनसंगसुकुमारि।
चली न्हान यमुनानदी, श्रीवृषभानु कुमारि॥
सो० सकल रूपकी रास, नव नागरि मृगलोचनी।
भरी अनन्द हुलास, कृष्ण प्रेममें एक मति॥

अथ स्नानलीला॥

चलीं यमुन सब नवल किशोरी ❁ कनक बरण तन कोमल गोरी

करति परस्पर सब सुकुमारी ❀ हास बिलास कुतूहल भारी
गईं यमुन तट गोप कुमारी ❀ सँग सोहत बृषभानुदुलारी
देखि श्याम जल लहरि सुहाई ❀ पैठीं सलिल न्हान अतुराई
श्यामा सहित न्हात सब नारी ❀ बिहरति जल बिहार सुख कारी
कंठ प्रमाण नीर में ठाढ़ी ❀ छिरकति जल अति आनंद बाढ़ी
करति बिबिध बिधि हासबिलासा ❀ एक एक गहि करति हुलासा
लैलै करसों नीर उछारें ❀ निरखि परस्पर मुख पर डारें
मानो शशि सेना सजि आये ❀ लरत जलज जल अस्त्र बनाये
सुनि तहँ श्याम युवति मनरंजन ❀ आये कोटिकाम द्युति भंजन
निरखत तट ठाढ़े छबि भारी ❀ यमुना जल बिहरत ब्रजनारी
कबहुं मधुर कल बेणु बजावैं ❀ नान्हे सुरन्ह माहिं कछु गावैं

दो॰ काछे नटवर बेषबर, चित्रित चन्दन अंग।
ठाढ़े उठँगि कदम्ब ते, कीने अंग त्रिभंग॥

सो॰ नवघन सुन्दरश्याम, ब्रजतिय मनचातकसुखद।
नखशिखअतिअभिराम, ध्यानकामपूरणसकल॥

पदनख इन्दु प्रभा द्युति हारी ❀ चरण कमल शीतल सुखकारी
जानु जंघ अति सुभग सुहाई ❀ करभरम्भ लखि रहत सदाई
कटि पट पीत काछनी काछे ❀ केसर कमल न पटतर आछे
क्षुद्रावली कनक छबि छाई ❀ नाभि गँभीर बरणि नहिं जाई
मनहुँ मराल बाल की श्रेनी ❀ सर समीप सोहति सुख देनी
बड़े बड़े मोतिन की माला ❀ बिच रोमावलि झलकि बिशाला
मनहुं गंग बिच यमुना आई ❀ चली धार मिलि तीन सुहाई
बाहु दंड दोउ तट कमनीया ❀ चंदन अंग रेत रमनीया
बनमाला तरु तीर सुहाये ❀ फूलि रहे पचरँग छबि छाये

कंबु कंठ त्रय रेख सुहाई ❁ तीनि भुवन शोभा जनु छाई
चिबुक चारु गाढ़ मन मोहै ❁ मुख छवि सिंधु भँवर जनु सोहै
अधर दशन द्युति बरणि न जाई ❁ तड़ित बिंब कह वह छवि छाई

दो० शुकनासा खंजन नयन, भृकुटि काम कोदण्ड।
मणिकुण्डलरविछविहरत,सोहतशीशशिखण्ड॥

सो० उपमा गई लजाय, निरखि श्याम को रूप वर।
जहँ तहँ रही छिपाय, पटतरको पहुँची नहीं॥

उपमा हरितन देखि लजानी ❁ दुरी भूमि कोउ वन कोउ पानी
कोटि मदन अपनो वल हारे ❁ मुकुट लटक भूपटक निहारे
कुंडल निरखि भ्रमत रवि रहहीं ❁ तपन हृदय क्षण धीर न गहहीं
अलक नासिका कर पद नैनन ❁ अलिशुककमल मीन खंजनगन
लखि सकुचाय रहत वनमाहीं ❁ कहत हमैं कवि कहत वृथाहीं
दशन दमक दामिनी लजानी ❁ क्षण प्रगटत क्षण रहति छिपानी
समुझत सधर अधर अरुणाई ❁ विद्रुम बंधू बिंब लजाई
गगन रह्यो शशिवदन निहारी ❁ घटत घटत नित शोचत भारी
चारु कंठ लखि अति सकुचानो ❁ रहत शंख जल मांझ छिपानो
बाहु देखि अहि विवर समाने ❁ केहरि कटि लखि वनहिं पराने
गज गति गुलफ निरखि शरमाई ❁ ऊंची आंख न सकत उठाई
निज इच्छा छवि हरि वपु धारी ❁ दीनी पटतर मेटि मुरारी

दो० अनुपमछवि कवि क्यों कहै, बिन उपमा आधार।
ब्रजतिय मोहन मनहरण, सुन्दर नन्दकुमार॥

सो० अधर मनोहर बैन, मन्द मन्द बाजत मधुर।
उपजावत मन मैन, ब्रज सुन्दरि नवनागरिन॥

जल विहार करि गोप किशोरी ❁ निकरि चलीं तट को सब गोरी

जानु जंघ जललौं सब आई ❋ चुवत नीर अचरन छबि छाई
परे दृष्टि मोहन तट माहीं ❋ ठाढ़े कदम बिटप की छाहीं
प्यारी निरखति रूप लुभानी ❋ पंगु भई मति गति बहरानी
इतहि लाज सखियनकी आई ❋ दरशन हानि न उत सहिजाई
मनहिं ज्ञान करि यह अनुमानी ❋ लैहैं आज सखी सब जानी
जान गई यह अली सयानी ❋ जान बूझ सब भईं अयानी
बहुरो न्हान लगीं सब पानी ❋ रहीं इतै करि आना कानी
प्यारी कबहुँ श्याम तन हेरै ❋ कबहूं दृष्टि सखिन तन फेरै
जानी सबै न्हात जल माहीं ❋ मेरी दिशि चितवत कोउ नाहीं
तब मन में यह बात बिचारी ❋ देखि लेहुँ अब छबि गिरिधारी
यह दरशन कबधौं फिरि होई ❋ ललकिलगीं अँखियां हठि दोई

दो॰ निरखतिश्यामा श्याम छबि, पार निमेष न भोर।
नैन बदन शोभित मनो, द्वै शशि चारु चकोर॥

सो॰ करत मुदित दोउ पान, रूप माधुरी अमियरस।
तृप्त न क्योहूँ मान, बिबशभये मन दुहुँनके॥

यद्यपि सकुच सखिन की गाढ़ी ❋ तद्यपि रुकी न चितवन बाढ़ी
उमँगि गई सरिता की नाहीं ❋ सन्मुख श्याम सिन्धुकेमाहीं
भरी सलिल अनुराग अथाहा ❋ भँवर मनोरथ लहर उछाहा
कुल मरयाद अरार ढहाये ❋ लोक सकुच तरु तीर बहाये
धीरज नाव गही नहिं जाई ❋ रहे थकित पल पथिक डराई
इकटक ओर अखण्डित धारा ❋ मिली श्याम छबि सिंधु अपारा
कहति सखी सब आपस माहीं ❋ नयन सैन दै दै मुसकाहीं
देखहु री प्यारी उत अटकी ❋ ना जानिये कौन अँग लटकी
कालिह हमहिं कैसे निदरी है ❋ मेरे चित अब खुटक परी है

बात कहत मेलै मुख तुलसी ❀ देखहु अब देखत किमि हुलसी
सुन्दरि पियके रूप लुभानी ❀ वे बातें अब सबहिं भुलानी
इक टक रही नेक नहिं मटकी ❀ को जानै काहू के घटकी

दो॰ भई भाव भोरे कछू, देखतही सुखदाय।
चित्र पूतरी सी रही, देह दशा बिसराय॥

सो॰ उत वे रहे लुभाय, नागर नवलकिशोर वर।
प्यारी मुख दृगलाय, नैन नहीं मटकत कहूँ॥

औरै भाव भई सखि प्यारी ❀ बढ़यो प्रेम अंकुर तरु भारी
गई तासु जर सप्त पताला ❀ पहुँच्यो अंतर शिखर विशाला
बचन पत्र अवलोकन शाखा ❀ सब जग छांह भई अभिलाखा
गुणविधि सुमन सुगंधि निकाई ❀ लगी गई आनन्द सुहाई
पूरण आसन बिन भर भारा ❀ भल लाग्यो वर नन्दकुमारा
रहे रीझि तन मन धन वारैं ❀ अरस परस दोउ खूब निहारैं
तब इक सखी कह्यो मुसकाई ❀ प्यारी देखे कुँवर कन्हाई
वेई हैं सुन्दर सुखदाई ❀ जिनकी ब्रज में होत बड़ाई
हमैं कहत ही मोहिं दिखावहु ❀ देखिलेहु अब मन सुख पावहु
बहुत लालसाही मन तेरे ❀ ताही ते हरि आये नेरे
पूंजी आश दरश अब पाये ❀ हमहीं इनको बोल पठाये
राखौ चीन्ह इन्हैं अब नीके ❀ ये मनभावन हैं सबही के

दो॰ भले शकुन आईं इहाँ, भयो तुम्हारो काज।
अब कछु हमको देहुगी, मिले तुम्हैं ब्रजराज॥

सो॰ भयोनागरिहिशोच, सुनिसुनि सखियनके बचन।
कहति करी मैं पोच, इन जानी अब बात सब॥

मैं हरि तन लखि रूप लुभानी ❀ सो ये देखि सबै मुसकानी

कालिह कही इन सों में वैसे ❁ देखी आज मोहिं इन ऐसे
इन आगे मो बात नशानी ❁ अब वे करत मोहिं बिन पानी
मोहीं पर मेरी चतुराई ❁ परी उलटि उर अति संकुचाई
कहत सखिनसों ज्वाब न आयो ❁ तब मनमें हरि पियको ध्यायो
अहो श्यामसुन्दर सुखदानी ❁ मैं प्रभु तुम्हरे हाथ बिकानी
अब सहाय सुन्दर तुम कीजै ❁ मेरी बात नाथ रख लीजै
ऐसो उत्तर देहु जमाई ❁ जाते मेरी पति रहिजाई
ऐसे हरिको सुमिरि सयानी ❁ तब यक बात मनहिं मन ठानी
उरमें भयो बुद्धि परकासा ❁ तब कीनो मनमाहिं हुलासा
सखिन कह्यो अब घर चल प्यारी ❁ भई यमुन तट बहुत अबारी
कबकी न्हान इहां हम आई ❁ ऐसे कहि कहि सब पछिताई

दो० कियो दरश तुम श्यामको, घरचलिहौ कै नाहिं।
चीन्हिरहौमिलियोबहुरि, यहकहिसबमुसकाहिं॥

सो० तब सखियनके साथ, चली सदनको नागरी।
उर में धरि ब्रजनाथ, प्रेम मगन बोली नहीं॥

हँसि बूझति यक गोपकुमारी ❁ कहो श्याम कैसे हैं प्यारी
भाये री तेरे मन माहीं ❁ हैं सुन्दर कछु कैधौं नाहीं
कै हम सों फिरि बात लुकैहौ ❁ कै अब मनकी सांच जनैहौ
हम बरणे जैसे तुहि पाहीं ❁ कहु तैसे हरि हैं कै नाहीं
कहति मनहिं बृषभानु दुलारी ❁ मेरे ख्याल परीं सब ग्वारी
बातन बातन करति उघारो ❁ ये चाहति अबहीं निरवारो
मोहूं ते ये चतुर कहावैं ❁ मोको बातन मांझ भुलावैं
ऐसे इनसों बचन बखानो ❁ इनकी चातुरता गहि मानो
मेरे शिर समरत्थ कन्हाई ❁ कह करि हैं मो सों चतुराई

प्यारी पिय के गर्व गहेली ❀ अंग अंग सुख पुंज भरेली
मन्द मन्द गति हंस सुहाई ❀ पग द्वै चलत ठठक रहिजाई
मगन श्याम रस मुख नहिं बोलै ❀ धरणी चरण नखन करि छोलै

दो० चितवत सूधे नेक नहिं, काहू तन अनखाय।
रही गर्ब पिय श्यामके, गरबीली गरबाय॥

सो० सखिनकह्यो मुसकाय, क्यों प्यारी बोलत नहीं।
कै हमसों अनखाय, लियो मौनब्रत आज पुनि॥

कै कछु बात कही नहिं जाई ❀ कै तेरो मन हर्यो कन्हाई
कबहुं जान पहिचान न तेरी ❀ देखत ही दृग तिनहिं टेरी
सांची बात कहो अब प्यारी ❀ शोच पर्यो मन तोहिं कहा री
कहा रही ही हरिहि निहारी ❀ यकटक नैन निमेष बिसारी
सुनि सुनि सब सखियनकी बानी ❀ बोली हरि भावती सयानी
कहा कहति तुम बात अलेखे ❀ मोसों कहति श्याम तुम देखे
मैं देखे कैधों नहिं देखे ❀ तुम तौ बार हजारक पेखे
तुमहीं हरि को रूप बतावो ❀ मो आगे सब कहि समुझावो
कैसे बरण बेष हैं कैसे ❀ अंग अंग बरणो तुम जैसे
तब यक सखी कह्यो मुसकाई ❀ हम तो ऐसे लखे कन्हाई
छन्द बेद कछु हमहिं न आवै ❀ सांची बात सबन को भावै
देखे हम नँदनन्दन जैसे ❀ बरणि बतावहुँ तुमको तैसे

दो० श्यामसुभग तनपीतपट, चटकीलो द्युतिकारि।
शोभित घनपर दामिनी, मनु चपलई बिसारि॥

सो० मन्दमन्द सुखदात, गरजत मुरलीमधुरधुनि।
चितवत अरुमुसकात, बरषत परमानन्दजल॥

बिबिध सुमनदल उरमें माला ❀ इन्द्रधनुष मनो उदित विशाला

मुक्तावली बीच मन मोहै ❀ बाल मरालपाँति जनु सोहै
अंग अंग छबि रूप सुहाई ❀ कदम तरे ठाढ़े सुखदाई
देखत मोहन बदन बिभागा ❀ उपजत है अँखियन अनुरागा
लोचन नलिन नये छबि छाजैं ❀ तामधि पुतरी श्याम बिराजैं
कहति लजाति बात इक तुमको ❀ इकदिन मोहिं दिखावहु उनको
देखहुँ धौं कैसे हैं तिनको ❀ तुम सब देखि मोहति हौ जिनको
सुनि बृषभानुसुता की बानी ❀ हँसीं सबै गोपिका सयानी
भृकुटी धनुष तिलक शरधारी ❀ मानहुँ मदन करत रखवारी
मोरचन्द्र शिर सुमन सुहाये ❀ काम शरन मनौ पक्ष लगाये
गड़त आनि युवतिन मनमाहीं ❀ निकसत बहुरि निकासे नाहीं
बारिज बदन मनोहर बानी ❀ बोलत मनहुँ सुधा रससानी

दो० कुण्डल झलक कपोल छबि, श्रम सीकरके दाग।
मानहुँमनसिजमकरमिलि, क्रीड़तसुधातड़ाग॥

सो० भरे रूप रसराग, ऐसे शोभा के उदधि।
बिनअँखियनकोभाग, अवलोकतहरिकोबदन॥

अंग अंग सब छबि के जाला ❀ हम देखे इहि भांति गोपाला
कछु छलछिद्र नहीं हम जानैं ❀ जो देखे सो सांच बखानैं
सांचहि झूठ करै जो कोई ❀ तो वह झूठ आपही होई
हम इतनिन में नहीं दुराऊ ❀ कहत यथारथ सब सतभाऊ
यामें जो कोउ झूठी मानैं ❀ ताकी बात बिधाता जानैं
हम तो श्याम निहारे ऐसे ❀ तोहिं लगैं प्यारी कहु कैसे
तुम देखे मैं सांच न मानौ ❀ अपनीसी गति सबकी जानौ
जिनको वार पार कछु नाहीं ❀ द्वै अँखियन देखे किमिजाहीं
जो तुम सब अंग अंग निहारे ❀ धनि धनि तो ये नैन तिहारे

मैं तो लखि इक अंग भुलानी ❀ भरिआयो दोउ आंखिन पानी
कुंडल झलक कपोलन छाहीं ❀ रही चकित उतने के माहीं
रूंधे नीर नैन टक लाई ❀ पहिचाने नहिं नेक कन्हाई

दो० मैं तबते अपने मनहिं, यहै रही पछिताय।
देखनको छबि श्यामकी, चहियत नयन निकाय॥

सो० अतिछबिअँखियाँदोय, उमँगिचलततापरसलिल।
कैसे दरशन होय, सखी श्याम के रूप को॥

द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे ❀ तुम देखे हरि मैं नहिं हेरे
तुम प्रतिअंग बिलोकन कीन्हों ❀ मैं नीके एकौ नहिं चीन्हों
काहू को षटरस नहिं भावै ❀ कोऊ भोजन को दुख पावै
अपने अपने भाग्य निकाई ❀ जो बोवै सो लुनै बनाई
जैसे रंक तनक धन पाये ❀ होत निहाल आपने भाये
मोहिं तुम्हैं अंतर है भारो ❀ धनि तुम सब हरि अंग निहारो
तुम हरिकी संगिन ब्रजबाला ❀ ताते दरश देत नँदलाला
सुनहु सखी राधा चतुराई ❀ आपहिं निंदति हमहिं बड़ाई
आपुन भई रंक हरि धनकौं ❀ हमैं कहति धनवंत सबनकौं
हम हरिकी संगति सब ग्वारी ❀ आपुहि निर्मल होति नियारी
धनि धनि धनि लाड़िली पियारी ❀ धृक धृक धृक धृक बुद्धि हमारी
तू पूरण हम निपट अधूरी ❀ हमहिं असंत संत तू पूरी

दो० धनि धनि तेरे मात पितु, धन्य भक्ति धनि हेत।
तैं पहिंचान्यो श्यामको, हम सब ग्वारि अचेत॥

सो० धनि यौवन धनि रूप, धनि धनि भागसुहागतव।
तू मोहन अनुरूप, चिरजीवहु जोड़ी अचल॥

जैसो तैं हरि रूप बखान्यों ❀ है तैसोई यह हम जान्यों

देखन को हरि रूप उजेरी ❀ आंखि चाहिये जैसी तेरी
तैं जु कहति लोचन भरि आये ❀ सो हरि तेरे नयन समाये
अति पुनीत अस्थल शुभ जानी ❀ करी श्याम अपनी रजधानी
कियो बास हरि तुव दृग माहीं ❀ और बात दूजी कछु नाहीं
ऐसे श्याम संग ब्रजबाला ❀ कहति परस्पर गुण गोपाला
तहां अचानक हरि पुनि आये ❀ कटि कछनी नटबेष बनाये
मुरली अरुण अधरपर राजै ❀ कल धुनि मंद मनोहर बाजै
करति रही मन में जो ध्याना ❀ सोइ अन्तरयामी सब जाना
आप गये तिरछे मगमाहीं ❀ भावाधीन सकत रहि नाहीं
तरु तमालतर तरुण कन्हाई ❀ ठाढ़े भये आय सुखदाई
थकित भई सब ब्रजकी बाला ❀ लगीं बिलोकन नँदको लाला

दो० रत्नजटित पग पांवरी, नूपुर मन्द रसाल।
चरण कमलदल निकट मनु, बैठे बालमराल॥

सो० उदितचरणनखचंद, जनुमणिव्योमप्रकाशकरि।
सुर नर शिव मुनिवृन्द, बिरहताप ब्रजतियहरण॥

जानु काम शत छबिन सँवारे ❀ युवतिन करि मनबुद्धि बिचारे
युगल जंघ छबि परम पुनीता ❀ रंभा खंभ मनहुं बिपरीता
ठाढ़े धरणि एक पद लाये ❀ कंचन दण्ड एक लपटाये
तन त्रिभंग की लटक सुहाई ❀ अटकरही युवतिन मन भाई
ब्रजयुवती हरिपद मन लाये ❀ निरखति मुनिदुर्लभ सचुपाये
कुलिशांकुशध्वज चिह्न निकाई ❀ यकटक रहीं चितै चितलाई
अरुण तरुण पङ्कजदल चारू ❀ मानहुं सुखमा करत बिहारू
कटि केहरिकी कटिहि लजावै ❀ सूक्षम सुभग कहति नहिं आवै
तापर कनक मेखला सोहै ❀ मणिन जटित सुन्दर मन मोहै

मनहुं बालकन सहित मराला ❀ बैठे सम्पति जोरि रसाला
किधौं मदन के सदन सुहाई ❀ बांधी बंदनवारि बनाई
ब्रजतिय निरखि निरखि सुखलेहीं ❀ नैनन पलक परन नहिं देहीं

दो० शोभित नाभि गँभीर अति, मानहुं मदनतड़ाग।
रोमावलि तट पर लसत, रस शृँगारको बाग॥

सो० ब्रजतिय रहीं निहारि, शोभा नाभि गँभीर की।
मननहिंसकतिनिकारि, पर्योजायगहरेखसकि॥

उदर उदार बरणि नहिं जाई ❀ रोमावलि तापर छवि छाई
रही अटकि छवि तासु निहारी ❀ परखत बनत न निरखत नारी
कोऊ कहति काम की सरनी ❀ कोऊ कहति योग नहिं बरनी
कहति एक अलि बालक पांती ❀ जुरि बैठे सब एकहि भांती
कोउ कहै नीरद नील सुहाई ❀ सूक्षम धूमधार छवि छाई
एक कहति यह रबि की जाई ❀ मरकत गिरि उरते प्रकटाई
उदर भूमि शोभित सोइ धारा ❀ जाति नाभि हृद अगम अपारा
दुहुंदिशि फेण स्वातिसुत माला ❀ उपजत सुखमय लहर विशाला
शोभा बरणि सकति ब्रजनारी ❀ रही विचारि विचार विचारी
उर मुक्तन की माल बिराजै ❀ तामधि कौस्तुभमणि छवि छाजै
निरमल नभ मानहुं उड़गाजी ❀ शशिहि घेरि बैठी छवि साजी
भृगुपद देखि श्याम उरमाहीं ❀ मनहुं मेघ भीतर शशिछाहीं

दो० पीत हरित सित अरुणरँग, चटकीली बनमाल।
प्रफुलित ह्वै छबिकी बँवरि, मानहुं चढ़ी तमाल॥

सो० छबि बरणी नहिं जाय, कंबुकण्ठ मणिकण्ठकी।
ब्रजतिय रहीं लोभाय, हरिउरबरशोभानिरखि॥

बृषभकंध भुज दण्ड सुहाई ❀ निंदत अहि गज सूँड़ि निकाई

कर पल्लवन मुद्रिका सोहै ❋ बाहु बिभूषण लखि मन मोहै
जनु शृंगार त्रिटप की डारी ❋ फूल रही उपजत छबि भारी
हरिमुख निरखति गोपकुमारी ❋ पुनि पुनि प्रणम करति बलिहारी
कहति परस्पर अति मन लोभा ❋ देखहु सखी मदनकी शोभा
चिबुक चारु अधरन अरुणाई ❋ पान रेख तापर छबि छाई
मंद हँसन द्युति दशन निकाई ❋ उपमा कापै जात बताई
अनुपम छबि चित लेतचुराये ❋ जग मोहनी हमारे भाये
गोल कपोल अमोल नवीने ❋ मानहुं मुकुर नीलमणि कीने
बाजत मुरली करकी फेरन ❋ चंचल नयन चपल नति हेरन
मणिन जटित कुंडलकी डोलन ❋ प्रतिबिम्बित सब मुकुर कपोलन
सो छबि कापै जात बखानी ❋ लखि ब्रजतिय बिनमोल बिकानी

दो० सुभग नासिका चपलदृग, कुटिलभृकुटिकीरेख।
जनुयुगखंजन बीचशुक, उड़ि न सकतघनदेख॥
सो० घुंघरारे कचश्याम, बारिजमुखढिगभ्रमरजनु।
शीशमुकुट अभिराम, कोटि काम शोभा हरन॥

रूप सुधानिधि बदन बिराजै ❋ दुहुं कर अधर मुरलिका बाजै
मानहुं युगल कमलपद माहीं ❋ लेत भराय सुधा शशिपाहीं
हरिमुख निरखत नयनभुलाने ❋ इकटक रहैं तृपति नहिं माने
घोषकुमारि लखति नँदनन्दन ❋ श्यामसुभग तनु चित्रित चंदन
कनक बरण पट पीत बिराजै ❋ देखि सखी उपमा यह राजै
निर्मल गगन शरद घनमाला ❋ तापर अस्थित दामिनिजाला
अंग अंग छबि पुंज सुहाये ❋ निरखति युवतीजन मन लाये
कोऊ भालतिलक छबि अटकी ❋ मुकुटलटक छबि पर कोउ लटकी
कोऊ अलक लखति चितलाई ❋ कोउ लखि भृकुटि सुरति बिसराई

कोउ लोचनछवि लखि ललचानी ❀ चितवन में कोऊ उरझानी
कोऊ कुंडल झलक लुभानी ❀ कोउकपोलद्युति निरखिबिकानी
कोउ नासा कोउ अधर निकाई ❀ कोउ रद चमकनि मांझ भुलाई
दो० कोउ बोलति कोउमृदुहँसति, कोउमुरलीधुनिलीन।
कोउ मुरलीपर ग्रीवकोउ, लटकनपर आधीन॥
सो० चारु चिबुक दर ग्रींव, कोऊ गाड़ि तामें रही।
हरि मुखशोभा सींव, थकी निरखि जहँ सो तहां॥
कोउ सुन्दर उर बाहु विशाला ❀ निरखि थकी कोउ भूपणवाला
कोउ कटि कोउ पटपीत निहारी ❀ जंघगुलुफ पर कोउ बलि हारी
युगलकमल पद नखकी शोभा ❀ ब्रजवासी जन मन की लोभा
हरि प्रतिअंग निरखि ब्रजनारी ❀ देह गेहकी सुरति बिसारी
अति आनंद मगन मनभूली ❀ शशिमुखलखिजनुकुमुदिनिफूली
किधौं चकोर रहै टकलाई ❀ पियत सुधा छवि शीतल ताई
कै रवि कुण्डल छविहि निहारी ❀ विकसत कमल बदन बरनारी
कै चकईगण मन सुख मानी ❀ निरखि रही अति रति हर्षानी
कैधौं नवघन तन छवि देखी ❀ भये चातकी मुदित विशेखी
किधौं मृगी मुरली धुनि मोही ❀ श्यामलखति युवती इम सोहीं
हरिछवि अरुझनि में अरुझानी ❀ सुरझि न सकत युवति चितनानी
रूपराशि सुखराशि कन्हाई ❀ प्रेमराशि जन के सुख दाई
दो० छबिसागर सुखकी अवधि, गुण मंदिर रस खान।
मोहिलियोमनतियन को, रसिकनरेशसुजान॥
सो० मुरली मधुर बजाय, प्यारी प्यारी नाम कहि।
अनुपम छबि दरशाय, गये सदन आनंदघन॥
रहीं ठगीसी गोप कुमारी ❀ मन हरि लेगये नवल बिहारी

पुनि पुनि कहति भई सुखमानी ❀ धनि धनि राधा कुँवरि सयानी
बड़भागिनि तोसी नहिं प्यारी ❀ तेरेही बश री गिरिधारी
धनि धनि श्याम धन्य तू श्यामा ❀ धनि जोरी धनि प्रीति ललामा
एक प्राण द्वै देह तुम्हारे ❀ तुव बिन रहि न सकत हरि न्यारे
तोको देखि बहुत सुख पावैं ❀ मुरली में तेरे गुण गावैं
तेरी प्रीति सांच हरि जानैं ❀ ताते तेरे हाथ बिकानैं
मन बच क्रम निर्मल तू प्यारी ❀ दुरा चारिणी हम सब नारी
जैसे घट पूरण नहिं डोलै ❀ होय अधभिलौं सो टकटोलै
परम सुजान नारि तैं धीरा ❀ राख्यो परखि हृदय हरि हीरा
धनी न अपने धनहिं बतावै ❀ धरत छिपाय न प्रकट जतावै
धन्य सुहाग भाग तुव प्यारी ❀ कृष्ण सदा पति तू है नारी

दो० सुनि सुनि बानी सखिनकी, प्यारी जियअनुराग।
पुलकिरोम गद्‌गद हियो, समुझि आपनो भाग॥

सो० वचनकह्यो नहिं जाय, प्रीतिप्रकट चाहत कियो।
हरि उर रहे समाय, बाहर करत प्रकाश नहिं॥

सुनहु सखी तुम करति बड़ाई ❀ सुनि सुनि मेरो मन सकुचाई
मोहिं कहति श्यामहिते जान्यो ❀ हरिको भले परखि पहिंचान्यो
तब तें यही शोच मन माहीं ❀ कैसे हरि पहिंचाने जाहीं
नैन दोय छबि अमित अगाधा ❀ तापर पलक करति है बाधा
क्षणहीं में भरि आवत पानी ❀ श्यामस्वरूप परे किमि जानी
मरूं करम अँग लखिये कोई ❀ पलक परत औरै छबि होई
क्षण क्षण में शोभा पलटावै ❀ कहौ सखी उर कैसे आवै
देखन को दृग अति अकुलाहीं ❀ प्रकट लखन पहिचान न जाहीं
यह सखि नहीं परति कछु जानी ❀ बिरह सँयोग लाभ कै हानी

कै दुख सुख कै सम रस होई ❀ म्वहिं समुझाय कहौ सखि सोई
घृत ते होम अग्निरुचि जैसे ❀ मिटति नहीं नयननि गति तैसे
उत छबिखानि नई छबिबाने ❀ इत लोभी दृग तृप्त न माने

दो० बिन पहिंचाने कौनबिधि, करौं श्यामसों प्रीति।
नहिं वह रूप न भाव वह, क्षण क्षण औरै रीति॥

सो० यह जानी मैं बात, हैं आनँद की खानि हरि।
पहिचाने नहिं जात, कहा करौं द्वै लोचननि॥

बड़ौ करौ बिधना यह आली ❀ समझ परी देखत बनमाली
कर पद उदर ग्रीव कटि कीनी ❀ मुख रद श्रुति नासा शुभ दीनी
भाल शिखर नख केश बनाये ❀ अधरजीभ अरु बचन सुहाये
रचिपचि रुचिर अंग सब कीने ❀ रोम रोम प्रति नयनन दीने
जो ब्रज दीन्हों जन्म हमारो ❀ देखन को मनमोहन प्यारो
तौ कत नयन दिये शठ दोऊ ❀ बिधिते निठुर और नहिं कोऊ
जो बिधना को बश कै पाऊं ❀ तौ अब पद्धति और चलाऊं
रोम रोम प्रति नयन बनावैं ❀ इकटक रहैं पलक नहिं लावैं
तौ कछु बनै कह्यो सखि तेरो ❀ होय मनोरथ पूरण मेरो
हरि स्वरूप लखि जानि न जाई ❀ वह छबि द्वै लोचन न समाई
मैं पचिहारि रही बहुतेरो ❀ एकहु अंग न नीकै हेरो
जो देखों तो प्रीति करों री ❀ देखन ही की साध न गोरी

दो० दुरत दुराये कौनबिधि, सखि तुमसों यह बात।
देखे बिन नँदनन्द के, धीरज धरत न गात॥

सो० उड़्यो फिरत दिनरात, इन नयनन के सँगलगे।
क्षण नहिं मन ठहरात, आकरुई जिमि बातबश॥

सुन री सखी दशा यह मेरी ❀ जबतें हरि मूरति मैं हेरी

संगहिं फिरौं दरश नहिं पाऊं ❀ मनहीं मन पुनि पुनि पछिताऊं
जब मैं अपने जिय यह आनौं ❀ निकट जाय हरि छवि पहिचानौं
तब प्रतिबिंब मेरोई आई ❀ होत तहां मोको दुखदाई
मेरे मन हरि मूरति भावै ❀ सनमुख दृष्टि तहां यह आवै
मेरिय देह होत म्वहिं बैरी ❀ कितौ दुरावति दुरत न हे री
मैं अन्तर तजि लखत कन्हाई ❀ यह अति अन्तर देत बढ़ाई
सखी दोष नहिं काहू केरो ❀ करत श्याम यह सब झकझेरो
नीके दर्शन कबहूं देहीं ❀ नइ नइ छवि करि मन हरि लेहीं
चपलाहू ते चपल घनेरी ❀ दशन चमक चौंधत है एरी
कबहूं अंगन मुकुर बनावैं ❀ कबहूं कोटि अनंग लजावैं
कैसे सब छवि देख जु पइये ❀ कौन भांति यह साध पुरइये

दो० मगन दरश रस लाड़िली, पुनि पुनि पुलकित गात।
वृषभान तिय देखि छवि, कहत लखे नहिं जात॥

सो० लीनो सखियन जान, हरि रँग राती लाड़िली।
सुन्दर श्याम सुजान, रोम रोम याके रमे॥

कहति धन्य प्यारी बड़ भागी ❀ नीके तू हरि सँग अनुरागी
तू है नवल नवल हरि ओऊ ❀ रूप अगाध सिंधु तुम दोऊ
हम जानी यह बात अगाधा ❀ तू हरिकी अर्द्धंगिनि राधा
मिले तोहिं करि कृपा कन्हाई ❀ दिये सकल दुख दूर मिटाई
कहु प्यारी हमसों अब सांची ❀ कहे बनै यह बात न कांची
छांड़ि देहु अब यह चतुराई ❀ कहां मिले कहु तोहिं कन्हाई
खरक मिले के कुंजन माहीं ❀ के दधि बेचन जात जहांहीं
के जब उरग डसन ते बाची ❀ कहु कैसे तू हरि रँगराची
सुनि सखियन की बात सयानी ❀ बोली परम नागरी बानी

कब री श्याम मिले नहिं जानौं ❀ सुनहु सखी मैं सांच वखानौं
गृह बन कुंज सुरति नहिं मोहीं ❀ दधि वेचन के खरक त्रिमोहीं
आज कै कालि कहौं कह आली ❀ कियो वास उरमें वनमाली

दो० नयनन ते क्षण टरत नहिं, नीके लखे न जात।
कहा कहौं तुमसों सखी, यह अचरज की वात॥

सो० मिले मोहिं जब श्याम, सुनो सखी तुमसों कहौं।
करिके उरमें धाम, तब ते मन मेरो हर्यो॥

मैं यमुना जल भरन सिधाई ❀ औचक हरि तहँ परे लखाई
मो तन चितै रहे मुसकाई ❀ कहा कहौं सखि नयन निकाई
जीति आपने बल जनु कीनी ❀ शरद सरोजनकी छवि छीनी
जीते सकल रूपगुण जाती ❀ नील कोकनद अरु सतपाती
पै निशि मुद्रित दिवस प्रकाशे ❀ क्षण प्रति होत मलिनद्युतिनाशे
वे आनन्द कन्द सुख मूले ❀ रहत दिवस निशि छविसों फूले
निरखि नयन मैं दशा भुलाई ❀ उन मुसकान मोहनी लाई
शिथिल अंग भये जैसे पानी ❀ तबहीं ते उन हाथ विकानी
सूधे मारग गई भुलाई ❀ ज्यों त्यों करि पहुँची घर आई
ता दिनते अँखियां ये मेरी ❀ सुख दुख भूलि भई हरि चेरी
बसीं जाय वा चितवन माहीं ❀ अब वह छवि क्षण विसरत नाहीं
कै इन नैनानि आप समानी ❀ यह चितवन कछु जात न जानी

दो० नहिं जानत हरिकह कियो, मंद मधुर मुसकाय।
मन समुझतरी भतनयन, सुखकछुकह्यो न जाय॥

सो० तब ते कछु न सुहाय, कासों कहिये बात यह।
अमलपयोरुहगआय, अवलोकनहरिविधुबदन॥

निकसे सखी एक दिन आई ❀ द्वार हमारे कुँवर कन्हाई

मैं ठढ़ीही अजिर अकेली ❁ देखिरही छवि यह अलबेली
चंचल नयन चितै चित चोरैं ❁ सुभग भृकुटि बिबि बंक मरोरैं
कोटि मदन तनद्युति सगग्राही ❁ फेरत कमल कमल करमाही
मो हित लागि भये तहँ ठाढ़े ❁ कियो भाव कछु आनँद बाढ़े
ले कर कमल भाव सों लायो ❁ पीताम्बर निज शीश फिरायो
मैं गुरुजन उर शंका आनी ❁ बोलि न सकी कछू सुखबानी
प्रेमसहित तेरे हरि आये ❁ वैसहि उनको फेरि पठाये
तू तौ चतुर हुती अति नारी ❁ सेवा कछू करी नहिं प्यारी
गुप्तभाव तोसों हरि कीनो ❁ बातन रिझै नहीं क्यों लीनो
काहे कमल भाव सों छायो ❁ काहे पीताम्बरहिं फिरायो
मैं कछु उत्तर तिन्हैं जनायो ❁ घर आये केहि बिधि बिसरायो

दो० कहा करौं गुरुजन सखी, भये मोहिं दुखदाय।
सकुचिरहीतिनकीसकुच, सुखकछुबचनबनाय॥

सो० इतनो कियो सयान, मैं तब बैठी कर परासि।
उरलाई हित मान, सम्मुख करि करि आरसी॥

अन्तरयामी चतुर कन्हाई ❁ जानि लई मेरी चतुराई
आपन हँसि उत पाग सँवारी ❁ रहे कमल हिरदे पर धारी
रहे चितै अति हित चितलाई ❁ मोते सखी न कछु बनिआई
कहा करौं कछु दोष न मेरो ❁ नयो नेह उत गुरुजन घेरो
रही देखि मन आनँद धरिकै ❁ दियो कमल उर आसन करिकै
आंचर फेरि निछावरि कीनो ❁ अर्घ्यसलिल आंखिन सों दीनो
उमँगि कलश कुश प्रगट भये री ❁ टूटि टूटि कुच बन्द गये री
अब मन होत लाज अति भारी ❁ सखी समुझि करणी वह सारी
ऐसी मेरी मति अज्ञानी ❁ प्रभु जो मंगल करि मैं मानी

अति सुखमान गये सुखदाई ❀ तब तें मोमन कछु न सुहाई
कहति सखी राधा सुनि मेरी ❀ सेवा मान लई हरि तेरी
अब काहे पछितात अनेरी ❀ तो हित श्याम जात करि फेरी
दो० नीके कीन्हे भाव सब, तू अति नागरि बाम।
उन लीन्हे सब जानिकै, चतुरशिरोमणिश्याम॥
सो० भावहिको सनमान, गुरुजन के मधि चाहिये।
गये श्याम हित मान, अब प्यारी चाहति कहा॥
तेरे बशहि भये दधिदानी ❀ हम यह बात भले करिजानी
तैं वेही उन पाग सँवारी ❀ उनको तुम उन तुमहिं जुहारी
मिली आरसी में तुम उनको ❀ उन उर धरी कमलमिस तुमको
जाने कहा भेद यह कोऊ ❀ एक प्राण द्वै तन तुम दोऊ
सुनहु सखी मोहन सुखरासी ❀ अँखियाँ रहत दरश की प्यासी
निकसत जब सुन्दर इत आई ❀ कमलनयन कर वेणु सुहाई
ना जानिये सखी तिहि काला ❀ सब तन श्रवण विलोचन जाला
सुरत शब्द प्रतिरोमन माहीं ❀ नखशिख ज्यों चख देख्यो चाहीं
इतने पर समुझत नहिं बैना ❀ चितै रहत ज्यों चित्रित नैना
सुनहु सखी यह सांचकि सपनो ❀ कै दुख सुख कै संभ्रम अपनो
कहा करौं गुरुजन डर मानौं ❀ मन मेरो उन हाथ बिकानौं
जबतें द्वार दरश म्वहिं दीनों ❀ तबतें मन अपनो करि लीनों
दो० भाग दशा आये सदन, मेरे श्याम सुजान।
मैं सेवा नहिं करिसकी, गुरुजन को डरमान॥
सो० यहै चूक जियजान, मोहन मन हरि लै गये।
अब लागी पछितान, फेरि कौन बिधि पाइये॥
जब तें प्रीति श्याम सों कीनी ❀ तबतें नींद दृगन तजिदीनी

फिरत सदाचित चक्र चढ़्यो सो ❋ रहत हिये अति शोच बढ़्यो सो
मिलहिं कवन बिधि कुँवर कन्हाई ❋ यहै बिचार बिचारत जाई
यह दुख सखी कौन सों कहिये ❋ पशुबेदन ज्यों आपहि सहिये
सुन प्यारी तू हरि रँग राची ❋ बात कहैं तोसों हम सांची
तोते चतुर और नहिं कोऊ ❋ तुम अरु श्याम एक भये दोऊ
बाकी नहीं कछू अब बांची ❋ कहौं बात मैं रेखा खांची
ऐसी भई आप भोरी ❋ उनको मन तैं नाप लयोरी
तैं उनको मन प्रथम चुरायो ❋ तब उन तेरोहू अब पायो
अब काहे को करत सयानी ❋ नन्द नँदन बर तू पटरानी
तोसी और कौन बड़भागी ❋ तेरे संग श्याम अनुरागी
बिलसौ श्याम संग सुखमानी ❋ अब कत बृथा रहत बौरानी

दो० श्यामकरी म्वहिंबावरी, मन करिलियो अधीन।
बंसी ज्यों वाकी पलक, अटके मो दृगमीन॥

सो० अब म्वहिं कछु न सुहाय, मन मेरो मेरो नहीं।
लियो श्याम अपनाय, रूप ठगोरी डारि शिर॥

बार बार मैं तोहिं सुनाई ❋ तेरे मन यह बात न आई
अपनी सी बुधि जानत मेरी ❋ मैं पाई इतना कहँ एरी
देखतही हरिरूप लोभानी ❋ मोते सुधि बुधि सबहि हिरानी
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी ❋ गद गद बचन श्याम रस पागी
पुनि पुनि कहति यहै मुखबानी ❋ मन हरि लियो छैल दधिदानी
तब इक सखी सखी सों बोली ❋ तू कत होति जान कै भोली
यह पुनि पुनि मनको निदरानी ❋ गुप्त बात तिन प्रगट बखानी
तुम जानत श्यामा है छोटी ❋ है यह ज्ञान बुद्धि की मोटी
रहत सदा हरिके सँग माहीं ❋ हमसों प्रगट करति सो नाहीं

किये रहत हमसों हठ आटी ❀ बात कहत मुख चोटी पाटी
भये श्याम याही के वश अब ❀ देखि छके वेंदी छोटी छब
भली बनी सुन्दर अब जोटी ❀ वे खोटे उनतें यह खोटी

दो० कहति सखी यह तू कहा, निपट गँवारी बात।
को प्यारीसम दूसरी, जाके वश बलभ्रात॥

सो० रूपशील गुणधाम, यह सब में ब्रजआगरी।
दृढ़ब्रतलीनो श्याम, धन्य न याते और कोउ॥

प्रीति तुमही की है नीकी ❀ कहो बात सखि अपने जीकी
मैं रीझी यापर अति भारी ❀ क्यों खोटी जो कृष्णपियारी
जो हरि कोटि मदन मनमोहै ❀ सो मोहन याको मुख जोहै
जैसे श्याम नारि यह वैसी ❀ भेद करै सो सखी अनैसी
नागरिनवल नवल के नागर ❀ सुन्दर यह जोरी छवि सागर
सुनहुँ सखी ऐसे पै राजैं ❀ एक प्राण द्वै तन सुख काजैं
एकहु पलक कबहुँ नहिं न्यारे ❀ सोवत जागत जान हमारे
पूरब नेह नयो वह नाहीं ❀ देखहु सखी समुझि मनमाहीं
मेरो कह्यो मान यह लीजै ❀ इनसों भाव प्रीति करि कीजै
इनकी प्रीति प्रीति के माहीं ❀ बिना प्रीति ये जान न जाहीं
जबलग इनसों प्रीति न मानै ❀ तबलग इनकी प्रीति न जानै
इनकी प्रीति लख्यो जो चाहैं ❀ तौ करि इनसों प्रीति निबाहैं

दो० सखी बचन सुनि सखिनके, भयो हिये अति चैन।
धन्य धन्य ताको सबै, कहति सप्रेम सुबैन॥

सो० धनि धनि तेरो ज्ञान, तैं इनको जानेउ भले।
हम सब निपट अजान, बात कहति औरैकछू॥

हम इनको ऐसे नहिं जाने ❀ ये ब्रज आय गुप्त प्रगटाने

श्यामा श्याम एक हैं एरी ❀ तौ इतने उपहास सहेरी
वे दोउ एक दोष री तूरी ❀ तेरिहु प्रीति श्याम सों पूरी
इनसों तेरी प्रीति पुरानी ❀ तब ते प्रीति पुरातन जानी
धन्य श्याम धनि धनि तुव श्यामा ❀ हम सब बृथा भई बिनकामा
श्याम राधिका सहज सनेही ❀ सहज एक दोऊ हैं देही
सहज रूप गुण पूरण कामी ❀ सुन्दर सहज सहज बन धामी
देखि दुहुंनकी प्रीति बिशाला ❀ भई बिबश सब ब्रजकी बाला
श्यामा श्याम रंग रस पागी ❀ सोवत ते मानहुं सब जागी
उपजी प्रीति दुहुंन की सांची ❀ दूर गई दुबिधा मति कांची
भईं युगल रस बश सब गोपी ❀ लाज शंक मर्यादा लोपी
सबके नैन रूप रस अटके ❀ श्रीश्यामाबर नागर नटके

छं० नवल नागर श्याम श्यामा प्रेम मन सबके फँसे।
नयन नासा श्रवण रसना अंग प्रति दोऊ बसे॥
उठत बैठत चलत सोवत जगत निशि बासर घरी।
नहीं बिसरत ध्यान कबहूं सकल ब्रजकी सुन्दरी॥

दो० गईं सकल निजनिज सदन, युगलप्रेमरसलीन।
बिछुरत नहिं एकौ घरी, जैसे जल अरु मीन॥

सो० रहे श्याम उर छाय, बिन देखे दृग कल नहीं।
गृहकारज न सुहाय, गुरुजन त्रासन कुछ नहीं॥

वे कछु कहैं करैं कछु औरैं ❀ सास ननँद तब मारन दौरैं
कहैं यहै पितु मात सिखायो ❀ ऐसोई ढँग तुम्हैं बतायो
कहा तुम्हारे मन यह आई ❀ अपनी सुधि बुधि कहां गँवाई
तुम कुलबधू लाज नहिं आवै ❀ कहँ लगि कोउ तुम्हैं समुझावै
कबकी यमुना न्हान गई हौ ❀ ऐसी अब तुम निडर भई हौ

तुम राधा को संग करति हौ ❀ हरिके पाछे बही फिरति हौ
बड़े महरकी सुता कहावै ❀ यह सब बात उन्हैं बनि आवै
उनको सब उपहास उठावत ❀ ब्रज घर घरप्रति यही कहावत
ऐसे तुमहूं नाम धरैहौ ❀ ब्रजलोगन में हमैं हँसैहौ
हम अहीर ब्रजपुर के बासी ❀ ऐसे चलौ होय नहिं हासी
लोक लाज कुल कानहि करिये ❀ फूंकि फूंकि धरणी पग धरिये
ऐसे कहि गुरुजन समुझावैं ❀ लाज काज मर्याद सिखावैं

दो० सुनि युवती गुरुजन वचन, बिहँसि रहीं धरि मौन।
हरि राधा उपहास की, महिमा जानै कौन ॥

सो० कहत तैसिये बात, जैसी मति जाके हिये।
सुख उलूकही रात, रबि को तेज न मानही ॥

बिष को कीट बिषहि रुचि मानै ❀ कहा स्वाद रस स्वादहि जानै
ये अहीर इनको प्रिय गोधन ❀ नंदनँदन सुर श्रुति शिवको मन
तिनकी महिमा कह ये जानै ❀ जिनके गुण मुनि गर्ग बखानै
धनि धनि राधाकुँवरि सयानी ❀ श्यामहि मिली कर्म मन बानी
श्याम काम के पूरण हारैं ❀ पूरण करि तिनको उर धारैं
धन्य धन्य श्यामा बनवारी ❀ यह रस लीला ब्रज बिस्तारी
ऐसे गोपीगण करि ध्याना ❀ करत श्याम श्यामा गुणगाना
श्याम रूप श्यामा अनुरागी ❀ रोम रोम ताही रँग पागी
गई सदन मन लागत नाहीं ❀ मन मोहन बिन क्षण युग जाहीं
मनहीं मन गुरुजन पर खीजै ❀ इन बिमुखन को संग न कीजै
कौन भांति करि इनसों छूटौं ❀ क्यों वह दरश सरस सुख लूटौं
बारबार जिय अति अकुलाई ❀ कैसेहुं हरि बिन रह्यो न जाई

दो० धृकगुरुजन कुलकानि धृक, धृक लज्जा धृकधाम।

धकजीवन बहुदिननको, बिनु सुन्दर घनश्याम ॥
सो० पलक कल्पसम जाय, ब्रजबासी प्रभुदरशबिन।
सदन न नेक सुहाय, मन हरिलीनो सांवरे ॥

अथ बाटके मिलनकी लीला ॥

श्रीबृषभानु कुँवरि बर गोरी * कृष्ण प्रेम उनमत्त किशोरी
तन बिह्वल मन हरिके पासा * दुरत न हृदय प्रेम परकासा
चली यमुन जल आप अकेली * रूप राशि गुण राशि नवेली
दृगन श्याम दरशनकी आसा * मन ही मन यह करति हुलासा
चितको चोर अबहिं जो पाऊँ * तौ उर को संताप नशाऊँ
राखौं वांधि हृदय सों लाई * भुजकी दृढ़ करि दाम बनाई
जैसे लियो चोरि मन मेरो * तैसे लेउँ छोरि उन केरो
छांड़ों नाहिं करै जो कोरी * ऐसे जाति बिचारति गोरी
इततें प्यारी यमुनहिं जाई * उततें आवत घरहिं कन्हाई
नीलजलज तन शोभित आछे * नटवर बेष काछनी काछे
दूरिहि तें देखतही जान्यो * जीवनप्राण तुरत पहिंचान्यो
रही मनोहर बदन निहारी * कोटिमदन जापर बलिहारी

दो० मन आनँद हुलस्यो हियो, रोम पुलक दृगबारि।
बोली गदगद बचन मुख, तन बिह्वल संभारि ॥
सो० चित चोरे कहँ जात, मैं ढूंढ़ति तब ते तुमहिं।
कहँ सीखी यह बात, अहो नंदके लाड़िले ॥

जानत जैसे माखन चोरी * तब वह बात हती कछु ओरी
बालक हते कान्ह तब तुमहूं * भोरी सहज हुती मन हमहूं
मुख पहिंचान मान सुख लेती * यशुमति कान जान तब देती

बसौ बास सब ब्रज इकठौरी ❋ गोरस काज कान नहिं थोरी
अब भये कुशल किशोर कन्हाई ❋ भई सजग ... सब तरुणाई
माखनते अब चितकी चोरी ❋ लागे श्याम करन बरजोरी
नखशिख अँग चितचोर तुम्हारो ❋ लीनो मन धन छीन हमारो
सो अब जात कहां तुम लीने ❋ भुजा पकरि ठाढ़े हरि कीने
तुम को नीके करि हम चीन्हे ❋ बनिहै अब मेरो मन दीन्हे
ब्रजमें ढीठ भये तुम डोलत ❋ मोसों सूधे बचन न बोलत
अबतौ मोहिं बूझि घर जैहौ ❋ बिना दिये मन जान न पैहौ
प्यारी यों झगरति पिय पाहीं ❋ देह गेह की सुधि कछु नाहीं

दो० बीच करी कुल लाज तब, सनमुख आई धाय।
बकसि नागरी चूकयह, मोहिं कह्यो समुझाय॥

सो० चित लैगयो चोराय, चूकपरी हरिते बड़ी।
छांड़िदेहु डरपाय, बड़े महर की कुँवरि तुव॥

कुलकी लाज अकाज कियोरी ❋ कहा करौं अति जरत हियोरी
तब यों कहति पीय सों प्यारी ❋ सुनहु प्राणपति गिरिवरधारी
देखे बिना तुमहिं दुख पाऊं ❋ सो यह तुम बिन काहि सुनाऊं
गुप्त रहन मोकों तुम भाख्यो ❋ सो आयसु मैं शिर धरिराख्यो
नाहिं सुहात तुम बिन दिन राती ❋ प्राणनाथ तुम हित सब भांती
तुमते बिमुख जनन के माहीं ❋ रह्यो जात मोपै प्रभु नाहीं
मात पिता अति त्रास दिखावैं ❋ निंदत मोहिं नेक नहिं भावैं
भवन मोहिं माटी सों लागै ❋ इक क्षण शोच नहीं उर त्यागै
कहँलगि अपनी बिपति बताऊं ❋ तुम बिन सुख को अंत न ठाऊं
सुंदर श्याम कमल दल लोचन ❋ करहु कुसंगति को दुख मोचन
आवहु बिनय श्याम सुनिलीजै ❋ चरणन ते न्यारी नहिं कीजै

कुल की कानि कहांलगि मानो ❋ यह मन मोहन तुमहिं लुभानो

छं० मन लुभानो तुमहिं मोहन और तेहि भावै नहीं।
बिन लखे गिरिधरन सुंदर कहूं सुख पावै नहीं॥
लोकडर कुललाज गुरुजन कानि कहँलौं कीजिये।
सिंहशरण कृपाल जंबुक त्रास क्यों सहिजीजिये॥

दो० निरखि श्याम प्यारीबदन, सुनिकै बचन सिहाय।
प्रेम अधीन बिलोकि अति, हर्षि लई उर लाय॥

सो० शीतल पंकज पान, परस हर्यो तनबिरह दुख।
प्रेम बिबश भगवान, बोले प्यारी सों हरषि॥

कत दुख पावति हौ तुम प्यारी ❋ यह लीला तुम हित बिस्तारी
बसत सदा मैं तुम मनमाहीं ❋ तुम मम उरते बाहर नाहीं
श्रीबृन्दाबन घन सुखकारी ❋ है बिहारथल तुम्हरो प्यारी
शीतल सघन कुंज छबि धामा ❋ हम तुम संग मिलैं तहँ भामा
दीजौ दर्शन मोहिं कहँ आई ❋ तब तुमपै ऐहौं मैं धाई
अब गृह जाउ आइहैं कोऊ ❋ यों संकेत बढ़्यो हित दोऊ
ब्रज यमुना मग बिच दोउ ठाढ़े ❋ प्रेम सकोच अतिहि मन बाढ़े
बिछुरत बनत न रहत तहांहीं ❋ चितवत सखिन चपल चहुँघाहीं
तबहिं युवति ब्रज ते कछु आई ❋ कछु यमुना ते ब्रजमें जाई
दुहुँदिशि तरुणिन आवत जानी ❋ मनहीं मन राधिका लजानी
चले तुरत हँसि कुँवरकन्हाई ❋ मिले हांक दै ग्वालन जाई
रहे कहां तब ते सब ग्वाला ❋ ऐसे टेर कह्यो नँदलाला

दो० गये भाव करि श्यामपहँ, लियो नागरी जान।
कहिहौं यहै सखीनसों, कीनो यह अनुमान॥

सो० देखिसखी म्वहिं संग, अबहिं आय सब बूझिहैं।

जानति इनको रंग, मनमन शोचति लाड़िली॥

उन युवतिन मोहनको देख्यो ❀ जात राधिका ढिगते पेख्यो
कहन लगीं आपस में बातें ❀ देखहु सखि प्यारी की घातें
बात करति मिलिसंग बिहारी ❀ हमहिं लखत दीने हैं टारी
बूझतही कछु बुद्धि उपै है ❀ सांची एकहु नाहिं जनैहै
इतहु उतहु ते आई नारी ❀ कहति कहां तू जाति पियारी
अबहिं लखे तुव ढिग बनवारी ❀ कहां गये पछितात कहा री
कहा दुराव बनत अब कीन्हे ❀ हमहूं ते तबहीं लखि लीन्हे
कान्ह कहा बूझत हैं तुमको ❀ सांची बात कहो तुम हमको
मन लै गये तुम्हारे चोरी ❀ सो पायो अपनो तुम गोरी
श्यामहि मिलि अपनो मन लीनो ❀ देखत हमैं टारि क्यों दीनो
सदा चतुरई फबति विनाहीं ❀ अब तो आइ परी फँदमाहीं
हमहिं बहुत तुम निदर बहीहों ❀ कहां रहत हरि कहिं निबहीहों

दो० कहतिरही जबतबहिंतुम, हरि सँगदेखहु मोहि।
तब कहियो जो भावही, लीनो बेसरि खोहि॥

सो० अब हम लेहिं छिनाय, बेसरि देहौ की नहीं।
की करिहौ चतुराय, और कछू हम सों अबहुं॥

तब हँसि कह्यो नागरी प्यारी ❀ तुम सब भई अजान कहारी
मैं मूरख तुम चतुर बड़ेरी ❀ ऐसेहि बेसरि लैहो मेरी
यही कहन मोको तुम आई ❀ इत उतते मिलि उठि तुम धाई
बेसरि एक लेहुगी को को ❀ पीताम्बर दिखरावहु मोको
पीताम्बर अरु बेसरि लीजै ❀ प्रकट जाय तब ब्रजमें कीजै
तारी एक बजति कर दोऊ ❀ इतनो ज्ञान करो सब कोऊ
सुन राधा तोसों हम हारी ❀ धन्य धन्य तेरी महतारी

तेरे चरित कहा कोउ जानै ❁ बश कीनो घनश्याम सुजानै
अबहीं रारि पढ़ायो तिन को ❁ हम देखे तेरे ढिग उनको
तापर निदरत है तू हमसों ❁ कहत न बनत हैम कछु तुमसों
अँगअँग बिरचि कपट चतुराई ❁ निजकर बिधना तोहिं बनाई
इतनी बुद्धि श्यामके नाहीं ❁ जितनी है प्यारी तुव माहीं

दो० श्याम भले अरु तुम भली, राज करहु घरजाय।
बेसरि छोरति हैं सखी, बिन काजै उठि धाय॥

सो० जान्यो तुम्हरो ज्ञान, दौरि परी मोपर सबै।
जो तुम हती सुजान, गहती बांह दुहूनकी॥

कहु प्यारी सांची अब हमसों ❁ कछु तो श्याम कहतहैं तुमसों
हा हा बात कहो सो प्यारी ❁ भेद करौ तौ सौंह हमारी
तुव ढिगते मोहन हम हेरत ❁ गये उतै ग्वालन को टेरत
तू क्यों ठठकि रही मग माहीं ❁ कहा कह्यो मोहन तुव पाहीं
सहज होय हमसों यह भाखौ ❁ उरमें कछू रोष मति राखौ
मैं यमुना तट जात रही री ❁ ब्रजते आवत तुम्हैं लखी री
परखन लगी तुमहिं मगमाहीं ❁ तिरछे आय गये हरि पाहीं
मैं तुमहीं तन रही निहारी ❁ उन पूछो म्वहिं ग्वाल कहां री
मैं सुनि सम्मुख दीठ न खोली ❁ हां नाहीं कछु मुख नहिं बोली
ग्वालन टेरत गये कन्हाई ❁ तुम मेरी बेसरि को धाई
सुनि यह बात युवति सकुचानी ❁ कछु तो परति सांचसी जानी
ग्वालन टेरत गये कन्हाई ❁ यह तो हमहुं श्रवण सुनि पाई

दो० तब हँसिके सखियन कह्यो, सुनु लाड़िली सुजान।
हम मानी तेरी कही, तू मति रिस जिय आन॥

सो० लीनी कण्ठ लगाय, अति निर्मल तू लाड़िली।

झूठहि करत चवाय, ब्रज घर घर तेरो सबै ॥

अब चलिये यमुना के धामा ❀ संग चलैं हमहूं सब श्यामा
चूक परी हमसों यह तेरी ❀ नाम लियो बेसरि को एरी
अहो सखी तुम निपट अनैसी ❀ जानति हौं म्वहिं आप हो जैसी
झूठहि लागी दोष लगावन ❀ अब लागी मोको दुलरावन
क्षणक बुद्धि तुम्हरी धौं कैसी ❀ हो तुम बड़ी पेट की जैसी
यह सुनि हँसति चलीं ब्रजनारी ❀ गईं यमुन ते गृह को प्यारी
ऐसे सखियन को बहरायो ❀ कृष्ण सनेह न प्रकट जनायो
नागरि श्यामा श्याम सनेही ❀ चतुर श्याम श्यामा के तेही
श्यामा बसत श्याम मन माहीं ❀ बसत श्याम श्यामा मन पाहीं
बदि संकेत गये घर दोऊ ❀ मात पिता कछु जान न कोऊ
कैसेहुँ करि करि दिवस बितायो ❀ निशि निघटे रस बिरह सतायो
अति आतुर दोऊ मन माहीं ❀ क्यों हूँ नींद परति है नाहीं

दो० बिरह नदी निशितम सलिल, पैरत थके निहारि ।
बूड़्योमणितमचरकह्यो, मिल्योपारभिनसारि ॥

सो० सुनि तमचरकी टेर, अति आनंद दुहूंन मन ।
अतिही उठे सबेर, लगी चटपटी मिलन की ॥

अथ सङ्केतके मिलनकी लीला ॥

श्याम उठत लखि जननी जागी ❀ हरिमुख कमल निरखि अनुरागी
बूझति मात जाउँ बलि प्यारे ❀ आज कहा तुम उठे सबारे
उत्तम जल भरि दीनी झारी ❀ अति आतुर हरि करी मुखारी
बिवश श्याम प्यारी रस छाके ❀ मगन ध्यान बृषभानुसुता के
उत बृषभानु सुता सुकुमारी ❀ उठी प्रात वह भाव बिचारी

ग्रीवा सों मोती लर तोरी ❋ आंचर बांधि मात की चोरी
यहै व्याज अपने उर धारयो ❋ कुंजधाम बनजान बिचारयो
आंगन गई भवन फिरि आई ❋ गई भवन ते फिरि अँगनाई
जात बनै न रह्यो नहिं जाई ❋ इत उत फिरत भवन बितताई
मनहिं कहत कब मिलहु कन्हाई ❋ कालिह गये बनधाम बुलाई
मात कह्यो क्यों उठी सबारी ❋ जाति कहां प्रातहिं तू प्यारी
आज कहा इत उत तू डोलै ❋ मुख तें कछू बचन नहिं बोलै

दो० अति नागरि मोती लरी, राखी प्रथम दुराय।
ताही मिस करिकै सकुच, बोलति नाहिं डराय॥

सो० पुनि पुनि चितई मात, लखि ग्रीवा भूषण बिना।
तब जानी यह बात, खोई कहुँ मोती लरी॥

जननी भई तबहिं रिसहाई ❋ कंठ लरी तैं कहां गँवाई
मोतिन को गजरा छबिछायो ❋ बड़े मोल को परम सुहायो
तेरे लिये महर बनवायो ❋ मैं तोको हितकरि पहिरायो
कौने लियो कहां तैं गेरयो ❋ काल्ही तेरे तौ गर हेरयो
बूझैं तोहिं जवाब न आवै ❋ कह शोचति किन बेगि बतावै
सुनि राधिका मात की बानी ❋ मन बिहँसति, ऊपर भय मानी
बोलति नहीं हृदय हरषाई ❋ कहति भली बुधि मोकहँ आई
अबहीं मोको खीज पठै है ❋ या मिसि जान श्याम पै हैहै
कहति मात सों तब भय मानी ❋ मोहिं नहीं सुधि कहां हिरानी
कालिह सखिन सँग यमुना न्हाई ❋ तहां कहूँ धौं तिनहिं चुराई
कैधौं गिरी कतहुँ जलमाहीं ❋ यह तौ मैं कछु जानति नाहीं
कालिहि ते शोचति पछिताई ❋ तेरे डरते कह्यो न जाई

दो० नेकु नींद नहिं निशि परी, तेरी सौं री मात।

याही डरते आज हौं, उठी बड़े परभात ॥

सो० सुनति सुताके बैन, महरि चकित मुख लखिरही ।
कृष्णप्रिया गुणऐन, कोऊ पार न पावई ॥

तब जननी करि क्रोध कही री ❀ मैं बरजति त्वहिं हारि रही री
फिरति नदी बन डगरन माहीं ❀ काहू की शंका त्वहिं नाहीं
बहुत तात त्वहिं लाड़लड़ाई ❀ नोखी सुता महर की जाई
बरजति मैं जु करति तू सोई ❀ भली करी मोतिन लर खोई
एक एक नग परम सुहायो ❀ लाखटका दै मैं जु मँगायो
जाके हाथ पस्यो सो देहै ❀ घर बैठे निधि पाय गँवैहै
भरि भरि नयन लेति है माता ❀ मुखते कछू न आवति बाता
रीतौ गरौ निहारति जबहीं ❀ हियो उमँगि आवत है तबहीं
कहा करौं जो खोइ गई री ❀ तू कित खीजति विकल भई री
लैहौं और मँगाय बबासों ❀ देति नहीं क्यों और डिबासों
करिहै कहा सैंति जो राखे ❀ तादिन तेही कितक धौं भाखे
रोवत कहा और है नाहीं ❀ दै निकासि पहिरौं गरमाहीं

दो० सुनु राधा तेरो नहीं, अब पतियारो मोहिं ।
चौकी हार हमेल कछु, नहिं पहिराऊँ तोहिं ॥

सो० लाखटकाकी हान, करी आजतैं लाड़िली ।
अब नहिं दैहौं आन, जबलौं वह ल्यावै नहीं ॥

अब तौ घर पैठन तब पैहौ ❀ जलजसरी जब खोज लै ऐहौ
जाधौं देखि कहूं जो पावै ❀ तबहीं तोहिं भलाई आवै
यमुना गई संग तब को ही ❀ बूझति नहीं जाय किन ओही
कौन कौन को तोहिं बताऊं ❀ कहँलगि सबके नाम गनाऊं
चंद्रावलि ललितादिक नारी ❀ हतीं सकल ब्रजगोपकुमारी

देखहुँ जाय यमुन तट हेरी ❁ जहां रा.. में न्हात रहीगी
युवती एक रही टक लाई ❁ पूंछि देखिहों ..को जाई
जैहै कहां जलज लर मेरी ❁ तिनहीं लई भली सु.. परी
आज अबेर लगैगी मोहीं ❁ ढूंढौंगी ब्रज घर घर ओही
ऐसे करि माता मति भोरी ❁ हरषि चली बृषभानु किशोरी
निधरक चली सदन तें प्यारी ❁ मन अटक्यो वन कुञ्जबिहारी
मनहीं मन यों शोचति जाई ❁ कैसे हरिसों देहुँ जनाई

दो॰ बार बार नँदनंद इत, आतुर जोहत राह।
प्यारी मुख शशि उदैकी, नैन चकोरन चाह॥

सो॰ भरे बिरह रस माहिं, क्षण में घर द्वारे क्षणक।
फिरि फिरि आवहिं जाहिं, लगीचटपटी प्रेम की॥

जननी करति रसोई आतुर ❁ लखिलखि जान श्याम घनचातुर
कहा अबेर करति तू मैया ❁ भूख लगी मोहिं कहत कन्हैया
यशुमति कह्यो तात बलिजाई ❁ अब बिलम्ब नहिं बैठहु आई
सखा संग सब लेहु बुलाई ❁ बोलि लेहु अरु हलधर भाई
सादर कह्यो श्याम बलभइये ❁ दाऊजी जेंवन को अइये
मोको अबहिं नहीं रुचि मैया ❁ सखन संग तुम खाहु कन्हैया
संग सखन लै तब मन मोहन ❁ जेंवन को बैठे सब गोहन
षटरस व्यञ्जन सरस सँवारे ❁ परसि धरे रोहिणि पनवारे
श्याम सखन को आयसु दीनो ❁ आपनहूं कर कौरहि लीनो
तबहीं कोकिल के सम बानी ❁ बोलि उठी राधा सुखदानी
नन्द महरि पिछवारेहिं आई ❁ झूंठहि ललिता को गुहराई
बृन्दाबन मग जाति अकेली ❁ आवहु बेगि तुमहुं सँग हेली

दो॰ बिन जेंवे मोहन उठे, करते कौर गिराय।

जेंवतही ...ई सखा, चले बनहिं अतुराय ॥
सो० देखि चकित दोउ मात, चौंकि रहे सगरे सखा ।
कहत कहां चलिजात, अति आतुर गोपालतुम ॥
अबहीं ग्वाल गयो कहि मोही ❀ बन में गाय बियानी लोही
मैं जेंवन बैठ्यो बिसराई ❀ सो सुधि मोहिं अबहिं है आई
तुम जेंवहु मैं देखहुं जाई ❀ करी श्याम तिनसों चतुराई
लोही मेरी गाय बियानी ❀ यह कह चले हर्ष उर आनी
हँसत सखा सब मन मन माहीं ❀ नहीं गाय बछरा हां नाहीं
है प्यारी रानी हू राधा ❀ हम जानी यह बात अगाधा
जननी नहीं कछू यह जानी ❀ बार बार कहि कै पछितानी
भूखे श्याम गये उठि धाई ❀ राज करो यह गाय बियाई
गई सैन दै बन श्रीश्यामा ❀ पहुँचे जाय तहां घनश्यामा
देखत हरष भये मन दोऊ ❀ फूले अंग समात न कोऊ
मिले धाय गहि अंकम माला ❀ कनक बेलि जनु लगी तमाला
मिलि बैठे दोउ कुञ्ज सुहाई ❀ कोटि कामरति छबिहि लजाई
दो० नवल कुञ्ज नव नागरी, नव नागर नँदनन्द ।
प्रेमसिंधु मर्याद तजि, मिले उमगि आनन्द ॥
सो० बिलसतमदन बिलास, कोटि मदन मनके मथन ।
युगलरूप की रास, नित्यबिलासबिलासनिधि ॥
नागर श्याम नागरी श्यामा ❀ शोभित कुञ्ज कुटी छबिधामा
चितवत दुरदुर नयन लजोहैं ❀ सो छबि बरणि सकै कबि को है
रीझे श्याम नागरी छबि पर ❀ नागरि निरखत श्याम सुभगवर
देह दशा की सुरति बिसारैं ❀ अरस परस दोउ रूप निहारैं
शोभित बदन महा छबि छाये ❀ शिथिलअंग श्रमबिन्दु सुहाये

इंदीबर राजीव कमल जनु ❋ फूलिरहे मकरन्द भरे मनु
बैठे कुन्ज द्वार सुखदाई ❋ कोमल किशलय सेज सुहाई
लटकति चहुँदिशि कुसुमितबेली ❋ फूलिरही तरु द्वार नबेली
हरित भूमि छबि बरणि न जाई ❋ बहत समीर सुखद पुरवाई
आये उलहि मेघ सुखकारी ❋ परत बूँद शीतल श्रमहारी
भीजत सुगँध चूनरी सारी ❋ मन सकुचत लखि रसिक बिहारी
बूंद बरावत मोहन पातन ❋ हँसि हँसि करत प्रेमकी बातन

दो० भीजे रस सों प्रेमसुख, जलभीजे दोउ गात ।
भीजे अम्बर कुंज गृह, श्यामा श्याम सुहात ॥
सो० यह अचरज की गाथ, को मानै को कहि सकै ।
गोपसुता के साथ, रमत ब्रह्मद्रुम कुंज तर ॥

यहिबिधि करि बिलास बनमाहीं ❋ कह्यो श्याम श्यामा के पाहीं
अब गृह जाहु सांझ नियराई ❋ मात पिता करिहैं दुचिताई
यह रसरीति गुप्त की नीकी ❋ तुम प्यारी अति मेरे जीकी
कर ते कौर डारि मैं आयो ❋ तुमरो बोल सुनत उठिधायो
मेरे प्राण बसत तुम पाहीं ❋ यक क्षण तुमको बिसरत नाहीं
सुनि सुनि बातैं प्रिय की प्यारी ❋ करति मनहिं मन आनँद भारी
अति सनेह बोली सकुचाई ❋ सुनहु प्राण प्रीतम सुखदाई
कहा करौं पग जात न घरको ❋ मन अटक्यो नहिं मानत डरको
दृग तुमको देखत सुख पावैं ❋ गृह गुरुजन मोहिं नेकु न भावैं
बरजहु अपनी चितवनि तुम हारि ❋ और मन्द मुसुकानि मनोहरि
तुम्हरी नेकु सहज यह बानी ❋ सहियत है हम सर्बस हानी
बशीकरन है इनके माहीं ❋ बिबश भयो मन मानत नाहीं
दो० ऐसी बिधि परगट करत, दम्पति निज अनुराग ।

भरे परम आनन्द रस, बदत आपने भाग ॥

सो० श्याम लई उर लाय, प्रिया बोधि पठई घरहि ।

चले आप सुख पाय, सुन्दर घन सुखके सदन ॥

करति जननि अवसेर बिशाला ❋ पहुँचे सदन श्याम तेहि काला
लीने धाय लाय उर मैया ❋ कहति लाल की लेउँ बलैया
करते कौर डारि उठि भागे ❋ सुनत गाय ब्यानी अनुरागे
लोही गाय आपनी जानी ❋ ताते प्रीति अधिक उर आनी
वह तौ नाहिंन मेरी गैया ❋ बृन्दाबिपिन भ्रम्यो सुनु मैया
गोवर्द्धन यमुना तट सारो ❋ बृन्दाबन ढूंढ़त सब हारो
कोऊ सखा संग तहं नाहीं ❋ फिरयो अकेलो बनके माहीं
युवती एक मिली धौं काहीं ❋ सो पहुँचाय गई घर माहीं
सुनि यशुदा अति मन सकुचानी ❋ धोये पद लै ताते पानी
तुरत श्याम को भोजन दीनो ❋ निरखि मुखारबिन्द सुख लीनो
लीलासागर कुँवर कन्हाई ❋ सदा सदा भक्तन सुखदाई
ब्रजबासी प्रभु सब गुण आगर ❋ नँदनंदन सुंदर सुखसागर

दो० तब श्री कीरतिनंदनी, रूपराशि गुणखान ।

चली श्याम सुख दै भवन, नागरि नवलसुजान ॥

सो० लई खोलके हाथ, आंचरते मोती लरी ।

सखी मिली यक साथ, बूझति कहँ तू लाड़िली ॥

तासों ब्योरो यक समुझायो ❋ गई हती यह काज बतायो
कह्यो सखी तब सुन री प्यारी ❋ ऐसी निधरक भई कहा री
ब्रज घर घर तैं फिरत अकेली ❋ संग नहीं कोइ सखी सहेली
मोको संग बोलि नहिं लीनी ❋ ऐसी तैं करनी यह कीनी
प्रातहि गई अबहिं तू आई ❋ बीत्यो दिवस निशा नियराई

पायो हार किधौं पुनि नाहीं ❀ देखहु मोहिं साद मन माहीं
चतुर सखी मनमें यह जानो ❀ मिलवति है यह झूठी बानी
यह तो गई श्याम के पासा ❀ आवति है करि भोग बिलासा
कह प्यारी किन हार चुरायो ❀ कैसे जाय तहां तैं पायो
ब्रजयुवतिन सबहिन मैं जानों ❀ कहे तो सबके नाम बखानों
ताको नाम लेहि किन लीन्हों ❀ प्यारी तेरे गुण मैं चीन्हों
चोर तुम्हारे कुँवर कन्हाई ❀ तिनसों जाय बिलस तू आई

दो० रस बश कीने श्याम तैं, कहा बनावति बात।
कहे देत रस रँग भरे, अरु सोहैं सब गात॥

सो० कह बहँकावति मोहिं, कहा हार कहँ ग्वालिनी।
तबते जानति तोहिं, जबते तैं हरिसँग कियो॥

इन बातनि कछु पावत हैरी ❀ तोहिं यहै नित भावत कैरी
देखत मोहिं अकेली जबहीं ❀ नई बात उपजावति तबहीं
बिनहीं देखे झूठ लगावै ❀ नाहक मोसों बैर बढ़ावै
सौंह दिये बूझति मैं तोहीं ❀ जोरि कहत कै देख्यो मोहीं
जब जानी प्यारी बिरुझानी ❀ तब यह चतुर सखी मुसकानी
तब हँसि कह्यो जाय घर प्यारी ❀ तू जीती मैं तोसों हारी
चली भवन बृषभानु दुलारी ❀ अति अवसेर करति महतारी
गई प्रात राधा नहिं आई ❀ दिवस गयो निशियाम बिहाई
हारकाज मैं त्रास दिखाई ❀ तातें रूस रही कहुँ जाई
है है धौं काके घर माहीं ❀ कहां जाउँ मैं ढूंढन ताहीं
जोहु हार वह कहि पछिताई ❀ सुता सनेह अधिक अकुलाई
सुनि हैं बात महर कहुँ जबहीं ❀ मोपर अति रिस करि हैं तबहीं

दो० शोचतिजननीबिकलअति, मननलहतबिश्राम।

उर डराति ताही समय, गई कुँवरि निजधाम ॥
सो॰ देखतही उठिधाय, हरषि लई उरलाइकै ।
सुता मात उरलाय, शोच मिट्यो धीरज भयो ॥

लेरी मात हार मैं पायो ❋ जाकारण म्वहिं त्रास दिखायो
मनहीं मन कीरति सकुचाई ❋ पोच करी मैं याहि रिसाई
अति पुनीत राधिका प्रबीनी ❋ कृष्ण मिलन हित यह मति कीनी
अगम अगोचर हैं प्रभु जोई ❋ ब्रज बनितन वश कीने सोई
जो प्रभु शिव सनकादिक ध्यावैं ❋ ब्रजगोपिन सँग सो सुख पावैं
हरिकी कृपा अगोचर भारी ❋ निगमनहूं ते अगमन भारी
प्रीति बिबश सबते गिरिधारी ❋ राजा रंक पुरुष कह नारी
देवकि उदर प्रीतिबश आये ❋ प्रीतिहि ते यशुमति पय प्याये
प्रीति बिबश बन धेनु चराइ ❋ प्रीति बिबश नँदकुँवर कन्हाई
प्रीतिहि के बश दही चुरायो ❋ प्रीति बिबश ऊखल बँधवायो
प्रीति बिबश गोबर्द्धन धारी ❋ प्रीति बिबश नटवर बनवारी
प्रीति बिबश गोपिन सँग कामी ❋ प्रीति बिबश बृन्दाबन धामी

दो॰ श्याम सदा बश प्रीतिके, तीन भुवन बिख्यात ।
बिना प्रीति नहिं पाइये, नन्दमहर को तात ॥
सो॰ प्रीति करहु चित लाय, ब्रजबासी प्रभुपदकमल ।
कहत सन्त श्रुति गाय, प्रभुहरिरीझैं प्रीतिको ॥

अथ प्यारीके घरमिलन लीला ॥

भये श्याम नागरि बश ऐसे ❋ फिरत छांह संगहि सँग जैसे
बदन कमल रस रूप लुभाने ❋ रहत शिलीमुख ज्यों मड़राने
बचन नाद रस मृग ज्यों गीधे ❋ नयन कटाक्ष बंक शर बींधे

कबहुँ श्याम यमुना तट जाहीं ❋ बिन प्यारी देखे अकुलाहीं
कबहुँ कदम चढ़ि मग अवलोकैं ❋ कबहुँ जाय बन कुंज बिलोकैं
गृह बन लगत कहूं मन नाहीं ❋ मिलन प्रकार चहत चितचाहीं
तब बृषभानु पुरा तन आवैं ❋ मुरली मधुर बजावैं गावैं
प्यारी प्रकट श्याम गति देखी ❋ देखि मनहिं मन सहत बिशेषी
अति अनुराग भरे दोउ नागर ❋ गुण सागर रस रूप उजागर
अरस परस दोउ चाहत ऐसे ❋ शशि चकोर अंबुज अलि जैसे
चली यमुन बृषभानु दुलारी ❋ शोभित संग नवल ब्रजनारी
देखे नन्द सुवन तेहि खोरी ❋ ब्याकुल प्रेम बिकल मति भोरी

दो० सखिन संग लखि नागरी, मन डरपी सकुचाय ।
श्याम परे फँद कामके, कौन कहै समुझाय ॥

सो० सखियनके संकोच, बोलसकत नहिं मुख बचन ।
हृदय भयो अतिशोच, देखिबिरहब्याकुलहरिहिं ॥

इतहि सखिन सों बात बनावैं ❋ उतहि श्यामको भाव जनावैं
मुख मुसकाय सकुच पुनि लीने ❋ सहज अलक निरवारन कीने
एक सखी यमुना सों आवति ❋ ताहि भेंटि यों बचन सुनावति
मेरे सदन आइयो आली ❋ हर्ष भये यह सुनि बनमाली
प्यारी गुप्तभाव जो कीनो ❋ श्याम सुजान जान सो लीनो
हरषि गये तब निज गृह मोहन ❋ प्यारी चली सखिन के गोहन
चतुर सखिन मनमें लखि लीनों ❋ भाव कछू हरिसों इन कीनों
हरुवैं आपुस में ब..ानी ❋ हरि तनु लखि कछुयह मुसुकानी
पुनि मुसकाय कमल मुख फेर्यो ❋ सदन बुलाय सखी को टेर्यो
गये श्याम उत हर्ष बढ़ाई ❋ ये अति चतुर करी चतुराई
और भाव कैसो गन कोऊ ❋ आज रैनि मिलि हैं ये दोऊ

लै यमुना ते जल अतुराई ❋ सखिन संग प्यारी घर आई
दो० भाव दियो निशि आइ हैं, मेरे मोहन आज।
अति हर्षित अंगनसजति, भूषणवसनसमाज ॥
सो० सहज रूपकी खान, अंग सुधारत लाड़िली।
को करिसकै बखान, त्रिभुवनपति हरिवल्लभा ॥
अंग शृंगार कियो हरिप्यारी ❋ वेणी रचि निज पाणि सँवारी
मोतिन संग जराऊ टीको ❋ कियो विंदु वंदन को नीको
लोचन अंजन रेख बनाई ❋ श्रवणन तरवन की छवि छाई
नासा नथ अतिही छवि छाजै ❋ नाग वेलि रँग अधरन राजै
सुभग अंग सुत नौं सत साजै ❋ सुरँग सुगंध वसन शुभ भ्राजै
मन मोहन को पंथ निहारै ❋ कबहुँ कि उत्कंठा जिय धारै
भयो बाल शशि अस्त निहारी ❋ कहति आज ऐहैं गिरिधारी
आवन पैहैं कै धौं नाहीं ❋ कै आवत ह्वै हैं मगमाहीं
कै धौं तात मात भय करि हैं ❋ कै आवत मेरे घर हरि हैं
आवैंगे कै धौं हरि नाहीं ❋ यों शोचति प्यारी मन माहीं
कबहूं रचि रुचि सेज सँवारै ❋ हरि ऐहैं मन हर्षति हारै
सुमन सुगंध सेज उर धारै ❋ पुनिपुनि करि अभिलाष विचारै
दो० आवैं कबहुं अचानकहि, जो मोगृह घनश्याम।
डारति अति अनुरागभरि, सुभगपांवड़े धाम ॥
सो० प्रकटे कृपानिधान, यों अभिलाषा करतही।
कोकहिसकैबखान, भयो जु सुखलखि दुहुँनमन ॥
वह छवि कापै जात बखानी ❋ वह रस झिझक मंद मुसकानी
कह मृदु मधुर परस्पर बानी ❋ वह संयोग प्रेम सकुचानी
वह शोभा वह चितवनि बांकी ❋ वह रस प्रेम उमँग दुहुँ घांकी

वह सुख श्रीराधा माधव को ❋ को कहि सकै आहि जग कवि को
जाकी महिमा बेद न जानै ❋ कवि ताको केहि भांति बखानै
श्यामा श्याम सेज पर सोहैं ❋ अरस परस दोऊ मन मोहैं
गुण आगर छबिसागर दोऊ ❋ कोटि काम रति सम नहिं सोऊ
मत्त प्रेमरस बिवश बिहारैं ❋ युगल परस्पर अंग सँवारैं
लटपटि पाग सँवारति प्यारी ❋ अलक सुधारत श्रीगिरिधारी
रास बिलास दोऊ अनुरागे ❋ आलिंगन चुंबन रस पागे
हास बिलास बिबिध रसरीती ❋ इहि सुख रैन याम त्रयबीती
अति रसमत्त युगल अलसाने ❋ पुनि पौढ़े दोऊ लपटाने

दो० निशिनिघटीतमतामिटी, उडुगणज्योतिमलीन
गये कुसुम कुम्हिलाइकै, भई दीप छबि छीन ॥

सो० बिकसे सरससरोज, भयो पवन शीतल सुरभि ।
उतस्यो नीच मनोज, आय आपने धनुष तें ॥

सरस बचन बोली तब प्यारी ❋ जागहु प्राणनाथ बनवारी
भयो प्रात को समय कन्हाई ❋ प्राची दिशि पीरी परि आई
चन्द मलिन चिरई चुहचानी ❋ अलि छूटे कुमुदिनि सकुचानी
बोले तमचुर जहँ तहँ बानी ❋ मिले कोक कोकी सुखमानी
उठहु प्राणपति सदन सिधारौ ❋ है ब्रज घर घर घेर हमारौ
लगी रहति परखाति ब्रजनारी ❋ जागहिं जनि गुरुजन भय भारी
सुनत उठे मोहन मुसकाई ❋ चले सदन अपने अतुराई
गृहते निकसत सखियन जानी ❋ देखि दरश तनुदशा भुलानी
प्रकट दरश दै गये कन्हाई ❋ यह उनकी मनसाध पुराई
शीश मुकुट मोतिन की माला ❋ पीत बसन कटि नैन बिशाला
श्याम बरण तनु सुंदर ताई ❋ अँगअँग प्रति गृह कुँवर कन्हाई

देखि रूप मन रह्यो लुभाई ❀ निकसि गये गृह कुँवर कन्हाई

दो॰ बारबार जिय लाड़िली, यह शोचति पछितात।
गये श्याम आलस भरे, नेकु न सोये रात॥

सो॰ देखे जिन सखि कोय, श्याम गये मो सदनते।
मैं राखे हैं गोय, अबलगि यह रस सखिनसों॥

देखो जाय पँवरिहै प्यारी ❀ जहां तहां ठाढ़ी ब्रजनारी
सकुच गई चिंता उपजाई ❀ बार बार मन मन पछिताई
हरि सों प्रीति गुप्त ही मेरी ❀ सो इन आज प्रकट करि हेरी
निकसे श्याम हमारे घरसों ❀ इन जान्यो ह्वैहैं अटकरिसों
नितही नित बूझति ये आई ❀ मैं निदरयो इनको सतराई
अब तौ श्याम प्रकट इन देख्यो ❀ करिहैं मोसों बहुत परेख्यो
यह तौ दाँवँ भलो इन पायो ❀ अब कैसे करि जाय छिपायो
अबहीं बूझहिंगी सब आई ❀ कह कहिहौं अब उनसों जाई
प्रकट करौं तौ होय अनीती ❀ राखन गुप्त कह्यो हरि प्रीती
शोच परयो कछु बात न आवै ❀ बार बार मन प्रभुहि मनावै
प्राणनाथ हरि होउ सहाई ❀ जाते मेरी पति रहि जाई
जैसे बोध सखिन को होई ❀ दीजै नाथ बुद्धि अब सोई

दो॰ ऐसे शोचति लाड़िली, कबहूं प्रभुहि मनाय।
कबहूं प्रभुको सुख समुझि, प्रेम मगन ह्वैजाय॥

सो॰ भयो बोध उर आय, सुमिरत ही मन भावनो।
कहिहौं सखिन बुझाय, मनमन हरषी नागरी॥

परम कुशल राधे हरि प्यारी ❀ रच्यो सखिन को बोध विचारी
अति आनंद पुलकि तनु आयो ❀ शोच मोह उरते बिसरायो
जो छबि सुन्दर कुँवर कन्हाई ❀ गये प्रात सखियन दरशाई

उनसों सोई रूप बखान्यो ❁ यह बिचार प्यारी उर आन्यो
प्यारी पिय के गर्ब गहेली ❁ अंग अंग छबि पुंज भरेली
बैठी सदन बिराजत रूरी ❁ श्याम सनेह सुधारस पूरी
कहति परस्पर सखि परहासा ❁ कहति चलौ राधा के पासा
है है निधरक घरमें वैसी ❁ देखहिं चलौ बदन छबि कैसी
कैसे अंग अभूषण कैसे ❁ कछु बदले कैधौं हैं वैसे
आज रैनि हरिसों रति मानी ❁ कहि है कहा सुनौ चल बानी
राधा पहँ गमनी ब्रजनारी ❁ गईं जहां बृषभानुदुलारी
देखि नागरी मुख नहिं बोली ❁ जान्यो आपहि करत ठठोली

दो० सहज रही बोली नहीं, कछु बदन सों बैन।
निकट बुलायो सखिन को, नयननही की सैन॥

सो० इत लीनो इन जान, परम चतुर आली सबै।
यह कछु रचत सयान, देखि हमैं बोली नहीं॥

अपनो भेद कछू नहिं देहै ❁ कहा बोध रचिकै धौं कैहै
अपनी जांघन चीर चुरावै ❁ कैसेहुँ प्रकट न काहु जनावै
निधरक भई श्याम सँग पाई ❁ भूलहु मति याकी लरिकाई
निरखौ भृकुटी त्योर निहारी ❁ कहां कहां धौं बात सँवारी
रखति गर्ब तुमहूँ सब कोऊ ❁ देखहु बोलि नाहिं किन कोऊ
कह्यो बिहँसि तब इक ब्रजनारी ❁ सुनो अहै बृषभानु कुमारी
आज कहा मुख मूँदि रही है ❁ कापर रिस करि मौन गहीहै
हम सों कहति नहीं सों एरी ❁ हम तौ संग सखी हैं तेरी
कै देवन को ध्यान धस्यो री ❁ कै सुभाव कछु यहै पस्यो री
जब आवति हम तेरे प्यारी ❁ तब तब यहै धरन ते धारी
तुम दुराव कत राखति हम सों ❁ हमहूं कछु राखति हैं तुम सों

ऐसो शोच कहा मन माहीं ❋ जो जवाब त्वहिं आवत नाहीं
दो० कछु दिनते तेरी प्रकृति, अरी परी यह कौन।
निठुर भई हमसों रहति, जब तब साधे मौन॥
सो० अपने मन की बात, कछु हमसों भाषति नहीं।
ऐसे कहि मुसकात, प्यारी सों सब नागरी॥
मनहीं मन जानति सब प्यारी ❋ मोसों हँसी करति ब्रजनारी
परम प्रवीण सकल गुणखानी ❋ बोली मधुर मनोहर बानी
सुनहु सखी बूझति कह हम सों ❋ कहा बुझाय कहौं मैं तुम सों
आज प्रात इक चरित नयो री ❋ जात इतैं कछु दृगन लह्यो री
नीके नेकु न देखन पाई ❋ तबहीं ते मन रह्यो लोभाई
कै घनश्याम कै श्याम कन्हाई ❋ यहै शोच उर रह्यो समाई
बन पंक्ती कै है [गज मोती ❋ पीत दुकूल कि दामिनि ज्योती
इन्द्र शरासन कै बनमाला ❋ शीश मुकुट कै धौं अरि व्याला
मंद मधुर जलधर की गाजन ❋ कै धौं पग नूपुर धुनि बाजन
देखे आज श्याम जबहीं ते ❋ पर्यो यहै धोखो तबहीं ते
कहा कहौं हरिकी चपलाई ❋ ऐसो रूप गयो दरशाई
भरी श्याम रस कुँवर कन्हाई ❋ कहति सखिन सों निधरकताई
दो० सखी कहति सब आपुमें, सुनहुं न याकी बात।
प्रकट करन आई जु हम, आपुहि प्रकटति जात॥
सो० हम देखे जिय श्याम तैसेही इनहूं लखे।
दोष देति बिन काम, यह सूधी हमहीं कुटिल॥
इत नहिं रहो और जिनि भाखो ❋ जो चाहौ अपनी पति राखो
इनसों तुम चाहति हौ जीतें ❋ मन ते गर्व करौ यह रीतें
यह हरिकी प्यारी पटरानी ❋ को याकी बुधि सकै बखानी

हम थाकी दासी सर नाहीं ❁ देखहु सखो समझ मनमाहीं
हम देखति कछु और सुभाऊ ❁ यह देखति हरिको सतभाऊ
याकी अस्तुति कहा बखाने ❁ इनहीं भले श्याम पहिंचाने
तब हँसि कह्यो सखिन सुन प्यारी ❁ तैं जो लखे सो हैं बनवारी
प्रातहि ते जो आज निहारे ❁ गये कान्ह वे मेघ न कारे
मोर मुकुट शिर मोर न होई ❁ कटि पटपीत न दामिनि सोई
मुक्तमाल बनमाल सुवेसू ❁ नहिं बक पांति न धनुष सुरेसू
पग नूपुर धुनि गरजन नाहीं ❁ मत राखो धोखो मन माहीं
देखे तैं प्रातहि गिरिधारी ❁ काहे को शोचति मन प्यारी

दो० धनि धनि ब्रजकी नागरी, हरिछबि लखत अनूप।
मोहिं होत धोखो तबहिं, जब देखति वह रूप ॥

सो० तुम देखति हरि गात, कैसे दृग ठहराय सब।
मोपै लखे न जात, करि हारी केतो यतन ॥

तुम दरशन पावति री कैसे ❁ मोहूं श्याम दिखावहु तैसे
वे तो अति छबि चपल कन्हाई ❁ तुम कैसे देखत ठहराई
कैसे रूप हृदय में राखो ❁ मोसों सखी सांच सब भाखो
मैं देखन पावति हरि नीके ❁ रहति सदा अभिलाषा जीके
धनि धनि तू बृषभानु दुलारी ❁ धनि तुव पिता धन्य महतारी
धनि सो दिवस रैनि सो बारा ❁ जब ते लीनो री अवतारा
धनि तेरे बश कुंजबिहारी ❁ धनि तैं बश कीनो गिरिधारी
भाव भक्ति मति रति धनि सोऊ ❁ एक सुभाव धना तुम दोऊ
तोहिं श्याम हम कहा दिखावैं ❁ तू हरिको हरि तोको भावैं
एक जीव द्वै देह तुम्हारी ❁ वे तोमें तू उन में प्यारी
उनकी पटतर को तू दीजै ❁ तेरी पटतर उन को लीजै

सुधा सुधा गुण क्यों बिलगाई ❀ गूंगे को गुरु कह्यो न जाई

दो० तू उन के उरमें बसी, वे तेरे उरमाहिं।
अरस परस ज्यों देखिये, दरपन दरपन छाहिं॥

सो० कही कौनपै जाहि, तुम दोउ निर्मल गात अति।
वे तेरे रँग माहि, तू उन के रँग में रँगी॥

नीलाम्बर श्यामा छवि तेरे ❀ तुम छवि पीत वसन उनकेरे
घन भीतर दामिनी बिराजे ❀ दामिनि घनके चहुँदिशि राजे
तुम अनूप दोऊ सम जोरी ❀ नँद नंदन वृषभानु किशोरी
सुनि सुनि सखियन के मुखबानी ❀ बोली राधा कुँवरि सयानी
मृगलोचनि सांची कहु मोसों ❀ मैं बूझति सकुचति हौं तोसों
मोसों मानत नेह कन्हाई ❀ मेरी सों कहि मोहिं सुनाई
तुम तौ रहति श्याम सँग नितहीं ❀ मिलति जाय उन सों जिततितहीं
उन के मनकी सब तुम जानौ ❀ हाहा मोसों सांचि बखानौ
सुनु राधा इतरात कहारी ❀ तो तें और कौन है प्यारी
तेरे बश नँदनन्दन ऐसे ❀ रहति पौन पङ्खा बश जैसे
ज्यों चकोर शशि के बश माहीं ❀ है शरीर के बश परछाहीं
नाद बिबश मृग देखिय जैसे ❀ मन मोहन तेरे बश तैसे

दो० मिली खरक तू श्याम को, दई धेनु दुहि तोहिं।
तेरे बश हरि तबहिं ते, कहा भुरावत मोहिं॥

सो० बरणौं कहा सनेह, नेकहुं तुम न्यारे नहीं।
हौ तुम एकहि देह, वे दक्षिण तुम बाम अँग॥

अथ गर्बव्याज बिरहलीला॥

सुनु प्यारी ललिता मुख बानी ❀ मेरे जिय में यह अनुमानी

और नहीं कोऊ मो सरिकी ❀ हौं राधा आधा अँग हरिकी
अपनेही बश पिय को करिहौं ❀ अनत जात देखहु तौ लरिहौं
ऐसे गर्व कियो जिय प्यारी ❀ घर घर गईं सकल ब्रजनारी
इहि अन्तर आये गिरिधारी ❀ गर्व बिभंजन जन सुखकारी
हरि अन्तर्यामी अबिनासी ❀ जानी प्यारी गर्ब उदासी
उझकि झांकि प्यारी तन हेस्यो ❀ प्यारो देखत ही मुख फेस्यो
कह्यो कान्ह तुम मानत नाहीं ❀ उझकत फिरत घरन ब्रज माहीं
मिसही मिस युवतिन को हेरो ❀ नेक नहीं छांड़त घर फेरो
कोउ जैसे तैसे अपने घर ❀ तुम आवत मानत नाहीं डर
ऐसे प्रेम गर्व करि प्यारी ❀ प्राणनाथ तन नाहिं निहारी
जान्यो द्वारे लगे कन्हाई ❀ बैठि रही अभिमान जनाई

दो० हृदय श्याम सुख धाम में, राख्यो गर्व बसाय।
ठौर तहां पायो नहीं, रहे श्याम सकुचाय॥
सो० जहां रहत अभिमान, तहां बास मेरो नहीं।
सो राधा उर जान, आप लगे पछितान हरि॥

तुरतहिं गमन तहां ते कीनो ❀ नहीं दरश प्यारी को दीनो
चकित भई प्यारी मन माहीं ❀ यहां श्याम आये क्यों नाहीं
आवत आप द्वार पुनि देख्यो ❀ तहां नहीं नँदलालहि पेख्यो
झांकतही फिरिगये कन्हाई ❀ मनहीं मन श्यामा पछिताई
मोते चूक परी अति भारी ❀ ताते मोहन मोहिं बिसारी
एक तो बैठि रही गर्बानी ❀ दूजे मैं हरि सों झहरानी
मेरी बुद्धि जानिके हीनी ❀ मोसों श्याम निठुरता कीनी
वे बहुनायक कुंजबिहारी ❀ मोसी उनके कोटिक नारी
कासों कहौं हरिको को ल्यावै ❀ को अब मोको हरिहि मिलावै

भई बिरह ब्याकुल अकुलाई ❋ बदन सरोज गयो कुम्हिलाई
तब आपुन को निठुर कहावै ❋ सुमिरि प्रीति उर भरि भरि आवै
नेकु नहीं धीरज उर धारै ❋ नैन सरोजन सों जल ढारै

दो० भई बिकल अति नागरी, बिरह ब्यथा की पीर।
खान पान भावै नहीं, सुधि बुधि तजी शरीर॥

सो० घर बाहर न सुहाय, सुख सब दुख दायक भये।
रह्यो शोच उर छाय, ब्रजबासी प्रभु मिलनको॥

राधा सदन सखी पुनि आई ❋ देखि दशा मन अति भरमाई
अति ब्याकुल तन बदन मलीना ❋ नीर बिहीन मीन जिमि दीना
कर गहि गहि बूझति ब्रजनारी ❋ कहा भयो तोकहु री प्यारी
ऐसे बिबश भई तू जाहे ❋ हमैं सुनाय कहति नहिं काहे
अति प्रसन्न देख्यों त्वहिं तबहीं ❋ क्यों मुरझाय गई री अबहीं
बहुरि लखे धौं कतहुँ कन्हाई ❋ उनहीं तोहिं ठगोरी लाई
श्याम नाम सुनि श्रवणन जागी ❋ जान्यों हरि आये अनुरागी
आतुर सखी कण्ठ लपटानी ❋ चूकपरी मोतें कहि बानी
अब अपराध क्षमो रिस त्यागी ❋ करुणा करि म्वहिं करहु सभागी
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी ❋ रहीं शोचि राधिकहि निहारी
शीतल जलसे मुख पखरायो ❋ पोंछि आँचरन बचन सुनायो
आज भई कैसी गति तेरी ❋ परम चतुर ब्रज में तू है री

दो० भयो आलिन के बचन सुनि, कछु चेत उर आय।
तब जानी एतौ सखी, गई हृदय सकुचाय।

सो० क्यों तुम बदन मलीन, काहे तू ऐसी भई।
कहु प्यारी परबीन, बार बार बूझति सखी॥

बोली तब सखियन सों प्यारी ❋ तुम सों करों दुराव कहारी

मैं तो हरिके हाथ बिकानी ❀ उन म्वहिं तजी कुटिलमतिजानी
अपनी कथा श्यामकी करणी ❀ प्रकट कहौं तुमसों सब बरणी
बैठीही मैं सदन अकेली ❀ झांके आय द्वार हर हेली
मैं मन में कछु गर्व बढ़ायो ❀ आदर करि नहिं भवन बुलायो
उन मेरे मन की सब जानी ❀ अंतर्यामी सारँग पानी
कमलनैन वे गर्व प्रहारी ❀ जातरहे सखि मोहिं बिसारी
तबतें बिरह बिकल अतिकीनो ❀ अहंकार यह फल म्वहिं दीनो
चित न रहै कितनो समुझाऊं ❀ अब कैसे करि दरशन पाऊं
भयो भवन बन मोकहँ आली ❀ नहीं सुहात बिना बनमाली
सुनहु सखी लागति मैं पाऊं ❀ अब हरि मिलैं धौं करहुँ उपाऊं
बिन मनमोहन कुँवर कन्हाई ❀ भये सुखद सब म्वहिं दुखदाई

दो० गिरिकन्यापतितिलककर, दाहत अनलसमान।
शिवसुत बाहन भखनको, भयो हलाहल पान॥

सो० जलधि सुता सुत हार, भयो इन्द्र आयुध सखी।
मलयज मनहुँ अँगार, शाखामृगरिपुबसनबर॥

सखी दशा मेरी यह हेरी ❀ भयो काम अब मोको बैरी
बारिज भवसुत प्रियकी चाली ❀ अब नहिं हरिसों करिहौं आली
ऋतु बिचारि जो मानहिं करिये ❀ सोउ जरिजाहु न उरमें धरिये
अब सुभाव रहिहौं हरि साथा ❀ मोहिं मिलावहु सखि ब्रजनाथा
सुनि राधे करनी यह तेरी ❀ हम सों भेद कियो तैं हेरी
उन के गुण जैसे नहिं जाने ❀ अबहीं ते ऐसे ढँग ठाने
एकहि बार मिली तू धाई ❀ नहिं राखी मर्याद बड़ाई
तैं हीं उन को मूड़ चढ़ायो ❀ तब नहिं हमको भेद जनायो
भवन बिपिन सँग डोलन लागी ❀ वे बहु तरुणिरमन अनुरागी

निजकर अपनो महत गँवायो ❋ परवश परि कौने सुख पायो
मेरो कह्यो अजहुँ मन माहीं ❋ हित करि मानेंगी धों नाहीं
धीरज धरु कत मरति बृथाहीं ❋ तूंहू मान करत क्यों नाहीं

दो॰ बात आपनी आपने, करहै देख विचार।
भई कहा ऐसी विवश, एरी एकहि वार॥

सो॰ पुहुप भँवर जियजान, भोगी वहुत प्रसून के।
बिना किये बहुमान, कौने पियनिजवश किये॥

कहति सखी तुम तौ यह बाता ❋ कम्प होत सुनि मेरे गाता
मैं तो मान श्याम सों कीनों ❋ ताते इतनो दुख म्वहिं दीनों
अब तो भूलि मान नहिं करिहौं ❋ श्याम मिलैं तो पायँन परिहौं
बिनती करि करि उनहिं सुनाऊं ❋ यह अपनो अपराध क्षमाऊं
चूक परी मोतें मैं जान्यो ❋ उनको यह अपराध न मान्यो
वे आवत हैं मेरे नीके ❋ मैंहीं गर्व धस्यो सखि जीके
मेरे गर्व ते कहा सस्योरी ❋ सिट्यो हृदय सुख दुःख भयोरी
जाते हानि आपनी होई ❋ कहौ सखी कीजै क्यों सोई
मान बिना नाहिं प्रीति रहै री ❋ प्रकट देखि म्वहिं कहा कहै री
धाय मिले की गति तेरीसी ❋ भई अधीन फिरति चेरीसी
अपनो भेद उन्हैं तैं दीनों ❋ तब दुराव हमहूं सों कीनों
भयबिन प्रीति होति नहिं प्यारी ❋ सो जिय मानहुँ सीख हमारी

दो॰ पुनिपुनिसिखवतितुमसखी, मानकरन को मोहि।
मन तो मेरे हाथ नहिं, मान कौन बिधि होहि॥

सो॰ उमगभरतदिनरात, श्यामगुणनिअभिलाषकरि।
मन नहिं मानत बात, मान सजौं कैसे सखी॥

मन मोसों अब बाम भयो री ❋ कहा कहौं हरिसंग गयो री

अब अपनो हित उनहीं जानैं ❀ मुदित मूढ़ अपमान न मानैं
इन्द्री सब स्वारथ रसपागी ❀ गई संग मनहीं के लागी
घरफूटे क्यों रह्यो परै री ❀ मनहिं बिना को मान करै री
अब कोऊ मेरे सँग नाहीं ❀ रही अकेली मैं बन माहीं
तापर भयो काम अब बैरी ❀ बिरह अग्नि तन जारत है री
इतने पर तुम मान करावति ❀ कहो कौन सखि यह कहनावति
मैं तौ चूक आपनी मानी ❀ मोहिं मिलावहु श्यामहिं आनी
अब तौ क्योंहूं मान न करिहौं ❀ ऐसी बात कहे तिहि लरिहौं
आली म्वहिं नँदनंदन भावै ❀ सोई हितू जो आनि मिलावै
अबजो मिलहिं श्याम बड़भागी ❀ फिरतरहौं सँगही सँग लागी
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी ❀ दारुण बिरह व्यथा उर जागी

दो० देखि दशा सहि नहिं सकी, अली उठी अकुलाय।
हम राधाकी प्रियसखी, रचिये बेगि उपाय॥

सो० कहैं श्याम सों जाय, ऐसी चूक परी कहा।
दीजै याहि मिलाय, झुरि झुरि अति पीरी परी॥

सखिन कह्यो तब सुनि री प्यारी ❀ मतिहि होय व्याकुल सुकुमारी
अबहिं जाय हम श्यामहिं ल्यावैं ❀ नेकु धीर धरु तोहिं मिलावैं
पट सों पोंछि वदन बैठाई ❀ तरक बात बहुभाषि सुनाई
नेकु नहीं धीरज उर धारै ❀ बार बार मुख कान्ह उचारै
सावधान करि सखी सयानी ❀ दौरी गई यहै अतुरानी
लखि हरिमुख ललिता मुसकानी ❀ हरिलखि हँसे दुहूं मन जानी
तब हरि ललिता सों मुसकाये ❀ बूझत चितवन नैन चुराये
अति आतुर आई कत धाई ❀ काहे बदन गयो मुरझाई
बोली ललिता तब मुसकाई ❀ सुनहु चतुर नँदनंद कन्हाई

आज एक अचरज लखि पायो ❋ परम बिचित्र न जात बतायो
अतिही अद्भुत रचना जाकी ❋ बरणत बनत भांति नहिं ताकी
रीझि रही मैं तोहिं निहारी ❋ रीझौ गे लखि कुंजबिहारी

दो० मैं आई तुमसों कहन, चलहु दिखाऊं नैन।
देखि परमसुख पाइहो, जो मानो मो बैन॥

सो० एक अनूपमबाग, सुबरण बरण न जाय कहि।
उपजतलखिअनुराग, अतिबिचित्रबानकबन्यो॥

युगल कमल अति बिमल बिराजैं ❋ तापर राजहंस छबिछाजैं
द्वै कदली तरु तापर सोहैं ❋ बिन दल फल उलटे मन मोहैं
तापर मृगपति करत बिहारू ❋ मृगपति पर सरवर यकचारू
द्वै गिरिवर सरवर बर राजै ❋ तिन पर एक कपोत बिराजै
निकट सनाल कमल द्वै फूले ❋ शोभित अधर दिशा को झूले
फूल्यो पुनि कपोत पर नीको ❋ एक सरोज भावतो जीको
तापर एक अमीफल लाग्यो ❋ कीर एक तापर अनुराग्यो
तहाँ एक कोयल द्वै खंजन ❋ तिनपर धनुष सुभग मन रंजन
धनुपर शशि द्वै नागिनिवारी ❋ मणिधरि एक नागिनी वारी
ऐसो अनुपम बाग सुहायो ❋ घटत नेह जल कछु कुम्हिलायो
चलि घनश्याम सींचि सो दीजै ❋ शोभा देखि सुफल दृग कीजै
करि बिचार देखौ गिरिधारी ❋ बनी ललित सब अंग पियारी

दो० मनहु श्यामसुंदर नवल, छैल छबीले श्याम।
तुम्हैंमिलनको नवल बहु, अतिब्याकुल हैं बाम॥

सो० कहा भयो जो मान, कियो प्रेम के लाड़ते।
अति सुन्दरी सुजान, प्यारी जीवन जीयकी॥

बरणौं श्री बृषभानु दुलारी ❋ चित दै सुनहु लाल गिरिधारी

कहौं प्रथम बेनी रुचिराई ❀ ललित पीठ पाछे छबिछाई
अहिनी मनहुँ कुटिल गति त्यागी ❀ शशिमुख सुधा चुरावन लागी
रेखा अरुण सिंदूर सुहाई ❀ शोभित शीश न जाति बनाई
मानहुँ किरण लाल रबि केरी ❀ तिमिर समूह बिदारि उजेरी
शोभित कुटिल भृकुटि अति नीकी ❀ मन हरिलेत भावती जीकी
जगत जीत करि निजबश चारी ❀ मनहुँ मदन धनु धरे उतारी
केसर आड़ लिलाट सुहाई ❀ मनहुँ रूप की बाड़ बँधाई
नलिन नैन बिच नाक सुहाई ❀ शोभित अधरन की अरुणाई
चोप युगल खंजन शुकशोभा ❀ देखि एक बिम्बाफल लोभा
दशन कपोल चिबुक दरग्रीवा ❀ बरणि न जात महा छबिसीवा
सुभग अंग सब भूषण सोहैं ❀ कोटिकाम तिय निरखत मोहैं

दो० अति कोमल सुकुमार तन, सकल सुखनकी सीर।
तुमबिनमोहनलालपिय, ब्याकुलअधिकशरीर॥

सो० भरिभरिलोचननीर, श्यामश्याममुखकहिउठति।
चलहु हरहु यह पीर, मैं आई लखि धायकै॥

प्यारी बिकल सुनत सुखदाई ❀ सहि नहिं सके उठे अकुलाई
चले बिहँसि ललिता के साथा ❀ प्रेमहिं के बश श्री ब्रजनाथा
प्रेम बिबश प्यारी पहँ आये ❀ देखि दशा मन अति पछिताये
परी बिकल तनदशा बिसारी ❀ प्यारी मुख देखत गिरिधारी
नीलाम्बर निज करते टारी ❀ लीनो सम्मुख बदन सुधारी
जलद पटल मानहुँ बिलगाई ❀ दियो चंद निकलंक दिखाई
भयो चेत परसत पिय पानी ❀ सम्मुख दृष्टि परत सकुचानी
लई उमगि भरि अंक कन्हाई ❀ बिकल देखि अँखियाँ भरिआई
युगल परस्पर लखि सकुचाये ❀ इतनेहि बिरह दोऊ मुरझाये

कंचन बेलि तमाल सोहायो ❀ मनहुँ प्रेमबश सुधा सिंचायो
हरषि दुहूंदिश मुसकन फूले ❀ परमानन्द फलन करि भूले
मुरछन बिरह तुरत बिसराई ❀ लखि यह मिलन सखी हरषाई

दो० वह चितवन वह हँसि मिलन, वह शोभा सुखभार।
भई बिवश ललिता निरखि, यकटक रही निहार॥

सो० रहे परस्पर देख, अति आतुर दोउ छविहि पर।
तन नहिं देत निमेख, तृप्त न क्योंहूं मानहीं॥

ललिता कहति सखिन सों बानी ❀ देखहु सखि राधा अतुरानी
कैसे अंग अंग छवि देई ❀ मिले श्याम मन धीर न लेई
तृषावंत जिमि अचवत नीरा ❀ सोऊ तो धारति पुनि धीरा
यह आतुर छवि लै उर धारै ❀ नेक नहीं दृग इत उत टारै
ज्यों चकोर चन्दहि टक लावै ❀ याकी सर सोऊ नहिं पावै
होम अग्नि घृतगति है जैसी ❀ याकी दशा देखियत तैसी
यदपि श्याम सँग श्यामा प्यारी ❀ छवि निरखत अति आनँद भारी
हाव भाव करि पिय मन मोहै ❀ विविधि विलास वदन छवि सोहै
बिरह बिकल मति तदपि भ्रमावै ❀ मिलेहु प्रतीति न उरमें आवै
तृषामध्य जिमि सलिलहि देखी ❀ उपजति अधिकै प्यास विशेखी
चितवत चकित रहत चितमाहीं ❀ स्वप्न कि सत्य ईश यह आहीं
बुधि बितर्क बहुभांति बनावै ❀ देखहु अनदेखे ठहरावै

दो० कबहुँ कहति हौं कौन हौं, को हरि करत विचार।
यह सुख भावत कौनको, सचकित रहति निहार॥

सो० निपट अटपटीबात, समुझिपरति नहिं प्रेमकी।
उरझिसुरझि उरझात, उरझनही में सुरझती॥

उत हरि रूप इतै दृग प्यारी ❀ लखि सखि मनहुँ करतहै रारी

अति अहँकार भरे भट दोऊ ❀ नेकहु हारि न मानत कोऊ
इत सुदृष्टि करि काम सहाई ❀ सेना सजि सजि दृगन चलाई
उन उत भूषण जाल अपारा ❀ अंग अंग रचि ब्यूह सँभारा
इतहि कटाक्ष बाण अति चोखे ❀ बारहिबार हनत रण रोखे
उत नहिं बदन ब्यथा अति शूरे ❀ पुलकि अंग मानहुँ अति पूरे
इत अनुराग उतहि छबिताई ❀ क्षणक्षणअधिकअधिकअधिकाई
छबि तापर शशिरति अधिकानी ❀ लोचनजल बिधि तृप्त न मानी
उत उदार छबि अंग श्यामके ❀ इत लोभी अति नेम बामके
ललिता संग सखिन को लीने ❀ दम्पति सुख दुखते दृग दीने
लखि यह मिलन सखी अनुरागी ❀ कहैकि धनि धनि दोउ बड़भागी
धन्य नवल नवला यह जोरी ❀ धनि धनि प्रीति नहीं रुचि थोरी

दो० धन्यमिलनधनियहलखन, धनिधनिधनिअनुराग।
धनिसुख लूटत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग॥

सो० धनिधनिपुनिपुनिभाखि, हरषिचलींसिगरीअली।
युगलरूप उर राखि, एकहि थल राखे युगल॥

अथ परस्पर अभिलाष लीला॥

शोभित श्याम राधिका जोरी ❀ अरस परस निरखत तृणतोरी
हरि रीझे प्यारी छबि देखी ❀ भये बिबश उर हर्ष बिशेखी
कबहुँ पीतपट डारत वारी ❀ कबहुँ मुरलि वारत गिरिधारी
कबहुँ माल मुक्तन की वारैं ❀ कबहूँ तन मन वारि निहारैं
कबहुँ सिहात देखि मन माहीं ❀ राधासम शोभा कहुँ नाहीं
इनको पलक ओट नहिं कीजै ❀ रूप सुधा नैननि पुट पीजै
कबहुँ निरखि मुख हरि सकुचाहीं ❀ कोटिकाम जिनके बश माहीं
चपल नयन हरिके अनियारे ❀ हावभाव नाना गति भारे

कोटि कुरंग कमल बलिहारी ❀ खंजन मीन डारिये वारी
लोचन नहिं ठहरात श्याम के ❀ काहू रँग मुख रंग बाम के
भये श्याम प्यारीबश ऐसे ❀ फिरति गुड़ी डोरी बश जैसे
इकटक नयन अंग छबि पोहे ❀ भये बिवश लखि रूप विमोहे

दो० उठे उठतहैं तुरतहीं, बैठे बैठत पास।
चले चलत सँग बाम के, ज्यों तन छाँहबिलास॥

सो० रही सुरति कछु नाहिं, देह दशा भूली सबै।
अभिलाषा मनमाहिं, प्यारीही के रूपकी॥

मगन श्याम श्यामा रसमाहीं ❀ निज स्वरूपकी सुधि कछु नाहीं
राधा देखि देखि सुख पावैं ❀ पुनि पुनि मन अभिलाष बढ़ावैं
माँगलेति भूषण प्रिय पाहीं ❀ अपने अंग सम्हारत जाहीं
सजि तरिवन कुण्डलहिं उतारैं ❀ बेसरि लै नासापर धारैं
बेनी गूँथ मांग पुनि करहीं ❀ शीशफूल अपने शिर धरहीं
बेंदी भाल सँवारत तैसी ❀ शोभित है प्यारी को जैसी
प्यारी दृगतें अंजन लेहीं ❀ अति हित करि अपने दृग देहीं
भूषण वसन सजत सब वैसे ❀ प्यारी अंग बिराजत जैसे
प्यारी को पियकी छबि भावै ❀ हा हा करि यों बचन सुनावै
कुण्डल मुकुट पीतपट पाऊं ❀ मैं पिय तुम्हरो रूप बनाऊं
हँसतहि हँसत मांगि सब लीनो ❀ पिय को भेष नागरी कीनो
गोरे कान्ह सांवरी राधा ❀ निरखि परस्पर पूरत साधा

दो० कबहुं मुरलि लै नागरी, अधर धरति मुसकाय।
मन्द मन्द पूरित सुरन, रिझवति पियहि बजाय॥

सो० कबहुं बजावत श्याम, अरस परस अधरन धरत।
पूरण है मन काम, सकल काम पूरण युगल॥

हरि को अपने रूप निहारी ❀ आपहि हरिस्वरूप लखि प्यारी
यह अभिलाषा उर तब धारी ❀ कहति सुनो पिय गिरिवरधारी
तुम बैठो मानिनि ह्वै ह्वैकै ❀ तुमहिं मनाऊं मैं पद छ्वैकै
मोको यह अभिलाष बिशेखी ❀ सुख पैहै नैननि यह देखी
सुनत श्याम मन मन मुसकाई ❀ मुरि बैठे करि मान रुखाई
तब प्यारी मन अति अनुरागी ❀ हरि सों मान छुड़ावन लागी
कहति मान तजि प्राण पियारी ❀ मोते चूक परी कह भारी
कहतहि में तुम रिस करि मानी ❀ कह प्रकृती तुव परी सयानी
बृथा हठीली मान न कीजे ❀ अब करि कृपा मोहिं सुख दीजे
बार बार कर गहि गहि भाखैं ❀ शीश नवाय चरण पर राखैं
आनन आनन जोरि निहारैं ❀ पुनि पुनि बचन अधीन उचारैं
क्यों इतनों हठ करति नवेली ❀ बोलति क्यों नहिं गर्व गहेली

दो० श्याम कियो हठ जानिकै, यह बिचार ठहराय।
प्यारीके उर रस बिरह, नेकु देहु उपजाय॥

सो० बैठि रहे निठुराय, नहिं बोलत मानत नहीं।
पुनि पुनि परसति पाय, हाहा करि तब लाड़िली॥

नहीं हँसति नहिं मुखनन जोवै ❀ बार बार नख भूमि करोवै
लखि यह चरित हँसति मन प्यारी ❀ चकित रहति हरि बदन निहारी
कहति सुनहु पिय अब हँसि बोलो ❀ तजहु मान यह घूंघुट खोलो
मोहन अब यह खेल मिटावो ❀ कोटि चंद्र छबि बदन दिखावो
नागरि हँसति हृदय सुख भारी ❀ मूधे नहिं चितवत गिरिधारी
लखि त्रिय रूप पीय को प्यारी ❀ बदन बिलोकत चकित भारी
अपनो रूप पुरुष को देखी ❀ भई मगन रस बिरह बिशेखी
मैं नारी वे पुरुष बिहारी ❀ किधौं पुरुष मैंही वे नारी

बड़ी बिरह सम्भ्रमता भारी ❀ भई बिकल तन दशा बिसारी
निरखत श्याम बिरह की शोभा ❀ बोलत नहीं अधिक मनलोभा
कबहुं कहति वह ख्याल न त्यागत ❀ मान करत नीके नहिं लागत
कबहुं अंक भरि उर सों लावति ❀ कबहूं फिरि फिरि पायँन लागति

दो० कबहूं पाछे ह्वै रहति, कबहूं आगे जाय।
कबहुं उठति बैठति कबहुं, कबहुंक लेति बलाय॥

सो० कबहुं कहति है पीय, कबहूं प्यारी कह कहति।
धीरज धरत न हीय, भई समीपहि बिरह बश॥

भई बिरह व्याकुल जब बाला ❀ हरषि हँसे तब पिय नँदलाला
लई तुरत प्यारी उर लाई ❀ कहति ख्याल में तू अकुलाई
तुमहीं मान करन म्वहिं भाख्यो ❀ भई बिवश कत धीर न राख्यो
मैं तो तुमको भाव बतायो ❀ तुम काहे मन में डरपायो
देखि बिरह व्याकुल मुरझाई ❀ बार बार हरि अंकम लाई
अमिय बचन कहि शीतल कीनी ❀ बिरहताप उरते हरि लीनी
तब नागरि पिय लखि सुख पायो ❀ मिट्यो बिरह मन हर्ष बढ़ायो
कहति भलो पिय मान दिखायो ❀ मेरे मन अभिलाष पुरायो
त्रिय के रूप श्याम छबि देखी ❀ पुनिपुनि पुलकित मुदितबिशेखी
दम्पति हर्ष मनहिं मन कीनो ❀ तब तब कुंज चलन चित दीनो
प्यारी मुकुर पाणि लै देख्यो ❀ नटवर रूप आपनो पेख्यो
हँसताहि हँसत मेटि सब डार्यो ❀ सहज रूप अपनो पुनि धार्यो

दो० चले हरषि बनकुञ्ज को, युगल नारि के रूप।
इक गोरी इक सांवरी, शोभा परम अनूप॥

सो० अंग अंग छबि जाल, अति बिचित्र भूषण बसन।
श्री राधानँदलाल, शोभा अवधि बिलासनिधि॥

जात चले ब्रज बीथिन दोऊ ❋ लखि नहिं सकत नारि नर कोऊ
नँदनंदन त्रिय छबि तनकाछैं ❋ शोभित हैं राधा सँग आछैं
बारबार पिय रूप निहारी ❋ मनहीं मन रीझति है प्यारी
कहति सखी देखैं जिन इनको ❋ बूझेते कहिहौं कह तिनको
तिहूंभुवन शोभा सुखकी निधि ❋ करिहौं तिनको गोप कवनबिधि
पग नूपुर बिछिया छबिछाजैं ❋ गजगति चलत परस्पर बाजैं
श्याम गौर सुन्दर सुख जोरी ❋ मरकत मणि कंचन छबि थोरी
भुज भुज कण्ठ परस्पर राजै ❋ या छबि को उपमा नहिं छाजै
जात युगल बन को सुखदाई ❋ उत तें चंद्रावलि सखि आई
दूरहिते लखि रही निहारी ❋ इकटक नैन निमेष निवारी
पुनि पुनि मन बिचार करि जोहै ❋ एक राधिका दूसरि को है
ब्रजयुवतिन इक इक करि जानो ❋ यह धौं कौन नहीं पहिंचानो

दो० और गांव ते यह कहूं, आई है ब्रज माहिं।
अतिहि सलोनी सांवरी, अबलौं देखी नाहिं॥

सो० राधे मन सकुचाहि, चन्द्रावलि आवति निरखि।
रही श्याम मुखचाहि, ब्रजहीको फेरति हरिहि॥

कहतिजाहु पिय फिर मुख माहीं ❋ कर तें कर छूटत है नाहीं
उत आवत लखि सखी लजानी ❋ इतहि श्यामके नेह भुलानी
दुख सुख हर्ष न हरि रसमाती ❋ उत चन्द्रावलि इन रँगराती
कहति निकट देखहुं धौं जाई ❋ बूझौं याहि कहां ते आई
देखि श्याम मुखछबि मुसकानी ❋ करी चतुरई इन पहिचानी
इन ते निधरक और न कोऊ ❋ कैसी बुद्धि रची इन दोऊ
ये दोऊ अति चतुर सयाने ❋ निजकर इन्हैं बिधाता जाने
और कहा इनको कोउ जाने ❋ मोसों नहीं परत पहिंचाने

सकुच छांड़ि अब इनहिं जनाऊं ❀ जान बूझ काहे निदराऊं
जो इन को मैं टोकत नाहीं ❀ जैहैं जीत मनहिं मन माहीं
ये चतुरई चले छवि दोऊ ❀ प्रगट करौं इनके गुण सोऊ
ऐसे बहुरि इनहिं नहिं पाऊं ❀ आज प्रगट कहि लाज लजाऊं

दो० कह राधे यह कौन है, संग सांवरी नारि।
कबहुं इन्हें देख्यों नहीं, अति सुन्दरि सुकुमारि॥

सो० को है इनको नाथ, कौन गोप की ये सुता।
भलो बन्यो है साथ, जैसी ये तैसी तुमहुं॥

मथुरा ते ये आजहिं आई ❀ है इन ते कछु प्रीति सगाई
एक दिना ललिता सँगमाहीं ❀ दधि वेचन हम गईं तहांहीं
उनहीं के सँग भई चिन्हारी ❀ तवहीं की पहिचान हमारी
वहै सनेह जानि कै आई ❀ ऐसी शील सुभाव सुहाई
मैं गृह तें इत आवन लागी ❀ येऊ सँग आईं अनुरागी
सुन राधा यह सहज सुहाई ❀ शील सनेह रूप अधिकाई
इनको ब्रजमें क्यों न बुलायो ❀ अपने निकटहिं आनि बसायो
कै बृषभानपुरा कै गोकुल ❀ राखहु इनहिं बुलाय सहितकुल
तुम हौ नवल नवल हैं येऊ ❀ दोऊ मिलि श्यामहि सुख देऊ
ऐसी है यह नारि सुहाई ❀ और नारि मन लेति चुराई
हमहूं को अब इनहिं मिलावो ❀ नीके इन के बदन दिखावो
हमहिं देखि सकुचत कत प्यारी ❀ हम सों घूंघुट करत कहारी

दो० ऐसीही चन्द्रावली, गह्यो श्याम कर जाय।
यहकहुं अबलौंनाहिंसुनी, तियसों तियसकुचाय॥

सो० आवहिं बदन उघारि, घूंघुट पट हातौ कियो।
मुखछबि रही निहारि, माने करि लोचन सुफल॥

बारहिं बार कहति मुसुकाई ❋ चितवत क्यों नहिं बदन उठाई
मथुरा में है वास तुम्हारो ❋ कहा नाम मुख बचन उचारो
कियो राधिका यह उपकारो ❋ दुर्लभ दर्शन भयो तिहारो
कछुइक मैं पहि चानति तुमको ❋ काहेको सकुचति हो हमको
कबहुं चिबुक गहि बदन उठावै ❋ कबहुं कपोल परस सुख पावै
कबहूं चुटकि कहति मुख फेरो ❋ नैन उठाइ नेकु इत हेरो
नैन नैन सों हरि नहिं जोरैं ❋ रहे लजाय भाव सों भोरैं
चंद्रावली देखि मुसकानी ❋ हँसि बोली राधा सों बानी
ऐसी सखी मिली ये तुमको ❋ तौ काहे न बिसारौ हमको
जबसों इनसे प्रीति लगाई ❋ बहुत भई तुमको चतुराई
अबलौं इनको कहां दुरायो ❋ हमसों कबहूं नाहिं जनायो
त्रिभुवन की सुखमा सबगुणनिधि ❋ एकहि इन्हैं बनाई है बिधि

दो० तुमहुं कुशल येहू कुशल, क्यों न प्रीति दृढ़ होय।
जाने हौ चले जाहु बन, आप स्वारथी दोय॥

सो० दंपति कियो बिचार, सुनि चंद्रावलि के बचन।
यासों नाहिं उबार, हरषि मिले उरलाय तब॥

चले कुंज गृह हरषि बिशाला ❋ उभय बाम बिच मदन गोपाला
बाम भाग प्यारी को लीनो ❋ दक्षिण भुजा सखीपर दीनो
बिच दामिनि बिच नवघन मानो ❋ रति समेत लखि मदन लजानो
कै धौं कञ्चन लता सुहाई ❋ ललिता माल बिटप लपटाई
गये कुंज बन घन छबि छाई ❋ सुमन पुंज अलिगुंज सुहाई
बरण बरण कुसमित तरु नाना ❋ करति कोकिला मंगल गाना
बहत समीर त्रिबिध सुखदाई ❋ पावन मंजुल भूमि सुहाई
लखि छबि पुंज कुंज अनुरागे ❋ सहचरि सहित युगल बड़भागे

नवदल कुसुम तुल्य कमनीया ❀ बैठे नवल रमण रमनीया
करत बिलास बिबिध मनमाने ❀ कोटि कोटि रति काम लजाने
शोभित गौर श्याम शुभ जोरी ❀ निरखति छबिहि सखी तृणतोरी
सने रसिक दोउ रसरिसकाई ❀ बसे निशा बन कुंज सुहाई

दो० तैसेइ बिपिन सुहावनो, तैसिय पवन सुगंध।
तैसिय निर्मल चाँदनी, तैस्वइ सुखद सुगंध॥

सो० तैस्वइ कुंज निवास, तैसोई यमुना पुलिन।
सकल सुखनकी रास, तैस्वइ रँगभीने युगल॥

बनहिं धाम सुख रैन बिहाई ❀ उठे प्रात दोउ छबि अधिकाई
बैठे युगल रंग रसभीने ❀ आलसयुत अंसन भुजदीने
अरसपरस दोउ छबिहि निहारैं ❀ रीझ परस्पर तन मन वारैं
अरुण नैन नखरेख सुहाई ❀ बिन गुण माल हृदय छबि छाई
लटपटि पाग रसपसी भौंहैं ❀ कुंडल झलक कपोलन सोहैं
प्रिया बदन छबि श्याम निहारत ❀ उरझी लट सुकुन निरवारत
आरस नैन सुरतिरस पागे ❀ नँदनंदन प्रियसँग निशि जागे
टूटे हार मरगजी सारी ❀ नख शिख सुन्दर पिय अरु प्यारी
चले कुंज ते युगल बिहारी ❀ ब्रजबासी सखि लखि बलिहारी
सुन्दर श्याम सुन्दरी श्यामा ❀ जीते सुन्दर रतिपति कामा
सुन्दर अवलोकनि मृदु बोलनि ❀ सुन्दर चाल डगमगी डोलनि
सब बिधि सुन्दर सुख निधि दोऊ ❀ सुन्दर उपमा को नहिं कोऊ

दो० अति बिचित्र नँदलाल की, लीला ललित रसाल।
जोसुखदुर्लभ शिवसनक, सोबिलसत ब्रजबाल॥

सो० गयेयुगलब्रजधाम, सखीसहितनिशिरसबिलासि।
बसत प्रिया उरश्याम, श्याम हृदय प्यारी सदा॥

अथ शृंगारभूषण बर्णन लीला ॥

बैठी भवन शृँगार किशोरी ❋ बहुरो अंग शृँगारत गोरी
मानहुं सबन देति पहिराये ❋ रतिरण जीत पिया सों आये
कटितट किंकिणि बसन नबीने ❋ बाजूबंद भुजन को दीने
कर कंकण उर हार सुहाये ❋ तरुवनि चारु श्रवण पहिराये
नकबेसरि अंजन दीनो ❋ बेंदी ललित भाल पर कीनो
रची मांग सम भाग सुहाई ❋ तामधि रेख सिंदूर बनाई
प्रभुसों बिमुख जानि कै कादर ❋ ति कच मनो किये निरादर
दियो बिहँसि अधरन को बीरा ❋ सन्मुख सहे प्रहार सधीरा
शोभित सदन शृँगार सुहाई ❋ श्री बृषभानु कुँवरि छबिछाई
नखशिख कुसुम बिशिख की सैना ❋ किये कान्ह बश पंकज नैना
शीशफूल शिर अति छबि छाजे ❋ मनहुँ मांगमणि प्रकट बिराजै
खुभी जराव फूल अरुणाई ❋ हरति प्रात रबिकी छबि छाई

दो० चंद्रबदनमृगशिशुनयन, भृकुटी कुटिलकलंक ।
अलकझलक छबिदेतिजनु, शोभितरजनीअंक ॥

सो० कुंदकली सम दाँत, तिल प्रसून नासा सुभग ।
जीव बंधुकी भाँत, अधर अनूपम चिबुक तिल ॥

लखि कलकंठ कपोत लजाहीं ❋ पीक लीक झलकति जेहिमाहीं
बाहु मृणाल लाल छबि छाये ❋ कोमल पाणि सरोज सुहाये
कुच युग चक्रबाक जनु नीके ❋ लसति रोमावलि तट तटनीके
त्रिबली तरल तरंग सुहाई ❋ अतिगत नाभि मनोहरताई
कृश कटि किंकिणि युत छबि छाई ❋ पृथु नितम्ब शोभा अधिकाई
रंभ खंभ युग जंघ निकाई ❋ पग नूपुर झनकार सुहाई
चाल बिलोकि कामगज लाजै ❋ मधुर मधुर धुनि पायँन बाजै

बरणौं को पद पंकज शोभा ❋ हरि मन भ्रमर करत जहँ लोभा
निगम नेति नित गावत जाको ❋ राधा वश कीनो है ताको
ज्यों चकोर चन्दा को आतुर ❋ त्यों नागरि वश गिरिधर चातुर
देखे बिन क्षण रह्यो न जाई ❋ सदा प्रेमवश त्रिभुवन राई
उझकि झरोखा झांके आई ❋ करत शृँगार प्रिया मनलाई

दो० अंग अंग भूषण बसन, रचि रचि सकल शृँगारि।
लै दर्पण देखति छबिहि, श्रीवृषभानुदुलारि॥

सो० दीठ झरोखा लाय, रहे श्याम इकटक निरखि।
उर आनन्द बढ़ाय, देखत प्यारी की छबिहि॥

इक कर दर्पण इक कर अँचरा ❋ पुनिपुनि दृगनि सँवारति कजरा
कबहुं शीश को फूल सँवारै ❋ कबहूं कुटिल अलक निरवारै
कबहूं आड़ रचति केसरिकी ❋ कबहूं छवि देखति बेसरिकी
कबहूं रचति सुमन सों बेणी ❋ कबहुं मांग मुक्तन की श्रेणी
कबहूं रिस करि भौंह सकोरै ❋ कबहूं नैन नैन सों जोरै
इकटक दर्पण ओर निहारै ❋ नेकु वदन इत उत नहिं टारै
निरखि आपनी छबि सुकुमारी ❋ रही विवश प्रतिबिम्ब निहारी
अति आनन्द भई मति भोरी ❋ विसरी सुरति देह की गोरी
कहति मनहिं मन अतिसकुचाई ❋ यह सुन्दरी कहाँ ते आई
करते मुकुर दूर नहिं टारै ❋ कछू रोष करि हृदय विचारै
कहूं श्याम देखैं जो याहीं ❋ तुरत होयँ याके वश माहीं
जो मोहन यासों अनुरागे ❋ कहा चलै मेरी या आगे

दो० यह आई किहि लोकतें, अति सुन्दर वरनारि।
ब्रजमें तौ ऐसी नहीं, कोऊ गोपकुमारि॥

सो० काऊ ल्यायो याहि, कै धौं आई आपही।

सो बैरी मम आहि, जो लाई याको ब्रजहि ॥
सनी कहूं इन हरि की शोभा ❋ आई है ताही के लोभा
जैसे सुन्दर कुँवर कन्हाई ❋ तैसी सुन्दर यह ब्रज आई
मनहीं मन पुनि पुनि पछिताई ❋ पूछति निज प्रतिबिंबहि आई
तू है कौन कहां ते आई ❋ यहां कौन तोको लै आई
नाम कहा है सुन्दरि तेरो ❋ तुम जहँ रहति कौन सो खेरो
कहौ न मुखते बचन सुनाई ❋ मति सकुचौ कहि सौंह दिवाई
हम तुम दिननि एक हैं गोरी ❋ तू कछु रूप अधिक नहिं थोरी
इहां अकेली तू क्यों आई ❋ काहू संग और नहिं लाई
सुन्यो नहीं अन्याय इहांको ❋ ऐसे कहि डरपावति ताको
करत कान्ह ब्रजमें बरजोरी ❋ लेत तियन के भूषण छोरी
जो अपनी पति चहति सयानी ❋ तौ घर जाहु मानि मम बानी
लेहु बसन ते अंग छिपाई ❋ देखैं नहिं कहुं श्याम कन्हाई

दो० तेरे हित की कहति हौं, मान चहै मति मान ।
आई है ब्रज आजही, तू उनको कह जान ॥
सो० ऐसो ढीठ न आन, त्रिभुवन में कोऊ कहूं ।
जैसो ब्रजमें कान्ह, मनभायो सबसों करत ॥

नेक नहीं काहू डर मानै ❋ मथुरापति जेहि रहत सकानै
उनके गुण नीके मैं जानौं ❋ तोसों अपनी दशा बखानौं
हम मथुरा दधि बेचन जाहीं ❋ घेरि लई उन मगके माहीं
गोरस लियो छोरि बरिआई ❋ हार तोरि दीने बगराई
हम अनेक तू एक किशोरी ❋ तातें जाहु बेगि गृह गोरी
सुनि सुनि श्याम प्रियाकी बानी ❋ मनहीं मन बिहँसत सुखमानी
प्यारी चकित रूप निज देखी ❋ श्याम चकित पुनि बचनबिशेखी

जान दूसरी तिय प्रियपाहीं ❋ जात निकट मोहन सकुचाहीं
पुनि पुनि दृग ठहराय निहारै ❋ बोलत नाहिं उर हर्ष बिचारै
देखत मुकुर प्रिया करमाहीं ❋ अंकम लेवे को ललचाहीं
प्यारी के रस बश गिरिधारी ❋ लेत दृगन छवि भरि भरि भारी
सुनि सुनि बचन हृदय सुख पावै ❋ पुलकि अंग आनन्द बढ़ावै

छं० बचनसुनि आनन्द अतिमन निरखि छवि सुखपावहीं ।
धनि धन्य राधारूप धनि हरि नैन इकटक लावहीं ॥
धन्य वह प्रतिबिम्ब धनि छवि धन्य मुकुर निहारहीं ।
धन्य भ्रम धनि प्रेम पूरण धन्य तन मन वारहीं ॥
धन्य सुख जेहि लागि राधा कान्ह ब्रज तन धारहीं ।
रमा सहित बिलास नित बैकुण्ठ बास बिसारहीं ॥
मिलन बिछुरन सुखबिरहरस क्षणहिं प्रति उपजावहीं ।
ब्रजबिलास हुलास हरिको नितनयो श्रुति गावहीं ॥

दो० नवल प्रीति नितनवलसुख, नितनवरूपरसाल ।
नितनवरस बिलसत नवल, श्रीराधा नँदलाल ॥

सो० कहतरसीलीबात, ज्यों ज्यों तिय प्रतिबिम्बसों ।
त्यों त्यों सुनि हरषात, ब्रजबासी प्रभु रसभरे ॥

प्यारी नित प्रतिबिम्ब निहारै ❋ भई बिबश नहिं सुरति सँवारै
बार बार पूछति ता पाहीं ❋ क्यों सुन्दरि तू बोलति नाहीं
हँसे हँसति हेरति है हेरे ❋ फेरति भौंह भौंह के फेरे
करति परस्पर हमसों हाँसी ❋ अपनो नाम कहति प्रकासी
परम चतुर तुम को मैं जानी ❋ हमसों तुम कछु करत सयानी
अतिही सुन्दर रूप निहारो ❋ देखि होत मन मुदित हमारो
शोभित बेसरि नाक सुहाई ❋ अति अनूप अधरन अरुणाई

दशन दमक दामिनी लजावति ❋ चिबुकनीलकणअतिछबिपावति
काहे ऐसे मुख की बानी ❋ हमैं सुनावति नाहिं सयानी
कहो बचन काकी हौ घरनी ❋ काकी सुता सहज मनहरनी
कै रिस कै रिस कै इत हेरति ❋ मेरे सम्मुख लोचन जोरति
कछु रिसि कछु घरको मनमाहीं ❋ धीर धरति नागरि जिय नाहीं

दो० यह तो बोलति है नहीं, अति गरबीली बाम।
देखतही यहि रीझिहैं, छैल छबीले श्याम॥

सो० भई सवति यह आय, अब हरि याके बश भये।
यों बियोग उपजाय, उपजायो उर बिरहदुख॥

रही दीठ दरपनहि लगाई ❋ टरति नहीं छबिकी अधिकाई
उरमें भयो बिरह दुख भारी ❋ देखि दशा रीझे गिरिधारी
कबहुँ चलति तिय ढिगहि कन्हाई ❋ कबहुँ रहति लखि छबिहि भुलाई
औचक पाछे ते सुखदाई ❋ मूंदे नयन कमलकर आई
चौंकि चकित भइ मनमें भारी ❋ जानों आये छैल बिहारी
डरपति रही जो मनमें ताको ❋ मिले आय सुंदर हरि वाको
तब कछु सुरति भई मनमाहीं ❋ वह तो है मेरी परछाहीं
सकुचि दुराव करति पियपाहीं ❋ मनहीं मन दोऊ मुसकाहीं
जानि बूझिके पिय घनश्यामहिं ❋ लेति बिपुल सखियन के नामहिं
श्याम प्रिया लोचन झरिलायो ❋ अतिहित बेंदी उर परसायो
शोभा कहा कहै कबि कोऊ ❋ मेचकमणि सुमेरु अँग दोऊ
ता बिच मनहुँ पन्नगी आई ❋ रही कनक गिरिसों लपटाई

दो० बेष्टित भुज मूंदे करन, दीरघ खंजन नैन।
मनोभखलीनोधायअहि, नहिं समानफणिऐन॥

सो० करति सखिन सों रोष, मनहरषत खीजत बदन।

भरी चतुरई कोष, लूटति मन कामनफलन ॥
अति आनंद भरे दोउ राजैं ❋ उपमा कहत कवीश्वर लाजैं
मरकत मणि कुंदन सँग जोरी ❋ किधौं लिये घन तड़ित अँकोरी
कै शोभा सुख तन धरि सोहैं ❋ व्रजवासी भक्तन मन मोहैं
कोमल कर तियनयन कन्हाई ❋ रहे मूँदि छवि वरणि न जाई
अतिहि विशाल चपल अनियारे ❋ नहिं समात प्रियपाणि पसारे
खिन खोलत खिनढकत बिहारी ❋ मुखरिस मन मुसकात पियारी
ज्यों मणिधर मणि प्रकट कन्हाई ❋ फिरि फिरि फणतर धरत छिपाई
श्याम उँगरियन अंतर माहीं ❋ चंचल नयन दुरे दरशाहीं
मरकत मणि पिंजरा में मानों ❋ तरफरात द्वि खंजन जानों
कर कपोलढिग तरल तरोना ❋ शोभा सहज सुभाय करोना
मनो युगकमलमिलनशशिआये ❋ विवर विवंग सहायक पाये
कुँवरि नागरी नागर नायक ❋ उपमा काहि कहौं को लायक

दो० अपने कर पिय कर पकरि, लीने नैन छुड़ाय।
रवि शशिचार सरोजजनु, द्वैचकोर मिलिजाँय॥

सो० कीन्हे सम्मुखआन, पाणि पकरिकै लाड़िली।
भले भले जू कान, मैं सखियन धोखे रही॥

भले आय औचक विनजाने ❋ मूँदिरहे दृग अतिहि पराने
कैसे दौरि पैठि गृह आये ❋ नेकहु आवत जानि न पाये
तुम हौ पिय मनहरन कन्हाई ❋ तुम्हरी गति कछु जानि न जाई
तब हरि हरषि प्रिया उर लाई ❋ मुकुर कथा सब भाषि सुनाई
सुनि नागरि हरि तन मुसकानी ❋ चितै नैन कछु मनहिं लजानी
मैं तो अपने मन्दिर माहीं ❋ सहज लखत दरपन में छाहीं
तुम्हरी महिमा पिय को जाने ❋ यक सुन्दर अरु परम सयाने

हँसत चले जब कुँवर कन्हाई ❀ रसिक पुरंदर जन सुखदाई
हरषित गये सदन नँदलाला ❀ इत नागरि उर हर्ष बिशाला
जब प्रतिबिंब सुरति जिय आवै ❀ समुझि सुदशा सकुच तब पावै
तिहि अंतर सँग सखिन लिवाई ❀ चंद्रावलि राधा ढिग आई
लखि प्यारी आदर अति कीनो ❀ तुरत सबन को बैठक दीनो

दो० सादर सनमानी सबै, दिये हरषि कर पान।
पियसँग सुखचाहतिकरन, रहित सकुच पुनि मान॥

सो० गदगद मुख गर बैन, बार बार भाषति हरषि।
झलक प्रेम जल नैन, पुलकि गात पूरे सबै॥

कहति सखी सुनु राधा गोरी ❀ आज कहा अति हर्ष किशोरी
हम तेरे नितही प्रति आवैं ❀ इतनो आदर कबहुँ न पावैं
पायो आज पखो कछु तैं री ❀ कैधौं मिले श्याम कहुँ हैं री
उमग्यो प्रेम हरष उरमाहीं ❀ हमैं सुनावति है क्यों नाहीं
सुनि सखियन के बचन सयानी ❀ बोली प्रिया हरषि कै बानी
आये आज सखी हरि मेरे ❀ कहे जात नहिं गुण उनकेरे
जैसी भांति मिले हरि हमसों ❀ सो हित कहौं सुनहु सखि तुमसों
मैं अपने सब अंग सिंगारति ❀ लिये मुकुर कर बदन निहारति
पाछे आनि भये हरि ठाढ़े ❀ चतुर शिरोमणि छबि सों बाढ़े
भाव एक भोरे मैं साजा ❀ ताहि कहत सखि लागत लाजा
लखि अपनो प्रतिबिंब भुलानी ❀ जानि और तिय मनहिं डरानी
पाछे तें यह जानि कन्हाई ❀ मूँदे नयन औचकी आई

दो० तबहीं चौंकि चकृत भई, मैं समझी निजभोर।
लगी देन उरहन तुम्हैं, भई फिरति हौ चोर॥

सो० सुनि राधामुख बात, हिय हरषीं सब गोपिका।
पुलकि प्रफुल्लितगात, कहति धन्य तू लाड़िली॥

श्यामसंग सुख लूटति है री ❋ अब उनसों नहिं छूटति तें री
श्याम भये तेरे अनुरागी ❋ भली भई हरि सँग रसपागी
अब हरि तोते अति रति मानै ❋ तेरो अंतर हित पहिचानै
आवत जात रहत घर तेरे ❋ क्षण नहिं रहत तोहिं बिन हेरे
चतुर रूप गुण तुम दोउ नीके ❋ परम भावते हो सबहीके
आज लाल मेरे गृह आये ❋ बड़े भाग्य मोहित करि पाये
देखि दरश नैनन सुख पायो ❋ करौं काज आनंद वधायो
यह उपकार तुम्हारो आली ❋ मोहिं मनाय दिये बनमाली
तुरत लाय हरि मोहिं मिलाये ❋ मैं अपने अपराध क्षमाये
नंदनँदन पिय नैन समाये ❋ भावत नहीं नेक बिसराये
सुनि यह राधा की रस बानी ❋ देति अशीश सखी हरषानी
नँदनंदन बृषभान किशोरी ❋ चिरजीवहु सुन्दर यह जोरी

दो० प्रेम भरे छबि सों भरे, भरे अनन्द हुलास।
युगल माधुरी रस भरे, ब्रजमें करत बिलास॥

सो० करत अनेक बिहार, रूपरसिक गुणनिधि युगल।
राधा नन्दकुमार, ब्रजबासी जन सुख करन॥

अथ नैनअनुरागलीला॥

हरि अनुराग भरीं ब्रजनारी ❋ लोक सकुच कुल कानि निवारी
सास ननँद गारी दै हारी ❋ सुनत नहीं कोउ कहत कहारी
सुत पति नेह जगत यह छोरयो ❋ ब्रज तरुणिन तिनका सम तोरयो
बेद लोक मरयादा डारी ❋ ज्यों अहि कंचुलि फिरि न निहारी

ज्यों जलधार भरै तृण नाहीं ❋ जैसे नदी समुद्रहि जाहीं
जैसे सुभट खेत चढ़ि धावै ❋ जैसे सती बहुरि नहिं आवै
जैसेहि भजी नन्द नन्दन को ❋ नेकहुँ डरी नहीं गृहजन को
तैसेहिं प्रेमबिबश गिरिधारी ❋ ज्यों गज पंक न सकहिं निहारी
ब्रजबनिता मन नहिं बिसरावैं ❋ क्षणप्रति तिन्हैं देखि सुख पावैं
आये पुनि तेहि ओर बिहारी ❋ सखिन सहित बैठी जहँ प्यारी
भीर देखि सकुचे मनमाहीं ❋ ताते निकट गये हरि नाहीं
ताही मग निकसे सुखदाई ❋ सुन्दर नटवर रूप दिखाई

दो० शीश मुकुट कुंडल श्रवण, उर चटकीली माल।
पीतबसन कटिकाछनी, तनद्युति श्याम तमाल॥

सो० चलत लटकनी चाल, बंकबिलोकनिमृदु हँसनि।
अंग अंग छबिजाल, रसिक नवल नागरिछयल॥

औचक देखि श्याम ब्रजनारी ❋ भई चकित तन दशा बिसारी
जात चले ब्रजखोरि अकेले ❋ कोटि काम की छबि पर हेले
पग द्वै चलत बहुरि फिरि हेरैं ❋ कमल सनाल कमल कर फेरैं
मृगमद तिलक अलक घुँघुरारी ❋ तन बन धातु चित्र रुचि कारी
मृदु मुसकाय मरोरत भौंहैं ❋ नयन सैन दै दै मन मोहैं
निरखत ब्रज युवती बिथकानी ❋ दुखसुख व्याकुल मन अकुलानी
गये कल्प तरु छाँह कन्हाई ❋ रूप ठगौरी तियन लगाई
लागीं कहन परस्पर बानी ❋ लोचन मन अनुराग कहानी
सुनहु सखी यह नन्ददुलारो ❋ हठ करि हरि मन लेत हमारो
क्षण क्षण प्रति छबि और बनावै ❋ शोभा कछू कहत नहिं आवै
मन तो इनहीं हाथ बिकानो ❋ हम सखि यह कछु भेद न जानो
नैनन साट करी नैनन सों ❋ कियो मोल सैनन बैनन सों

दो॰ बेचि दिये मन आपुही, मृदु मुसकन धन पाय।
परी रही हौं बीचही, नैना बड़ी बलाय॥
सो॰ भयो श्याम को जाय, अब रुचिमानी मन तहाँ।
मैं पचिहारि बुलाय, फेरि नहीं इतको फिरे॥

अब मन हित हरिही सों कीनों ❋ भेद हमारो सब कहि दीनों
मन तो गयो नैन हैं मेरे ❋ तिनहूं बोलि कियो हरि चेरे
अब ये रहत वहाँ सबकाई ❋ सोई करत जु कहत कन्हाई
जितहि चलत वे तितही जाहीं ❋ हरि के सम्मुख रहत सदाहीं
भये वे जाय गुलाम श्याम के ❋ रहे न काहू और काम के
ताको कछु अपमान न जानो ❋ फजे फिरत अधिक सुख मानो
जग उपहास सुनत बहुतेरो ❋ लाज फाँस दीनो सब डेरो
आरज पथ मर्याद बड़ाई ❋ लोक वेद कुलकानि गँवाई
मैं समुझाय रही वहुतेरो ❋ नेकहु कह्यो सुनत नहिं मेरो
ललित त्रिभंगी छबि पर अटके ❋ मोसों तोरि सगाई सटके
हरि अब छोड़त तिनको नाहीं ❋ बैठे रहत आप तिन माहीं
राखे बाँधि अलक की डोरी ❋ भाज जाहिं माति कबहुँ कहोरी

दो॰ अब ये लोचन श्याम के, सखी हमारे नाहिं।
बसे श्यामरस रूप ये, श्याम बसे इन माहिं॥
सो॰ कहा करैं सखि श्याम, नैननही को दोष यह।
हठ करि भये गुलाम, तनक मंद मुसकान पर॥

बोली अपर एक ब्रजनारी ❋ सखि लोचन लोभी अति भारी
जबहिं लखत कमनीय कन्हाई ❋ तबहीं सँग लागत उठि धाई
मेरो हटक्यो नेकु न माने ❋ लखत जाय वह छबि ललचाने
ज्यों मृग छूटत फन्द बधिक तें ❋ भाग चलत उड़ि बेग अधिक तें

पाछे फेरि न फिरत डराई ❋ जाय सघन बन माँझ समाई
त्यों दृग भोते छूटि पराने ❋ हरि छबि बिन घन जाय समाने
अब वे इतको नाहिं निहारैं ❋ वह छबि निरखि हरषि उर धारैं
यदपि सुधा छबि पियत अघाई ❋ तदपि तृप्ति नाहिं मानत राई
भई सखी नयनन गति ऐसी ❋ भरे भवन तस्कर की जैसी
देखि श्याम छबि धन अधिकाई ❋ अति लालची रहे ललचाई
लेत न बनै तजौ नहिं जाई ❋ चकित भये निज सुधि बिसराई
रहे बिचारहि माँझ भुलाने ❋ नहिं कछु लियो न त्याग पराने

दो० नैन चोर हरिमुखसदन, छबिधन भाँति अनेक।
तजत बनत नहिं एकहू, लेत बनत नहिं एक॥

सो० सखि ये नैना चोर, हरिमुख छबि चोरन गये।
बाँधे अलकनि डोर, हरि की चितवन पाहरू॥

भली भई हरि इनहिं बँधायो ❋ निदरि गयो तैसो फल पायो
ये नहिं मानत कह्यो हमारो ❋ सखि इनहीं सब काज बिगारो
कहति और यक गोप कुमारी ❋ सखि ये नयन किधौं बटपारी
कपट नेह हम सों करि भारी ❋ करी हमैं गुरुजनते न्यारी
श्याम दरश लाडू कर दीनो ❋ हमैं आपने बश करि लीनो
प्रेम ठगोरी शिरपर छाई ❋ फिरत संगही संग लगाई
बिरह फाँस गर डारि हमारे ❋ करी बिकल नहिं अंग सँभारे
कुल लज्जा सम्पदा हमारी ❋ सो इन लूट लई सखि सारी
कहरति परी मोह बनमाहीं ❋ लगन गाँठ दृग छूटत नाहीं
क्योंहूं नेह जीव नहिं जाई ❋ सुमिरि नयन गुण मन पछिताई
कासों कहैं सखी यह बाता ❋ भये नयन हमको दुखदाता
हमको बिरह दुसह दुख देहीं ❋ आप सदा दरशन सुख लेहीं

दो० यहिविधिनिदरति दृगनको, भरी प्रेम ब्रजनारि।
होतिमगनसुख बिरहरस, नैननिश्यामनिहारि॥
सो० यही भजन यहि ध्यान, श्यामरूपरसगुणकथा।
नहिंजानतिकछु आन, निशिदिनब्रजकीसुंदरी॥

कोऊ कहति नयन खग मेरे ❋ फँसे अलक फन्दा हरि केरे
छबिकण चारा लखि ललचाने ❋ फन्द गये चितवन लपटाने
हरि छबि अटकि परे दृग जाई ❋ अतिहि बिलाप भये बिवसाई
रहत दीन सनमुख लटकाये ❋ दुख सुख समुझ सबै बिसराये
कहवावत हैं बड़े सयाने ❋ वह छबि लेन गये अतुराने
सोतो कछू हाथ नहिं आयो ❋ आपन यों इन जाय बँधायो
ऐसे को त्रिभुवन जो जाई ❋ आवै सखी समुद्र अथाई
हार जीत ये नयन न जानैं ❋ मानपमान कछू नहिं मानैं
परे रहत शोभा के द्वारे ❋ नेकहुँ लाज नहीं उर धारे
जाकी बानि परी सखि जैसी ❋ धरी टेक उर में तिन तैसी
इत अँखियन यह टेक परी री ❋ लुब्ध तज्यो कमलन भ्रमरी री
जों शुक नलिनी के बश जाई ❋ जिमि कपि मुठी छोड़ि नहिंजाई

दो० लोभैबश जिमि मीन नृप, आपबँधावत आय।
रूप लालची नैन तिमि, भये श्यामबश जाय॥
सो० सकै न कोऊ छिंधु, लोक लाज कुलकान गिर।
श्याम सलोने सिंधु, मिले त्रिबेनी ह्वै नयन॥

सखी नयन अब हरि सँग लागे ❋ मन बच क्रम उनसे अनुरागे
सन्मुख रहत सदा सुख पावें ❋ भूल गये मग दहने बायें
ज्यों मणि देखि उरग सुख पावैं ❋ ज्यों चकोर चंदहिं लटकावैं
मुदित रंक जैसे धन पाई ❋ वैसी इनकी गति अवसाई

अब ये नयन फिरत नहिं फेरे ❀ किये सखी हम यतन घनेरे
देखे सुभग श्याम इन जबतें ❀ निठुर भये हम सों ये तबतें
जब मैं घूंघुट पटहि घेरी ❀ तब ये शिशु की आन भेरी
हरि अँग संग लागि उठि धाये ❀ मनहुँ उनहिं प्रतिपाल कराये
मृदु मुसकन रस पाय मिठाई ❀ क्षणही में मति गति बिसराई
अति हठ परे न नेक बिचारैं ❀ निमिष रुदन बल धीर न धारैं
लाज लटक उरमें पाये ❀ वे रखि एकहु डर न डराये
फिरे न मैं बहु भांति बुलाये ❀ गये यतन हरिके फुसलाये

दो० अब हम तलफत उन बिना, मरत यही अफसोस।
ग्रथ खोटौ सखि आपनो, कहा पारखिहिं दोष॥
सो० प्रेम बिबश त्रियबृंद, ऐसे दोषति दृगन को।
तबहिं छैल ब्रजचंद, टेरि सुनाई बांसुरी॥

अथ मुरली लीला॥

कृष्ण प्रेम रस पूरण तातें ❀ करत हुतीं नैनन की बातें
परी श्रवण इहि अंतर जाई ❀ हरि की मुरली टेर सुनाई
भई चकृत सुनि सब ब्रज गोरी ❀ परी आय मनो शीश ठगोरी
भूलि गई सुधि अँखियन केरी ❀ ह्वै गइ मानो चित्र लिखेरी
दुख सुख मनको बरणि न जाई ❀ इकटक रहीं पलक बिसराई
देह दशा सब तुरत भुलानी ❀ स्वेद चल्यो बहि मानहुं पानी
भईं बिबश मति की गति भूलीं ❀ प्रेमहिं डोर गोपिका भूलीं
कबहूं सुधि कबहूं सुधि नाहीं ❀ कबहूं मुरली नाद सुनाहीं
कछुक सँभारि धीर उर धारी ❀ कहति परस्पर गोप कुमारी
अँखियन ते मुरली हरि प्यारी ❀ है बैरिन यह सवति हमारी
ब्रज में धौं कितते यह आई ❀ भई कठिन हम को दुखदाई

आवत ही ऐसे ढँग जाके ❁ भये श्याम तुरतहिं वश ताके

दो० जा रस को हम तप कियो, षट ऋतु सब ब्रजबाम।
सो रस मुरली लेति अब, सहजहि वश करि श्याम॥

सो० गावत मीठी तान, मुरली सँग अधरन धरे।
अब जाके बश कान, औरन बिबश करी वही॥

ऐसी त्रिभुवन कौन सयानी ❁ जो न मोह सुनि याकी बानी
यह तो भली नहीं ब्रज आई ❁ अरी सवति हरिके मन भाई
अब याके बश गिरिवरधारी ❁ अधरनते करते नहिं न्यारी
याही के अब रंग रँगे री ❁ मधुर बचन सुनि रीझ गये री
कर पल्लवन ताहि बैठाई ❁ रहत ग्रीव तापर लटकाई
बारहि बार अधर रस प्यावै ❁ तासों अति अनुराग जनावै
देखहु री याकी अधिकाई ❁ पियत सुधा रस हमहिं दिखाई
परी रहत बनमें धौं कैसी ❁ भई ढीठ आवतही ऐसी
दिनहीं दिन अधिकात जात री ❁ सखी नहीं यह भली बात री
आवतही हमरो धन लीनो ❁ चाहत और कहा धौं कीनो
मैं जो कहति सुनो री गोरी ❁ सजग रहो सब नवलकिशोरी
मुरली दूरि कराये बनि है ❁ कछू दिननमें हमहिं न गनिहै

दो० फिरि हैं याके संग लगि, लोकलाज गृह त्यागि।
जब जब जहँ यह बाजिहै, मोहनके मुहँ लागि॥

सो० करिहै नाना रंग, यह जानत टोना कछू।
या मुरली के संग, देखहु हरि कैसे भये॥

यह सुनि कहति एक ब्रजनारी ❁ सखी बात तू कहति कहा री
अब यह दूरि होति है कैसे ❁ जाके बश नँदनन्दन ऐसे
एक पायँ ठाढ़े ता आगे ❁ रहत त्रिभंग अंग अनुरागे

अधर सेज पर शयन कराई ❋ कर पल्लवन पलोटत पाई
कबहुंक मिल गावत हैं तासों ❋ होत बिबश पुहुमी सब जासों
मुरली अति मोहन को भावे ❋ ताके गुण सखीन को पावै
जानत राग रागिनी जेते ❋ हरि सँग मिलि गावति हैं तेते
नाना बिधि की गति न बजावै ❋ तान तरंग अमित उपजावै
जैसेही रीझत मनमोहन ❋ तैसिय भांति रिझावति गोहन
रहति सदा मुखही सों लागी ❋ अधर पियूष स्वाद रस पागी
मधुर मधुर कल बचन सुनावै ❋ पुनि पुनि हरिके मनहिं चुरावै
ऐसो को अब हरिके करते ❋ दूरि करै याको निज बरते

दो० अब मुरली छूटै नहीं, याके बश भये श्याम।
प्रकट कियो सब जगतमें, मुरलीधर निजनाम ॥

सो० हरिको करि बशमाहिं, मुरली लूटै अधररस।
उर डर मानति नाहिं, हम सबतें बोलति निठुर ॥

निठुर बचन अब हमहिं सुनावै ❋ हरिको मन हम ते उचटावै
आरज पथ कुलकानि छुड़ावै ❋ हम सबहिनको निलज करावै
ऐसे ढँग मुरली के आली ❋ हम ते निठुर किये बनमाली
यह तो निठुर काठकी जाई ❋ प्रकट किये अपने गुण आई
अपनोई स्वारथ यह जानै ❋ कपट राग हरिके सँग गानै
मुरली निठुर किये बनवारी ❋ मुरली ते हरि हमन बिसारी
बनकी ब्याध कहा यह आई ❋ ऐसे कहि कहि तिय पछिताई
कहा भयो मोहन मुख लागी ❋ अपनी प्रकृति नहीं इन त्यागी
एक सखी बूझति भइ ऐसे ❋ मुरली प्रकट भई यह कैसे
कहां रहत काकी है जाई ❋ कौन जाति कैसे यह आई
मात पिता हैं याके कैसे ❋ जैसी यह तेऊ धौं ऐसे

बोली अरु इक तिया सयानी ❀ अबलौं तुम यह बात न जानी

दो॰ सखितुमअबलौं नाहिं सुन्यो, मुरलीको कुलधर्म।
सुनो सुनाऊँ मैं तुम्हैं, याको जातरु कर्म॥

सो॰ तुमसों कहौं बखान, मैं जानति याके गुणन।
सुनि सुख पैहौ कान, या मुरलीकी कुल कथा॥

बन में रहति बांस कुल जाई ❀ यह तो याकी जाति सुहाई
जलधर पिता धरणि है माता ❀ तिनके गुणन करौं बिख्याता
बनहू ते तिनको घर न्यारो ❀ निपटहिं जहां उजाड़ अपारो
गुणन एक ते एक उजागरि ❀ मात पिता अरु मुरली नागरि
पर अकाज बिन और न जानै ❀ ये ही इनके कुलहि बखानै
ना जानिये कवन फल आली ❀ कृपा करी यापर बनमाली
सुनहु सखी याके कुल धर्मा ❀ प्रथम कहौं मेघन के कर्मा
वे बर्षत जल सब जग माहीं ❀ गिरि बन सर सरिता सब ठाहीं
चातक सदा रहत करि आसा ❀ एक बूंद को मरत पियासा
धरणी सबही को उपजावै ❀ आपन सदा कुमारि कहावै
उपजत पुनि बिनशत ताही में ❀ सो कछु छोह नहीं वाही में
ता कुल सुता मुरलिका जानो ❀ अब आगे गुण प्रकट बखानो

दो॰ तनहीं ते प्रकटत अनल, ऐसी याकी झार।
प्रकट भई जा बांस में, करति जारि तेहि छार॥

सो॰ ऐसे गुणकी आहि, यह मुरली सखि बांसकी।
आई निजकुल दाहि, और कौन याते निठुर॥

याकी जाति श्याम नहिं जानी ❀ बिन जाने कीनी पटरानी
कहिये चलो श्याम सों जाई ❀ सुनत तजैंगे कुँवर कन्हाई
सखी कहा यह बात बखानो ❀ श्यामहिं कहा भलो तुम जानो

निजकुल जारति बिलम न लाई ❋ ह्वै है तासों कौन भलाई
जाको हम षट ऋतु तप कीनो ❋ सो फल तुरत मुरलि यह दीनो
जे सन्मुख ते बिमुख कहावैं ❋ बिमुख तुरत उत्तम फल पावैं
घर के बन बनके घर कीन्हे ❋ कपटी परम श्याम को चीन्हे
एक अंग की प्रीति हमारी ❋ वे कपटी बहु तरुणि बिहारी
ज्यों चकोर चंदा हित मानै ❋ चंद्र नहीं नेकहु उर आनै
जल के तीर मीन तन त्यागै ❋ जलको तनक दया नहिं लागै
ज्यों पतंग उर ज्योति जरै री ❋ ज्योति नहीं कछु कृपा करै री
चातक एक मेघ को जानै ❋ वह कछु ताकी प्रीति न मानै

दो० इनसबहिन ते हरि निठुर, तैसिय मिली सहाय।
अब मुरली अरु श्याम की, जोरी बनी बनाय॥

सो० ये अहीर वह बैन, काहे न प्रीति बढ़ाव हीं।
दुहुअन को मन ऐन, जैसे वे तैसी वहू॥

मुरली ने हरि को पहिचान्यों ❋ हरि को मन मुरली सों मान्यों
निठुर निठुर मिलि बात बनावैं ❋ याही के बल धेनु चरावैं
वाही की लकुटी कर धारी ❋ वाही की बंशी अति प्यारी
हम सों बैर सदा हरि कीनो ❋ दधि लै मारग जान न दीनो
पुनि भेदहि मन हर्यो हमारो ❋ कीनो कुल कुटुम्ब ते न्यारो
बहुरि बोलि अँखियन को लीनी ❋ तापर सवति मुरलिया कीनी
सुनि सजनी बिन काज जरौंरी ❋ कर्म करै सो कोउ न करौंरी
यह महिमा कर्त्ता सब करई ❋ कौने बिधि धौं कापर परई
हम तप करि इतनो पचिहारी ❋ सो घर कुल ते भई नियारी
बन की घास इतो सुख पावै ❋ श्याम अधर शिरछत्र धरावै
भये नृपति हरि मुरली रानी ❋ और नारि हरि को न सुहानी

बनते त्याय सुहागिनि कीन्हीं ❋ जाति पांति कुल कछू न चीन्हीं
दो॰ तप तीरथ जो पूरबहि, कठिन किये हरि हेत ।
अब मुरली ता कष्ट को, बैठि अधर फल लेत ॥
सो॰ मेटति पिछलो दाग, जो तप करि तायो तनहिं ।
धनि धनि मुरली भाग, अबगर जति अधर न चढ़ी ॥
मुरली कौन सुकृत फल पायो ❋ सब कलंक हरि परसि गँवायो
तन कठोर मन जड़ रसहीनी ❋ अंतर सूनो सार विहीनी
लघुता अंग न कछु गरुवाई ❋ बांस वंश कछु नाहिं निकाई
छिद्र विशाल बिपुल तन छाये ❋ हरि हि परस सब भये सुहाये
विधिते प्रबल भई यह मुरली ❋ हरि मुख कमल बरासन जुरली
चारु बदन विधि श्रुति मति भाखे ❋ नीति सहित जड़ चेतन राखे
आठ बदन मुरली कहि नादा ❋ उलटिदई विधि की मर्यादा
जड़न चेत चेतन जड़ कीन्हे ❋ थिर चर करि चर थिर करि दीन्हे
एक नारि श्रीपति सिखरायो ❋ तब ते ज्ञान विधाता पायो
वाको तो नँदसुवन कन्हाई ❋ लगे रहत हैं कान सदाई
याते को अरु प्रबल प्रवीना ❋ कियो सकल जग निज आधीना
कहिये काहि और को ऐसी ❋ भई श्याम सँग मुरली जैसी
दो॰ अबसुरनरमुनिसूरशशि, खग मृग सलिल समीर ।
या मुरली के वश सबै, धुनि सुनि धरत न धीर ॥
सो॰ रही विश्वबर जीति, मोहन मुख लगि बांसुरी ।
मेटि सकल श्रुति नीति, रीति चलावति आपनी ॥
सखि मुरली को दोष न देहौं ❋ करि विचार अपने मन लेहौं
हरि हित इन श्रम कीनो जोई ❋ सो श्रम और कौन पै होई
जो अकुलीन तऊ बड़ भागी ❋ कियो कठिन व्रत हरिहित लागी

जब अति दृढ़ याको हरि जान्यो ❀ तब बन भीतर ते गृह आन्यो
जब याकी करतूति सुनौगी ❀ तब धनि धनि करि याहि गनौगी
जनमहिं ते कीनी मति गाढ़ी ❀ बन में रही एक पग ठाढ़ी
शीत उष्ण वर्षा सह लीनी ❀ नेकहु मनसा मलिन न कीनी
कसकी नहीं नेक जब काटी ❀ पत्र मूल शाखा जब छांटी
राखी डारि घाम में आनी ❀ शोच शोच सब देह सुखानी
मुख्यो न मन तन अंग दगाये ❀ विंक बेह अँग अँग करवाये
ताय सुलाख परखि हर लीनो ❀ तब मुरली पटरानी कीनी
मुरली सही इती कठिनाई ❀ तब पाई ऐसी ठकुराई

दो० मुरली तपफल भोगवै, वृथा करत तुम रार।
निजगुणरिझयेश्यामउन,गुणियनगुणीपियार॥
सो० तुमते यह नहिं होय, जो करनी मुरली करी।
ताकीसम नहिं कोय, अतिश्रमकरिहरिबशकरे॥

परम पुनीत प्रीति जब जानी ❀ तब मुरली हरिके मनमानी
देखहु री याकी अधिकाई ❀ कहँ लगि याकी करहिं बड़ाई
जबहीं श्याम अधरको परसैं ❀ तब अति हरषि नादरस बरसैं
तान तरंग रंग उपजावैं ❀ अति आनँद सब जगत जनावैं
जियत श्याम अधरामृत पाई ❀ छूटत मौन रहत मुरझाई
क्यों नहिं श्याम करैं हित ताको ❀ अधरामृत जीवन है जाको
मुरली जो हरिहित तप कीनो ❀ परम चतुर पूरण तप लीनो
तबलगि हरि को नहिं पतियानी ❀ सहे कष्ट बोली नहिं बानी
जबलगि जीवन कर नहिं पायो ❀ अधरामृत रस मन को भायो
जब हरिसों बांछित फल पायो ❀ तब सब पर अधिकार जनायो
या सम और चतुर को आली ❀ जिन बश किये श्याम बन माली

क्यों नहिं त्रिभुवन को मन मोहै ❋ जाके वश पति त्रिभुवन कोहै

दो० मुरली की सरि मत करौ, कह्यो हमारो मान।
धनि धनि ताहि बखानिहैं, सुनि ताकोयशकान॥

सो० अधरामृत करि पान, मौन भई अब मुरलिका।
तिहुं पुर होत बखान, शारदादि यश गावहीं॥

हमहूं सब मिलि कै तप कीनो ❋ ताको फल हरि हमको दीनो
लीने भूषण बसन चुराई ❋ युवतिन लाज छुड़ाय बुलाई
तब अम्बर दे धन्य बखान्यो ❋ हम भोरी इतनो सुख मान्यो
अपनो अपनो भाग्य सखी री ❋ मुरली सों विन काज खिजौ री
अब मुरली सों हेत करौ री ❋ नहिं जीतोगी मतिहि लरौ री
मुरली हम तें तप अधिकाई ❋ मुरली के वश कुँवर कन्हाई
तनक आश दरशन की है री ❋ सोऊ पुनि कर तें जैहै री
हैं बहु तरुणी रमण कन्हाई ❋ यह मिस एक तियन को आई
मुरली को जिन डाह करौ री ❋ तुम नहिं अपने प्रेम टरौ री
प्रेमहिं ते हरि मानि रहेंगे ❋ वे सुजान सब जानि रहेंगे
सब तजि भज्यो जन्मते ताही ❋ तज्यो जात कैसे अब वाही
मुरली सों कह काज हमारो ❋ जीवहु मोहन नन्ददुलारो

दो० हम हित कीनो श्यामसों, मेटि लोककुलकान।
ताहीसों हित चाहिये, जासों है पहिचान॥

सो० हम को है यह आश, वे हैं अन्तर्यामि हरि।
करि हैं नाहिं निराश, उर अन्तर की जानिकै॥

कहा भयो मुरली हरि राखी ❋ अपने करसों ताहि सुलाखी
गुणके काज क्षणक दुख पाई ❋ दे अधरामृत तुरत जिवाई
हमतें अधिक कियो उन नाहीं ❋ करि बिचार देखहु मन माहीं

बर्ष पांच सात की जबतें ❋ कियो सनेह श्याम सों तबतें
पुनि षटऋतु तपसों मन लायो ❋ अबलों बिरहानल तप तायो
कैसे ये सब फलन फलैंगे ❋ क्यों नहिं हमको श्याम मिलैंगे
तब यों कह्यो एक ब्रजनारी ❋ मुरली श्याम अधरपर धारी
जो अवगुण होतो या माहीं ❋ तो याको हरि छुवते नाहीं
सुनो सखी यह है यहि लायक ❋ अतिही भली श्रवण सुखदायक
तुमहौ कहति बृथा जोइ सोई ❋ जैसी यह ऐसी नहिं कोई
जो यह भली भरी गुण केरी ❋ तौ याको दुरि श्याम मिले री
काहे न प्रीति करैं हरि ऐसी ❋ है यह तिहूं भुवन में जैसी

दो० एक युवति अरु गुण भरी, बोलति मधुरे बैन।
श्रवण सुधा प्यावत तहूं, क्यों हरि अधरधरैन॥

सो० हरि बरजो मति कोय, देहु बजावन बासुरी।
बिरह बिरसते होय, रस कीने रस होत है॥

आप भले तो जगत भलोई ❋ नातरु सखी भलो नहिं कोई
मुरली लगी श्याम के मुख री ❋ तौहू है हम सों सन्मुख री
सुनहु कानदै कहति कहा री ❋ श्रीराधा श्रीराधा प्यारी
तुम जानति हरि हमहिं बिसारी ❋ तुम हरिसों नहिं नेक नियारी
जब जब मुरली श्याम बजावैं ❋ तब तब नाम तुम्हारोइ गावैं
मुरली भई सवति जो आई ❋ तो हरि तेरिय टहल कराई
तू अर्द्धंगिनि वह है दासी ❋ मेरे मन यह बात प्रकासी
मुरली तुम्हरो नाम बतावै ❋ वाके मुख हरि तुमहिं बुलावै
तुम प्यारी हरि तुम को प्यारे ❋ मुरली सों यह कहत पुकारे
हरषीं सकल सुनत यह बानी ❋ हम मुरली ऐसी नहिं जानी
बृथा बैर यासों हम मान्यो ❋ याको शील अबै हम जान्यो

मुरली सों ऐसे सुख पाई ❀ करति सकल ब्रजनारि बड़ाई

दो० धनि धनि बंशी बाँस की, धनि याके मृदु बोल।
धनि ल्याये गण जांचि कै, बनते श्याम अमोल॥

सो० धनिधनि याको बंस, धनिमुरली हरिमुख लगी।
सखिन सहित परशंस, श्रीमुख श्रीराधा कह्यो॥

मुरली श्री मुरलीधर केरी ❀ महिमा कापै जात निबेरी
जाको यश गुण गंध्रब गावैं ❀ वेद भेद जाको नहिं पावैं
सुनत नाद त्रिभुवन मन मोहैं ❀ देव दनुज नर खग मृग जोहैं
बाणी ललित श्रवण सुखदाई ❀ बाजति हरि मुख ताहि सुहाई
ब्रह्मादिक मन मोह करावैं ❀ शिवसनकादि समाधि लगावैं
माया योग कृष्ण की जोई ❀ शोभित अधर मुरलिका सोई
हरि की श्वास जासु की बानी ❀ ताके गुण को सकै बखानी
जब मुरली नँदनंद बजावैं ❀ ब्रजललना सुनि कै सुख पावैं
चकित होय तन दशा भुलावैं ❀ प्रेम विवश सुधि बुधि विसरावैं
जकी थकी जहँ तहँ रहिजाहीं ❀ मानहुं लिखी चित्र की आहीं
कबहूं दुख कबहूं सुख मानैं ❀ कबहूं निंदहिं कबहुं बखानैं
ऐसी दशा होति घट घट की ❀ बाजति मुरली जब नटवरकी

छं० तरलतान तरंग अगणित गति अमित उपजावहीं।
जबहिं मुरली श्याम करगहि अधर राखि बजावहीं॥
रहत सुनि ध्वनि मगन जलथल जीवजहँ सो तहँ सहीं।
कहत ब्रह्मानन्द सों जासों प्रसंग पूजत नहीं॥
सबै ध्यान ज्ञान समान सद्गुण सुनहु तबहीं लों अहैं।
लोक बेद मर्याद पतिब्रत चारफल तबलौं चहैं॥
तबहिंलों मन चपल बुधिबल सकल रुचि धन धामकी।

सुनी सपनेहु नाहिं जबलों श्रवण मुरली श्याम की ॥

दो० धनिधनितेनरनारिजग, धनिधनि तिनकेभागि।
ब्रजबासी प्रभु बाँसुरी, जिनके मनमें लागि ॥

सो० राखत हैं यह आस, जन ब्रजबासीदास हू।
करहु हिये में बास, मुरलीधर मुरली धरे ॥

अथ रासलीला ॥

बंदौं युगल चरण सुखदायक ❀ श्रीरसराशि नायिका नायक
नंदनँदन बृषभानु नंदनी ❀ सुर नर मुनि ब्रह्मादि बंदनी
रास रसिक रसरास बिलासी ❀ नित्य धाम बृन्दाबन बासी
रूपराशि आनँदनि धामा ❀ मंगल पद सुन्दर श्री श्यामा
बहुरि रासपति पद शिर नाऊं ❀ रास चरित मंगल अब गाऊं
बेदब्यास जो रास बखानो ❀ सो गंधर्ब ब्याह बिधि जानो
ब्रजगोपिन हरि हित तप कीनो ❀ श्याम होयँ पति यह व्रत लीनो
नंदनँदन तिनको बर दीनो ❀ चीरहरण लीला तब कीनो
करि हैं तुम्हरे मन की भाई ❀ शरद रैन शुभ लगन धराई
सो जब शरद सुखद ऋतु आई ❀ राका रजनी परम सुहाई
भक्त मनोरथ पूरण कारी ❀ गावत बिरद बिदित श्रुति चारी
गये श्याम बृन्दाबन माहीं ❀ जहँ बसंत ऋतु रहत सदाहीं

दो० श्रीबृन्दावन धाम की, शोभा परम पुनीत।
बरणिसकैकबिकवनबिधि, मनबुधिबचनअतीत॥

सो० तब चैतन्यस्वरूप, भूमिलता द्रुम गुल्म तृण।
धारि रह्यो जड़रूप, सुन्दर श्याम बिहार हित ॥

जाकी महिमा शिव मुनि गावैं ❀ ब्रह्मादिक रज छुवन न पावैं

जाकी महिमा शिव मुखबानी ❀ संकर्षण प्रति श्याम बखानी
चिंतामणि मय भूमि सुहाई ❀ कोमल बिमल रम्य सुखदाई
सकल सुमंगल की जननीसी ❀ कृष्ण चरण पंकज रमनीसी
फिरत श्याम जहँ नांगे पावन ❀ चरण चिह्न अंकित सब ठावन
पावनहूं की पावन कारी ❀ ब्रजबासी प्रभुकी अति प्यारी
बरन बरन बर बिटप सुहाये ❀ परम अनूप न जाहिं बताये
सदा सुमन फल संयुत सोहैं ❀ अमित सुगन्ध स्वाद मन मोहैं
नव पल्लव दल परम सुहाये ❀ जगमगात नगज्योति लजाये
बिपुल कांति शोभित बहु रंगा ❀ अतिबिचित्रछबि उठति तरंगा
परम प्रकाश दशहु दिशि माहीं ❀ कोटि सूर शशि पटतर नाहीं
पत्र पत्र प्रति बिम्ब श्याम को ❀ मोहत लखि मन कोटि कामको

दो॰ ठौर ठौर शोभित परम, तैस्यइ लता बितान।
बृन्दाबन तरु बेलि सब, नख शिख तरु की खान॥
सो॰ और सकल सुख धाम, बैकुण्ठादिक श्याम के।
यह बिहार बिश्राम, ताते अति सुन्दर सुखद॥

बिपुल कुंज मञ्जुल छबि छाई ❀ जिन्हैं सवाँरत काम सदाई
बहति समीर धीर सुख दाई ❀ शीतल परम सुगन्ध सुहाई
चित्र बिचित्र बिहँग मृगनाना ❀ बोलत डोलत बिबिध बिधाना
गुंजत भृंग लुब्ध मकरन्दा ❀ अति छबि पुंज मञ्जुबन बृन्दा
तैसिय यमुना परम सुहाई ❀ पुलिन पुनीत बरणि नहिं जाई
देति महा छबि झलकन रेती ❀ मानहुँ परम कांति की खेती
फूले बनज बिपुल बहु रङ्गा ❀ गुञ्ज करत मधुमाते भृङ्गा
श्री बृन्दाबन छबि समुदाई ❀ सम्यक बरणि कौन पै जाई
जाकी पटतर को नहिं आना ❀ बन अनूप अद्वैत बखाना

ऐसी कछू परत है हेरी ❀ है स्थूल बपुष प्रभु केरी
गोपी जन इन्द्री गण तामें ❀ हैं चैतन्य आप हरि जामें
नित्य धाम ताही तें गायो ❀ यह पटतर मेरे मन भायो

दो० सुखनिधिरसनिधिरूपनिधि, बृन्दाबिपिनउदार।
शारद नारद शेष शिव, बरणत बिधि श्रुतिचार॥

सो० सुखद न कोऊ आन, बृन्दाबन सम दूसरो।
सकल बिश्व सुख दान, सुख पावत मोहन जहाँ॥

तहँ बिस्तृत इक शंख सुहाई ❀ मणिमय सुभग श्रुतिनमें गाई
तापर अद्भुत कमल बिराजै ❀ षोडश पत्र चक्रसम राजै
योजन पंच तासु परमाना ❀ रास स्थान सुबेद बखाना
मध्य करणिका अति रमनीया ❀ बैठे तहाँ कान्ह कमनीया
शोभा अमित नेति श्रुति बानी ❀ तातें गिरा कहति सकुचानी
कोमल श्यामल अंग सुहाये ❀ निरखि कोटि शत काम लजाये
नटवर भेष साज सब साजें ❀ अंग अंग भूषण छबि छाजें
शिखी शिखण्ड मनोहर माथे ❀ बीच बीच मुक्ता मणि गाथे
जलज माल बनमाल सुहाई ❀ कुंडल झलक अलक छबि छाई
कटि पट पीत काछनी काछें ❀ ललित शृँगार सुभगतन आछें
मणिन जटित नूपूर छबि नीके ❀ चरण कमल भावत जननीके
रबिशशि आदिक द्युतिधर जेते ❀ नख उपमा पूजत नहिं तेते

दो० अति अद्भुत लावण्य निधि, श्रीबृन्दाबन चंद।
निगम नेतिकिमिबरणिये, रसिक नवल नँदनंद॥

सो० जेहि गावत श्रुति चार, ब्रह्म पूरणानन्द हरि।
सो पूरण अवतार, बृन्दाबन रस रास पति॥

देखि श्याम बन धाम निकाई ❀ तैसिय शरद रैनि छबि छाई

प्रफुलित कुमुदिनि बन चहुँ पासा ❀ ललित मालती करति सुवासा
जैस्वइ यमुना पुलिन सुहायो ❀ तैस्वइ पूरण शशि छबिछायो
तैसिय जगमग ज्योति द्रुमन की ❀ तैसिय ललित सुगंध सुमनकी
लखि बन सुख समुदाय कन्हाई ❀ हरषि रास रुचि मन उपजाई
तब कर लई सकल गुण जुरली ❀ ललित योग मायासी मुरली
नाद ब्रह्म की उतपति जासों ❀ निगम अगम उपजै पुनि तासों
बिश्व बिमोहन मंत्र कलासी ❀ हरि मुखकमल लसति कमलासी
राग रंग रस रास बिलासी ❀ सकल गुणन में आनँदरासी
श्याम अधर धरि ताहि बजाई ❀ त्रिभुवन मन सुनि धुनि छविछाई
धरणि पताल जीव सब मोहे ❀ नभ सुरगण सुर सुनत बिमोहे
चकित चन्द्र चल मारग भूले ❀ बरषत अमृत कनक अनुकूले

दो० शिवबिरंचिसनकादिमुनि, तजितजिब्रह्मसमाधि।
भये नाद मुरली मगन, चकित श्रवण रहेसाधि॥

सो० रहे सबै मन भूल, सिध चारण गंधर्व सुर।
तन सुधि रही न मूल, सुनि मुरली नँदनंदकी॥

थकितपवन गतिगवन भुलानी ❀ रह्यो प्रबाह नदिन थकि पानी
झरना झरहिं पषाण कठोरा ❀ नाचि उठे चहुँ दिशि बन मोरा
थकित बिलोकत मृग सब ठाढ़े ❀ खग रहे मौन मनहुँ लिखि काढ़े
रहीं धेनु तृण गहि मुख माहीं ❀ थकित बत्स पय पीवत नाहीं
सरकिसकत नहिंअहि धुनिमोहैं ❀ उकठे बिटप हरित सब सोहैं
तरु बेली सब चंचल पाता ❀ नव अंकुर दल प्रफुलित गाता
सुनि धुनि शेष नाग अनुरागे ❀ नाग सकल सोवत ते जागे
जड़ चेतन गति भइ बिपरीता ❀ हरिमुख मुरली सुनत पुनीता
जे नर नारि तिहूं पुर माहीं ❀ भये नाद बश तन सुधि नाहीं

सुनि धुनि चकित भई अतिभारी ❋ जे ब्रजसुन्दरि गोपकुमारी
यदपि मुरलि धुनि त्रिभुवनपरसी ❋ तदपि यथाविधि तिन हीं दरसी
या रस की तेई अधिकारी ❋ नँदनंदन पियकी अति प्यारी

दो० सुनतहि बौरी सी भईं, बिसरीं सबै सयान।
लगीं ठगोरी सी मनहुँ, मुरली की धुनि कान॥

सो० रह्यो न उरमें धीर, बाजी बाजी कहि उठीं।
आकुलबिकलशरीर, सुनिमुरलीब्रजकीतरुणि॥

षट्दश सहस गोपिका गोरी ❋ मुरली सुनत भईं सब भोरी
कोउ धरणी कोउ गगन निहारैं ❋ कोउ मनहीं मन बुद्धि बिचारैं
घर घर तरुणि सबै बित तानी ❋ आरज पथ गृह काज भुलानी
लै लै तिनके नाम बजावैं ❋ मुरली में हरि सबन बुलावैं
रहि न सकीं धुनि सुनि अकुलाईं ❋ जो जैसे तैसेई धाईं
लोक लाज गुरु जन डर डार्यो ❋ चलीं सकल गृह काज बिसार्यो
काहू दूध उफन ते छांड़े ❋ काहू दधिहि जमावत भांड़े
काहू करति रसोई त्यागी ❋ कोऊ पतिहि जिमावत भागी
बालक गोद सँभार न लीनो ❋ दूध पियावत ही तजि दीनो
कोउ शृंगार करत उठि धाईं ❋ उलटे भूषण बसन बनाईं
बाजूबन्द पगन सों बाँधे ❋ लै मञ्जीर उरन में साँधे
किंकिणि डार लई गर माहीं ❋ हार लपेटत कर सों जाहीं

दो० शीश फूल करणन धरे, करणफूल धरे भाल।
चलीं सकल मुरली सुनत, बिभ्रमताकी बाल॥

सो० अंजन करि दृग एक, एक रह्यो अंजन बिना।
रह्यो न कछु बिबेक, भईं बिबश मुरली सुनत॥

मुरली सों हरि टेर बुलाईं ❋ उपजी प्रीति सकल उठिधाईं

मुरली धुनि मारग गहि लीनो ❀ और कछू उर शोच न कीनो
प्रेम स्वरूप सकल ब्रजनारी ❀ पञ्च भूत अवगुण ते न्यारी
रोंकि रहे सुत पति पितु माता ❀ ते किमि रुकहिं अगम यह बाता
चलीं ध्यान धरि हरि उरमाहीं ❀ गृह बन कुञ्ज रुकीं कहुँ नाहीं
जो प्रारब्ध करम बश कोई ❀ राखी रोंकि पतिन गृह सोई
भयो विरह दुख तिनको ऐसो ❀ कोटिन जन्म कर्म फल जैसो
पुनि धरि ध्यान हरिहि उर लायो ❀ कोटि स्वर्ग फल मानहुँ पायो
यों करि भोग त्याग तन बाला ❀ दिव्य देह धरि मिलीं गोपाला
इहि बिधि बन सब चलीं किशोरी ❀ लोक वेद मर्य्यादा तोरी
आतुर निकसि चलीं सब ऐसे ❀ जरत भवन तजियत है जैसे
एक एक की सुधि कछु नाहीं ❀ झुण्डन चलीं श्याम पहँ जाहीं

दो० गृह गुरुजन तजि लाजतजि, ब्रजसुन्दरी निकाय।
मुरलीधुनि रस रँगरँगी, मिलीं श्याम बन जाय॥

सो० नटवर बपु गोपाल, अधर सधर मुरली धरे।
सम्मुख सब ब्रजबाल, देखि दरश आनँद भरीं॥

ब्रजयुवतिन लखि मुदित बिहारी ❀ मोर मनहुँ छवि घटा निहारी
कनक बरण शशि मुख सब बाला ❀ पहुँचीं निकट जाय नँदलाला
बिपिन सुहावन अति छबि बाढ़ी ❀ भईं जाय सम्मुख सब ठाढ़ी
रहे चकित हरि छवि अवलोकी ❀ अटपट तन शृङ्गार बिलोकी
अद्भुत रूप देखि सुख पायो ❀ मनहीं मन अति हर्ष बढ़ायो
अति आदर करि कुँवर कन्हाई ❀ बोले मन्द मधुर मुसकाई
वाके वचन प्रेम रस साने ❀ प्रेम प्रतीत कसौटी साने
कहो अहो तिय ब्रजकुशलाई ❀ निशि काहे बनको उठि धाई
अर्द्धराति कछु डर नहिं कीनो ❀ ऐसो कहा काज मन दीनो

यह तुम भली करी कछु नाहीं ❀ निज पति तजि धाई बन माहीं
बेद पंथ निदस्यो तुम भारी ❀ जाहु अजहुँ घर बेगि सबारी
यह सुनिकै गुरु जन दुख पै हैं ❀ बहुरो तुम को त्रास दिखै हैं

दो० निजपतितजिपरपतिभजै, तिय कुलीननहिंहोय।
मरे नरक जीवन जगत, भलो कहै नहिं कोय॥

सो० युवतिन को पति देव, कहत बेद हमहूँ कहत।
करहु तिनहिं की सेव, जो तुम चाहत सुख लह्यो॥

और कछू जिय में जनि राखो ❀ करिये बेद बचन जो भाखो
तजि कै कपट करहु पतिसेवा ❀ तिय को पति तजि और न देवा
कूर कुपूत भाग्य बिन रोगी ❀ बृद्ध कुरूप कुबुद्धि बियोगी
ऐसेहु पति को तिय जो त्यागै ❀ बड़ो दोष ताके शिर लागै
ताते मानहु कही हमारी ❀ जाहु सकल घर को ब्रजनारी
मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं ❀ ऐसे कहि कहि हरि पछि ताहीं
कैसे उन तुम आवन दीनी ❀ कैसी धौं यह बिधि तुम कीनी
कै धौं कहि आईं उन पाहीं ❀ कै धौं वे कछु जानत नाहीं
नव यौबन तुम सब सुकुमारी ❀ निशि बसिबो बन अनुचित भारी
जो यह बात सुनै ब्रज कोऊ ❀ हमैं तुम्हैं दूषण दिशि दोऊ
अब ऐसी कीजो मति कबहूँ ❀ करि बिचार देखो मन तुमहूँ
बार बार युवतिन भरमाई ❀ ऐसे सब सों कहत कन्हाई

दो० निठुरबचनसुनिश्यामके, युवति उठीं अकुलाय।
चकितभईं मन गुनिरहीं, मुखकछु बचन न आय॥

सो० बदन गयो मुरझाय, जनु तुषार कमलन पर्‍यो।
शोचिरहीं शिरनाय, सोई निधि जनु पाय कै॥

बिरह बिकल चिंता अति बाढ़ी ❀ रहीं चित्र पुतरीसी काढ़ी

कपट खेल यह गिरिधर ठान्यो ❀ प्रेम विवश युवतिन नहिं जान्यो
मनही मन बिहँसत नँदलाला ❀ भई विरह व्याकुल ब्रजबाला
सहि नहिं सकीं दुसह यह पीरा ❀ बोलीं गदगद गिरा अधीरा
सुनहु श्याम सुन्दर वरनायक ❀ यह जनि कहौ नाहिं तुम लायक
कोमल सुभग कमल मुख तातैं ❀ कैसे कहत कटुक ये बातैं
लै लै नाम बुलायो सब को ❀ धरम सिखावत हौ अब हमको
छांड़ि देहु पिय यह चतुराई ❀ करहु देव जेहि भांति बुलाई
कर्म धर्म श्रुति नाहिं बखाने ❀ जो कोउ कर्म धर्म विधि जाने
हम तो लोक बेद विधि त्यागी ❀ चरण कमल तुम्हरे अनुरागी
सकल धर्म यह चरण तिहारे ❀ बसत सदा सो हृदय हमारे
कहवावत हौ अन्तर्य्यामी ❀ काहे यह सम तुमहीं स्वामी

दो० अबयहतुमकोउचितनहिं, सुनहुश्यामसुखराश।
मन हमरो अपनाइकै, हम को करत निराश॥

सो० पाप पुण्य कह नाथ, यह तौ हम जानैं नहीं।
बिकीं तुम्हारे हाथ, अधराधृत के लोभ लगि॥

अरु यह मृदु मुसुकान हमारी ❀ सकल धर्म की मोहन हारी
ऐसी को तिय ब्रज के माहीं ❀ जाको मन इन मोह्यो नाहीं
जैसिय मुरली मिली सहाई ❀ जिन विधि की मर्याद मिटाई
अब तो मृदु मुसुकन मनमाहीं ❀ पाप पुण्य जानत नहिं काहीं
हम तो पति यक तुम को जानैं ❀ धृक जो और दूसरो मानैं
कोटि करो अब भवन न जाहीं ❀ तुम तजि हमहिं और प्रिय नाहीं
जानत हौ सब अन्तर्यामी ❀ काहे यह समुझत नहिं स्वामी
मन वच कर्म तुम्हारी दासी ❀ मृदु मुसुकान तुम्हारी प्यासी
जरत सकल बिरहानल ज्वाला ❀ सींचहु अधरामृत नँदलाला

दीन कृपानिधि नाम तुम्हारो ❀ हमते दीन न और बिचारो
मृदु मुसुकान दान अब दीजै ❀ दारिद बिरह दूर पिय कीजै
जो नहिं मानत बिनय हमारी ❀ तो यह तन करि हैं बलिहारी

दो० बिरहबिकल लखि गोपिकन, कृपासिंधु भगवान।
उमँग उठे दृग भरि लिये, दीन बचन सुनि कान॥

सो० धनिधनिधनिब्रजबाल, कहतमनहिंमनहर्षिउर।
सदय हृदय गोपाल, बोले दुहुँ कर जोरि तब॥

बोले प्रभुता डारि गोपाला ❀ धन्य धन्य तुम ब्रज की बाला
तुम सम्मुख मैं बिमुख तुम्हारो ❀ दूर करो यह दोष हमारो
मैं निर्दय बहु बचन बखाने ❀ तुम अपने जिय एक न आने
मो कारण गृह कुटुँब बिसारो ❀ धनि धनि धनि यह नेम तुम्हारो
लोक लाज शंका सब त्यागी ❀ मन बच क्रम मोसों अनुरागी
यों कहि बिहँसि मिले नँदलाला ❀ अंकम भरि लीनी सब बाला
यदपि अकाम सदा सुखरासी ❀ तदपि भये रस प्रेम बिलासी
एकहि बार युवति सब भेटी ❀ दुसह ताप बिरहानल मेटी
कह्यो बिहँसि सबसों गिरिधारी ❀ करहु रास रस मिलि सुखकारी
कृपादृष्टि अवलोकत नयनन ❀ हँसि हँसि सींचत अमृत बयनन
चहुँ दिशि हर्ष भरीं सब ग्वारी ❀ मध्य श्यामसुन्दर बनवारी
बिहरत बन बिहार सुखदाई ❀ नवल गोपिका नवल कन्हाई

दो० हँसत करत बहुरस चरित, युवति बृंद लिये संग।
गये यमुन तट श्याम तब, क्रीड़त कोटि अनंग॥

सो० सोहति अति कमनीय, कोमल उज्ज्वल रेततहँ।
करी परम रमनीय, यमुनाजी निजपाणि रचि॥

बहत समीर त्रिबिध सुखदाई ❀ कुसुम धूरि धूंधरि छबिछाई

उड़त सुगंध लपट चहुंओरा ❀ गुंजत भँवर चारु चितचोरा
बैठे तहां श्याम सुख सागर ❀ कोटि काम मन मथन उजागर
करत बिलासँ हास रस लीला ❀ कोटि अनंग रंग सुख शीला
परि रंभन चुंबन कुच परसन ❀ हिय हुलास आनँद रस बरसन
काम भाव गोपिन हरि ध्यायो ❀ कियो सवन के मनको भायो
अस अद्भुत रस प्रेम बढ़ायो ❀ बहुरि रास रस रँग उपजायो
सुनि पिय वचन सकल अनुरागीं ❀ भूषण वसन सँभारन लागीं
लखि उलटे भूषण सकुचानीं ❀ निरखि परस्पर पिय मुसकानीं
नवसत साजि भईं सब ठाढ़ीं ❀ परम प्रेम आनँद रस बाढ़ीं
बंशीबट छबि धाम अनूपा ❀ कोटि कल्प तरु सम सुखरूपा
तहां रच्यो रस रास कन्हाई ❀ भइ कपूर मय भूमि सुहाई

छं० भई भूमि कपूर मय रज वर्षि जल कुमकुम सिंची।
परम कोमल सुभग शीतल ज्योतिमणि कंचन खिंची॥
हरषि तहँ घनश्याम सुन्दर रासमंडल विधि रची।
बरणि कापै जाय सो छबि निरखि शारदगति लची॥
एक एकहि युवति के बिच मधुर मूरति श्याम की।
तिन मध्य जोरी रासनायक राधिका घनश्याम की॥
एक रूप अनेक बपु धरि सवन के बिच राजहीं।
करी यह लीला प्रकट प्रभु परम कोउ न जानहीं॥
भई सकल करजोरि ठाढ़ी जात नहिं मुख छबि भनी।
सहस बत्तिस उदित शशि मनु मध्य घन दामिनि बनी॥

दो० तेहि अवसर ललना सहित, आये सुरमुनि सर्व।
देव नटी किन्नर बधू, तुम्बुरादि गन्धर्व॥
सो० देखत चढ़े बिमान, हरषि हरषि बर्षत सुमन।

करत मुदित मनगान, धन्य धन्य ब्रज युवति कहि ॥

सुर गण सबै निशान बजावैं ❀ निरखति ब्रज सुन्दरि छबि पावैं
नूपुर कङ्कण किङ्किणि बाजैं ❀ मन्द मधुर मुरली सुर गाजैं
ताल मृदंग बीन मुरचंगा ❀ सुर मण्डल सारंग उपंगा
तन्त्र अनेक बिबिध गति बाजैं ❀ मिले एक सुरसों सब साजैं
निर्तत पिय सँग चञ्चल बाला ❀ जनु क्रीड़त घन दामिनि जाला
बिच बिच श्याम बीच ब्रज गोरी ❀ मरकत मणि कञ्चन की जोरी
सुभग तमाल तरुण नँदलाला ❀ कनक लता सम सब ब्रजबाला
करसों कर जोरे छबि छाजैं ❀ कोटि काम छबि निरखत लाजैं
बृन्दाबन उर मनहुँ बिशाला ❀ लसत रासमण्डल की माला
हरि ब्रजनारि परस्पर सो हैं ❀ कोटि काम रति के मन मोहैं
मटकि चलत गति नागर नटकी ❀ लटकन मुकुट लटक घूंघुट की
जनु नवघन दामिनी बरूथा ❀ निरखि नचत मोरन के यूथा

छं० नचत मानौ मोर यूथन मुकुट लटकन यों फबै।
चलति गति लै नागरिन सँग श्याम नटनागर जबै ॥
धरणि पग पटकनि झटकि कर भौंह मटकन कहि परे।
ग्रीव चालन हलनि कुण्डल करजु फेरन मन हरे ॥
मणि कण्ठ मुक्तामाल उर बनमाल चरणनलौं बनी।
बदनपंकज अलकश्रमकण झलक छबिसकैकोभनी ॥
पटपीत फरकत काछनी कटिलाल किंकिणि सोहई।
मलय चित्रित बाहु भूषण श्याम तन मन मोहई ॥
लखि रहत नँदलाल तिय छबि बिबिधबिधि बेणीगुही।
सुभग पाटी मांग मुक्ता शीश फूलन छबि रही ॥
जटित भाल जराव बेंदी उदित द्युति भ्रूबंक की।

ललित बेसर नाक अंजन नैन श्रुति ताटंककी ॥
अधर दशन कपोल चिबुकन कण्ठ भूषण अतिबने ।
करत रास बिलास अद्भुत हरत मनमोहन बने ॥

दो० कबहुँ ललितगति लै चलत, नवलसुघरनँदनन्द ।
निरषि हरषि तैसेइ चलत, नवल नागरीबृन्द ॥

सो० कबहुँ बिचक्षण बाम, लटकिलेति नूतन गतिहि ।
रीझ रसिक घनश्याम, तापर तन मन वारहीं ॥

निर्तत अरस परस पिय प्यारी ❀ बोलत बलिहारी बलिहारी
कोउ कल धुनि पियके गुण गावैं ❀ कोउ अभिनय करि भाव बतावैं
कोउ संगीत कला गुण धारी ❀ कोउ उघटत चटकत करतारी
निर्तत ताल भेद गति लीनी ❀ सुघर एक ते एक प्रवीनी
जात रसिक पिय बिक बिन मोलैं ❀ जब थेइ थेई थेई बोलैं
तान तरंग रंग उपजावैं ❀ लेत उपज अतिरस बर्षावैं
कबहुंक उघटत छैल कन्हाई ❀ फिरत लुब्ध जिमि बाल सुहाई
गिरत मणिन के भूषण तन तें ❀ झरत फूल जनु रूप लतन तें
लटकि लटकि निर्तत अलबेली ❀ ग्रीव ग्रीव मंजुल भुज मेली
कोउ पियके सँग मिलि करि गावैं ❀ कोउ मुरली को बीन बजावैं
काहुहि श्याम लेत भुज भरिकै ❀ तजैं कमल मुख चुंबन करिकै
रमत रास पियसंग छबीली ❀ परम प्रेम रस रंग रँगीली

छं० रसरँग रँगीली प्रेम के बश रासरस पिय सँग करैं ।
निरखि देव प्रसून बरषहिं हरषि उर आनँद भरैं ॥
धन्य ब्रज धनि बालब्रज की धन्य बन धुनिपुनि कहैं ।
करत रास बिलास पूरण ब्रह्म जहँ परकट अहैं ॥
शम्भु अज सनकादि नारद मुदित गुणगण गावहीं ।

निरखि छबिनिधि श्यामश्यामा ब्रह्मसुख बिसरावहीं ॥
देवनारि बिसारि पति गति परस्पर कहि शोचहीं ।
ब्रजबधू बिधि हम न कीनी निरखिसुख मन लोचहीं ॥
कह भयो ऊरधबसीं अरु अपर पदवी जो लहीं ।
करति सुख जो श्याम सँग ब्रजनारि सो त्रिभुवन नहीं ॥
बार बार मनाय बिधना कहति यह बर दीजिये ।
होयँ दासी ब्रजबधुन की कृष्ण पद रति कीजिये ॥

दो० धनि धनि कहि बर्षहिं सुमन, मुदित सकल सुरनारि ।
धनि मोहन धनि राधिका, धनि ब्रज गोपकुमारि ॥

सो० धनि धनि रासबिलास, धनि सुन्दरता धन्य सुख ।
धनि बृन्दाबन बास, सुर ललना बिथकीं कहति ॥

रमत रास रस गोपकुमारी ❋ नँदनंदन पियकी सब प्यारी
करति गान कोकिला लजावैं ❋ हाव भाव करि पियहि रिझावैं
राग रागिनी समय सुहाये ❋ सहज बचन जिनके मन भाये
गति सुगंध निर्तत सब गोरी ❋ सहज रूपनिधि नवलकिशोरी
पग महि पटकि भुजन लटकावैं ❋ फंदा करन अनूप बनावैं
निरखि लेत उपजति छबि भारी ❋ रीझ रहत लखि छबि गिरिधारी
बेनी छुटी लटैं बगराहीं ❋ अलकैं बेसरि सों उरझाहीं
श्रमजल बिंदु बदन द्युतिकारी ❋ मनहुँ सुधाकण चंदमँझारी
अति बश होत निरखि मनमोहन ❋ फिरत सबनके गोहन गोहन
नारि नारि प्रति रूप प्रकासैं ❋ एक एक हिल बनको भासैं
अद्भुत कौतुक प्रकट दिखायो ❋ कियो सबनके मनको भायो
निर्तत अंग थकित भईं नारी ❋ रूप प्रेम गुण परम उजारी

छं० भईं निर्तत थकित तरुणी रूप गुणन उजागरी ।

उमँगि तब उर लाय लीनी श्याम लखि नवनागरी ॥
गिरत उरते हार टूटे निरखि प्रभुहिं जनावहीं ।
लेति बीचहि गहि तिन्हैं महिमांझ परन न पावहीं ॥
अति प्रीति श्रमजल पीतपटसों पोंछि पवन डुलावहीं ।
उरझि बेसरिसों रहीं लट कमलकर सुरझावहीं ॥
देखि बिह्वल गात भूषण शिथिल अंग सँवारहीं ।
कहि बचन मृदुता परमते निज पाणि श्रमहिं निवारहीं ॥

दो० ऐसी बिधि ब्रज सुन्दरिन, देत परमसुख श्याम ।
लखिपतिगतिस्वाधीन अति, भईं गर्विता वाम ॥

सो० परम प्रेमकी खान, रूप शील गुण आगरी ।
क्यों न करैं अभिमान, जिनके बश त्रिभुवनधनी ॥

कहति भईं निज निज मनमाहीं ❋ हमसम और युवति जग नाहीं
अब गिरिधर हम बश करिपाये ❋ कहत हमारे मनके भाये
अब हमते नहिं ह्वैहैं न्यारे ❋ रहिहैं सदा समीप हमारे
जोई हम कहि हैं सोइ करिहैं ❋ सदा हमारे संग बिचरिहैं
कोउ पिय अंग भुजन को दीनो ❋ कहति वचन यों गर्वहि लीनो
सुनो श्याम मैं अति श्रम पायो ❋ अब तौ मोपै जात न गायो
एक कहति मम पाँय पिराहीं ❋ मोपै नृत्य होत अब नाहीं
एक कंठ भुज मेलि सयानी ❋ रही लटकि बोलति नहिं वानी
ऐसे भाव गर्व के कीन्हे ❋ अंतर्यामी सब हरि चीन्हे
गर्व देखि मोहन मुसकाने ❋ मैं अविगति मोको नहिं जाने
करत सदा भक्तन मन भाई ❋ एक गर्व श्यामहिं न सुहाई
सो युवतिन के मन में जानी ❋ दूरिकरनहित यह जिय आनी

दो० प्रेम अभूषण कनक सब, मलिन गर्व तें होय ।

बिरह अग्नि तायें बिना, निर्मल होय न सोय ॥
सो० यह बिचार जिय आन, लै वृषभानुकुमारि सँग।
ह्वै गये अन्तर्द्धान, ब्रजबासी प्रभु संग ते ॥

अथ अन्तर्द्धानलीला ॥

प्रेम बढ़ावन हित सुखदाई ❋ अंतर करि बन दुरे कन्हाई
गोपिन जब हरि देखे नाहीं ❋ चकित भईं तब सब मन माहीं
कहति एक कित कुँवर कन्हाई ❋ उठीं सकल जहँ तहँ अकुलाई
भईं बिकल कछु मरम न पायो ❋ पाय महाधन मनहुँ गँवायो
खोजत जहँ तहँ दृष्टि पसारैं ❋ अति आतुर चहुँओर निहारैं
तब सबहिन मिलि के यह जानी ❋ लैगइ हरिको कुँवरि सयानी
कछू हर्ष कछु रिस उरधारी ❋ देति भईं हँसि रसकी गारी
इन समान कपटी कोउ नाहीं ❋ करत सदा दुबिधा हम पाहीं
चलहु खोजि कुञ्जन में लैहैं ❋ जान कहां हमतें बन पैहैं
ढूंढ़न चलीं सकल बन माहीं ❋ चरण चिह्न खोजत सब जाहीं
देखति जहँ तहँ फिरति अधीरा ❋ कोउ बन घन कोउ यमुनातीरा
कोउ कुंजन कोउ पुंजन हेरैं ❋ श्याम श्याम करि कोऊ टेरैं

दो० इहि बिधि सब खोजति फिरैं, बिरहातुर ब्रजबाल।
भईं बिकल पावत नहीं, कहुँ खोजत नँदलाल ॥
सो० यदपि कियो हरि ख्याल, नेकु दुरे बन कुंजमें।
तदपि भईं बेहाल, युवति श्याम देखे बिना ॥

पलकांतर बिधिको दिन जिनको ❋ बन अंतर अति बड़ दुख तिनको
भईं बिरह ब्याकुल चित जबहीं ❋ हरि पद चिह्न लखति भईं तबहीं
कुलिश कमल ध्वज अंकुश जामें ❋ जगमगात बन घन महि तामें

निकट चिह्न प्यारी चरणन के ❋ अरुण कमल दल हैं बरणन के
बंदन करन लगीं रज जोई ❋ शिव विरंचि याचत हैं सोई
कछु यक धीर धस्यो मन माहीं ❋ खोज लेति ताही मग जाहीं
कुँवर कान्ह प्यारी सँग लीने ❋ फिरत सकल कुञ्जन रस भीने
कबहुँ कुसुम बन माल बनावैं ❋ निरखि हरषि प्यारिहि पहिरावैं
कबहूँ सुमन सँवारत बेणी ❋ परम सुभग शोभाकी श्रेणी
कबहुँ सरोज सुगंध सुँघावैं ❋ नागरि मन अभिलाष बढ़ावैं
कण्ठ कण्ठ भुज दोऊ जोरैं ❋ घन दामिनि छूटति नहिं छोरैं
अति प्यारी के रस बश मोहन ❋ भौंह निहारत बोलत गोहन

दो० अतिहितलखिअनुकूलअति, हरीलाड़िलीहीय।
तामें उपज्यो गर्व जिय, मैं अति प्यारी पीय॥

सो० एक प्राण है देह, तहां गर्व कहँ पाइये।
यामें नहिं संदेह, देह धरे को भाव यह॥

तब प्यारी के मन यह आई ❋ मेरे ही बश कुँवर कन्हाई
मेरे हित बांसुरी बजाई ❋ मेरे हित सब तियन बुलाई
मेरे हितहिं रास उपजायो ❋ सबही तजि मोसों मन लायो
मो सम सुंदरि चतुर उजागरि ❋ और नहीं युवती कोउ नागरि
ऐसे गुणति मनहिं मन माहीं ❋ ठठकि रहति गहि पियकी बाहीं
बैठि जात कबहूं मग माहीं ❋ कहति कि मेरे पायँ पिराहीं
चलन कहत तुम जहां कन्हाई ❋ मोपै पगन चल्यो नहिं जाई
नृत्य करत मैं अति श्रम पायो ❋ तातें पग नहिं जात उठायो
सुनहु मित्र मोहन सुखदाई ❋ कंध लेहु पिय मोहिं चढ़ाई
ऐसे तिय जब बचन बखाने ❋ गर्व जानि गिरिधर मुसकाने
जहां गर्व तहँ रहत न कबहीं ❋ अन्तर्द्धान भये हरि तबहीं

तुरतै बिकल भई अति प्यारी ❀ देखत दुरे चरित गिरिधारी

दो॰ चकित भई तब नागरी, गये किते भजि श्याम।
मनहीं मन पछतात अति, भूली तन सुधि बाम॥

सो॰ मैं कीनो अभिमान, नारि बुद्धि ओछी सदा।
वे पिय परम सुजान, जान लई मो जीव की॥

भई बिकल समझति निज करणी ❀ सो वह दशा जाय नहिं बरणी
बिरह बिथा बाढ़ी अति तनमें ❀ परम अकेली रोवति बन में
नैन सलिल भीजत तन सारी ❀ कासि कासि पिय कहति पुकारी
हा हा नाथ अनाथ न कीजै ❀ बेगि श्याम मोहिं दर्शन दीजै
मैं तुम कृपा पाय गरबानी ❀ ताते सखी समार न बानी
सो अपराध क्षमा अब कीजै ❀ यह दूषण मनमाहिं न दीजै
बेगि कृपाकरि मिलहु दयाला ❀ अहो कमलदल नैन रसाला
बिरह बिकल यों बदत अकेली ❀ रोवत सुन खग मृग द्रुम वेली
तहँ खोजति आई सब नारी ❀ दूरिहि ते देखी तिन प्यारी
मुख शशि ज्योति रूपकी रासी ❀ जनु घनते बिछुरी चपलासी
द्रुम शाखा अबिलंबिन ठाढ़ी ❀ रुदन करति बिरहा दुख बाढ़ी
व्याकुल चकित चहूँ दिशि जोवैं ❀ कमल चरण नख भूमि करोवैं

दो॰ जित तित तें धाईं सबै, ब्रज सुन्दरि अकुलाय।
व्याकुल लखि अति लाड़िली, लीनी कंठलगाय॥

सो॰ कहां गये गोपाल, बार बार बूझत सबै।
मुरछित तन भइ बाल, मुखते बचन न आवई॥

देखि दशा सब तिय अकुलानी ❀ बैठारी अंकम गहि पानी
कहु राधा क्यों बोलति नाहीं ❀ काहे मुरछि परी महि माहीं
या बन में कैसे तू आई ❀ कहां गये तजि तोहिं कन्हाई

निरखि बदन सबहिन सुख कीनों ❋ मानहुं अमिनिधि अमृत दीनों
कोऊ लगी सँवारन अलकैं ❋ कोउ अंचरते पोछति पलकैं
नैन नीर कछु सुधि नहिं देही ❋ अति व्याकुल बिन श्याम सनेही
बूझति युवति कहां बनवारी ❋ चलिये तहां तोहिं लै प्यारी
सुनत नाम पियको अनुरागी ❋ बिरह मोह निद्रा ते जागी
जान्यो आये कुँवर कन्हाई ❋ नैन उघारि मिलन को धाई
जो देखै तौ सब ब्रजबामा ❋ अतिही बिलखि उठी तब श्यामा
कहति मोहिं त्यागी नँदनन्दन ❋ तुमहू नहीं मिले जगबंदन
मैं अपने जिय गर्ब भुलानी ❋ नहिं उनकी महिमा कछु जानी

दो० बोली पियसों मंदमति, मैं अभिमान बढ़ाय।
लीजै कंध चढ़ाय स्वहिं, मोपै चल्यो न जाय॥

सो० वे प्रभु परम सुजान, बिहँसि कह्यो स्वाहिं चढ़नको।
ह्वै गये अन्तर्द्धान, अपनी चूक कहा कहौं॥

गये श्याम धौं कित बन माहीं ❋ मेरी दृष्टि परे कहुं नाहीं
कहति बिकल नैनन जल ढारी ❋ मोको त्यागि गये गिरिधारी
मुरछि परी धरणी अकुलाई ❋ श्यामाबिरहदुख सह्यो न जाई
देखि दशा व्याकुल सब नारी ❋ कहति निठुर री अति बनवारी
त्रिया पुरुषसों मान जु करहीं ❋ पुरुष नहीं ऐसी उर धरहीं
देखहु श्याम तजी हम कैसे ❋ नाहिं बूझिये उनको ऐसे
कहति राधिका सों ब्रजनारी ❋ मिलिहैं श्याम धीर धरु प्यारी
चलीं आप खोजन सब बन में ❋ बिरह बिकल कछुसुधि नहिं तनमें
टेरत जहँ तहँ घोसकुमारी ❋ अहो रासपति कुंजबिहारी
कहां दुरे पिय हमते भजिकै ❋ तुम बिन प्राण जातहैं तजिकै
क्षमा करौ प्रभु चूक हमारी ❋ मिलहु कृपा करि बेगि मुरारी

तुम बिन हम को सुनहु कन्हाई ❋ क्षण क्षण कल्प समान बिहाई

दो॰ जरतसकल तुम दरश बिन, बिरहअग्नि तन बाम।
मंद मधुर मुसकान सुख, बरषि बुझावौ श्याम॥

सो॰ सकलबिश्व सुखधाम, गावत तुमको जगत सब।
तिन्हैं होत कत बाम, जो दासी बिन मोलकी॥

सदा हमारी रक्षा कीन्ही ❋ गरल अनल जल तें रख लीन्हीं
अब कत निठुर होतहौ प्यारे ❋ बिरह जरावत गात हमारे
कतहिं फिरत बन चरण उघारे ❋ गड़िहैं कुश कंटक अनियारे
तुम पद बसत हमारे हिय में ❋ ते कंटक शालत हैं जिय में
अहो नाथ यह जिय उर धारी ❋ सुख देकै दुख देत मुरारी
ऐसे कहति सकल ब्रज डोलैं ❋ अलबल बचन बदनते बोलैं
अति अकुलाय गईं बनमाहीं ❋ जड़ चेतन कछु समुझत नाहीं
बूझति बन बिटपन सों धाई ❋ तुम कहुँ देखे कुँवरकन्हाई
अहो कदम अहो अम्ब तमाला ❋ हमहिं बतावो कित नँदलाला
अहो जुही मालती निवारी ❋ लखे कहूं इत जात बिहारी
हे चम्पक हे श्रीफल कदली ❋ हे दाड़िम हे जामुन बदली
तुम देखे मनमोहन लाला ❋ श्याम कमलदल नैन बिशाला
हे पलाश हम दासि तुम्हारी ❋ कहो कहां सुखराशि बिहारी

दो॰ हे अशोक हरि शोक तुम, सत्य करो निजनाम।
लेत नहीं यश हे पनस, क्यों न कहत कित श्याम॥

सो॰ हे मंदार उदार, हे पीपर हरु पीर मम।
कहि कित नन्दकुमार, सुन्दरघन तन सांवरो॥

हे चन्दन तन जरत जुड़ावो ❋ नँदनंदन पिय हमहिं बतावो
हे अवनी चित चोर हमारे ❋ कित राखे नवनीत पियारे

तुमते दूर कहौं हरि नाहीं ❋ क्यों न मिलायदेत हमपाहीं
कहिधौं कुंद मुकुंद कहां हैं ❋ हमको देउ बताय जहां हैं
हे बट नट नागरहि बताओ ❋ कहूं निकट नँदसुवन दिखाओ
कहुधौं मृगी मयाकरि हमको ❋ पूछति हम हा हा करि तुमको
देखियत डहडहे नयन तुम्हारे ❋ तुम कहुं मोहनलाल निहारे
हे दुख दवन पवन सुखकारी ❋ कहियत गति सर्वत्र तुम्हारी
जहां होयँ बलबीर बिहारी ❋ कहति जाय किन व्यथा हमारी
हे तुलसी तुम तो सब जानो ❋ क्यों नहिं हरिसों प्रकट बखानों
तुम तो सदा श्याम की प्यारी ❋ कहत नहीं यह दशा हमारी
बोलत नाहिं कोउ कहत तरुन को ❋ लै गये श्याम इनहुं के मनको

दो० इहिबिधि बनघन ढूंढ़सब, ब्रजतिय बिरहउदास।
इत उत में फिर आवहीं, कुँवरि राधि का पास॥

सो० मनहुंनीरबिन मीन, अतिव्याकुल तलफतपरी।
श्यामबिरह अति दीन, कनक लतासी नागरी॥

व्याकुल कहति सकल ब्रजबाला ❋ अजहूं नाहिं आये नँदलाला
कहा करैं अब कित को जैये ❋ श्याम बिना कैसे सुख पैये
तब सब बहुरि यमुन तट आईं ❋ जहां रसिक पिय रास रमाईं
बैठीं सब राधा ढिग धामा ❋ कहन लगीं हरिगुणगण ग्रामा
सब के ढिग हरि सोहत कैसे ❋ दृष्टि बन्द करि नटवर जैसे
युवति नहीं कोउ उनको देखैं ❋ हरि सब ही की लीला पेखैं
देखि देखि मन अति सुख पावैं ❋ परम रीति रसरीति बढ़ावैं
करत चरित्र बिचित्र बिहारी ❋ सदा श्याम भक्तन सुखकारी
बिरह अग्नि तन गर्ब जरावैं ❋ निर्मल प्रेम भक्ति उपजावैं
गोपीजन सब हरि की प्यारी ❋ नेक नहीं कहुं हरिते न्यारी

कहति श्याम ब्रज प्रकटे जबते ❀ देत सबन को सब सुख तबते
तिन में हम सब उनकी दासी ❀ क्यों हम तजि हरि भये उदासी
दो० ब्याधहु ते करणी कठिन, हम तें कीनी श्याम।
बेणु बजाय बुलाय सब, बधत मृगीलों बाम॥
सो० कीजै कौन उपाय, मोहन मुख देखे बिना।
मरति मसोसा खाय, यह मन गीध्यो माधुरी॥
सदा हमारे मन को भावै ❀ तिरछी चितवन चितहि चुरावै
जब अति बालक हते मुरारी ❀ बाल बिनोद किये सुख कारी
खेलत में बहु असुर सँहारे ❀ बिघन अनेकन ब्रज के टारे
अद्भुत चरित मनोहर कीनो ❀ गिरिवर धर ब्रजको रखलीनो
हलधर सखन संग मुरली धरि ❀ गोचारन बन जात जबहिं हरि
तब हमको बीतत दिन जैसे ❀ जानत है हमरो मन तैसे
कुण्डल मुकुट केश घुँघरारे ❀ गोरज रंजित दृग अनियारे
पीतबसन बनमाल बिशाला ❀ बेणु बजावत मधुर रसाला
सखन मध्य गौवन के पाछे ❀ चन्दन चित्र सुभग तन आछे
सांझ समय आवत जब देखैं ❀ तब हम जन्म सुफल करिलेखैं
ऐसे कहत सकल ब्रजनारी ❀ हरिगुण रूप कथा बिस्तारी
समुझत कहत श्याम गुण रूपा ❀ उपजी उर अति प्रीति अनूपा
दो० भूलि गईं सुधि देह की, भयो बिरह दुख औन।
केवल तनमय ह्वै गईं, नहिं जानति हम कौन॥
सो० भृंगी कीट समान, मगन ध्यान रस नागरी।
बिसरो सकल सयान, भईं आपुही कृष्ण तन॥
लागीं करन चरित सब हरिके ❀ पूरण प्रेम भईं गिरिधर के
ये लीला उनहीं को सोहैं ❀ नेक नहीं जानति हम को हैं

एक भई दधि चोर कन्हाई ❀ एक पकरि गहि भुज लै आई
एक यशोमति को बपु धरिकै ❀ बांधति है ऊखलसों हरिकै
इक भई गाय एक गोपाला ❀ बोलति वैसेइ वचन रसाला
कारी धौरी धूमरि कहि कै ❀ हटकति फिरति लकुट कर गहिकै
कहती एक अमर गिरिधारी ❀ गाय गोप सब रहो सुखारी
कहति एक मूंदौ सब लोचन ❀ मैं करिहौं दावानल मोचन
एक यमल अर्जुन तरु भंजै ❀ एक बकासुर बदन बिभंजै
एक बस्त्र को नाग बनाई ❀ तापर निरत करत हर्षाई
एक दही को दान चुकावै ❀ इक त्रिभंग ह्वै वेणु बजावै
मगन भई सब या रस माहीं ❀ तन अभिमान रह्यो कछु नाहीं

दो० अंतर नेक रह्यो नहीं, भई श्याम ब्रजबाम।
तब अंतर करि नहिं सके, भये निरंतर श्याम॥

सो० प्रकट भये ततकाल, तिनहीं मधि नँदलाड़िले।
सुन्दर नैन बिशाल, गोपी जनवल्लभ सुखद॥

प्रेम मगन अति आतुर ताई ❀ श्रीबृषभानु कुँवरि उर लाई
देखि प्रकट दरशन गोपाला ❀ मिलीं धाइ आतुर ब्रजबाला
ज्यों धनराशि परी कहुँ पावैं ❀ लोभी जन लूटनको धावैं
लपटी एक धाय उरमाहीं ❀ एक मिलत ग्रीवा दे बाहीं
कोऊ परी चरण पर धाई ❀ कोऊ अंग रही लपटाई
कोऊ गहि कर पंकज लावैं ❀ तपत बिरह की ताप सिरावैं
कोउ लटकी गहि भुजा नवेली ❀ जनु शृंगार बिटप छबि बेली
कोऊ मुख छबि रही निहारी ❀ कोऊ रही चरण उर धारी
कोउ अंकम भरि कहत भले हरि ❀ एक पीत पट छोरि रही धरि
हरिसों मिलीं लसति यों भामिनि ❀ जनु बन घन घेर्‌यो बहु दामिनि

कहुँ अंजन कहुं कुंकुम रेखा ❋ कहूं पानकी लीक सुवेखा
युवतिन मध्य लसें हरि प्यारे ❋ कृपादृष्टि सब ओर निहारे

दो० पुनि बैठे हरि हरषि तहँ, युवति वृन्द चहुँ ठाम।
सबके सम्मुख राजहीं, सुन्दर छबि घनश्याम॥

सो० बोले बिहँसि गोपाल, हँसत कियो यह ख्याल हम।
कतहि भई बेहाल, तुम प्राणनते मोहिं प्रिय॥

सकुची सुनि प्यारी यह बानी ❋ मन जान्यो नहिं प्रकट बखानी
कहि कहि कोमल बचन कन्हाई ❋ सबको दुख डारयो बिसराई
अति आनंद सबनको दीनों ❋ सुफल मनोरथ सबको कीनों
जाके साध हती जिय जैसी ❋ पूरण करी श्याम मन तैसी
भये कान्ह प्रीतम अनुकूले ❋ बढ़यो अनंद सकल दुख भूले
तब हरि सों सब नवलकिशोरी ❋ पूछन लगीं बिहँसि कर जोरी
प्रेम प्रीति की रीति सुहाई ❋ हमैं कहौ समुभाइ कन्हाई
इक जो प्रीति परस्पर कहिये ❋ एक एकही दिशितें लहिये
एक दुहुन को मानत नाहीं ❋ ताको कहा कहत जग माहीं
उत्तम प्रीति कहावति जोई ❋ कहहु श्याम हम सों तुम सोई
हम अबला जानति कछु नाहीं ❋ तातें पूंछतिहैं तुम पाहीं
सुनि गोपिन के बचन रसाला ❋ भये प्रेम बश परम कृपाला

दो० यदपिजगतगुरुअजित प्रभु, जानराय ब्रजचन्द।
प्रेम बिबश हारे तदपि, अपने मुख नँदनन्द॥

सो० कहत भये तब कान्ह, सुनहु प्राणबल्लभ प्रिया।
नहिं तुम समकोउ आन, निपुण प्रेमके पंथमें॥

तदपि तुम पूंछति हौ जैसे ❋ प्रकट करौं लक्षण सब तैसे
एक जो प्रीति परस्पर होई ❋ स्वारथ हेतु करत सब कोई

जैसे पशू पशू को जानै ❀ आपुस में सब हित करि मानै
सो वह प्रीति कनिष्ठ कहावै ❀ जासों सब संसार बँधावै
दूजी प्रीति एक दिशि जोई ❀ करनि धर्म अधिकारी सोई
जैसे मात पिता चित धरिकै ❀ रक्षत हैं सुतके हित करिकै
सो वह मध्यम प्रीति कहावत ❀ उत्तम गति तातें जन पावत
जो यह दोउन को नहिं जानै ❀ गुण दूषण कछु उर नहिं आनै
तिन्हैं सुनो मैं कहत बखानी ❀ कै कृतघ्न कै पुनि अज्ञानी
उत्तम प्रीति जानिये सोई ❀ अनायास उपजत उर जोई
दुहुं दिशि हठ कर प्रीति वढ़ावैं ❀ नहिं निमित्त तामें कछु आवैं
अंतर नेक परै नहिं कोई ❀ प्रीति पुनीत जानिये सोई

छं० नहीं अंतर नेकु जामधि नीति उत्तम सो कही।
करी मोसों तुम सवन सोइ मैं ऋणी तुम्हरो सही॥
करहुँ जो उपकार तुम प्रति कोटि कोटिन जगभरी।
कबहुं होहुं न उऋण तुमतें हे प्रिया ब्रजसुन्दरी॥
करै ऐसी कौन जैसी तुमन जो करणी करी।
लोक बेद मर्याद ममहित तोरि तृणसम परिहरी॥
करहु मनते दूर अब यह दोष मैं तुमते कियो।
कियो अन्तर परमसुख में बिरह दुख तुमको दियो॥

दो० ऐसे प्रेमाधीन ह्वै, कहि कहि बचन रसाल।
दूर करी युवतीन के, मन ते गांस गुपाल॥
सो० बाढ़्यो परमानंद, ब्रजबासिन प्रभु बचन सुनि।
परम मुदित तियबृन्द, प्यारी प्रिय नँदनंद की॥

अथ महामंगल रासलीला॥

सुनि पियके मुखकी रस बानी ❀ गोपीजन सब मन हरषानी

हँसि हँसि बहुरि लाल उर लाये ❀ मनते सब संदेह मिटाये
देखि सबनकी प्रीति कन्हाई ❀ बहुरि रासरस रुचि उपजाई
वैसोइ सुख सबको उपजायो ❀ वही भाव सबके मन आयो
यह जान्यो सबहिन तबहींतें ❀ करत रासरस पिय सबहींतें
अंतर्द्धान चरित सब भूलीं ❀ वैसेइ आनँद के रस फूलीं
वहै रासमण्डल त्रिधि जोरी ❀ बिच बिच श्याम बीच बिच गोरी
वैसेइ मधि नायक हरि राधा ❀ वहै परस्पर प्रीति अगाधा
वैसेइ मुरली श्याम बजाई ❀ वैसेइ थकित भयो उडुराई
वैसेइ सुर बिमान नभ सोहैं ❀ वैसेइ सुर मुनि गंध्रब मोहैं
वैसेइ खगमृग नव द्रुम बेली ❀ वैसेइ यमुना पुलिन सहेली
वैसेइ पवन त्रिबिध सुखदाई ❀ वही रासरस रूप निकाई

छं० करैं वैसेइ रासरस पुनि युवति अति छबि छाजहीं।
गौर अंग किशोर बैस सुदेश मुख शशि राजहीं॥
जोरि पंकज पाणि बाहु मृणाल मण्डल लाजहीं।
मध्य सबके श्याम श्यामा रूपराशि बिराजहीं॥
मुकुट कुण्डल बसन भूषण बरण अंगन राजहीं।
अंग अंग अनंग रति लखि कोटि कोटिन लाजहीं॥
चरण नूपुर किंकिणी कटि चलत नूपुर बाजहीं।
बीन ताल मृदंग चंग उपंग सुर सुख साजहीं॥

दो० अरस परस निरखत छबिहि, भरे प्रेम आनंद।
नवल नागरी ब्रजबधू, नवनागर नँदनंद॥

सो० रहे निरखि सुरभूल, सहित सुन्दरी मगन सुख।
पुनि पुनि बरषत फूल, धन्य धन्य ब्रजकहि मुखन॥

सोहति हरि मुख मुरली कैसे ❀ करि दिगबिजय नृपति वर जैसे

बैठि पाणि सिंहासन गाजै ❀ अधरछत्र शिर ऊपर राजै
चँवर चहूंदिशि चिकुर सुहाये ❀ वेतपाणि कुण्डल छविछाये
बलि बलि बरजत हैं सब काहू ❀ कहत निकट कोऊ मति जाहू
दूरिहि ते सब करत जुहारैं ❀ सन्मुख आदर सहित निहारैं
मधुकर पिक बंदी गुण गावैं ❀ मागध वदन प्रशंसि सुनावैं
मान महीपति बल मथि मान्यो ❀ युवतीयूथ जात गहि आन्यो
बिनहिं पनच बिनहीं कोदण्डा ❀ सुर मुर भेद कियो ब्रह्मण्डा
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी ❀ बोलत हैं सब जय जय बानी
नारि पुरुष जड़ जंगम जेते ❀ किये सकल अपने वश तेते
थक्यो पवन जल अनल सिरानी ❀ विधिकृत मेटि आपनी जानी
निज निज ठकुरायन की रेखा ❀ बांचि सकल वश भये विशेखा

दो० रच्यो राजसू यज्ञरस, रास बिपिन शुभ धाम।
तहँ अधिकारी सांवरो, मोहन सुन्दर श्याम॥

सो० सबही को सुख देत, दान मान रस प्रेम को।
बढ़यो माधुरी हेत, परमानंदित लोक सब॥

गावत गोपी सँग सब जुरली ❀ बाजत मधुर मधुर सुर मुरली
राग रागिनी प्रकट दिखावैं ❀ जे सब रूप अनूपम गावैं
अति प्रवीण पियको मन मोहैं ❀ नृत्य करत सुन्दरि सब सोहैं
नाचत कबहुं श्याम अरु श्यामा ❀ रीझत निरखि सकल ब्रजबामा
लै गति चलत परस्पर दोऊ ❀ सो छवि वरणि सकै कहँ कोऊ
होड़ा होड़ी रंग बढ़ावैं ❀ तदपि लेत शोभा अति पावैं
उरझी कुण्डल वेसरसों लट ❀ पीत वसन वनमाल रही सट
उरझे मन मन बैनन बैना ❀ लटकीली छवि उरझे नैना
नाचत युगल चपल गतिवारी ❀ प्रेम उरझ उरझे पिय प्यारी

उरझीं गोपीजन लखि शोभा ❋ नहिं निरवार सकल मन लोभा
अति रस रंग बढ्यो सुख भारी ❋ थेइ थेइ बदति सकल ब्रजनारी
मगन सकल रस सिंधु निहारैं ❋ रीझ रीझ तन मन धन वारैं

छं० मगन सब रसरास सुख निधि हरषि तन मन वारहीं।
हिय हुलास न जाय कहि छबिराज युगल निहारहीं॥
कियो युवतिन हेतु बारह मास सो पति पाइयो।
तब मंत्र कीनों ब्याह को सब सखिन मंगल गाइयो॥
ललित कुंज बितान सुभग लतान मंडप द्युति बनी।
बहु रंग बंदन माल चहुँदिशि चारु सुमनन छबि घनी॥
अति बिचित्र पवित्र यमुना पुलिन शुभ बेदी रची।
बर्णन सकै छबि कौन बिधि तिहुँ लोक शोभा की सची॥

दो० तहँ नँदनन्दन लाड़िलो, श्रीवृषभानु कुमारि।
दूलह दुलहिनि राजहीं, शोभा अमित अपार॥

सो० भरीं परम उत्साह, ललितादिक ब्रज सुन्दरी।
प्रीति रीति की चाह, लागीं करन बिवाह बिधि॥

मोर मुकुट रचि मौर बनायो ❋ सो शिर धर गिरिवरधर आयो
तन घनश्याम पीत पट सोहै ❋ घन दामिनि ताके ढिग कोहै
बनमाला गर माहिं बिराजै ❋ निरखत इन्द्र धनुष द्युति लाजै
ललित अंग तन भूषण जाला ❋ कुण्डल झलकनि नैन बिशाला
सकल कला गुण रूप निधाना ❋ त्रिभुवन सुन्दर परम सुजाना
जाके मनमथ सैन बराती ❋ फूले बिटप सुमन बहुभाँती
करि कोलाहल पिक शुक बोलैं ❋ मंजु मोर निर्तत सँग डोलैं
नभ सुरपति दुन्दुभी बजावैं ❋ नाचत किन्नर गन्धर्व गावैं
बरषत सुरगण सुमन सुहाये ❋ ब्रजतिय करति सकल मन भाये

कुँवरि लाड़िली सुभग सँवारी ❋ गोरे अंग चूनरी कारी
नख शिख मणि भूषण छवि राजैं ❋ मुखशोभा लखि उड़पति लाजैं
प्रीति रीति जिहि हित करि गानी ❋ सो शुभ घरी विधाता बानी

छं० शुभ घरी सो बानी विधाता हेतु जिहि दृढ़ व्रत लियो ।
शरद निशि पूनो बिमल शशि निरखि अतिप्रफुलितहियो ॥
अधर मधु मधुपर्क कहिकै पाणिग्रहण सुविधि करी ।
पढ़त नभ बिधि बेद बाणी सुरन जय धुनि उच्चरी ॥
तब अलिन हँसिकै गांठ जोरी प्रेम गांठ हिये परी ।
सहस सोरह संग सखियाँ फिरति भाँवरि रस भरी ॥
बढ़यो अति आनन्द उरमधि साध सब पूरण भई ।
मदन मोहनलाल दूलह राधिका दुलहिनि नई ॥

दो० निरखि देव बरषैं सुमन, हरष न हिये समात ।
वृन्दाबन रस रास सुख, लखि सुरबधू सिहात ॥

सो० हमसों यह सुख दूरि, कहत परस्पर सुरनगण ।
क्यों उड़ि लागै धूरि, धनि ब्रजबासी धन्यब्रज ॥

सोहति युवति बृन्द मधि जोरी ❋ नवनागर बर नवल किशोरी
शोभा अमित पार को पावै ❋ निरखत बनै कहत नहिं आवै
दूलह श्याम दुलहिनी राधा ❋ रूप सिन्धु दोउ परम अगाधा
रँग भीनी रँग भीने दोऊ ❋ अति आनन्द उमँगि सब कोऊ
प्रेम रंग भीनी ब्रजनारी ❋ निरखि युगल छवि होहिं सुखारी
भरीं प्रीति रस गारी गावैं ❋ लखि लखि पिय प्यारी सुख पावैं
हास बिलास मोह उपजावैं ❋ बार बार दम्पति गुण गावैं
बिबिध भांति दुन्दुभि नभ बाजैं ❋ निरत कला रम्भादिक साजैं
हंस मोर पिक चातक बोलैं ❋ बन मृग निकर संग सब डोलैं

वारति तिय भूषण हर्षाई ❀ बनके मृगन देत पहिराई
तब इक सखी भई नँदराई ❀ इक बृषभानु रूप धरि आई
अति हित मिले महर दोउ धाई ❀ तब बिनती बृषभानु सुनाई

छं० तब जोरि कर बृषभानु बिनयो सुनहु श्री नँदराय जू ।
हम भये सकल सनाथ अब प्रभु कृपा तुम्हरी पाय जू ॥
अति बड़े पुण्य ते मिले तुम से सगे सुख के सिंधु जू ।
शिरमौर गोकुलचन्द आनँद कन्द सब जग बन्द जू ॥
तुम गेह मञ्जन हेत कन्या हम न तुम सम योग जू ।
निज दास करि सब जानिये बृषभानुपुर के लोग जू ॥
अष्टसिद्धि नवनिद्धि सम्पति सकल सुख के खान जू ।
ऐसे बिनय करि नन्द के चरणन गहे बृषभानु जू ॥
तब नन्द अतिआनन्द भरि बोले सहित अनुराग जू ।
सुनहु श्री बृषभानु जू तुम धन्य अति बड़ भाग जू ॥
तुमसे समुद्रन सो सुनहु सम्बन्ध मांगि न पाइये ।
परम निर्मल यश तुम्हारो लोक लोकन गाइये ॥
अति नेह कान्हर सों तुम्हारी प्रीति पहली यह भई ।
दई कन्या करि कृपा गुण रूप सुख शोभा मई ॥
पूरे मनोरथ सकल अब हम बड़े सब भांतिन भये ।
बृषभानु नँद आनन्द प्रमुदित परस्पर चरणन नये ॥

दो० मन मन हर्षित नागरी, नागर नवल किशोर ।
लखि रसरीति सखीन की, प्रेम प्रमोद न थोर ॥

सो० बिलसत अतिआनन्द, ब्रजबिलास ब्रजनागरी ।
प्रीति बिबश ब्रजचन्द, कोकहिसकैसुहागसुख ॥

करत मनोरथ सब मन भाये ❀ त्रिभुवन पति दूलह करि पाये

ब्याह रीति सब करि ब्रजनारी ❀ गावति यशुमति को रसगारी
तब कङ्कण छोरन बिधि कीनी ❀ रचि पचि गांठि चतुर तिय दीनी
कहत श्याम सों छोरो कङ्कन ❀ परमानन्द मुदित गोपी जन
बड़े चतुर तो खोलहु गिरिधर ❀ यह न होय धरिबे गिरिको कर
कै छोरो कै दोउ कर जोरो ❀ दुलहिनि के परिपायँ निहोरो
बड़े कहावत हो ब्रजनाथा ❀ काहे कँपन लगे दोउ हाथा
छोरहु बेगि कि सुनहु कन्हाई ❀ पठवहु यशुमति माय बुलाई
दोऊ परस्पर कङ्कण छोरैं ❀ प्रेम उमँग उर हर्ष न थोरैं
पचिहारे कङ्कण नहिं छूटत ❀ निरखि हर्षि ब्रजतिय सुख लूटत
कहति सहाय करहु जिन कोऊ ❀ कङ्कण छोरहिं आपहि दोऊ
दुलहिनि दूलह कङ्कण खोलैं ❀ कै बृषभानु बवा को बोलैं

दो० कमल कमल परसो जनो, पानि लाड़िलीलाल।
लखि कबिकुल सांचे लगत, रोम कटीली नाल॥
सो० दूलह नन्द कुमार, दुलहिनि श्री राधा कुँवरि।
सन्तन प्राण अधार, अबिचल यह जोड़ी सदा॥

यह रस रास चरित हरि कीनो ❀ ब्रजयुवतिन वांछित फल दीनो
ब्रजतिय सुख हित कुञ्ज बिहारी ❀ करी मास निशि षट उजियारी
साध नहीं युवतिन मन राखी ❀ श्रीभागवत कह्यो शुक भाखी
बेद उपनिषद् साख बतावैं ❀ ब्रह्मा शम्भु सहस मुख गावैं
नारद शारद ऋषिय अनन्ता ❀ कहत सुनत गावत सब सन्ता
सोरह सहस गोप सुकुमारी ❀ तिनके संग लाल गिरिधारी
कियो रास रस रहस अगाधा ❀ पूरण करी सबन की साधा
हाव भाव रस रास बिलासा ❀ नैन सैन मुख वचन प्रकासा
भुजभरि मिलन अधर रस चाखन ❀ नृत्य गान रस रुचि सम्भाषन

क्षण क्षण बढ़ति अधिक रसरीती ❋ यहि बिधि रैन करत सुख बीती
भयो समय ब्रह्मी शुभकाला ❋ रास रमत भइँ श्रम सब बाला
तब श्रीयमुना गये नँदलाला ❋ सोहत संग सकल ब्रजबाला

छं० सोहत सकल ब्रजबाल सँग नँदलाल तब यमुना गये।
शरद निशि रस रास करि पूरण मनोरथ सब भये॥
जैसे महा मद मत्त गजबर यूथ करणी सँग लिये।
फिरत बन सर सरित क्रीड़त निदरि अति निर्भय हिये॥
जिमि नन्दसुत जगबन्द आनँदकन्द रसनिधि श्यामये।
मेटि बेद मर्याद ब्रज तिय प्रेम सब आनँद भये॥
रमत बृन्दाबन यमुन रस केलि अति सुख मानई।
दास ब्रजबासी प्रभू गुण नाग बर सुर गानई॥

दो० धनिबृन्दाबन धन्यसुख, धन्यश्याम धनिरास।
धनिधनिमोहन गोपिका, नितनवकरतबिलास॥

सो० नहिं सुर पुर सम तूल, बृन्दाबन सुख एक फल।
कहि कहि बरषहिं फूल, सुरगण मन आनँद भरे।

यमुना जल क्रीड़त नँदलाला ❋ सोरह सहस संग ब्रजबाला
माधि राजत दोउ बाँहा जोरी ❋ दम्पति गौर साँवरो जोरी
कोउ कटिलौं जल में सुख साजे ❋ कोउ उर ग्रीवालौं छबि छाजे
ताकी उपमा कबि किमि कहहीं ❋ अति अपार छबि पार न लहहीं
छिरकत पाणि परस्पर सोहैं ❋ नंद नँदन पिय को मन मोहैं
सलिलशिथिलसोहतनँदनन्दन ❋ सेंदुर भाल कुंकुमा चन्दन
पँचरँग भयो यमुन जल जातें ❋ छबि मय लहरि उठत हैं तातें
रूप छटासी तिय गण जामें ❋ करति बिहार लिये घनश्यामें
एक एक अँग भरि भरि लेहीं ❋ हास बिलास करत छबि देहीं

एकन लै अथाह जल डारैं ❋ सुख व्याकुलता रूप निहारैं
इक भाजति इक पाछे धावैं ❋ एक श्याम ढिग पकरि लयावैं
कण्ठ लगाय लेत पिय ताही ❋ सो सुख कवि सों कह्यो न जाही

दो० करत केलि यमुना सलिल, ब्रजललना सँग श्याम।
निशि श्रम मिट आलस गयो, भये सुखी सुखधाम॥

सो० अलख लखी नहिं जाय, अविगति की गति को कहै।
योगी सकत न पाय, सो भोगी ब्रज तियन को॥

जल बिहार बिहरत सुख पाई ❋ रास रंग मनते नहिं जाई
युवती मण्डल करि कर जोरैं ❋ श्यामा श्याम मध्य करि खोरैं
वही भाव मन में उपजावैं ❋ निरखि निरखि मोहन सुख पावैं
बिहरति नारि हँसत नँदनन्दन ❋ अंकम भरि भरि लेत अनन्दन
प्यारी श्याम अंजली डारैं ❋ सो छवि तिय सुख पाय निहारैं
मानहु कमल और इन्दीवर ❋ छिरकत हैं मकरंद परस्पर
जलक्रीडा सुख करत कन्हाई ❋ वर्षत सुमन देव झरि लाई
लीला सागर परम अपारा ❋ कवि किहि विधि करि पावैं पारा
करियत केलि संग ब्रजनारी ❋ आये जल तट निकसि बिहारी
भीगे पट लिपटे तन माहीं ❋ पट अंतर लट चीर चुचाहीं
ठाढ़े यमुना तीर कन्हाई ❋ पुलिन पवित्र परम छवि छाई
निरखत निर्मलतन की शोभा ❋ अरस परस बिहसत मन लोभा

दो० तब इकतरुको बिहँसिकै, आयसु दीनों श्याम।
नाना भूषण बसन बर, तिन बर्षे अभिराम॥

सो० निजनिज रुचि अनुहारि, लै लै ब्रजकी सुन्दरी।
कीनों नवल शृँगार, उर आनँद नाहिं जाय कहि॥

करि शृँगार तन नवलकिशोरी ❋ हरि सम्मुख ठाढ़ीं सब गोरी

निरखि श्यामछबिमन ललचानी ❀ बिदा करत घर को सकुचानी
हँसि बोले तब मदन गुपाला ❀ जाहु सदन अब सब ब्रजबाला
अति आदर दै दै सुखदाई ❀ पाणि परस सब सदन पठाई
निशि सुख टरत न काहू मन तें ❀ चलीं सदन सब बृन्दाबन तें
अति आनन्द रह्यो उर भरिकै ❀ भाँवरि दै आई सँग हरिकै
मन के सुफल मनोरथ कीने ❀ नन्दसुवन हित पति करि लीने
गईं सदन सब हर्ष बढ़ाये ❀ घर घर लोगन सोवत पाये
जग स्वामी हरि यह मत ठानी ❀ ब्रजयुवतिन सबहिन घर मानी
प्रातकाल सब ब्रज जन जागे ❀ निज निज कारज में सब लागे
नन्द धाम गये नँद के लाला ❀ काहू नहिं जान्यो यह ख्याला
यह रहस्य लीला बनवारी ❀ सन्त जनन मन आनँदकारी

छं० यह रहसलीला श्याम की सब संत सुर मन भावनी।
ज्ञान ध्यान पुराण श्रुतिमति सार परम सुहावनी॥
यह मंत्र यंत्र अनंत ब्रतफल ध्यान दंपति को कहै।
भाव करि नित भाव मन बिनु भाव यह सुखही लहै॥
धन्य श्रीशुकदेव मुनि भागवत यह रस गाइये।
निगम नेति अगाध श्रीगुरु कृपा बिन नहिं पाइये॥
सरुचि कहि जे सुनैं सीखैं प्रीति करि जे गावहीं।
ऋद्धि सिद्धि सब कह गनाऊं भक्ति अनुपम पावहीं॥
उर बढ़ै रस नेम दृढ़ पद प्रेम राधा श्याम को।
अब होइ अचल निवास बृन्दाबिपिनघननिज धाम को॥
यहै आशा राखि कै उर सदा ब्रजबासी कही।
कृपा कीजे श्याम श्यामा शरण पद पंकज गही॥

दो० चरित ललित गोपाल के, रास बिलास अनेक।

कापै बरणे जात सब, इतनो कहा बिबेक ॥
सो० इकसी तरै अथाय, ज्यों पिपीलिका सिंधुते ।
कह्यो यथा मति गाय, तिमि ब्रजबासीदास हू ॥

अथ मानचरित्रलीला ॥

नित्य श्याम श्यामा सुखकारी ❀ करत नित्य नव चरित बिहारी
निर्गुण निर्बिकार अबिनासी ❀ भक्त मनोरथ सदा बिलासी
नित बृन्दाबन धाम सुहायो ❀ नित्य रासरस बेदन गायो
भक्तन हेत बिबिध तन धारैं ❀ भक्तन हित लीला बिस्तारैं
सदा भक्तबश कृष्ण कृपाला ❀ दयासिंधु प्रभु दीनदयाला
शरदरैन रस रास उपायो ❀ युवतिन प्रभु निज रूप बनायो
सुफल मनोरथ सबको कीनो ❀ पतिहित करि सबको सुख दीनो
तब कृपालु उरमें यह आनी ❀ सदा भक्त बांछित फल दानी
गोपिन गर्ब्ब रास में कीनो ❀ सो में अन्तर करि हरि लीनो
रही साध इन के मन माहीं ❀ हम को श्याम मनायो नाहीं
पे ब्रजभक्त परम हित मेरी ❀ करौं साध पूरण इन केरी
अब यक मान चरित्र उपाऊं ❀ पाँयन परि परि सबन मनाऊं
दो० करि बिभेद रस रीति में, देहुँ मान उपजाय ।
इनके मुख मंडित बचन, कहवाऊं सुखदाय ॥
सो० सकलगुणन केधाम, परम बिचक्षण रसिकमणि ।
नवरस सागर श्याम, एक प्रेम रस बश सदा ॥
श्रीराधा मन मोहन प्यारी ❀ नव नागरि नव रूप उजारी
रास नित्य रिझये गोपाला ❀ ता रस मगन फिरत नँदलाला
करत भवन शृंगार पियारी ❀ औचक तहाँ गये गिरिधारी

देखि प्रिया पियको हँसि दीनो ❀ हर्षि श्याम अंकम भरि लीनो
रहे थकित छबि अंग निहारी ❀ जात कमल मुख पर बलिहारी
यहि अन्तर पियके उर माहीं ❀ देखि तीय निज तन परछाहीं
झझकि उठी प्यारी भइ न्यारी ❀ अति सनेह भ्रम तुरत बिहारी
और नारि पियके उर जानी ❀ आपुन बिषे प्रीति बड़ि मानी
राखत सदा हिये में वाही ❀ ल्याये मोहिं दिखावन ताही
कियो मान यह भ्रम उपजाई ❀ कहत बचन पिय सों अनखाई
अब जानी पिय बात तुम्हरी ❀ ऊपर ही की प्रीति हमारी
हम सों मुँह की बात मिलावत ❀ यह प्यारी उरमाहिं बसावत

दो० धनि धनि याको भाग्य है, बसत तुम्हारे हीय।
याही सों हित राखिये, अब मनमोहन पीय॥

सो० भली करी सुख मानि, मोहिं दिखाई आनिकै।
यह प्यारी सुख दानि, उरतें जनि न्यारी करौ॥

ऐसे कहि मुसकाय किशोरी ❀ कछु रिस करि जिय भौंह सिकोरी
चकित श्याम लखि सुनि मुखबानी ❀ कहत कहा नागरी सयानी
साँच कहति कैधौं करि हाँसी ❀ कत रिस करि तिय होत उदासी
समझी नहीं कहा जिय आई ❀ झझकि उठी कै अति भ्रम पाई
हँसि भुज गहन लगे मनमोहन ❀ बैठत क्यों नहिं मम प्रियगोहन
मोहिं छुयो जनि दूरि रहौ जू ❀ बसत हिये किन ताहि गहौ जू
तुमहिं चतुर अरु सबै अयानी ❀ हम दासी अरु ये पटरानी
उरमें मन भावती बसाई ❀ हँसी करन को हमैं बताई
लखि लखि प्रिया बदन सुखकारी ❀ हँसत मनहिं मन कुंजबिहारी
कहति कहा भामिनि भइ भोरी ❀ तो बिन उर को बसत किशोरी
तू मम श्रवण नैन मुख बानी ❀ जीवन प्राण अधार सयानी

बृथा क्रोध कत जिय में आनै ❋ मेरो कह्यो नहीं क्यों मानै

दो० सुनो श्याम हिरदे बसत, सो छिपिये न छिपाय।
ज्यों शीशी के माहिं जल, परगट परत लखाय॥

सो० बातें कहत बनाय, यह देखत हम सों हँसत।
जैहै कहुँ अनखाय, उरतें तब पछिताय हौ॥

जो यह कहै करौ तुम सोऊ ❋ वह नागरि तुम नागर दोऊ
मतिहि खिझावो मोहिं कन्हाई ❋ भली करी लै सौति दिखाई
जाहु चले अब मैं सुख पायो ❋ ऐसे कहि मन मान बढ़ायो
रिस करि मौन रही गहि प्यारी ❋ देत मनहिं मन वाको गारी
शोचत श्याम देखि मन माहीं ❋ बोल सकत नहिं प्रियहि डराहीं
कहत बृथा जिय मान न कीजै ❋ नहिं अपराध जानि तिय लीजै
क्यों रिस करति प्रिया मन माहीं ❋ मेरे उर तेरी परछाहीं
यह सुनि कुँवरि राधिका रानी ❋ बोली रिस करि पिय सों बानी
कहा बनावत बातैं हम सों ❋ जाहु चले बोलौं नहिं तुम सों
यह कहि ओट गई है प्यारी ❋ भये बिरह वश तब गिरिधारी
अति व्याकुल तन मन अकुलाहीं ❋ बार बार शोचत मन माहीं
गयो सरोज बदन कुम्हिलाई ❋ तहां एक सखि दूती आई

दो० सो हरिसों बूझति भई, कहहु न मोहिं सुनाय।
आज दशा कैसी लखति, बैठे कहा गँवाय॥

सो० क्यों तन रहे भुलाय, अति व्याकुल देखति तुम्हैं।
रह्यो बदन कुम्हिलाय, ऐसो शोच कहा पर्‍यो॥

बोले श्याम सखी हित जानी ❋ बिरह बिकल कहि जात न बानी
कियो मान बृषभानु किशोरी ❋ मैं कछु नहिं अपराध कियो री
लखि मेरे उर निज परछाहीं ❋ रूसि रही करि कोप बृथाहीं

मैं कहि कै बहु भांति मनाई ❋ नहिं प्रतीति राधा उर आई
बिन समझे इतनो हठ कीनों ❋ तब तें मोहिं मदन दुख दीनों
ऐसे कहि शोचत बलबीरा ❋ लेत चैन भरि श्वास अधीरा
परम चतुर दूतिका सयानी ❋ बिरह बिकलता पिय जिय जानी
कह्यो धीर धरिये बनवारी ❋ चलिये बन को कुंजबिहारी
मैं प्यारी लै तुमहिं मिलाऊं ❋ आज कहा तौ तुम सों पाऊं
गई सदन ते लै बन धामहिं ❋ तहँ बैठारि धीर धरि श्यामहिं
मैं लै आवति राधा प्यारी ❋ कितक बात यह सुनहु बिहारी
मेरे आगे की वह बारी ❋ कहा मान करि है सुकुमारी

दो० ऐसे कहि चातुर अली, आतुर लखि घनश्याम।
श्रीबृषभानुलली जहां, चपल चली ब्रज धाम॥

सो० मन मन रचत सयान, नई बनाऊँ बात इक।
अबहिं छुड़ाऊँ मान, मोसों धौं कहि है कहा॥

हरि सों रूसि मान करि वैसी ❋ अबहीं कहा भई यह ऐसी
करति बिचार यहै मन माहीं ❋ गई सखी राधा के पाहीं
कुँवरि किशोरी परम सयानी ❋ मुख देखतहि दूतिका जानी
सहजहि बोलि ताहि ढिग लीनी ❋ सहजहि कह्यो दया कित कीनी
तुरतहि कहि तब सखी सुनायो ❋ तुम को बन घनश्याम बुलायो
सुनत कही प्यारी अनखाई ❋ काहे को तुम श्याम बुलाई
तू आई याही कूं लीन्हे ❋ मैं अब श्याम भले करि चीन्हे
कहा कह्यो तोकों री आली ❋ तुहूं भली अरु वे बनमाली
उनकी महिमा कहत न आवै ❋ अब इक नई नारि मन भावै
ताको लै उर माहिं बसाई ❋ तोहिं वहां ते टारि पठाई
आज कहा कछु कलह भयो री ❋ कैधौं कछु तैं मान ठयो री

तब वह आज अनमनी बतानी ❀ यह तो कछु मैं बात न जानी

दो० मोसों नहिं कछु हरि कह्यो, सहज पठाई लेन।
कह धौं परी पुकार ह्वां, तुम चलि देखहु नैन॥

सो० कहत सुनाय सुनाय, लै लै तेरो नाम सब।
तैं धौं लियो छुड़ाय, कहि काके काके गथहि॥

काहे को गथ लियो परायो ❀ अपनो नाम कुनाम धरायो
डारि देहु जाको जो लीनो ❀ तेरे बहुत दई को दीनो
तबहीं ते उन शोर लगायो ❀ ता कारण हरि तोहिं बुलायो
हरि तेरी दिशि तें झगरैं री ❀ तू कत उनसों रोस करै री
यह कछु नोखी बात सुनाई ❀ मैं काको धन लियो छिपाई
काहे को हरि झगरत माई ❀ इति माया मोपै कहँ आई
जैसे हैं तैसे हरि जाने ❀ नहिं उनके गुण परत बखाने
बैठि किधौं तू घर जा अपने ❀ मैं उन पै अब जाउँ न सपने
हौं कह तोहिं मनावन आई ❀ मान करौ तुम और सवाई
पर धन ले सब को ब्रज बैठी ❀ कहा करति वातैं यों ऐंठी
देति जवाब सबनि किन जाई ❀ मोपै कह इतनो सतराई
तब तें सबसों लरत कन्हाई ❀ जब मैं तोहिं बुलावन आई

दो० बार बार तू कह कहति, मोकों री टरपाय।
मैं नहिं काहूको लियो, झूंठहिं दोष लगाय॥

सो० लरत कौन सों श्याम, कौने करी पुकार अब।
कहै न तिनको नाम, सांच तबहिं मैं मानिहौं॥

तब बदिहौं ऐसे कहि है री ❀ श्याम निकट बैठे सब बैरी
कहँ लग सब के नाम गनाऊं ❀ एक एक करि तोहिं देखाऊं
नभ जल धरणि बनहु में आये ❀ कहँ लगि मोते जात सुनाये

जो तिनकी नहिं गथहि चुराई ❋ तौ तू कत बन चलति डराई
परी बान तोकों यह कैसी ❋ भली कहति अति लगति अनैसी
श्याम बिना क्यों न्याव चुकै री ❋ तिनहीं सों तू रोस करै री
कोटि करौ एकै पुनि है हौ ❋ वे अरु तुम कछु जियके द्वै हौ
मान कही चल श्याम बुलाई ❋ श्रवण लागि हरि मोहिं पठाई
जिनकी यह सब सौंज तुम्हारे ❋ तजे न हरि पहँ जाय पुकारे
इन्दु कहत मो बदन बिगोयो ❋ अलिकुल अलकन को दुख रोयो
हरिण मीन छबि दृगन दुराई ❋ खंजन हूं तहँ देत दुहाई
शुक की छबि नासा हरिलीनी ❋ बैनन करी कोकिला हीनी

दो० अधर बिम्ब दाड़िम दशन, लूटे कंठ कपोत।
लई तरणि छबि छीनि कै, तरल तरोना जोत॥

सो० चक्रबाक कुच दोय, कटिहरि कदली जंघ लिय।
गजमराल गति जोय, चरण पाणि पंकज हरे॥

ये सब हरिसों करत लराई ❋ तैं जु करी इनसों अधिकाई
अति अनीति लखि कुँवर कन्हाई ❋ पठई मोहिं लेन तोहिं आई
प्रति उत्तर अपनो करि चलिकै ❋ इहां रही कहँ बैठि मचलिकै
सुनि पियके गुण तिय हँसिदीनो ❋ कछु सकुची मन मान जो लीनो
चतुर सखी जियकी सब जानी ❋ सबहीं हरषि कही यह बानी
बान कहा अब तोहिं परी री ❋ जब तब लखि निज छाँह डरी री
ता दिन दर्पण लखि भ्रम कीनो ❋ सो दृग मूंदि मेटि हरि दीनो
आज देखि पिय निज उर छाहीं ❋ कियो इतो हठ कुँवरि बृथाहीं
यह सुनि समुझि मनहिं सकुचाई ❋ सहचरि कंठ बिहँसि लपटाई
रस करि तुरत मान बिसरायो ❋ सुनि बन धाम श्याम सुख पायो
हँसिकै कह्यो सखी सों जा री ❋ तू हरिसों कहि आवत प्यारी

मैं अँग भूषण बसन सँवारी ❁ आवति बनहिं जहां बनवारी

दो० यह सुनि हरषी दूतिका, गई जहां घनश्याम।
अतिब्याकुल तन सुधि नहीं, बिकलकीनोकाम॥

सो० बैठत उठत अधीर, क्योंहूँ सचुपावत न हरि।
बढ़ति बिरह की पीर, श्री राधा राधा रटत॥

राधा बिरह बिकल गिरिधारी ❁ कहूँ माल कहुँ मुरली डारी
कहूँ मुकुट कहुँ पीत पिछौरी ❁ नहिं कछु सुरति भई मति बौरी
कबहुँ मूंदि दृग ध्यान लगावैं ❁ कबहूँ प्यारी के गुण गावैं
कबहूँ लोटत कुंजन माहीं ❁ कबहूँ बैठि द्रुमन की छाहीं
ठाढ़े टेकि कबहुँ द्रुमडारी ❁ लखत प्रियापथ पलक बिसारी
देखि दशा दूतिका सयानी ❁ कही श्याम सों आतुर बानी
काहे कों कदरात बिहारी ❁ मैं ल्याई बृषभानु दुलारी
बिरह बिषाद दूरि करि डारो ❁ नेक धीर अपने मन धारो
सुनि प्यारी को नाम कन्हाई ❁ मिले दूतिका सों उठि धाई
कहां प्रिया कहि अति अकुलाये ❁ नैन सरोज नीर भरि आये
तब हँसि कह्यो दूतिका ग्वारी ❁ आवत प्रिया अबहिं बनवारी
मैं जु प्रतिज्ञा तुम तें कीनी ❁ बिधिना आज राखि सो लीनी

दो० अब अपने मन हर्ष करि, दूर करो संदेह।
आवति है बृषभानुजा, भुज भरि अंकम लेह॥

सो० सुख शोभाकी खान, नहीं कुँवरि बृषभानुसी।
तुमसम धन्य न आन, बड़भागिनि तुमबशभये॥

रसिक पुरंदर प्रभु सुख दानी ❁ सुनत सिहात दूतिका बानी
पुलकत अंग धीर नहिं धारैं ❁ पुनि पुनि प्यारी पंथ निहारैं
निज कर सुमन सुगंध लगावैं ❁ कुंजभवन रुचि सेज बनावैं

अति कोमल तन जानि पियारी ❀ सेज कली चुनि करत नियारी
जे द्रुमलता लटकि तन लागैं ❀ ते ऊपर धरि मन अनुरागैं
प्रेम प्रीति रस बश जग स्वामी ❀ करत चरित मानहुँ अति कामी
देखि श्याम की आतुरताई ❀ हँसति सखी मन हर्ष बढ़ाई
जानि प्रेम बश हरि सुख रासा ❀ गई बहुरि प्यारी के पासा
करि शृंगार नवल तन गोरी ❀ राजत श्री बृषभानु किशोरी
सहज रूप की राशि कुमारी ❀ भई अधिक छबि भूषण भारी
अंग अंग छवि पुंज बिराजैं ❀ निरखि मदन तिय कोटिक लाजैं
त्रिभुवन की छबि मनहुँ बटोरी ❀ बिधि कीनी बृषभानुकिशोरी

दो० देखि रूप मन मदन सखि, बोली बचन सँभार।
धन्य धन्य राधा कुँवरि, तुम गुण रूप अपार॥

सो० तो समान नहिं तीय, तिहुँपुर सुन्दरि नागरी।
बसति सदा पिय जीय, तू मोहन मन भावनी॥

चलहु बेगि अब सहित हुलासा ❀ लागि रही पिय की इत आसा
तेरोइ नाम जपत मन लाई ❀ गावत तव गुण कुँवर कन्हाई
तुव तन परस पवन जो जाहीं ❀ उठि आतुर परिरम्भत ताहीं
तेरो रूप आनि उर अंतर ❀ धरत ध्यान दृग मूंदि निरंतर
रमी श्याम तू तन मन जाते ❀ राधा रमण नाम है ताते
सुनि सहचरि के मुख की बानी ❀ पुलकि प्रफुल्लित मृदु मुसकानी
पिय को प्रेम समुझि सुख पाई ❀ चली मिलन गजगति हर्षाई
मुख शशि कनक लतासी गोरी ❀ बाल हरिण छबि नैन किशोरी
भूषण बसन अनूप सुहाई ❀ अंग अंग शोभित छबि छाई
अंग सुगन्ध मनोहर ताई ❀ भँवर भीर चहुँ ओर सुहाई
हँसि हँसि कहति सखी सों बातैं ❀ झरत सुमन जनु रूप लतातैं

ऐसे करति प्रकाश पियारी ❀ गई जहां प्रभु कुंजबिहारी

दो० परम प्रेम दोऊ मिले, श्री राधा नँदनंद।
गुण आगर नागर युगल, छबि सागर सुखकंद॥

सो० जो प्रभु परम अपार, बेद भेद जानत नहीं।
सो ब्रज करत बिहार, बरणि पार को पावहीं॥

कुंजन मंजु फलन छबि छाई ❀ भँवर गुंज छबि पुंज सुहाई
फूलन सेज रुचिर रचि कीनी ❀ चित्र विचित्र रंग रस भीनी
फूले खग गण करत कलोलैं ❀ जहँ तहँ मधुर मनोहर बोलैं
फूली बृन्दाबन तरु डारी ❀ तन मन फूले पिय अरु प्यारी
सहचरि सहित मनोहर जोरी ❀ राजत युगल किशोर किशोरी
हाव भाव करि रस उपजावैं ❀ हास बिलास करत सुख पावैं
सखी कह्यो तब कै अब नीके ❀ सकुचि हँसी प्यारी सँग पीके
नैन कोर पिय को हिय ताक्यो ❀ तबहिं श्याम पीताम्बर ढाक्यो
यह छबि निरखि सखी बलिजाई ❀ अचल रहो जोरी सुखदाई
धनि राधा धनि कुँवर कन्हाई ❀ धन्य मान रसकेलि सुहाई
धन्य कुंजबन धनि महि पावन ❀ धन्य लता द्रुम सुमन सुहावन
धन्य सखी धनि सब ब्रजबासी ❀ जिन सँग बिहरत प्रभु सुखरासी

दो० गये श्याम श्यामा सदन, सखीसहित सुखपाय।
मानचरित रसकेलिकर, ब्रजबासी बलिजाय॥

सो० मान चरित्र अनूप, जे सुभाव गावहिं सुनहिं।
ते न परैं भव कूप, राधाकृष्ण प्रताप ते॥

करत चरित नाना गिरिधारी ❀ सुख सागर भक्तन हितकारी
जाको शिव अज ध्यान लगावैं ❀ सनकादिक मुनि जप करि ध्यावैं
जा प्रभुको यश परम बिशारद ❀ गावत अहि पति नारद शारद

सकल अनीह अकाम अभोगी ❋ योग समाधि न पावत योगी
सो प्रभु सब के अन्तर्य्यामी ❋ युवतिन प्रेम भक्ति बश कामी
बहु नायक है करत बिहारा ❋ ब्रजपुर घर घर नंद कुमारा
रसलीला नाना उप जावैं ❋ काहु रुठावैं काहु मनावैं
अरस परस तिय सब यह जानैं ❋ हरि हैं सब के धाम लुभानैं
अवधि बदत काहू सों जाई ❋ काहू के घर बसत कन्हाई
सांझ कहत जाके घर आवन ❋ जात प्रात ताके मन भावन
ब्रज गोपी जिनको पति जानैं ❋ कोउ आदरहिं कोऊ अपमानैं
खंडित बचन सुनत सुखदाई ❋ यह लीला हरि के मन भाई

दो० ब्रज में करत बिहार हरि, ब्रज बनितन के संग।
अखिल काम पूरण करन, भरे प्रेम रसरंग॥

सो० कोटि काम कमनीय, सुंदर सुख सागर नवल।
रमणी मन रमनीय, ब्रजभूषण ब्रजलाड़िलो॥

ब्रज बीथिन नँद नन्दन ठाढ़े ❋ अंग अंग सुन्दर छबि बाढ़े
ललिता आय गई तिहिं पैंड़े ❋ मन मोहन रोकी मग बैंड़े
देखत छबि ललिता ललचानी ❋ बोली बिहँसि श्यामसों बानी
कत रोकत मग में बिन काजे ❋ जाहु चले जितहो हित साजे
झूठहि इतो सनेह जनावैं ❋ कबहुँ हमारे धाम न आवैं
हरि हँसि कह्यो आज निज ऐहैं ❋ तेरी सों हम अनत न जैहैं
ऐसे कहि मधुरे मुसुकाई ❋ छांड़ि दई मग छैल कन्हाई
ललिता गई सदन सुख मानी ❋ ऐहैं श्याम आज यह जानी
सांझहि ते हरि पन्थ निहारै ❋ धाम आपने सेज सँवारै
भूषण बसन नवल तन साजै ❋ खञ्जन ते दृग अञ्जन आँजै
सुमन सुगन्ध अनूप मँगाई ❋ रचि रुचि राखति माल वनाई

कबहूं ठाढ़ी होति दुवारे ❁ कबहूं लखति गगन के तारे

दो० कहति श्याम आये नहीं, होन लगी अधरात।
गये आशदे मोहिं पुनि, कहा धरी जिय बात॥

सो० वे बहु नायक श्याम, किधौं लुभाने अनत कहुँ।
मन मन शोचत बाम, कारण कह आये नहीं॥

कैधौं कछु ख्यालहि चित दीनों ❁ कैधों मात पिता डर कीनों
कैधौं सोय रहे अलसाने ❁ कै मो घर आवत सकुचाने
ऐसे शोचति रैनि बिहानी ❁ जहँ तहँ बोले तमचुर बानी
तब बैठी अपनो मन मारी ❁ कछू शोच कछु रिस उर धारी
हरि निशि बसे सखी शीला के ❁ सुंदर श्याम धाम लीला के
तहँ सुख सोवत रैन गँवाई ❁ प्रात होत ललिता सुधि पाई
चले सहज शीलासों कहि कै ❁ जिय सकोच ललिता को गहिकै
आयो ललिता सदन बिहारी ❁ चितैरही मुख की छबि प्यारी
अञ्जन रेख अधर पर राजै ❁ पीक लीक नैननि छबि छाजे
सोहत ललित कपोलन टीको ❁ लाग्यो बदन काहु को नीको
तुरत मुकुर लै उठी सयानी ❁ दिखरायो हरि सम्मुख आनी
कहति देखि निज बदन निहारो ❁ लाल कहाँ ते प्रात सिधारो

दो० पीक पलक अंजन अधर, देखि श्याम सकुचाय।
रहे निचौंहैं नैन करि, बचन कह्यो नहिं जाय॥

सो० ज्योंज्योंसकुचतश्याम,त्योंत्योंहठिनागरिकहति
देखहु छबि अभिराम, हाहा मुख कत फेरियत॥

सकुचत कहा बोल के साँचे ❁ आये तौ मो गृह रँग राँचे
रैनि नहीं तो प्रातहि आये ❁ धनिधनि वह जिन स्वाँग बनाये
तुम जिन मानहु बिलग कन्हाई ❁ मैं तौ करति अनन्द बधाई

क्यों मोहन दर्पण नहिं देखौ ❁ मूधे मोतन काहेन पेखौ
ठाढ़े कत बैठत क्यों नाहीं ❁ कछु कछु चूक परी हम पाहीं
रहे मूक ह्वै कहा ठगेसे ❁ सोहत हौ अलसात जगेसे
उत्तर मोहिं देत क्यों नाहीं ❁ मैं तबहीं ते बकत बृथाहीं
तब चितये दृग कोर कन्हाई ❁ भाव अतिहि आधीन जनाई
ग्वालि प्रबीन जान सब लीनो ❁ तुरत रोष उरते तजि दीनो
हँसि करि मोहन कण्ठ लगाये ❁ भले श्याम ऐसेहू आये
श्रमित अंग जागे निशि जानैं ❁ अति सनेह मनहीं मन मानैं
अंग सुगन्ध मर्दि अन्हवाये ❁ बसन अभूषण दै बैठाये

दो० रुचि भोजन दै सेज पर, पौढ़ाये घनश्याम।
रसबश करि नवनागरी, किये सुफल मनकाम॥

सो० सुर मुनि सकत न पाय, प्रभु ब्रजबासीदासको।
प्रेम प्रीति बश आय, सो गोपीबल्लभ भये॥

कहत सौंह करि रसिकबिहारी ❁ तुम प्रिय म्वहिं प्राणहुँ ते प्यारी
सदा बसत तुम मो मन माहीं ❁ तुम बिन लहत अनत सुख नाहीं
ऐसे कहि अति प्रीति जनावैं ❁ चतुर बचन कहि चितहि चुरावैं
यहै भाव युवतिन सों भाखैं ❁ सबहिनके मनकी रुचि राखैं
कुल मर्याद लोक डर त्यागी ❁ सब गोपी हरिसों अनुरागी
बिन देखे रिस भाव बढ़ावैं ❁ नैनन देखतही सुख पावैं
ब्रह्म सनातन जग सुखकारी ❁ यह लीला ब्रज में बिस्तारी
ललिता को सुख दै सुखसागर ❁ चले सदन अपने नटनागर
उत तें मग आवति चन्द्रावलि ❁ देखि रही सुंदर छबि सांवलि
बने बिशाल कमलदललोचन ❁ चितवत चारु मार मदमोचन
इत मुसकाय श्याम तेहि हेरी ❁ खोर सांकरी भइ भटभेरी

बिहँसि कह्यो चन्द्रावलि प्यारी ❀ कहां रहत हरि हमहिं बिसारी
दो० तुम कैसे बिसरति प्रिया, हँसि बोले घनश्याम।
आज आय सुख लेहिंगे, रैनि तुम्हारे धाम॥
सो० सुनि हरषी जिय बाम, चली सदन मुसकायके।
लखि सुख पायो श्याम, मुदित गये अपने भवन॥
चन्द्रावलि मन अधिक उछाहू ❀ फूली फिरत कहति नहिं काहू
सुख के करत मनोरथ नाना ❀ बासर कल्प समान बिहाना
भये अस्त रबि निशि नियरानी ❀ उडुगण ज्योति देखि हरपानी
हरि सुखमा के भवन सिधाये ❀ चन्द्रावलि के भवन न आये
सूने घर देखी सो ग्वाली ❀ आतुर गये तहां वनमाली
सुखमा लखि हरिको सुख पायो ❀ अतिही आदर करि बैठायो
कोककला कोबिद बर नारी ❀ हाव भाव मोहे गिरिधारी
बसे तहां मोहन सुख पाई ❀ चन्द्रावलि की सुरति भुलाई
इत चन्द्रावलि सेज सँवारै ❀ बार बार हरि पन्थ निहारै
कबहुँ भवन कबहूं अँगनाई ❀ कबहूं रहति द्वार टकलाई
कबहूं शोच करति मनमाहीं ❀ आवहिंगे मोहन कै नाहीं
कबहूं आलस कछु जियजानी ❀ धोवति है नयनन लै पानी
दो० कबहुं कहति हरि आय हैं, उर में हर्ष बढ़ाय।
कबहुंबिरहब्याकुलजरति, अतिआकुलअकुलाय॥
सो० कबहुं कहत सुख पाय, बहुरमणी रमणीय पिय।
बसे अनत कहुं जाय, मोसों झूठी अवधि बदि॥
ऐसेहिं ऐसे रैनि बिहानी ❀ सुनी श्रवण बायसकी बानी
भई काम दुख बाम उदासी ❀ जाने श्याम कपट की रासी
कहति नाम करि मन के माहीं ❀ श्याम नाम खोटो सब आहीं

कोकिल श्याम श्याम अलि देखो ❋ श्याम जलद अहि श्याम बिशेखो
तिनहीं की करनी हरि लीनी ❋ मोसों प्रीति कपट की कीनी
ऐसे क्रोध बिरहबश बाला ❋ सुखमा सदन रहे नँदलाला
प्रात भये उठि चले तहां ते ❋ आलस भरे नैन रँग राते
चन्द्रावली सदन चलिआये ❋ ठाढ़े अजिर रहे सकुचाये
मन्दिर ते रिस भरी गुवारी ❋ नख ते शिखलौं रही निहारी
मनमनकहतिकुटिलअतिगिरिधर ❋ प्रात होत आये मेरे घर
कियो मान मन में अतिभारी ❋ आँगन में ठाढ़े बनवारी
और नारिके चिह्न बिलोकी ❋ रोकति रिसहि रुकत नहिं रोकी

दो० तब बोली करि मान तिय, कहा काम मम धाम।
ताही के घर जाइये, बसे जहां निशि श्याम॥
सो० प्रात दिखावन मोहिं, आये रंग बनाय के।
मैं सुनि पायो जोहिं, भले बने हौ लाल अब॥

बिन गुण शोभित है उर माला ❋ बीच रेख मुखचंद रसाला
अधर दीपसुत रेख सुहाई ❋ नागबेलि रँग पलक रँगाई
लटपटि पाग महावर लाये ❋ आलस नैन अरुण छबि छाये
चंदन भाल मिल्यो कहुँ बंदन ❋ यह छबि अधिक बनी नँदनंदन
बलय गाढ़ पर पीठि धरे हौ ❋ जान्यो नागरि अंक भरे हौ
इतने पर डाहन म्वहिं आये ❋ सौंह करन को इत उठि धाये
जाउ तहीं जासों मन मान्यों ❋ जैसे हौ तैसे मैं जान्यों
बिहँसि कह्यो तब लालबिहारी ❋ तुमतें और कौन म्वहिं प्यारी
तुम बिन मोहिं कहूं कल नाहीं ❋ बसत सदा मन तेरे माहीं
यह चतुरई कहां पढ़ि आई ❋ चीन्हे हौ गुण राशि कन्हाई
यह कहि गई भवन में भामिनि ❋ रीझे श्याम देखि छबि कामिनि

सन्मुख जाय भये पुनि ठाढ़े ❋ द्वार कपाट दिये तिन गाढ़े
दो० पौढ़ि रही तिय सेज पर, बदन मूंदि अनखाय।
हरि तन पुनि चितयो नहीं, उर में प्रेम बढ़ाय॥
सो० प्रभु गति लखी न जाय, जो चाहैं सोई करैं।
पौढ़ि रहे सँग जाय, पौढ़ी तिय जहँ मान करि॥
जो देखै तौ संग कन्हाई ❋ चली बहुरि तिय सो उठि धाई
खोलि कैंवार अजिर में आई ❋ देखे ठाढ़े जहां कन्हाई
बिनय करत नैनन की सैनन ❋ चकित भई देखति तिय नैनन
भीतर भवन गई पुनि प्यारी ❋ तहँ अंकम भरलई मुरारी
तब नागरि रिस सबै भुलाई ❋ चेटक करि वश करी कन्हाई
मान छुड़ाय हुलास बढ़ायो ❋ तिय को सुख दीन्हो सुख पायो
तब निज धाम गये गिरिधारी ❋ चंद्रावलि उर आनँद भारी
तहां सखी दश पांचक आई ❋ चंद्रावलि बैठी जेहि ठाई
औरै बदन और अँग शोभा ❋ निरखि रही दृग द्वै मन लोभा
कहत प्रिया कह हर्ष बढ़ायो ❋ कहै न लूट कहूं कछु पायो
क्यों अँग शिथिल मरगजी सारी ❋ यह छबि कही न जात महा री
हम सों कहा दुरावति प्यारी ❋ हम जाने त्वहिं मिले बिहारी
दो० चंद्रावलि करि चतुरई, ज्वाब सखिन नहिं देह।
रही मूंद मुख मंद हँसि, भीजी श्याम सनेह॥
सो० रह्यो ध्यान उर छाय, वह लीला बिसरे नहीं।
मुख सों कह्यो न जाय, गूंगे को गुरु सो भयो॥
तब बोली बूझति कह आली ❋ युवती मन मोहन बनमाली
है लीला अद्भुत सब जिनकी ❋ कही न जात बात सखि तिनकी
हा हा कह चंद्रावलि हमसों ❋ हमहूं सुनैं श्याम गुण तुमसों

कै त्वहिं मिले यमुन के तीरा ❋ कै त्वहिं मिले भवन बलबीरा
तब चंद्रावलि गद गद बानी ❋ हरष सहित हरि कथा बखानी
सुनि हरि चरित ललित सुखकारी ❋ भई प्रेम वश सब ब्रजनारी
चंद्रावलि धनि धन्य कही तब ❋ कहन लगीं हरिके गुण गण सब
नंदनँदन सब लायक हैं री ❋ सबहिन के सुखदायक हैं री
बसे रैनि काहू के जा री ❋ काहू देत प्रात सुख आ री
काहू को मन आय चुरावैं ❋ काहू सों अपनो मन लावैं
काहू के जागत सिगरी निस ❋ काहू को उपजावत हैं रिस
ब्रजबासी प्रभु के मन भावैं ❋ तैस्यइ तैसे चरित उपावैं

दो० यह लीला आनँद भरी, सकल रसन को सार।
भक्तन हित हरि करत हैं, गाय तरत संसार॥

सो० घर घर करत बिहार, ब्रजयुवतिन के संग हरि।
गावत हैं श्रुति चार, ब्रजबासी प्रभु के यशहि॥

श्री राधा बृषभानु दुलारी ❋ नंदनँदन पियकी अति प्यारी
सहज रहे अपने मन माहीं ❋ नंदसुवन निशि अंत न जाहीं
नंद भवन कै मेरे गेहा ❋ रहौ सदा चित यही सनेहा
श्याम बसे काहू नारी के ❋ आये प्रात सदन प्यारी के
रतिरँग चिह्न अंग परवाने ❋ सोहत नैन अरुण अलसाने
प्यारी देखि रही मुख पियको ❋ जान्यो अंग लग्यो कहुँ तियको
तब मन बिहँसि कह्यो श्रीराधा ❋ आज बन्यो पिय रूप अगाधा
परउपकार हेतु तन धार्‌यो ❋ पुरवन सबकी साध बिचार्‌यो
कहां पढ़ी यह नीति बताओ ❋ हमहूं को सो ठाम सुनावो
कहौ कहां काको सुख दीनो ❋ धनि धनि यह उपकार जु कीनो
धनि यह बात आज मैं जानी ❋ क्यों नहिं कहियत प्रकट बखानी

धन्य मोहिं यह दरश दिखायो ❀ धनि धनि जासों नेह लगायो

दो० भली दिखाई आज यह, अद्भुत छवि अभिराम।
सूर उदय लोचन कमल, चंद उदय पर श्याम॥

सो० उर कुच कुंकुम दाग, अधर दशन छवि राजई।
रँगी महावर पाग, यह शोभा अनुपम बनी॥

क्यों उठि भोर यहां को आये ❀ काहे को इतने रस भाये
तुमहूँ भले भली हैं वोऊ ❀ कीनो भलो भले मिलि दोऊ
कीनो है इतनो हित जिनतें ❀ तो अब किन बिछुरेहो तिनतें
जाहु तहीं वे सुनि दुख पैहैं ❀ बहुरो तुमसों मन न मिलैहैं
तिनहीं को सुख दीजे मोहन ❀ जिनसोंनिशिबिलसेमिलिगोहन
तिय सनमुख नहिं लखत कन्हाई ❀ बदन नवाय रहे सकुचाई
कबहुं नैन की कोर निहारैं ❀ कबहुं चरण नख भूमि उखारैं
प्रकट त्रसित मन मन मुसकाई ❀ खंडित वचन सुनत हरषाई
पिय को सुख प्यारी नहिं जानै ❀ रोष करतहूं पिय मन मानै
ज्वइ आवत स्वइ कहत बदनतें ❀ जाहु जाहु पिय कहति सदनतें
तुम जानत पिय हमहिं सयाने ❀ और बसत सब लोग अयाने
रैन बसत कहुं भोर हमारे ❀ आवत जाहि लजात ललारे

दो० तबहिं श्याम बानी मृदुल, बोले अति सकुचाय।
किन देख्यो कौने कह्यो, झूठहि तुमसों आय॥

सो० कहति झूठ यह बान, खोटी ब्रजनारी सबै।
तुमतें प्रिय को आन, सौंह करौं जो मानिये॥

बिनहीं बोले रहिये जू पिय ❀ कत ऐसे वचनन दहिये हिय
झूठी सबै एक तुम सांचे ❀ नीके लाज छांड़ि कै नांचे
सौंह कहूं करिबो सुनि पायो ❀ सो अब इहां काम है आयो

ऐसे खिजत पियासों प्यारी ❋ आई तहां और ब्रजनारी
सखियन देखि कुँवरि मुसकाई ❋ उर अंतर है रिस अधिकाई
तिन्हैं कह्यो सैनन में प्यारी ❋ देखहु हरिकी छबिहि निहारी
मौनहिं रहे श्याम सकुचाई ❋ युवति बिलोकति छबि अधिकाई
कहति सबै हँसि हँसि ब्रजबाला ❋ कहँ पाई छबि यह नँदलाला
तबहिं सखिनसों कह्यो किशोरी ❋ करत इते पर सौंह लखोरी
निशि औरनके चितहि चुरावत ❋ दरशन देन प्रात इत आवत
तुमहीं अंग चिह्न पहिचानो ❋ सही परै सो बात बखानो
कृपा करैं तहँहीं पग धारैं ❋ नहीं काज इहँ बेगि सिधारैं

दो० प्यारीउर अतिरोषलखि, अरु सखियनकी भीर।
तब वहँ ते बहराय कै, द्वार गये बलबीर॥

सो० शोच करत उर माहिं, भरे बिरह आनंद रस।
जाय सकत कहुं नाहिं, मनमें प्यारी डर डरत॥

अथ मध्यममानलीला॥

जबहीं श्याम गये द्वारे तन ❋ कियो मान प्यारी अपने मन
कहति सखिन से देखो तुम अब ❋ बहुरि दोष देती मोकों तब
ऐसे श्याम गुणन के आगर ❋ चोरत चित्त फिरत अति नागर
ऐसे ख्याल मोहिं दिख रावैं ❋ जान देहु अब ह्यां जनि आवैं
इहां काज उनको कछु नाहीं ❋ मैं बैठी अपने घर माहीं
जाव तुमहुं अपने सब कामहिं ❋ यों कहि प्रिया गई उठि धामहिं
नख शिख रोष भरी पिय प्यारी ❋ यौवन रूप गर्व उर भारी
चली सखी बहु दशा निहारी ❋ द्वारे पर बैठे बनवारी
कहति सुनो मोहन पिय हमसों ❋ प्रिया रोष कीनो अब तुमसों
तुम्हरे आवत अति रिस पाई ❋ यह तुम कहा करी चतुराई

सुनत बात यह कुँवर कन्हाई ❀ भये चकित अति गये झुराई
जान्यो मान कियो फिरि प्यारी ❀ भये विरह व्याकुल तन भारी

दो० तब सखियन हरिसों कह्यो, चतुर कहावत नाम।
करत फिरत ऐसे गुणन, अब कच्यात कत श्याम॥

सो० तुमहिं करायो मान, अटपट रूप दिखाय के।
अब लागे पछितान, प्रथम विचार कस्यो नहीं॥

यह सुनि धीरज कियो कन्हाई ❀ तब इक युवती और बुलाई
तासों कहि सब बात जनाई ❀ दूती करि हरि ताहि पठाई
कहत श्याम तासों यह बानी ❀ वेगि मिटै जिय मान सयानी
दूती गई करति मन साधा ❀ बैठी तहां जाय जहँ राधा
प्यारी मान ठानि दृग बैठी ❀ हृदय रोष भौंहैं करि ऐंठी
दूती कछू हाथ नहिं पावैं ❀ विना भीत कह चित्र वनावैं
उरमें सौति शाल अति शालै ❀ नेक नहीं इत उत कहुं हालै
मनहीं मन दूती पछिताई ❀ अति आतुर म्वहिं श्याम पठाई
यह इत उत कहुं नाहिं निहारै ❀ कहा करों मन मांझ विचारै
तब कहि उठी दूतिका नारी ❀ मान कियो बृषभानु दुलारी
कहा करों मोहन अति कीन्ही ❀ उनकी बात आज मैं चीन्ही
ऐसे मैं उनको नहिं जानै ❀ अब कैसे उनसों मन मानै

दो० घरघरडोलतफिरतनिशि, बोलतलगत न लाज।
आय देखाये प्रात म्वहिं, टटके रति रँग साज॥

सो० मैं आई अब बाज, जित चाहौ िततही फिरौ।
उनको यहां न काज, राज करौ ब्रजमें सदा॥

दूती सुनि प्यारी की बानी ❀ अंतर प्रेम रोष लपटानी
कह्यो यमुन ते मैं गृह आई ❀ सखी एक यह बात जनाई

तब मैं रहि न सकी घर माहीं ❀ भली प्रकृति हरिकी यह नाहीं
अब द्वारे ते हरि न टरत हैं ❀ पर घर जान कि सौंह करत हैं
मन पछितात कहत घनश्यामा ❀ भूलेहु ऐसो करहुँ न कामा
तू जनि मान तजै सुनि मोसों ❀ यहै कहन आई मैं तोसों
अब समझे अरु हम समुझावैं ❀ पर घर जान कि बात मिटावैं
अब मोकों यह बात लखाई ❀ जाहिं न पर घर कुँवर कन्हाई
जब दूती यों बात बखानी ❀ द्वारे हैं हरि तब यह जानी
उमँगि उठ्यो रस सुनि मन माहीं ❀ बाहर प्रकट कियो सो नाहीं
काहू के हरि द्वार खरे री ❀ कौने राखे जाय घेरे री
तू रहि मान कहति रिस पावति ❀ यह हरि सों मैं ही कहि आवति

दो० लई तिय के हीय की, चतुर दूतिका जान।
अति आतुर हरि पै गई, कहति आनकी आन॥

सो० कही मनाऊं लाल, नेकु मरम नहिं पाइये।
दीठ न जोरति बाल, सूधे मुख बोलत नहीं॥

अपनी सी बहुतै मैं भाषी ❀ सुनि उन मौन हृदय धरि राखी
नेक नहीं उत्तर मुख बोलै ❀ अति रिस कम्पत इत उत डोलै
मैं जु कही सो सुनहु कन्हाई ❀ भई बूंद बारू की नाई
भरि भरि लेत नैन दृग कोरै ❀ नहीं डरत बैठी मुख मोरै
तिरछी करि करि भौंहन तानै ❀ कोटि कोटि अवगुण मुख गानै
ऐसी है वह ईठ तुम्हारी ❀ कहा बसीठ करै कोउ नारी
सुनहु रसिक बर कुँवर कन्हाई ❀ आपहि लीजै जाय मनाई
याको नाम भयो गढ़वाई ❀ लीजै ताहि सुरंग लगाई
यह सुनि बिरह भये बनवारी ❀ मुरछि परे धर सुरति बिसारी
सखी उठाय लये अँकवारी ❀ यों कत बिकल होत बलिहारी

नागर बड़े कहावत कौ जू ❀ धीर धरौ सुख पावत हौ जू
बातन नेकु ताहि गहि पाऊं ❀ तौ तबहीं मैं तुमहिं मिलाऊं
दो० धीरज दै घनश्याम को, दूती गई उताल।
जाय कह्यो प्यारी निकट, परे श्याम बेहाल॥
सो० मुख नहिं बोलत बैन, अति व्याकुल तेरे विरह।
भरि भरि डारत नैन, कहा कहौं न सँभार कछु॥
बारहि बार कहति पछितानी ❀ देकर मुख जो कुँवरि सयानी
तूही प्रिया भावती हरिकी ❀ और नहीं कोऊ तू सरिकी
तेरेहि रसबश कुँवरकन्हाई ❀ तेरे तनक विरह कुम्हिलाई
तेरेहि रूप अधीन खरे री ❀ तेरेहि चितवन के चेरे री
तेरेइ रंग बसन तन धारैं ❀ तेरेइ रँग को तिलक सँवारैं
चन्द्र बदन तेरो लखि गोरी ❀ मोर चन्द्र शिर मुकुट कियोरी
तेरोइ चरित सुनै अरु गानै ❀ तू मानै भावै जिन मानै
अति अनुराग श्याम को तेरो ❀ करि विचार नीके मैं हेरो
जो जाको नीके करि जानै ❀ सो तासों तैसे हित मानै
यहै प्रीति की रीति पियारी ❀ कहे तु बोलि लेहु गिरिधारी
तू कह गई कहन कह आई ❀ मैं जानति हरि तोहिं पठाई
मानति कौन कही अब तेरी ❀ जानतिहौं हरिचरित बड़ेरी
दो० अबधों को तिनसों मिलै, जिन्हैं परी यह बान।
उर में राखत आन कछु, कहत करत कछु आन॥
सो० हैं वे कपट निधान, बहुनायक पूरे गुणन।
जिनको करत बखान, जिनबामनह्वै बलिछल्यो॥
मान किये अब नाहिं बने री ❀ देखु विचारि हिये अपने री
जाके गुणगण सुर मुनि मोहैं ❀ सो तेरे गुणगण मणि पोहैं

सनकादिक जेहि ध्यान लगावैं ❀ सो तेरे दरशन सुख पावैं
शिव बिधि जाके द्वार खरे री ❀ सो प्रभु तेरे द्वार परे री
जाके पद कमला कर लीन्हे ❀ सो प्रभु पद चिंतत मन दीन्हे
अति आतुर नँदलाल हिये री ❀ सौंह करत हौं शीश छुये री
सुनु प्यारी अति हठ नहिं कीजे ❀ सर्बस वारि श्याम पर दीजे
यह यौबन बर्षा को पानी ❀ गर्ब न कीजे याहि सयानी
सब सुख हरि के संग किये री ❀ कृष्ण विमुख के काल जिये री
पूरब पुण्य सुकृत फल तेरो ❀ भामिनि मान कह्यो कर मेरो
हरिके रस रँग जो मन भीजे ❀ रूप सुधा जो नयनन पीजे
सौंह चरण तेरेसी कीजे ❀ सुफल दरश दिश तौ यों जीजे

दो॰ बृथा जान नहिं दीजिये, हरिसों करिकै मान।
उठति बैसकै दिनन कौ, सुनि तिय यहै सयान॥

सो॰ हिलमिल करैं कलोल, मैं तेरे हितकी कहति।
लेहि श्याम को बोल, परे द्वार बिलपत दई॥

सोई चतुर सुलक्षण नीकी ❀ सदा भावती जो पियजीकी
यौबन गुण द्युति अरु हित पीको ❀ है सुन्दर तेरे शिर टीको
तेरे हित सब ब्रज की बाला ❀ कियो बुलाय रास नँदलाला
तू तन श्याम प्राण री प्यारी ❀ परछाईं अरु सब ब्रजनारी
तोसी और नहीं ब्रज गोपी ❀ तेरइ रूप बसे तिय ओपी
सुन्दर श्याम सकल सुख दायक ❀ कहा भयो री वह शोभायक
तुव समान बृषभानुलली को ❀ शशिहि कहावत कुमुद कलीको
ऐसे जब दूती समुझाई ❀ तब बोली तिय कछु सुख पाई
बादहि बकति आय मेरे घर ❀ बेधति ऐसे बचन सरासर
उतकी इत इत की उत जाई ❀ मिलवत झूठी बात बनाई

जो चहिहैं तो आपहि ऐहैं ❋ सौंह करैं अरु हा हा खैहैं
प्रीति रीति कछु समुझति नाहीं ❋ जोइ आवति सोइ कहति बृथाहीं

दो० जब प्यारी ऐसे कह्यो, सखी लियो तब जानि।
मानत नाहीं लाड़िली, श्याम मनावो आनि॥

सो० कह्यो सखी मुसकाय, नहिं मानत मेरो कह्यो।
श्याम मनावैं आय, मैं जानी तब मानि है॥

अरी मान वे बहुतें तेरे ❋ लगत मान नीकोई हेरे
हाँसी खेल और को माई ❋ तुलत न तेरे बिरस रुखाई
ऐसे ही रहि जो लगि पाऊं ❋ यह सुख हरि को आन दिखाऊं
पिय मन नूतन चोप बढ़ाऊं ❋ अति रस रूप अनूप उपाऊं
यह कह गई श्याम पै आली ❋ कहत अजू सुनिये बनमाली
मानति नाहिं मनायो प्यारी ❋ को जानै जिय में कह धारी
हा हा करि मैं बहु समुझाई ❋ सुनतै अधिक होति रिसहाई
तुम आतुर वैसी गति वाकी ❋ आवति जाति बीच मैं थाकी
आपहि चलि लीजिये मनाई ❋ और भांति नहिं बनत बनाई
बहै बयारि जैसिये जबहीं ❋ पीठ आड़िये तैसी तबहीं
मोसी जो पठवो तुम कोरी ❋ नहिं मानत बृषभानुकिशोरी
हौं तो कहति तुम्हारे हितकी ❋ पाई है कछु वाके चितकी

दो० चले बनति है लाल अब, और यत्न नहिं कोय।
काछ काछिये जौन हरि, नाच नाचिये सोय॥

सो० आप काज महकाज, बड़े कहि गये बात यह।
तजहु श्याम उर लाज, करि बिनती तिय सों मिलहु॥

चलो चले तुम्हरे हठ जैहैं ❋ देखत प्रेम उमँग उर ऐहैं
सखी संग तब नवल बिहारी ❋ गये भवन बैठी जहँ प्यारी

आगे भये सकुचि के ठाढ़े ❋ अति आधीन प्रेम रस बाढ़े
नेक नहीं इत उत कहुं डोलें ❋ चित्र लिखे से मुख नहिं बोलें
यदपि लाल गाढ़े अति जीके ❋ सकल सयानप भूले नीके
प्यारी देखि पियहि मुसकानी ❋ जिय डरते मोते यह जानी
अति आनन्द भयो मन माहीं ❋ चुपही रही कह्यो कछु नाहीं
मन मन कहत न अब उचटाऊं ❋ आदर करि पिय को बैठाऊं
मोसों श्याम बहुत सकुचाने ❋ अब नहिं जैहैं धाम बिराने
सहचरि कह्यो देख री प्यारी ❋ कब के ठाढ़े हैं गिरिधारी
मान मनायो प्यारी पिय को ❋ तू पिय जिय जीवन है जीको
प्राणहिं तनहिं रूसिबो कैसो ❋ यह कहुँ भयो सुन्यों नहिं ऐसो

दो० करि आदर बैठारि पिय, हँसि लै कण्ठ लगाय।
घर आये नहिं कीजिये, ऐसी कत सकुचाय॥

सो० है तू नागरि बाम, मन में कह ऐसी धरी।
वे ठाढ़े हैं श्याम, तू मुख ते बोलति नहीं॥

तब हँसि कह्यो भलो पिय वैसो ❋ अब जनि काम करौ कहुँ ऐसो
अबकी चूक नहीं मैं मानी ❋ और दिना को रहिये जानी
मेरी सौंह करो मो आगे ❋ तजि सकोच बोलौ डर त्यागे
कह्यो सौंह करि मोहन तबहीं ❋ और तियन पर जात न कबहीं
नन्दभवन ते अबहीं आयो ❋ तुम्हरो रोष देखि सकुचायो
ऐसी अब काहे को बोलौ ❋ अब नीकी करणी नहिं खोलौ
अब जु काल्हिते अनत सिधारें ❋ तो तुमहीं जानोगे प्यारे
अब हरि हँसि कर शिर पर राखे ❋ बारहिं बार सौंह करि भाखे
सहचरि हँसि तब शंकिरही जू ❋ सखी आजते बात यही जू
पान दिये प्यारी तब लालहि ❋ आईं सखी सकल तेहि कालहि

सौंह करी सबहिन यह जानी ❋ हँसे श्याम श्यामा मुसकानी
आदर करि सब को बैठायो ❋ निरखि युगल सबहिन सुखपायो
दो॰ कह्यो सखिन सों हँसिप्रिया, भरि आनन्द उछाह।
तुमहूँ सब मिलि कै कह्यो, भये श्याम अब साह॥
सो॰ लखिलखिसखीसिहाति, यहसुखलाड़िलिलालको
बसे श्याम तहँ राति, चले आपने सदन को॥
चले श्याम निज धाम सकारे ❋ देखे ठाढ़े नन्द दुआरे
सकुचि फिरे घर जात लजाने ❋ प्रमुदा के घर जाय समाने
चकित बाल जब श्याम निहारे ❋ कहति लाल ये ख्याल तुम्हारे
कहां हते गमने कित पाहीं ❋ कबहूं दरश देत हौ नाहीं
रहत कहां हौ सदा लुभाने ❋ आइ परे इत कहां भुलाने
कहौ कहा हौ कछू डरे से ❋ आलस भरे जम्हात खरे से
बसे कहूं निशि तिय सँग जागे ❋ नयन अरुण अति रस रँग पागे
मलयज उरज छाय उरधारे ❋ द्वै शशि मनहुँ उदित उजियारे
नैन कछू सकुचत से ऐसे ❋ शशि के उदय सरोरुह जैसे
पुतरी अलि उड़ि सके न जानो ❋ उरझ रहे अँग गातन मानो
डगमगात से डग पग डोलो ❋ रससभगात शिंगार अमोलो
अंग अंग शोभा के सागर ❋ धनि धनि जहां बसे अति नागर
दो॰ चले बिहँसि कहि श्याम तब, तरक करी तुम बात।
समुझी सब हम आय हैं, आज तुम्हारे रात॥
सो॰ सुनि हरषी जिय नारि, पुलक गात आनन्द उर।
ऐहैं आजु मुरारि, सांझ भये मेरे सदन॥
प्रातहि तें मन हरष बढ़ायो ❋ नौसत साज शिंगार बनायो
बार बार दर्पण मुख देखै ❋ भूषण बसन अंग अवरेखै

कद्रू सुत छबि छाजत बेणी ❋ माँग सँवारति दधिसुत श्रेणी
भुवन जीय सुत रेख सँवारै ❋ धनपति पुरको नाम सुधारै
हीरावलि उरपर लै धारै ❋ श्याम मिलन सुख मनहिं बिचारै
रचि रचि सुमनन सेज बनावै ❋ केसर चन्दन अगर मिलावै
बहु नायक नँद सुवन कन्हाई ❋ गये अनत याको बिसराई
बासर ऐसे कहत बिहानो ❋ एक याम निशि को नियरानो
पस्यो शोच बिरहा अकुलानी ❋ श्याम न आये कहँधौं जानी
गये सांझही को कहि आवन ❋ अबहूं नहिं आये मनभावन
कै धौं आवत हैं अब धाये ❋ किधौं परे कहुँ फंद पराये
वे बहु रमणी रमण बिहारी ❋ कै धौं मेरी सुरति बिसारी

दो० कुमुदाके घर हरि रहे, बढ़यो अधिक उर हेत।
भीजे दोऊ प्रेम रस, अरस परस सुख लेत ॥

सो० मुदित श्यामसँगबाम, छिनसमबीततयामतिहि।
याको युगुल सयाम, बीतत नभ तारे गनत ॥

वैसे वहां याहि इहि रीती ❋ भयो भोर रजनी सब बीती
मनहीं मन युवती पछितानी ❋ मोसों श्याम कुटिलई ठानी
गयो मदन सुख बदन झुराई ❋ रहीं बैठि सदननि मुरझाई
आई तहां सहज इक आली ❋ देखी बिरह बिकल तन ग्वाली
लोचन जलज भरे जल ढारै ❋ मन मारे महि नखन बिदारै
बूझन लगी निकट सो जाई ❋ कहा भयो तोको री माई
आनँद रहित आज मुख तेरो ❋ देखत होत बिकल मन मेरो
सो तो बात नई है कैसी ❋ मोहिं सुनाय कहति किन तैसी
तब बोली मधुरे सुर बानी ❋ आंचर पोंछ नैन को पानी
कहा कहौं तोसों री आली ❋ कपटी कुटिल कठिन बनमाली

मोसों गये अवधि बदि माई ❋ अनतहि लुब्ध रहे कलताई
कियो नहीं मेरे गृह आवन ❋ भये सखी नैना दोउ सावन
दो० ऐसे गुण हरिके सखी, निपट कपट की खानि।
अब मोसों आवन कहा, बने लिये पहिंचानि॥
सो० तोहिं मिलैं जो आज, मेरी सौं कहियो उन्हैं।
गहौ कछू जिय लाज, बचनन के सांचे बड़े॥
उन्हैं गई मैं कछू बुलावन ❋ आपहि अजिर गये करि पावन
मोपै कृपा आय यह कीन्ही ❋ तोसों कहौं तबहिं मैं चीन्ही
कालिह कहूं जागे तिय गोहन ❋ जात हते अपने घर मोहन
द्वारे नन्दहि देखि डराने ❋ मेरे गृह आये सकुचाने
डगमग पग दृग नैन भरे री ❋ बारहि बार जम्हात खरे री
जब मैं कही कहां ते आये ❋ तब मोतन सम्मुख मुसकाये
उत्तर नहीं दियो सकुचाई ❋ श्याम करी तब यह चतुराई
कह्यो धाम मेरे निशि आवन ❋ आपहि श्रीमुख बचन सुहावन
रैन जागि मैं सेज सँवारी ❋ तातें जरहुँ रिसहि की मारी
इतनी कहत द्वार हरि आये ❋ ग्वालिनि भीतर ते लखिपाये
देखत ही रिस में झहरानी ❋ कही सुनाय श्याम को बानी
धन्य धन्य यह घरी बिधाता ❋ आये मेरे जू सुखदाता
दो० ऐसे कहि चुप ह्वै रही, मुरि बैठी रिस गात।
मधुरे बचनन सों कहति, निकट सखी सों बात॥
सो० आये हैं करि गौन, चतुर नारि सँग निशि जगे।
इनसों मिलिहै कौन, फिरत कहा कोऊ बही॥
कृपा करहिं अब इतहि न आवैं ❋ उतही जायँ जहां सुख पावैं
सखी लखे सब अंग श्याम के ❋ जागे कहुँ निशि संग बाम के

कहुँ चंदन कहुँ बन्दन रेखा ❀ कहुँ काजर कहुँ पीक सुबेखा
लखि स्वरूप हरि तन मुसकाई ❀ मान कियो यह दियो जनाई
मन मन शोचत कुँवर कन्हाई ❀ परे कठिन तियके फँद जाई
मेरो नाम सुनतही ऐंठी ❀ मान कियो मोसों फिरि बैठी
तबहीं श्याम करी चतुराई ❀ सैननहीं सों सखी बुलाई
सो कहि ग्वालि जाति घर माई ❀ तू बैठी जो मान दिखाई
अनतहि ठाढ़े भये कन्हाई ❀ तहां सखी सहजहि चलि आई
निरखि बदन उनहीं हँसि दीनों ❀ सखी कह्यो तुम यह कह कीनों
तब हँसि कह्यो सखीसों गिरिधर ❀ मैं मनाय लेहौं तू जा घर
यह सुनि बिहँसि गई कहि आली ❀ जाय मनाय लेहु बनमाली

दो० रसिकन के मणि जान मणि, विद्यमानगुणराय।
आपनहूं तिहिते गये, तिनको दरश दिखाय॥

सो० रही अकेली बाम, फिरि कै चितयो द्वारतन।
तहां न देखे श्याम, अधिक शोच मनमें भयो॥

तब जानी फिरि गये कन्हाई ❀ रही तिया मन में पछिताई
भई बिरह व्याकुल अतिनारी ❀ मिटि गयो मान हृदय दुख भारी
कहति कहा मैं यह बुधि ठानी ❀ आवतही हरि सों गहरानी
भीतर लौं आवन नहिं दीनो ❀ कहा क्रोध मोकों यह कीनो
ज्यों त्यों करि मेरे घर आये ❀ सो मैं देखतही उचटाये
बार बार ऐसे पछिताई ❀ मनहीं रही मसोसा खाई
श्याम गये निहचै जब जानी ❀ न्हान चली तब यमुना पानी
अति व्याकुल मन कहुँ न सुहाई ❀ कोऊ सखी न संग बुलाई
पहुँची यमुना तुरत अन्हाई ❀ चली बहुरि घर को अतुराई
भये श्याम मारग में ठाढ़े ❀ पांच बरष के है छबि बाढ़े

आगे ह्वै नागरि सों बोले ❀ सुन्दर कोमल वचन अमोले
कहां जाति है री तू नारी ❀ चलु बोलत जाकी तू प्यारी

दो० बनहिं बुलाई श्याम त्वहिं, लेन पठाई मोहि।
सुनत बचन चकित भई, रही बाल मुख जोहि॥

सो० श्याम नाम सुनि कान, अति आनँद उरमें भयो।
अगम चरितको जान, ब्रजबासी प्रभु कान्हके॥

कर गहि लियो चली हरषाई ❀ गोप कुमार जानि गृह लाई
कहत श्याम बन धाम बुलायो ❀ या बालक को लेन पठायो
पूछौं याहि भेद बनको सब ❀ कहा कह्यो है हरि यासों अब
अति आनंद भयो मन बालहि ❀ अन्तहपुर लै गई गुपालहि
तहां चरित्र कियो नँदलाला ❀ भये तरुण सुन्दर ततकाला
भुज गहि लई हरषि उरलाई ❀ चकित भई नागरि सकुचाई
छांड़िदेहु मनमुदित कहति तिय ❀ ऐसे चरित करत धनि धनि पिय
ऐसे हरि भामिनी मनाई ❀ सुख दै गये सदन सुखदाई
परम हरष मन भई गुवारी ❀ रैनि विरह तन ताप निवारी
समुझि समुझिके पियगुण मनमें ❀ पुनि पुनि हर्षति पुलकित तनमें
हरि ये चरित करत ब्रज डोलैं ❀ यशुमति ढिग बालक जिमि बोलैं
निज गृह गये सदा नँदलाला ❀ परमबिचित्र श्याम के ख्याला

दो० ब्रजबासी प्रभुकी कथा, अति बिचित्र सुखखान।
कहत सुनत गावत गुणन, हरषत सन्त सुजान॥

सो० ब्रजनायक घनश्याम, नटनागर गुणआगरे।
ब्रजबासी सुखधाम, गोपीपति नँदलाड़िलो॥

अथ गुरुमानलीला ॥

सखिन संग बृषभानु किशोरी ❋ चली न्हान प्रातहिं उठि गोरी
जाके घर निशि बसे कन्हाई ❋ ता घर ताहि बुलावन आई
ठाढ़ी भई द्वार पर जाई ❋ कढ़े तहां ते कुँवरकन्हाई
औचक मिले न जानत कोऊ ❋ रहे चकित इत उत ते दोऊ
फिरी सदन को तुरतहि प्यारी ❋ न्हान जान की सुरति बिसारी
भई बिकल तन रिस अति बाढ़ी ❋ रहिगईं सखी निरखि सब ठाढ़ी
रहि गये ठाढ़े श्याम ठगे से ❋ सकुचाने उर शोच पगे से
जब देखे हरि अति मुरझाये ❋ तब सखियन भुज गहि समुझाये
उलटि भईं सब हरिकी घाईं ❋ दैकै बांह प्रिया जहँ ल्याईं
देखी श्याम आय जहँ राधा ❋ बैठी मान दृढ़ाय अगाधा
रिसही के रस मगन किशोरी ❋ भई श्याम मति देखत भोरी
ठाढ़े चकित चित्त अकुलाहीं ❋ मुख ते बचन कहे नहिं जाहीं

दो० ब्याकुललखिनँदलालको, सखियनकियोबिचार।
अब दोऊ जैसे मिलैं, करिये सो उपचार ॥

सो० अति रिस नारि अचेत, को सुनि है कासों कहैं।
इत ये धरत न चेत, परी रुठावन बात इन।

प्यारी निकट गईं सब आली ❋ ठाढ़े पँवरि रहे बनमाली
कहत मान कीनो तैं प्यारी ❋ न्हान जान ते फिरी कहा री
तोहिं लखत हैं री गिरिधारी ❋ अतिही डरत न सुरति बिसारी
मुरछि परे धरणी अकुलाई ❋ तरु तमाल जनु गयो मुरझाई
तैं ऐसो चितयो कछु उनको ❋ नेकहु चैन रह्यो नाहिं तिनको
तेरे नयन अरी अनियारे ❋ की धौं बन खरसान सँवारे
भौंह कमान तान यों मारे ❋ क्यों कर राखैं प्राण पियारे

घायल जिमि मुर्छित गिरिधारी ❀ अमिय बचन अब सींचु पियारी
बहु नायक वे तू नहिं जानै ❀ तिनसों कहा इतो दुख मानै
बाँह गहौ हरि को ढिग लावैं ❀ अब वे निज अपराध क्षमावैं
गहत बाँह तुमहीं किन जाई ❀ मोसों कहा गहावत आई
कालिहहिं सौंह मोहिं उन दीनी ❀ आजहि यह करणी पुनि कीनी

दो० देखि चुकी उनके गुणन, निज नैनन सुखपाय।
तिन्हैं मिलावति मोहिं अब, बाँह गहावति आय॥
सो० मिलौं न तिनसों भूल, अब जौलौं जीवत जियहुँ।
सहौं बिरह की शूल, बरु ताकी ज्वाला जरौं॥

मैं अब अपने मन यह ठानी ❀ उन के पन्थ न पीऊं पानी
कबहूं अञ्जन नैन न लाऊं ❀ मृगमद भूलि न अंग चढ़ाऊं
हस्त बलय पट नील न धारौं ❀ नैनन कारे घन न निहारौं
सुनौं न श्रवणन अलि पिक बानी ❀ नीले तन परसौं नहिं पानी
सुनत प्रिया की बात सुहाई ❀ हर्षत ठाढ़े पँवरि कन्हाई
सखी कहति यों हठ नहिं लीजै ❀ हरि सों ऐसो मान न कीजै
तू है नवल नवल गिरिधारी ❀ यह यौवन जु रहै दिन चारी
क्षण क्षण ज्यों कर को जल छीजे ❀ सुन री याको गर्व न कीजै
नंदनँदन पिय शशि सुखकारी ❀ तू कर नयन चकोर पियारी
हतो प्रेम धन तो यह भारी ❀ सो अब कहि तें कियो कहा री
कहति हती रूसों नाहिं कबहीं ❀ सो अब रूसत है जब तबहीं
सुनि हैं सुघर नारि जो कोई ❀ करि हैं हँसी प्रेम की सोई

दो० मान कियो जो भाव तें, सो न भावतो होय।
उर तें रिसवत प्रेम कत, अन्त भावतो सोय॥
सो० लाख कहै किन कोय, पिय सनेह जो गाढ़ है।

चतुर नारि है सोय, लियो प्रेम परचौ किनहुँ ॥
तुम वे एक न दोय पियारी ❀ जल ते तरँग होति नहिं न्यारी
रस रूसनों ओसकन वैसो ❀ सदा न रहिये चहिये तैसो
तजिअभिमानमिलहिपिय प्यारी ❀ मान राधिका कही हमारी
सुमन रहत कह करति मनावन ❀ तुम आईहो बात बनावन
बहुत सही बरिआई यातें ❀ सुरति दिवावति पिछली बातें
मोसों बात कहति हौ काकी ❀ जाहु घरन अब कछु है बाकी
को उनकी ह्यां बात चलावत ❀ हैं वे अब तुमहीं को भावत
तुम पुनीत अरु वे अति पावन ❀ आई हौ सब मोहिं मनावन
यह कहि रही रोषभरि भारी ❀ गई सखी ये जहां बिहारी
कह्यो जाय हरिसों अरुवाई ❀ आज चतुरई कहां गँवाई
बिन निज जांघन चलहिं ललारे ❀ कैसे चहत कियो सुख प्यारे
हो मन मोहन तुम बहु नायक ❀ नागर नवल सकल गुण लायक

दो० मान तजै नहिं लाड़िली, थाकीं सबै मनाय।
वेगि यत्न कछु कीजिये, रचिये आप उपाय॥

सो० रच्यो दूतिका रूप, तब मनमोहन आपही।
करि तिय संग अनूप, गये जहां प्रिय मानिनी॥

बैठे निकट सखी मिस जाई ❀ कहत श्रवण ढिग बात सुहाई
बन घनश्याम धाम तू प्यारी ❀ करि बैठी यों मान कहा री
मैं उत गई तोहिं नहिं पाई ❀ हरिकी दशा देखि फिरि आई
अति आरत बन कुंजबिहारी ❀ इकले खड़े गहे द्रुमडारी
तेरोइ नाम रटत मुख माहीं ❀ और कछू तिनको सुधि नाहीं
देखत व्यथा भई म्वहिं गाढ़ी ❀ चल तू होहि नेक ढिग ठाढ़ी
कुंजभवन ठाढ़े दोउ देखैं ❀ तब मैं नैन सुफल करि लेखैं

अब हरि कहत कृपा मोहिं कीजे ❀ जो बूझिये दण्ड सो दीजे
अति आरत प्रीतम को लेरी ❀ हठ तजु हा हा कह सुनु मेरी
तव कारण बृषभानु दुलारी ❀ मेरे पांय परत गिरिधारी
अब मैं पांय परति हौं तेरे ❀ करु अपराध क्षमा हरि केरे
चाहत कियो श्याम को जोई ❀ उन्हैं जान मोसों करि सोई

दो० क्षण क्षण परत चरण पर, क्षण क्षण लेत बलाय।
कहत प्रिया अबमान तजु, पुनि पुनि हाहा खाय॥
सो० खिलिखिलि सखी सिहाति, चरित लखति नँदलाल के।
मनहीं मन मुसकाति, भरी प्रेम आनन्द रस॥

तब चितयो प्यारी नैनन भर ❀ आयो उघरि लाल लीलाधर
श्याम चतुरई मोसों माड़त ❀ वे गुण तुम अजहूं नहिं छांड़त
इन छन्दन में मानति हौं जू ❀ नीके सब गुण जानति हौं जू
रसवादिन मोको करि पाई ❀ वे बातें अब देहु भुलाई
यह कहि बहुरि भई रिसिहाई ❀ रहे श्याम ठाढ़े सकुचाई
गहैं ग्रीव पट अति आधीना ❀ जलके निकट दीन जनु मीना
फिरि पौढ़ी दै पीठ श्याम को ❀ हृदय बिरह दुख अधिक बाम को
कर आरसी अग्र लै धारै ❀ पट अन्तर हरि वदन निहारै
रिसबश धरत नहीं मन धीरा ❀ तलफत हिये बिरह की पीरा
इत नागरि उत नागर ओऊ ❀ भली चतुरई बाढ्यो दोऊ
जिते जिते मुख फेरि पियारी ❀ तितही ढरि आवत गिरिधारी
ज्वइ ज्वइ बात भावतिहि भावैं ❀ सोइ सोइ बातैं श्याम चलावैं

दो० करिहारे छरछन्द सब, छुवन न पावत छाहँ।
हठ छांड़त नाहिं लाड़िली, हरि शोचत मनमाहँ॥
सो० देखिश्यामको दीन, बिरह बिबश प्यारी निकट।

सखियां परम प्रवीन, तब सब समुभावन लगीं ॥
लखु री कमलनयन तुव आगे ❋ कब के हहा करत अनुरागे
तेरे भय तें कुँवर कन्हाई ❋ आये तिय को रूप बनाई
मधुर मधुर बचनन बनवारी ❋ तोहिं मनावत हैं री प्यारी
हा हा करि अरु पांयन लागे ❋ कियो कहा चाहति है आगे
लखु हरि खड़े मलिन मुरझाये ❋ आदर नाहिं चुकिये घर आये
वे तौ बन के भँवर बिहारी ❋ तोसी और बेलि को प्यारी
करि सनमान बिहँसि करि वैसो ❋ कीनो कहा निठुर मन ऐसो
पावत कहा मान के कीने ❋ कहा गमावति आदर दीने
होत कहा घूंघुट पट खोले ❋ कहा न मान तनक हँसि बोले
ऐसी कहूँ कीजियत है री ❋ प्रीतम छांड़ि राखियत बैरी
निज बश मदनगुपालहि जानी ❋ ऐसी कहा अधिक इतरानी
सिखकी कहत अनसिखी आवै ❋ कहा तोहिं कोऊ समझावै

दो० जो नहिं मानति श्यामसों, मानहि रहिहै हाथ ।
तब अपने मन जानिहै, जब दहिहै रतिनाथ ॥

सो० ऐसे कहिहै कौन, मान प्रिया हम कहति हैं ।
त्रिभुवन ठाकुर जौन, सो तेरे बश ह्वै पर्यो ॥

ऐसो समय बहुरि नहिं पैहै ❋ सुनु री फिरि पाछे पछितैहै
यह यौवन है धन सपने को ❋ मान मनायो पिय अपने को
अब ये दिन रूसन के नाहीं ❋ प्रिया बिचारि देखु मनमाहीं
पावस ऋतु हि कियो री फेरो ❋ गरजत गगन भयो री घेरो
बोलत दादुर चातक मोरा ❋ चहुँदिशि करत पवन झकझोरा
बर्षत मेघ भूमि हित लागी ❋ नारि सकल प्रीतम अनुरागी
जे बेली ग्रीषम ऋतु दाहीं ❋ ते हुलसीं तरुसों लपटाहीं

सरिता उमँगि सिन्धुको जाहीं ❋ मिलत सरसरी आपस माहीं
भयो समय यह दिवस चारको ❋ नन्दनँदन पियसँग विहारको
सुनि सखियन के बचन किशोरी ❋ उमँग्यो प्रेम रही रिस थोरी
नख शिख कह्यो जाहु उठि ताके ❋ रस कर हाथ विकाने जाके
सुख सों भलो मनावत मेरो ❋ रहत सबै अनहित चित प्रेरो

दो० सांच बखानत जगत सब, विरद तुम्हारो लाल।
गहे रहत मन तियनके, विहरि कह्यो यों बाल॥

सो० भये प्रफुल्लित श्याम, विरह ताप तनको गयो।
हर्षि उठीं सब बाम, प्यारी मुख विहँसत निरखि॥

जब बोले हरि दोउ कर जोरी ❋ तेरी सौं वृषभानु किशोरी
तूही हित चित जीवन मोको ❋ सदा करत आराधन तोको
तू मम तिलक तुही आभूषण ❋ पोषण तेरेइ वचन पियूषण
तेरोइ गुण मैं निशि दिन गाऊं ❋ अब तजु मान हृदय सुख पाऊं
कर जोर्यो विनती करि भाख्यो ❋ कहत शीश चरणन पर राख्यो
यह सुनि कछु प्यारी मुसक्यानी ❋ तब बोली उठि सखी सयानी
सुनहु श्याम तुम हौ रससागर ❋ रूप शील गुण प्रीति उजागर
तुम तें प्रिया नेक नहिं न्यारी ❋ एक प्राण द्वै देह तुम्हारी
प्यारी में तुम तुम में प्यारी ❋ जैसे दर्पण छांह निहारी
रस में परै विरस जहँ आई ❋ होय परति तहँ अति कठिनाई
अब कै हम सब देति मनाई ❋ परसो प्यारी चरण कन्हाई
अब रुठाय हौ जो गिरिधारी ❋ राम राम तौ बहुरि हमारी

दो० जब परसे प्यारी चरण, परम प्रीति नँदनन्द।
छुट्यो मान हरषी प्रिया, मिट्यो विरहदुखद्वन्द॥

सो० उर आनन्द बढ़ाय, प्रेम कसौटी कसि पियहि।

अवगुण मन बिसराय, मिली प्रिया उठि श्यामसों ॥

हर्षि मिले दोउ प्रीतम प्यारी ❀ भई सखी सब निरखि सुखारी
तब दोउ उबटि सखी अन्हवाये ❀ रुचिर शिंगार शिंगारि बनाये
मधुर मिष्ट भोजन मन भायो ❀ दोउन एकहि थार जिमायो
दिये पान अचवन करवाये ❀ सुमन सुगन्ध माल पहिराये
लै बीरा अपने कर प्यारी ❀ दीनो बिहँसि बदन गिरिधारी
तबहिं सुफल हरि जीवन जान्यो ❀ परम हर्ष उर अन्तर मान्यो
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी ❀ तब सखियन आरती उतारी
अति आनन्द भरे दोउ राजें ❀ अरस परस निरखत छबि छाजें
पाये बश करि कुञ्जबिहारी ❀ बिहँसि कह्यो तब पियसों प्यारी
सुनहु श्याम बर्षा ऋतु आई ❀ रचहु हिंडोरो शुभ सुखदाई
है मन पिय यह साध हमारे ❀ सब मिलि झूलहिं संग तुम्हारे
सुनि तिय बचन श्याम सुखपायो ❀ ऐसे कहि हरि मान छुड़ायो

छं० तिय मान हरि ऐसे छुड़ायो भक्त हित लीला करी ।
निगम नेति अपार गुण सुखसिन्धु नटनागर हरी ॥
यह मान चरित पवित्र हरिको प्रेमसहित जो गावहीं ।
रहे मान तिनको जगत में अरु सन्तजन सुख पावहीं ॥

दो० राधा रसिक गोपाल को, कौतूहल रस केलि ।
ब्रजबासी प्रभुजनन को, सुखदकामतरु बेलि ॥

सो० सुफल जन्म है तास, जे अनुदिन गावत सुनत ।
तिनको सदा हुलास, ब्रजबासी प्रभुकी कृपा ॥

अथ हिंडोरा बर्णन लीला ॥

भक्त बश्य प्रभु कुंजबिहारी ❀ भक्तन हित लीला अवतारी

सदा सदा भक्तन सुखदाई ❋ करत सदा भक्तन मनभाई
प्रेम भक्त दृढ़ ब्रज की बाला ❋ भये बश्य तिन के नँदलाला
जो जो सुख तिनके मन भावें ❋ सो सो ब्रज में श्याम बनावें
समय समय के सुखद बिहारा ❋ करैं तियन सँग नंदकुमारा
ग्रीषम गत पावस ऋतु आई ❋ परम सुहावन जन सुखदाई
श्रीराधा मनकी रुचि जानी ❋ तब हिंडोल लीला मन आनी
यमुना पुलिन गये मनभावन ❋ बृन्दावन घन परम सुहावन
सखिन सहित सोहति सँग प्यारी ❋ कोटिक करत मनोज बिहारी
अति आनंद उमँगि चहुँओरा ❋ घुमड़ि रहे पावस घन घोरा
जहां तहां बकपांति उड़ाहीं ❋ चपला चमक चपल घनमाहीं
गरजत मधुर श्रवण सुखदाई ❋ तैसिय बहत समीर सुहाई

दो० नाना रँग खग फूल फल, लगे लगन के चार।
गजमुक्तन के झूमका, झालर झवा अपार॥
सो० शोभित लता बितान, अतिउतंग तरुसुमनयुत।
रहे पान मिलपान, बिबिधगगन मानहुँजड़े॥

कनक बरण मय भूमि सुहाई ❋ छबि हिंडोर नहिं बरन सिराई
तापर रसिक छबीले दोऊ ❋ उपमाको त्रिभुवन नहिं कोऊ
नन्दनँदन बृषभानु किशोरी ❋ गौर श्याम सुंदर छवि जोरी
चले उमँग आनँद उर भारी ❋ निरखत छवि नभ सुर नर नारी
मोरमुकुट पीताम्बर सोहै ❋ श्याम शुभग तन त्रिभुवनमोहै
प्यारी अंग बैंजनी सारी ❋ शोभित चहुँदिशि चारु किनारी
युगल अंग भूषण छविछाये ❋ रुचि रुचि सखिन शिंगार बनाये
उर रतनन के हार बिराजैं ❋ सुमनहार अतिशय छवि छाजैं
उत कुंडल इत तरवन की छवि ❋ रह्यो लजाय निरखि छविकोरवि

सखिगण क्षण तृण तोरि निहारे ❀ वारत प्राण रीझ उर डारे
करि उछाह ऊंचे सुर गावैं ❀ पिय प्यारी को हर्षि बुलावैं
ताल मृदंग बाँसुरी बीना ❀ बाजत सरस मधुर सुर लीना

दो० यह सुख सुनि ब्रजसुन्दरी, अपरसकलनवबाल।
वृन्दावन झूलति कुँवरि, राधा अरु नँदलाल॥

सो० चलीं सकल अतुराय, नवसतसाजिशिंगारतन।
गृह कारज बिसराय, मनमोहन के रस पगीं॥

चुनकर पहिरि चूनरी सारी ❀ अरुण चहचही कोर किनारी
यूथ यूथ मिलि हरि पै आवैं ❀ तिन्हैं प्रिया पिय निकट बुलावैं
आदर बचन सप्रेम सुनावैं ❀ सब के मनके साध पुरावैं
एकन लेत निकट बैठाई ❀ एकै चढ़त पीठपर धाई
एक बुलावति अति सचुपाई ❀ गावत एक मलार सुहाई
राग रंग सुख बरणि न जाई ❀ रह्यो जाय सुखनिधि बन जाई
युवति बृन्द चहुँओर सुहाई ❀ भूषण भीर बरणि नहिं जाई
बसन सुगंध सने बहु रंगा ❀ भँवर भीर छांड़त नहिं संगा
हरिमुखशशिलखिशुभगअभंगा ❀ उमँगि मनो छबि सिंधुतरंगा
देत चावभरि जब झक झोरा ❀ होति अधिक छबि बढ़त हिंडोरा
ऊंचौ मिलत द्रुमन सों जाई ❀ लेत तहां ते सुमन कन्हाई
ज्यों ज्यों पैंग बढ़ति अति भारी ❀ त्यों त्यों डरति कुँवरि सुकुमारी

दो० राखिराखि सखियनसहित, सौंहदिवावति जात।
जबनहिंसकत सँभारितन, तब पियसों लपटात॥

सो० हँसति परस्पर बाल, तब हिंडोर राखति पकरि।
करत चरित्र रसाल, पिय प्यारी अति रसभरे॥

इक उतरत इक चढ़त हिंडोरे ❀ इक आतुर चढ़िबे को दौरे

एक कहति मोहिं देउ उतारी ❀ एक चढ़न को विनवति नारी
सब के मनकी रुचि हरि राखैं ❀ मधुर वचन सबसों हँसि भाखैं
कबहुँ अकेले झूलत मोहन ❀ गावति युवति सबन मिलिगोहन
कबहूं युवतिन देत चढ़ाई ❀ आप झुलावत कुँवर कन्हाई
कबहूं मुरली मन्द बजावैं ❀ कबहूं संग सबन के गावैं
बिच बिच देत कोकिला टेरैं ❀ रहैं सघन घन झुकि अति नेरैं
परत फुहार मन्द श्रमहारी ❀ वहति त्रिविध अति सुखद बयारी
चातक पिय पिय रटत पुकारी ❀ राधा नाम रटत बनवारी
ऐसे गोपिन सों मन मोहन ❀ करत केलि कौतुक हल गोहन
अति आनन्द सबन उपजावैं ❀ निरखि सुमन सुरगण वरपावैं
जय जय जय धुनि बोलत बानी ❀ धन्य धन्य ब्रज कहत बखानी

छं० कहत ब्रज धनि अमर अम्बर सकल मन आनँद भरे।
कहत मन मन यहै चाहन हम न विधि ब्रज द्रुम करे॥
भक्त हित प्रभु अज सनातन ब्रह्म तनु धरि अवतरे।
बरणि कापै जाय सो सुख करत जो नित ब्रज हरे॥

दो० नित लीला आनन्द नित, नित नव मंगल गान।
धनि जिनके चितरहत नित, ब्रजबासीप्रभुध्यान॥

सो० हरि के चरित रसाल, जे सप्रेम गावत सुनत।
रहत सदा नँदलाल, ब्रजबासी तिनके निकट॥

अथ फाल्गुन वर्णन लीला॥

जय जय जय श्री नित्य बिहारी ❀ नित्यानँद भक्तन हितकारी
ब्रह्म रूप अवतरे मुरारी ❀ नित नव करत बिहार विहारी
नित्य नवल गिरिधर अभिरामा ❀ नित्य रूप राधा ब्रज बामा
नित्य रास जल केलि बिहारी ❀ नित्य मान खण्डन व्यवहारी

नित्य कुंज सुख नित्य हिंडोरा ❀ नित्य प्रेम सुख सिंधु हिलोरा
नित्य नवल हित हरि सँग जोरी ❀ नित्य नवल छबि मन्मथ चोरी
नित बृंदाबन घन सुखदाई ❀ सदा बसंत रहत जहँ छाई
सदा सुमन नव पल्लव डारी ❀ सदा त्रिबिध मारुत सुखकारी
सदा मधुप मधुमाते डोलैं ❀ कोकिल कीर सदा कल बोलैं
सुनि सुनि नारि हृदय सुख पावैं ❀ मनहीं मन अभिलाष बढ़ावैं
वारि वारि कहि पिय सुख पावैं ❀ ऋतु बसन्त आई समुझावैं
फागु चरित अति साध हमारे ❀ खेलैं मिलि सब संग तुम्हारे

दो० जब बनिता हरिसों हरषि, कहति सुनहु ब्रजराज।
देखहु बन शोभा निरखि, अतिहि बिराजत राज॥
सो० खेलतहैं दोउ फाग, मानहुँ मदन बसन्त मिलि।
लखि उपजत अनुराग, यह रस अधिक सुहावनो॥

द्रुमन मध्य टेसू तरु फूले ❀ करत प्रकाश अग्नि सम तूले
मानहुँ निज निज मेरु सुहाई ❀ हरषि सबन होलिका लगाई
कुञ्ज कुञ्ज कोकिल सुख दानी ❀ बोलत बिमल मनोहर बानी
निलंज भइँ मनु कुल की नारी ❀ गावत गृह प्रति चढ़ीं अटारी
नाना खग केकी शुक नारी ❀ जहँ तहँ करत कुलाहल भारी
मनहुँ परस्पर नर अरु नारी ❀ देत दिवावत हैं सब गारी
प्रफुलित लता बिलोकति जितहीं ❀ अति मधुमत्त जात चलि तितहीं
मानहुँ गणिका देखि सुहाई ❀ मतवारे लपटत हैं धाई
पुहुप पराग अबीर सुहाई ❀ लिये समीर फिरत है धाई
संयोगिन रस अनरस बिरहिन ❀ कर छाँड़त मन भायो सबहिन
नव पल्लव दल सुमन सुहाये ❀ बरन वरन बिटपन छबि छाये
जनु रतिराज संग छबि बाढ़े ❀ बहुरँग भरे लसत जनु ठाढ़े

दो॰ भँवर गुंज निरझर शबद, बजत दुन्दुभी चारु।
रची मण्डली मदन जनु, जहँ तहँ बिबिध बिहारु॥
सो॰ बृंदा बिपिन समाज, कहँ लगि बरणि बखानिये।
कान्ह तुम्हारे राज, क्रीड़त सब आनँद भरे॥

रचहु फाग सुख अब नँदलाला ❋ कर जोरे बिनवति सब बाला
सुनि गोपिन के बचन कन्हाई ❋ रची फागु लीला सुखदाई
बिहँसि कह्यो तब श्रीगिरिधारी ❋ सजहु समाज जाय तुम प्यारी
हमहूं सखन संग लै आवैं ❋ फागु रंग ब्रजमाहिं मचावैं
यह सुनि मुदित भईं ब्रजबाला ❋ गये सदन को मदनगोपाला
सखाबृन्द सब श्याम बुलाये ❋ सुनत सकल आतुर जुरिआये
हँसि हँसि उन्हैं श्याम समुझायो ❋ आयो फागुनमास सोहायो
भैया हो सब खेलैं होरी ❋ भरो अबीर गुलालन झोरी
यह सुनि ग्वाल बाल अनुरागे ❋ होरी साज सजन सब लागे
कंचन कलश अनेक सुहाये ❋ केसर टेमू रंग भराये
अतर अरगजा बिबिध बिधाना ❋ लिय सुगन्ध भाजन भर नाना
पीत अरुण बर बसन बनाये ❋ नेह सुगन्धन अति मन भाये

दो॰ अंग अंग भूषण ललित, उर सुमननकी माल।
नैन सैन शोभा हरण, बनी मण्डली ग्वाल॥
सो॰ पान भरे मुख लाल, उसकाये बाहैं झँगा।
फेटन भरे गुलाल, पिचकारी कञ्चन बरन॥

फेंटा पीत श्याम शिर सोहै ❋ तुर्रा की झलकन मन मोहै
तापर मोर चन्द्र छबि न्यारी ❋ कोटि चन्द रबिछबि बलिहारी
केसर खौर भाल शुभकारी ❋ बीच तिलक की रेख शिंगारी
भौंहैं कुटिल नयन रतनारे ❋ कुण्डल झलक केश घुँघरारे

चारु कपोल मनोहर नासा ❋ मंद हँसनि द्युति सदन प्रकासा
अधरैं अरुण चिबुक छबिसींवां ❋ कटि अति ललित कंबु कलग्रीवां
झँगा झीन रँग पीत सुहायो ❋ शोभित तनु छबिसों लपटायो
घेरदार संजाफ जरीकी ❋ झमकिरही छबि उमँग भरीकी
तैसिय कमल चरण पर पनहीं ❋ कंचन मणिमय मोहत मनहीं
कर चूड़ामणि जटित अँगूठी ❋ लसत अँगुरियन भांति अनूठी
बाहु बिजोटा जटित रतनको ❋ चन्दन चित्रित श्यामल तनको
झलकत झीन झँगाके माहीं ❋ सोछबि कहत बनत मुख नाहीं

दो० कटि पर पट पीरो कसे, कनक किनारे चार।
तापर खोंसे मुरलिका, उर मुक्तन के हार॥

सो० तापर ललित बिशाल, माल गुलाब प्रसून की।
चितवन हँसन रसाल, बन्यो छैल नँदलाड़िलो॥

बन्यो यूथ सब रंग रँगीलो ❋ मधि नायक नँदनंद छबीलो
खेलत श्याम चले ब्रज होरी ❋ उड़त अबीर गुलालन झोरी
बाजत ताल मृदंग सुहाई ❋ डफ मुहचंग बीन सहनाई
और नगारन की कल जोरी ❋ बीच बीच मुरली सुर बोरी
कोउ नाचैं कोउ भाव बतावैं ❋ होरी गीत मिले सुर गावैं
ब्रजबीथिन बीथिन सब डोलैं ❋ हो हो होरी मुखते बोलैं
मिलत गलिनमें जो नरनारी ❋ बचत नहीं दीन्हे बिन गारी
अबिर गुलाल तासु पर डारैं ❋ भरि भरि पिचकारिन रँग मारैं
बोलत होरी बचन सुहाई ❋ करि छांड़त सब मनकी भाई
गोरस के रस माते डोलैं ❋ घरन घरन के फरका खोलैं
जो कोउ भाजि रहति घर बैठी ❋ बरिआई आनत तिहि पैठी
अटन चढ़ीं देखैं ब्रजनारी ❋ छज्जन ते छूटहिं पिचकारी

दो॰ गावत होरी गीत सब, देहिं दिवावहिं गारि।
डारत अबिर गुलालकी, झोरी भरि भरि नारि॥
सो॰ इत हरिके सँग ग्वाल, मुदित गुलाल उड़ावहीं।
पिचकारिन के जाल, वर्षत भरि केसरि ललित॥
होत कुलाहल आनँद भारी ❋ रँगे अबीरन महल अटारी
ह्वै गइ ब्रजकी बीथिन बीचा ❋ अबिर गुलाल कुंकुमा कीचा
ऐसे संग लिये सब ग्वाला ❋ करत फागु कौतुक नँदलाला
भीज रहे केसरि रँग बागे ❋ नखते शिख गुलालते पागे
आनँद भरे मुदित सब गावत ❋ गुनी जननके चाल नचावत
बरसाने को चले कन्हाई ❋ यह सुधि कुँवरि राधिका पाई
तुरत सखी सब बोलिपठाई ❋ सुनत सकल आतुर उठिधाई
नवसत सकल मनोरथ साजैं ❋ वरन वरन वर वसन विराजैं
बेंदी भाल बिराजत रोरी ❋ मुख तँबूल तनकी छवि गोरी
होरी खेल सुनत सब चोपी ❋ आईं प्रिया निकट सब गोपी
हँसिहँसि सबसों कहति किशोरी ❋ चलहु श्याम सँग खेलैं होरी
पकरि आज मोहन को लीजे ❋ मनभाई तिनसों सब कीजे
दो॰ ललितादिक ब्रजनागरी, मिलि सब सजो समाज।
तिनमें श्रीकीरति कुँवरि, सबहिनकी शिरताज॥
सो॰ परम रूपकी रास, गुणआगर नव नागरी।
राजति भरी हुलास, मन मोहन मन भावती॥
नख शिख लों सब सुन्दरताई ❋ रही छाय छविपुंज निकाई
भूषण जाल लाल नग केरे ❋ शोभित अंगन सुभग घनेरे
मुखछबि बरणि सकै सो कोहै ❋ जाहि देखि मोहन मन मोहै
लसति नवलतन सुन्दर सारी ❋ केसरिया कीनी जरतारी

गुलगचको लहँगा चटकीलो ❋ घेरघनो अति छबिन छबीलो
कङ्कण किंकिणि नूपुर बाजैं ❋ होरीसाज सजे सब राजैं
रंग गुलाल संग सब लीनो ❋ सोहति युवति यूथ रँग भीनो
मृगमद केसर मेल मिलाई ❋ मथि मथि लीने कलश भराई
हाथन में लीने नवला सी ❋ चलीं श्यामघनपै चपला सी
युवति यूथ लै संग किशोरी ❋ गही जाय आगे ब्रजखोरी
उत ते आये मदन गोपाला ❋ सोहत संग भीर नवबाला
देखि परस्पर आनँद बाढ़्यो ❋ दुहुँदिशि गोल भयो रुपि ठाढ़्यो

दो० भरि भरि पिचकारी हरषि, इत ते धाये ग्वाल।
नवलासी लै लै करन, सिमिटि चलीं उत बाल॥

सो० भौ भट भेरो आन, परी मार पिच रंग की।
करत न कोऊ कान, मन भाई सुख तें कहत॥

भरि भरि मूठि गुलाल चलावैं ❋ हो हो होरी बचन सुनावैं
केसरि रँग लै लै पिचकारी ❋ तकि तकि मारत पिय अरु प्यारी
दुहुँ दिशि चलत झराझर जेरी ❋ भइ गुलाल की घटा अँधेरी
आय परत जाके जो बेड़ैं ❋ सो केसरि के कलश उलेड़ैं
लगि लागि रहे चीर अंगन सों ❋ पहिचाने नहिं परत रँगनसों
मुख शोभा कछु कहति न जाई ❋ रही गुलाल झलक छबिछाई
कवि उपमा कहि कहा बखाने ❋ शशि सरोज दोऊ सकुचाने
सकुच रहित गारी सब गावैं ❋ दुहुँदिशि लै लै नाम चुकावैं
बाजत बीन रबाब तँबूरा ❋ ताल पखावज ढोलक तूरा
नवला सी चपला सी गोरी ❋ मारत ग्वालन कहि कहि होरी
यक भागे यक ढूंढ़न लागे ❋ एक अबीर डारि मुख भागे
मच्यो खेल रँग रस अति भारी ❋ सखियन बोलि कह्यो तब प्यारी

दो० छल बल कर कछु भेदसों, मोहन पकरे जाय ।
आंखआंज मुखमीड़ि तब, छांड़यो हहा कराय ॥
सो० हैं अति लंगर कान्ह, ऐसे ये नाहिं मानिहैं ।
बसन चुराये आन, लेहिं दाँव सो आपनो ॥
तब यक तिय हलधरबपु काछ्यो ❋ चली ओढ़ि नीलांवर आछ्यो
निकसि यूथ तें ह्वैकै न्यारी ❋ निकसी जित ठाढ़े बनवारी
हरि जान्यो आये बलदाऊ ❋ चले अकेले लेन अगाऊ
गये निकट ताके हरि तबहीं ❋ धरे जाय औचक तिन तबहीं
आईं धाय और सब नारी ❋ लीने पकरि श्याम अँकवारी
हँसि हँसि कहत सकल ब्रजबाला ❋ ढीठो बहुत दई तुम लाला
सो फल आज तुम्हैं सब देहैं ❋ दाँव आपनो नीको लेहैं
ठाढ़े हँसत दूर सब ग्वाला ❋ कहत गये पकरे नँदलाला
हँसति कुँवारि राधा दुर ठाढ़ी ❋ पियमुख निरखि सकुच उर बाढ़ी
किनहूं लियो पीतपट छोरी ❋ काजर दियो किनहुँ बरजोरी
काहू बेनी शीश सँवारी ❋ मुख गुलाल लावति कोउ नारी
काहू उर अरगजा लगायो ❋ काहू रंग शीश ढरकायो
दो० गये छूटि मोहन तबै, मोहन चले पराय ।
आय मिले निज सखन में, रहीं नारि पछिताय ॥
सो० कर मींजत पछितात, कहत परस्पर बाल सब ।
भली बनी थी घात, दांव लेन पाई नहीं ॥
गये आज तुम भजि नँदलाला ❋ जैहौ कहां कालिह गोपाला
करि राखी जैसी तुम हमसों ❋ सो हम दांव लेहिंगी तुमसों
पीताम्बर अपनो यह लीजै ❋ पठै ग्वाल काहू को दीजै
कै आपही आय लै जाहू ❋ अब हम नहीं पकरि हैं काहू

हँसत सखा सब तारी दैकै ❀ बेनी छोरत हैं कर लैकै
कहत जाहु फिर कुँवर कन्हाई ❀ पीताम्बर लै आवहु जाई
भाजत हार हिये ते टूटै ❀ पीताम्बर गहने दै छूटै
तबहिं कह्यो हरि नन्द दुहाई ❀ अबहिं पीतपट लेत मँगाई
सखा एक हरि निकट बुलायो ❀ युवति बेष करि ताहि पठायो
गयो सुमिलि युवतिन के माहीं ❀ हँसत जाय ठाढ़ो पट पाहीं
कहत देहु पट धरैं दुराई ❀ अब नहिं पावहिं कुँवर कन्हाई
अब यह पट हरिको तब देहैं ❀ दाँव आपनो जब हम लेहैं

दो० ऐसी कहि पट लैलियो, आयो चमकि गुवाल।
फेर्यो कर सों श्यामलै, चकित भईं सबबाल॥

सो० लखि हरिकी चतुराय, भईं थकित ब्रजबाल सब।
थिरवत कहत सुनाय, भली बनाई आज तुम॥

गये आज बचि करि चतुराई ❀ अब बरि हैं जो बचहु कन्हाई
अब तो लाग लगी है हमसों ❀ जबलगि दांव लेति नहिं तुमसों
पकरि नचावहिं तुमहिं बिहारी ❀ तब कहिहौ हमको ब्रजनारी
कहत श्याम अब भये सयाने ❀ इन बातन कछु भय नहिं माने
जान लियो मैं कपट तुम्हारो ❀ अब तुम कह कर सकत हमारो
अबहीं ग्वालन देहुँ लगाई ❀ छांड़ौं अपनी बिनय कराई
नेक कानि मानत हौं तिनकी ❀ सखी कहावतिहौ तुम जिनकी
यह सुनि तब युवती मुसकानी ❀ कहा करतहौ श्याम सयानी
तुम्हैं नन्दकी सौंह कन्हाई ❀ जो नहिं बिनय करावहु आई
सखन सहित तब मोहन करषैं ❀ लै लै पिचकारिन रँग बरषैं
उत सब युवती हो इकठौरी ❀ लै लै नवला सी सब दौरी
दियो सबन को मारि हटाई ❀ भाजि चले तब कुँवर कन्हाई

दो० भाजे भाजे कहत सब, तारी दै ब्रजवाल।
जो तुम जाये नन्दके, ठाढ़े रहौ गुपाल॥
सो० फिरे बहुरि घनश्याम, सखावृन्द सब फेरिकै।
शिथिलकरी ब्रजवाम, ओरिनमारिअबीरकी॥

ऐसे खेलत मिलि रस होरी ❋ इत मोहन उत कुँवरि किशोरी
गोपी ग्वाल संग सब लीने ❋ मोहन सकल रंग रस भीने
कबहुं परस्पर गावत गारी ❋ कबहुँ करत रसवाद विहारी
कबहुं अबीर गुलाल उड़ावैं ❋ कबहूँ रंग सलिल बरषावैं
अरस परस छवि निरखत दोऊ ❋ परमानन्द मगन सब कोऊ
चढ़े बिमानन नभ सुर देखैं ❋ जन्म सुफल ब्रजको करि लेखैं
पुनि पुनि हर्ष सुमन वर्षावैं ❋ जै जै करि प्रभु को यश गावैं
ऐसे श्याम रंग रस राख्यो ❋ ललिता आय बीच तब भाख्यो
आज श्याम तुम औचक आये ❋ हम काहू जानन नहिं पाये
बहुत करी तुम आय ढिठाई ❋ भई सांझ अब कुंवर कन्हाई
कालिह प्रात है वार हमारी ❋ देखैंगी मनुसाय तुम्हारी
ऐहैं नन्दगाँव लौं प्यारी ❋ रहिहो सजग लाल गिरिधारी

दो० प्यारी करते पानलै, दीने सखी सुजान।
प्रातअवधि बदि खेलकी, राख्यो दुहुँदिशिमान॥
सो० घर आये घनश्याम, सखन संग गावत हँसत।
गई प्रिया निजधाम, सखिन सहित आनँदभरी॥

परमानन्द सकल ब्रजनारी ❋ कृष्णकेलिसुख की अधिकारी
लोक लाज को भय नहिं मानैं ❋ कृष्ण विलास सदा उर आनैं
श्रीराधिका कुँवरि सुख दाई ❋ प्रात सखी सब बोलि पठाई
कियो विचार सबन मिलि गोरी ❋ नन्दगांव खेलैं चलि होरी

मिलि मोहन सों यह सुख कीजै ❀ फगुवा नन्दमहर सों लीजै
साभा सकल खेलकी लीनी ❀ रंग गुलालन सों बहु कीनी
मथि मथि बिबिध सुगंधन लीन्हे ❀ भांति अनेक अरगजा कीन्हे
भरि भरि भाजन कनक सुहाये ❀ अमित सुगंध न जाहिं गनाये
लै काँवरिन अनेक अपारा ❀ चले संग सजि सुभग शिंगारा
ग्वालिन पोचन गर्ब गहेली ❀ श्रीराधा सँग चलीं सहेली
कुंकुम उबटि कनक तन गोरी ❀ रूपराशि सब नवलकिशोरी
एक बैस सुन्दर सब राजैं ❀ निरखत कोटि मदनतिय लाजैं

दो० नवसत साजि शिंगार तन, अंग अंग सब ग्वारि ।
चन्द्रावलि ललितादि सब, अमित गोपसुकुमारि॥

सो० को कबि बरणै पार, प्यारी सब नँदलालकी ।
शोभा अमित अपार, उपमा को त्रिभुवन नहीं॥

सुमन सुगंधन गूंधी बेणी ❀ लटकत कनक झबी छबि श्रेणी
मोतिन मांग बनी अति नीकी ❀ केसरि आड़ जड़ाऊ टीकी
कुटिल भौंह अलकैं घुँघुरारी ❀ मन मोहन मन मोहन हारी
खंजन नैन मधुप मृगहारे ❀ अंजन रेख सुभग अनियारे
श्रवणन तरवन रबिसम ज्योती ❀ नकबेसर लटके गजमोती
दशन कुंद बिंबाधर सोहैं ❀ चिबुक नीलकण छबि मन मोहैं
कंठ कपोत मोति उर हारा ❀ जनु युग गिरिबिच सुरसरिधारा
कुच चकवा मुख शशि भ्रम भूले ❀ बैठे जुरि मानहुँ दुहुँ कूले
कर कंकण चरी गजदंती ❀ नख मणि माणिक मेटत कंती
नाभी हृदय कहा कबि बरनै ❀ कटि मृगराज लेत जनु निरनै
चरणन नूपुर बिछिया बाजैं ❀ चाल मराल चलत कल राजैं
लहँगा कसब पीत रँग सारी ❀ चमक चहूंदिशि लाल किनारी

दो० नखशिख सब शोभा भरी, बनी छबीली बाम।
तिनमें श्रीराधाकुँवरि, राजत अति अभिराम॥
सो० लई सबन गहि हाथ, पीरे सुमनन की छरी।
होरी हरि के साथ, नंदगांव खेलन चलीं॥
प्रेम प्रीति के रस बश पागीं ※ नंदनँदन पियकी अनुरागीं
बाजे सुघर बजावैं गोरी ※ गावहिं कोकिल कंठ निहोरी
करति केलि कौतुक मन माहीं ※ अबिर गुलाल उड़ावत जाहीं
लीनो घेर नंद गृह जाई ※ बसत तहां मनहरन कन्हाई
शोभित रूप लतासी गोरी ※ गावत फाग नंदकी पोरी
सुनि सुन्दर बर बाहेर आये ※ हलधर ग्वाल गुपाल बुलाये
एकते एक भईं सब नारी ※ होली खेल मच्यो अति भारी
मृगमद कुंकुम चंदन घोरे ※ लै लै पिचकारी कर दोरे
गोपी ग्वाल भरे झक झोरी ※ अबिर गुलालन मारहिं गोरी
उड़त गुलाल घटा घन छाई ※ महि केसरिकी कीच सुहाई
बाजे सरस मधुर स्वर बाजैं ※ गान सुनत गण गन्धर्व लाजैं
पकरत एक एक छुटि भाजैं ※ गारी देत एक तजि लाजैं
दो० हो हो होरी कहत सब, भरे परम आनन्द।
सखिनसंग उत लाड़िली, इतै सखा नँदनन्द॥
सो० औचक धाईं बाम, गहन हेत नँदनन्द तब।
गहि पाये बलराम, निकसि गये हरि भाजिके॥
अति निशंक सब ब्रजकी गोरी ※ ता में अवसर पायो होरी
भरि भरि केसरि रंग कमोरी ※ लै लै हलधर के शिर ढोरी
अबिर उड़ाय अँधेरो कीनों ※ ललिता गहि दृग काजर दीनों
व्यंग बचन सब कहत सुनाई ※ लेहु रोहिणी मात बुलाई

हास बिलास बिबिध कहि गावैं ❋ इत उत बल कहुँ जान न पावैं
फगुआ मनभावतो मँगाई ❋ हलधर छांड़े बिनय कराई
हँसत सखन मिलि कुँवर कन्हाई ❋ आये दोऊ आंख अँजाई
तब हलधर दुचिते हरि कीने ❋ युवतिन धाय श्याम गहि लीने
सिमटे सखा छुड़ावन धाये ❋ युवतिन से हरि छुटन न पाये
लै लै नवलासी नव बाला ❋ दिये हटाय मारि सब ग्वाला
श्यामहिं जीति यूथ में लाई ❋ भई सबन के मनकी भाई
रस लंपट नँदनन्द कन्हाई ❋ दीनों आपुन आनि गहाई

दो० लै आई प्यारी निकट, हँसति कहति ब्रजबाल ।
कहिये अब कैसी बनी, बहुत करत हौ गाल ॥

सो० एक कहति मुसकाय, बसन हरेते आपुही ।
हमहूं बसन छुड़ाय, लेहिं दांव अब आपनो ॥

कान्ह कह्यो करिहौ कह मेरो ❋ सोई पाय भयो अब नेरो
ऐसे कहति रूप अनुरागीं ❋ मुरली छीन बजावन लागीं
एकनि लियो पीतपट छोरी ❋ एक रंग गागरि लै दोरी
हरिके हाथ गहे चन्द्रावलि ❋ कज्जल लै आई संजावलि
ललिता लोचन आँजन लागी ❋ एक श्रवणलागि कछु कहिभागी
एक चिबुक गहि बदन उठावै ❋ एक गुलाल कपोलन लावै
घेरि रहीं परिखा की नाईं ❋ करति सबै निज निज मन भाई
काहू बेनी गूंध सँवारी ❋ काहू मोतिन मांग सुधारी
पहिरावति लहँगा कोउ सारी ❋ काहू लै आँगिया उर धारी
निरखि निरखि प्यारी मुसकाई ❋ राखत आपनि कृष्ण बड़ाई
काहू बदन अभूषण लीन्हे ❋ नेकहु श्याम परत नहिं चीन्हे
बधू बधू कहि सबहिन गायो ❋ प्यारी निकट आनि बैठायो

दो० निरखिबदन प्यारी हँसी, श्याम हँसे सकुचाय।
गहि प्यारी निजपाणि तब, दीनों पान खवाय॥
सो० सखियाँ करत कलोल, गांठि जोरि आंचर दई।
ब्रजमें रह्यो अडोल, यह जोरी युग युग सदा॥

लीन्हे मध्य श्याम सब ग्वारैं ❋ मगन भईं अब वपु न सँभारैं
पिय प्यारी मुखकी छबि जोहैं ❋ अरस परस दोऊ मन मोहैं
रंगन भरे रँगीले दोऊ ❋ त्रिभुवन छबि पटतर घट सोऊ
एक नैन की सैन मिलावैं ❋ एक युगल छवि लखि सुखपावैं
गावति एक महरिको गारी ❋ वजै मंजीरा डफ करतारी
भरि भरि मूठि गुलाल उड़ावैं ❋ ग्वाल निकट कहुँ लगन न पावैं
रही गुलाल घटा छबि छाई ❋ फूली मानहुँ सांझ सुहाई
तब ललिता को यशुमति माई ❋ घर भीतर से वोलि पठाई
हँसिकै महरि बहुत सनमानी ❋ विनती करी वहुरि मृदुवानी
आज भई भोजन की विरियां ❋ देखहु अब राधाकी वरियां
खान पान करि श्रमहि निवारो ❋ वहुरि खेलियो निकट सवारो
ल्यावहु अब लाड़िलिहि लिवाई ❋ कीरतिजी की सौंह दिवाई

दो० तबयशुमतिपहँराधिकहि,ललिताचली लिवाय।
सकुच जानिघनश्याम अति, छूटे हा हा खाय॥
सो० हँसे ग्वाल मुख हेरि, तन शोभा देखत खरे।
बलको लीनों टेरि, बन्यो आज अति सांवरो॥

कहत सखा सब दै दै सोहन ❋ ऐसेहि चलौ नंद पै मोहन
चले भुजा गहि तहां लिवाई ❋ छबि अनूप वह वरणि न जाई
उत सब युवतिनके चित चोरे ❋ चले लाल इतते अति भोरे
अति छबि देखि हँसे नँदराई ❋ जननी सुनति दौरि तहँ आई

निरखि हरषि लीन्हे उर लाई ❋ अति आनंद हृदय न समाई
बार बार कर लेत बलैया ❋ किन यह कीनो हाल कन्हैया
ये ऐसी सब ब्रज की बाला ❋ सकुच हँसे मनहीं नँदलाला
तुरत श्याम सोइ बेष उतास्यो ❋ कटि पटपीत मुकुट शिर धास्यो
युवतिन सहित कुँवरि श्रीश्यामा ❋ आईं नंदमहरि के धामा
भूषण बसन नबीन बनाये ❋ यशुमति लै सबको पहिराये
अति सनेह बृषभानुदुलारी ❋ अपने हाथ शिंगार सँवारी
निरखि रूप प्रमुदित नँदरानी ❋ वारति राईनोन सिहानी

दो० बिबिध भांति मेवामधुर, और मिठाई पानि।
सादर सबकी गोद में, भरे हरषि नँदरानि॥

सो० रह्यो नन्दगृह छाय, होरी को आनंद अति।
कहति यशोमति माय, फगुवा कहो सो दीजिये॥

ललकि कह्यो औरै कछु नाहीं ❋ लेहैं कान्हर फगुवा माहीं
देखे बिन रहि सकहि जु उनको ❋ तौ मांगे देहैं हम तुमको
बाढ़ौ बंश महर नँदराई ❋ चिरजीवहु बलराम कन्हाई
जिनसे यह सुख ब्रजमें लीजत ❋ यह अशीश सबही मिलि दीजत
अति आनंद मगन ब्रजबासी ❋ अष्टसिद्धि नव निधि सब दासी
गोपी ग्वाल भये अनुकूला ❋ न्हान चले यमुना के कूला
जहँ बर बिटप बिबिध रँग फूले ❋ गुंजत भँवर मत्त रस भूले
शीतल सुखद छांह छबि छाई ❋ फूल डोल तहँ रच्यो कन्हाई
झूलत रंग भरे पिय प्यारी ❋ गावत मिले गोप अरु नारी
ऐसे दूर खेल श्रम कीनों ❋ अति आनंद सबन को दीनों
तब यमुनाजल श्याम नहाये ❋ महिदेवन शिर तिलक बनाये
दियो दान तिनको नँदलाला ❋ बर्षत सुर सुमननकी माला

छं० बरषत माल प्रसून सुरगण निरखि छवि आनँद भरे।
श्रीनंदसुत सुखधाम पूरणकाम सब ब्रजजन करे॥
लूटि सुख रस फागको सब मुदित निज गृह गृह गये।
गोप बाल गोपाल बल निज धाम आये छवि छये॥
दो० कियो जो फाग विहार हरि, शारद लहै न पार।
ब्रजबासी सो किमि कहै, लीला सिंधु अपार॥
सो० जनमन के सुखधाम, चरित ललित गोपाल के।
गावत सुनत सुजान, ब्रजवासी जन रति लहत॥

अथ सुदर्शनशापमोचनलीला॥

पूरणब्रह्म कृष्ण भगवाना ❋ ब्रजविलास जो कीने नाना
शिव विधि शारद नारद शेषा ❋ कहि नहिं सकहिं गणेश अशेषा
कीने चरित रहस्य अपारा ❋ ब्रजयुवतिन मिलि रस शृंगारा
साधन रहित काहु मन राखी ❋ करी सकल जो जाने भाखी
ब्रजविलास रस केलि बड़ाई ❋ भांति अनेक मुनीजन गाई
ब्रजबासी प्रभु सब गुण नायक ❋ जो कछु करहिं सो सबही लायक
सखा संग सबको सुख दीनो ❋ मन भायो गोपिन को कीनो
महरि नन्द पितु मात कहाये ❋ तिनके हेत देह धरि आये
बालकेलि रस सुख करि भारी ❋ दियो परम आनन्द मुरारी
गिरि धरि ब्रजजन सगरे राखे ❋ इन्द्रादिक सुर जै जै भाखे
गाय बच्छ बनमाहिं चराये ❋ काली नाग नाथि लै आये
करे चरित्र अनेक कृपाला ❋ भक्तन हित प्रभु दीनदयाला
दो० भक्तन के हित लेत हैं, प्रभु युग युग अवतार।
असुर मारि थापत सुरन, हरन भूमि भव भार॥

सो० गावत संत अपार, यश पुनीत पावन करन।
पूरि रह्यो संसार, करता हरता आप हरि॥

इक दिन प्रभु भक्तन सुखदाई ❁ नन्दहृदय यह मति उपजाई
चलिये आज सरस्वति तीरा ❁ पूजन शंकर सकल अहीरा
लिये संग बलमोहन दोऊ ❁ गोपी ग्वाल चले सब कोऊ
करत कुलाहल आनँद भारी ❁ पहुँचे तहां सकल नर नारी
सरित पुनीत कियो अस्नाना ❁ महि देवन दीनों सब दाना
देखि देवथल अति अभिमानी ❁ सादर पूजे शम्भु भवानी
पूजा करत सांझ ह्वै आई ❁ श्रमित भये सब लोग लुगाई
खान पान करि सहित हुलासा ❁ कियो रैनि तहँ बनमें बासा
सोये हरि हलधर सुखरासी ❁ तब सोये सब ब्रजके बासी
आधी निशि अजगर यक आयो ❁ नन्दमहर के पग लपटायो
उठे पुकारि चौंकि नँदराई ❁ आये ब्रजबासी सब धाई
अजगर देखि डरे सब कोई ❁ लगे छुड़ावन छुटत न सोई

दो० हारे यत्न अनेक करि, सर्प न छोड़े पांय।
कृष्ण कृष्ण करि नन्द तब, गुहराये अकुलाय॥

सो० अति व्याकुल गये ग्वाल, बोले श्याम जगायके।
कह्यो महा यक व्याल, लपटानो पग नन्दके॥

सुनत उठे आतुर गोपाला ❁ निकट जाय देख्यो सोइ व्याला
परस्यो ताहि कमल पद पावन ❁ पाप शाप सन्ताप नशावन
छुवत चरण तिन लइ जमुहाई ❁ धस्यो दिव्यतन बरणि न जाई
लाग्यो हाथ जोरि गुणगावन ❁ जय जय जगतईश जगपावन
सब देवन के देव मुरारी ❁ जय जय जय ब्रजगोपबिहारी
ऋषि अंगिरा शाप म्वहिं दीनो ❁ सो वह बहुत अनुग्रह कीनो

जातें प्रभु को दर्शन पायो ❀ जन्म जन्म को पाप नशायो
ऐसी बिनती प्रभुहि सुनाई ❀ आयसु पाय चल्यो शिर नाई
बहुरि नन्द को शीश नवायो ❀ देखि महर अति अचरज पायो
पूंछ्यो जाय नन्द तब भेवा ❀ तुमतो दिव्यरूप कोउ देवा
सर्प शरीर धस्यो क्यों आई ❀ सो सब हमसों कहौ बुझाई
नंदवचन सुनि मन सुख पाई ❀ तब उन अपनी कथा सुनाई

दो० हौं यश गाहक श्याम को, नाम सुदर्शन होय।
सुन्दर बिद्याधरन में, मोते और न कोय॥
सो० इकदिन ऋषिके धाम, गयों धरे अभिमान मन।
कियों न तिन्हैं प्रणाम, रूपद्रव्य के गर्व से॥

ऋषि अंगिरा बड़े विज्ञानी ❀ जानि मोहिं जड़ अति अभिमानी
दीनो शाप कोप करि एहा ❀ जाय होहु शठ अजगर देहा
ऐसे कह्यो मोहिं ऋषि जबहीं ❀ अजगर भयों तुरत मैं तबहीं
देखि दुखित म्वहिं परमकृपाला ❀ भये बहुरि मुनिराय दयाला
तब करि कृपा कह्यो यह मोहीं ❀ कृष्ण दरश ह्वै हैं जब तोहीं
परसि चरणरज पाप नशैहै ❀ बहुरि आपनो तन तब पैहै
ते पद आज परस सुखदाई ❀ भयों पुनीत रूप निज पाई
जो पदरज ब्रह्मा नहिं पावैं ❀ शिव सनकादि सदा चित लावैं
मुनि प्रसाद सो रज मैं पाई ❀ कहँलगि मुनिकी करौं बड़ाई
दीनदयाल जगत हितकारी ❀ संत समान कौन उपकारी
ऐसे विद्याधर सुख मानी ❀ नन्दहि अपनी कथा बखानी
बहुरि काख चरणन शिर नाई ❀ गयो लोक निज वह हर्षाई

दो० नंदादिक आनन्द सब, महिमा देखि पुनीत।
कहत परस्पर कृष्ण गुण, गई तवां निशि बीत॥

सो॰ आये सब ब्रजधाम, प्रात होत आनन्दसों।
संग श्याम बलराम, प्रभु ब्रजबासीदास के॥

अथ शंखचूड़बधलीला॥

यक दिन सुन्दर मदनगोपाला ❁ श्रीबलदेव और सँग ग्वाला
दिवस अंत निशि समय सुहाई ❁ उचित उडुप उडुगण छबि छाई
प्रफुलित चारु मालती सोहै ❁ कुमुद सुगन्ध पवन मन मोहै
गुञ्जत भँवर मत्त रसलोभा ❁ चले तहां देखन बनशोभा
ग्वालन मिलि गावत दोउ भाई ❁ कबहुं बजावत बेणु कन्हाई
ब्रजबनिता गण चहुंदिशि घेरे ❁ चलीं सुनत बंशी के टेरे
जिनके तन मन बसे कन्हाई ❁ मगन भई छबि लखि अधिकाई
पहुँचीं श्री बृन्दाबन जाई ❁ गोपी ग्वाल संग समुदाई
बिहरत बनबिहार दोउ भाई ❁ गोपी ग्वाल साथ समुदाई
मन्द मन्द गति इत उत डोलैं ❁ मृदु मुसकाय लेत मन मोलैं
रूपराशि निधि छबि दोउ बीरा ❁ बैठे जाय यमुन के तीरा
पाछे सखा बृन्द सब सोहैं ❁ सम्मुख गोपी जन मन मोहैं

दो॰ करत सबै मिलि मुदित मन, भरे प्रेम रसमाहिं।
भरे मगन उनमत्त जिमि, रही देह सुधि नाहिं॥
सो॰ बाजत ताल मृदंग, बीन चंग मुरली मधुर।
छाय रह्यो रस रंग, उठत तरंगैं तान की॥

प्रेम मगन सब घोषकुमारी ❁ हरिछबि निरखति सुरति बिसारी
शिथिल बदन कच शीश सुहाये ❁ बिह्वल तन मन श्याम सुहाये
को हम कहां नहीं कछु जाने ❁ नैन श्याम के रूप लोभाने
रही श्रवण मुरली धुनि छाई ❁ गृह बनकी कछु सुधि नहिं राई

चन्द्र बदन चपलासी गोरी ❁ हरिमुख नाद सुनत भई भोरी
तहँ राक्षस औचक इक आयो ❁ शङ्खचूड़ नामी तिहि गायो
सो वह धनद अनुग अभिमानी ❁ प्रभुप्रभाव नहिं जान अज्ञानी
देखतही बलराम कन्हाई ❁ सब गोपिन लीनों अगुवाई
घेर लेत जिमि गाय अहीरा ❁ उत्तर दिशि ले चल्यो अधीरा
जब गोपिन हरि देखे नाहीं ❁ भयो चेत तब कछु मनमाहीं
कही जाति हम काके साथा ❁ भई बिकल जिमि परम अनाथा
कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागीं ❁ महादुखित अति भयसों भागीं

दो॰ सुनत श्रवण आरत बचन, उठि आतुर दोउ भाय।
अति समीप गोपीन के, तुरतहिं पहुँचे जाय॥

सो॰ मैं आयों हौं धाय, मत डरपो तिनसों कह्यो।
अबहीं लेत छुड़ाय, तुम्हैं मारि या दुष्टको॥

शङ्खचूड़ फिरि कै तब देख्यो ❁ काल मृत्यु सम दुहुवन पेख्यो
भयो त्रसित तब मूढ़ अभागो ❁ युवतिन छांड़ि जीव ले भागो
गोपिन पास राखि बल भाई ❁ ता पाछे पुनि चले कन्हाई
अतिही निकट धाय कै लीनो ❁ मूका एक तासु शिर दीनो
भयो प्राण बिन अधम अन्याई ❁ प्रभु प्रताप उत्तम गति पाई
हती एक मणि ताके शीशा ❁ सो लै आये हरि जगदीशा
दीनी सो बल को नँदलाला ❁ प्रमुदित भई देखि ब्रजबाला
गोपी ग्वाल सहित दोउ भाई ❁ बहुरि कियो सुख बनमें आई
सो दुख सबको तुरत भुलायो ❁ परमानन्द सबन उपजायो
करत बिबिध बिधि हास बिलासा ❁ गृह आये पुनि सहित हुलासा
नवकिशोर सुन्दर सुखदाई ❁ ब्रजजीवन बलराम कन्हाई
ग्वाल बाल गायन के साथा ❁ क्रीड़ा करत ललित ब्रजनाथा

दो॰ देखि देखि हरिके चरित, परम चरित्र उदारि।
निशि दिन सब प्रमुदितरहत, ब्रजबासी नर नारि॥
सो॰ हरन सकल भय भीर, दुष्ट दलन जन हितकरन।
नंदनँदन बल बीर, ब्रजबासी प्रभु साँवरो॥

अथ बृषभासुरवधलीला॥

नंदनँदन संतन हितकारी ❀ कमल नयन प्रभु कुञ्जबिहारी
मुरली मुकुट धरे ब्रज राजैं ❀ कोटि काम निरखत छबि लाजैं
नित नव सुख ब्रजमें उपजावैं ❀ सुर नर मुनि त्रिभुवन यश गावैं
सुनि सुनि अगम कृष्ण गुण गाहा ❀ कंस असुर उर दारुण दाहा
जो जेहि भाव ताहि हरि तैसे ❀ हित को हित जैसे को तैसे
हित अनहित यह प्रभु की लीला ❀ सदा श्यामसुंदर सुख शीला
रीझ खीझ हरिको जो ध्यावै ❀ परमानन्द अभय पद पावै
रहै कंस उर ध्यान सदाहीं ❀ नंदनँदन पल बिसरत नाहीं
शत्रुभाव शोचत दिन राती ❀ नंदसुवन मारों किहि भांती
असुर अरिष्ट नाम बल भारी ❀ एक दिवस नृप लियो हँकारी
तासों कहि सब मरम बुझायो ❀ बल सराहि ब्रज ताहि पठायो
नंदनँदन मारन के काजा ❀ चल्यो असुर करि गर्ब समाजा

दो॰ नृप को शीश नवाय कै, कह्यो अरिष्ट सुनाय।
कितक काज महराज यह, मैं करि आवत जाय॥
सो॰ तुम असुरनके राज, इतने को शोचत कहा।
पल में मारौं आज, बालक नंद अहीरके॥

बृषभ रूप स्वइ असुर बनाई ❀ आयो तुरत ब्रजहि समुहाई
गिरिसमान तन अति बिकराला ❀ महाकठिन दोउ सींग बिशाला

पूंछ उठाय डकारत आवै ❋ खोदि खुरन सों छार उड़ावै
दृग आरक्त फेन मुख डारै ❋ कबहुं सींगसे भूमि बिदारै
कबहुँ तरुनसों रगरत जाई ❋ इत उत खोजत फिरत कन्हाई
उन्नत ग्रीव चहूं दिशि धावै ❋ जहां तहां गैयन बिडरावै
बार बार गरजत अति भारी ❋ सुनत डरे सब ब्रजनर नारी
बिडरीं गाय गोप सब भागे ❋ कृष्ण कृष्ण कहि टेरनलागे
कालस्वरूप बृषभ इक आयो ❋ सबन कृष्ण सों जाय सुनायो
प्रभु सर्बज्ञ तुरत पहिंचान्यो ❋ बृषभ न होय असुर यह जान्यो
बिहँसि कह्यो मोहन सब पाहीं ❋ मत डरपौ चिन्ता कछु नाहीं
चले असुर सम्मुख मनमोहन ❋ गोप ग्वाल लागे सब गोहन

दो० आगे ह्वै हरि हांक दै, तासों कह्यो सुनाय।
रे शठ का तन तरु घसत, फिरत बिडारत गाय॥

सो० मो सनमुख इत आय, तो तन उपजो कण्डु जो।
अबहीं देहुँ मिटाय, कहत नन्दकी सौंह करि॥

बृषभासुर सुनि हरिकी बानी ❋ मनमें गर्ब कियो यह जानी
याही बालकके बधकाजा ❋ आदर दै पठयो म्वहिं राजा
भले शगुन से ब्रजमें आयों ❋ जो याको तुरतहि लखि पायों
अबहीं याहि पलक में मारौं ❋ नृपतिकाज करि जाय जुहारौं
ऐसे अपने जिय अनुमानी ❋ चल्यो श्याम सम्मुख अभिमानी
टूटिपर्यो हरि ऊपर आई ❋ लिये सींग गहि कुँवर कन्हाई
यह आवत हरिकी दिशि धाई ❋ हरि पाछे लैजात हटाई
पाछे पेल श्याम तिहि दीनों ❋ बहुरो बृषभासुर बल कीनों
आवत जात असुर तब हार्यो ❋ ग्रीव मोड़ि तब धरणि पछार्यो
पर्यो असुर परबत आकारा ❋ मुखते चली रुधिरकी धारा

असुर मारि उत्तम गति दीनी ❀ जय जय धुनि देवन नभ कीनी
भये सुखी सब सुर समुदाई ❀ बरषि सुमन अस्तुति सुख गाई

दो० चकित भये लखि परसपर, कहत सकल ब्रजबाल।
हम जान्यो कोउ वृषभहै, यह तौ असुर कराल॥

सो० दुष्टदलन गोपाल, मुदित कहत नर नारि सब।
भक्तनको रक्षपाल, ब्रजबासी नँदलाड़िलो॥

जब अरिष्ट मार्यो गिरिधारी ❀ भयो कंस सुनि बहुत दुखारी
आये ऋषि नारद तिहिकाला ❀ कह्यो कंससों सुनु भूपाला
जिन मारे सब असुर तुम्हारे ❀ ते नहिं होहिं नन्द के बारे
मैं जान्यों निश्चय यह भेऊ ❀ हैं बसुदेव पुत्र वे दोऊ
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई ❀ सो वह हती यशोमति जाई
भयो कछू यह सुनु छल राजा ❀ को जाने कर्त्ता के काजा
यह तो पुत्र भयो हो जबहीं ❀ कही हुती तोसों मैं तबहीं
अपनी सों बहुते तुम कीनों ❀ सो क्यों मिटै जो बिधि लिखि दीनों
करहु यत्न तुम अबहुँ सवारे ❀ यह कह नारद स्वर्ग सिधारे
उठ्यो कंस सुनि मुनि की बानी ❀ भयो शोचबश मूढ़ अज्ञानी
प्रथम देवकी अरु बसुदेऊ ❀ छोड़े हुते बन्दिते दोऊ
बहुत बुरो मान्यो तिन पाहीं ❀ राखे बहुरि बन्दि के माहीं

दो० कैसे मारौं कह करौं, निशि दिन यहै बिचार।
शालिरहे नृप कंस उर, हलधर नन्दकुमार॥

सो० अबधौं पठऊं काहि, मनहींमन शोचत खरो।
काहु न मार्यो ताहि, असुर गये ते सब मरे॥

अथ केशीबधलीला ॥

असुरन माहिं बड़ो बलधारी ❀ केशी असुर बीर अति भारी
कंस ताहि तब बोलि पठायो ❀ अति आदर करि ढिग बैठायो
कहत कंस केशी सुनु मोसों ❀ जी की बात कहत मैं तासों
मो समान राजा कोउ नाहीं ❀ मेरी आन सकल जगमाहीं
ये सेवक मेरे नहिं ऐसे ❀ जैसे मैं चाहत हौं तैसे
जासों कहौं बात मैं जोई ❀ करि आवै कारज वह सोई
ताते मोहिं यही पछितायो ❀ तब केशी कहि वचन सुनायो
ऐसो कहा कठिन प्रभु काजा ❀ जाको तुम शोचत हौ राजा
तुम हौ सब असुरन के नायक ❀ और कौन दूजो तुम लायक
जाहि क्रोध करि चितवो जबहीं ❀ ताको नाश होय नृप तबहीं
आयसु कहा मोहिं किन दीजे ❀ सो कारज अबहीं हम कीजे
यह सुनि कंस हरष जिय आन्यो ❀ केशी को बहुभांति बखान्यो

दो० असुर बंश सबही हते, काहि कहौं सुबखान।
नंदमहर के छोहरा, करि आवै बिन प्रान॥

सो० कियो न तिन कछु काज, आगे जे पठये असुर।
यह सुनिकै अति लाज, मारे सब नँदबालकन॥

तोतें कछु ह्वै है मैं जानत ❀ बड़ो बीर तोको मैं मानत
ता कारण ब्रज तोहिं पठाऊं ❀ बहुत और कहि कहा सिखाऊं
जिहितिहिबिधि छलबलकरिकोऊ ❀ मारिआव नँदबालक दोऊ
कै लै आव बांधि दोउ भैया ❀ कहत जिन्हैं बलराम कन्हैया
यह सुनि गर्व असुर भट कीनो ❀ चल्यो ब्रजहि नृप आयसु दीनो
मनहिं कहत देखौं धौं ताही ❀ कंसनृपति डरपत सब जाही
अश्व रूप ह्वै ब्रज में आयो ❀ अति बल गरजि चहूंदिशि धायो

बेगवन्त अति बपुष बिशाला ❋ भारत ग्रीव पूछ बिकराला
बारहि बारहि सो धुनि करही ❋ ब्रजके लोगन मारत फिरही
जित तित भाजि चले नर नारी ❋ भये बिकल सब अति भय भारी
कह्यो जाय आतुर प्रभुपाहीं ❋ अश्व एक आयो ब्रजमाहीं
अति बिकराल न जात बतायो ❋ कै धौं बहुरि असुर कोउ आयो

दो० ब्रज आयो केशी असुर, जान लियो नँदलाल।
सम्मुख ताके हरषि कै, चले कंस के काल॥

सो० शीश मुकुट बनमाल, कटि कसि बांध्यो पीत पट।
उर भुज नैन बिशाल, असुर बिदारन सुर सुखद॥

जब केशी देखे हरि आवत ❋ भयो क्रोध करि सम्मुख धावत
अति बल दोऊ चरण उठाये ❋ प्रभु के उरको चपल चलाये
देखत डरे सकल ब्रजबासी ❋ गहे बीचही हरि अबिनासी
छूट न असुर बहुत बल कीनो ❋ ठेलि श्याम पाछे तब दीनो
गिरो धरणि पर मूर्छित भारी ❋ उठ्यो क्रोध करि बहुरि सँभारी
दाँव घात करिकै बहु धावै ❋ पुनि पुनि चरण चपेट चलावै
अतिहि बेग हरि जात बचाई ❋ करत युद्ध कौतुक सुखदाई
देखत सुर मुनि चढ़े अकासा ❋ कछु हर्षे मन कछु इक त्रासा
तकत गोप गोपी भय बाढ़े ❋ चकित चित्र लिखे से ठाढ़े
बदन पसारि असुर तब धायो ❋ चाहत हरिको मुखमें नायो
तबहिं श्याम यह बुद्धि उपाई ❋ दियो हाथ ताके मुख नाई
दांतन दाब सक्यो सो नाहीं ❋ बृक्ष समान भयो मुख माहीं

दो० एक हाथ मुख नाइके, तुरत केश गहि धाय।
बली सुवन नँदरायके, पटक्यो असुर फिराय॥

सो० शब्द भयो आघात, धरक्यो उर सुनि कंसको।

नन्दमहर के तात, जान्यो केशीको हन्यो ॥

देखत सुरगण भये सुखारी ❋ वर्षें सुमन सुमंगल कारी
प्रफुलित भये सकल ब्रजबासी ❋ बढ़्यो हर्ष उर मिटी उदासी
गावत जय यश प्रभुहि सुनाई ❋ असुर निकंदन जन सुखदाई
धाय धाय हरि को सब भेंटे ❋ धन्य धन्य कहि कहि दुख मेटे
बड़ो दुष्ट मोहन तुम मास्यो ❋ ब्रजबासिन को प्राण उबास्यो
कान्हहि सदा सहाय हमारी ❋ धन्य धन्य मोहन गिरिधारी
लिये लाय उर यशुमति मैया ❋ पुनि पुनि मुखकी लेत बलैया
नंद देखि आनँद अति कीनो ❋ बहुत दान विप्रन को दीनो
हरिको लै पुनि पुनि उर लावत ❋ मुख चूंबत लखि छवि सुख पावत
केशी मार श्याम गृह आये ❋ भये सकल आनन्द बधाये
घर घर सब ब्रज लोग लुगाई ❋ नन्दनँदन की करत बड़ाई
ब्रजबासी प्रभु जन प्रतिपालक ❋ संतन सुखद असुर कुल घालक

दो० धनि धनि ब्रजमें अवतरे, भक्तन के हित आय।
सुखसागरशोभाअधिक, बलनिधित्रिभुवनराय॥

सो० बल मोहन दोउ भाय, चिरजीवो जोरी युगल।
देत अशीश मनाय, ब्रजबासी प्रभुको सबै॥

अथ व्योमासुरबधलीला ॥

दूजे दिन सुन्दर ब्रजनाथा ❋ गये वनहिं गायन के साथा
बलदाऊ अरु ग्वाल सुहाये ❋ शोभित संग सुभग मन भाये
गइं गाय बन में अगवाई ❋ जहँ तहँ चरन लगीं सुख पाई
ग्वालन संग श्याम अनुरागे ❋ चोर मिहिचनी खेलन लागे
भये मगन तन सुधि कछु नाहीं ❋ दौरत दुरत फिरत मग माहीं
तबहिं कंस केशी बध सुनिकै ❋ बार बार शोचत शिर धुनिकै

ब्योमासुर यक अति बलवाना ❋ माया चरित बहुत सो जाना
पठयो ताको तब ब्रजमाहीं ❋ मारन कह्यो श्यामको ताहीं
गोप बेष धरि सो ब्रज आयो ❋ ढूंढ़त हरिको बनमें पायो
गयो समाय सखन के माहीं ❋ ताको किनहूं जान्यो नाहीं
ब्योमासुर यक बुद्धि उपाई ❋ प्रथम बालकन लेहुँ चुराई
इकलो करि जब हरिको पाऊं ❋ तब मारौं कै गहि लै जाऊं

दो० दुरन जाहिं बालक जहां, तहां असुर सँग जाय।
आवहि एकहि एक लै, परबत माहिं दुराय॥

सो० रहिगये थोरे ग्वाल, जब यों बहु बालक हरे।
तब जान्यो नँदलाल, ब्योमासुर के कपटको॥

धस्यो ध्यान तब कुँवर कन्हाई ❋ हरिसों ताकी कहा बसाई
तुरत असुर लै भूपर पटक्यो ❋ प्राण देह तजि स्वर्गहि सटक्यो
असुर मारिकै दीनदयाला ❋ बालक शोधन चले गोपाला
ऋषि नारद आये त्यहि काला ❋ देखि श्याम मुख लख्यो बिशाला
उपज्यो प्रेम हरष उर पावन ❋ बीन बजाय लगे यश गावन
जय जय ब्रह्म सनातन स्वामी ❋ आदिपुरुष प्रभु अन्तर्यामी
अलख अनीह अनन्त अपारा ❋ को जानै प्रभु रूप तुम्हारा
सकल सृष्टि के सिरजन हारे ❋ पालन लय सब ख्याल तुम्हारे
युग युग यह अवतार गुसाईं ❋ भक्तन हित प्रभु लेत सदाईं
धरणी भार पाप भइ भारी ❋ सुरन संग लै जाय पुकारी
त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी ❋ राखि लेहु प्रभु शरण उबारी
राज अनीति सुरन तब भाखी ❋ शशि अरु सूर भये सब साखी

दो० क्षीरसिन्धु अहिसेज प्रभु, श्रवणन परी पुकार।
तब जान्यो सुर सन्त महि, दुखित दनुजके भार॥

सो० कह्यो भूमि अवतार, सिन्धु मध्य बाणी प्रगट।
श्रीपति प्रभु असुरारि, जगत्राता दाता अभै॥

मथुरा जन्म गोकुलहि आये ❋ मात पिता सोवतही पाये
नन्द यशोदा बालक जान्यो ❋ गोपिन कामरूप करि मान्यो
पय पीवतही बकी बिनासी ❋ भयो असुर सुनि कंस उदासी
यहि अन्तर जे दनुज पठाये ❋ ते प्रभु सब कौतुकहि नशाये
धन्य धन्य ये ब्रजके बासी ❋ जिन बश किये ब्रह्म सुखरासी
मन बुधि बचन तर्क तें न्यारे ❋ निगमहु अगम न परत बिचारे
ते ब्रज युवतिन बसहिं बिहारे ❋ कमल नयन प्रभु नन्ददुलारे
नील जलज तन सुन्दर श्यामा ❋ मोर मुकुट कुण्डल अभिरामा
मुरलीधर पीताम्बर धारी ❋ बनमाला धर कुञ्जविहारी
बसहु रूप यह उर धर पाऊं ❋ बहुरि नाथप्रभु विनय सुनाऊं
यह अवतार जबहिं प्रभु लीनो ❋ आयसु सुरन यहै प्रभु दीनो
दैत्य दहन सन्तन सुखकारी ❋ अब मारहु प्रभु कंस विचारी

दो० जब यह गाथा गायकै, नारद कही सुनाय।
बोले प्रभु करि तब कृपा, सुधा बचन मुसकाय॥

सो० जाहु बेगि मुबिराय, करहु सुरनको काज यह।
पठवहु मोहिं बुलाय, नृप आयसु ते मधुपुरी॥

जब प्रभु हँसि यह आयसु दीनो ❋ तब प्रणाम प्रभु को ऋषि कीनो
हरषि चले मुनि नृपके पासा ❋ यहै बुद्धि मन करत प्रकासा
यहै बात हलधर समुझाई ❋ जो बानी ऋषि गये सुनाई
तुम प्रभु अखिल लोकके कारन ❋ जन्मे हौ भुबिभार उतारन
परमपुरुष अबिगति अबिकारा ❋ अबिनाशी अद्वैत अपारा
सिन्धुरूप जनहित सुखकारी ❋ त्रिभुवनपति श्रीपति असुरारी

संकर्षण जब ऐसो भाख्यो ❀ सुनि सुनि श्याम हृदय सब राख्यो
तब हँसि कही भ्रातसों बानी ❀ जो तुम कहत बात मैं जानी
कंसनिकन्दन नाम कहाऊं ❀ केश गहौं पुहुमी घसिटाऊं
ऐसे प्रभु हलधर समुझाये ❀ बालक बहुरि शोध सब लाये
ब्योमासुर मार्यो नँदलाला ❀ भये मुदित सब देख गुवाला
धन्य धन्य सब प्रभु को भाखे ❀ कहत आज तुम हम सब राखे

दो० गाय गोप हलधर सहित, भये परम आनंद।
सांझ समय बनसे चले, ब्रज को श्रीनँदनंद॥

सो० आये नंद अबास, प्रभु ब्रजबासी दास के।
गये कंस के पास, ऋषि नारद मथुरापुरी॥

नारद गये कंस के पासा ❀ मन मारे मुख करे उदासा
आदर करि आसन बैठाये ❀ हर्षि कंस मुनि निकट बुलाये
कैसो मुख ऋषि मन क्यों मारे ❀ कह चिन्ता मन बढ़ी तुम्हारे
नारद कही सुनो हो राऊ ❀ कह बैठे कछु करहु उपाऊ
त्रिभुवन में नाहीं कोउ ऐसो ❀ देख्यो नन्दसुवन मैं जैसो
करत कहा रजधानी ऐसी ❀ उपजी तुम को बात अनैसी
दिन दिन भयो प्रबल बहुभारी ❀ हम सब हितकी कहत तुम्हारी
तब बोल्यो नृप गर्बित बानी ❀ यह नारद तुम कहा बखानी
यदपि कहतहौ तुम हित केरी ❀ तदपि बराबरि नहिं वह मेरी
कोटि दनुज मो सम मो पासा ❀ जिनको देखि सुरन मन त्रासा
कोटि कोटि जिनके सँग योधा ❀ जीतसकै को जिनके क्रोधा
तिन के बल कह कहूं बताई ❀ देखत जिनको काल डराई

दो० रहत द्वार संतत खरी, कोटि भवनकी भीर।
अति प्रचंड कोदंडधर, महाबली रणधीर॥

सो० महामत्त गज एक, त्रिभुवन गामी कुबलया।
ऐसे सुभट अनेक, नामी सुभटन को गनै॥

कहा ग्वाल के बालक दोऊ ❀ यदपि बली उपजे हैं ओऊ
प्रजा लोग ब्रजके सब मेरे ❀ सेवा करत सदा रहे नेरे
ताते सकुचत हौं उन काजा ❀ बालक सुनत होत म्वहिं लाजा
भली करी यह बात बुझाई ❀ मनकी डारौं खटक मिटाई
सुनहु और नारदमुनि हमसों ❀ कहत मतेकी वानी तुमसों
उनपर सेना कहा पठाऊं ❀ नन्द सहित सहजहि बुलवाऊं
डारौं गज के चरण खुंदाई ❀ और प्रजा ब्रज देउँ वसाई
यहै बात मेरे मन आई ❀ तब सुनि मुनि बोले मुसुकाई
जो तुम अपनो गर्व सँभारो ❀ तो जानो अब तुम उन मारो
त्रिभुवनमें को बलहि तुम्हारे ❀ यह कहि मुनि विधिधाम पधारे
कंस आपने जिय यह जानी ❀ नारद हितकी बात बखानी
अब मारौं नहिं गहर लगाऊं ❀ मथुरा जिहि तिहि भांति बुलाऊं

दो० यहै शोच उर में पर्यो, नहिं बिचार कछु और।
कैसे तिन्हैं बुलाइये, करत मनहिं मन दौर॥

सो० कबहुं बिचारत हीय, आपहि चढ़ि धाऊं ब्रजहि।
पुनि सकुचत है जीय, ब्रजबासी प्रभुगुण समुझि॥

जन्महिते वै हैं असुरारी ❀ सातहिं दिन ले बकी सँहारी
कागासुर बल गयो बढ़ाई ❀ सो मुरझाय गिर्यो फिरि आई
शकट तृणा क्षणही में मारे ❀ ख्यालहि और असुर संहारे
गये प्रतिज्ञा करि करि जोई ❀ आयो नहिं जीवत फिरि कोई
अब उनको सहजही बुलाऊँ ❀ ऐसो को जिहि लेन पठाऊँ
जाय नन्द सौं कहै बुझाई ❀ श्याम राम सुन्दर दोउ भाई

सुनि सुनि अति नृपके मन भाये ❀ देखन को मधुपुरी बुलाये
ऐसे करि जब वे ह्यां ऐहैं ❀ बहुरो जियत जान नहिं पैहैं
यह बिचार उर में ठहरायो ❀ तब आतुर अक्रूर बुलायो
सुनि अक्रूर मन में भय पायो ❀ किहि कारण नृप बेगि बुलायो
आतुर गयो पँवरि पर धाई ❀ जाय पँवरिया खबर जनाई
सुनतहिं बोलि महल में लीनो ❀ सकुच गवन सुफलकसुत कीनो

दो० कछु डर कछु जिय धीरधर, गयो नृपतिके पास।
देखि डर्यो मुख शोचबश, उर ते लेत उसास॥

सो० हाथ जोरि शिरनाय, अनबोल्यो सम्मुख रह्यो।
लीनो ढिग बैठाय, मरम बचन कहि कंस तब॥

आपहि और तहां कोउ नाहीं ❀ बोल्यो नृप सुफलकसुत पाहीं
कहि जु गये नारद ऋषि बानी ❀ सो सब कहिकै प्रगट बखानी
सुनि अक्रूर कहत सत तोकों ❀ श्याम राम शालत उर मोकों
ज्यहित्यहिबिधिअबउनको मारों ❀ यह कछु दोष हृदय नहिं धारों
पठवों काहि जाहि ब्रज जोई ❀ कहै प्रीति करि नन्दहि सोई
बल मोहन तुव तनय सुहाये ❀ तुमहिं सहित नृपराज बुलाये
सुन गुणरूपहि अगम अगाधा ❀ है नृप को देखन की साधा
काली पीठ कमल लै आये ❀ तब तें नृप के मन में भाये
सो बकसीस इन्हें अब देहैं ❀ इन के बचन सुनत सुख पैहैं
यह कहिकै उन को लै आवै ❀ भेद सु कोऊ जानि न पावै
ऐसे कहि जब कंस सुनायो ❀ तब अक्रूरहि धीरज आयो
मन मन कहत कहा यहि भावै ❀ आपुहि अपनो काल बुलावै

दो० कियो बिचार अक्रूर तब, कहत जु कछु मैं और।
तौ मारैगो मोहिं यह, अबहीं याही ठौर॥

सो० कह्यो मानि है नाहिं, काल याहि आयो निकट।
यह बिचारि मनमाहिं, सुफलकसुत बोल्योहरषि॥

सुनहु नृपति नीके मन आनी ❀ धनि धनि नारद सत्य बखानी
बड़े शत्रु हम कों वे दोऊ ❀ उपजे नन्द भवन में कोऊ
कीजे बेगि नृपति यह काजा ❀ तुम सरि और कौन म्वहिं राजा
मुख तें आयसु जो करि पाऊं ❀ भोर बेग तिहि ब्रजहि पठाऊं
सुफलकसुत यह कही सयानी ❀ तब हर्ष्यो नृप सुनि यह बानी
फिरि फिरि कहत हिये गरबाई ❀ प्रात बोलि मारौं दोउ भाई
आधी निशिलौं यह मन कीनो ❀ तब अक्रूर विदा करिदीनो
पर्‍यो सेज आलस जिय जानी ❀ सेवा करन लगीं सब रानी
नेक पलक लागी झपकाई ❀ लखे सुपन बलराम कन्हाई
काल सरिस दोउ देख डरानो ❀ झिझकि उठ्यो भरम्यो ससकानो
देख्यो जागि तहां नहिं दोऊ ❀ चकित भईं रानी सब कोऊ
बूझन लगीं सबै अकुलाई ❀ कह झिझिके सपने नृपराई

दो० महाराज झिझिके कहा, सपने आज सकाय।
कहिये काको शोच अति, जीमें रह्यो समाय॥

सो० तब मनमें सकुचाय, सहजहि रानिनसों कह्यो।
भेद न भयो जनाय, मम शंका उर धकधकी॥

सावधान प्रतिपाल कराये ❀ जहँ तहँ योधा सकल समाये
श्याम राम भय पलक न लावै ❀ अंतर शोच न प्रगट जनावै
जाग्यो आप संग सब नारी ❀ भई याम निशि युग तें भारी
बैठत कबहुँ उठत अकुलाई ❀ ठाढ़ो होत कबहुँ अँगनाई
घरियाली सों पूछि पठावै ❀ बार बार निशि खबर मँगावै
शोचत सब प्रातहि कह करिहै ❀ क्रोध भर्‍यो नृप का शिर परिहै

कही घरीनिशि गणकन बाकी ❀ इक इक क्षण युग यह गति ताकी
कहत ब्रजहि धौं काहि पठाऊं ❀ जासों कहि नँदसुवन मँगाऊं
पठवों अक्रूरहि को जाई ❀ ल्यावैं ब्रज तें ठगि दोउ भाई
इत देख्यो सपनो नँदराई ❀ बल मोहन कहुँ गये हिराई
ग्वाल बाल रोवत पछिताहीं ❀ कहत श्यामतौ अब ब्रज नाहीं
संगहि खेलत रहे हमारे ❀ निठुर होय कहुँ अंत सिधारे

दो० दूत एक कोउ आयके, सँग लै गये लिवाय।
वाहीके दोउ ह्वैगये, ब्रजबासिन बिसराय॥

सो० अति व्याकुल नँदराय, मुरझि परे धरणी सुनत।
बिबश यशोदा माय, श्यामबिरह व्याकुल खरी॥

व्याकुल नर नारी ब्रजबासी ❀ पशु पक्षी सब परम उदासी
रोवत गिरत धरणि दुख पागे ❀ अति अकुलाय नंद तब जागे
धकधकात उर स्रवत नयन जल ❀ सुत अँग परसन लागे शीतल
ससकत सुनत अतिहि अतुरानी ❀ कह भरमे पूछत नँदरानी
नन्द नहीं कछु भेद जनायो ❀ श्यामहिं लखि धीरज उर आयो
अति प्रभात रबि उगन न पायो ❀ सुफलकसुत उत कंस बुलायो
सुनतहि द्वारपाल उठि धायो ❀ सोवत ते अक्रूर जगायो
कह्यो बेगि चलिये नृपपासा ❀ समझि मंत्र निशि चल्यो उदासा
ठाढ़ो नृपति द्वारही पायो ❀ देखत दूरिहिते शिर नायो
अति आदर करि निकट बुलायो ❀ सिरो पाव नृप तुरत मँगायो
अक्रूरहि निज कर पहिरायो ❀ बहुत कृपा करि बचन सुनायो
ल्यावहु नन्द महर सुत दोऊ ❀ तुमसम और चतुर नहिं कोऊ

दो० मुख हरष्यो अक्रूर सुनि, हृदय गयो बिलखाय।
असुर त्रास जियमें पर्यो, बचन कह्यो नहिं जाय॥

सो॰ दीनो रथहि चढ़ाय, जाहु बेगि ब्रज नृप कह्यो।
लै आवहु दोउ भाय, अबहिं बिलंब न कीजिये॥
तब अक्रूर कह्यो कर जोरी ❋ सुनहु देव बिनती इक मोरी
बल मोहन प्रातहि दोउ भैया ❋ बन को जायँ चरावन गैया
जो उनको घरमें नहिं पाऊं ❋ जाते प्रभु यह बात सुनाऊं
आज नन्द गृह बसिहौं जाई ❋ प्रातहि लै आवहुं दोउ भाई
ऐसे जब अक्रूर जनायो ❋ कंस बात यह मानि पठायो
शीश नाय तब रथचढ़ि हांक्यो ❋ सुफलकसुत ब्रज सम्मुख ताक्यो
बहु प्रशंसि सब मल्ल बुलाये ❋ चाणूरादि सकल चलि आये
तिनसों कह्यो सुनौ सब बीरा ❋ ब्रजमें रहत जु नन्द अहीरा
कहियत बली तासु सुत दोऊ ❋ रामकृष्ण जिन कहै सब कोऊ
बहुत असुर मेरे उन मारे ❋ ताते हैं वे शत्रु हमारे
उनको मैं मधुपुरी बुलायों ❋ सुफलकसुत को लेन पठायों
उन को मति जानौ तुम बारे ❋ हैं वे महा कठिन बल भारे
दो॰ रंगभूमि तातें रचौ, चित्र विचित्र बनाय।
सावधान ह्वैकै तहां, रहौ मल्ल सब जाय॥
सो॰ ऊँचो एक मचान, तहां और सुन्दर रचौ।
जहां असुर परधान, बैठैं सब मेरे निकट॥
योधा और अनेक बुलावो ❋ सावधान करि सब बैठावो
ताते और पौरके बाहर ❋ रहै कुबलया गज तिहिठाहर
राखौ द्वार तीसरे जाई ❋ गरुव कठिन अति धनुष धराई
बहु भट तहां रहैं रखवारी ❋ अस्त्र शस्त्र धारी बल भारी
ऐसे सजग रहौ सब कोऊ ❋ जब आवैं वे बालक दोऊ
प्रथम धनुष उनसों चढ़वावो ❋ उन्हैं कहौ यह धनुष उठावो

जब वे धनुष उठावैं नाहीं ❋ घेरिलेहु उनको तिहि ठाहीं
ताही ठौर मार दोउ लीज्यो ❋ भीतरलौं आवन नहिं दीज्यो
जो कदापि ह्वांतें चलि आवैं ❋ तौ गजतें आवन नहिं पावैं
डारौ गज के चरण रुँदाई ❋ तुमको राखत अबहिं जनाई
जो छल बल करिकै बचि आवैं ❋ रङ्गभूमि आवन नहिं पावैं
तौ सब मल्ल मार उन लेहू ❋ मो समीप आवन नहिं देहू

दो० ठौरहि ठौर सजायकै, सजग रहौ इहि भाँत।
जिहिं तिहिं बिधि मारौ उन्हैं, नहीं दूसरी बात॥

सो० मन मन मौज बढ़ाय, ऐसो आयसु दे सबन।
गयो सदन नृपराय, सुनहु कथा अक्रूर की॥

सुफलकसुत मन शोच अपारा ❋ है नृप कंस बड़ो हत्यारा
मंत्र कियो मिलि मेरे साथा ❋ पठयो मोहिं लेन ब्रजनाथा
कैसे आनि देउं मैं जाई ❋ मो देखत मारै दोउ भाई
नगर निकसि रथ कीन्हों ठाढ़ो ❋ पर्यो बिचार हृदय अति गाढ़ो
गज मुष्टिक चाणूर सुमिरिकै ❋ आयो नीर लोचनन ढरिकै
अति बालक बलराम कन्हाई ❋ कहा करौं कछु नाहिं बसाई
मोहिं मारि अरु बन्दि करावै ❋ यह बिचार करि रथ न चलावै
पुनि पुनि कृष्ण हृदय में ल्यावै ❋ चलत फिरत कछु बनि नहिं आवै
प्रभु कृपाल सब अंतर्यामी ❋ सुफलकसुत मन पूरण कामी
सुमिरत कृष्ण हृदय यह आई ❋ वे श्रीपति प्रभु त्रिभुवन राई
अखिल जगत के कारण कर्त्ता ❋ उत्पति पालन अरु संहर्त्ता
भूमिभार वारन अवतारा ❋ को जानै गुण रूप अपारा

दो० धन्य कंस जिन मोहि ब्रज, पठयो लेन गोपाल।
जाय रूप वह देखिहौं, निगम नेति नँदलाल॥

सो॰ यह बिचार उर आन, रथ हांक्यो अक्रूर तब।
भयो शकुन शुभवान, मृगगण आये दाहिने ॥

दहिने देखि मृगन की माला ❋ सुफलकसुत उर हर्ष बिशाला
कहत आज इन शकुनन जाई ❋ भुज भरि मिलिहौं प्रभु सुखदाई
श्याम सुभगतन परम सुहावन ❋ इंदुवदन त्रयताप नशावन
अंग त्रिभंग किये गोपाला ❋ सारसहू ते नयन विशाला
मोर मुकुट कुण्डल बनमाला ❋ कटि कछनी पट पीत विशाला
तब चंदन की खौर बनाये ❋ नटवर वेप मनोज लजाये
ह्वैहैं गैयन के सँग ठाढ़े ❋ ग्वालनमध्य महाछवि बाढ़े
सो दरशन लखि होब सनाथा ❋ धरिहौं जाय चरणपर माथा
जे शुभ चरण पितामह ध्यावैं ❋ महिमा जिनकी वेद बतावैं
जिन चरणन कमलापति मानी ❋ शंभु धस्यो शिर जिनको पानी
सनकादिक नारद यश गावैं ❋ जिन चरणन योगी चित ल्यावैं
बलि जिनकी मर्याद न पाई ❋ हारि मानि निज पीठ नपाई

दो॰ शिला शाप मोचन करन, हरन भक्त उरपीर।
आज देखिहौं ते चरण, सकल सुखनकी सीर ॥

सो॰ अरुण कंज के रंग, अंकित अंकुश कुलिश ध्वज।
गोपबालकन संग, गोचारत बन पाइहौं ॥

परिहौं जाय चरण पर जबहीं ❋ भुजन उठाय भेंटिहैं तबहीं
परसत उर आनँद उपजैहैं ❋ अंगन पुलकि तनूरुह ऐहैं
देखत दरश परम सुख ह्वैहैं ❋ प्रेम सलिल लोचन भरिजैहैं
कुशल पूछिहैं म्वहिं सुखदानी ❋ कहि नहिं सकिहौं गदगद बानी
बारहिं बार बचन मृदु कैहैं ❋ सुनि सुनि श्रवण परम सुख पैहैं
यों अक्रूर ध्यान में अटक्यो ❋ भूल्यो पंथ फिरत रथ भटक्यो

हरि अनुराग भयो उर माहीं ❋ रही देहकी सुधि कछु नाहीं
सांझ भई गोकुल नहिं पायो ❋ नहिं जानत को हौं कहँ आयो
किन पठयो कह बात न जानी ❋ रथ बाहनकी सुरति भुलानी
भयो हर्ष उर प्रेम बिशाला ❋ दशहूं दिशि पूरण गोपाला
हरि अंतर्यामी सब जानी ❋ भक्तबछल है जिनकी बानी
भक्तभाव करि जो कोइ आवैं ❋ मिलत तिन्हैं नहिं बिलम लगावैं

दो० ग्वाल संग वृन्दा बिपिन, चारत धेनु सुजान।
चले हरषि हलधर सहित, भक्तहेत जिय जान॥

सो० यमुन पार करि गाय, गौरी गावत हरषि हरि।
गायन तहां मँगाय, लागे गो दोहन करन॥

गायन दुहन लगे सब ग्वाला ❋ आपहु दुहत भये नँदलाला
भक्त हेत यह सुख उपजायो ❋ तहां दरश सुफलकसुत पायो
रहि न सक्यो रथपर सुख व्याकुल ❋ उतरि पस्यो भूपर अति आकुल
भयो मनोरथ मनको भायो ❋ दौरि श्याम चरणन शिर नायो
पुलकगात लोचन जल धारा ❋ हृदय प्रेम आनंद अपारा
कृपासिन्धु करि कृपा उठायो ❋ भक्त हेतु मिलि कण्ठ लगायो
भयो जु सुख सो सोई जाने ❋ ब्रजबासी किहिभांति बखाने
जो अक्रूर चरित मन कीनो ❋ तैसिय भांति दरश हरि दीनो
मधुर बचन श्रवणन सुखदाई ❋ पुनि पुनि पूछत कुँवर कन्हाई
आनन चारु निरखि सुखकारी ❋ तब बोल्यो अक्रूर सँभारी
कुशल नाथ अब दरश निहारी ❋ दैत्य दलन भक्तन हितकारी
भेदहि भेद कंस की बानी ❋ सुफलकसुत सब प्रगट बखानी

दो० सुनत बचन अक्रूर के, मुसकाने ब्रजचन्द।
फरकि भुजा भू भारकी, टारन असुरनिकन्द॥

सो० मिले राम पुनि आय, परम प्रीति अक्रूर सों।
उर आनँद न समाय, बासुदेव दोऊ निरखि॥

कहि कहि उठत इहै नँदलाला ❋ हमहिं बुलायो कंस भुआला
लेबे को अक्रूर पठाये ❋ काल्हिहि करि अति कृपा मँगाये
सुनतहि भये चकित सब ग्वाला ❋ कहा कहत हैं मदन गोपाला
भये प्रेम बश मति अकुलानी ❋ भरि आयो नैनन में पानी
निरखि सबनको मुख सुखदानी ❋ तब बोले करि श्याम सयानी
चलहु काल्हि देखहिं नृप कंसा ❋ मति आनौ जियमें कछु संसा
यह कहि चले हरषि ब्रजबालन ❋ कछू हरष कछु संशय ग्वालन
अति कोमल बलराम कन्हाई ❋ हँसि लीने अक्रूर उठाई
सुमनहु ते हरुवे सुखदनियां ❋ दोउ लसत सुफलकसुत कनियां
ग्वाल सकल लीनो रथ डोरी ❋ पहुँचे आय सकल ब्रजखोरी
लखि जहँ तहँ ब्रजलोग चकाने ❋ कंस दूत सुनि नन्द सकाने
सपनो समुझि शोच उर छायो ❋ मन मन कहत कहां धौं आयो

दो० आतुर उठि आगे चले, लेन नन्द उपनन्द।
देखन धाये घरनते, सुनत नारि नर वृन्द॥
सो० श्यामराम उर लाय, स्यंदन तजि सुफलकसुवन।
आवत लखि नँदराय, भये हरष बिस्मय बिवश॥

सादर तिनको शीश नवाये ❋ कुशल प्रश्न करि गृह लै आये
चरण धोय बैठक शुभ दीनी ❋ बिबिध भांति भोजन विधि कीनी
क्षणक होत नहिं नेक नियारे ❋ मनहुँ दुलार उनहिं प्रतिपारे
तब अक्रूर संग लै दोऊ ❋ भोजन कियो लखत सब कोऊ
हरि इत उत फेरत नहिं आंखैं ❋ सब ब्रजलोग मनहिंमन भाखैं
उठे अँचै तब पान खवाये ❋ आदर सहित पलँग बैठाये

पुनि करजोरि नन्द यों भाख्यो ❋ कहा कृपा करि पग इत राख्यो
तब ऐसे अक्रूर सुनायो ❋ बल मोहन को नृपहि बुलायो
तुमको कह्यो संग लै आवैं ❋ सुनि सुनि गुण मेरेमन भावैं
सङ्कर्षण अरु कुँवर कन्हैया ❋ मिलिगये अक्रूरहि दोउ भैया
देखन को अभिलाष जनायो ❋ तातें बेगहिं प्रात बुलायो
ब्रज के लोग सुनत यह बानी ❋ भये चकित सुधि बुद्धि हिरानी

दो० चकित नन्द यशुमति चकित, मनहीं मन अकुलात।
हरि हलधर को सैन दे, सबै बुलावत जात॥

सो० माया रहित मुकुन्द, योग बियोग जाके नहीं।
सदा एक आनन्द, अबिगति अबिनाशी पुरुष॥

प्रेमभक्त की कछु उर लाजा ❋ कीनो चहैं भूमिसुर काजा
जाते नहिं काहू तन हेरत ❋ बोलत नहीं नैन नहिं फेरत
मनु पहिंचान कबहुंकी नाहीं ❋ लखि लखि सब डरपत मनमाहीं
हरि सुफलकसुतसों मन लायो ❋ यहै कहत नृप हमहिं बुलायो
हुती साध हमहूं मन माहीं ❋ कबहुं नृपति बोल्यो क्यों नाहीं
हँसि हँसि ऐसे कहत मुरारी ❋ यह सुनि बिकल सकल नर नारी
श्याम नहीं कछु मनमें आने ❋ भये नेह तजि तुरत बिराने
कहति परस्पर तिय अकुलाई ❋ कितते आयो यह दुखदाई
महाक्रूर अक्रूर नाम को ❋ जैहै प्रात लिवाय श्याम को
जान कहत या संग कन्हाई ❋ कैसे प्राण रहैंगे माई
बिलखि बचन शोचति सब ठाढ़ी ❋ मनहुं बिचित्र चित्र लिखि काढ़ी
अब हम संग तुम्हारे जैहैं ❋ भलीभांति नृप देखन पैहैं

दो० ठौर ठौर ऐसी दशा, कहत न आवत बैन।
बढ़ी श्याम बिछुरन व्यथा, ढरत उमँग जल नैन॥

सो० फिरत बिकल सब ग्वाल, पूछत एकहि एकसों।
चलन कहत नँदलाल, मनमलीन ब्याकुल सबै॥
ब्रजके लोग बिकल सब देखैं ❋ तब अक्रूर सबनि परितोखैं
चिन्ता मतिहि करो मनमाहीं ❋ इनको कछू और डर नाहीं
भंजन धनुष यज्ञके काजा ❋ मधुपुरि इनहिं बुलायो राजा
ब्याकुल महरि यशोमति धाई ❋ आतुर परी चरण पर आई
सुफलकसुत मैं दासि तुम्हारी ❋ सुनौ कृपा करि विनय हमारी
संतन धाम परम उपकारी ❋ सुनियत कीरति बड़ी तिहारी
बड़े दुखन में यह प्रतिपारे ❋ राम श्याम प्राणनते प्यारे
धनुष तोर कह जानैं बारे ❋ इन कब देखे मल्ल अखारे
राजसभा को यह कह जाने ❋ कब इन नृपजुहार पहिंचाने
राजअंश अपनो सब लीजै ❋ और कहौ बरु अधिकै दीजै
जाहु नंद उपनन्दहि लैकै ❋ मैं कह करौं सुतनको दैकै
हे अक्रूर तुम्हारो नामा ❋ नगर कहा लरिकन को कामा

दो० कहा धनुष यह देखिहैं, बालक अति अज्ञान।
कियो नृपति कछु कपट यह, परतमोहिं यों जान॥
सो० देहुं नहीं हौं जान, मैं निधनी के श्याम धन।
लेहु कंस बरु प्रान, को जीवै नँदनन्द बिन॥

कहति बिलखि हरिसों दुख भारी ❋ क्यों मोहन मम छोह बिसारी
दुखित जानि अपनी महतारी ❋ मथुरा जाहु न मैं बलिहारी
ये अक्रूर क्रूर कृत रचिकै ❋ आये तुम्हैं लेन रथ सजिकै
तिरछी भई करम गति आई ❋ यह धौं बिधना कहा बनाई
मोसी मात महर सों ताता ❋ कहत रहत क्षण क्षण दोउ भ्राता
तिहि सुख जान कहत हौ प्यारे ❋ कैसे रहिहैं प्राण हमारे

मैं बलि ऐसी जिय मति धारो ❀ मथुरा में कह काज तिहारो
निरखि रूप यशुमति अकुलाई ❀ ब्याकुल परी धरणि मुरझाई
कहि अब लेवैं प्राण कन्हैया ❀ ह्वै कै निठुर तजत हैं मैया
क्यों अक्रूर गोकुलहि आयो ❀ मेरे प्राण लेन को धायो
नाम अक्रूर गुण क्रूर तुम्हारा ❀ करिहौ सूनो भवन हमारा
रोवत बदन रोहिणी मैया ❀ ब्रजके जीवन ये दोउ भैया

दो० भये निठुर अक्रूर मिल, घरहू आवत नाहिं।
कहा करौं कासों कहौं, को राखे गहि बाहिं॥

सो० अति ब्याकुल ब्रजबाम, जहां तहां बिलखी कहैं।
चलन चहत घनश्याम, धृकजु रहैंसखिप्राणतन॥

कहँ वह सुख हरिको सँग सजनी ❀ बिबिध बिलास शरदकी रजनी
हरिमुख शशि शीतल सुखकारी ❀ चखचकोर लखि रहत सुखारी
कहँ वह सुन्दर हरिगर बाहीं ❀ पियत अधर रस मन न अघाहीं
जग उपहास सह्यो जिहि लागी ❀ कुल अभिमान लाज सब त्यागी
छुट्यो चहत सो हमसों आली ❀ करी कठिन बिधि करम कुचाली
कहूं सखी फिरि कबहू ऐसे ❀ मिलिहैं अब मिलियतहैं जैसे
कहिहैं बहुरि बात हँसि कबहीं ❀ लागत परम निठुर म्वहिं अबहीं
बिरहानल अग्निहुते ताती ❀ बिछुरत श्याम पीर अति छाती
न्यायहि सखी नागरी नारी ❀ जरत बिरह उर अमित प्रचारी
अब सहिहैं ऐसो दुख प्राना ❀ निशि दिन करि उर बज्र समाना
एक कहत कैसे हरि जैहैं ❀ यशुमति पै सखि जान न पैहैं
कह करि है अक्रूर हमारो ❀ फिरिजैहै करि मुख निज कारो

दो० हमतजि हरि नहिं जाइहैं, मोहिं जीय बिश्वास।
कहा लेहिंगे मधुपुरी, छांड़ि यशोमति पास॥

सो० धर्यो तनक जब धीर, सुनि ताकी बानी सबन ।
सो जाने यह पीर, जो रँग राती श्याम के ॥

करत नन्द उपनन्द बिचारा ❀ करिये कहा कौन उपचारा
को जानै कह नृप मन माहीं ❀ नृपआयसु मेट्यो नहिं जाहीं
अति बालक बलराम कन्हाई ❀ भये शोचबश अब नँदराई
तब बोल्यो यक गोप पुरानो ❀ प्रभु प्रभाव उर राखि सयानो
कहत कि मो मन में यह आवै ❀ सोई करो जो श्यामहिं भावै
इनको बालक करि मति जानो ❀ कहिगये गर्ग सोई परमानो
ये करता हरता सबही के ❀ भार उतारनहार मही के
जिन गिरिकर धरिब्रजहि बचायो ❀ बहुरि हमैं बैकुण्ठ दिखायो
जाहि गयो सुरपति शिरनाई ❀ ल्यायो नाथि कालिअहि जाई
करुणाधाम देखि प्रभुताई ❀ करतिहते सब तुमहिं बड़ाई
कहा कंस ताको भय मानैं ❀ इनकी महिमा येही जानैं
कितक धनुष हरि तुरत चढ़ैहैं ❀ देखत नहीं कंस सुख पैहैं

दो० जो करि है कछु कपट तो, सब समरथ गोपाल ।
हरि हलधर भैया उभै, ये कालहु के काल ॥

सो० हरषे सबै अहीर, हरि प्रताप उरमें समुझि ।
सब लायक बलबीर, धीर धरौ यह जानि कै ॥

बार बार यशुमति अकुलाई ❀ कहत रहौ सुत कुँवरकन्हाई
अबहीं तात बहुत तुम बारे ❀ मथुरा बसत मल्ल हत्यारे
क्यों बलराम कहत तुम नाहीं ❀ तुम बिन लाल मात मरि जाहीं
कहत राम सुन यशुमति मैया ❀ तू मति बारो जान कन्हैया
मतिहि कंस भय व्याकुल होही ❀ एक भरोसो हरिको मोही
प्रथमहिं बकी कपट करि आई ❀ अतिहि प्रबल बिष कुच लपटाई

चारहि दिनके तबहिं कन्हाई ❀ तो देखत ही ताहि नशाई
शकट तृणाव्रत बत्स अन्याई ❀ अघ अरिष्ट केशी दुखदाई
एकहि पल में सकल सँहारे ❀ बिषजलते सब सखा उबारे
गोबर्द्धन जिन करपर धाखो ❀ महाप्रलयको जल सब टाखो
हरि सम बली और कोउ नाहीं ❀ तू मत शोच करै मन माहीं
हम बालक कह तुमहिं सिखावैं ❀ धीर धरौ हम फिरि ब्रज आवैं

दो० सुनि चरित्र गोपालके, उर आयो अवरोहि।
जो कुछ करैं सो सत्यप्रभु, आवत है सब सोहि॥

सो० कह्यो नंद तब आय, मैं लै जैहौं संग हरि।
धनुष यज्ञ दिखराय, लै ऐहौं तुरतहिं बहुरि॥

अथ मथुरागमनलीला॥

ऐसेहि सबको रात बिहानी ❀ भयो प्रात चिरिया चुचुहानी
महर कह्यो सब गोप बुलाई ❀ दधि घृत भार सजौ बहु जाई
नृपति भेंट हित करो सँजोई ❀ हरिके संग चलो सब कोई
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने ❀ चहत श्याम मधुपुरि निज जाने
पखो शोर ब्रज घर जहँ ताईं ❀ हरि मुख देखनको सब धाईं
सजत ग्वाल चलबे को साजा ❀ गैया फिरति दुहन के काजा
कह्यो श्याम अक्रूरहि तबहीं ❀ जोतहु तात तुरत रथ अबहीं
सुफलकसुत आयसु जब पायो ❀ सहित सकोच रथहि पलनायो
सुफलकसुत ढिग दोऊ भाई ❀ होत नहीं न्यारे कहुं राई
देखतही यशुमति अकुलानी ❀ परी धरणि बिलपति बिललानी
बिकल कहति मोहिं तजो दुलारे ❀ जात किये सूनो ब्रज प्यारे
यह अक्रूर ठगौरी लाई ❀ मोहे मेरे बाल कन्हाई

दो० यह सुफलकसुत बूझिये, तुम्हैं हरे मो बाल।
बिरध समयकी लकुटिया, मेरे मदनगोपाल॥
सो० देखहु मनहिं बिचार, लाभ कछु यामें तुम्हैं।
दियो धरम डर डार, क्रूर भये इत आयकै॥

चलत जात चितवत ब्रजनारी ❁ बिरह बिकल तन सुरति बिसारी
जहँ तहँ चित्र लिखीसी ठाढ़ी ❁ नैनन नीर नदी जिमि बाढ़ी
लगत निमेष कूल दोउ नाहीं ❁ भ्रमति नाव पुतरी ता माहीं
ऊरध श्वास समीर झकोरत ❁ चित्र कपोल तीरतरु तोरत
काजल कींच कुचील किये तट ❁ अधर कपोल उरज अंचल पट
रहे जहाँ तहँ पथिक जकेसे ❁ चरण हस्त मुख बचन थकेसे
श्याम बिरह व्याकुल ब्रजबाला ❁ नीर हीन जिमि मीन बिहाला
सूखत अधर बदन मुरझाने ❁ जनु हिमपरस कमल कुम्हिलाने
कहति परस्पर बचन अधीरा ❁ गदगद बचन ढरत दृगनीरा
जीवन धन प्राणन को प्यारो ❁ लिये जात अक्रूर हमारो
सुनहु सखी अब कीजै सोई ❁ जातें बहुरि शूल नहिं होई
गये दूर रथ रह्यो न जैहै ❁ पुनि पाछे पछितायो ऐहै

दो० परिहरि यश आशा जियन, लाज पंचकी कान।
करिये बिनती श्याम सों, सखी समय पहिचान॥
सो० होनी होय सो होय, पांय परसि हरि राखिये।
नातरु मरिहैं रोय, समय चूक उर शालिहै॥

प्रभु अन्तरयामी सुखदानी ❁ बिरह बिकल गोपीजन जानी
चितये नयन कमलदल लोचन ❁ सकल शोच संताप बिमोचन
मृदु मुसकानि ठगोरी डारी ❁ श्याम ठगी सब ब्रजकी नारी
रहगईं चितवत बचन न आयो ❁ चढ़े श्याम रथ अवसर पायो

हरिको नाम सुमिरि मनमाहीं ❀ चढ़े अक्रूर तुरन्त तहांहीं
देखत महरि यशोमति धाई ❀ पुत्र पुत्र कहि टेर लगाई
मोहन नेकु देखि इत लैहो ❀ बिछुरत लाल भेट म्वहिं देहो
राखहु तात बोध करि मैया ❀ बहुरो चढ़हु बिमान कन्हैया
लेहु निहार जन्म को खेरो ❀ बहुरो ब्रज में होत अँधेरो
यह कहि ग्वाल सखनको फेरो ❀ अपनी गाय जाय सब घेरो
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई ❀ किये यत्न बहु प्राण न जाई
बिलपति बिकल राम महतारी ❀ अति व्याकुल सब ब्रजकी नारी

दो० देखि दुखित ब्रजलोग सब, और यशोदा माय।
तब हरि कहि यह सुख दियो, बहुरि मिलैंगे आय॥

सो० धरणी के हितकारि, मथुरातन चितये बहुरि।
कह्यो दृगन सनकारि, रथहांकन अक्रूरसों॥

बार बार यशुदा यों भाखै ❀ कोऊ चलत गुपालहि राखै
सुफलकसुत बैरी भयो आई ❀ हरे प्राण धन बाल कन्हाई
हरहु कंस वह गोधन सारो ❀ कै करि मोहिं बन्ध में डारो
ऐसेहू दुख श्याम सभागे ❀ खेलहिं मों नयननके आगे
यह कहि महि लोटत अकुलानी ❀ अति ही दुखित नंदकी रानी
गोपीजन बिरहानल डाढ़ी ❀ रह गईं प्रेम बियोगिनि ठाढ़ी
जिमि कुमुदिनिगणनीरबिहीना ❀ रबिहि प्रकाश त्रास तें दीना
श्याम बिमुखक्षणक्षणकुम्हिलानी ❀ बहुरो मिलन कठिन जिय जानी
बल बुधि थकित स्रवत जललोचन ❀ चलि नहिं सकीं रहीं मद मोचन
ग्वैंड़े लौं सब गईं बिहाला ❀ ब्रज तजि गवन कियो गोपाला
लै गये मधु अक्रूर निकारी ❀ माखी ज्यों सब दीन बिडारी
देखत रहीं थकी कलाई ❀ जबलागि धूरि दृष्टि में आई

दो० भये ओट जब दृगन तें, मूर्च्छि परी बिलखाय।
कहति गयो रथ दूरि अब, धूरि न परति लखाय॥
सो० कहा करें ब्रज जाय, मन हरि लै गयो सांवरो।
परत न आगे पांय, पाछेही लोचन लखत॥
बदन बिकल बिरहारस माती ❋ भई न पवन संग उड़िजाती
रजहू नहीं बिधाता वानी ❋ जातीं चरणकमल लपटानी
भई नहीं यक रथको अङ्गा ❋ जातीं चलीं तहां लगि संगा
बिछुरे आज श्याम सुखराशी ❋ तौ परतीत दृगनकी नाशी
उड़ि नहिं गये श्याम सँग लागे ❋ कृष्ण मयी नहिं भये अभागे
रसिक प्रेमके जगत पखाने ❋ रूपलालची सबकोउ जाने
सो करनी कछु इन नहिं कीनी ❋ व्यथा मीनकी छबि हरि लीनी
धनि धनि मीन प्रीतिपथ सांचे ❋ सखि ये नयन हमारे कांचे
अब ये शूल सहित जिय शोचत ❋ उमगिउमगि भरिभरि जलमोचत
हरि बिन अब लखिये ब्रज सूनो ❋ समय चूक सहिये दुख दूनो
भई अजान सबै मनमाहीं ❋ काहू चलत गह्यो रथ नाहीं
बृथा लाज करि काज बिगार्यो ❋ सह्यो दुसह बिरहा दुख भार्यो
दो० यों ब्रजतिय पछिताय सब, देखि यशोदहि दीन।
लै आईं सब नंद गृह, कृश तन बदन मलीन॥
सो० ब्रजतिय परमउदास, हरि बिन सुख संपति सपन।
रहैं प्राण इहि आस, श्याम कह्यो मिलिहैं बहुरि॥
खगमृग बिकल जहां तहँ बोलैं ❋ गाय बत्स रँभत सब डोलैं
तरु बेली पल्लव कुम्हिलानी ❋ ब्रजकी दशा न परति बखानी
चले नन्द गोपन सँग लैके ❋ ब्रजबासिन को धीरज दैकै
बालसखा हरि के सुखदाई ❋ दरशन लागि चले सब धाई

उत अक्रूर शोच मनमाहीं ❋ कियो काज मैं नीको नाहीं
बल मोहन भैया दोउ बारे ❋ अति कोमल नवनीठ पियारे
करिकै जननी जनक दुखारी ❋ व्याकुल सबै घोष की नारी
मैं लै जात कंस पै तिनको ❋ मो देखत मारैगो इनको
धृक धृक धृक कुबुद्धि यह मेरी ❋ जाहुँ लिवाय इन्हैं ब्रज फेरी
कंस आज मारै बरु मोहीं ❋ हरिको जाय देहुँ नहिं ओहीं
यहि अन्तर यमुना नियराई ❋ ठाढ़ो कियो तहां रथ जाई
अन्तर्यामी हरि भगवाना ❋ भक्त हृदय संशय पहिचाना

दो० भूख लगी तब हरि कह्यो, हमैं कलेऊ देहु।
करि यमुना अस्नान पुनि, तात तुमहुँ कछु लेहु॥

सो० सुनतबचन मृदु कान, सुफलकसुत सुनि तुरतही।
कछु मेवा पकवान, भोजन दुहु भैयन दियो॥

आप स्नान करन मन दीनो ❋ यमुना पैठि संकलप कीनो
जबहीं शीश नीर में डारयो ❋ तब अचरज इक भाव निहारयो
राम कृष्ण रथ पर सुखदाई ❋ जल भीतर शोभित दोउ भाई
चकित भयो जलते शिर काढ़्यो ❋ देख्यो रथ बाहर सो ठाढ़्यो
बहुरो बूड़ि सलिल में पेख्यो ❋ वैसोइ फेरि तहां रथ देख्यो
क्षण जलमें क्षण प्रगट निहारैं ❋ पुनि पुनि संभ्रम बुद्धि बिचारैं
स्वप्न किधौं जाग्रत यह होई ❋ कै धौं मो मति में भ्रम कोई
कै धौं जल में रथ की छाया ❋ कै धौं यह हरि की कछु माया
भयो बिकल मति थिर कछु नाहीं ❋ देखन लग्यो बहुरि जलमाहीं
जब अक्रूर बहुत अकुलायो ❋ निज स्वरूप तहँ श्याम दिखायो
देखत भयो तहां जलमाहीं ❋ सकल देव ठाढ़े हरि पाहीं
अस्तुति करत चरण चित दीने ❋ नमित कंध कर संपुट कीने

दो० शेषसहसफण मणिनयुत, जगमगज्योति अनूप।
श्वेतचरण पट पीत युत, राजत हलधर रूप॥
सो० नवनीरद तनश्याम, पीतबास लावण्यनिधि।
भुज प्रलंब अभिराम, शेष अंक हरि सोहहीं॥
चारु अरुण पंकज दल नैना ❀ चितवन चारु चारु मृदु बैना
चारु तिलक बर भाल बिराजै ❀ चारु कुटिल कुन्तल छबि छाजै
चारु तिलक नासिका सुहाई ❀ चारु कपोल अधर अरुणाई
सुन्दर श्रवण चिबुक दरग्रीवा ❀ चारु बसन बिहसन छबि सीवा
उर बिशाल श्री चिह्न बिराजैं ❀ उदर सुधर रोमावलि राजैं
नाभि गँभीर क्षीण कटि देशू ❀ भुज बिशाल बर चारु सुवेशू
जंघ गुल्फ अति चारु सुहाई ❀ पदकमलन नख शशिछबि छाई
नख शिख अनुपम रूप बिराजै ❀ दिब्याभरण सकल अँग छाजै
कुंडल मुकुट जटित मणिमाला ❀ मुक्तमाल बनमाल बिशाला
यज्ञोपवीत पीताम्बर कांधे ❀ कौस्तुभमणि अंगन बर बांधे
कर पल्लवन मुद्रिका राजै ❀ शंख चक्र गदा पद्म बिराजै
क्षुद्रघंटिका अति द्युतिकारी ❀ मणिन जटित नूपुर छबि भारी
दो० नन्द सुनंदादिकन तें, दिब्य पारषद आहिं।
कर जोरे ठाढ़े सबै, परिचर्या के माहिं॥
सो० ठाढ़ी जोरे हाथ, माया निज माया सहित।
भक्त भक्तके साथ, अंबरीष प्रहलाद बलि॥
शिव अज सहित शिवा अरु बानी ❀ सनकादिक नारद अरु ज्ञानी
भक्तन सहित सुरासुर जेते ❀ कर जोरे ठाढ़े सब तेते
चन्द्र कुबेर बरुण दिगपाला ❀ मनु बिश्वकर्म धर्म यम काला
बंदन करत चरण धरि माथा ❀ गावत बेद सकल गुणगाथा

जलमें लखि अक्रूर भुलान्यो ❋ कृष्ण प्रभाव प्रगट सब जान्यो
चिन्ता सकल चित्तकी नाशी ❋ जान्यो कृष्ण ब्रह्म अबिनाशी
मोहिं कृपा करि दर्शन दीनो ❋ तहँ प्रणाम सुफलकसुत कीनो
अति आनंद बढ्यो मनमाहीं ❋ अस्तुति करन लग्यो तिहिठाहीं
धन्य धन्य प्रभु अंतर्यामी ❋ नारायण त्रिभुवन के स्वामी
सकल बिश्व तुमहीं बिस्तारो ❋ बिस्वरूप है रूप तुम्हारो
निर्गुण निर्बिकार अबिनाशी ❋ लीला सगुन गुणनकी राशी
प्रभु तुम सब देवन के देवा ❋ जानै कौन तुम्हारो भेवा

छं० को जान तुम्हरो भेव हरि तुम सकल देवमयी प्रभो।
आदिकारण सबहिके तुम बिश्व सब तुम्हरो बिभो॥
नाग नर सुर असुर अग जग दास सब तुम्हरो हरी।
रहति माया सब तुम्हारी जाहि तुम ज्यहि बिधि करी॥
योग यज्ञ अनेक कर्मन करि तुम्हैं सब ध्यावहीं।
जैसे जाको भाव तैसो तुमहिं ते फल पावहीं॥
अति अगाध अपार तुम गति पार काहू नहिं लह्यो।
शम्भु शेष गणेश बिधना नेति निगमनहू कह्यो॥
भक्त हित धरि बिबिध तन तुम चरित अद्भुत बिस्तरौ।
मच्छ कच्छ बराह बपु ह्वै बेद गिरि तुम उद्धरौ॥
होय नरहरि भक्त प्रण करि शरण हित बामन भये।
भृगुबंशमणि अभिराम तनु धरि मानमय क्षत्री हये॥
राम रूप निपात रावण अरु बिभीषण नृप कियो।
कंसअरि यदुबंशभूषण कृष्ण बपु छबि निधि लियो॥
बोधराय दयाल कलकि हिंसादि कर्म न भावहीं।
निःकलंक मलेच्छहा दश रूप श्रुति तव गावहीं॥

दो० तवगुणरूप अनन्त प्रभु, हौ अजान जगदीश।

यों अस्तुति अक्रूर करि, नायो पदपर शीश ॥
सो० तबहिं श्याम सुखदाय, अंतरहित जलतें भये ।
निकस्यो अति अकुलाय, तब जलते अक्रूर पुनि ॥
लखी कृष्ण की जब प्रभुताई ❀ बढ़्यो हर्ष अति उर न समाई
भूले नेम न कछु कहि जाई ❀ मगन ध्यान बलराम कन्हाई
कहत मनहिं मन यह अविनाशी ❀ पूरणब्रह्म सकल गुणराशी
हरण करण समरथ भगवाना ❀ नाहिंन इन समान कोउ आना
कितक कंस भेदी उरसंशा ❀ ये करिहैं ताको निरबंशा
चल्यो हांकि रथ तब हर्षाई ❀ नँद उपनंद मिले तहँ आई
हरि अक्रूरहि बूझत जाहीं ❀ करि सयान मन मन मुसकाहीं
कही तात तुम अब हर्षाने ❀ प्रथमहिं कछू बहुत मुरझाने
कहौ सांच हमसों सोइ बानी ❀ तब अस्तुति अक्रूर बखानी
धन्य धन्य प्रभु धनि श्रीकंता ❀ गुणन अगाध अनादि अनन्ता
निगम नेति कहि जाहि बखानैं ❀ सहसानन नित नवगुण गानैं
करिकै कृपा जान निज दासा ❀ दियो दरश संशय सब नासा
दो० अब रवहिं प्रभु बूझत कहा, तुम त्रिभुवनके नाथ ।
कर्ता हर्ता जगत के, सकल तुम्हारे हाथ ॥
सो० कहा बापुरो कंस, कहा मल्ल कह कुवलया ।
अब करिये निर्बंस, बेग नाथ ऐसे खलन ॥
सुनि मोहन सुफलकसुत बानी ❀ भये प्रसन्न भक्त सुखदानी
जात चले रथपर दोउ भाई ❀ सन्मुख दृष्टि मधुपुरी आई
तरणि किरण महलन छबिछाई ❀ जगमगात नभ सुंदरताई
अक्रूरहिं बूझत घनश्यामा ❀ कहियत है मधुपुरी ये नामा
श्रवणन सुनत रहत हे जाही ❀ देख्यो आज दृगन तें ताही

कंचन कोटि कँगूरा सोहैं ❋ बैठे मनहुं मदन मन मोहैं
बन उपबन पुरके चहुं पाहीं ❋ अति भावत मेरे मनमाहीं
लखि लखि हरि मथुराकी शोभा ❋ पुनि पुनिपुलकितकरि मनलोभा
तहां जन्म जिय में करि जाने ❋ तातें अधिक हर्ष उर माने
बाजति नौबति नृपति दुवारा ❋ होत शब्द घरियाल उदारा
सुनि सुनि मन आनंद बढ़ावैं ❋ नगर शोर सुनि रुचि उपजावैं
कनकखचित मणिजटित अटारी ❋ धवल नवल अति ऊँचि सँवारी

दो० ध्वजपताकतोरण कलश,जहँ तहँ ललितबितान।
मुक्ता झालर झलमलैं, को करि सकै बखान॥

सो० निरखि निरखि हर्षात, मन मोहन अक्रूर को।
बलहि देखावत जात, ललित लाल करपल्लवन॥

कह अक्रूर सुनहु ब्रजनाथा ❋ भई आजु मधुपुरी सनाथा
तुमहिं बिलोकि बिराजति ऐसी ❋ पति आगम तिय सोहति जैसी
कसी कोट कटि किंकिणि मानौ ❋ उपबन बसन बिबिधरँग जानौ
मन्दिर चित्र बिचित्र सुहाये ❋ जनु भूषण रचि रंग बनाये
जहँ तहँ बिबिध बाजने बाजैं ❋ मनहुं चरण नूपुर धुनि साजैं
धामन ध्वजा बिराजतहैं जिमि ❋ संभ्रम गति अञ्चलचञ्चल तिमि
उच्च अटन षटऋतु छबि छाजै ❋ जनु उर आनँद उमँगि बिराजै
भूलीं अति सुख संभ्रमतातें ❋ प्रगटे कनक कलश कुच जातें
मोखा द्वार दरीची द्वारा ❋ लागे बिद्रुम कुलिश किवाँरा
मनहुं तुम्हारे दरशन लागी ❋ नयनन रहीं निमेषन त्यागी
मुक्ता झालर खिरकि बिराजैं ❋ हँसति मनो आनंदन साजैं
जगमगि ज्योति रही छबि भूली ❋ जनु तुम पंथ निहारत भूली

दो० नीके हरि अवलोकिये, पुरी परम रुचि रूप।

असुर कंसको जीतिकै, होहु यहां के भूप ॥
सो० सुनि बिहँसे नँदलाल, लखत बचन अक्रूर के।
पहुँच्यो रथ ततकाल, जाय निकट मथुरापुरी ॥
नगर निकट पहुँचे जब जाई ❋ सुफलकसुवन सहित दोउ भाई
गौर श्याम रथपर दोउ राजैं ❋ कोटिन काम निरखि छबि लाजैं
कंस दूत लखि जहँ तहँ धाये ❋ समाचार सब नृपति सुनाये
आये बल मोहन दोउ भाई ❋ सुनतहि नाम उठ्यो अकुलाई
गहि कर खड्ग चर्म लै धायो ❋ रंगभूमि के महलन आयो
गज मुष्टिक चाणर बुलाये ❋ और सुभट सब बोलि पठाये
तिनसन कह्यो सजग सब होऊ ❋ ठांवहि ठांव रहौ सब कोऊ
बहुतक असुर निकट बैठाये ❋ धनुष पास बहु सुभट पठाये
पठवत दूत दूत पर धाई ❋ आये कहँ लगि देखौ जाई
गर्जें कंस सेन सब साजे ❋ द्वारे बिबिध बाजने बाजे
पीरो भयो हृदय डर मानो ❋ सूखत अधर बदन कुम्हिलानो
नंद महरके सुत सुनि आवत ❋ मन मन मारन गर्व बढ़ावत
दो० पर्‍यो शोर मथुरा नगर, आवत नन्दकुमार।
सुनि आये नर नारि सब, गृहको काम बिसार ॥
सो० लाजकानडरडार, कोउखिरकिनकोउअटनपर।
कोऊ खड़ी दुवार, कोउ धावत गलियन फिरत॥
कियो प्रवेश नगर में जाई ❋ असुर निकन्दन जन सुखदाई
इन्दुबरण रथपर दोउ बीरा ❋ सुभग श्याम बर गौर शरीरा
शीश मकट कुंडल छबि छाजै ❋ कुंडल एक राम श्रुति राजै
नील पीत बर बसन निकाई ❋ मुक्तमाल बनमाल सुहाई
निरखि सकल पुरजन अनुरागे ❋ धाय धाय रथ के सँगलागे

युगल रूप लखि होहिं सुखारे ❋ इकटक लोचन टरहिं न टारे
चढ़ी अटारिन देखहिं नारी ❋ बढ्यो प्रेम आनँद उर भारी
निशि दिन सुन गुणगण अभिलासी ❋ अति आरत दरशनकी प्यासी
शशि आनन मृदुबेष किशोरा ❋ भये निरखि दोउ नयन चकोरा
पुलकि गात दृग आनँद पानी ❋ कहत सप्रेम परस्पर बानी
येई सखि बलराम कन्हाई ❋ सुनियत जिनकी बहुत बड़ाई
नंद - गोप के ये दोउ ढोटा ❋ गौर श्याम सुन्दर बर जोटा

दो० मणि कंचन के शिखर दोउ, किधौं मानसर हंस।
कै प्रगटे ब्रज देन सुख, त्रिभुवन के अवतंस॥
सो० धनिधनि गोकुल ग्राम, धन्य श्याम बलराम धनि।
धनिधनि ब्रजकी बाम, प्रगट प्रीति पाली जिन्हनि॥

सुनति हुती पुरुषारथ जिन के ❋ देखहु रूप नयन भरि तिन के
अतिहि अनूप बेष नट सोहै ❋ कहहु सो को छबि देखि न मोहै
पूरब जन्म सुकृत कोउ कीनो ❋ सो बिधि यह नयनन फल दीनो
अति अभिराम श्याम छबि धारी ❋ इनहीं प्रथम पूतना मारी
शकटा तृणा इनहिं संहारे ❋ बत्स बका अघ पुनि इन मारे
इन्द्र कोप बर्षन ब्रज कीनो ❋ इनहीं गिरि कर धरि रख लीनो
जलते काली इनहिं निकारयो ❋ पुनि अरिष्ट केशी इन मारयो
गौर शरीर नाम बल होई ❋ धेनुक अरु प्रलम्बहा सोई
अब अक्रूर पठै नृपराई ❋ इहां बोलि पठये दोउ भाई
रंगभूमि रचि कियो अखारो ❋ कहा करन धौं हृदय बिचारो
जननी धीर धरयो धौं कैसे ❋ अति बालक पठये हैं ऐसे
देहिं अशीश मांगि बिधि पाहीं ❋ न्हातहु बार खसहु तन नाहीं

दो० लेत बलैया वारिकै, आंचर यह कहि नार।

करि है इनसों कपट नृप, तौ ह्वै है जरि छार ॥
सो० सुफल भये मन काम, देखि दरश इनको सखी।
कुशल जाहु निज धाम, देत अशीश सुनायसब॥
कहति युवति यक सुनहु सयानी ❋ मैं जो सुन्यों सो कहत बखानी
ये बसुदेव कुँवर सखि दोऊ ❋ ऐसे लोग कहत सब कोऊ
कंस त्रास करि मात पठाये ❋ नन्द सखा गृह जाय दुराये
करि दुलार यशुमति पय प्याये ❋ हित करि तिनके बाल कहाये
गौर अंग नयनन रतनारे ❋ जो प्रलम्ब को मारन हारे
कुंडल एक बामश्रुति धारी ❋ ते रोहिणी सुवन सुखकारी
अति अभिराम महाबल धामा ❋ ताते नाम धस्यो बलरामा
श्याम सुभग तन उर बनमाला ❋ शीश मुकुट युग नयन बिशाला
जिन्हैं हेतकरि सँग ब्रजबामा ❋ मान्यो नाह सकल सुखधामा
जिनके चरण छुवत बड़पापी ❋ पाई सुगति सुदर्शन शापी
अमित प्रभाव कृष्ण सब कहहीं ❋ जिनके नाम अगम गति लहहीं
कहत देवकीसुत सब तिनसों ❋ कंसराज भय मानत जिनसों
दो० आये हैं अक्रूर सँग, तात मात सुखदैन।
रंगभूमि रिपु जीति कै, करि हैं यदुकुल चैन ॥
सो० सुनिसुनि मुदितसुनारि, अति प्रियबाणीतासुकी।
मांगत गोद पसारि, बिधिसों ऐसो होय सब ॥
देत सबन सुख यों मनभावन ❋ उतरे जाय बाग इक पावन
गोपन सहित नन्द तहँ राख्यो ❋ तब सुफलकसुतसों हरि भाख्यो
कहहु तात आगे तुम जाई ❋ आये श्याम राम दोउ भाई
बहुरि नृपति जब हमैं बुलैहैं ❋ करि बिश्राम हमहुँ तब ऐहैं
तब अक्रूर जोरि युग पानी ❋ बोल्यो सुनत श्यामकी बानी

म्वहिं न्यारो क्यों करत गोसाईं ❋ राखो निकट दास की नाईं
कंसदूत मोको जनि मानो ❋ निज सेवक अपनो करि जानो
अरु मेरे मनमें यह आसा ❋ चलिय धाम कीजै मो बासा
तब हँसि के बोले घनश्यामा ❋ ऐहौं एक दिना तुम धामा
ऐसे कहि अक्रूर पठाये ❋ बिदा होय नृप पास सिधाये
रथते उतरि परे दोउ भाई ❋ ग्वालबाल सब लिये बुलाई
सखा भ्रात सँग सहज हुलासा ❋ गये यमुनतट नगर निवासा

दो० बाल बयस शोभित सुभग, बाल सखनके संग।
गौर श्याम शोभा निरखि, लज्जितकोटिअनंग॥

सो० अति बिचित्र को जान, ब्रजबासी प्रभुके चरित।
अमित गुणन की खान, जनरंजन दुष्टनदलन॥

अथ रजकबधलीला॥

नृपतिरजक अम्बर नृप धोवै ❋ आवत देखि श्यामतन जोवै
हँसत गर्ब्ब बातै यों चालैं ❋ कंस राज के उर ये शालैं
लघु लघु बयस गोपके जाये ❋ बहुत अचगरी करि ये आये
तृणावर्त प्रभु रह्यो हमारो ❋ इनहीं ताहि शिलापर मारो
अति खोटो जिहि नाम कन्हाई ❋ प्रथम ताहि डारै मरवाई
है बलभद्र तैस्वई खोटो ❋ गोरो अंग महाबल मोटो
ताहू को मारैगो राजा ❋ बोले हैं याही के काजा
ऐसे कहत परस्पर बानी ❋ प्रभु अन्तर्यामी सब जानी
ग्वालन सहित गये तिहिपाहैं ❋ कह्यो कछू अम्बर हम चाहैं
तिनको पहिरि नृपति पै जैहैं ❋ देहैं बहुरि तुम्हैं जब ऐहैं
जो पहिरावन नृप सों पैहैं ❋ तामें कछु तुमहू को दैहैं
कै पहिलेही लेहौ हम सों ❋ बूझत हैं तैसी हम तुमसों

दो० हँस्यो बचन सुनि श्यामके; कह्यो गर्ब करि बैन।
बलिके बकरा ह्वै रहे, आये हैं पट लैन॥
सो० राखैं धरी बनाय, ह्वै आवहु नृप द्वार लौं।
तब लीजो पट आय, जो भावै सो दीजियो॥
बन बन फिरत चरावत गैया ❋ अहिर जाति कामरी उढ़ैया
नट को भेष साज के आये ❋ नृप अम्बर पहिरन मनभाये
जुरि के चले नृपति के पासा ❋ पहिरावन लेबे की आसा
नेक आश जीवन की जोऊ ❋ खोवन चहत अबहिं पुनि सोऊ
यह सुनि श्याम कह्यो मुसकाई ❋ देहु बसन है तुमहिं भलाई
हम मांगत हैं सहजहि तुमसों ❋ तुम कत करत इती रिस हमसों
सहज बात को रिस नहिं कीजै ❋ मांगे देहु मान गुण लीजै
ऐंठत भौंह बरज करि मानो ❋ ये नृप बसन नहीं तुम जानो
अबहीं सुनत क्षणक में मारैं ❋ नन्दहि पकरि बन्दि में डारैं
जाहु चले ह्यांते अब नीके ❋ कै है हौ अबहीं बिन जीके
करत अचगरी मोसों आई ❋ दुहुन मारिहौं कंस दुहाई
यह मनि कियो श्यामसो ख्याला ❋ भुजा पकरि पटक्यो ततकाला
दो० तुरत गयो तन तजि स्वरग, कीनो रजक निहाल।
जन्म मरण तें रहगयो, ऐसो गुण गोपाल॥
सो० लखि कै गये पराय, संगी ताके सब रजक।
लीने बसन लुटाय, श्याम प्रथम ही नृपति के॥
रजक मार सब बसन लुटाये ❋ आप पहिरि ग्वालन पहिराये
बिबिध रंग बहुभांति नबीने ❋ निज निज रुचि ग्वालन सब लीने
ले तहां ते सब हर्षाई ❋ मिल्यो एक दरजी पुनि आई
प्रभुको देखि बहुत सुख पायो ❋ चरण कमल को माथ नवायो

घाट बाढ़ जो बसन सुहाये ❋ ते उन सम करि तुरत बनाये
ताको कृतहि मान प्रभु लीनो ❋ अभयदान दै निजपद दीनो
पुनि यक माली हतो सुदामा ❋ ताके द्वार गये घनश्यामा
तुरत आय तिन पद शिर नायो ❋ हरि हलधर लखि हरष बढ़ायो
आदर सहित सदन में आने ❋ चरण धोय निज भाग्य बखाने
नृपति हेतु जो हार बनाये ❋ ते सप्रेम प्रभु को पहिराये
हाथ जोरि बहु बिनय सुनाई ❋ जय जय श्रीपति प्रभुपदराई
मोको बहुत अनुग्रह कीनो ❋ दीन जानि अपनो करि लीनो

दो० सुनि सप्रेम ताके बचन, रीझे श्याम सुजान।
माली पूरणकाम करि, दियो भक्ति बरदान॥

सो० सखन सहित दोउभाय, बहुरि हर्ष आगे चले।
तहां पंथमें आय, कुबजा लै चन्दन मिली॥

निरखि श्यामछबि तन सुधि भूली ❋ बोली हरष प्रेमरस फूली
हो प्रभु दीनबन्धु सुखदाई ❋ तुम्हैं नाथ चन्दन मैं ल्याई
मोहिं कल्पना यह जगबन्दन ❋ चरचौं अंग तुम्हारे चन्दन
दासी कुल कुबजा मम नाऊं ❋ नृप के उर चन्दन नित लाऊं
चरचे जनिके प्रभु तिहि ठाहीं ❋ अरि अरु मित्र बसत उरमाहीं
आजहि दरश प्रगट प्रभु पायो ❋ मो जियको सन्ताप नशायो
अब यह भली कृपा करि लीजै ❋ पूरण काम नाथ मम कीजै
अन्तरयामी प्रभु सुख दानी ❋ भाव भक्ति कुबजा पहिंचानी
भावहि के बश त्रिभुवनराई ❋ हित करि कुबजा निकट बुलाई
बन्दन करि पूजे दोउ भाई ❋ रही श्यामछबि निरखि भुलाई
तब हरि हलधरसों हँसि भाख्यो ❋ हेतु बहुत इन सबसों राख्यो
हमहूं कछु याको हित कीजै ❋ सूधे अंग नेक कर दीजै

दो० पग राख्यो पग पीठपर, धस्यो शीश कर श्याम ।
नेक उठाई चिबुक गहि, भई सुन्दरी बाम ॥
सो० को करि सकै बखान, जाहि बनाई आप हरि ।
भई रूप गुण खान, कुबजा मन आनन्द अति ॥

महा कुरूप कूबरी तैसी ❋ परसत तुरत भई रति जैसी
तब कुबजा अपने मन मान्यो ❋ मिले मोहिं मोहन पति जान्यो
पुनि पुनि कमल चरण शिर नाई ❋ हाथ जोरि बहु बिनय सुनाई
जिमि कीनी म्वहिं कृपा कृपाला ❋ तिमि मम सदन चलहु नँदलाला
अपने कमल चरण तहँ धरिये ❋ सुफल मनोरथ मेरो करिये
तासों बिहँसि कह्यो घनश्यामा ❋ कंस देखि ऐहौं तव धामा
अपनी करि तिय सदन पठाई ❋ चले धनुष देखन दोउ भाई
ग्वालसखा सँग सुभग सुहाये ❋ काम सबै बर रूप बनाये
पुरजन भीर चहूं दिशि भारी ❋ चढ़ी अटारिन देखहिं नारी
निरखि श्याम मुखइन्दु उदारा ❋ जनु पुर उदधि तरंग अपारा
जहँ तहँ कहत सकल पुरबासी ❋ भई सुन्दरी कुबजा दासी
श्याम कछू चेटक सो कीनों ❋ अंग सुधारि रूप बर दीनों

दो० रजक मारि लूटे बसन, करी कूबरी चारु ।
बालभाव मोहत मनहिं, हैं कोउ देव उदारु ॥
सो० सुनत रहे दिन रैन, पुरषारथ इनको भवन ।
तैसे देखे नैन, ब्रजबासी प्रभु नंद सुत ॥

गये धनुध शाला दोउ बीरा ❋ देखत चकित भये भट भीरा
अस्त्र सँभार उठे अकुलाई ❋ देखि थके सुन्दर दोउ भाई
धनुष समीप असुर सब ठाढ़े ❋ अति बलवंत धीर रन गाढ़े
सहजहि घेर लिये दोउ भैया ❋ बोल उठे सब सुनहु कन्हैया

सुनियत अतिबल भुजा तुम्हारी ❀ यह कोदंड चढ़ावहु भारी
तिनसों बिहँसि कह्यो सुखरासी ❀ कहा करत हम सों यह हाँसी
कहां बाल हम बैस किशोरा ❀ कहां धनुष अति गरुअ कठोरा
शूरबीर ठाढ़े सब लहिये ❀ तिनसों धनुष चढ़ावन कहिये
खेलन कहौ खेल कछु हमको ❀ सो हम खेल दिखावैं तुमको
ऐसे श्याम हँसत तिनमाहीं ❀ अरु अक्रूर गये नृपपाहीं
समाचार सब जाय सुनाये ❀ नंदसहित बल मोहन आये
यह कहि घर अक्रूर सिधारे ❀ रजक जाय तिहिकाल पुकारे

दो० मारे बिन दूषण हमैं, नंद गोप के बाल।
लीने बसन लुटायके, पहिराये सब ग्वाल॥
सो० सुनतहि उठयो रिसाय, बोल्यो सबन बुलाय नृप।
करी प्रथमहीं आय, देख्यो इन ढीठे बड़े॥

अब मारिहौं अवशि दोउ भाई ❀ लेहु आज सब ब्रजहि लुटाई
देहु बन्दि में नन्दहि ल्याई ❀ गये अहीर बहुत इतराई
मैं सादर करि इनहिं बुलायो ❀ आगे दै इन रजक मरायो
देखहु कोउ जान नहिं पावैं ❀ असुर जाय सबको गहि ल्यावैं
ऐसे कंस कहत रिस पाई ❀ तबहीं दूतन खबरि जनाई
कुबजा सों चंदन हरि लीनो ❀ ताको रूप अनूपम दीनो
धनुष निकट पहुंचे दोउ भाई ❀ यह सुनतहि कछु गयो सुखाई
बहुरि धीर धरि असुर पठाये ❀ ते यह कहत श्यामपहँ आये
पहिले तोरि धनुष गोपाला ❀ बहुरि बुलायो निकट भुवाला
सुनि असुरनके बचन कन्हाई ❀ बोले मनहीं मन मुसकाई
याही को नृप हमहिं बुलायो ❀ जोखो बैर जान यह पायो
गहन लगे ते बालक जानी ❀ तबहिं श्याम कछु रिस उर आनी

छं० उर आनि रिस गहि पानि तुरतहि असुर ले मारे सबै।
अतिहि बेग उठाय धनुपहि तोरि महि डार्यो तबै॥
उठे तब करि क्रोध योधा मार मार पुकारहीं।
नंदसुत रण बीर ही धरि धीर असुर सँहारहीं॥
एक झटकत एक पटकत तेन मटकत फिरतहीं।
एक अटकत एक लटकत एक सटकत जहिं तहीं॥
ताल चटकत चमकि छटकत देखि भटकत नट भले।
एक पकरि फिराय पटकत जात ते नृप पहँ भले॥

दो० ख्यालहि मारे असुर सब, तोर धनुष नँदलाल।
चले सामुहे पँवरि तकि, जहां कुवलया ब्याल॥

सो० देखत चढ़े बिमान, ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनि।
डारत सुमन सुजान, ब्रजबासी प्रभुपर हरषि॥

रंगभूमि हरि हलधर आये ❋ संग सखा सब ग्वाल सुहाये
आप आपनी छबि सब छाये ❋ रबि शशि उड़ुगण उदित सुहाये
देख्यो द्विरद द्वारपर ठाढ़ो ❋ मनहु गर्ब को गिरिवर गाढ़ो
कंध केशरी गर्ब प्रहारी ❋ बल तन हँसे गयन्द निहारी
ता क्षणकी छबि कही न जाई ❋ कसत पीतपट कटि लपटाई
श्याम सुभग लट घूंघरवारी ❋ पाग पेच मिलि पाग सँवारी
मधुपुर की युवती सब बाढ़ी ❋ कहत परस्पर महलन ठाढ़ी
लखहु सखी अँग अंग लुनाई ❋ रूप राशि मनहरण कन्हाई
कोटिमदनछबि बिधिलुनिलीनी ❋ तब यह मूरति सांवरि कीनी
अतिहि कुशल ये लखि सुखदाता ❋ हम अभागि कै क्रूर बिधाता
धनि ब्रजतिय इनके सँग लागीं ❋ निशि दिन रहत प्रेम रसपागीं
बन बीथिन कुंजन बिच डोलैं ❋ रास हास रस करत कलोलैं

दो० होयँ हमारे सुकृत कछु, सुनहु सखी तौ आज।
जैसे तोरयो धनुष हरि, त्यों जीतैं गजराज॥
सो० सुरनमनावतजात, अति कोमल नँदलाल लखि।
बचहु कुशल दोउ भ्रात, मात पिताके पुण्यते॥

देखि मतंग द्वार मतवारो ❋ गजपालहिं बलराम हँकारो
सुनहु महावत बात हमारी ❋ लेहु द्वारते बारण टारी
जान देहु हमको नृप पासा ❋ नातरु ह्वैहै गज को नासा
कहे देत नहिं दोष हमारो ❋ मति जानै तू हरिको बारो
त्रिभुवनपति दुष्टन संहारी ❋ धरणी भार उतारन कारी
सुनत बोल गजपाल रिसानो ❋ रे गोपाल तुम्हैं मैं जानो
त्रिभुवनपति अब गाय चराये ❋ गांड़े खान गजन सों आये
बादत बड़े शूर की नाहीं ❋ जैहैं प्राण अबहिं क्षणमाहीं
तोरयो धनुष भयो अतिगारो ❋ नहिं जानत यह गज अतिभारो
दश सहस्र गजको बल याही ❋ डरपति है ऐरावत ताही
जब लागि यासों लरि नहिं लैहौ ❋ तबलगि कैसे भीतर जैहौ
ऐसे कहि अंकुश कर लीनो ❋ गज गजपाल सामुहे कीनो

दो० तबहिं कोप हलधर कह्यो, सुन रे मूढ़ कुजात।
गजसमेत पटकौं अबहिं, मुँह सँभार कहु बात॥
सो० नेक न लगिहै बार, बारन मरिजैहै अबहिं।
तोसों करत पुकार, मान अजहुं मेरो कह्यो॥

यह सुनि गज गजपाल रिसायो ❋ झटकि सूंड़ि बहुरौ गज धायो
लीनो लपटि सूंड़ि के माहीं ❋ देखत शूर बीर चहुंघाहीं
तब बलराम कोप करि भारी ❋ बज्रसमान थाप यक मारी
तन समेट कर करि सकुचान्यो ❋ दई कूक बद रंध्र सुखान्यो

तबहीं उचटि भये बल न्यारे ❀ असुरसेन देखत हिय हारे
हँसत निकट ठाढ़े दोउ भाई ❀ देखि महावत रह्यो लजाई
थकित रह्यो हाथी जब जान्यो ❀ तब मनमें गजपाल डरान्यो
जो ये बालक बधे न जाहीं ❀ मारै कंस मोहिं पल माहीं
अंकुश मसक शीशपर दीनो ❀ बहुरि गयन्दहि तातो कीनो
भयो क्रोध हाथी मन माहीं ❀ गराडस्थल मद अम्बु चुवाहीं
पवन बेग ते आतुर धायो ❀ गरज घुमरि दोउनपर आयो
महाकोप करि गहे कन्हाई ❀ पर्यो दशन दै धरणि धसाई

दो० डरपि उठे तिहिकाल सब, सुर मुनि पुर नर नारि।
दुहूँ दशन बिच ह्वै कढ़े, बलनिधि प्रभु दैत्यारि॥
सो० उठे गजहि के साथ, बहुरि ख्याल ई हांक दै।
तुरतहि भये सनाथ, देखि चरित सब श्यामके॥

हांक सुनत अति कोप बढ़ायो ❀ झटकि सूंड़ बहुरो गज धायो
रहे उदर तर दबकि मुरारी ❀ गये जान गज रह्यो निहारी
पाछे बहुरि प्रगट हरि टेर्यो ❀ बलदाऊ आगे ते घेर्यो
लागे गजहिं खिलावन दोऊ ❀ चकित भये देखत सब कोऊ
चहुँघां फिरत चक्र की नाईं ❀ सूंड़ पूछ क्षण क्षण ह्वै जाईं
नेक नहीं अवसर गज पावै ❀ चारौंदिशि हरि फिरत नचावै
घात करत मनहींमन माहीं ❀ गज रिसबिकल इन्हें रिस नाहीं
कबहूँ पूछ पकरि के झेलैं ❀ ज्यों बालक बछरन सँग खेलैं
कबहूँ इत उत ते दोउ बीरा ❀ भजत मारिकै मुष्टि गँभीरा
कबहुँ उदर तर ह्वै कढ़ि जाहीं ❀ नेक छुवन पावत गज नाहीं
नील पीत पट कटि फहराहीं ❀ चपल नैन दीरघ वर बाहीं
खेलत गज चंचल सँग राजै ❀ निर्त्तत मदन मनहुँ गति साजै

छं० जनु मदन निर्त्तत साजि गति इमि श्याम अरु गज खेलहीं।
पूछ कर गहि कबहुं आगे कबहुं पाछे पेलहीं॥
गजहि लखि पुरनारि नर सब बिकल बिधिहि मनावहीं।
बेग मारैं श्याम गजको हम निरखि सुख पावहीं॥
दीनो महावत बहुरि अंकुश क्रोध करि हाथी चल्यो।
जबहिं हरि गहि पूछ पटक्यो नेक नहिं भूपर हल्यो॥
लये खैंच मृणाल ज्यों रद सुमन झर देवन करी।
दास ब्रजबासी हरष सब असुर की सेना डरी॥

दो० हँसत हँसत मार्‍यो प्रबल, द्विरद कुबलया श्याम।
सखनसहित ठाढ़े मुदित, छबि निरखत ब्रजबाम॥

सो० मार्‍यो गज बल भ्रात, जहँ तहँ सबकोऊ कहत।
चिरजीवहु दोउ भ्रात, प्रभु ब्रजबासीदासके॥

कुबलयाबधलीलासम्पूर्णम्॥

अथ मल्लयुद्धलीला॥

चले जहां सब मल्ल गोपाला ❋ द्विरददन्त धरि कन्ध बिशाला
गौर श्याम सुन्दर दोउ भाई ❋ श्रमसीकर मुख कमल सुहाई
छबि अपार बलनिधि गम्भीरा ❋ संग गोप बालक की भीरा
सुनत कंस जिय अति भय मान्यो ❋ नवखग ज्यों पिंजर अकुलान्यो
भाजनको मन मांझ बिचार्‍यो ❋ भाज न सक्यो लाज को मार्‍यो
गये रंगमहि मोहन जबहीं ❋ ज्यहि जसभाव दरश तेहि तसहीं
उठे शंकि सब मल्ल अधीरा ❋ बलसमूह देखे दोउ वीरा
दुष्ट दैत्य मारे तहँ जेते ❋ रूप भयानक दरशे तेते
कंस समीप भूप जे आये ❋ तिन्हैं राजबंशी दरशाये

साधु सिद्ध देखहिं शुभधामा ❀ इष्टदेव पूरण सब कामा
देखे सुरगण मगन सुखारी ❀ सब देवन के देव मुरारी
ग्वालबाल सब देखत ऐसे ❀ सदा संग खेलत ब्रज जैसे

दो० महलन ते देखैं प्रभुहि, सकल सुन्दरी वाम।
कोटि काम शोभाहरण, नवकिशोर सुखधाम॥

सो० देखत अति बिपरीत, कंस नृपति नँदलालकों।
कंपि उठ्यो भयभीत, प्रगट काल दरशन भयो॥

सर्ब भाव पूरण भगवाना ❀ अबलहिं अबल बलहिं बलवाना
ललितहि ललित साधुको साधू ❀ छलिन छली सबगुणन अगाधू
जो जन जैसो ध्यान लगावैं ❀ ताको तिहिविधि दरश दिखावैं
कहत देखि सब सुन्दर जोटा ❀ येई नन्दमहर के ढोटा
रजक मारि नृप बसन लुटाये ❀ कीने कुबजा अंग सुहाये
इनहीं असुरसमूह सँहाख्यो ❀ धनुष तोरि हाथी इन माख्यो
धरे कन्ध गजदन्त बिराजैं ❀ बालक गोप सखा सँग राजैं
देखत असुर भीर चहुँ पासा ❀ जिनके बश में भूमि अकासा
लीने घेर कंस भयमानी ❀ तब चाणूर कहत हँसि बानी
आवहु श्याम इतहि पग धारो ❀ सुनत हुते बहु नाम तुम्हारो
सबकोउ तुम्हरे बलहि बखानै ❀ हारि जीत काकी को जानै
कहा भयो जो गज तुम माख्यो ❀ लरहु आज हम संग अखाख्यो

दो० कहा नाम हमरो सुन्यो, हँसि बोले घनश्याम।
हम बालक भोरे अबहिं, हमैं खेलसों काम॥

सो० कहिये बात बिचार, हमैं तुम्हैं लरिबो कहा।
अपगति यह व्यवहार, आप देखि देखहु हमैं॥

जान देहु हम को नृप पाहीं ❀ काहे को रोकत मगमाहीं

नृप हमको करि हेतु बुलायो ❀ तुम यह हम को कहा सुनायो
तब चाणूर कह्यो पुनि ऐसे ❀ तुमकों बालक कहिये कैसे
किये कर्म ब्रज में तुम जैसे ❀ देखे सुने नहीं कहुं तैसे
गिरि गोबर्द्धन करपै धार्‌यो ❀ जल तें काली नाग निकार्‌यो
औरौ असुर बीर बलभारे ❀ सुनियत खेलतही तुम मारे
सो बल आज देखि हम लेहैं ❀ आगे जान तुम्हैं तब देहैं
ज्यों ज्यों कंस लखत दोउ भाई ❀ त्यों त्यों भय व्याकुल अकुलाई
कहि कहि बारहि बार पठावै ❀ मल्लन को बहु त्रास सुनावै
क्योंरे सकुच करत मनमाहीं ❀ मारत शत्रु बेग क्यों नाहीं
जो दोउ बालक आज न मारो ❀ करों सकुल तौ नाश तुम्हारो
नृप सँदेश सुनि मल्ल डराने ❀ कहत परस्पर मन सकुचाने

दो० लौन नृपतिको मानकै, नंदसुवन सों आज।
लर मरिये कै मारिये, करैं कंस को काज॥
सो० लेहु सुयश नृप पास, अब बिलंब नहिं कीजिये
कछु क्रोध कछु त्रास, बोलि उठे तब मल्ल सब॥

हमसों श्याम लरत क्यों नाहीं ❀ घाटि न कछु हमते बलमाहीं
पशु पालक तुम कुँवर कन्हाई ❀ जीते बहुतक पशुन खिलाई
अब लगि नहीं मल्ल कोउ भेंट्यो ❀ अबतौ हम सँग पर्‌यो चपेट्यो
मल्ल युद्ध तुम सों हम लरिहैं ❀ अब नरपति को कारज करिहैं
ऐसे कहि कहि प्रभुहि सुनावैं ❀ भुजा ऐंठि रज अंग चढ़ावैं
ठोकैं ताल गाज ज्यों गरजैं ❀ गहैं गांस हरितन तकि तरजैं
आपुस में सब करत बिचारा ❀ डारहु मारि उभय सुकुमारा
सुनि सुनि हरि हलधर मुसकाहीं ❀ बोले बहुरि बिहँसि तिहि पाहीं
सुनिये सकल मल्ल समुदाई ❀ यह तुम्हरे मन अबहीं आई

नृप पै हमैं जाय नहिं देहौ ❋ बड़ो सुयश हम सों लरि लेहौ
निपट खोज अब परे हमारे ❋ यह न बसी उर भली तुम्हारे
हँसत कहैं तो तुम चित जैसी ❋ कहत कहा कीजै अब तैसी

दो० जबहिं श्याम ऐसे कह्यो, बिलखि उठीं सबनार।
देखौ री मारन चहत, मल्ल उभय सुकुमार॥

सो० अति कोमल अति चार, बाचैं कैसेहूं दई।
कहत नयन जलढार, क्यों जननी पठये इहां॥

अतिहि निठुर उर जाति अहीरा ❋ लोभ लागि पठये दोउ बीरा
ये तो बालक अतिहि अजाना ❋ कियो कहा उन यह अज्ञाना
होन चहत अब धौं यह कैसी ❋ कहत कंस यह, बात अनैसी
कहत सबै हम को यह भावै ❋ करि सहाय बिधि इनहिं बचावै
तोर्यो धनुष हन्यो गज जैसे ❋ जीतहिं श्याम इनहुं को तैसे
जोरि जोरि कर बिधि के आगे ❋ अंचर छोरि छोरि सब मांगे
तब चाणूर कृष्ण पै आयो ❋ सहज श्याम कटि पट लपटायो
भुज भुज जोरि भये भिड़ ठाढ़े ❋ तकि तकि दाँव चलावत गाढ़े
ऐसेई मुष्टिक बलरामा ❋ भिड़े बढ़ाय बाद बलधामा
दोऊ बीर लरत अति सोहैं ❋ देखत सुर नर के मन मोहैं
दीरघ नयन कमल ते आछे ❋ ललित लाल कछनी कटि काछे
तनचन्दन चित्रित छबिजाला ❋ बृषभकन्ध उर बाहु बिशाला

दो० शिरसों शिर भुजसों भुजा, दृष्टि दृष्टि सों जोरि।
चरणचरण गहि झपटकै, लपट झपट झकझोरि॥

सो० गहन न पावत घात, छूटजात लपटात पुनि।
शिव बिधि पै न गहात, तिन्हैं मल्ल चाहतगहन॥

श्याम सहज मल्लन सों खेलैं ❋ पकरि पकरि भुजदण्डन पेलैं

भये प्रथम कोमल तन ताहीं ❀ शिथिल रूप पबिवत मनमाहीं
तब चाणूर मनहिं गरबान्यो ❀ हरिके बलहि तुच्छ करि मान्यो
कोटि कुलिशसमतन तिहिकाला ❀ तुरतहि होय गये नँदलाला
करिकै कोप मुष्टि यक मारी ❀ फूल समान श्याम उरपारी
पुहुपहुतें कोमल तिहि मान्यो ❀ तिन मास्यो अपने जिय जान्यो
भयो बेगि अति हरषि नियारो ❀ कहन लग्यो मुरि अहिर पछारो
देख्यो हँसत गोपालहि ठाढ़ो ❀ पस्यो शोच प्राणन अति गाढ़ो
नन्द सुवन महिमा तब जानी ❀ निहचै मीच आपनी मानी
तब मोहन करि कोप हँकास्यो ❀ जनु गज को मृगराज पुकास्यो
सुनत हाँक सब दाँव भुलानो ❀ थरथराइ चाणूर डरानो
धस्यो धाय तब झपट कन्हाई ❀ पटक्यो गहि गहि चरण फिराई

छं० पटक्यो चरण गहि फेरि महि चाणूर अतिबल साँवरे।
धसगयो धर मसकि अँग सब बिकट भूल्यो दाँवरे॥
भयो शब्दाघात सुनि नृप कंस उर धसकौ पस्यो।
निरखि पुरनरनारि नभसुर हरषिहिय आनँद भस्यो॥
यकरि ऐसिय भांति तब बलराम मुष्टिक मारियो।
कहैं धनि धनि लोग सब जयजयति सुरन उचारियो॥
मल्ल अरु अति सल्ल आदिक मल्ल तहँ जितने हते।
डपटि झपटि पछारि कै पुनि नंदसुत मारे तिते॥

दो० जब मारे हरि मल्ल सब, पस्यो कटक में शोर।
जिमि तारागण रबिउदय, छपे असुर चहुँओर॥

सो० सखन सहित दोउ बीर, रंगभूमि राजत खरे।
हरण भक्त भय पीर, ब्रजबासी प्रभु नन्दके॥

अथ कंसासुरबधलीला ॥

जबहीं श्याम मल्ल सब मारे ❀ चपे असुर सब लखि हिय हारे
देखि कंस अति भयो दुखारी ❀ सेनापतिन कहत दै गारी
कांपत लिये खड्ग बहु क्रोधा ❀ कहत गये कित रे सब योधा
लै तरवार ढाल सब कोऊ ❀ डारहु मारि नन्दसुत दोऊ
डारे मारि मल्ल सब मेरे ❀ तनक छोहरा अहिरन केरे
डर नहिं करत चले इत आवैं ❀ देखहु जीवत जान न पावैं
असुर बीर अपनी सर जेते ❀ लै लै नाम पठाये तेते
कहा द्वारपालन भय बाढ़ो ❀ करहु कपाट पँवरि को गाढ़ो
नृप भयमानि असुर सब धाये ❀ अस्त्र शस्त्र लै हरिपर आये
भये बिकल लखि पुर नर नारी ❀ मन मन देत कंस को गारी
कहत कि भई कठिन यह बाता ❀ बचहिं श्याम सो करै विधाता
आवत लखी असुर की भीरा ❀ भिरे हांक दै दै दोउ बीरा

छं० अवलोकि असुर समूह आवत हांक दै दोऊ भिरे।
मनहुँ गजगण निरखि केहरि धाय तिन ऊपर परे ॥
सुनत शब्द गँभीर हरिको हहरि सेनापति गये।
लपकि गहि महि पटकि जहँ तहँ क्रोध कर ब्रजजू हये॥
श्याम गौर किशोर सुन्दर असुरगण बिच यों लरैं।
जनु शांत अरु शृंगार धरि तन बीरकी करनी करैं॥
जात नहिं वरणी कटक गहि पटक इत उत धावहीं।
भूमि भार अपार अघनिधि असुर निकर नशावहीं ॥

दो० परयोनगरखलभलसकल, अतिभयब्याकुलकंस।
पुनिपुनिमंत्रिन सों कहत, बढ्यो अधिकउरसंस॥

सो० कीजै कछुउपाय, जियत जाहिं नहिं बन्धु दोउ।

मारहु नन्द बुलाय, ब्रज कोउ रहन न पावहीं ॥
पुनि बसुदेव देवकी दोऊ ❀ मारहु कठिन बन्दि ते सोऊ
बहुरों उग्रसेन को मारौं ❀ पिता दोष कछु उर नहिं धारौं
ऐसे पुनि पुनि बचन उचारे ❀ कंपित रिसन खड्ग कर धारे
क्षण बैठत क्षण उठत अधीरा ❀ मारे असुर सकल दोउ बीरा
अति बलवन्त नन्द के बारे ❀ तब सकोप नृप ओर निहारे
गये मचान मचकि चढ़ि दोऊ ❀ बाज झपट देखत सब कोऊ
ह्वैगयो चकित नृपति भय मान्यो ❀ आयो काल निकट यह जान्यो
रहिगयो लिये खड्ग करमाहीं ❀ हरिको मारि सक्यो सो नाहीं
तबहीं श्याम लात यक मारी ❀ गिरि गयो मुकुट शीशते भारी
दीन ढकेलि मंचते भूपर ❀ कूद परे हरि ताके ऊपर
तहां चतुर्भुज रूप दिखायो ❀ सो स्वरूप दै स्वर्ग पठायो
मार्यो कंस कहत सब बानी ❀ जय धुनि सुरगण गगन बखानी

छं० जय धुनि गगन सुरगण बखानी सुमन की बर्षा भई ।
कहत सब हरि कंस मार्यो हांक यह त्रिभुवन गई ॥
ब्रह्मादि सुरमुनिसिद्ध गंध्रब मुदितमन अस्तुति भनी ।
भूमि सुर उपकार दिन अवतार धुनि त्रिभुवन धनी ॥
धन्य गज धनि मल्ल मारे धन्य कंसासुर अनी ।
परसि तन अनुपम लही गति जात नहिं महिमा गनी ॥
धन्य अलख ब्रह्माण्डनायक भक्तहित नरतन धर्यो ।
धन्य ब्रजबासी सकल जिन प्रेमकरि तुमबश कर्यो ॥

दो० करि अस्तुति पुनिपुनि हरषि, सुमन बरषि सुरवृंद ।
मुदित बजावत दुंदुभी, कहि जय जय नँदनंद ॥
सो० मथुरापुर नर नारि, अति प्रफुलित सबको हियो ।

मनहुंकुमुदबनचारि, बिकसतहरिशशिमुखनिरखि॥

मास्यो कंस जबहिं भगवाना ❋ भ्राता अष्ट तासु बलवाना
करि करि कोप युद्ध को धाये ❋ ते पुनि सब बलदेव नशाये
बहुरि केश गहि कंस मुरारी ❋ दियो घसीट यमुन जल डारी
कीन्हो कछुक तहां बिश्रामा ❋ भयो बिश्रामघाट तिहि नामा
सुनिके मरण कंस की नारी ❋ और सकल भ्राता की प्यारी
रोदन करि करि बिबिध बिलापा ❋ सुमिरि भूपगुण रूप प्रतापा
निज हित समुझि भयो दुखभारी ❋ चहत मरण पतिनेह बिचारी
गये तहां बहुरो दोउ भ्राता ❋ करुणामय कोमल सुखदाता
करि प्रबोध बोलीं सब रानी ❋ रहीं मरणते सुनि प्रभु बानी
बहुत भांति तिनको समुझाई ❋ आये महलद्वार दोउ भाई
कालनेमि के बंश सुहायो ❋ उग्रसेन सुनिकै उठि धायो
तिन प्रभु चरण आय शिर नायो ❋ त्राहि त्राहि कहि बचन सुनायो

छं० त्राहि त्राहि सुनाय आरत बचन प्रभु चरणंन गिस्यो।
अबकरहु करुणानिधिक्षमा अपराध यह हमते पस्यो॥
असुर मारे कंस भाइन सहित सो उचितै करी।
परद्रोह रत खलदलनाहित अवतार यह तुम्हरो हरी॥
करिकै कृपा अब प्रजापालन हेतु प्रभु चित दीजिये।
बर बैठिसिंहासन सुभग यह राज्य मधुपुर कीजिये॥
सुनि दीन बचनन हरषि हरि तब उग्रसेन उठायकै।
बहुभांति करिसनमान पुनि पुनि लियेहृदयलगायकै॥

दो० श्रीमुखसों करजोरि पुनि, कह्यो सुनहु महराज।
यदुबंशिन को शाप है, हमैं उचित नहिं राज॥
सो० करहु देव तुम राज, दूरि करौ सन्देह सब।

हम करिहैं सब काज, जो आयसु देहौ हमैं ॥

जो नहिं मानै आनि तुम्हारी ❀ ताहि दण्ड करि हैं हम भारी
और कछू चित शोच न कीजै ❀ नीति सहित परजहि सुख दीजै
यादव जिते कंस की त्रासा ❀ गृह तजि तजि भजिगये प्रबासा
तिन सब को अब खोज बुलाओ ❀ सुख दै मथुरा मांझ बसाओ
बिप्र धेनु सुर पूजन कीजै ❀ इन की रक्षा में चित दीजै
यों प्रभु उग्रसेन समुझाये ❀ राज सिंहासन पुनि बैठाये
शिर पर मंजुल छत्र फिराई ❀ निज कर चँवर लिये दोउ भाई
युग युग प्रभु भक्तन सुखदाई ❀ राखत जन की सदा बड़ाई
बरषि सुमन सुर कहत सुखारी ❀ जय जय जय भक्तन हितकारी
उग्रसेन नृप करि बैठायो ❀ लखि मथुरा लोगन सुख पायो
धनि धनि कहत सकल नर नारी ❀ अब करिहैं पितु मात सुखारी
यहै बात सब घर घर माहीं ❀ इन सम और जगत कोउ नाहीं

छं० नर नारि सब यह कहत घर घर और नहिं इनते कियो।
धनिमातुपितुदिनरातिधनिसोजन्मजगजबहरि लियो॥
गहि कंस सहित सहाय माखो मरननहिं रानिन दियो।
उग्रसेन नरेश करि पुनि चँवर कर अपने कियो॥
बिबुध हर्षे सुमन बर्षे सुथिर सब यदुकुल भयो।
अबपावहीं पितुमातु सुनि सुख सकलदुख उनको गयो॥
हमजियेअबसबनिरखिमुखछबिजन्मकोफलजगलह्यो।
जियहु युग युग भ्रात दोऊ हरषि पुरबासिन कह्यो॥

दो० कंस मारि भूभारहरि, उग्रसेन करि भूप।
कहां हमारे मात पितु, तब बोले सुखरूप॥

सो० संगहि चले लिवाय, उग्रसेन अक्रूर तब।

रामकृष्ण दोउ भाय, ब्रजबासीजनदुखहरन॥

उत बसुदेव स्वप्न निशि आयो ❁ हृदय हर्षि देवकी सुनायो
राम कृष्ण जनु मधुपुर आये ❁ सुफलकसुत सँग नृपति बुलाये
असुर सेन हति कंसहि मार्यो ❁ उग्रसेन नृप करि बैठार्यो
सुनि तिय कहैं नयन भर पानी ❁ कहत कहा पिय ऐसी बानी
सुनि है दूत कोऊ दुखदाई ❁ कहि है. अबहिं कंस सों जाई
हम करि पाप जन्म जग लीन्हो ❁ सो फल हमैं बिधाता दीन्हो
बधे सात सुत देखत आगे ❁ बच्यो एक डरि ब्रज लै भागे
तापर बंदि किये हम दोऊ ❁ धृगजीवन परबश जग कोऊ
हमको मीच नीच बिधि भूल्यो ❁ होहु कंस को बंश निमूल्यो
कह बसुदेव रोव मति नारी ❁ धोवो बदन दीन्ह जल झारी
कहियत है दुखहरण गोपाला ❁ गर्ब प्रहारी दीनदयाला
ह्वैहैं प्रगट कबहुँ सुखदाई ❁ तात तुम्हारे त्रिभुवनराई

दो० अब जनि होहु अधीर तिय, धरहु धीरसुखपाय।
आयु तुलानी कंसकी, देखत जाय बिलाय॥

सो० स्वप्न बृथा नहिं जाय, मानु कह्यो मेरो प्रिया।
आज काल्हिमें आय, तोहिं मिलैं तेरे सुवन॥

यहि अन्तर द्वारे हरि आये ❁ बज्र कपाट जहां जड़ि लाये
करुणा करि हरि तिन्हैं निहारा ❁ गये सहज सब उघरि केंवारा
लखि बसुदेव सामुहे पाये ❁ कहत कुँवर काके दोउ आये
दियो दरश तिहि प्रेम सुहायो ❁ जन्म समय जो दरशन पायो
मिले धाय पितु मातु निहारे ❁ कह्यो तात हम सुवन तुम्हारे
रोवत मधुर निरखि सुत दंपति ❁ सुनै न कंस मनहिं मन कंपति
तबहीं कृष्ण कह्यो सुनु माता ❁ मार्यो कंस असुर हम ताता

मल्ल पछारि सुभट सब मारे ❋ द्विरद कुवलया दन्त उखारे
यह कह करि पितु मातु सुखारे ❋ तुरत तोरि पगबन्धन डारे
तब जननी निश्चय करि जानी ❋ रोवन लगी कण्ठ लपटानी
बाराहिबार कहत उर लाये ❋ मैं नहिं कबहूं गोद खिलाये
द्वादश वर्ष कहां रहे प्यारे ❋ माता पिता जाहिं बलिहारे

दो० सुनि जननी के बचन प्रभु, करुणानिधि यदुराय।
भये प्रेमबश दुखितलखि, बोले अति सकुचाय॥

सो० लिख्योनमेट्योजाय, मतिकरिमान बिषादचित।
अब पुरवैं दोउ भाय, तुव मनके अभिलाष सब॥

पुत्र जन्म जगमें सुखकारी ❋ तुम पायो हम ते दुख भारी
मात पिता जाते दुख पावैं ❋ बृथा जन्म सुत तासु बतावैं
सो अब दोष न मनमें दीजे ❋ होनहार ताको कह कीजे
अब जननी सब शोच निवारो ❋ तजो शोक आनँद उर धारो
सकल मनोरथ तुमरे करिहौं ❋ स्वर्ग पताल जात नहिं डरिहौं
अष्टसिद्धि नवनिधि ले आऊं ❋ घर घर मथुरा मांझ बसाऊं
सुनि प्रभु बचन जननि सुखपायो ❋ बार बार गहि कंठ लगायो
अति आनंद भयो मन माहीं ❋ सो कहि सकत शारदा नाहीं
कहत तात तुम बदन निहारो ❋ सुफल भयो अब जन्म हमारो
सुतहित स्रवत पयोधर क्षीरा ❋ मिटीसकल उर अन्तर पीरा
बसुदेव हृदय हर्ष अति आयो ❋ सिद्धि लाभ साधक जन पायो
पूरब पुण्य फल्यो सुखकारी ❋ पायो सुत हित करि दैत्यारी

अथ बसुदेवगृहउत्सवलीला॥

दो० तुरत बोलि तब बिप्रबर, प्रीति सहित परिपाँय।
प्रथमहिं संकल्पीहती, दई लक्ष ते गाय॥

सो० और दियो बहु दान, बन्दीजन आये सुनत ।
परितोषे सनमान, अति उछाह बलदेव सन ॥
तब देवकी कह्यो पति पासा ❋ भरी परम आनन्द हुलासा
प्रगटे आज सुवन मम धामा ❋ करहु जन्मउत्सव की सामा
सुनि बसुदेव परमसुख पावा ❋ हरष द्वार दुन्दुभी बजावा
यदुबंशी सगरे जुरि आये ❋ ध्वज पताक मन्दिरन बँधाये
रोपे कदली खम्भ रसाला ❋ बांधी रचि रुचि बन्दनमाला
लखि हरिजन्म अनंदबधाई ❋ ऋद्धि सिद्धि प्रगटीं सब आई
हाटक कलश अनेक बिधाना ❋ मङ्गल द्रव्य रचे विधिनाना
गजमुक्तन के चौक बनाये ❋ मन्दिर गलिन सुगंध सिंचाये
सुनि सब मथुरा पुर नर नारी ❋ उमँगि उठीं आनँद उर भारी
घर घर सबहिन मंगल साजे ❋ द्वार द्वार प्रति बाजन बाजे
नवसत साज सकल बरनारी ❋ सजि सजि मंगल कंचन थारी
गान करत कलकण्ठ लजावैं ❋ श्रीबसुदेव धाम को आवैं

दो० जाति पाँति परिजन प्रजा, बंधु हितू सबलोग ।
लै लै आवत भेट साजि, हरषत निज निज योग ॥
सो० भई भवन अति भीर, नट नाचत गावत गुणी ।
धरि धरि मनुजशरीर, मानहुँ सुख आये सकल ॥
तब जननी मन अति सुख पाये ❋ उपटन कर दोउ सुत अन्हवाये
निज कर अंग अँगोछि सुहायो ❋ तनद्युति लखि दृगताप नशायो
केसरि मलय मिलित रुचिकारी ❋ कियो तिलक बरभाल सुधारी
भूषण बसन शृँगारत कैसे ❋ राजकुँवर बर पहिरत जैसे
कंचन मणिमय खचित नवीनो ❋ क्रीट मुकुट शोभित शिर कीनो
कलँगी ललित जड़ाव जड़ाई ❋ तुर्रा मध्य अनूप सुहाई

गज मुक्तन के कुंडल कानन ❀ अति बिशाल छबि शोभित आनन
कंठ पदिक के हार बिराजैं ❀ उर बिशाल पर अति छबि छाजैं
पंचरत्न के अंगद नीके ❀ शोभित भुजन भावते जीके
कर चूरानन रतन निकाई ❀ पाणि पल्लवन छाय सुहाई
किंकिणि कलित ललित रवकारी ❀ कटि केहरि पर बलित सँवारी
चूराचारु मनोहर पायन ❀ चरण कमल भक्तन सुखदायन

दो० नील पीत बर बसन तन, दोऊ सुतन शृँगार।
चारु अलक मुख शशि झलक, निरखि जात बलिहार॥

सो० हते श्याम के साथ, ग्वाल तिन्हैं पुनि देवकी।
पहिराये निज हाथ, जानि कृष्ण प्रीतम सबै॥

ग्वाल बाल सब चकित निहारे ❀ कहि न सकत कछु मनहि बिचारे
ये तो कृष्ण देवकी जाये ❀ झूठहि यशुमति सुवन कहाये
करत शोच मनहीं मन माहीं ❀ अब हरि ब्रज चलिहैं कै नाहीं
तब दोउ कुँवर चौक बैठारे ❀ बिप्रबृन्द बसुदेव हँकारे
बिधिवत पूजि तिलक करवाये ❀ दान बहुत हरि हाथ दिवाये
बहुरि आरती मात उतारी ❀ लखि छबि मुदित सकल नर नारी
बेदध्वनि महि देवन कीन्हों ❀ द्रव्य अनेक निछावरि दीन्हों
बरुण सहित सुर नभ यश गावैं ❀ बरषि कुसुम दुन्दुभी बजावैं
परमानन्द सकल पुरबासी ❀ निधि सिधि सब गृह गृह की दासी
बहुरो सखन सहित दोउ भैया ❀ निज कर परसि जिमाये मैया
पूजी सकल कामना जीकी ❀ मिटी कल्पना दारुण हीकी
यहि बिधि कंस मारि यदुराई ❀ मात पिता की बन्दि छुड़ाई

छं० यहि भांति कंस निपात यदुपति मातु पितु को सुख दियो।
हरषि अति नर नारि मथुरा घरन घर आनँद भयो॥

परम पावन यश सुहावन पलहि में त्रिभुवन गयो ।
जीव जल थल नाग नर सुरसरस रस जहँ तहँ भयो ॥
यह कंस हतन पुनीत यश नित नर सुनैं जे गावहीं ।
ते न भव बंधन परहिं फिरि अघसमूह नशावहीं ॥
मिटहि दारिद दोष दुरमति बिपति निकट न आवहीं ।
सकल मन बांछित लहैं अरु भक्ति अबिचल पावहीं ॥

दो० कठिन शूल संकटहरण, मंगल करण अशेष ।
रामकृष्ण के चरित बर, गावत सुनत बिशेष ॥

सो० नरतन पाय सुजान, अनुदिन गावत हरिकथा ।
सकल सुखनकी खान, ब्रजबासी प्रभु के सुयश ॥

अथ कुब्जागृहप्रबेशलीला ॥

श्री यदुकुल कुलकमल तमारी ❋ दीनबन्धु भक्तन हितकारी
करिकै जननी जनक सुखारी ❋ तब कुब्जा की सुरत सँवारी
नृपति भवन तजिकै अभिरामा ❋ चले बसन कुब्जा के धामा
कृष्ण कृपा सबही पै न्यारी ❋ भाव भजन कुब्जा भइ प्यारी
साँचो भाव हृदय जहँ जाने ❋ बिबश होय त्यहि हाथ बिकाने
नारि पुरुष कछु नाहिंन भेदा ❋ नीच ऊंच नहिं करत निषेदा
प्रथमहिं आय मिली मगपाई ❋ सो हित मानि लियो यदुराई
चन्दन चरचि तनक तन दीन्हो ❋ मनहुँ कोटि तप काशी कीन्हो
अति अकुलीन कंसकी दासी ❋ परसत पावन भई रमासी
आये पुनि प्रभु ताके धामा ❋ भक्त बत्सलै जिनको नामा
जब कुब्जा जान्यो हरि आये ❋ पाटम्बर पाँवड़े बिछाये
अति आनन्द लिये उठि आगे ❋ पूरण पुण्य पुंज सब जागे

दो० टेढ़ी ते सूधी करी, दियो रूप अभिराम ।

दासी ते रानी भई, पूरे सब मन काम ॥

सो० को करिसकै प्रकास, अति बिचित्र हरिके गुणन।
सदा दास को दास, भयो रहै प्रभु जनन के ॥

पुरबासिन सबहिंन यह जानी ❋ राजा हरि कुब्जा पट रानी
घर घर कहत सकल नर नारी ❋ कियो कहा धौं इन तप भारी
मिली तनक चन्दन दै मगमें ❋ भई बिदित अति पावन जग में
यह महिमा कछु कहत न आवै ❋ को ताकी पटुतर अब भावै
भूलि कहत कुब्जा जो कोऊ ❋ ताहि रिसाय उठत सब कोऊ
सो तो भई कृष्ण की प्यारी ❋ दासी कहत डरत नर नारी
करत त्रास मन में सब प्रानी ❋ डारहि मारि सुनै जो रानी
जापर कृपा करैं यदुराई ❋ ताहि नहीं यह कछु अधिकाई
सदा सदा हरि की यह रीती ❋ मानत एक भक्ति सों प्रीती
धनि धनि कुब्जा हरि की रानी ❋ धनि धनि कृष्ण प्रीति कर मानी
धनि धनि चन्दन अंग लगायो ❋ धनि धनि भवन जहाँ हरि आयो
कहि कहि सब सुरनारि सिहाहीं ❋ आज कूबरी सम कोउ नाहीं

दो० बसे श्याम कुब्जासदन, तहँ कछु करि बिश्राम ।
पुनि आये बसुदेवगृह, जन मनपूरण काम ॥

सो० तब श्रीनंदकुमार, ब्रजबासिन की सुरति करि ।
मनमें कियो बिचार, अब सब चलिये नंद पै ॥

लै बसुदेव संग दोउ भाई ❋ गे जहँ उग्रसेन नृपराई
तहां बहुरि यादव सब आये ❋ औ अक्रूर उद्धवहि बुलाये
तब हरि ऐसे बचन सुनाये ❋ मम हित ब्रजबासी सब आये
नन्दादिक सब गोप जितेका ❋ रह्यो नहीं ब्रज में कोउ एका
गाय बतस सब तजे अनेरे ❋ हैं सूने मंदिर सब केरे

ह्वैहै दुखित यशोमति मैया ❋ जिन हम प्रतिपाले दोउ भैया
बहुत हेतु उन हमसों कीनो ❋ विविध भांति अबलौं सुख दीनो
सकुचत हौं अपने मन माहीं ❋ उनसों उऋण कबहुँ मैं नाहीं
पलटौ नहीं जो उनको दीजै ❋ अब चलि विदा उन्हैं ब्रज कीजै
सुनि हरि बचन परम सुख पाई ❋ सब मिलि चले जहां नँदराई
सुनी नंद गोपन यह बाता ❋ मारो कंस जाय दोउ भ्राता
साँच नहीं मन में कछु माने ❋ प्रजाभाव सब रहे सकाने

दो० मनहीं मन शोचत खड़े, नहिं आये बलराम।
ब्रजमें आये ह्वै गयो, तिन्हैं आयबो वाम॥

सो० अब कैसे ब्रजजाहिं, बलमोहन दोऊ बिना।
अति व्याकुल मन माहिं, कबधौं नयननदेखिहैं॥

अथ नन्दविदालीला॥

आये तबहीं कुँवर कन्हाई ❋ नृप बसुदेव सहित दोउ भाई
देखत नन्द मिले उठि धाई ❋ लिये लगाय कंठ सुखदाई
अब चलिहैं ब्रज को यह जान्यो ❋ अति आनंद हृदय हरषान्यो
लखि बसुदेव बहुत सुख पाई ❋ मिले नन्द सों सादर धाई
उग्रसेन तब नन्द जुहारे ❋ आदर सहित सकल बैठारे
उग्रसेन बसुदेव उपँगसुत ❋ सुफलकसुत अरु यादव गणयुत
बैठे मिलि हरि हलधर भाई ❋ नन्दहि मिले निकट बैठाई
और गोप ठाढ़े सब पेखैं ❋ यशुमति सुत को भाव न देखैं
नंद मनहिं मन अति अकुलाहीं ❋ चलत बेग अब ब्रज क्यों नाहीं
सबही के मन में यह आई ❋ हरि अब हमसों प्रीति घटाई
करत बिचार श्याम मन माहीं ❋ प्रीति बिबस बोलत सकुचाहीं
तब हरि यों मुख बचन उचारो ❋ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो

दो० झझकि परे नँदराय सुनि, कहा कहत गोपाल।
मोसों कहत कि आन सों, किन किन्हों प्रतिपाल॥
सो० चौंकत जिय नँदराय, मति मोसों ऐसो कहौ।
गद्गद हिय भरि आय, डारि सकत नहिं नयन जल॥

तब हरि मधुर कह्यो नँदराई * सुनहु तात हम कहत लजाई
कही गर्ग तुम सों जो बानी * सो तुम तब निश्चय नहिं जानी
पुत्र हेतु हम को प्रतिपारे * तात मात जिमि अधिक दुलारे
खेलत हँसत बसत ब्रजमाहीं * जात इते दिन जाने नाहीं
हम को तुम दीन्हों सुख जितनो * कह्यो न जात बदन ते तितनो
तुम सम मात पिता न हमारे * जहाँ रहैं तहँ तात तुम्हारे
बिछुरन मिलन मोह अरु माया * यह प्रपञ्च जग बिधि उपजाया
ह्वैहै दुखित यशोमति मैया * मो बिन ब्रजतिय अरु सब गैया
ताते गमन बेग ब्रज कीजे * जाय सबन को धीरज दीजे
यशुमतिसों बिनती मम कहियो * माने सदा पुत्रहित रहियो
मेरी सुरति न उरते टारो * मैं तुमते कबहूं नाहिं न्यारो
हरि यों नन्दहि बचन सुनाई * बहुरो रहे सकुचि अरगाई

दो० निठुर बचन सुनि श्याम के, भये विकल अतिनंद।
उमँगि नीर नयनन चल्यो, परिगये दुखकेफंद॥
सो० दुखितसखा अरुगोप, चकित रहे हरि मुख निरखि।
करत मनहिं मन कोप, ये चरित्र अक्रूर के॥

परे नंद तब चरणन धाई * कहत न ऐसी कबहुं कन्हाई
हौं मोहन तजि चरण न जैहौं * तुम बिन जाय कहा ब्रज लैहौं
मधुबन तुमहिं छांड़ि जो जाऊं * यशुदै उत्तर काह सुनाऊं
सन्मुख सुनत दौरि जब ऐहै * तुम बिन काहि गोदकरि लैहै

पंथ निहारत ह्वै है मैया ❀ चलहु बेगि ब्रज कुँवर कन्हैया
सदमाखन मथि कीन्हो ह्वै है ❀ कहौ सो तुम बिन काहि खवैहै
क्यों जीहै बिन दरशन पाये ❀ होत निठुर कित मथुरा आये
बारह बर्ष कियो हम गारो ❀ नाहिं जान्यो परताप तुम्हारो
अब प्रगटे बसुदेव कुमारा ❀ कीन्हों बचन गर्ग निरधारा
कत हम काज महा रिपु मारे ❀ कत दरिद्र दुख हरे हमारे
डारि न दियो कमल कर गिरिवर ❀ दबि मरते ब्रजजन ताके तर
कहैं नन्द यों बिकल अधीरा ❀ भई कठिन बिछुरन की पीरा

दो॰ देखि प्रीति अति नन्द की, मन बसुदेव सिहात।
सकुच रहे सब प्रेम बश, कहि न सकत कछु बात॥

सो॰ व्याकुल सबै अहीर, मानहुँ पन्नग के डसे।
हरिमुख लखत अधीर, ठाढ़े काढ़े चित्र से॥

तब हलधर नंदै समुझावत ❀ कहत तात तुम कत दुख पावत
करि कछु काज बहुरि ब्रज आवैं ❀ तुम बिन और कहाँ सुख पावैं
हरि प्रगटे भूभार उतारन ❀ कह्यो गर्ग तुम सों सब कारन
मात पिता हमरे नहिं कोऊ ❀ तुम्हरे सुवन कहावैं दोऊ
हमैं तुम्हैं सुत पितु को नातो ❀ और परे अब होत न हांतो
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो ❀ जाय कहां उर ध्यान तुम्हारो
जननि अकेली व्याकुल ह्वैहै ❀ तुम्हैं गये धीरज कछु पैहै
व्याकुल नंद सुनत यह बानी ❀ पुनि पुनि कहत जोरि युग पानी
अबकै चलहु श्याम मम गोहन ❀ ब्रजमें मिलिआवहु फिरि मोनह
मार्‍यो कंस कियो सुर काजा ❀ दीन्हो उग्रसेन को राजा
सुख बसुदेव देवकी पायो ❀ भयो सकल यदुकुल मन भायो
तदपि यशोमति बिन गिरिधारी ❀ को जानै प्रभु टेक तुम्हारी

दो० ऐसे कहि अति बिकल ह्वै, रहे नंद गहि पाय।
भई क्षीणद्युति हीनमति, नयननजल न रहाय॥
सो० मायारहित मुकुंद, नहीं बिरहसंयोग तिहि।
ब्रह्म पूरणानंद, सब घटबासी एकरस॥
देखि बिरह अति कादर नंदहि ❀ सखा बृन्द अरु सब उपनंदहि
बिछुरत तजत चहत हैं प्राना ❀ तब यह चरित रच्यो भगवाना
मेरी अति दुस्तर है माया ❀ जिन कर जीव बिमुख भरमाया
तिन कछु दुन्द कियो जग माहीं ❀ तब हरि बोध करत नँदपाहीं
कत पछितात तात हौ एतो ❀ ब्रज अरु मथुरा अंतर केतो
कहा दूरि तुम ते कहुं जाहीं ❀ करि बिचार देखौ मन माहीं
हैं ब्रजके नर नारि दुलारी ❀ ताते कीजै बिदा तुम्हारी
ऐसे बोध कियो ब्रजनाथा ❀ तब नँद कह्यो जोरि युग हाथा
जो प्रभु तुम को ऐसी भाई ❀ तौ अब मेरो कहा बिसाई
जैहौं ब्रज प्रभु कहे तुम्हारे ❀ जात बचन मोपै नहिं टारे
बहुत करी तुम मम प्रभुताई ❀ नीच दशा लै ऊंच चढ़ाई
परम गँवार ग्वाल पशुपाला ❀ भयो धन्य सब जगत बिशाला
दो० मेटि पाप संताप सब, कियो सुकृत की खान।
भरी साखि चौदह भुवन, सुर मुनि बेद पुरान॥
सो० ऐसे कहि नँदराय, परे बहुरि हरि के चरण।
लीन्हें श्याम उठाय, कह्यो जान सन्मान तब॥
तब बसुदेव बिनय बहु भाखी ❀ आगे बहुत सम्पदा राखी
कियो जो हम अति तुम उपकारा ❀ ताको बदलो नाहिं संसारा
बालक ये अपने ही जानो ❀ इहां उहां कछु भेद न आनो
सुनि सुनि नंदमहर पछिताई ❀ रहे ठगे तन दशा भुलाई

ऊरध श्वास नयन बह पानी ❀ कंपित तनु कहि जात न बानी
सो कछु सम्पति नंद न लीनी ❀ बिनती बहुरि श्याम सों कीनी
मांगत हौं प्रभु यह कर जोरी ❀ ब्रज पर कृपा होय नहिं थोरी
तब सब गोप नृपति पहँ आये ❀ बहुत बोध करि ब्रजहि पठाये
गोप सखा बोधे हरि सबहीं ❀ बिदा किये आदर दै तबहीं
चले सकल ब्रज शोचत भारी ❀ हारे सरबस मनहुँ जुवारी
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं ❀ लटपट चरण परत मग माहीं
ब्रजतन जात बिलोकत मधुबन ❀ बिरह व्यथा बाढ़ी व्याकुल तन

दो० भये बिरह बारिधि मगन, अति अचेत अकुलाय।
श्याम राम तजि मधुपुरी, आये ब्रज नियराय ॥

सो० उतहि गये हरि गेह, उग्रसेन बसुदेव युत।
ब्रजबासिन को नेह, पुनि पुनि श्रीमुखते कहत ॥

पुनि पुनि नंद कहत पछिताई ❀ चूक परी हरि की सेवकाई
कहँ लगि गानिये यह अपराधू ❀ किये कर्म हम परम असाधू
कोमल पद बन अति कठिनाई ❀ तहँ हरि पै गैया चरवाई
रंचक दधि के काज रिसाई ❀ बाँधे यशुमति ऊखल लाई
इन्द्र कोप ब्रजलोग बचाये ❀ बरुण लोक ममहित उठि धाये
हम मतिमन्द न उनहीं जाने ❀ निकट बसत नाहिंन पहिंचाने
तन धन लोभ कंस भय पाई ❀ करि दीने आगे दोउ भाई
ऐसे समुझि नन्द निज करणी ❀ परे मुरछि व्याकुल अति धरणी
बार बार जोवत मग माता ❀ व्याकुल बिन मोहन बल ताता
आवत देखि गोप ब्रजओरी ❀ हरष हृदय आतुर उठि दौरी
धाई धेनु बत्स को जैसे ❀ माखन प्यारो है धौं कैसे
कनियां लेबे को अतुरानी ❀ आये बल मोहन यह जानी

दो० धाई अति हर्षित हिये, सुनत रोहिणी पास।
दरश आश आईं सबै, ब्रजतिय हिये हुलास ॥
सो० त्यहिक्षण अति आनन्द, ब्रजबासीब्रजतियसबै।
अतिसकोचबश नन्द, सो दुख कापै जात कहि ॥

अथ ब्रजकीबिरहलीला ॥

आतुर सकल गईं नँदपासा ❁ मनमोहन दर्शन की आसा
देखे नन्द गोप सब देखे ❁ श्याम राम दोऊ नहिं पेखे
बूझत यशुमति अति अकुलाई ❁ कहँ मेरे श्याम राम दोउ भाई
सुनत बचन ब्याकुल नँदराई ❁ नयन नीर भरि नारि नवाई
देखत सूख गईं ब्रजनारी ❁ जनुप्रफुलित कुमुदिनि हिमहारी
जान्यो आन भई बिधि सोई ❁ कहिगे बचन गर्गमुनि जोई
अति ब्याकुल सब बिन ब्रजनाथा ❁ भये सकल नर नारि अनाथा
परे भूमि सब टेर लगाई ❁ कौन दोष प्रभु हम बिसराई
यशुमतिअतिबिलपतिबिलखानी ❁ कहत सरोष नंद सों बानी
धृक धृक महर कहा यह कीनो ❁ मथुरा तजि सुत ब्रज पग दीनो
मारग सूझि पर्यो केहि भाँती ❁ बिदा होत फाटी नहिं छाती
अर्द्ध बचन सुनतहि उठिधाये ❁ कहा लेन सुख ब्रज में आये

दो० कैसे प्राण रहे हिये, बिछुरत आनँदकन्द।
सुनत नहीं स्वारथ कहा, कहूँ श्रवण मतिमन्द ॥
सो० मैं मधुपुर को जाय, रहि हौं हरिकी धाय ह्वै।
लीजै ठोंकि बजाय, अब अपनो ब्रज नन्द यह ॥

यह सुनि नन्द परे मुरझाई ❁ अति ब्याकुल ब्रजलोग लुगाई
पुनि पुनि कहत यशोमति टेरे ❁ कहँ छाँड़े दोऊ सुत मेरे

यौबन प्राण सकल ब्रजप्यारो ❀ छोरि लियो वसुदेव हमारो
सुफलकसुत बैरी भयो भारी ❀ लै गयो जीवनमूरि हमारी
हौं न गई हरिसंग अभागी ❀ सिखये इन लोगन के लागी
जो मैं जान पावती गोहन ❀ तौ क्यों छांड़ि आवती मोहन
ऐसे रोवत करत बिलापू ❀ कहि न जात यशुमति परितापू
हरि बिन सब नर नारि उदासी ❀ आये जबहिं सकल ब्रजवासी
नहीं श्याम बिन सदन सुहाई ❀ मनहुं मसान भूमि धरिखाई
पूछत बिलपि यशोमति मैया ❀ कहौ नन्द कह कह्यो कन्हैया
तुमको बिदा ब्रजहि जब कीन्हों ❀ हरि कछु मोहिं सँदेशो दीन्हों
तुम कछु हरिसों विनय न भाखी ❀ कहा श्याम मन में यह राखी

दो० मैं अपनो सों बहु कियो, वे प्रभु त्रिभुवननाथ।
जो चाहैं सोई करैं, कहा सु मेरे हाथ॥

सो० कहिकै तोहिं प्रणाम, बहुरि श्याम ऐसे कह्यो।
करि कै कछु सुरकाम, मिलिहौं तुमसों आय ब्रज॥

पुनि बोले ऐसे बल भैया ❀ दुखी होन पावै नहिं मैया
धीरज देहु तात तुम जाई ❀ कछु दिन में हम मिलि हैं आई
पठयो मोहिं तोहिं हितलागी ❀ तब मैं बचन सक्यों नहिं त्यागी
सुनि सँदेश यशुमति दुख पागी ❀ रहे प्राण हरिचरणन लागी
एक पलक बिछुरत हरि नाहीं ❀ गहि रहि मिलन आश मनमाहीं
ब्रज घर घर सब कहत गुवाला ❀ किये कृष्ण मथुरा जो ख्याला
मारयो रजक जाय हरि जबहीं ❀ नहिं निबहैं जान्यो हम तबहीं
चन्दन बहुरि कंसको लीन्हो ❀ रूप अनूपम कुबरी दीन्हो
वैसे धनुष तोरि पुनि डारयो ❀ फिरि दोउ भाइन गजको मारयो
रंगभूमि सब मल्ल पछारे ❀ असुर अनेक युद्ध करि मारे

कृहत हते ब्रज में हरि जैसे ❀ कियो जाय कंसहि पुनि तैसे
केश पकरि महि तुरत गिरायो ❀ मारि यमुनजल माहिं बहायो
दो० उग्रसेन राजा कियो, निजकर चमर ढुराय।
मथुरा नर नारी सबै, आनन्दे सुख पाय॥
सो० पुनि भेंटे हरि जाय, देवकि औ बसुदेव सों।
कह्यो परम सुख पाय, तात मात कहि भ्रात दोउ॥
तहीं भयो उत्सव अति भारी ❀ दियो दान बहु बिप्र हँकारी
हरि को पट भूषण पहिराये ❀ मंगल सब नर नारिन गाये
मथुरा घर घर बजी बधाई ❀ बहु संपति बसुदेव लुटाई
अब नहिं गोप गोपाल कहावें ❀ बासुदेव सब नाम बुलावें
यदुकुलकमल सकल जगनायक ❀ बिरदवान बर्णन गुण गायक
भये कृष्ण मथुरा के राजा ❀ अहिरन देखि लगत अब लाजा
पुनि ग्वालन यह बात सुनाई ❀ बसे श्याम कुब्जा गृह जाई
भयो जासु बश अति हित मानी ❀ कीन्ही ताहि आपनी रानी
राजा हरि कुब्जा भइ रानी ❀ गोपिन सुनी जबहिं यह बानी
गई बिरह तन तपनि सिराई ❀ सौति शाल शाल्यो उर आई
भयो दुसह दुख ऊरध श्वासा ❀ मिटी श्याम आवन की आसा
नयनन जलधारा अति बाढ़ी ❀ रही शोच बैठी कोउ ठाढ़ी
दो० जुरि आईं ब्रजतिय सबै, सुनि कुब्जा की बात।
लागीं आपुस में कहन, मन दुख मुख हर्षात॥
सो० करी सुहागिन श्याम, कुब्जा दासी कंस की।
अपना पति वहबाम, कियो नाम तिहुँपुर बिदित॥
लै श्रीखण्ड मिली मग माई ❀ सुनियत तातें अति मन भाई
भली बुरी कछु जात न चीन्हीं ❀ बहुत रूप दै समकर लीन्हीं

वे बहु रमण नगर की सोऊ ❋ बन्यो संग अपनी को ओऊ
कहत जु वह सोई अब मानैं ❋ निशि दिन वाके गुणहिं बखानैं
जानि अनोखी नेह बढ़ावैं ❋ अब नहिं सखी श्याम ब्रज आवैं
अपर कह्यो कछु रोष जनाई ❋ श्याम सदा के ऐसेइ माई
जब अक्रूर लेन ब्रज आयो ❋ कानलागि तब यहै सुनायो
नई कूबरी नारि बताई ❋ तब गहिये ताके सँग धाई
बोली एक और तिनमाहीं ❋ कुब्जा तुम देखी की नाहीं
दधि बेंचन जब जात तहाँ री ❋ तब नीके हम ताहि निहारी
अँग टेढ़ी मालिन की जाई ❋ हँसत जाहि सब लोग लोगाई
बसत दिगन नृप महलन जोई ❋ सुनियत करी सुन्दरी सोई

दो० कोटिबार दाहौ अनल, कोटि कसौ किन सोय।
तौ कत पीतर ते कहूं, कैसे सोनो होय॥
सो० हरि तजि दीन्ही लाज, हमैं होत सुनिकै हँसी।
जाय कूबरी काज, मथुरा मार्यो कंस नृप॥

बोली सखी और यक बानी ❋ अलि यह बात नहीं तुम जानी
कुब्जा सदा श्याम के प्यारी ❋ वे भर्त्ता उनकी वह नारी
तैसे तहीं ताहि कर दासी ❋ सखि ये अवगति गुणगण रासी
रूपरतन कूबर में राख्यो ❋ जिमि मोती सीपन में भाख्यो
कंस मारि के सो अब लीन्हीं ❋ ताकी प्रभुता प्रगट न कीन्हीं
ब्रजबनिता त्यागी अब तातें ❋ बूझी सकल श्यामकी बातें
कहत एक तब सुनु सखि ए री ❋ वे दिन हरि को बिसरि गये री
लिये फिरत ही जब सब कनियाँ ❋ पहिरावन सिखये हम तनियाँ
घर घर डोलत माखन खाते ❋ यशुदहि उरहन देत लजाते
बहुरि भये जब कछुक सयाने ❋ बाट घाट औगुण बहु ठाने

जो जो उन हमसों गुण ठान्यो ❋ हम सब ताही में सुख मान्यो
जिमि भजि आय गोकुलै आये ❋ गोप बेष करि रहे छिपाये

दो॰ देव मनावत दिन गये, बड़े होन की आस।
बड़े भये तब यह कियो, बसे कूबरी पास॥

सो॰ यशुमति लाड़ लड़ाय, बारे ते सेवा करी।
ताहू को बिसराय, भये देवकी पुत्र अब॥

सुनो सखी अब कह्यो हमारो ❋ नहिं कीजे तिनको पतियारो
जे जन जग में कृतहि न मानैं ❋ निज स्वारथ लागि बहुगुणठानैं
ज्यों भँवरा कल कुंज स्वहाई ❋ बैठत चाहि सुमनपर आई
रसहि चाहि पुनि हित नहिं जानै ❋ मिलत कुलहि जब होत सयानै
पालत काग पिकहि हित माने ❋ मिलत अन्यरस होत बिराने
सोई भई हमहिं अरु नंदहि ❋ कहिये कहा सखी गोबिंदहि
जे खोटे मन कपट सयाने ❋ औसर परे परैं पहिंचाने
बैठत अब नृप आसन माहीं ❋ सुनियत मुरली देखि लजाहीं
मोर पंख देखत नहिं भावैं ❋ ब्रज को नाम लेत बहरावैं
सुरभी चित्रहु में जो हेरत ❋ तौ लजाय इत उत मुख फेरत
हमरो नाम सुनत चपि जाहीं ❋ सुरत करत ग्वालन की नाहीं
वे कह जानैं पीर पराई ❋ जिन की प्रकृति परी यह आई

दो॰ भयो नयो अब राजह्वां, नये मात पित गेह।
नई नारि कुब्जा मिली, भये सखा नव नेह॥

सो॰ बिसरे ब्रज की बात, कुंज केलि रसराग को।
गये आपनी घात, दिन दिन सुख दूनो यहै॥

कौन बात को करैं परेखो ❋ सखि अपने जिय शोच न देखो
ना हरि जाति न पाँति हमारी ❋ तिन को दुख मानिये कहा री

गोपीनाथ नन्द के लाला ❋ अब न कहावत कान्ह गुवाला
बासुदेव अब उहां कहावत ❋ यदुकुलदीप भाट वर गावत
नहिं बनमाल गुंज उरमाहीं ❋ मोर पक्ष माथे पर नाहीं
गृह बन की सब प्रीति भुलाई ❋ वा मुरली सँग गई सगाई
अब वह सुरत होत कब राजन ❋ दिनदश प्रीति करी निजकाजन
सबै अजान भई तिहि काला ❋ सुनि मुरली को शब्द रसाला
अब मन जलनिधि खग ज्यों थाकैं ❋ फिरिफिरिशरणजहां जिहिताकैं
कहत एक सुन री ब्रजनाथा ❋ ब्रज अब मानों कियो अनाथा
तब वह कृपा हती ब्रजपाहीं ❋ राख्यो गिरिवर करतल माहीं
बहुरो और प्रताप कियो री ❋ हमहित दावानल अचयो री

दो० अब यह दोष लगैहमैं, समुझत सकुचत जीय।
भयो बज्रहू ते कठिन, बिछुरत फट्यो न हीय॥

सो० अब लागेदिनजान, सुनुसखि मोहनलालबिन।
रहत देह में प्रान, बिन वह मूरति सांवली॥

रहत बदन देखे बिन नैना ❋ श्रवणन रहत सुने बिन बैना
रहत हियो बिन हरि कर पर्स ❋ वेधत बाण मनोभव वर्सैं
अब सखियो सहियत दुख भारो ❋ मनहुँ नैन तन प्राण हमारो
जब बिधि बालक बत्स चुराये ❋ तब हरि तैसेइ और बनाये
जनु वैसेई कुँवर कन्हाई ❋ बिरह बृष्टि ब्रज ओर चलाई
ऐसे मन गुण सुनि गोपाला ❋ भई बिरहवश सब ब्रजबाला
अतिही कठिन भयो दुख मन में ❋ व्यापी दशऊँ अवस्था तन में
कोउ कहै लोचन दीन हमारे ❋ क्यों जीवहिं बिन श्याम निहारे
ज्यों चकोर बिन चंद दुखारी ❋ जैसे री बारिज बिन वारी
बिबरन जिमि ग्रीषम के खंजन ❋ जैसे दुखी भ्रमर बिन कंजन

श्याम सिंधु ते बिछुर परे री ❋ तड़फड़ात ज्यों मीन खरे री
भरत ढरत पुनि पुनि अकुलाहीं ❋ हरि बिन धरत धीर दृग नाहीं

दो० देख्यो नहीं सुहात कछु, गृह बन बिननँदनन्द ।
बिरह व्यथा जारत नहीं, भयो तपन अतिचन्द ॥

सो० बिन श्वासा की देह, और रूप ह्वै जात जिमि ।
तिमि लागत ब्रजगेह, हरि बिन सखी भयावनो ॥

इहिं बिरियां बनतें हरि आवत ❋ दूरिहि तें कल बेणु बजावत
कबहुंक परम चतुर गोपाला ❋ गावत ऊंचे स्वरन रसाला
कबहुंक लै लै नाम सुनावत ❋ धौरी धूमरि धेनु बुलावत
देत दृगन सुख बनतें आई ❋ वह मनमोहन रूप दिखाई
और सखी बोली यक ऐसे ❋ बहुरो कबहुं देखिये वैसे
बैठे ग्वाल बालकन साथा ❋ बांटत खात अशन ब्रजनाथा
यक दिन दधि चोरत मम धामा ❋ मैं दुर देखि रही छबि धामा
वे भाजे मम लखि परछाहीं ❋ तब मैं धाय लई गहि बाहीं
मुखकर पोंछि लियो गहि कनियां ❋ प्रेम प्रीति रस के सुखदनियां
रहे लागि छाती सों जैसे ❋ सो वह कहो जात सुख कैसे
जिन धामन वे सुख अवलोके ❋ ते अब धरि धरि खात बिलोके
सुमिरि सुमिरि वे गुणगण नाना ❋ हरि बिन रहत अधम तन प्राना

दो० कहँ लगि कहिये ए सखी, मनमोहन के खेल ।
उन बिन अब गोकुल भयो, ज्यों दीपक बिन तेल ॥

सो० रहत नयन जल छाय, सुमिरि २ गुण श्याम के ।
कहिये काहि सुनाय, भये पराये कान्ह अब ॥

एक प्रलाप करत मन माहीं ❋ कहै जाय कोऊ हरि पाहीं
लेडु आप निज गायन घेरी ❋ फिरत नहीं ग्वालन के फेरी

बिडरी फिरत सकल वन माहीं ❀ तुम बिन नाहिं काहु पतियाहीं
अपनो जानि सँभारहु आई ❀ मति विसरो ब्रज हेतु कन्हाई
बिलखत गाय बत्स सब ग्वाला ❀ नेकु सुनावहु वेणु रसाला
बूड़त बिरह सिन्धु में नारी ❀ लेहु आय गहि भुजा निकारी
काहू कहत कहै कोउ जाई ❀ बसो फेरि ब्रज कुँवर कन्हाई
अब नहिं तुमसों गाय चरावैं ❀ नहिं जगाय वन प्रात पठावैं
माखन खात बरजि हैं नाहीं ❀ नहिं उरहन यशुदहि ले जाहीं
नहिं दावरि यशुमति को देहैं ❀ नहिं अब ऊखल सों बँधवैहैं
चोरी प्रगट करैं नहिं काहू ❀ नहीं जनावहिं अवगुण ताहू
बेनी फूल गुहन नहिं कैहैं ❀ नहीं महावर चरण दिवैहैं

दो० मांगत दान न बरजि हैं, हठ नहिं करिहैं मान।
आय दरश अब दीजिये, रहत न तुम बिन प्रान॥

सो० ऐसे कहि गहि पाँय, ल्यावहिं फेरि मनाय हरि।
बसहिं बहुरि ब्रज आय, तौ ब्रजनन्दन साँवरो॥

एक कहत अब हरि नहिं आवैं ❀ नृपपद तजि क्यों ग्वाल कहावैं
उहँ गजरथ चढ़ि चलत कन्हाई ❀ इहँ क्यों गाय चरावहिं आई
उहां पटम्बर पहिरि दिखावैं ❀ इहाँ कि क्यों अब कामरि भावैं
अब उन यशुमति मातु बिसारी ❀ कौन चलावत बात हमारी
बोली अपर सखी बिलखाई ❀ भये निठुर अब कुँवर कन्हाई
करी प्रीति हमसों हरि ऐसी ❀ सुन सखि सलिल मीन की जैसी
तलफत मीन निपट अकुलाने ❀ नीर कछू उर पीर न जाने
इतनी दूर दया नहिं कीन्ही ❀ बीती अवधि खबरि नहिं लीन्ही
दैगये बिहँसि चलत परतीती ❀ मिलिहौं आय बहुरि रिपु जीती
हारे नयन उनहिं मग जोवत ❀ रोय रोय उर कंचुकि धोवत

जैसो दिन निशि तैसी जाई ❀ पलभर नींद परत नहिं आई
मन्द समीर चन्द्र सुखदाई ❀ इनते जरत सेज अधिकाई

दो० सपनेहूं तो देखिये, नींद परे जो नैन।
कीने बिबिध उपाय मन, क्योंहूं लहै न चैन॥

सो० बोलि उठी इकबाम, सुन सखि हौं तोसों कहौं।
जबते बिछुरे श्याम, आज लखे मैं सपन में॥

आये जनु मम सदन गोपाला ❀ हँसि भुज पाणि गहे नँदलाला
कहा कहौं अरि नींद भई री ❀ एकहु क्षण नहिं और रही री
ज्यों चकई लखि निज पर छाहीं ❀ पतिहि जानि हर्षी मन माहीं
तबहीं निठुर बिधाता आई ❀ दियो पवन मिस सलिल डुलाई
मेरी दशा भई सखि सोई ❀ जो जागौं तौ ढिग नहिं कोई
देखहु कहा अधिक अकुलाई ❀ बिरह जरी अरु काम जराई
कहा कहौं किहि दोष लगाऊं ❀ अपनी चूक समुझि पछिताऊं
बिछुरत ही नहिं तज्यों शरीरा ❀ समुझि परी तबहीं यह पीरा
महा दुखित अब अंग हमारे ❀ भये सखी दोउ नयन पनारे
अतिही भ्रम माते बिन देखे ❀ चाहत रूप श्याम को पेखे
रसना यहै नेम गहि राख्यो ❀ हरि बिन और न चाहत भाख्यो
जबते बिछुरे कुँवर कन्हाई ❀ तब ते भये सबै दुखदाई

दो० ओई निशि ओई दिवस, ओई ऋतु वइ मास।
बदले सबै सुभाव जनु, बिन हरि मदन बिलास॥

सो० चली और ही चाल, अब या ब्रज में ए सखी।
बिमुख भये गोपाल, भये दुखद जे सुखद सब॥

गृह कंदरा सेज भइ शूली ❀ शशि की किरणि अग्नि समतूली
सींचत अली मलय घस नीरा ❀ होत अधिक ताते उर पीरा

फूली अरुण फूल बन डारी ❋ झरत देखियत मनहुं अँगारी
हरि बिन फूल लगत सब कैसे ❋ मनहुं त्रिशूल शूल उर जैसे
तब इन तरुन अमृत फल लागे ❋ अब ते फल सब विष रस पागे
त्रिबिध समीर तीर सम लागे ❋ कोकिल शब्द अग्नि जनु दागे
तपत तेल सम बारिद पानी ❋ उठत दाह सुनि चातक बानी
सुनु सखि चातक दोष न दीजै ❋ ज्यावै या पक्षी के कीजै
जैसे पिय पिय हम रटलावत ❋ तैसे ही कहि कहि वह गावत
अति सुकंठ पीतम हित मानी ❋ क्षण नहिं रहत रटत पिय बानी
आप सुधारस पी सुख पावैं ❋ टेरि टेरि बिरहिन को ज्यावैं
जो यह खग नाहिं करत सहाई ❋ लहत प्राण तो दुख अधिकाई

दो० या पक्षीसम और को, सुन सखि सुकृत समाज।
सुफल जन्म है तासुको, जो आवै पर काज॥

सो० मगन सकल ब्रजबाल, ऐसे हरि के बिरह बश।
नहिं बिसरत नँदलाल, सोवत जागत दिवसनिशि॥

पथिक जात मधुबन तन हेरैं ❋ ताहि धाय ब्रजतिय सब घेरैं
कहत परहिं हम पाँय तुम्हारे ❋ सुनहु बटोही बचन हमारे
उत हैं बसत कृष्ण ब्रजनाथा ❋ कहियो तिनसों ब्रजकी गाथा
तुम जो इन्द्र को यज्ञ नशायो ❋ पुनि गिरि कर धर ब्रजै बचायो
सो अब वह बिरहा ह्वै आयो ❋ चाहत है ब्रज फेरि बहायो
बरषत निशिदिन दृगघनकारे ❋ बहत कुचन बिच सलिल पनारे
ऊरध श्वास पवन झकझोरे ❋ गरजत शब्द पीर घनघोरे
महाबज्र दुख सुख द्रुम डारे ❋ ब्याकुल अंग सकल अतिमारे
ब्यथा प्रवाह बढ़्यो अति भारी ❋ बूड़त बिकल सकल ब्रजनारी
चितवत मग सब नाथ तुम्हारो ❋ जानि आपनो आइ उबारो

गये मिलन कहि श्रीमुख बानी ❋ अवधि बदी ते सबै सिरानी
तुम बिन तलफत प्राण हमारे ❋ जैसे मीन सलिल ते न्यारे

दो० एक बार फिर आय कै, देहु सुदरशन श्याम।
तुम बिनब्रज ऐसो लगत, ज्यों दीपकबिन धाम॥

सो० मिलते बेणु बजाय, अब वह कृपा भई कहा।
पुनि का करि हो आय, प्राण गये ब्रज आयकै॥

सुनहु पथिक त्वहिं राम दुहाई ❋ कहियो यह मोहन ते जाई
तुम बिन राधे को तन जाई ❋ भई सबै अविपरीत बनाई
बदन छपाकर प्रीति छिपानी ❋ अब रहगई कलंक निशानी
अंखियाँ हुतीं कमल पखुरीसी ❋ सो अब मनहुँ रंग निचुरीसी
आँच लगे कंचन जिमि काचो ❋ तिमि तन बिरहानल को ताचो
कदली दलसी पीठ सुहाई ❋ सो अब मानों उलटि बनाई
सुखकी संपति सकल नशानी ❋ जारत भई कोकिला रानी
अब सब साद मान का नासो ❋ ह्वैरहि तुम्हरे दर्श पियासी
चातक पिकमृग अति कुलजाती ❋ तब इन को देखत अनखाती
अब तिन सों पूंछत हैं धाई ❋ तुम्हरे चरण कमल कुम्हिलाई
ललितादिक सखियां लखि धाई ❋ जानि अटा चढ़ि गर्व बढ़ाई
अब कहि सखी तिन्हैं अकुलाई ❋ मिले रोय कै कण्ठ लगाई

दो० सुधि बुधि सब तनकी गई, रह्योबिरह दुख छाय।
होन चहत दशईं दिशा, बेगि मिलहु तिहि आय॥

सो० ऐसे निज निज हेत, कहत सँदेशो श्यामसों।
पथिकहि चलन न देत, होत साँझ ताको तहां॥

बिरह बिकल सब ब्रजकी बाला ❋ हरि बियोग उर पीर बिशाला
हरिदरशन बिन कल नाहिं पावैं ❋ ज्यहि त्यहि कहि उर व्यथा जनावैं

जब पपिहा बोलत निशि आई ❁ कहत ताहि कोऊ अनखाई
हौं तौ बिरह जरी सन्तापी ❁ तू कत जारत रे खग पापी
पिय पिय कहि अधरात पुकारै ❁ मूढ़ मृतक अबलन कत मारै
तू नहिं सुखित दुखित बिन नीरा ❁ तेउ न समुझत शठ पर पीरा
करत कहा इतनी कठिनाई ❁ हरि बिन बोलत ब्रज पर आई
उपजावत बिरहिन उर आरत ❁ काहे अगिलो जन्म बिगारत
एक कहत चातक सों टेरी ❁ हैं सारंग चेरि हम तेरी
पौढ़े होहिं जहां सुखदाई ❁ ऊंचे टेरि सुनावहु जाई
गइ ग्रीषम पावस ऋतु आयो ❁ सब काहू चितचाव बढ़ायो
तुम बिन ब्रज तिय डोलत ऐसे ❁ नाव बिना करिया की जैसे

दो० मानैंगे तेरो कह्यो, तेरे हित घनश्याम।
लेहु सुयश चातक बड़ो, लै आवहु सुखधाम॥
सो० सुन चातक के बैन, कोऊ सखि ऐसे कहत।
यह बिहंग सुख दैन, सखिम्बहिं प्यारो पीवतें॥

निशिदिन पियपिय रटत बिचारो ❁ पियके बिरह भयो जरि कारो
स्वाति बूंद लगि रहत दुखारो ❁ तज्यो सिंधु को जल करि खारो
आप पीर पर पीरहि पावै ❁ जिय को जीवन नाम सुनावै
प्रेम बाण लाग्यो ज्यहि होई ❁ जानै व्यथा प्रेम की सोई
कोऊ कहत कोकिलहि टेरी ❁ सुन री सखी सीख यक मेरी
बसत जहां हित कुँवर कन्हाई ❁ फिर आवहिं वारेक तहँ जाई
तू कुलीन कोकिला सयानी ❁ सबहिं सुनावति मीठी वानी
तो सम कोउ नहीं उपकारी ❁ जानत हौ बिरहिन दुख भारी
उपबन बैठि श्याम को टेरी ❁ कहियो अबलन मनमथ घेरी
श्रवण सुनाय मधुरकल बानी ❁ ब्रज लै आव श्याम सुखदानी

प्राणहुँ पलट मिलत नहिं ये री ❀ संत सुबिकत सुयश की ढेरी
ह्वैहैं बिन मोलन हम चेरी ❀ गावहिं गोकुल कीरति तेरी

दो० कोऊ ऐसे कहि उठत, बरजहु बोलत मोर।
रह्यो परत नहिं टेर सुनि, बिन श्रीनंदकिशोर॥

सो० बोलत करत बिहाल, मोरहु सखि बैरी भये।
बसे बिदेश गोपाल, ये बनते न टरैं मरैं॥

बिरह मगन यों ब्रजकी नारी ❀ नहीं कृष्ण सों पलभर न्यारी
रहीं कृष्ण छबि दृगन समाई ❀ रसना कृष्ण नाम रटलाई
मनमें गुणहिं सदा गुण हरिके ❀ श्रवण रहे हरि को यश भरिके
बसी श्याम मूरति उर माहीं ❀ बिसरत सुरत एक पल नाहीं
बैठत उठत चलत घर बाहर ❀ श्यामसनेह गुप्त अरु जाहर
सोवत जागत दिन अरु राती ❀ प्रीतम कृष्ण प्रीति रसमाती
सब अँग कृष्ण प्रेमरस पागी ❀ भई कृष्णमय सकल सभागी
धनि सो प्रीति कृष्ण सों लागी ❀ धनि सो सुरति कृष्णरस पागी
धनि सो सुख हरिसंग बिहारी ❀ धनि सो दुख हरि बिरह बिचारी
धनि सो परेखौ हरिसों जोई ❀ धन्य सरेखौ हरि को होई
धनि सो ज्ञान ध्यान धनि सोई ❀ जप तप धन्य जो हरि हित होई
धन्य जन्म जो हरि के दासा ❀ सबबिधि धन्य जिन्हैं हरि आसा

दो० नन्दयशोमति गोपिकन, निशिबासरहरि ध्यान।
ब्रजबासी प्रभु दासकी, आश रहे लगि प्रान॥

सो० बिसरे सब ब्यवहार, और न दूजी गति कछू।
अंध लकुटिया धार, एक सुरति नँदनंद की॥

अथ श्रीकृष्णजीकी यज्ञोपवीतलीला ॥

रहे जाय मथुरा हरि जबते ❋ नितनव मोद होत तहँ तवते
देवकि मन अभिलाष पुरावैं ❋ निरखि निरखि दोउ सुत सुखपावैं
परमानन्द मगन बसुदेऊ ❋ सुखी सकल यादव गण तेऊ
मुदित सकल मथुरापुर वासी ❋ देत सबन सुख प्रभु सुखरासी
एक दिवस बसुदेव सुजाना ❋ बोले जे कुल मध्य प्रधाना
करि आदर मानता बड़ाई ❋ तिनसों कहि यह बात सुनाई
राम कृष्ण अबलों दोउ भाई ❋ ग्वालन मध्य रहे ब्रज जाई
यदुबंशिन की रीति न जाने ❋ हैं अबहीं कुलधर्म अयाने
ताते यह बिचार अब कीजे ❋ यज्ञोपवीत दुहुँन को दीजे
सुनि ये बचन सबन मन भाये ❋ गर्ग आदि सब विप्र बुलाये
पूंछि सुदिन शुभ लग्न धराई ❋ यज्ञ काज सब सौंज मँगाई
सकल तीरथन ते जल आये ❋ राम कृष्ण तासों अन्हवाये

दो० सकल बेदबिधि मंत्रपढ़ि, करि अभिषेक पुनीत।
दोउ भाइन तब गर्गमुनि, दियो यज्ञ उपवीत ॥

सो० अन्त न पावैं शेश, बेद श्वास जाको सकल।
ताहि दियो उपदेश, गायत्री गुरु गर्ग मुनि ॥

दियो दान बसुदेव अनेका ❋ पूजे सब द्विज सहित विवेका
सब नर नारिन मंगल गायो ❋ बन्दीजनन द्रव्य बहु पायो
लखि कौतुक सुर गण सुख पावैं ❋ बरषि सुमन दुन्दुभी बजावैं
अति आनन्द भयो सब काहू ❋ तात मात उर परम उछाहू
पुनि यक दिन बसुदेव सज्ञानी ❋ यह इच्छा अपने मन जानी
पण्डित भलो कहूं जो पैये ❋ तौ विद्या सब सुतन पढ़ैये
काहू तब यह बात बखानी ❋ संदीपन पण्डित बड़ ज्ञानी

रहे अवन्तीपुर के माहीं ❋ तासम जग परिडत कोउ नाहीं
यह सुनि कृष्ण सकल गुणखानी ❋ पितुके मनकी रुचि पहिचानी
है के नेम सहित दोउ भाई ❋ बिद्या पढ़न गये यदुराई
बेद बिदित सेवा हरि कीन्हीं ❋ अलप काल बिद्या सब लीन्हीं
लखि प्रभाव गुरु अति सुख पायो ❋ जानि जगतपति मन हर्षायो

दो० तब हरि गुरुसों जोरि कर, बोले सहित सनेहु।
गुरुदक्षिणा कछु चाहिये, माँगि सो हमसों लेहु॥

सो० तब गुरु कह्यो बिचारि, तुम प्रभु कर्त्ता जगतके।
बूझिलेहुं निज नारि, जो वह कहै सो दीजिये॥

तब संदीपन तिय पहँ आये ❋ बचन कृष्ण के ताहि सुनाये
देन कहत हरि दक्षिणा हम को ❋ माँगैं कहा सो बूझैं तुम को
मरे हुते ताके सुत दोई ❋ तिन माँगे हरि सों पुनि सोई
कृष्ण सकल जीवन के स्वामी ❋ जल थल सब जिनके अनुगामी
गये बहुरि भक्तन सुखकारी ❋ जग उतपति पालन लयकारी
चाहैं कियो होय सब सोई ❋ आनि दिये गुरु के सुत ओई
भये सुखी द्विज अरु द्विजनारी ❋ सुत संताप मिट्यो दुख भारी
है प्रसन्न गुरु आशिष दीन्हों ❋ नमस्कार प्रभु गुरु को कीन्हों
गुरु आयसु ले पुनि दोउ भाई ❋ आये मधुपुरि जब सुखदाई
तात मात लखि अति सुख पायो ❋ भयो मनोरथ सब मन भायो
राज काज पुनि प्रभु सब करई ❋ उग्रसेन आयसु अनुसरई
हितजन परिजन नर अरु नारी ❋ सुखी सकल हरिवदन निहारी

दो० ऊधो अरु अक्रूर जे, सखा श्याम के साथ।
मिलि बैठत खेलत हँसत, इनके सँग यदुनाथ॥

सो० ब्रजबासिन को ध्यान, ब्रजबासी प्रभु के सदा।

यदपि ब्रह्म सुख खान, तदपि भक्त बश प्रेमरस॥

अथ उद्धवजीको ब्रजगमनलीला ॥

ऊधो यदुपति सखा सज्ञानी ❋ एक ब्रह्म सुख सों रति मानी
हरि को त्रिगुण रूप करि मानैं ❋ प्रेम कथा कछु उर नहिं आनैं
जब हरि ब्रज की बात चलावैं ❋ तब ऊधो हँसि कै उचटावैं
हरि लखि मनहीं मन पछिताहीं ❋ भली बानि याकी यह नाहीं
रूप रेख जाके नहिं कोई ❋ धरयो नेम उर में इन सोई
निर्गुण कथा योग की गावै ❋ जामें कछु रस स्वाद न आवै
मानत एक ब्रह्म अविनासी ❋ ज्ञानगर्व में रहत उदासी
बिछुरन मिलन दुःख सुख जाहीं ❋ नहीं प्रेम उपजत तन माहीं
कनककलश पानी बिन जैसे ❋ याको रूप बन्यो है तैसे
जो हौं कहौं कहा यह माने ❋ निंदा और हमारी ठाने
कहिये काहि प्रेम की गाथा ❋ बन्यो हंस वायस को साथा
ब्रज को ध्यान सदा उर मेरे ❋ प्रेम भजन याके नहिं नेरे

दो० कहां यशोदानंद से, सुखद तात अरु मात।
कहँ वहसुख ब्रजधाम को, नहिंबिसरतदिनरात॥

सो० कहाँ सखनको संग, कहाँ केलि बृन्दा बिपिन।
कहँ वह प्रेम तरंग, वंशीबट यमुना निकट॥

कहाँ नवल ब्रज गोपकुमारी ❋ कहँ राधा बृषभानुदुलारी
कहँ वह प्रीति रीति सुख संगा ❋ कहाँ रास रस हास तरंगा
कहँ कुंजनबन केलि निकाई ❋ कहाँ मानलीला सुखदाई
कहँलगि ब्रज के सुखन सँभारों ❋ जिहिं लगि पुर बैकुंठ बिसारों
कहिये यह रस वाके आगे ❋ ऊधो सुनत प्रेम को भागे
कैसे प्रेम होय या माहीं ❋ मेरे कहे मानि हैं नाहीं

ब्रज को याको देउँ पठाई ❀ पैहै प्रेम तहाँ यह जाई
याके मन अभिमान बढ़ाऊँ ❀ कहि युवतिन की प्रीति सुनाऊँ
यहै बात यदुपति उर आनी ❀ पठऊं ब्रज यहि थापत ज्ञानी
कहौं बोध तिनको करि आवै ❀ प्रेम मिटाय ज्ञान समुझावै
जैहैं तुरत सुनत यह बाता ❀ कहि हैं हरि जानत म्वहिं ज्ञाता
करि अभिमान तुरत ब्रज जैहैं ❀ ह्वांते जाय साधु ह्वै ऐहैं

दो० ऐसे हरि बैठे करत, अपने उर अनुमान।
ऊधो के उरते करों, दूर ज्ञान अभिमान॥

सो० आयगये तिहि काल, ऊधोजी हरिके निकट।
बिहँसिमिलेनँदलाल, सखासखाकरिअंकभरि॥

अतिसुन्दर साँवलि छबि छायो ❀ जब हरि को प्रतिबिम्ब स्वहायो
अंश भुजा दैकै यदुराई ❀ ऊधो से ब्रज बात चलाई
उद्धव सुनो कहौं तुम पाहीं ❀ ब्रज को सुख म्वहिं बिसरत नाहीं
नेकहु नहीं यहां मन लागत ❀ उठि उठि पुनि उतही को भाजत
यह मन होत वहीं पुनि जैये ❀ गोपी ग्वालन में सुख पैये
कहँ वह हेतु यशोमति मैया ❀ दै दै माखन लेत बलैया
नहिं बिसरत मनते बिसराई ❀ वह राधा की प्रीति सुहाई
गोप सखा बृन्दाबन गैयाँ ❀ नहिं भूलत वंशीबट छैयाँ
त्यागत तिन्हें बहुत दुख पाये ❀ मिटत नहीं मनतें पछिताये
ऊधो सुनि बोले मुसकाई ❀ कहा कहत हरि यों अकुलाई
सदा रहत यह हित थिर नाहीं ❀ जगव्योहार सकल मिथ्याहीं
मोसों सुनो बात यदुराई ❀ एकै ब्रह्म सदा सुखदाई

दो० जब ऊधो ऐसे कही, बिहँसि ज्ञानकी बात।
तब यदुपति सुखपायके, पुनि बोले हरषात॥

सो० भाई मो मन माहिं, उद्धव कहि जो बात तुम।
तुमसमान कोउ नाहिं, सखा और मेरो हितू॥

ऊधो तुम ब्रज बेग सिधारो ❋ करि आवहु यह काज हमारो
पूरण ब्रह्म अलख अज जोई ❋ मात पिता ताके नहिं कोई
रूप न रेख जाति कुल नाहीं ❋ व्यापिरह्यो सब घट घट माहीं
हौ ताके ज्ञाता तुम ज्ञानी ❋ गोपी सकल प्रीति रत मानी
यह मत तिन्हैं बोध करि आवो ❋ प्रेम मेटि कैं ज्ञान दृढ़ावो
मेरे प्रेम बिवश वे बाला ❋ सहत विरह दुख दुसह विशाला
काम अग्नि तन तूल समाना ❋ शोच श्वास मारुत बलवाना
भस्म होत पावत सो नाहीं ❋ भीजिरहत नयनन जल माहीं
इहै आज लोपै इहि भाँती ❋ विरह व्यथा व्याकुल दिन राती
एते सर कैसे वे न्यारे ❋ समाधान बिन धीरज धारे
एते सखा बेगि तुम जाहू ❋ मेटो तिन के उर को दाहू
पठऊं नारिन के ढिग सोई ❋ जो तुमहीं सों लायक होई

दो० इक प्रवीन अरु सखा मम, तुमतें ज्ञानी कौन।
सो कीजे ज्यहि ब्रज बधू, साधन सीखैं पौन॥
सो० जिहि सुख पावैं नारि, ज्ञान योग उपदेशते।
डारैं मोहिं बिसारि, ब्रह्म अलख परचौ करैं॥

ऊधो सुनो कहत मैं तुम को ❋ तुम सम हितू और नहिं हम को
कैस्यउ उन गोपिन सों मोहीं ❋ उऋण कीजिये बिनवत तोहीं
निशिदिन भक्ति मेरिये उनको ❋ नाहिं आनि रुचि कैसिहु तिनको
सर्बस तिनन मोहिं सब दीनो ❋ तन मन प्राण समर्पण कीनो
मुक्ति तीन तिन को मैं दीनी ❋ सो उनहित एकहु नहिं कीनी
रही एक सो योजन कहिये ❋ सो वह ज्ञान बिना नहिं लहिये

सो अब देहु तिनहिं तुम ज्ञानू ❋ जिहिं पावैं वह पद निरवानू
जो अङ्गीकृत करैं न तासू ❋ तो मैं हौं उनको ऋण दासू
गाय चरावत उन की रैहौं ❋ व्रज तजि नहीं अनत कहुँ जैहौं
यहै बात मेरे मन भावै ❋ और न कछु मोपै बनि आवै
ऊधो जाहु बिलम्ब करौ जिन ❋ उनको युग बीतत मोबिन छिन
समाधान तिनको करि आवो ❋ व्रज में जाय बिलम्ब न लावो

दो० ऊधो व्रज में जाय के, बिलम न रहियो जाइ।
तुम बिन हम अकुलाय हैं, श्याम करत मन राइ॥
सो० तुमहो सखा प्रवीन, बार बार सिखऊँ कहा।
जिय ज्यों जल बिन मीन, सोई मतौ बिचारिये॥

कही श्याम ऐसे जब बानी ❋ तब ऊधो अपने जिय जानी
यदुपति योग सांच अब जान्यो ❋ ज्ञान गर्ब अपने मन आन्यो
बोल्यो अति अभिमान बढ़ाई ❋ तुम आयसु शिर पर यदुराई
तुम पठवत गोपिन के माहीं ❋ मैं कैसे प्रभु करौं कि नाहीं
तुम्हरे कहे गोकुलहि जैहौं ❋ ज्ञान कथा व्रज लोगन कैहौं
जो मानि हैं ब्रह्म उपदेशू ❋ तो कहिहौं समुझाय सँदेशू
दिन द्वै रहि व्रज में सुख दैहौं ❋ बहुरौं आय चरण पुनि लैहौं
यह सुनि बिहँसि कह्यो हरि तबहीं ❋ जाहु उपँगसुत व्रज को अबहीं
ज्ञान दृढ़ाय खबरि तिन दीजै ❋ एक पन्थ द्वै कारज कीजै
आये भ्रात इतै हम दोऊ ❋ तब ते व्रज पठयो नहिं कोऊ
जाय नन्द यशुमति परितोषो ❋ ज्ञान कथा कहि युवतिन पोषो
सकुचो मतिहि जानि व्रजनारी ❋ कहियो ज्ञान योग विस्तारी

दो० बचन कहतही समुझिहैं, वे हैं परम प्रवीन।
ह्वै हैं शीतल बिरह ते, ज्यों जल पायो मीन॥

सो॰ पठवत थापि महंत, ऊधो को यहि काज हरि।
ह्वै आवैंगे संत, ब्रज भक्तन के दरश करि॥

अपनो ही रथ तुरत मँगायो ❀ दै उपंगसुत को पल नायो
अपनेइ भूषण बसन सुहाये ❀ निज कर ऊधो को पहिराये
अपनेइ मुकुट आपनी माला ❀ पहिराई उर विहँसि विशाला
ऊधो तब हरि रूप स्वहाये ❀ यक भृगुपद के चिह्न वराये
लिख्यों पत्रिका श्री यदुराई ❀ नन्दबबा को विनय बड़ाई
पालागन कहियो कर जोरी ❀ यशुमति से यह भांति करोरी
बालक ग्वाल सखा समुदाई ❀ लिख्यो मिलन सब हीं उर लाई
अरु नर नारि सकल ब्रज जेते ❀ प्रीति जनाय लिखे सब तेते
लिखि गोपिन को योग पठायो ❀ भाव जानि काहू नहिं पायो
लेहु दृढ़ाय प्रीति ब्रजबाला ❀ यह आनी उर में नँदलाला
नीके रहियो यशुमति मैया ❀ कछु दिन में ऐहैं दोउ भैया
लिखि पाती ऊधो कर दीन्ही ❀ और मुखागर विनती कीन्ही

दो॰ कहा कहौं कछु दिवस ते, जननी बिछुरयों तोहिं।
तादिन ते कोऊ नहीं, कहत कन्हैया मोहिं॥
सो॰ कह्यो सँदेश न जात, अति दुख पायो मातु तुम।
अब मोकों निज तात, बसुदेव अरु देवकि कहत॥

कहियो नन्दबबा सों जाई ❀ कह मन धरो इती निठुराई
जबते दियो इतै पहुँचाई ❀ बहुरो सोध लियो नहिं आई
बारिक बरसाने ले जैयो ❀ समाचार तहँ के सब लैयो
ग्वाल बाल सब सखा हमारे ❀ ह्वै हैं वे मम विरह दुखारे
तिन्हैं जाय मम दिशि ते भेंटो ❀ कहि सँदेश तिन को दुख मेटो
ब्रजबासी जेते नर नारी ❀ गोप वत्स खग मृग बनचारी

जो जिहि बिधि तासों तिहि भांती ❀ असं पसं कहियो कुशलाती
मित्र एक मम दरशन पैहो ❀ देखत ताहि परम सुख लैहो
बृन्दाबन में रहत निरन्तर ❀ होत नहीं कबहूं उर अन्तर
सघन कुञ्ज तरुलता सुहाई ❀ मिलियो ताको शीश नवाई
इहि बिधि ऊधो सों यदुराई ❀ कहि सब मन की बात सुनाई
बल करि ताको प्रेम जनायो ❀ ज्ञान गर्ब ताके उर छायो

दो० ऐसे ऊधो सों कही, प्रगट श्याम ब्रजप्रीति।
ऊधो तिनको ज्ञान लै, चले करन बिपरीति॥

सो० लखि ऊधो को जात, हलधर लिये बुलाय ढिग।
समुझत ब्रजकी बात, आये जलभरि नैन पुनि॥

कहा कहौं ऊधो मैं तुम सों ❀ यशुमति करत हेत जो हमसों
एक दिवस खेलत मो साथा ❀ खेल कियो झगरो यदुनाथा
मोको दौरि गोद तब लीन्हों ❀ करसों ठेलि श्याम को दीन्हों
नन्दबबा तब बन ते आये ❀ इन्हें गोद लै मोहिं खिजाये
लगे कहन नान्हो तेरो भाई ❀ तोकों छोह लगत नहिं राई
वह हित नहिं भूलत है हमको ❀ कहत सँदेश बनत नहिं तिनको
कहियो तुम प्रणाम अब जाई ❀ अरु दोउ भैयन की कुशलाई
कहियो हम हैं तनय तुम्हारे ❀ मात पिता नहिं आन हमारे
मिलिहैं आय धाय कै तुमकों ❀ कारज कछुक और है हमकों
नहिं बिसरत क्षण गोकुल गाई ❀ तुम तजि सुख को हमें देखाई
सुनि बसुदेव देवकी पायो ❀ ऊधो ब्रज कों जात पठायो

दो० नंद यशोमति हित समुझि, लिखि पाती बसुदेव।
पालि दिये तुम सुत हमैं, नहीं उऋण तुमसेव॥

सो० मति सकुचो जिय माहिं, रामकृष्ण तुम्हरे तनय।

हम कहिबे को आहिं, मात पिता तुम दुहुँन के ॥

बालपने तुम पालन हारे ❀ बाल केलि रस तुम्हें दुलारे
हम तौ पाये बैस कुमारा ❀ सो ये सब उपकार तुम्हारा
मति कल्पो अपने मन माहीं ❀ हरिसों मिलि किन जात इहांहीं
श्याम राम नहिं तुम्हें भुलावैं ❀ दिवस रैन तुम्हरे यश गावैं
ऐसे लिखि पाती सुखदाई ❀ ऊधो कर वसुदेव पठाई
तब हरि ऊधो वेगि पठायो ❀ तुरत अंक लै हरि बैठायो
आयसु लिये बिदा हरि कीन्हों ❀ चले उपँगसुत व्रजपथ लीन्हों
ऊधो चले गर्व मन धारी ❀ कहा ज्ञान समुझैंगी ग्वारी
देखों हौं ब्रज लोगन धाई ❀ मानत इतो तिन्हैं यदुराई
चले उपँगसुत जब हर्षाई ❀ गोपिन मन तब गयो जनाई
पुनि पुनि भ्रमर श्रवण लगि जाई ❀ भयो कछुक दुख कछु हर्षाई
समुझि सो शकुन दरश अनुरागीं ❀ जहँ तहँ काग उड़ावन लागीं

दो० जो गोकुल हरि आवहीं, तो तू उड़ रे काग।
दधि ओदन तोहिं देहुँगी, अरु अंचल की पाग ॥
सो० सुनि गोपिन के बैन, उठि बैठत बायस अनत।
लखि पावत सब चैन, कहत परस्पर आप में ॥

सखी आज गोकुल हरि आवैं ❀ कैधौं काहू व्रजहि पठावैं
नीकी बात सुनावै कोऊ ❀ फरकत बाम नयन भुज दोऊ
बिन बयारि अम्बर फहराई ❀ टूटि टूटि कंचुकि बँद जाई
उठि उठि बैठत काग कहेते ❀ उमँगत मन आनंद लहेते
भ्रमर एक चहुँदिशि मड़राई ❀ पुनि पुनि कान लगत है आई
होत शकुन सुन्दर शुभकाला ❀ आवन हार भये नँदलाला।
जानत भाग दशा बिधि फेरी ❀ दूर करो अब दुख मन तेरी

बहुरि गोपाल मिले जो आई ❋ सुख सनेह करि लीजै माई
आसन हृदय कमल में दीजै ❋ नैनन निरखि बदन छबि लीजै
देखत रूप मान तजि दीजै ❋ प्रेम भजन अपनो करि लीजै
आवैं जो ब्रज कुंजबिहारी ❋ बड़ि भागिनी सबै ब्रजनारी
नन्द यशोमति सखि सुख पावैं ❋ अति बड़िभागिनि बहुरि कहावैं

दो० घर घर सगुन बिचारहीं, ब्रजकी तिय बड़भाग।
ब्रजबासी प्रभुदरश कों, सब को अनुराग॥

सो० कब आवहिं ब्रजराय, यहै करत अभिलाष मन।
मथुरा तन टकलाय, अनुदिन पंथ निहारहीं॥

अथ ऊधोजीका ब्रजआगमनलीला॥

ऊधो चले ब्रजहिं समुहाये ❋ मथुरा तजि गोकुल नियराये
रथ पर बैठे शोभित कैसे ❋ दूजे नन्दनँदन मनु जैसे
वहै मुकुट पीतांबर काछे ❋ श्याम रूप शोभित अँग आछे
दूरहि ते रथ की उजियारी ❋ देखत हरषीं ब्रज की नारी
जान्यो आवत कुँवर कन्हाई ❋ आतुर जहँ तहँ ते उठि धाई
कहत परस्पर देखहु आली ❋ मधुबन ते आवत बनमाली
गये श्याम रथपर चढ़ि जाहीं ❋ तैसो रथ आवत मगमाहीं
तैस्वइ मुकुट मनोहर राजै ❋ तैस्वइ पट कुण्डल छबि छाजै
रथ तन सब देखत अनुरागीं ❋ सपने को सुख लूटन लागीं
ज्यों ज्यों रथ आतुर चलि आवै ❋ त्यों त्यों पीताम्बर फहरावै
भईं सकल सुख व्याकुल नारी ❋ प्रेम बिबश आनँद उर भारी
जौं लगि रथ आवत नियराई ❋ तौं लगि मानहुँ कल्प बिहाई

दो० यहै शोर ब्रज घर घरन, आवत हैं नँदलाल।
देखन को निकसे हरषि, तरुण बृद्ध अरु बाल॥

सो॰ सुनत यशोदा नन्द, लेन चले आगे हरषि।
भये परमआनन्द, तिहिंक्षण ब्रजके लोग सब॥

जब कछु रथ आगे नियरायो ❋ तब संदेह सबन मन आयो
श्याम अकेले रथ के माहीं ❋ हलधर संग देखियत नाहीं
कोऊ कहत न हैं ब्रजनाथा ❋ जोपै हलधर नाहिंन साथा
इतना कहत निकट रथ आयो ❋ ऊधो निरखि नयन जल छायो
रहीं ठगीसी सब ब्रजबाला ❋ नूतन विरह भई बेहाला
मनहुँ गई निधि केहूं पाई ❋ बहुरि हाथ ते तुरत गँवाई
ह्वै गइँ सपने की रजधानी ❋ जागत कछू नहीं पछितानी
जबहीं कह्यो श्याम सो नाई ❋ जहां सो तहां रहीं मुरझाई
परी विकल यशुमति ज्यहि ठाईं ❋ ब्रजतिय धाय तहां चलि आईं
श्याम बिना रथ पर अकुलानी ❋ जहां सो तहां रहीं मुरझानी
रुदन करत व्याकुल अति भारी ❋ लई उठाय पोंछि दृग वारी
यशुदहि बोध करत सब बाला ❋ ऊधो को पठयो गोपाला

दो॰ भली भई मारग चल्यो, सखा पठायो श्याम।
उठहु बूझिये हरि कुशल, कहति महरिसों बाम॥

सो॰ सुफल घरी है आज, करहु जानि यह मन हरष।
आवन को ब्रजराज, इनके कर ह्वैहै लिख्यो॥

यह सुनि उठीं कछुक सुख पाई ❋ ऊधो निकटहि पहुँचीं आई
हरिके रूप निरखि सुख पायो ❋ श्यामसखा कहि सबन सुनायो
ऊधो निरखि कहत ब्रजनारी ❋ सुन्दर सजल सुशील महारी
ताही ते हरि याहि पठायो ❋ लै सँदेश मोहन को आयो
नीके नीके वचन सुनैहै ❋ सुनि सुनि श्रवणन हियो सिरैहै
यह जानिये वेगि हरि ऐहैं ❋ याके मुख अब यह सुनि पैहैं

चहुँदिशि घेर लियो रथ जाई ❁ नन्द गोप ब्रज लोग लुगाई
गये लिवाय नन्द निज द्वारे ❁ ऊधो रथ ते हरषि उतारे
अरघ देय भीतर घर लीन्हो ❁ धनिधनि तिनकहिआदरकीन्हो
चरण धोय आसन बैठाये ❁ बहु प्रकार भोजन करवाये
बिबिध भांति करिके पहुनाई ❁ नन्द श्याम की बात चलाई
ऊधो कह्यो कुशल दोउ भैया ❁ अरु बसुदेव देवकी मैया

दो॰ करत हमारी सुधि कबहुँ, कहु ऊधो बलबीर।
पुलकि गात गदगद बचन, पूछत नंद अधीर॥

दो॰ चूकपरी अनजान, कह पछिताने आजके।
घर आये भगवान, जानेहमनिजअहिरकरि॥

प्रथम गर्गमुनि कह्यो बखानी ❁ भूल्यो संग दोष हितजानी
अब ऊधो बिछुरे गिरिधारी ❁ मरियत समुझि शूल स्वइ भारी
कह्यो यशोमति दृग भरि पानी ❁ ऊधो हम ऐसी नहिं जानी
सुत को हित करिकै हम माने ❁ हरि है बासुदेव प्रगटाने
ज्यहि बिरंचि शिव ध्यान लगावैं ❁ निशिदिन अंग बिभूति चढ़ावैं
सो बालक हम अतिहि अयान्यो ❁ ऊखल सों बांध्यो गहि पान्यो
फाटत नहीं वज्रसम छाती ❁ अब यह समुझि हृदय पछिताती
वैसे भाग कबहुँ अब ऐहैं ❁ बहुरि श्याम को गोद खिलैहैं
जबते हरि मधुपुरी सिधारे ❁ तब ते ऊधो प्राण दुखारे
तलफत मीन नीर बिन जैसे ❁ देख्यो श्याम मनोहर तैसे
उठि के प्रात जातिहौं खरिका ❁ देखत दुहत और के लरिका
उठत शूल ऊधो मन माहीं ❁ क्यों ये प्राण निकसि नहिं जाहीं

दो॰ ग्वालसखा सँग जोरि अब, को गैया लैजाय।
को आवै सन्ध्या समय, बनते गाय चराय॥

सो० काहि लेहुँ उर लाय, आंचर से रज झारिकै।
काकी लेहुँ बलाय, चूमि मनोहरकमलमुख॥

मैं बलि सांची कहियो ऊधो ❋ कैसे श्याम रहत है सूधो
दही मही माखन नित जाई ❋ खात कौन के धाम कन्हाई
कौन ग्वाल बालन के साथा ❋ भोजन करत तहां ब्रजनाथा
कौन सखा लीन्हे सँग डोलैं ❋ खेलत हँसत कौन से बोलैं
काको माखन चोरैं जाई ❋ देत उरहनो को अब आई
बन में यमुना तीर कन्हाई ❋ किन गोपिन को रोकत जाई
किन को दूध दही ढरकावैं ❋ किन सों दधि को दान चुकावैं
इतनी बूझत यशुमति माई ❋ भई बिकल गुण सुमिरि कन्हाई
बोले नंद बिलखि तब बानी ❋ कहियो ऊधो सांच बखानी
श्याम कबहुं बहुरो ब्रज ऐहैं ❋ ब्रजबासिन की ताप नशैहैं
मोहिं तात यशुमति सों माता ❋ सदा कहत हैं हरि सुखदाता
कहि गये चलतीबार मुरारी ❋ मिलिहौं बहुरि तात यकबारी

दो० करिहैं सो अपनो बचन, कबहुँ श्याम प्रतिपाल।
कहो ऊधो तुमसों कछू, कह्यो कि नाहिं गोपाल॥

सो० भये सकल कृशगात, श्याम बिरह ब्रजनारिनर।
युगसम दिवस बिहात, ऊधो हमकों हरि बिना॥

लखि ऊधो ब्रजरीति सुहाई ❋ रहे कछुक ऊधो सकुचाई
सुनत नंद यशुमति की बानी ❋ बोल्यो हृदय परम सुख मानी
कहि दोउ भाइन की कुशलाती ❋ दई श्याम दीन्ही सो पाती
हरि को कह्यो सँदेश सुनायो ❋ हलधर को सब कह्यो सुहायो
पाती बांचि नंद उर लाई ❋ भेंटे मानहुँ कुँवर कन्हाई
लिखी श्याम के करकी पाती ❋ यशुमति लैलै लावति छाती

दुसह बिरह की ताप नशावै ❋ हरिसँदेश सुनि सुनि सुख पावै
पुनि बसुदेव लिख्यो है जोई ❋ ऊधो दियो नन्द को सोई
बांचत नैन नीर भरि आये ❋ कहत श्याम अब भये पराये
पुनि बसुदेव लिखी का बाता ❋ बोली बिलखि यशोदा माता
यद्यपि हरि बसुदेव कुमारा ❋ उदर देवकी के अवतारा
तद्यपि म्वहिं धायहु के नाते ❋ एक बार मोहन मिलिजाते

दो० ऊधो यद्यपि हम सबै, समुझावत ब्रजलोग।
उठतशूल तद्यपि निरखि, माखन हरिमुखयोग॥

सो० रोटी अरु नवनीत, नितमांगत उठि प्रातही।
को देहै करि प्रीत, तिन्हैं बानि जाने बिना॥

यदपि देवगृह सब सुख भोगा ❋ हैं बसुदेव सदन सब योगा
हम पशुपाल ग्वाल ब्रजबासी ❋ दही मही धन घोष निवासी
राजसुखन कोउ कोटि लड़ावै ❋ तो माखन नाहिं हरि सुख पावै
निशिदिन रहत यहै जिय शोचू ❋ ह्वैहैं हरि ह्वां करत सकोचू
एक बार गोकुल फिर आवैं ❋ मनकरि माखन भोग लगावैं
सपत रहैं गोकुल में नाहीं ❋ उलटि बहुरि मधुपुरिको जाहीं
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई ❋ ऊधो चरण रही शिरनाई
तब ऊधो बोले सुखपाई ❋ धन्य यशोमति धनि नँदराई
धन्य धन्य हैं भाग तुम्हारे ❋ जिनको कृष्ण प्राण ते प्यारे
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखरासी ❋ जगत आतमा सब घट वासी
हैं व्यापक पूरण सब ठाहीं ❋ जैसे अग्नि काठ के माहीं
मति जानो हरि हमते न्यारे ❋ वे हैं सब जन के रखवारे

दो० मति जानो सुतकरि तिन्हैं, वे सब के करतार।
तात मात तिनके नहीं, भक्तन हित अवतार॥

सो० हम हैं सब अज्ञान, प्रभु महिमा जानैं नहीं।
वे प्रभु पुरुष पुरान, सकल कर्म करिकै रहित ॥

हम सब अपने भ्रमहिं भुलाने ❊ नर समान हरि को करि जाने
ज्यों शिशु आप चक्र सम फिरई ❊ ताको फिरत जानि सब परई
ताते प्रभुहि जानि हरि ध्यावो ❊ जाते मुक्ति पदारथ पावो
ऊधो जो तुम हमहिं सिखावत ❊ हमहूं बहुत मनहिं समझावत
तद्यपि वह मृदुरूप कन्हाई ❊ देखे बिना रह्यो नहिं जाई
सब ब्रज के जीवन हरि वारे ❊ ऊधो कैसे जात बिसारे
जा दिन मोहन बन नहिं जाते ❊ ता दिन बन खग मृग अकुलाते
नहिं अघात देखे वह मूरत ❊ रूप निधान साँवरी सूरत
सो मृग तृण भरि उदर न खाहीं ❊ भये रहत कृश श्याम बिनाहीं
मुरली धुनि खग मोहे जोई ❊ सो अब सुख फल खात न कोई
जे बन सदा नवल सुख दाता ❊ ते अब सूखे जीरण पाता
कोकिल कीर मोर नहिं बोलैं ❊ व्याकुल भये सकल बन डोलैं

दो० जिन्हैं चरावत श्याम जो, फिरत दुखारी गाय।
जहँ जहँ गोदोहन कियो, सूंघत तहँ तहँ जाय ॥

सो० सबब्रज बिरह अधीर, युगसम बीतत पल हमैं।
धरैं कौन बिधि धीर, ऊधो मनमोहन बिना ॥

ऐस्यहि कहत सुनत गुण हरिके ❊ बैठे बीति गई निशि भरिके
ठाढ़े यशुदहि रैनि बिहानी ❊ भरि भरि लोचन ढारत पानी
ब्रज घर घर सब होत बधाई ❊ कहत कान्ह की पाती आई
निपट समीपी सखा स्वहायो ❊ ऊधो को हरि ब्रजहि पठायो
कंचन कलश दूब दधि रोरी ❊ नन्द सदन लै आवत गोरी
गोप सखा सब कृष्ण उपासी ❊ आये धाय सकल ब्रजबासी

ऊधो को हरि रूप निहारी ❋ भये सुखी सब नर अरु नारी
ब्रज युवती मिलि तिलक बनावैं ❋ करि परदक्षिण शीश नवावैं
कहत पाय कै दरश तुम्हारो ❋ भयो जन्म अब सुफल हमारो
बूझत कुशल सकल नर नारी ❋ नन्द अवास भीर भइ भारी
ऊधो लखि ब्रज प्रेम जकेसे ❋ बोलि सकत नहिं रहे थकेसे
हकबकात चहुंदिशि सब ठाढ़े ❋ ऊधो रहे मौन गहि गाढ़े

दो० ऊधो की लखि कै दशा, ब्रजजन मन अकुलात।
क्यों ऊधो तुम कहत नहिं, रामकृष्ण कुशलात॥
सो० इकक्षण युगसम जाहिं, हमैं सुने बिन प्रीति हरि।
आवन कह्यो कि नाहिं, ब्रजहि कृपा करि सांवरे॥

तब ऊधो बोले धरि धीरा ❋ सदा कुशल हरि हलधर वीरा
दियो तुम्हैं लिखि पत्र सँदेशू ❋ अरु श्रीमुख यह कह्यो सँदेशू
करि समाधि अन्तर म्वहिं ध्यावो ❋ गोप सखा करि मति चितलावो
हौं अनादि अबिगति अबिनासी ❋ सदा एकरस सब घट बासी
निगुण ज्ञान बिन मुक्ति न होई ❋ बेद पुराण कहत हैं सोई
ताते दृढ़करि यह मन धारो ❋ सगुण रूप तजि निगुण विचारो
तुरत तापत्रय तरि दुखदाई ❋ मिलिहौ ब्रह्म सुखहि सब जाई
ऊधो कही जबहिं यह बानी ❋ गोपी जन सुनिकै बिलखानी
इतनी दूर बसत सुनि आली ❋ अब कछु और भये बनमाली
रही बिरह की बात बिचारी ❋ बूड़ीं सकल मनहुं बिन वारी
मिलन आश गइ सुनत सँदेशू ❋ उपज्यो उर अति कठिन अँदेशू
फैल गई जहँ तहँ यह बानी ❋ कहत परस्पर सब अकुलानी

दो० यह सब दोषलगै हमैं, करम रेख को जान।
प्रेम सुधारस सानिकै, अब लिखि पठयो ज्ञान॥

सो० इक ऐसे यह देह, रही झुरसि बिरहा अनल।
कैखाहूते खेह, अब आयो ऊधो करन॥

रूपराशि जो सब सुखदाई ❋ ब्रज की जीवनमूरि कन्हाई
बिछुरे जिन्हैं इतो दुख पायो ❋ सो इन हिरदय माहिं बतायो
तिन्हैं कहत चितवो मन माहीं ❋ वे हैं पूरणभरि सब ठाहीं
जाको यत्न करत हैं योगी ❋ निर्गुण निराकार निर्भोगी
सो करि कृपा आइ कै ऊधो ❋ बीथिन मांझ बहायो सूधो
अबलन कारण श्याम पठायो ❋ व्यापक अगह गहावन आयो
भजो आय बिरहिन सब कोई ❋ गायो निर्गुण निगम न जोई
जो समदृष्टि एकरस मोहन ❋ तौ कित चित्त चुरायो गोहन
ऊधो यह हित लागै का है ❋ जो पै इष्ट कृष्ण हियमा है
निशिदिननयनदरशहितजागत ❋ कल नहिं परत पलक नहिं लागत
चहुँदिशि चितवति बिरहअधीरा ❋ बिलखि बिलखि भरि डारत नीरा
ऐस्यहु दुख प्रगटत क्यों नाहीं ❋ जो पै श्यामहिं कहत इहाहीं

दो० रहन देहु ऐस्यहि हमैं, अवधि आश की थाह।
फिरि चाहैं नहिं पायहौं, डारे अगुण अथाह॥

सो० ल्याये युवतिन योग, जो योगिन को भोग तुम।
हमतनभयोबियोग, भयोअधिकदुखश्रवणसुनि॥

एक कहत दूषण नहिं याको ❋ यह आयो पठयो कुबिजाको
वाने जो कहि याहि पठायो ❋ सोई याने आय सुनायो
अब कुबिजा जो जाहि सिखावै ❋ सोई ताको गायो गावै
कबहूँ श्याम कहैं नहिं ऐसी ❋ कही आय ब्रज में इन जैसी
ऐसी बात सुनै को माई ❋ उठै शूल सुनि सहि नहिं जाई
कहत भोग तजि योग अराधो ❋ ऐसी कैसे कहि हैं माधो

जप तप संयम नेम अचारा ❋ यह सब बिधवा को व्यवहारा
युग युग जीवहु कुँवरकन्हाई ❋ शीश हमारे पर सुखदाई
अच्छतखसम भस्म किन लाई ❋ कहो कहां की रीति चलाई
हमरे योग नेम व्रत एहा ❋ नन्दनँदन पद सदा सनेहा
ऊधो तुम्हें दोष को लावै ❋ यह सब कुबिजा नाच नचावै
जब युवतिन यह बात सुनाई ❋ ऊधो रह्यो मौन सकुचाई

दो० योगकथा युवतिन कही, मनहीं मन पछिताय।
प्रेमबचन तिनके सुनत, रहिगयो शीशनवाय॥

सो० तब जान्यो मनमाहिं, ये गुण हैं सब श्यामके।
म्वहिं पठयो इहि ठाहिं, याही कारण के लिये॥

ऊधो सुनि गोपिन की बानी ❋ गुरु करि तिन्हैं प्रथमहीं मानी
मन मन करि प्रणाम हर्षाने ❋ ऊधो चले बहुरि बरसाने
श्रीवृषभानु कुँवरि हरिप्यारी ❋ और सकल ब्रजगोपकुमारी
जिनके मनमोहन नँदलाला ❋ सुनी सबन यह बात रसाला
कोऊ है मधुबन ते आयो ❋ हित करि श्रीनँदलाल पठायो
यूथ यूथ मिलि अति अतुराई ❋ पियसँदेश सुनतैं उठि धाई
मिले उपँगसुत पन्थ मझारी ❋ रथ लखि कहत परस्पर नारी
बहुरि सखी सुफलकसुत आयो ❋ वैसोई रथ परत लखायो
लै गयो प्रथमहिं प्राण हमारो ❋ अब धौं कहा काज जिय धारो
तिहि क्षण ऊधो दरश देखायो ❋ तब धीरज सबके मन आयो
संगी सखा श्याम को चीन्हो ❋ सबन प्रणाम जोरि कर कीन्हो
ऊधो लखि अति भये सुखारी ❋ मनहुँ विकल झष पायो वारी

दो० तब ऊधो रथतें उतरि, बैठे तरु की छांहिं।
भई भीर गोपीन की, अति आनँद मन माहिं॥

सो० अति प्रियपाहुन जान, सुधि ल्याये ब्रजराजकी।
करिकै अति सनमान, प्रेमसहित पूजे सबन॥

हाथ जोरि पुनि बिनय सुनाई ❀ कहिये ऊधो निज कुशलाई
बहुरि कहौ मधुबन कुशलाता ❀ हैं बसुदेव देवकी माता
कुशल क्षेम कहिये बलदाऊ ❀ अरु अक्रूर कुशल कुबजाऊ
बूझत श्याम कुशल अकुलानी ❀ नयन नीर मुख गदगद बानी
लखि गोपिन की प्रीति स्वहाई ❀ प्रेम मगन भये ऊधो राई
पुलकि गात अँखियां जल छाई ❀ गयो ज्ञान को गर्व हिराई
पुनि पुनि यहै कहत मन माहीं ❀ ऐसी हरि को बूझिय नाहीं
ब्रजनारिन को योग पठावैं ❀ चितते ब्रज की प्रीति मिटावैं
पुनि ऊधो उर में धरि धीरा ❀ बोले सोधि नैन को नीरा
सब बिधि कहि हरि की कुशलाती ❀ दीनी प्रथम श्याम की पाती
लै लै करन मिलति सब पाती ❀ कोऊ नैन कोउ लावति छाती
काहू लै कर शीश चढ़ाई ❀ बूझत आपन लिखी कन्हाई

दो० अतिहितपातीश्यामकी, सबमिलिमिलिसुखपाय।
ऊधो कर दीनी बहुरि, दीजे बांचि सुनाय॥

सो० ऊधो सबन समोध, बांचि श्याम की पत्रिका।
लागे करन प्रबोध, ज्ञान कथा बिस्तारि कै॥

मोको हरि तुम पास पठायो ❀ आतम ज्ञान सिखावन आयो
जाते पाप नहीं नियराई ❀ मन ते विषय देहु बिसराई
हरि आपहि नर आपुहि नारी ❀ आपुहि गृही आप ब्रह्मचारी
आपहि पिता आपुही माता ❀ आपहि पुत्र आपुही भ्राता
आपहि पण्डित, आपहि ज्ञानी ❀ आपहि राजा आपहि रानी
आपहि धरती, आप अकाशा ❀ आपहि स्वामी आपहि दाशा

आपहि ग्वाल आपही गाई ❋ आपहि आप दुहावन जाई
आपहि भ्रमर आपही फूला ❋ आपहि ज्ञान विना जग शूला
राव रङ्क दूजा नहिं कोई ❋ आपहि आप निरन्तर होई
ज्यों बहु दीप ज्योति है एकू ❋ तैस्वइ जानो ब्रह्म विवेक
यहि प्रकार जाको मन लागै ❋ जरामरण नाशै भ्रम भागै
योग समाधि ब्रह्म चितलावै ❋ ब्रह्मानन्द सुखहि तब पावै

दो० सुनतहि ऊधो के बचन, रहीं सबै शिरनाय।
मानहुं मांगत सुधारस, दीन्हों गरल पियाय॥

सो० रहीं ठगीसी नारि, हरि सँदेश दारुण सुनत।
बोलीं बहुरि सँभारि, ऊधो सों कर जोरि कै॥

भले मिले तुम ऊधो राई ❋ भली आय कुशलात सुनाई
कछु यक हती मिलनकी आशा ❋ कियो आय ताको तुम नाशा
इन बातन कैसे मन दीजै ❋ श्याम बिरह तन पल पल छीजे
बिन देखे वह मूरति प्यारी ❋ कुण्डल मुकुट पीत पट धारी
ऊधो कहो कौन बिधि जीजे ❋ योग युक्ति लैकै कह कीजे
छांड़ि अछत नँदनंदन प्यारो ❋ को लिखि पूजे भीति पगारो
हम अहीर गोरस के भोगी ❋ योग युक्ति जानै कोउ योगी
ऊधो तुम सों सांच बखानै ❋ प्रेम भक्ति हमरे मन मानै
हम को भजनानंद पियारो ❋ ब्रह्मानँद सुख कहा विचारो
ब्यावरि व्यथा न बंध्या जानै ❋ ये दृग हरिदरशन सुख मानै
पुनि पुनि हमैं वहै सुधि आवै ❋ कृष्णरूप बिन और न भावै
नवकिशोर को नयन निहारैं ❋ कोटि ज्योति ता ऊपर वारैं

दो० अधर अरुण मुरली धरे, लोचन कमल विशाल।
क्यों बिसरत ऊधो हमैं, मोहन मदनगोपाल॥

सो० सजल मेघ तन श्याम, रूपराशि आनँद भस्यो।
सोहीं सब ब्रजबाम, और न जानत ब्रह्म हम।
ऊधो सुनि गोपिन की बानी ❋ बोले बहुरो साजि सयानी
जौ लागि हृदय ज्ञान नहिं नीकैं ❋ तौलौं सब पानी की लीकें
बूझे बिन सपनो नहिं होई ❋ बिन बिवेक सुख पाव न कोई
रूप रेख जाके कछु नाहीं ❋ नैन मूंदि चितवो मन माहीं
हृदय कमल में ज्योति बिराजै ❋ अनहदनाद निरन्तर बाजै
इड़ा पिंगला सुखमन नारी ❋ सहज शून्य में बसत मुरारी
नासा अग्र ब्रह्म को बासा ❋ धरहु ध्यान तहँ ज्योति प्रकासा
क्रम क्रम योगपंथ अनुसरहू ❋ इहि प्रकार भव दुस्तर तरहू
ऊधो हम गोपाल उपासी ❋ ब्रह्मज्ञान सुनि आवत हांसी
जो वै रूप रेख नहिं चीन्हा ❋ हाथ पांव मुख नयन बिहीना
तौ यशुदा करि काको जायो ❋ काको पलना घालि झुलायो
कैसे ऊखल हाथ बँधायो ❋ चोरि चोरि कैसे दधि खायो
दो० कौन खिलाये गोद करि, कहे न तुतरे बैन।
ऊधो ताको न्याव है, जाहि न सूझै नैन॥
सो० नटवर बेष प्रकाश, श्रीवृन्दाबन चन्द तजि।
को खोजे आकाश, सुन्नसमाधि लगाय कै॥
जानि बूझि मति होहु अयानी ❋ मानहु सत्य हमारी बानी
भजो ब्रह्म ब्रह्मै सब होहू ❋ छांड़ि देहु ममता अरु मोहू
माया नित आंधरी न बूझै ❋ ज्ञान अनंत नयन सब सूझै
मैं यह कहत कृष्ण की भाखी ❋ देखहु बूझि बेद सब साखी
लगे आगि घर घूर जरावै ❋ को निज गृह तजि घूर बुझावै
घरी करौ बल योग सँवारो ❋ भक्ति बिरोधी ज्ञान तुम्हारो

योग कहा सब ओढ़ि बिछावैं ❀ दुसह बचन हम को नाहिं भावैं
अबलन आनि सिखावत योगू ❀ हम भूलीं कैधों तुम लोगू
ऐसे कहि गोपी अनखानी ❀ मनमें श्याम परेखो आनी
ताही समय भ्रमर इक आयो ❀ सहज निकट ह्वै बचन सुनायो
तासों कहि सब बात सुनावैं ❀ ऊधो प्रति बहु व्यंग बनावैं
बचन स्वभाव त्रिगुण अनुसारी ❀ लागीं कहन सकल ब्रजनारी

दो० कोऊ ऊधो सों कहत, कोउ अलीप्रति बात।
निजनिजमनकीउकतकरि, अपनी अपनीघात॥

सो० ऊधो भूले ज्ञान, उत्तर बोल न आवहीं।
रहे मौन सो मान, सुनत बचन नारीन के॥

बोलि उठी ऐसे इक ग्वारी ❀ आय सुनो री सब ब्रजनारी
आयो मधुप देन पद नीको ❀ लीन्हे शीश सुयश को टीको
तजन कहत भूषण पट गेहा ❀ सुत पति बंधू सजन सनेहा
शीश जटा अरु भस्म लगावो ❀ सगुण छांड़ि निर्गुण मन लावो
आयो करन तियन पर छोहा ❀ बस्ती छांड़ि बतावत खोहा
सुनि सखि कहत एक अरु बाला ❀ ये मधुपुरि दोउ बसत मराला
वे अक्रूर और ये ऊधो ❀ निरवारक पानी अरु दूधो
जानत भली गांस की बाता ❀ इनहीं कंस करायो घाता
इनके कुल ऐसी चलि आई ❀ प्रकट उजागर बंश सदाई
अब करि कृपा ब्रजहि उठि धाये ❀ अबलन योग सिखावन आये
ऐसे एक कहत अरु ग्वाली ❀ ये दोउ इकमन सुन री आली
तब अक्रूर अबहिं ये ऊधो ❀ ब्रज आखेट कियो इन सूधो

दो० बचनफाँसि फँसिहँसिहरन, उन लियो रथ बैठाय।
हर लीन्हो इन गोपिका, हती ज्ञान सर आय॥

सो० देखहु दीन्हो लाय, चहुँदिशि दावा योग को।
भई कठिन अतिआय, अब धौं का चाहत कियो॥

लागी कहन और इक ग्वारी ❋ मधुकर जानी बात तुम्हारी
तुम जो हमैं योग यह आन्यो ❋ करी भली करनी सो जान्यो
इक हरि बिरह रही हम जरिकै ❋ सुनतै अधिक उठी अब बरिकै
तापर अब जनि लोन लगावो ❋ मतै पराई बात चलावो
दई श्याम तुम्हरे कर पाती ❋ सुनि कै बहुत सिरानी छाती
कीन्हों उलटो न्याय कन्हाई ❋ वहे जात मांगत उतराई
इक हम दुसह बिरह दुख पावें ❋ दूजे लिखि लिखि योग पठावें
मधुकर श्याम भेद अब पायो ❋ नेह रत्न उन कहूं गँवायो
पहिले अधर सुधारस प्यायो ❋ कियो पोप बहु लाड़ लड़ायो
बहुरो शिशु को खेल बनायो ❋ गृहरचना रचि चलत मिटायो
साँप कंचुकी ज्यों लपटाई ❋ ऐसी हित की रीति दिखाई
बहुरो सुरति लई नहिं जैसे ❋ तजी श्याम हम को अब ऐसे

दो० करहु राज जहँ जाउ तहँ, लेहु अपन शिर भार।
दीजत सबै अशीश यह, न्हातहु खसो न बार॥

सो० बहुरंगी सुख तूल, जिनहिं जात नितहीं सदा।
इकरंगी दुख मूल, चातक मीन पतंग गति॥

मधुप कहा कहि तुम्हैं सुनैये ❋ करिकै प्रीति सबै पछितैये
निबहैगी ऐसे हम जानी ❋ उन लैकै कछु औरै ठानी
कारे तन को कहा पत्यारो ❋ मृदुमुसकनि मन हरो हमारो
तब काहू मन हरत न जान्यो ❋ हँसि हँसि सब लोगन सुख मान्यो
घर वहि कुबजा कीन्हों नीको ❋ सुनि सुनि मधुप मिटत दुख जीको
चन्दन तनक श्याम उर धरिकै ❋ श्रोसरवस्य पियो सब भरिकै

जैसो छल हम सों हरि कीन्हों ❋ ताको दाँव कूबरी लीन्हों
बोली और एक यों नारी ❋ भाग दशा ऊधो किन जारी
बिलपत रहत सकल ब्रजनारी ❋ कुबजा भई श्याम की प्यारी
खात बच्यो असुरन को जोई ❋ अब कुल बधू कहातव सोई
राजकुँवरि कोऊ हरि बरते ❋ तो कछु हम चित में नहिं धरते
बन्यो साथ अब अतिहीं आगर ❋ कागा और मराल उजागर

दो० अब खेलत दोउ लाज तजि, बारहमासी फाग।
लौंड़ी की डौंड़ी बजी, हांसी अरु अनुराग॥
सो० हमैं देत बैराग, अपना दासी बश भये।
चतुर चचोरत आग, ऊधो यह अचरज बड़ो॥

ऊधो हरि ऐसे जनकारी ❋ सुयश रह्यो त्रिभुवन महि भारी
आये असुर जिते ब्रजमाहीं ❋ मारे सकल बच्यो कोउ नाहीं
बिषजल सों सब ग्वाल जिवाये ❋ कालीनाग नाथि लै आये
इन्द्रमान दलि ब्रजहिं बचायो ❋ गोबर्द्धन कर बाम उठायो
जब बिधि बालक बत्स चुराये ❋ करिकै यत्न आप उपजाये
धनुष तोरि गज प्रबल सँहास्यो ❋ मल्लन सहित कंस नृप मास्यो
कीन्हों उग्रसेन को राजा ❋ भये सकल देवन के काजा
ऐसी कीरति करि सब नासी ❋ कीन्हीं नारि कूबरी दासी
कहँ श्रीपति त्रिभुवन सुखदायक ❋ अखिल लोक ब्रह्मांडके नायक
ब्रह्मा शिव इन्द्रादिक देवा ❋ करत निरन्तर जाकी सेवा
ऊधो कहां कंस की दासी ❋ यह सुनि होत सकल ब्रज हांसी
कत मारत यदुकुल को लाजन ❋ अब करिकै हरि ऐसे काजन

दो० गावत जग सब गीत अब, वा चेरी के काज।
ऊधो यह अनुचित बड़ो, चेरीपति ब्रजराज॥

सो० ऊधो कहियो जाय, अबहूं चेरी परिहरें।
यह दुख सह्यो न जाय, सौति कहावति कूबरी ॥
बोली और बाम यक ऐसे ❀ ऊधो हरि रीझे धौं कैसे
यक चेरी अरु कूबर पाछे ❀ सोवत नहीं उताने आछे
कुटिल कुरूप जाति कुलहीनी ❀ ताको श्याम सुहागिनि कीनी
कहा सिद्धि धौं कूबर माहीं ❀ हम को लिखि पठवत क्यों नाहीं
हमहूं कूबर यत्न बनावैं ❀ चलिकै टेढ़ी चाल दिखावैं
कहैं श्याम सोई अब कीजे ❀ लोकलाज भामिनि तजि दीजे
होहिं आय गोकुल के वासी ❀ तजैं निगोड़ी कुबजा दासी
मधुकर जो हरि हमैं बिसास्यो ❀ गोपीनाथ नाम क्यों धास्यो
जो नहिं काज हमारे आवत ❀ तौ कलंक कत हमहिं लगावत
जोपै प्रीति करी कुबजा की ❀ तौ अब बिरद बुलावहिं ताकी
करतहि सुगम सबन करि पाई ❀ प्रीति निबाहन अति कठनाई
अब परतीति कवन बिधि माने ❀ क्षण में हो गये श्याम बिराने
दो० ज्यों गज को रद त्यों करी, हरि हमसों पहिचान।
दिखरावन को आनहीं, काज करन को आन ॥
सो० बिषकीरा बिष खात, छांड़ि छुहारा दाख फल।
मन मन कीजे बात, ऊधो कहिये काहिसों ॥
ऊधो कहि कहि तुम्हैं सुनावैं ❀ जैसे हरि बिन हम दुख पावैं
बरु रहते मथुरा घनश्यामा ❀ कित आये यशुदा के धामा
कत करि गोप बेष सुख दीन्हों ❀ कत गोवर्द्धन कर पर लीन्हों
कतहि रासरस रचि बनमाहीं ❀ किये बिबिध सुख बरणि न जाहीं
करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई ❀ अब मन धरी इती निठुराई
जबते ब्रज तजि गये बिहारी ❀ तबते ऐसी दशा हमारी

घटे अहार बिहार हर्ष हिय ❋ भोग सँयोग आश आवन जिय
बाढ़ी निशा बलय आभूषन ❋ लोचन जल अंचल प्रति अञ्जन
उर चिन्ता कंचुकी उसासा ❋ जीवन रह्यो अवधि की आसा
बीतत निशा गनत नभ तारे ❋ दिवस तकत पथ लोचन हारे
रही नहीं सुधि बुधि मनमाहीं ❋ बिरहानल तन जरत सदाहीं
सुमिरि सुमिरि के हरिगुणग्रामा ❋ दुख अधिकात सुहात न धामा

दो० कहँ लगि कहिये निज व्यथा, अरु हरि की निठुराय।
तापर लाये योग अलि, अबलन करन सहाय॥

सो० कठिन बिरह की पीर, जिहि व्यापै सो जानही।
क्यों धरिये मन धीर, सुनि अलिबचन भयावने॥

जे कच फूल फुलेल सँवारे ❋ निज कर हरि ग्रंथों निरवारे
कहि पठयो तिनको मन भावन ❋ भस्म सानि के जटा बनावन
रत्न जटित ताटंक सुहाये ❋ जिन कानन मोहन पहिराये
तिन को अब मुद्रा माटी के ❋ ल्याये हैं ऊधो गढ़ि नीके
भाल तिलक अंजन नकबेसर ❋ मृगमद मलयज कुंकुम केसर
उर कञ्चुकी मणिन के हारा ❋ सब तजि कहत लगावहु छारा
ज्यहि गर श्याम सुभग भुज मेली ❋ पठई तिहिं आँगी अरु सेली
पहिरे जात न चीर सुहावन ❋ ताहि भगौंहों कहत रहावन
जा मुख पान सुगंध सुहाये ❋ निज हाथन ब्रजराज खवाये
रस बिबाद बहु तान तरंगा ❋ गावत कहत रहत हरिसंगा
बदन बिलास हासरस भाख्यो ❋ हरिमुख अधरसुधारस चाख्यो
निजमुख मौन कौन बिधि कीजै ❋ ऊरध श्वास घूंटि किमि जीजै

दो० वे तो हरि अतिही कठिन, जानी तिनकी घात।
मधुप तुम्हैं नहिं चाहिये, कहत कठिन यों बात॥

सो॰ तब बजाय मृदु बैन, अधरातन बोली नहीं।
किये रास रस ऐन, अब कटुबचन सुनावहीं॥

मधुकर मधु माधो की बानी ❀ हम सब जिमि माखी लपटानी
उड़ि नहिं सकीं फँसी हैं तामें ❀ आवत शोच कहै अब कामें
जिमि अहारबश मीन बिचारे ❀ कंटक गिलत कठिन अनियारे
अटकत कुटिल हृदय दुख बाढ़ै ❀ बहुरि कौन बिधि तिनको काढ़ै
जैसे बधिक सुनाद सुनावै ❀ मृग मन मोहि समीप बुलावै
बहुरि करत धनुशर संधाना ❀ तुरतहि मारि हरत है प्राना
जिमि सनेह बल दीप प्रकाशै ❀ रजनी के तमको दुख नाशै
रूप लोभ नहिं शलभ दिखाई ❀ क्षण में तिन को देत जराई
जिमि ठग मदमोदक न खवावै ❀ पथिक जनन सों प्रीति जनावै
रस बिश्वास बढ़ावत भारी ❀ प्राण सहित अथरहित पिछारी
तिमि मृदु मुसकानि मनहिं चुराई ❀ खग जिमि हम ब्रजनाथ बझाई
पाछे अब करनी यह कीनी ❀ योग छुरी सब के गर दीनी

दो॰ हरि हमसों ऐसी करी, कपट प्रीति बिस्तार।
भई बिरह बिष बेलि ब्रज, रसकी ऊख उखार॥

सो॰ कहिये कहा बखान, जिनसे हित यह मति तिन्हैं।
हरि जो हमरे प्रान, हम हरिके भाये नहीं॥

यह सुनि कह्यो और इक ग्वाली ❀ कहत कहा मधुकर सों आली
उनहीं को संगी यह जोऊ ❀ चंचलचित्त श्याम तन दोऊ
वे मुरली धुनि जग मन मोहन ❀ इनकी गुंज सुमन दल जोहन
वे निशि अनत प्रात कहुँ आनैं ❀ ये बसि कमल अनत रुचि मानैं
वे द्वै चरण सुभग भुजचारी ❀ ये षट्पद दोउ बिपिनबिहारी
वे पटपीत मञ्जु तन काछे ❀ इन के पीत पक्ष दोउ आछे

वे माधो ये मधुप कहावत ❋ काहू भांति भेद नहिं आवत
वे ठाकुर ये सेवक उनके ❋ दोऊ मिले एकही गुनके
कहा प्रतीति कीजिये इनकी ❋ परी प्रकृति ऐसी है जिनकी
निरस जानि भाजत पलमाहीं ❋ दया धर्म इनके कछु नाहीं
मन दै सरबस प्रथम चुरावैं ❋ बहुरो ताके काम न आवैं
इन की प्रीति किये यों माई ❋ ज्यों भुसपर की भीत उठाई

दो० कह्यो एक तिय सुन सखी, कारे सब इकसार ।
इनसों प्रीति न कीजिये, कपटिन की चटसार ॥

सो० देखो करि अनुमान, कारे अहि कारे जलद ।
कबिजन करत बखान, भ्रमर काग कोयल कपट ॥

राखि पियारे जो अहि कारो ❋ पय पियाय अतिहित प्रतिपारो
कुल सुभावसों डसि भजि जाहीं ❋ यद्यपि तिन्हें लाभ कछु नाहीं
जलद सलिल बरषत चहुँ पाहीं ❋ भरत सकल सर सरिता माहीं
निशि दिन ताहि पपीहा ध्यावै ❋ भाँवरि दै दै प्रीति बढ़ावै
एक बूँद को त्यहि तरसावैं ❋ भ्रमर मालती सों मन लावैं
जब रसहीन होत वा माहीं ❋ निरमोही तजि जाहिं पराहीं
सुनियत कथा काग पिक केरी ❋ अण्डन सेव करावत हेरी
बड़े होत निजकुल उड़िजाहीं ❋ बैठत निज माता पितु पाहीं
ये सब कारे हरि पर वारे ❋ सबहिन में अतिही अनियारे
सबही उपमा अरु गुणयोगू ❋ न्याय देत पटतर कविलोगू
अलिकुल अलक कोकिला बानी ❋ भुज भुजंग तन जलद बखानी
समझी बात आज यह सारी ❋ खानि कपट की कुञ्जविहारी

दो० मृदुमुसकनि बिष डारिकै, गये भुजँगलौं भाग ।
नंद यशोदा यों तजी, ज्यों कोकिलसुत काग ॥

सो० गये प्रीति यों तोरि, जिमि अलिरस लै सुमनसों।
धनले भये कठोर, चातक सी हम रटत सब॥
ऊधो सुनो एक उपखानो ❀ बाजी ताँत राग पहिचानो
हरि आगे तुम से अधिकारी ❀ क्यों नहिं दुख पावैं ब्रजनारी
कहत सुनत लागत हौ ऐसे ❀ मीठो कहत गरल सों जैसे
पायो छोर कपट को तबहीं ❀ लिखि आयो निर्गुण पद जबहीं
योग तहां अधिकारहि पाये ❀ क्यों नहिं तूंबा तहां बुझाये
सुनि लीजे ऊधोजी हम सों ❀ राज काज चलिहै नहिं तुमसों
करिये पोष आपनी काया ❀ आये इतै करी बड़ि माया
जो तुम है हमरे हित आन्यो ❀ सो हम शिर चढ़ाय सुख मान्यो
सुनिकै सब ब्रजलोग अनंद्यो ❀ नर नारी परच्यो कर वंद्यो
अब सँभारि अपनो यह लीजै ❀ जिन तुम पठये तिनहीं दीजै
उनहिन में यह योग समैहै ❀ यहां न काहू पै निरवैहै
हम ब्रज बसत अहीर गँवारी ❀ योग सोग की नहिं अधिकारी

दो० अंध आरसी बहिर धुनि, रोगग्रसित तनु भोग।
ऊधो तिनको न्याव है, हमैं सिखावत योग॥

सो० हमैं योग जो योग, सोई योग मिलाइये।
कहे न जानै रोग, कहा कीजिये वैद्य सों॥

ऊधो जाउ भले तुम ओऊ ❀ अपने स्वारथ के सब कोऊ
निर्गुण ज्ञान कहां तुम पायो ❀ कौने या ब्रज तुम्हैं पठायो
और कह्यो संदेशो कोऊ ❀ कहि निवैरै अब सुनिये सोऊ
तब अक्रूर आय वह कीन्हों ❀ सगरे ब्रज को सुख हरिलीन्हों
तुम आये ऊधो यहि ठाटी ❀ अन्न छुड़ाय खवावत माटी
जो पै हती ज्ञान की गाथा ❀ तौ कत रास नचे ब्रजनाथ।

मन हरिलीन्हों बेणु बजाई ❋ आधी निशि सब नारि बुलाई
रस लीला बृंदाबन ठानी ❋ अब मथुरा है बैठे ज्ञानी
तब समता क्यों नहिं उर धारी ❋ मातुल मास्यो कंस पछारी
बूझि परे नीके सब कोई ❋ हती कछुक आशा सोइ खोई
पढ़े सबै एकै परिपाटी ❋ अधिक एक ते एक न घाटी
हम बावरी चली नहिं त्योंहीं ❋ ज्यों जग चलत आपनी गोंहीं

दो० मन की मनहीं में रही, करिये कहा बिचार।
हम गुहारि जिततें चहत, तिततें आई हार॥

सो० जानत है सब कोय, जैसी तुम हम सों करी।
हम साहिलीनी सोय, पावोगे अपनो कियो॥

ऊधो जो पूंछत हम तुम को ❋ जो हरि योग सिखावत हम को
तौ करि कृपा आप किन आवैं ❋ योग ज्ञान कहि प्रगट जनावैं
जो उपदेशी निकट न आवै ❋ तौ श्रोता किहिविधि मन लावै
अब लगि सुनी न काहू आनन ❋ मन्त्र देन लागे बिन कानन
जब लगि युक्ति न सिद्ध बतावै ❋ तब लगि साधक कैसे पावै
हम गोकुल वे मथुरा माहीं ❋ खेती होत सँदेशन नाहीं
जो पै करी श्याम यह माया ❋ करैं और तें इतनी दाया
दरशन प्रथम दिखावैं आई ❋ करहिं पवित्र चरण पखराई
योग जानि कै नगर को त्यागैं ❋ सघनकुंज बन मन अनुरागैं
आसन मौन नेम आचारा ❋ जप तप संयम व्रत व्यवहारा
योग अंग कहियत हैं जेते ❋ बनहीं में बनिआवैं तेते
करि प्रबोध कर माथ छुवावैं ❋ होहिं सिद्ध फल तौ सुख पावैं

दो० तब तो खेलत सौंह करि, राख्यो कछु न दुहाय।
अब यह योग मिल्यो कहां, ऊधो कहियो जाय॥

सो० हमको निर्गुण ज्ञान, जहँ स्वारथ तहँ सगुणहिं ।
लिखि पठयो निर्वान, चाटैं सहत लगाय के ॥
बोली और एक रिसमानी ❀ मधुकर समुझ कहत किन बानी
पर मधु पिये जात नहिं दीजै ❀ मुख देखे को न्याव न कीजै
बीचहिं परे सत्य सो भाखे ❀ राव रंक की शंक न राखे
सूझ न परत दिवस अरु राती ❀ बात कहत हो ठकुरसुहाती
ब्रजयुवतिन को योग सिखावत ❀ वृषभ जोति सुरभीन गनावत
रे कृतघ्न लंपट व्यभिचारी ❀ कीरति इहै आनि विस्तारी
हम जान्यो अलि है रस भोगी ❀ कत सीख्यो यह योग कुयोगी
जे भयभीत होहिं लखि माला ❀ ते क्यों छुवैं भयानक व्याला
क्यों शठ बकत छांड़ि लज्जा डर ❀ कहँ अबला कहँ वेश दिगम्बर
साच होय तो उत्तर दीजै ❀ कहा तोहिं कहि अपयश लीजै
भई बावरी देखियत तोहीं ❀ इन बातन डर लागत मोहीं
प्रथमहिं यत्न आपनो कीजै ❀ ता पाछे औरन सिख दीजै
दो० कत श्रम करि बकि बकि मरत, कौन सुनत तुव बात ।
बन कारो यों होत है, उठि किन ह्यां ते जात ॥
सो० देखि मूढ़ चितचाय, कहँ परमारथ कहँ बिरह ।
राजरोग कफ जाय, ताहि खवावत हो दही ॥
बोली और एक कोउ नारी ❀ ऊधो सुनिये बात हमारी
प्रथमहिं ब्रजकी कथा बिचारो ❀ पाछे योग सिद्ध बिस्तारो
जा कारण पठये हैं माधो ❀ सो विचार कछु जियमें साधो
केतिक बीच बिरह परमारथ ❀ देखो जियमें समुझि यथारथ
परम चतुर हरि के निजदासा ❀ रहत सदा संतन के पासा
जल बूड़त पुनि पुनि अकुलाई ❀ कहा फेन पकरत हो धाई

सुंदर श्याम कमलदल लोचन ❀ सबबिधि सुखद सकलदुखमोचन
ब्रज को जीवन नंददुलारो ❀ कैसे उरते जात बिसारो
योग मुक्ति किहि काज हमारे ❀ वाकी मुरली पर सब वारे
तुम निर्गुण की कीरति गाई ❀ करैं कहा सो बहुत बड़ाई
अति अगाध पैहैं नहिं पारा ❀ मन बुधि कर्म सबनके सारा
रूप रेख बपु बर्ण न जासों ❀ कैसे नेह निबाहै तासों

दो० बिनहीं तोय तरंग अरु, बिन चेतन चतुराय।
अबलों ब्रजमें नहिं हुती, मधुप करी तुम आय॥

सो० कहो बिबिध बिधि कोय, नहिं सुहात नँदनंदबिन।
अन्न क्षुधारत जोय, स्रक चंदन क्यों सुख लहै॥

लागी कहन और इक ग्वाली ❀ कित बेकाज बकतहै आली
कहिये त्यहि जो होय बिबेकी ❀ यह अलि निज बातनको टेकी
बकि यासों को मूड़ पचावै ❀ फटकै भुसी हाथ कह आवै
तजि रस गेह नेह हरि पीको ❀ सिखवत नीरस निर्गुण फीको
देखत प्रगट नयन कछु नाहीं ❀ ज्योति ज्योति खोजत तममाहीं
श्रवण सुनत जाकी मुरली धुन ❀ भूलि रहे शिवसे योगीजन
सो प्रभु भुज ग्रीवा पर डारी ❀ बन बन लाज छुड़ाय बिहारी
रास बिलास बिबिध उपजायो ❀ संग हमारे नाच दिखायो
लोक लाज कुलकान नशाई ❀ हम सब तिनके हाथ बिकाई
काटि सुहाग प्रेमको हेली ❀ बोवत योग जहर की बेली
चौपद होय ताहि समुझैये ❀ कौन भांति षट्पदहि सिखैये
लागै कौन कहे अब याके ❀ छाँछौ दूध बराबर जाके

दो० हम बिरहिनि बिरहाजरी, जारी और अनंग।
सुखतो तबहीं पाइये, जब नाचैं फिर संग॥

सो० छांड़ि जगत उपहास, दृग व्रत कीन्हों श्यामसों।
सोई हमैं सुपास, और युक्ति चाहैं नहीं॥

सुनरे मधुप कुटिल कुविचारी ❀ ये ब्रजलोग कृष्ण व्रतधारी
सुन्दर श्यामरूप रस साने ❀ श्रीगोपाल तजि और न जाने
जो तजि श्याम और को ध्यावैं ❀ व्यभिचारी ते भक्त कहावैं
विद्यमान तजि सुरसरि तीरा ❀ चाहत कूप खोद कै नीरा
सुनै कौन यह सीख तुम्हारी ❀ अति अनन्य मण्डली हमारी
योग मोट तुम शिर धरि आनी ❀ सो नहिं ब्रजवासिन मनमानी
इतनी दूर जाहु लै कासी ❀ चाहत मुक्ति तहां के वासी
हम कह करैं मुक्ति लै रूखी ❀ अबला श्याम संगकी भूखी
ओसन प्यास कौन विधि जाई ❀ जबलगि नीर न पिये अघाई
ऐसी बात कहौ अलि हमसों ❀ तजहु शोच मिलिहैं हरि तुमसों
हेत हमारे जो पगु धारे ❀ तो हित करि दुख हरो हमारे
करहु सो यत्न श्याम जिमि आवैं ❀ प्रगट देखि छवि हम सुख पावैं

दो० सांचो ज्ञान औ ध्यान अलि, सांचो योग उपाय।
हमको सांचो नन्दसुत, गर्ग कह्यो समुझाय॥

सो० बश कीन्ही मृदुहास, हम चेरी नँदनंद की।
नख शिख अंग विलास, तिनहीं देखे जीजिये॥

इतनेहीं सों काज हमारो ❀ मिलहि फेरि ब्रज नंददुलारो
और अनेक उपाय तिहारो ❀ राज करहु अलि हमहिंन प्यारो
तुम तौ मधुप प्रीतिरस जानो ❀ हम काजे कत होत अयानो
सब सुमननमें फिरि फिरि आवत ❀ क्यों कमलनमें आप बँधावत
जिहि बल काठ फोरि घर करहू ❀ क्यों न कमलदल टारत तबहू
रँगे श्याम रँग जे पहिलेसे ❀ चढ़त और रँग तिनपर कैसे

पारस परसि जो लोह सुहायो ❋ सो किमि बहुरि चुँबक लपटायो
सुनी जिनन मुरलीधुनि कानन ❋ सो किमि सुनत कींगरी तानन
बसे जासु उर सगुण कन्हाई ❋ कैसे निर्गुण तहां समाई
यह मन श्यामस्वरूप लुभानो ❋ कहा करैं लै योग बिरानो
सिंह सदा आमिष रुचि मानै ❋ तृण न भखै बरु तजै परानै
हरि तजि हमैं न और सुहाई ❋ कोटि भांति कोउ कहै बुझाई

दो० द्वै दृग रूप बिराट के, कहियत एक समान।
ताहूमें हित चंद्रमा, नहीं चकोरहि भान॥
सो० लोचन रूप अधीन, सगुण सलोने श्यामके।
क्यों सुख पावै मीन, जल बिन डारे दूध में॥

नहिं मानत ये नयन हमारे ❋ सुख न लहत बिन कान्ह निहारे
भये श्याम छबि जलके मीना ❋ मुरलीधुनि के मृग आधीना
अलि लोभी पंकज पद करके ❋ कोक कोकनद द्युति दिनकरके
बदन इन्दु के कुमुद चकोरा ❋ तन घन छबिके चातक मोरा
वहै रूप परगट जब देखैं ❋ जीवन सुफल तबहिं करि लेखैं
बिगरि परे मन मधुप हमारे ❋ ज्ञानबचन नहिं सुनत तुम्हारे
ललित अनंग रूप रस साने ❋ खरे चकित ताते जग जाने
श्वान पूंछलौं सम नहिं होई ❋ जो कोउ यत्न करै पचि कोई
सो मन गयो श्याम के साथा ❋ सुनै कौन अब निर्गुण गाथा
एकै मन एकै वह मूरति ❋ अटकौ ताहि न तजौ महूरति
जो होतो दूजो मन कोऊ ❋ तौ हम लै धरतीं तहँ सोऊ
ऊधो हरि हैं ईश हमारे ❋ ते अब कैसे जात बिसारे

दो० योग दीजिये लै तिन्हैं, जिनके मन दश बीस।
कित डारत निर्गुण इतैं, ऊधो ब्रजमें खीस॥

सो० गुण करमाहीं श्याम, की निर्बाहो निर्गुणहि।
किये जन्मके काम, क्यों तजिये नँदनन्द अब॥

कहत मधुप तुम बात सुहाई ❀ कहतहि सुगम करत कठिनाई
प्रथम अग्नि चन्दनसी जानी ❀ सती होन उमहै सुख मानी
ताको तपत और सिखराई ❀ कहै कौन पाछे पुनि आई
पैठत सुभट यथा रण जाई ❀ कुसुमलता सम खड्ग सुहाई
दिये अपनपौ शूर उदारा ❀ को अब करै तासु निरवारा
ये मनमोहन सों उरझाने ❀ दुख सु लाभ हानि नहिं जाने
प्रेम पंथ सूधो अति ऊधो ❀ मति निर्गुण कंटक लै रूधो
नेह न होइ पुरानो क्योंहीं ❀ सरित प्रवाह नयो नित ज्योंहीं
निरखहिं आनँद रूप छकी जल ❀ रवि प्रतीति नहिं मीन चढ़ै थल
बूड़त उमहि सिन्धु के माहीं ❀ एतउ नीर न पियत अघाहीं
दिन दिन बढ़त कमलदल कैसे ❀ हरि छबि दृगन लालसा तैसे
बसे गोपाल हृदय अंबुज अलि ❀ निकसत नाहिं सनेह रहे रलि

दो० योगकथा अब मत कहो, ऊधो बारहिं बार।
भजै आन नँदनन्द तजि, ताकी जननी छार॥

सो० यहै हमारे भाउ, अब कोऊ कछुवै कहो।
जैबो होय सुजाउ, रही प्रीति नँदलालकी॥

रहै प्राण तन प्रेमहि खोई ❀ कौन काज आवै पुनि सोई
बिना प्रेम शोभा नहिं पावै ❀ निशा गये जिमि शशि न सुहावै
बिना प्रेम जग खग बहुतेरे ❀ चातक यश गावत सब टेरे
प्रेमहिं सहित मीन की करणी ❀ नयन अछत देखहु जग बरणी
हम तें प्रेम जात नहिं दीन्हो ❀ दुहूंभांति हमतो यश लीन्हो
मिलैं श्यामतो अधिक सुहायो ❀ नातर सकल जगत यश गायो

कहँ हम या गोकुल की ग्वारी ❋ बर्णहीन घट जाति हमारी
कहँ वे श्रीकमला के नाथा ❋ बैठे पांति हमारे साथा
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अतीता ❋ सो ब्रज भये हमारे मीता
तिन्हैं संग लै रासबिलासी ❋ मुक्ति इतै पर काकी दासी
यह सुनि बोलिउठी इक आनै ❋ मेरो बुरो न कोऊ मानै
रस की बात रसिकही जानै ❋ निरस कहा रसकी पहिचानै

दो० दादुर कमलन ढिग बसत, जन्म मरण पहिचान।
अलि अनुरागी जानिकै, आप बँधावत प्रान॥

सो० जानै कहा मिठास, गूंगो बात सवाद को।
मानहुँ काट्यो घास, इनसों कहिये प्रेमरस॥

धनि धनि ऊधो तुम बड़ भागी ❋ हरिसों हित नहिं मन अनुरागी
पुरइन बसत यथा जलमाहीं ❋ जलको दाग लग्यो कहुँ नाहीं
गागर नेह नीर में जैसे ❋ अपरस रहत न भीजत तैसे
पैरत नदी बूँद नहिं लागी ❋ नेक रूप सों दृष्टि न पागी
हम सब ब्रजकी नारि अयानी ❋ ज्यों गुड़ सों चींटी लपटानी
अब कासों वह लगन बखानै ❋ लागे बिन ऊधो को जानै
हृदय दहै नित शोचत रहिये ❋ पशुबेदन ज्यों मन मन सहिये
सब तें परि लागन की हारी ❋ यत्न रहित दुख सुखतें न्यारी
मंत्र यंत्र उपचार न पावैं ❋ बेद कहाँ लगि ताहि बतावैं
घायल पीर जानिहै सोई ❋ लाग्यो घाव जिसी के होई
प्रेम न रुकत हमारे रूते ❋ गज कहुँ बँधत कमल के सूते
कैसे बिरह समुद्र सुखाई ❋ योग अग्नि की तनक लुकाई

दो० यद्यपि समुझाये बहुत, हम करि मनहिं कठोर।
तदपि न कबहूं भूलई, ऊधौ नन्दकिशोर॥

सो० क्यों सुख पावैं प्रान, पलक लगत तब सहत नहिं।
लागे बर्ष विहान, अब बिन देखे श्याम के॥
तब षट मास रास के माहीं ❋ एक निमिष सम जाने नाहीं
अब औरै गति बिना कन्हाई ❋ एक एक पल कलप बिहाई
तब बन बन हरि संग बिहारी ❋ अब ब्रज में यह दशा हमारी
ज्यों देवी उजारि पुर माहीं ❋ को पूजै कोउ मानत नाहीं
कहत और यौवन अब ऐसो ❋ चित्र अँधेरे घर को जैसो
तब शशि अतिसीरो अब तातो ❋ भयो सकल सुख करि तन हातो
कत करि प्रीति गये मन भावन ❋ जासों हम लागीं दुख पावन
फिरि फिरि यहै समुझि पछिताहीं ❋ कह्यो हतो आवन हम पाहीं
याही आश प्राण तनमा हैं ❋ बारिक बहुरि मिल्योही चाहैं
ऊधो हृदय कठोर हमारे ❋ फटे न बिछुरत नन्ददुलारे
हम तें भली जलचरी होई ❋ अपनो नेह निबाहत जोई
जो हम प्रीति रीति नहिं जानी ❋ तौ ब्रजनाथ तजी दुख मानी
दो० कहँ लगि कहिये आपनी, ऊधो तुमसों चूक।
हम ब्रजवास बसीं मनहुँ, सबै दाहिने शूक॥
सो० ऊधो कह्यो न जाय, मोहन मदनगोपाल सों।
नयनन देखो आय, एक बार ब्रज की दशा॥
बोली और एक ब्रजबाला ❋ ऊधो भली करी गोपाला
अब ब्रज कबहूं आवैं नाईं ❋ मथुराहि रहे सदा सुखदाई
इहां चली अब उलटी चाली ❋ देखत दुख एहैं बनमाली
तपत इन्दु सूरज की भांती ❋ चन्दन पवन सेज सब ताती
भूषण बसन अनल सम दागैं ❋ गृह बन कुंज भयानक लागैं
जित तित मार द्रुमन की डारन ❋ धनु शर लिये करत है मारन

हम तौ न्याय सहैं दुख एतो ❋ ब्रजबासिनी ग्वाल जड़ तेतो
वे प्रभु भोग सँयोग भुवाला ❋ क्यों सहि हैं कोमल तन ज्वाला
ऊधो कह्यो सँदेश सिधारो ❋ जान्यो सब परपंच तिहारो
बातन कहा हमैं भरमावत ❋ जलमथि सुन्यो न माखन आवत
सगुण निकट दर्शत है जिनको ❋ निर्गुण ओट बतावत तिनको
जोपै निज तुम यहै बखानो ❋ प्रभु पूरण सब में सम जानो

दो० तौ तुम कापै करत हौ, ऊधो आवागौन।
को नेरे को दूर है, वहां कौन ह्यां कौन॥

सो० खोज्यहु पावत नाहिं, योगी योग समुद्र में।
इहां बँधावत बाहिं, सो यशुदा के प्रेमबश॥

हम गुवाल गोकुल के बासी ❋ गोप नाम गोपाल उपासी
राजा नन्द यशोदा रानी ❋ यमुना नदी परम सुखदानी
गिरिवरधारी मित्र हमारे ❋ बृन्दाबन मिलि संग बिहारे
अष्टसिद्धि नवनिधि सब दासी ❋ इहां न योग बिराग उदासी
वहै प्रेमरस की सब भूखी ❋ कीजै कहा मुक्ति लै रूखी
निर्गुण कहा प्रेमरस जाने ❋ उपदेशहु जे लोग सयाने
हम ऐसहि अपनी रुचि माने ❋ रहिहैं बिरह बायु बौराने
निशि दिन सपने सोवत जागे ❋ वहै श्याम छविसों दृग पागे
बाल चरित्र किशोरी लीला ❋ सुधासमुद्र सकल सुखशीला
सुमिरि सुमिरि सोई सुख ग्रामा ❋ रटि रटि मरिहैं माधव नामा
बिरहा मधुप प्रेम को करई ❋ ज्यों पट पुट तरंग गहि धरई
ज्यों घट प्रथम अनल तनतावै ❋ बहुरि उमहि रसभरि सुख पावै

दो० सम्मुख शर सहि शूर जब, रबिरथ बेधत जाय।
प्रथम बीजअंकुरत महि, पुनि फल फरत अघाय॥

सो॰ को दुख सुखहि ड्यराय, कृष्ण प्रेमके पंथ चलि।
और न कछू उपाय, ऊधो मीनन नीर विन॥
बोली एक सखी सुनि लीजै ❋ अपने काज कहा नहिं कीजै
दिना चार यहहू सब करिये ❋ जो हरि मिलें योगहू धरिये
जटा बनाय भस्म तन माँजें ❋ मूँद रहें नयनन बिन आँजें
सिंगी दण्ड लेहिं मृगछाला ❋ पहिरें कंथा सेली माला
धरि धीरज सनमुख शर सहिये ❋ भाजे आजउ पार न लहिये
विरह ज्ञान बिच बिनहीं काजै ❋ मरियत हैं यह दुसह दुराजै
एक सखी ऐसे कह दीन्हो ❋ ऊधो तुम जु कह्यो सब कीन्हो
नयन मूँदि के ध्यान लगायो ❋ इत उत मनको बहुत चलायो
उरझ रह्यो नँदलाल प्रेमबस ❋ नेक न चलत गयो गाढ़े फस
जो हरि मिलत जानिहू परते ❋ तौ लै योग शीशपर धरते
पहिले देहु तिनहिं फिरि जाई ❋ जिन पठये तुम इतहि सिखाई
लेहिं न वेऊ जान हमारे ❋ देखियत माथे पर्‍यो तुम्हारे
दो॰ भूले योगी योग जिहिं, तुमसे कियो बखान।
जान्यो गयो न पंचमुख, ब्रह्म रंध्र तजि प्रान॥
सो॰ हमउर जाको ध्यान, हमहिं दिखावहु ज्योतिसो।
निपटहि छूछो ज्ञान, ऊधो कहा सुनावहीं॥
ऊधो जबते श्याम निहारे ❋ तब तें योगी नयन हमारे
शिखा सीख गुरुजन की टारी ❋ धर्‍यो जनेऊ लाज उतारी
पलक वसन घूँघुट गृह त्यागे ❋ दिशा दिगम्बर मन अनुरागे
सजत समाधि रूप टक लाये ❋ भये सिद्ध नहिं डिगत डिगाये
ताके बीच विघ्न के कर्त्ता ❋ पचि पचि रहे मातु पितु भर्त्ता
अब ये और योग नहिं जाने ❋ वही श्यामछवि साधु भुलाने

भये कृष्णमय नयन हमारे ❋ नहीं कृष्ण हमते कहुँ न्यारे
हमसों कहत कौन की बाते ❋ गयो कौन तजि हमको घांते
मथुरा जाय रजक किन मास्यो ❋ धनुष तोरि किन द्विरद पछास्यो
किन मल्लन मथि कंस बहायो ❋ उग्रसेन किन बन्दि छुड़ायो
को बसुदेव देवकी जाये ❋ तुम किनके पठये ब्रज आये
कुण्डल मुकुट गुञ्ज उर राजै ❋ गोकुल यशुदा नन्द बिराजै

दो० को पूरण को अलखगति, को गुण रहित अपार।
करत वृथा बकबाद कत, यहि ब्रज नन्दकुमार॥

सो० जात चरावन धेनु, दिन उठि ग्वालन संग मिलि।
मधुर बजावत बेनु, आवत संध्याके समय॥

जिन ऊधो मथुरा तब देख्यो ❋ ब्रजबसि जन्म सुफल करि लेख्यो
लेहौ कहा जाय प्रभुतामें ❋ परिहौ जाय राज्य बिपदामें
निरख्यो गोकुल बाल कन्हाई ❋ घर घर माखन खात चुराई
जन्म कर्म गुण गावो नीके ❋ परम मधुर सुखदायक जीके
नन्दराय उत्सव किमि कीन्हो ❋ कैसे दान द्विजनको दीन्हो
कैसे गोपीजन सुनि धाई ❋ कैसे पट भूषण पहिराई
कैसे गोप ग्वाल सब आये ❋ नृत्यत भेष बिचित्र बनाये
कैसे दधिकी कीच मचाई ❋ ब्रज सब भई अनंद बधाई
बाल बिनोद कौन बिधि कीन्हो ❋ कैसे गोबर्द्धन कर लीन्हो
कैसे दधिको दान चुकायो ❋ शरद रास सुख किन उपजायो
यह रस प्रेमकथा चितलावो ❋ अपनी नीरस कथा बहावो
निगम नेति निर्गुण को ध्यावै ❋ क्यों नहिं प्रगट दरश चित लावै

दो० भावतहै जो कृष्ण को, योग सो हमसों देखि।
ऊधो सबतन खेह करि, सुमति होय करि पेखि॥

सो० सब अँग करिकै कान, बैठी मनहिं बटोरिकै।
तजहु ज्ञान अभिमान, तौ यह अर्थ सुनावहीं॥
नहीं जटा नहिं भस्म लगावैं ❀ रूँधैं श्वास न शृंग वजावैं
नहीं बेद नहिं पढ़हिं पुराना ❀ शम दम नेम न संयम ध्याना
हम श्रीगोकुलचंद अराध्यो ❀ प्रेमयोग तप तिनसों साध्यो
मन बच कर्म और नहिं जानैं ❀ लोक वेद दुख सुख भ्रम मानैं
मानपमान निंद कुल करसी ❀ अग्निआंच गुरु जनु बच सरसी
हनति ताप चहुँदिशि तन देखो ❀ पियत धूम उपहास विशेखो
करि सुप्रेम बन्दन जगवन्दन ❀ कर्म धर्म कामना निकन्दन
हमजु समाधि प्रीति वानिक हरि ❀ अंग माधुरी हृदय रही धरि
निरखत रहत निमेष न त्यागत ❀ यह अनुराग योग नित जागत
सगुण रूप रंग रस रागे ❀ भृकुटि नैन नैनन लगि लागे
हँसन प्रकाश सुमुख कुंडलद्युति ❀ शशि अरु सूर देखिये उदद्युति
मुरली अधर मधुर स्वर गाजे ❀ शब्द अनाद स्वई धुनि बाजे
दो० बरषत रस रुचि मन अचै, रह्यो परम सच मान।
अति अगाध सुतसंग को, पद आनन्द समान॥
सो० मन्त्र दियो रति ऐन, भजन ज्ञान हरिको हमैं।
गुरू करैं अब कौन, कौन सुनै फीको मतो॥
ऊधो ब्रजकी रीति निहारी ❀ भये विवश निजनेम विसारी
लाग्यो कहन धन्य ब्रजबाला ❀ जिनके सरवस मदनगोपाला
धन्य धन्य यह प्रेम तुम्हारो ❀ भक्ति सिखाय मोहिं निस्तारो
तुम मम गुरु मैं दास तुम्हारो ❀ धन्य कृष्णपद दृढ़ व्रत धारो
मैं जड़ कीन्हो और उपाई ❀ अब तुम दरश भक्ति निज पाई
ऊधो आयो योग सिखावन ❀ सीखे प्रेम भक्ति अति पावन

भये मगन रस प्रेम बिशाला ❀ लागे गावन गुण गोपाला
लोटत कबहुँ कुंजमें जाई ❀ कबहूं बिटपन भेंटत धाई
कबहूं ब्रजरज शीश चढ़ावैं ❀ कबहूं गोपिन पद शिर नावैं
पुनि पुनि कहत धन्य ब्रजनारी ❀ धन्य ग्वाल गैया बनचारी
धन्य भूमि यह सुखद सुहावन ❀ धन्य धाम बृन्दाबन पावन
ऐसे प्रेम मगन मन फल्यो ❀ को हौं कित आयों सुधि भूल्यो

दो० ऊधो मन आनंद अति, लखिके प्रेम बिलास।
आयो हौं दिन दोयको, बीति गये षटमास॥

सो० जब उपज्यो उर शोच, बचन कृष्ण के सुरति करि।
मन में भयो सकोच, बोल्यो हो प्रभु बेग म्वहिं॥

तब उपंगसुत रथहि पलान्यो ❀ मथुरा चलिबे को अतुरान्यो
ऊधो जात गोपिकन जानी ❀ आईं धाय सकल अकुलानी
तब ऊधो सबकों शिर नाई ❀ हाथ जोरिकै बिनय सुनाई
अब म्वहिं देबि अनुग्रह कीजे ❀ जाउँ कृष्ण पै आयसु दीजे
मैं सेवक जैसो उनकेरो ❀ त्यों जानिये आपनो चेरो
कह्यो जो मैं कछु तुमसों आई ❀ कृष्ण कहे मैं करी ढिठाई
सो अपराध क्षमा अब कीजे ❀ है प्रसन्न यह आशिष दीजे
जासों कृष्ण करैं म्वहिं दाया ❀ रहै प्रीति तुमचरण अमाया
करों बड़ाई कहा तुम्हारी ❀ ऐसी बिमल न बुद्धि हमारी
कृष्ण सदा तुम्हरो यश गावैं ❀ जाको अंत वेद नहिं पावैं
कबहुँक सुरत करत मम रहियो ❀ जानि आपनो जन हित गहियो
सुनि ऊधो की निर्मल बानी ❀ भई बिवश ब्रजतिय सुख मानी

दो० क्यों नहिं ऊधोजी कहो, ऐसे बचन बिचारि।
अन्त बड़े सब भांति तुम, हम निदान जड़ ग्वारि॥

सो॰ होय न शील समान, लघु दीरघ ताते भयो।
भृगु कीन्हों अपमान, श्रीपति करि भूषण लियो॥

कहां गरल से बचन हमारे ❁ कहँ अति शीतल मृदुल तुम्हारे
तुम हित कह्यो हमैं सुखमानी ❁ तरन उपाय वेद विधि वानी
हम गँवारि उलटी सब बूझी ❁ कही कटुक तुमसों जो सूझी
लोक बेद छोड़यो हम जैसो ❁ ताको फल भुगततहैं तैसो
कहा करैं मन बहु समुझावैं ❁ श्याम दरश बिन सुख नाहिं पावैं
दुर्लभ दरश तुम्हारो हमकों ❁ कहिये जान कौनविधि तुमकों
करिकै कृपा कीजियो सोई ❁ जैसे दरश श्याम को होई
देखन हौं या तनको दहिबो ❁ समय पाय हरिआगे कहिबो
घोष बसत की चूक हमारी ❁ मन नहिं धरैं लाल गिरिधारी
जानि हमैं अति दीन दुखारी ❁ करहिं कृपा मन गुणहि निहारी
आवन अवधि कही हौ जोई ❁ धरि हैं सुरति बचन की सोई
बहुत कहा कहिये ब्रजराजहि ❁ करि हैं बांह गहे की लाजहि

दो॰ प्रभु दीनन पति दीनहित, यही हमारे आस।
कबहुँक दरश दिखायकै, हरि हैं लोचन प्यास॥

सो॰ ऐसे कहि ब्रजबाम, भईं बिरहसागर मगन।
ऊधो करि परणाम, आये यशुमति नन्द पै॥

मांगी बिदा जोरि कर दोऊ ❁ तुम सम धन्य और नहिं कोऊ
राम कृष्ण करि सुत जिन पाये ❁ बाल भाव करि गोद खिलाये
धनि गोकुल धनि गोकुलवासी ❁ किये प्रेमबश जिन अबिनाशी
कृपा करी म्वहिं कृष्ण पठायो ❁ जाते दरश सबन को पायो
अब तुम मोको देहु निदेशू ❁ जाय कृष्ण सों कहौं सँदेशू
सुनि सप्रीति ऊधो की बाता ❁ नंदबबा अरु यशुमति माता

उमग्यो प्रेम नयन जल बाढ़े ❋ भये जोरि कर आगे ठाढ़े
उर बर श्याम बिरह की पीरा ❋ कहत सँदेश बहत दृग नीरा
ऊधो हरि सों कहियो जाई ❋ यशुदा की आशीश सुनाई
कमल नयन सुन्दर सुखदाई ❋ कोटि युगन जीवहु दोउ भाई
कहियो बहुरि इती समुझाई ❋ तुम बिन दुखित यशोमति माई
इतनी दया मात पै कीजै ❋ एकबार दरशन फिर दीजै

दो० नंद दोहनी भरि दई, कह्यो नयन भरि नीर।
वा धौरी को दूध यह, भावत हौ बलबीर॥
सो० दई यशोमति माय, मुरली ललित गोपालकी।
ऊधो दीजो जाय, प्यारी ही अति लालकी॥

अथ ऊधोजीकी बिदा लीला॥

ऊधो लै माथे पर लीनी ❋ लखि शुभ प्रीति दण्डवत कीनी
गयो योग की नाव बुड़ाई ❋ ह्वै गयो आय गोप ब्रज आई
ऊधो पग पद शीश नवायो ❋ प्रभु सादर ह्वै कण्ठ लगायो
कहिये सखा कुशल सों आये ❋ ब्रजमें जाय बहुत दिन लाये
नन्दबबा अरु यशुमति माई ❋ कहौ कौन बिधि देखे जाई
बसत प्राण मोहीं में जिनके ❋ कैसे दिन बीतत हैं तिनके
कहा दशा ब्रज गोपिन केरी ❋ जिनके प्रीति निरन्तर मेरी
ऊधो समुझत ब्रज की बाता ❋ भये प्रेमबश पुलकित गाता
भूल्यो यदुपति नाम बड़ाई ❋ कह्यो सुनौ गोपाल गुसांई
कहौं कहा प्रभु तुम्हैं सुनाई ❋ ब्रजकी रीति कही नहिं जाई
कृपा करी म्वहिं तहां पठायो ❋ ब्रजबासिन को दरश दिखायो
ता दिन गयो तुम्हैं शिर नाई ❋ पहुँच्यों साँझ गोकुलहि जाई

दो० दूरहि ते लखि रथध्वजा, अरु पटपीत रसाल।
जानि तुम्हें आवत हरषि, धाये गोपी ग्वाल॥
सो० रथपर मोहिं निहार, रहे ठगेसे थकि सबै।
चली दृगन भरिधार, परेमुरछिब्याकुल धरणि॥
भये बिकल सब आशा टूटे ❋ बिरह घात सुरझे फिर फूटे
जब तुम्हरो पठयो म्वहिं जान्यो ❋ लै नँद सद सदनहिं सनमान्यो
तुम बिन यशुमति परम दुखारी ❋ बूझी कुशल सराम तुम्हारी
तृषित चातकी लौं अकुलानी ❋ कृष्ण कृष्ण लागी जकबानी
बारहि बार यहै पछिताहीं ❋ प्रभु प्रभाव हम जान्यो नाहीं
बांधे ऊखल तनक दही को ❋ अब कसकत कसकनि सो हीको
ब्रज अब शून्य बिना मनमोहन ❋ परम अभागी गई न गोहन
ठाढ़ी रहीं ठगोरी लाई ❋ बिरध बयस तजि गये कन्हाई
दशरथ प्राण तजे सुत लागी ❋ मैं देखतही रही अभागी
अब जनु ऐसेही मरि जैहौं ❋ बहुरि न श्यामहिं कनियां लैहौं
यों तुम्हरे हित यशुमति माता ❋ अतिही दीन दुखित बिलखाता
नन्दहु सुमिरत तुम गुणग्रामा ❋ बीती निशा चारहू यामा
दो० यद्यपि मैं बोधे बहुत, तुम बिन कछु न स्वहात।
तिनकी दशा बिलोकि म्वहिं, युगसम बीती रात॥
सो० नन्द यशोदहि पाय, गयो प्रात वृषभान पुर।
सुनि सब आईं धाय, धामकामतजि बाम तहँ॥
मोहिं तुम्हारो निजजन जानी ❋ सनमान्यो सबही सुख मानी
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारे ❋ भईं प्रेमबश सुरति सम्हारे
शिथिल अंग भरि आये नैना ❋ पूंछी कुशल सु गदगद बैना
जब मैं कह्यों सँदेश तुम्हारो ❋ सुनतहि आयो सवन तमारो

बीती घरिक धीर उर आन्यो ❁ मेरो कह्यो सांच नहिं मान्यो
दूषण सब कुबजा को दीन्हो ❁ कछुक परेखो तुमसों कीन्हो
तिनकी बात न जात बखानी ❁ प्रेम पन्थ वे सकल सयानी
वह रसरीति देख उन केरी ❁ कटुक कथा लागी म्वहिं फेरी
यद्यपि मैं बहुबिधि समुझाई ❁ ग्रन्थयुक्ति सब कथा सुनाई
कहिबे में न कछू शक राख्यो ❁ भयो पवन ज्यों भुसमें भाख्यो
ज्ञानपन्थ जो श्रीमुख बानी ❁ सेवत तिनकों भई कहानी
कैइक कही बनाइ अनेका ❁ उनके दृढ़ व्रत पातिव्रत एका

दो० गही एकही गहन उन, मेटि बेदबिधि नीति।
गोपभेष भजि सांवरे, रहीं बिश्वभरि जीति॥
सो० नहिं सीखैं सिख आन, जो बिधि जाहि सिखावहीं।
तुमहूँ बड़े सुजान, उहां जाहु तो जानहू॥

क्षमा करो आयसु जो पाऊं ❁ तो अपनी सब बिपति सुनाऊं
योगकथा कहि अबलन माहीं ❁ होवै इतो दुःख क्यों नाहीं
मैं निर्गुण गुण एक बखानो ❁ सोऊ पूरो कहि नहिं जानो
वे सब उमगे बारिधि ज्योंहीं ❁ जामें थाह न पाऊं क्योंहीं
कह्यों एक मैं पहर इक माहीं ❁ वे कोटिक क्षणमें कहिजाहीं
कौन कौन को उत्तर आवै ❁ सुनत सबै उनहीं के भावै
प्रेम प्रीति उनकी लखि बांकी ❁ धरी रही सब बात यहांकी
रह्यो चकित जिमि मनकी ऊलै ❁ जैसे रहत चौकरी भूलै
देखि परत पटिया मो शीशा ❁ सिखवों काहि योग जगदीशा
वे षटवेत्ता सकल सुभाऊं ❁ मैं शठ बारह खड़ी पढ़ाऊं
अबलन बचन सुनतही मेरे ❁ भई अग्नि ज्यों घृत के गेरे
बहुत भांति करि मैं सब जांची ❁ एकै अंग न कोऊ कांची

दो० सगुण प्रेम दृढ़ उन गह्यो, यथा पपीहा पैद।
जानि लेहु प्रभु तुम यहां, कहा निरोगहि बैद॥
सो० तिन्हैं निरन्तर ध्यान, श्याम राम अंबुजनयन।
लागत फीको ज्ञान, अविलोकत उनको भजन॥

मैं देख्यों षटमास खोज कर ❋ एकै रीति सबै ब्रज घर घर
ज्यों कुरु खेत दिये बाढ़त धन ❋ त्यों अधिकात प्रेम नित तुमतन
प्रगट तुम्हारे गुण चित दीन्हे ❋ देह गेह अर्पण सब कीन्हे
कोऊ कहत गये गोचारन ❋ कोउ कह गये अघासुर मारन
कोऊ कहत इन्द्र जल जाई ❋ गोवर्द्धन कर लियो कन्हाई
कोऊ कहत यमुन सुनि काली ❋ नाथन गये ताहि बनमाली
घर घर दुसह कहत कोउ बाला ❋ कोउ कह वन खेलत नँदलाला
कोऊ कहत कुटिल लम्पट हरि ❋ बसे जाय री धौं काके घरि
एक कहत वन बेणु बजावैं ❋ चलो सुनत यों कहि उठि धावैं
ऐसी लीला प्रगट बखानैं ❋ मेरो कह्यो न कोऊ मानैं
हरि मानी निजमति घटमानी ❋ सुनि लीन्हीं उनकी मैं बानी
प्रीतिरीति लखि तहां डुलान्यो ❋ नाथ तुम्हारी सुरति भुलान्यो

दो० तुमसों आवन कहिगयो, बेगहि ब्रजतें नाथ।
उन लखि उनसों ह्वैलग्यो, गावन उनके साथ॥
सो० बीत गये षट मास, समुझि परी आयो कहा।
तब उपज्यो जियत्रास, भाज चलो दै आन कहि॥

बहुरि कहा मोको सुख वैसो ❋ रस लीला विनोद ब्रज कैसो
कहत न बनै देखतहि भावै ❋ यह सुख बड़भागी स्वइ पावै
बस्यो न पांचो दिन उनमाहीं ❋ तासु जन्म जगमाहिं वृथाहीं
नहिं श्रुति शेष ब्रह्म सुख पायो ❋ जो रस ब्रह्म गोपि मिलि गायो

निरखत यदपि इहां यह मूरत * तदपि जाय उतही मन पूरत
बरही मुकुट गुञ्ज की माला * मुख मुरली धुनि भेष बिशाला
आगे धेनु रेणु मण्डित तन * तिरछी चितवन चारु हरण मन
गोपी ग्वालनसों हरिबोलत * खेलत खात हँसत ब्रज डोलत
तब वह सुख समुझत मन भावै * इत यह लखि कछु कहत न आवै
तुम्हरी अकथकथा तुम जानो * मैं कह समुझौं मूढ़ अयानो
हिय में मोहिं बहुत यह शालै * तुमतौ प्रभु करुणाके आलै
होत कठोर कठिन मन काहे * बनत कौनबिधि बिना निबाहे

दो० निगम कहत बश भक्तके, पूरण सब सुखसाज।
करि सुदृष्टि ब्रज पेखिये, गहो बिरह की लाज॥

सो० अतिहि दुखित तन क्षीन, ब्रजबासी तुमबिरहबश।
तुम तन धन मन लीन, रटत चातकी लों सबै॥

कहौं कहा गति प्रभु राधा की * जैसी व्यथा बिरह बाधा की
भूषण बिन अति क्षीण शरीरा * बसन मलीन स्रवत दृगनीरा
सुधि बुधि कछू देह की नाहीं * रहत बावरी ज्यों धुप माहीं
कबहुँक कृष्ण कृष्ण रटलावै * कबहुँक नाम आपनो गावै
बिवादिशि अग्निकाठ किमि जैसे * सहत बिरहदुख दुहुँदिशि तैसे
लहत न कोहू शीतलताई * कबहूं रहत मौन शिर नाई
यह जन देखि देखि दुख पावैं * नहिं कछु सुनत कोटि समुझावैं
सूखी जिमि नालिनी बिन पानी * जुगवत यतन सखी सयानी
तृणके अग्र ओसकण जैसे * आशा अवधि प्राण तन तैसे
अचरज मोहिं बड़ो यह आवै * प्रभु तुमको कैसे यह भावै
करुणामय प्रभु अन्तर्यामी * भक्तनहित तन धारौ स्वामी
बेगि कृपाकरि दर्शन दीजै * ब्रजजन मरत ज्याय सब लीजै

दो० यह मुरली दै बिलखिकै, कह्यो यशोमति माय।
एकबार हित नन्दके, दरश दिखावहिं आय॥
सो० जिन गैयन को श्याम, आप चराई हेत करि।
बहुरि न आईं धाम, बिडरी कुञ्जन में फिरत॥
सुनिकै प्रभु ऊधो के बैना ❁ उमँगे प्रेम भरे दोउ नैना
ब्रजजन प्रीति आय उरशाली ❁ भये बिबश जन प्रणप्रतिपाली
लै उठाय मुरली उर लाई ❁ धरि ब्रज ध्यान रहे अरगाई
सहज स्वभाव कृपालहि ऐसे ❁ होत तुरत जैसन को तैसे
पुनि हा ब्रज कहि छांड़ि उसासू ❁ पोंछि पीतपट जलसों आंसू
ऊधो सों यों बचन सुनाये ❁ भले सखा शिष दै ब्रज आये
मन में यों प्रभु कियो बिचारा ❁ ब्रज भक्तन ममरूप अधारा
मेरे मुक्ति बड़ी निधि सोई ❁ सो वे नहीं आदरत कोई
ताते जो जनके मन भावै ❁ सोई मोहिं करत बनि आवै
भक्ताधीन सो पूर्ण हमारे ❁ ब्रजबासी मोको अति प्यारे
सदा बसत ताते ब्रजमाहीं ❁ इनसम मोहिं और हितु नाहीं
सब समरथ प्रभु सब गुणनागर ❁ ब्रजबासी जनके सुखसागर
दो० मनकरि हरि ब्रजमें रहे, मिलि ब्रजजनमन साथ।
तनकहि देवन काज हित, भये द्वारका नाथ॥
सो० सदा बसत ब्रज श्याम, नटवर बपु मुरली धरे।
ब्रजजन पूरणकाम, कोटिकाम लावण्यनिधि॥
बसत सदा ब्रज कुँवरकन्हाई ❁ ब्रजबासी जनके सुखदाई
कृष्ण प्रेम मूरति ब्रजनारी ❁ कबहूं नहीं कृष्ण ते न्यारी
नित्य नवल नित बनहिं बिहारा ❁ ब्रजबिलास नित नवल उदारा
नित्य धाम बृन्दाबन पावन ❁ नित्य रासरस परम सुहावन

शिव सनकादि शेष ज्यहि ध्यावैं ❋ सुर नर मुनि सब ध्यान लगावैं
ब्रज गोपिन की महत बड़ाई ❋ एक समय ब्रह्मासन गाई
भृगु नारद आदिक जे भक्ता ❋ पूंछत भये बिनय संयुक्ता
तिनसों बिधि यहि भांति बखानो ❋ बेदऋचा सब ब्रजतिय जानो
इन सम सत्य कही तुम पाहीं ❋ मो शिव शेष लक्षमी नाहीं
नहीं कृष्ण ते यकक्षण न्यारी ❋ इनते और न कोउ अधिकारी
इनके भाव कृष्ण जो ध्यावै ❋ प्रीति रीति दृढ़ करि मनलावै
नारि पुरुष कोऊ किन होई ❋ बेद ऋचा गति पावै सोई

दो॰ परसे इनकी चरणरज, बृन्दावनमहि माहिं।
सोऊ गति इनकी लहै, यामें संशय नाहिं॥

सो॰ यों बिधि कही बुझाय, महिमा ब्रजगोपीनकी।
व्यास कही सो गाय, पावन बृहद पुराणमें॥

ताते भृगु आदिक नारदमुनि ❋ इन्द्रादिक सुर शिव ब्रह्मा पुनि
अरु हरिभक्त जगत जे अहहीं ❋ बृन्दाबन रज बाञ्छित रहहीं
ब्रजरज अति दुर्लभ श्रुति गावैं ❋ बड़भागी जन तेई पावैं
चित धरि सोई ब्रजरस रासा ❋ ब्रजबिलास गायो ब्रजदासा
कृष्ण चरित ब्रजबन निकुञ्जको ❋ सार सकल सुख सुकृत पुञ्जको
सार ज्ञान बिज्ञान ध्यानको ❋ बेद शास्त्र औ स्मृति पुरानको
सार बहुरि इतिहास भजनको ❋ योग जाप अरु यज्ञ जननको
सार अमित मुनि सन्त मतनको ❋ हरिपद पङ्कज प्रेम यतनको
सार जन्म अरु सुगति मुक्तिको ❋ परमानन्दरु बिमल भक्तिको
सार सकल रसरस काईको ❋ परम मधुर सुन्दरताईको
सार सार को परम सुहायो ❋ ब्रजबिलास भक्तन मन भायो
सहित स्वभाव प्रीति जे गैहैं ❋ ते जन गति गोपिन की पैहैं

छं० यह ब्रजबिलास हुलास सों नरनारि सुनि जे गाय हैं ।
सीखैं सिखावैं पढ़ैं रुचिकर प्रेममन उपजाय हैं ॥
धरि भावरमता कृष्णसों उर कमलपद चितलाय हैं ।
हरि राधिका परसादते ब्रजगोपिकागति पाय हैं ॥
पूरणसकल मनकाम सब सुख धाम यश नँदलालको ।
दलन दारिद दोष दुख भव भय हरण यमकालको ॥
यहजान गावहिं सुजनगायो जिनन आनँदपद लह्यो ।
तिनकी कृपा बलपायकछु इक दास ब्रजबासी कह्यो ॥

दो० ब्रजबिलास ब्रजराजको, को कहि पावे पार ।
भक्तभाव गावत भगत, भजन प्रभावबिचार ॥
सिगरे दोहा आठसौ, और नवासी आहिं ।
हैं इतनेहीं सोरठा, ब्रजबिलास के माहिं ॥
दश सहस्रषटसों अधिक, चौपाई बिस्तारु ।
छन्द एकशत षटअधिक, मधुर मनोहर चारु ॥
सबको नुष्टुपछन्द करि, दशसहस्र परिमान ।
खण्डित होन न पावहीं, लिखियो जान सुजान ॥
बिधि निषेध जाने नहीं, कछु ब्रजबासी दास ।
ज्यों जाने त्यों राखिहैं, नन्दनँदनकी आस ॥
नहिं तप तीरथ दानबल, नहीं कर्म व्यवहार ।
ब्रजबासी के दास को, ब्रजबासी आधार ॥
ब्रजबासी गाऊँ सदा, जन्म जन्म करि नेह ।
मेरो जप तप ब्रत यहै, फल दीजै पुनि एह ॥

। श्रीब्रजविलासे सवसुखरासे भक्तिप्रकाशे कृतब्रजवासीदासे सम्पूर्णम् ॥